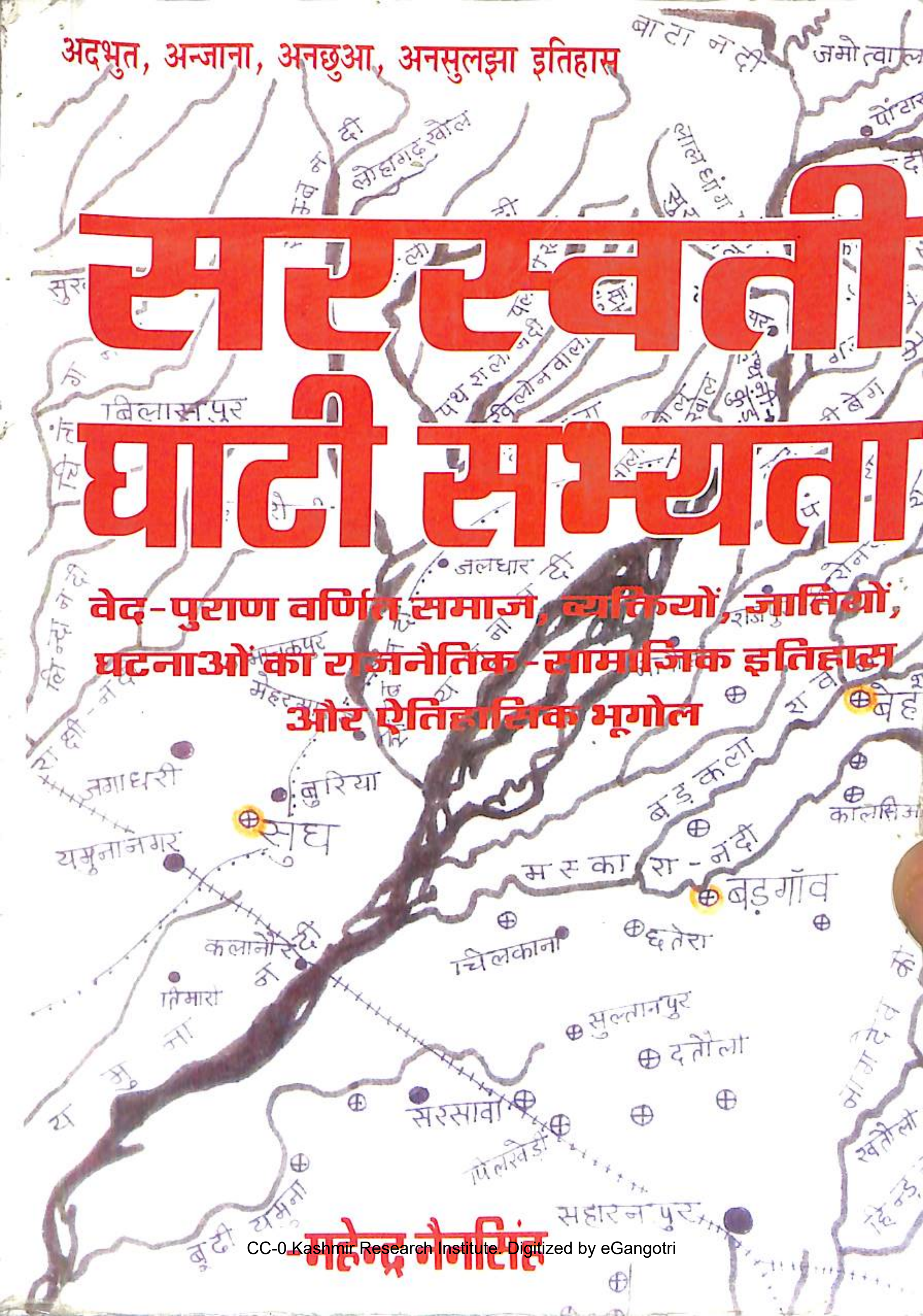
अदभुत, अन्जाना, अनछुआ, अनसुलझा इतिहास

सरस्वती घाटी सभ्यता

वेद-पुराण वर्णित समाज, व्यक्तियों, जातियों, घटनाओं का राजनैतिक-सामाजिक इतिहास और ऐतिहासिक भूगोल



महेन्द्र नैनसिंह

KA10

अदभुत, अन्जाना, अनछुआ, अनसुलझा...............

सरस्वती घाटी सभ्यता

वेद-पुराण वर्णित समाज, व्यक्तियों, जातियों, घटनाओं का राजनैतिक-सामाजिक इतिहास और ऐतिहासिक भूगोल

-महेन्द्र नैनसिंह

समर्पित



परम आदरणीय श्री के.के. बहल

मैं क्या और मेरी औकात क्या? मुझे, मेरे विचारों-सोचों को निखारा, सजाया-सँवारा इन्होंने; दशकों से कदम-कदम पर सहारा दिया, सहायता दी; मैं जब-जब भी थका, मायूस हुआ, टूटा..... इन्होंने हौंसला दिया। इस फ़रिश्ता सिफ्त...शफ़ीक ने तो मेरे लिए सब कुछ किया है। प्रस्तुत शोधग्रन्थ इन्हीं के अथक प्रयासों का फल है। मात्र यह शोध ग्रन्थ ही नहीं..... मेरे मन, कर्म, वचन सभी कुछ सादर समर्पित मेरे इस पिता तुल्य के चरण कमलों में....!

-महेन्द्र नैनसिंह

ईश्वर क्या है? सत्य क्या है? शैतान क्या है?, झूठ क्या है? सजा क्या है? पाप क्या है?, पुण्य क्या है? धर्म क्या है? अधर्म क्या है? इन सब प्रश्नों से परे हम यदि यह सोचें कि हम क्या हैं? हमारे कर्म क्या हैं? हमारा ध्येय क्या है? हमारे विचार क्या है? तो शंकाओं के सभी बादल छँटने लगेंगे। जोगी कहता है जोग है सब कुछ... इससे परलोक सुधरता है। भोगी कहता है भोग है सब कुछ.... अन्ततः इसी के लिए तो जीव का जन्म होता है। कृष्ण ने गीता में कहा है कि कर्म है सब कुछ.... जैसे कर्म करेंगे वैसा ही फल मिलेगा, अच्छे कर्म करेंगे तो हित होगा अपना भी और दूसरों का भी, यदि दुष्कृत्य करेंगे तो विनाश को प्राप्त हो जाएंगे...।

हिरण्येन पात्रेण
सत्यस्यापिहितं मुखम्
तत्त्वं पूषन्नपावृणु
सत्य धर्माय दृष्टेय

''सोने के पात्र से सत्य का मुँह ढँका है। सत्य धर्म देखने को हे पूषन........ उसे हटा दे।''

धन्यवाद !

श्री आर. सी. बरार, श्री आर. के. चिलाना, श्री के. एस. यादव का जिनके सहयोग व सहायता से मैं इस शोध-ग्रन्थ को प्रकाशित करवा पाया।

– महेन्द्र नैनसिंह

विषयानुक्रम

महेन्द्र नैनसिंह

आमंत्रित करता एक इतिहास शोध ग्रन्थ

विज्ञान, अध्यात्म, वेद, पुराण, भाषा, साहित्य........ विषय चाहे जो हो, इतिहास सभी के मूल में है, प्रत्येक ज्ञान का सीधा सम्बन्ध मानवमात्र से है क्योंकि सृष्टि रचियेता सर्वशक्तिमान ने विचार विवेचना-विश्लेषण करने, विचारों को व्यक्त करने, आदान-प्रदान करने की अद्‌भुत क्षमता केवल मानव को ही प्रदान की है। कथित देवता तो उसकी शरण में सुरक्षित-आनन्दमय रहे किन्तु मानव प्रकृति के साथ सर्वशक्तिमान की कलाकृतियों के ज्ञान-खोज और अध्ययन में लग गया जैसे-जैसे वह ज्ञान प्राप्त करता गया.... अधिकाधिक सभ्य समाज का निर्माण करता गया...और आज के इस प्रमाणित निष्कर्ष पर पहुँचा कि धर्म शब्द किसी पूजा विधि विशेष का नाम नहीं है अपितु एक धारणा है जिसे धारण कर मानव स्वयं को और दूसरे प्राणिमात्र को सुख देता है। विज्ञान भी यदि मानव एवं प्राणीमात्र के सुख हेतु है तो वह धर्म है और यदि सुख और विनाश का कारण बने तो अधर्म है...। मत और पन्थ कितने भी हों...धर्म शब्द बहुवचन नहीं...।

जीने के तौर तरीकों का ही सभ्यता और धर्म से सम्बन्ध है प्रत्येक ज्ञान का एक इतिहास है। गीता के उपदेश, अवतारों पैगम्बरों की वाणियाँ इतिहास के माध्यम से ही हम तक पहुंचे हैं।

दुर्भाग्य से भारत का प्राचीन इतिहास हमसे ओझल ही रहा; प्रतिकूल मतों, विदेशी आक्रमणकारियों और हम पर हजार वर्षों तक शासन करने वालों ने हमारे इतिहास को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया... जब-जब वाम मार्गों में उतरे या अन्धविश्वासों में जकड़े गए तो इतिहास का प्रवाह रुक गया; 1921 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा और 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों में प्राचीन अवशेषों की खोज की... .. 1927 में आरेल स्टीन ने सुतकांगेडोर और 1931 में एम.जी. मजूमदार ने चन्हूदड़ों स्थानों पर खोज कार्य किए, उत्खननों से पता चलता है कि भारत के ज्ञात इतिहास की प्राचीनतम तिथि से काफी पूर्व 2500 से 1750 ई. पू. में एक अत्यंत विकसित सभ्यता थी जो पंजाब, सिंध, बिलोचिस्तान, गुजरात, राजस्थान, जम्मू और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विशाल भूभाग पर फैली हुई थी। बाद में मेहरगढ़ और किलीगुल मौहम्मद के पुरातात्विक उत्खननों ने भारतीय इतिहास की प्राचीनतम तिथि को एक ही झटके में 8000 ई. पू. तक पीछे पहुंचा दिया। किन्तु विद्वान वैदिक काल को इस प्राचीनतम तिथि के काफी बाद 1500 ई. पू. से 600 ई. पू. के कालखंड में हुआ मानते हैं अर्थात सिन्धु सभ्यता के अवसान के भी ढ़ाई सौ-तीन सौ वर्ष बाद, यह अन्तराल इतना कम है कि विद्वानों का एक वर्ग

वैदिकजनों को ही सिन्धु सभ्यता का विनाशक मानता है.... यह भी हो सकता है कि वैदिकजन सिन्धु सभ्यता की एक कोई शाखा हों..... संभावनाऐं बहुत हैं किन्तु दुर्भाग्य से प्रमाणिक उत्तर हमारे पास नहीं है। विद्वानों के सभी वर्ग अपने-अपने मतों के विषय में जो प्रमाण प्रस्तुत करते हैं वे काफी कम हैं किन्तु चित्रित धूसर मृदभांड जिनका सम्बन्ध विद्वान वैदिकजनों से मानते हैं; के ठीकरे सतलज-गंगा-यमुना के दोआबा क्षेत्र में ही मिले हैं यदि इस मत को मानें तो यौधय, कुणिन्द, औदुम्बर, आर्जुनायन और मद्रजनों का पलायन किसी भी कारण से पश्चिम से पूर्व की ओर गंगा-यमुना क्षेत्र में हुआ.... ये जातियाँ पांडवों का प्रतीक हैं। दोआबे में बसे नागों-धृतराष्ट्रों से इनका संघर्ष हुआ.... पलायन कर आए सिंध-सौवीरजनों ने कौरवों का साथ दिया.... महाभारत का युद्ध कोई व्यवस्थित, नियमों के तहत, किसी एक स्थान पर लड़ा गया युद्ध नहीं लगता... बल्कि सतलज, यमुना-गंगा के विशाल भू-भाग में मारो-भगाओ और स्वयं वहाँ बस जाओ जैसा गोरिल्ला संघर्ष था जिसमें अंततः जनमेजय ने नागों को पराजित कर मध्य और पूर्व भारत की ओर धकेल दिया.... अर्थात चित्रित धूसर मृदभांड यौधय, आर्जुनायन, मद्रक आदिजनों की संस्कृति थी.... ऐसे में इनसे पिछला इतिहास तो नागों-अजों-मतस्यों का है।

कृष्ण और राम यदि भारत भूमि पर हुए थे तो अयोध्या और द्वारिका में चित्रित धूसर मृदभांडों का अभाव है ऐसे में कुछ न कुछ ऐसा अवश्य है जो अज्ञात है. .. खोजा जाना बाकी है..... राम वैदिक नरेश हैं वे वेदों में वर्णित हैं और वैदिक साहित्य की रचना सरस्वती नदी प्रदेश में हुई थी... द्वारिका वहाँ बसी थी जहाँ सरस्वती नदी पश्चिम वाहिनी थी. जहाँ वैदिक साहित्य सरस्वती नदी के विवरणों से भरा पड़ा है.... महाभारत में भी इस नदी का वर्णन है लेकिन लुप्त होने और दृष्ट होते रहने के संदर्भ में.... बाद में यह नदी पूर्णतया लुप्त हो गई। बहावलपुर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, सूरतगढ़.... से भटिंडा तक इसका काफी चौड़ा सूखा पाट. ... मिला है। सरस्वती नदी के बहाव मार्ग के विषय में भी विद्वान एकमत नहीं हैं। कुछ के अनुसार वर्तमान घघ्घर सरस्वती नदी थी तो कुछ आदि बद्री से निकलकर भगवानपुर/कुरूक्षेत्र होकर बहने वाली नदी को सरस्वती नदी मानते हैं। पटियाला के दक्षिण में घघ्घर नदी का पाट एकाएक सात किलोमीटर चौड़ा मिलता है। विद्वानों ने अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि घघ्घर की मुख्य सहायक नदी कभी सतलज थी। घघ्घर को जिस दूसरे बड़े नदी तंत्र से जल मिला होगा, वह नदी तंत्र यमुना नदी का था। पहले यमुना नदी भी घघ्घर से मिलती रही थी.... जिस प्रकार सतलज नदी के घघ्घर तक पहुंचने के कम से कम चार सूखे

पाट-नैवाल मिले हैं उसी प्रकार यमुना नदी भी समय-समय पर, बार-बार भिन्न मार्गों से घघ्घर नदी तक पहुंचती रही थी..... इस शोध ग्रन्थ के लेखक का कहना है कि यमुना नदी ही कभी दृष्टद्वती के नाम से, कभी लोहित्या के नाम से समय-समय पर मार्ग बदलकर घघ्घर नदी तक पहुंचती थी... नदी मार्ग बदलती तो नदी किनारे बसे ग्राम-गोत्र उजड़ जाते.... वे प्रतीक्षा करते कि हो सकता है नदी पुनः इस बहाव मार्ग पर लौट आए... कई बार तो उनकी प्रार्थनाऐं स्वीकार हो जातीं.... कभी उन्हें अपनी बस्ती घर छोड़कर नदी की खोज में आगे बढ़ जाना पड़ता... नदी के लुप्त होने और दूसरे बहाव मार्ग से बहने लगने के कारण... इतिहास बार-बार बनता... लोग उजड़ते.... आबाद होते, हर बार नई सभ्यता-संस्कृति. ... नये मिथक.... नये विश्वास.... नई प्रथा परम्पराऐं.... कुछ इतिहास याद रहा कुछ कथा...लोक परम्पराओं में जीवित रहा तथा कुछ लिखा गया.... किन्तु बहुत कुछ भूल गए.... मिट गया...। नया पुराना सारा इतिहास नई पृष्ठभूमि का संदर्भ लेकर लिख दिया गया, उसमें लेखक-कवि की कल्पनाऐं अधिक रही... अतिश्योक्तियों की भरमार हो गई.... एक वर्ग ने दूसरे वर्ग को दबाया....जब से मानव सभ्य बना... पुरोहित वर्ग सदा से शक्तिशाली ही रहा.....।

जो विज्ञान धर्म था.... सह हित की धारणा था.... सामाजिक व्यवस्था के लिए था.... यमों और नियमों सें बंधा था... रूप बदलकर प्राचीन इतिहास से जुड़ गया. ... आस्था... विश्वास पूजा-पद्धति नास्तिक-आस्तिक का पैमाना बन गया... लेखक का यह मानना है कि "धर्म का इतिहास तो हो सकता है, इतिहास का कोई धर्म नहीं होता, वह निरपेक्ष होता है" सही है इतिहास को निरपेक्ष होना चाहिए, यदि वह निरपेक्ष नहीं... तो वह इतिहास नहीं है, कुछ और है। प्राचीन भारतीय इतिहास के साथ यही बात रही। आज का युग कलियुग ही सही.... परन्तु विज्ञान के इस युग में सामाजिक ज्ञान प्राचीन ज्ञान से कुछ आगे बढ़े हैं। नयी पुरानी सभी मान्यताओं के तथ्यों और तर्कों की कसौटी पर कसते हुए नये निष्कर्ष निकाले जा रहे हैं, सच ढूंढे जा रहे हैं.... नये विचारों को आगे लाया जा रहा है। सरस्वती नदी.... उसके बहाव मार्ग.... उसके किनारों पर पनपी... विकसित हुई और फिर उजड़ गई सभ्यता-संस्कृति और उनकी प्रथा-परम्पराओं, इतिहास, भूगोल, समाज, मानव-जाति, नृवंश.... रहन-सहन, व्यवसाय, वेशभूषा...पूजा पद्यति. ...आस्था-विश्वास...मृदभांड आदि के विषय में खोज करने..... अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्वान वर्षों से प्रयत्नशील रहे।

सरस्वती नदी शोध संस्थान यमुना नगर के सभागार में केन्द्रीय मंत्री श्री जगमोहन जी द्वारा एक चार सदस्यीय कमेटी गठित की गई थी जिसमें स्पेस एप्लीकेशन

सेंटर अहमदाबाद के पूर्व डिप्टी डायरेक्टर श्री बलदेव सहाय; ज्योलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया लखनऊ के पूर्व ग्लेशिओलोजिस्ट श्री वी.एम. पुरी; ऐशियन डिवलपमेंट बैंक के पूर्व सीनियर एक्जीक्यूटिव डा. एस. कल्याणरत्नम; ग्राउण्ड वाटर मैनेजमेंट के पूर्व सैक्रेटरी माधव चितले की अध्यक्षता में आदि बद्री से भगवानपुर, सिरसा होते हुए कालीबंगान तक पुरातात्विक उत्खनन एवं अन्य सम्बंधित कार्यों को करने की योजना बनी। इस पर व्यापक रूप से दो चरणों में कार्य किया गया। पन्द्रह सौ से अधिक प्राचीन बस्तियों के निशान मानचित्र पर उभर आए। वैसे खोई हुई सरस्वती नदी को ढूंढने का प्रयास 1983 में भारतीय इतिहास संकलन समिति द्वारा शुरू किया गया था; इससे पहले से लेकर आज तक अनेकों विद्वान इतिहासकार, पुरातत्वविद, लेखक सरस्वती नदी से संबंधित ज्ञान को खोजने--लिखने के लिए कार्य करते रहे श्री सी.एफ. ओल्डहेम, श्री आरेल स्टीन, श्री बी.बी. लाल; श्री आर.एस. बिष्ट, श्री के.जी. गोस्वामी; रवि प्रकाश आर्य, डा. अशोक साहनी; श्री ओ.पी. भारद्वाज, श्री के. एफ. दलाल, श्री बी. घोष, श्री जे.एस. खत्री; श्री एम. आचार्य; श्री बी.के. थापर; श्री एस.आर. राव; श्री भगवान सिंह; श्री देवेन्द्र स्वरूप; श्री आर.सी. ठाकरान, श्री जगपति जोशी; श्री आर.एस. शर्मा, श्री के. सी. यादव आदि अनेकों विद्वानों की खोजों, विचारों... तर्कों और लेखनों ने भारतीय इतिहास को समृद्ध किया।

इसी संदर्भ में वैदिक और पौराणिक घटनाक्रमों, वंशों, जातियों आदि को सरस्वती नदी क्षेत्रों से जोड़ने के प्रयास भी किए गए, किन्तु ये प्रयास वेद-पुराण वर्णित घटनाओं को अन्य घटनाओं के साथ जोड़कर भौगोलिक और ऐतिहासिक कसौटी पर कसे जाने के अभाव में अंशतः ही बने रहे. एक विस्तृत अध्ययन, विवेचना, विश्लेषण की आवश्यकता थी। महेन्द्र नैनसिंह इस विषय पर पिछले तीन दशकों से कार्य करते रहे उसने परस्पर लगन, कठिन और अनथक परिश्रम तथा अध्ययन से हमारे प्राचीन वैदिक और पौराणिक काल के इतिहास को नया मूल एवं तार्किक रूप दिया। रामकथा, कृष्ण कथा और वैदिक तथा पौराणिक घटनाक्रम को सरस्वती घाटी तक ले आया है। जन्मजात और वृत्ति से विद्वान इस व्यक्ति का मस्तिष्क गजब के तर्कों की थाती प्रतीत होता है।

शोध ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ नहीं बल्कि प्रत्येक पैहरे में अनजाने, अनसुलझे, अद्‌भुत, अनछुए ऐतिहासिक तथ्य, तर्क और निष्कर्ष हैं अजीब से प्रश्न उठाता है और फिर महान लगन से खो जाता है अब तक अनुत्तरित उन अजीब प्रश्नों के जवाब ढूंढने में... अनेकों स्थानों पर बड़ी-बड़ी बात कह जाता है एक-दो बानगी देखें-

हरियाणा नाम हिरण्यावती नदी क्षेत्र के हिरण्यजनों के कारण था, हिरण्यजन वैदिक सृञ्जयजन ही थे; अजजनों की अजोध्या उत्तरी हरियाणा के सुध में; रावण की लंका बड़गाँव में, कृष्ण की द्वारिका जगाधरी में, जरासंध व्यक्तिगत नाम नहीं अपितु सरस्वती-यमुना नदी क्षेत्र में प्रतिवर्ष बाढ़ के कारण बनने वाला एक भौगोलिक घटनाक्रम है, सभी के विषय में लेखक नवीन तथ्य, तर्क, प्रमाण प्रस्तुत करता है। उसके निष्कर्षों की प्रमाणिकता तो इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान ही जान सकेंगे किन्तु उसके पास जो नए विचार हैं उन्हें तो सामने आना ही चाहिए। राजा हरिश्चन्द्र की कथा में अंगिरावंशी अजीग्रत ऋषि के पुत्र शुनशैप की बलि का प्रसंग है... हैरान-परेशान करने वाला प्रश्न महेन्द्र नैनसिंह उठाता है कि यज्ञ में होता-पुरोहित ब्राह्मण ही था। शुनशैप भी ब्राह्मण है उसे रोहिताश्व खरीदता है. ... क्या ब्राह्मण भी दास की भांति या फिर नरबलि के लिए खरीदा जा सकता था? और फिर एक ब्राह्मण की बलि दूसरे ब्राह्मण के हाथों.......? ऐसा लगता है कि कुछ ऐसा अवश्य है जो छिपाया गया है... घटनाक्रम अवश्य ही सरस्वती नदी प्रदेश की राजनीति में असमंजसता, अराजकता, विप्लव, संघर्ष, रक्तपात का वातावरण लेकर आया होगा.... भूमिका... परिणाम सभी कुछ भयानक और दिल दहला देने वाला रहा होगा....। बहुत वीभत्स है भारत का प्राचीन इतिहास।

इतिहास चाहे जैसा भी रहा हो निस्संदेह महेन्द्र नैनसिंह का आमंत्रित करता यह शोध ग्रन्थ उन सब वर्तमान तथा भावी इतिहासकारों, प्रबुद्ध पाठकों, विद्वानों, शोधकर्ताओं के लिए एक मील का पत्थर... और एक संदर्भ ग्रन्थ सिद्ध होगा जो प्राचीन भारतीय इतिहास, समाज, संस्कृति को उजागर करने के लिए प्रयत्नशील एवं निष्ठावान हैं... और कुछ नया पढ़ना चाहते हैं....।

के.के. बहल
सह सम्पादक ''पूजा'' पंजाबी पत्रिका;
फरीदाबाद
मोबाइल : 9810594351

विषय प्रवेश

अभी तक विद्वानों, शोधकर्ताओं द्वारा पौराणिक घटनाओं के जो भी कालक्रम प्रस्तुत किए गए हैं वे लम्बी-2 पौराणिक वंशावलियों में थोड़ी बहुत काट-छाँट के उपरान्त प्रति राजा न्यूनतम या अधिकतम समय के आधार पर किए गए हैं- जैसे किसी वंश में पन्द्रह या पच्चीस राजा हुए और एक राजा का समय पच्चीस वर्ष मानकर प्रथम राजा का समय 375 या 625 वर्ष पूर्व निकाला गया हो..। इस प्रकार की गणनाऐं संदेहास्पद होती हैं और ऐसे में जबकि 1600 ई.पू. से पहले की कौशल, विदेह, वैशाली, मगध आदि के राजवंशों की पुराणों में दी गई सूचियों पर यदि थोड़ा बहुत भी संदेह हो तो गणनाओं पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अपने समूचे शोध के दौरान मैंने पाया कि पुराणों के नास्तिक, अत्याचारी, क्रूर.... वेन, सहत्रबाहू अर्जुन कार्तवीर्य, यदुवंशी वृष्णि, दक्षिण कौशल का सुदास, पांचाल सुदास के सम्बंध में वर्णित घटनाओं, कथाओं के मूल में केवल एक ही व्यक्ति सरस्वती नदी प्रदेश का सुदास पैजवन है और उपर्युक्त सभी पौराणिक चरित्र काल्पनिक हैं। इसी प्रकार जरासन्ध, उपरिचरवसु, वैशाली का विशाल, मरुदत्त, सहदेव, सोमक, पांचाल के सहदेव सोमक, सृज्जय... के पीछे आधार सरस्वती नदी प्रदेश के सृज्जय सोमक और सहदेव हैं। काशी और पांचाल के दिवोदास भी सरस्वती प्रदेश के त्रुत्सु दिवोदास के आधार पर गढ़े गए हैं। हिरण्यदैत्यों का आधार सुदास पैजवन का ही घटनाक्रम है.... ऐसे में कितना भी शोध करें, कितनी भी काट-छाँट करें निष्कर्षों को गले से नीचे उतारने में संदेह बना ही रहेगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि कुछ अब भी छूट गया हो... प्रमाण स्वयं भी संदिग्ध लगते हैं.... तब वह शोध जिसे नये सिरे से दोबारा से शुरू किया जाना चाहिए, का तरीका, आधार वंशावलियाँ न होकर सरस्वती-यमुना आदि नदियों की अनियमितता होनी चाहिए। जैसा कि मेरा विचार है कि राम और कृष्ण के बीच दो-तीन पीढ़ियों से अधिक का अन्तर नहीं होना चाहिए और दोनों ही सरस्वती-यमुना नदियों की अनियमितता से जूझे भी थे।

सरस्वती नदी ने अपना पश्चिमवर्ती मार्ग छोड़ा और यमुना नदी के रूप में बहने लगी... और सबकुछ शांति के साथ निपट गया होगा.... ऐसा नहीं है। हरियाणा का भू-प्रदेश जैसे-2 ऊपर उठता गया, नदी के बहाव मार्ग में परिवर्तन आता गया... कितने परिवर्तन हुए पता नहीं पश्चिम का बहाव मार्ग छोड़ देना भी नदी के लिए आसान तो नहीं रहा होगा। यमुना नदी के रूप में बहने लगने से पहले भी नदी दूसरे-तीसरे और फिर चौथे मार्ग से होकर पश्चिम में ही बहती रही थी; वह बार-बार चौथे से दूसरे; तीसरे से पहले बहाव मार्गों पर लौटी थी और यमुना नदी का बहाव मार्ग बनने में भी दशकों लगे, वर्षाकाल में अतिरिक्त जल की निकासी शीघ्र न होने के कारण, वह जल शिवालिक पर्वतों की तलहटी में जमा होकर एक सागरनुमा विशाल झील का निर्माण कर देता था... जो वर्षाकाल के काफी बाद तक. ... गर्मियों तक भी छोटे-बड़े गड्ढों... असंख्य तालाबों के रूप में बचा रहता था. .. यह विशाल सागर प्रतिवर्ष बने ही यह भी निश्चित नहीं था। ऐसे में स्थाई बस्तियों

के लिए उपयुक्त स्थान उस क्षेत्र में कोई नहीं था... नदी कभी भी मार्ग बदलकर उन्हें नष्ट कर देती थी। लवणीय भूमि, दलदली भूमि की अधिकता उपरी प्रदेशों में अधिक थी। कहा जा सकता है कि हरियाणा प्रदेशों से जन, ग्राम, गोत्रों का पलायन पूर्व की ओर बढ़ती जनसंख्या या रोग के कारण इतना नहीं हुआ.... जितना कि सरस्वती-यमुना नदी की अनियमितता के कारण हुआ।

भारतीय इतिहास के लिए आर्य कतई प्रमुख नहीं हैं न ही पुराण-वर्णित लम्बी-लम्बी वंशावलियों का कोई औचित्य है। सूर्य और चन्द्रवंश आदि की भी भारतीय इतिहास में कोई भूमिका नहीं.... भारत का इतिहास तो अजों, पिशाचों, पणि-पारावतों, नागों-गन्धर्वों का इतिहास है... सरस्वती-यमुना की अनियमितताओं का इतिहास है। असल में पौराणिक इतिहास तो वह है जिसे सरस्वती यमुना प्रदेश को छोड़कर देश के विभिन्न भागों में जा बसे लोगों की स्मृतियों के आधार पर. ... नया पुराना सारा इतिहास नई पृष्ठभूमि देकर लिख दिया गया।

अपने इतिहास को बढ़ा-चढ़ाकर लिखना; प्राचीन घटनाओं में देव-अदेव; सुर-असुर; शाप-वरदान; आकाशवाणी-भविष्यवाणी; भाग्य-मोक्ष; स्वर्ग-नरक जैसे काल्पनिक घटनाओं को जोड़ देना तो विश्व के किसी भी भाग के प्राचीन इतिहास के साथ हुआ है। पौराणिक पुरुषों का हजारों-लाखों वर्षों तक जीवित रहना जीवन के लिए अदम्य मोह की मानसिकता है जो प्रत्येक व्यक्ति के साथ सदा से ही रही है और कोई भी नहीं चाहेगा कि उसके पूर्वजों को महान नहीं कहा जाए। द्वारिका समुद्र में डूब गई; अयोध्या राम के साथ ही स्वर्ग में चली गई ये सब वर्जनाऐं हैं ये वर्जनाऐं धर्म की हैं। भारत का प्राचीन इतिहास धर्म से जुड़ा है जबकि इतिहास का कोई धर्म नहीं होता वह धर्म से पहले भी था और बाद में भी रहेगा, धर्म का इतिहास होता है। इतिहास को धर्म से जोड़ने के पीछे कुछ न कुछ हित अवश्य होता है।

कैलाश वाजपेई जी का मानना है कि प्राचीन पुस्तकों में जो कुछ लिखा है, वह न तो पूर्णतः ग्रहणीय है और न ही वर्जनीय। समझदार व्यक्ति को समय-समय पर न केवल पुरानी पोथियों का पुर्नपाठ और विश्लेषण करते रहना चाहिए वरन इसके साथ यह भी प्रश्न करना चाहिए कि नई उपलब्धियों के सन्दर्भ में मैं कहाँ खड़ा हुआ हूँ।

हममें से अधिकतर के बच्चे अक्षर ज्ञान सीखने के उपरान्त विज्ञान विषय में उतर जाते हैं.... विज्ञान विषय को लगभग दसवीं तक पढ़ने के बाद ही उनका सम्पर्क अपने प्राचीन ग्रन्थों से होना सम्भव होता है... जब वह उन प्राचीन ग्रन्थों में पढ़ता है कि पृथ्वी गाय के सींगों पर टिकी है; जरासन्ध दो माताओं से आधा-2 पैदा हुआ था, जरा नाम की राक्षसी ने जोड़ दिया तो...; दक्ष अदिती और अदिती दक्ष से पैदा होते हैं; कद्रू के एक हजार अण्डों से एक हजार नाग पैदा हुए। सगर के साठ हजार पुत्र थे; कृष्ण की 16108 रानियाँ थीं; समुद्रमंथन से अमृत, विष, चन्द्रमा, लक्ष्मी; धनवन्तरि, ऐरावत हाथी, उच्चैश्रवा घोड़ा, कामधेनु गाय, पारिजात वृक्ष; पॉञ्चजन्य शंख आदि चौदह रत्न निकले थे; राजा प्रियव्रत के रथ के पहियों

से पृथ्वी सात महाद्वीपों और सात समुद्रों में बंट गई.....

विद्वानों ने इन सभी घटनाओं की अपने-अपने तरीके से तर्क, शोध, खोज, विवेचनाऐं-व्याख्याऐं कर उन्हें आज के सन्दर्भ से जोड़ने का प्रयास किया। बहुत से तर्क करते हैं कि तब का विज्ञान आज के विज्ञान से आगे था.... यूरोपियन आए हमारा प्राचीन साहित्य ले गए। उसे पढ़कर उन्होंने आज इतनी तरक्की कर ली.... अजीब बात है। क्या हमारे पास उस ज्ञान की एक ही प्रति थी.... हमारे पास वह ज्ञान हजारों वर्षों से था। क्या वह केवल बगल में दबाकर रखने के लिए था... या फिर केवल गर्व करने के लिए कि न्यूटन से पहले गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त और कैलकुलस तथा आईन्स्टीन से पहले सापेक्षता का सिद्धान्त हमारे प्राचीन ऋषि, विद्वान, गणितिज्ञ खोज चुके थे। हो सकता है यह सही हो किन्तु यह भी सही है कि अपने उन ज्ञानियों को उनके ज्ञान को सुनने और समझने की कोशिश हमने कभी नहीं की... शायद इस सब ज्ञान से हमें कोई व्यक्तिगत लाभ था भी नहीं, रोजमर्रा के क्रिया-कलापों में ऐसे ज्ञान का कोई औचित्य था भी नहीं.... प्राचीन भारत में यदि विज्ञान था तो उस विज्ञान की दुर्दशा भी थी... यह केवल भारत की ही बात नहीं है विश्व के लगभग प्रत्येक भाग में विशेषकर यूरोप में भी ऐसा ही थी। किन्तु अब वहाँ हालात बदल चुके हैं। हम अभी तक प्राचीन मान्यताओं, दुराभावों से चिपके बैठे हैं, बेशक गर्व से कालर उठाकर पड़ोसी को कहते हैं कि हमारा बच्चा फलाने कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ता है। हमारे पास प्राचीन ग्रन्थों की विश्व की सबसे बड़ी थाती है... और हमारे लिए उतना ही बहुत है... अनन्त ज्ञान के सिंहद्वार के बाहर हम अपने कान, मुँह, आँखें सबकुछ बन्द किए बैठे हैं।

इसमें सबकुछ नया है। नितान्त नए तरीके से तथ्य, तर्क, प्रमाण हैं और नए निष्कर्ष हैं। तभी यह अद्भुत, अन्जाना, अनछुआ, अनसुलझा इतिहास बन पड़ा। भारतीय जनमानस के रोम -2 में बसे, अवतार पुरुष की संज्ञा प्राप्त राम पौराणिक नहीं अपितु वैदिक नरेश हैं और वेदों की रचना सरस्वती नदी के तटों पर हुई थी, अर्थात कि सरस्वती नदी प्रदेश में ही कहीं राम की अयोध्या भी थी। न केवल इतना बल्कि सरस्वती नदी प्रदेश की राजनीति में राम की महत्वपूर्ण भूमिका भी थी और वह घटना जिसने राम को राम बनाया, मर्यादा पुरुषोत्तम बनाया.....अवतार पद पर बिठा दिया... .. रावण वध जैसी छोटी-मोटी घटना तो नहीं रही होगी, वह अवश्य ही कुछ ऐसा है जिस का लाभ सरस्वती नदी प्रदेश के हर छोटे बड़े, प्रमुख - सामान्य व्यक्ति को मिला होगा। आईये समूचे घटनाक्रम, इतिहास, समाज, राज्य-राजनीति, जाति, भूगोल, व्यवस्था, मिथक, वंश, कारण, जीवन, विस्वास, आस्था, अनिश्चितता, प्रभाव आदि सब कुछ का नितांत नए सिरे से आलोड़न विलोड़न करें........ और तत्कालीन इतिहास को समझने का प्रयास करें। प्रस्तुत ग्रन्थ अलग-अलग लिखे गए शोध लेखों का संकलन है।

- **महेन्द्र नैनसिंह**
ग्राम - सारन, फरीदाबाद
मोबाइल : 9350652493

अध्याय – 1

ऋग्वेद 10.93.14 का असुर

वैदिक साहित्य में रामकथा के श्रोतों को ढूंढते समय विद्वानों को सबसे अधिक आकृष्ट और अचंभित, ऋग्वेद 10.93.14 सूक्त ने किया है। इस सूक्त से यह प्रमाणित होता है कि राम, सरस्वती नदी प्रदेश के वैदिक राजा थे किन्तु यहाँ दुशीम पृथवान और वेन के साथ राम को भी असुर कहा गया है-

प्रतदुःशीमे पृथवाने वेने प्रामे वोचमसुरे मधावस्तु
ये युक्तवाय पस्च शतामस्यु पथा विश्राव्येषाम।

अर्थात, मैंने दुशीम, पृथवान, वेन और राम (असुर) इन यजमानों के लिए यह सूक्त गाया है, इन्होंने पाँच सौ (अश्व या रथ) जुतवाए, जिससे उनका मुझ पर अनुग्रह चारों ओर फैल गया।''[1]

लुड़विग के मतानुसार यहाँ ''असुर'' राम की उपाधि है। दूसरे शब्दों में वे राम को वैदिक नरेश तो मानते हैं किन्तु इस प्रकार की उपाधि का कोई कारण नहीं दे पाते।

कई विद्वान जनसामान्य की अवधारणा के अनुसार यह कहकर समस्या से पीछा छुड़ा लेते हैं कि यह राम कोई दूसरा राम रहा होगा। रामकथा से इस वैदिक राम को कोई सम्बंध नहीं।[2] ऐसा सोचने का कारण भी है, कि उपर्युक्त सूक्त में आए चारों नामों को एक ही में सम्माहित करने वाली वंशावली न तो पुराणों में मिलती है, न ही रामायण में। यदि यह मान भी लें कि यह राम कोई दूसरा राम रहा होगा, तो इस राम का ऐतिहासिक महत्व क्या है? किसी ऋषि, पुराहित या गुरु के लिए पाँच सौ रथ या अश्व जुतवाने वाला वंश भी कम महत्वपूर्ण तो नहीं रहा होगा। ऐसे में रामकथा के राम का कोई आधार ऋग्वेद में नहीं मिलना अजरज की बात है, क्योंकि राम यदि पौराणिक नरेश हैं तो रामकथा का आधार वैदिक साहित्य में होंना चाहिए. ... वहां दशरथ का शत्रु शम्भर वर्णित है, दशरथ का मित्र दिवोदास भी वर्णित है। वशिष्ठ के पुत्र शक्ति की हत्या की समान घटना और वशिष्ठ विश्वामित्र इन दो समान गुरुओं के आधार पर वैदिक सुदास पंजवन और राम के नाना दक्षिण कौशल के सुदास [3] को एक ही व्यक्ति माना जा सकता है। अर्थात राम के नाना सुदास भी वैदिक साहित्य में हैं। बस.... न तो राम है न राम कथा के पात्र, न ही राम कथा का आधार। राम कवि की कल्पना नहीं, ऐतिहासिक और वैदिक राजा हैं क्योंकि ऋग्वेद 10.93.14 में वर्णित हैं। ऐसे में रामकथा के पात्र अथवा आधार वैदिक साहित्य में न मिल पाने का अर्थ यह है कि ऋग्वेद कालीन राम सम्बंधी घटना चक्र का प्रारूप रामायण की कथा से नितान्त भिन्न है, सम्भवत : है कुछ ऐसा, जो अभी अज्ञात है।

मैकडोनेल का विचार है कि ऋग्वेद में ''असुर'' देवों की उपाधि है, असुरों की गरिमा समूचे ऋग्वेद में हैं, प्रत्येक मण्डल में किसी न किसी देवता को असुर कहा गया है।4

ऋग्वेद 1.17.14 में, ''हे इन्द्र, हे असुर, तुम हमारी रक्षा करो।''

ऋग्वेद 3.38.4 में, ''असुर इन्द्र का नाम अथवा यश महान है।''

ऋग्वेद 10.55.4 में, ''महान इन्द्र का असुरत्व महान है।''

ऋग्वेद 5.42.11 में, ''नमस्कारों से असुर देव रुद्र की उपासना करो।''

ऋग्वेद 2.24.10 में, ''हे असुर वरुण, जो देव और मनुष्य है, उन सबके तुम राजा हो।''

ऋग्वेद 7.13.1 में अग्नि असुरों का नाश करने वाले हैं किन्तु

ऋग्वेद 4.2.5 में अग्नि स्वयं भी असुर हैं।

ऋग्वेद 8.96.9 में इन्द्र से अदेवा: असुरों के नाश की प्रार्थना की गई है।

ऋग्वेद 2.30.4 में वृहषपति से भी असुर को मारने की प्रार्थना की गई है।

सोम वनस्पतियों के स्वामी हैं- **वीरुधानपति** ऋषि उन्हें घोटकर देवताओं को पिला देते हैं, वह भी असुर हैं- **असुराय निर्णिज**- बलशाली सोम को छानने के लिए।[5]

हो सकता है ऋग्वेद काल में "असुर" एक जाति भी रही हो, किन्तु जो श्रेष्ठ है, शक्तिशाली है, दुस्साहसी, निडर-दुर्धुर्ष है, ऋग्वेद में वह भी असुर है।

डा. पी. एल. भार्गव का दृष्टिकोण है कि ऋग्वेद काल के प्रारंभिक चरणों में देव (3. 25.4) अथवा देवों की पराशक्ति ईश्वर के अर्थ में असुर शब्द प्रयुक्त हुआ है (ऋग्वेद 3. 55.3) किन्तु कालान्तर में यह विलोम अर्थ ग्रहण कर दानव अथवा दैत्य के रूप में प्रयुक्त होने लगा-**ददक्षहानि पिप्रोरसुस्य मायिन इन्द्रो** (ऋग्वेद 10.30.3)[6] ऋग्वेद 10.93.14 का सूक्त भी अपेक्षाकृत काफी बाद का सूक्त है, यदि देवों की पराशक्ति, ईश्वर के अर्थ के विलोम रूप, दानव या दैत्य के रूप में, राम के लिए असुर शब्द का प्रयोग हुआ है तो अपने राजनैतिक जीवन में राम अवश्य ही उन परिस्थितियों से गुजरे होंगे जिस कारण उन्हें ऐसी देव विरोधी उपाधि मिली, और यदि नैतिक आचरण या किसी महान कार्य या असाधारण सफलता के लिए उन्हें असुर कहा गया, तो मेरे विचार से आर्य संस्कृति का प्रसार और रावण वध वे कार्य नहीं होने चाहिऐ। ऋग्वेद की रचना सरस्वती नदी प्रदेश में हुई थी ऐसे में सरस्वती नदी प्रदेश की राजनीति में अवश्य ही कुछ ऐसा भी घटा कि उनका वह महान कार्य या फिर दोषपूर्ण कृत्य वर्णित नहीं हो सका, साथ ही राम भी मात्र एक ही सूक्त में वर्णित हो पाए। ऐसा लगता है कि राम का वर्णन भागते-भागते किसी ने कर दिया हो। आज के समाज-सभ्यता, संस्कृति और जनमानस के रोम-रोम में बसे राम, देवता नहीं हैं, देवता होते तो इन्द्र, मित्र, वरुण, वायु, अग्नि, रुद्र आदि की भाँति असंख्यों ऋचाऐं उनके नाम होतीं। देवता उन्हें बाद के साहित्य ने बनाया, संभ्वत: पौराणिक साहित्य ने। जो भी हो, देवता बनने के पीछे कारण उनका वह महान कार्य रहा होगा जो कि रावणवध या आर्य संस्कृति के प्रसार से नितान्त भिन्न था।

ऋ. 10.93.14 में "असुर" शब्द का प्रयोग केवल राम के लिए ही किया गया हो, ऐसा नहीं लगता, वहाँ राम के साथ-साथ दु:शीम, पृथवान और वेन भी इस संज्ञा से जुड़े हुए है। अवश्य ही राम का इनसे कोई राजनैतिक, सामाजिक, कुलीय या समान कार्य करने जैसा सम्बंध रहा होगा; अत: इन सबके विषय में जानने के प्रयास से राम के उस महान असुर कार्य के बारे में कुछ पता चलने की सम्भावना हो सकती है। ऐसे में दु:शीम तो उपर्युक्त सूक्त के अतिरिक्त कहीं और वर्णित नहीं है। किन्तु "वेन" एक जाति के रूप में ऋग्वेद 9.85.10 में भी है। पृथुवान या पृथुवेन्य अर्थात वेन का पुत्र पृथु या वेन जाति का पृथु, ऋग्वेद 8.9.10 अर्थवेद 8.10.24 पंचविश ब्राहमण 13.5.19 शपतथ ब्राहमण 5.4.54 और काठक संहिता 30.34 में भी वर्णित है।[7] अंगिरसी नदी (घघ्घर) के उदगम क्षेत्रों में शिवालिक पर्वत माला पर होने वाले बाँस (वेण) के कारण यहाँ निवास करने वाले पृथु जनों का नाम पड़ा होगा। इसी बाँस का उपयोग उन्होंने धनुष बाण बनाने के लिए किया होगा। पृथु जनों का मूल क्षेत्र थोड़ा सा उत्तर में सोलन जिले के उत्तर पूर्व में था।

वेन पौराणिक साहित्य में भी है, वहाँ वह नास्तिक, क्रूर और अत्याचारी है। उसका पुत्र

पृथु सौ अश्वमेघयज्ञ कर्ता है।[8] किन्तु इनमें से किसी का भी सम्बंध दूर-दूर तक भी राम के साथ नहीं है। सूर्यवंशी इक्षवाकु कुल में अनेना के पुत्र पृथु राम से पचास पीढ़ी पहले के अयोध्या नरेश है।[9] जबकि ऋग्वेद 10.93.14 में राम और पृथु का सम्बंध अधिक दूर का नहीं लगता। अत: हमें किन्हीं ऐसे चरित्रों पर विचार करना होगा जिनका सम्बंध रामकथा के राम से भी हो और वैदिक साहित्य में भी वर्णित हों। अप्रत्यक्ष तो ऐस इन्द्र आदि कई चरित्र हैं किन्तु प्रत्यक्ष, प्रचलित और मुख्य केवल तीन ही हैं-प्रथम सुदास, दूसरा वशिष्ठ और तीसरे विश्वामित्र;

वैदिक सुदास पैजवन और राम दाशरथी दोनों के ही गुरुओं के रूप में वशिष्ठ और विश्वामित्र हैं। दोनों राजाओं के जीवन में विश्वामित्र बाद में आते हैं। यह साभ्य अन्यथा नहीं हो सकता। सुदास पैजवन और राम दाशरथी का कोई न कोई संबंध अवश्य होना चाहिए। इस संबंध को जानने के लिए सर्वप्रथम बनी बनाई, या किसी समस्या के समाधान न मिलने पर उपजती आसान सी धारणा को त्यागना होगा कि वैदिक विश्वामित्र और वशिष्ठ, पौराणिक विश्वामित्र और वशिष्ठ से भिन्न रहें होंगे। किन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए, हर युग में अथवा कई विश्वामित्र और वशिष्ठ रहें होंगे, सोचना, समस्या को और अधिक उलझा देना है।

सरस्वती नदी प्रदेश की राजनीति में एक ऐसी घटना घटी थी जिसने सभी मर्यादाओं, सभी आयामों को पलट कर समूचे सरस्वती प्रदेश को असमंजसता अनिश्चितता, अराजकता, ईर्ष्या, वैमनस्य, संघर्ष के भयावह वातावरण में धकेल दिया था। समाज को सुव्यवस्थित और मर्यादित करने के लिए नई मानवसंहिता और वंशानुगत वर्ण व्यवस्था को लेकर हुए ब्राहमणवाद के विरुद्व संघर्ष में भारतीय इतिहास का वह काला पन्ना लिखा गया जिसे छिपाने के लिए अठारह-अठारह पुराणों की रचना हुई। काल्पनिक कथाओं, लम्बी-लम्बी वंशावलियों के उस ताने-बाने के पीछे न केवल वह भयंकर सत्य, अपितु राम का वह महान कार्य भी छिप गया है जिसके कारण उसे असुर की उपाधि दी गई थी।

घटना सुदास पैजवन से सम्बंधित है, पुराणों के तीनों सुदासों का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं था। अपने पितामह शक्ति की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए पुराणकार ने सुदास को इतिहास के पन्नों से हटा देने के ध्येय से तीन-तीन काल्पनिक सुदासों, एक सहत्रबाहु और एक वेन की सृष्टि की.... लम्बी-लम्बी वंशावलियों और रोचक कथाओं के तानों बानों से उस सत्य को छिपाने का प्रयास किया गया है। कहावत है एक सच को सौ झूठ छिपा नहीं सकते। पुराणकार भी एक गलती कर गया.. उसने जहाँ-जहाँ भी सुदास को लिखा या सुदास को धयान में रखकर सहस्त्रबाहु या वेन जैसे पात्रों की कल्पना की... उसने इस व्यक्ति के प्रति अपनी समूची घृणा-समूचा क्रोध वहाँ-वहाँ उड़ेल दिया। हर स्थान पर उसने सुदास को ब्राहमण विरोधी, पराजित, अपमानित, नास्तिक या मूर्ख लिखा। सुदास पैजवन के प्रति उसकी घृणा कुछ इस प्रकार उभरकर सामने आती है कि महाभारत शांति पर्व में, वह पैजवन को शूद्र कह जाता है। [10] अपने प्रतिद्वन्द्वी विश्वामित्र को नीचा दिखाने के लिए हरिश्चन्द्र के यज्ञ में वशिष्ठ, एक ब्राहमण की बलि (अंगिरा वंशी अजीगृत ऋषि के पुत्र शुनशैप की)[11] देने से भी नहीं चूकता।[12] हरिश्चन्द्र को विश्वामित्र द्वारा एक शवदाह का कार्य करने वाले चाण्ड़ाल के हाथों बेच देने की कथा रोचक और कर्णप्रिय है। जन सामान्य और समाज के हृदय में भावनात्मक टीस पैदा करने के लिए इस कथा की रचना की गई, कि वह सत्य पर

अड़िग था। कौन सा सत्य? वशिष्ठ विश्वामित्र के संघर्ष में वशिष्ठ का साथ, अंतिम क्षण तक देने के वचन का सत्य! वरना तो यह वही हरिश्चन्द्र है जिसके सामने उसके पिता सत्यव्रत को वशिष्ठ द्वारा चांड़ाल बना दिया गया था....! संकट की किसी भी स्थिती में क्या हरिश्चन्द्र को पिता के साथ नहीं खड़ा रहना चाहिए था? सत्य तो यह है कि वर्ण व्यवस्था को लेकर ''वशिष्ठ -विश्वामित्र संघर्ष'' में चांड़ालों, शूद्रों के पक्षधर विश्वामित्रों के पक्ष में था सत्यव्रत! और हरिश्चन्द्र था वशिष्ठ के पक्ष में। पुरु राज्य में वशिष्ठ और भार्गवों का प्रभाव अधिक था, वशिष्ठ ने सत्यव्रत को हटा कर हरिश्चन्द्र को राजा बनाया। हरिश्चन्द्र ने वशिष्ठ और उसकी नीतियों के समर्थन में विरोधी अंगिरावंशी ब्राहमण शुनशैप की बलि का आयोजन किया। विश्वामित्र ने अपने समर्थक शुनशैप को बचाया, और सत्यव्रत को पुनः गद्दी पर बैठाया और हरिश्चन्द्र को चांड़ाल के यहाँ दास बना कर रखा, क्योंकि वशिष्ठ ने भी तो विश्वामित्र के समर्थक सत्यव्रत को चांड़ाल बनाया था। अपने समर्थक शुनशैप की बलि के बदले में विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्र शक्ति की ही बलि दे दी.....! जीवित अग्नि में जला दिया गया शक्ति को.......।[13]

ऐसा नहीं है कि पुराणों में बिल्कुल भी इतिहास नहीं है, किन्तु इतिहास तो वह भी है जिसे छिपाया गया... और वे कारण, जिन के चलते ऐसा करने की आवश्यकता पड़ी, सम्भवतः इसी इतिहास के काले पन्ने हैं। हरिश्चन्द्र की कथा की अन्तिम पंक्तियों की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा कि शवदाह करने वाले चांड़ाल के हाथों बिक गया हरिश्चन्द्र। किन्तु उस युग में जब वर्ण व्वस्था और ब्राहमणवाद चरम पर था, कानों में पिघला हुआ शीशा भर देने का युग था, अपने जीवन यापन के लिए चांडाल ग्राम वासियों की दया और भीख पर निर्भर था, उस युग में, अपने लिए दास क्रय करने के अधिकार, साधन, सामर्थ्य और साहस एक चांडाल कहाँ से लाया? क्या एक राजा को खरीदने के लिए यह सब एक चांड़ाल के ही पास था? सच तो यह है कि सरस्वती प्रदेश की राजनीति में एक युग ऐसा भी गुजरा, जब साधन, अधिकार, सामर्थ्य और साहस ही नहीं बल्कि सत्ता भी चतुर्थ वर्ण या उसके समर्थकों के हाथों में ही थी। वह युग था सुदास पैजवन का..... भारत के Amhenotep Ikhantan का।

पुराणों में यदि इतिहास है तो क्यों पुराणकार अठारह पुराणों और एक महाभारत में मात्र एक पंक्ति में कहीं भी, सरस्वती नदी प्रदेश के वैदिक सुदास का उल्लेख नहीं करता, इस विषय में वह अपने प्रतितामह वशिष्ठ को भी भूल जाता है कि दासराज संग्राम में दो दिशाओं के इक्कीस जनों को पराजित करने में सुदास पैजवन की सहायता उसके अभिषेखकर्ता और गुरु वशिष्ठ [14] ने ही तो की थी। क्या कहें? क्या वह भूल जाता है या सुदास को हाशिये से परे ढ़केल देने के प्रयास में ऋग्वेद को ही उठाकर एक ओर रख देता है? कारण जो भी, ऐसा लगता है कि पुराणकार ने इतिहास नहीं कुछ और ही लिखा है और हमारी विड़म्बना है कि हम उसके ''कुछ और को ही'' इतिहास समझते रहे। यह भी सही है कि कोई दूसरा रास्ता हमारे लिए छोड़ा ही नहीं गया, यदि पुराणों में इतिहास हैं तो न जाने क्यों उसे धर्म से जोड़ दिया गया, जबकि धर्म और इतिहास दोनों अलग-अलग विषय हैं। धर्म का इतिहास तो हो सकता है किन्तु इतिहास का कोई धर्म नहीं होता। इतिहास तो निष्पक्ष होता है। पुराणों में वर्णित इतिहास निष्पक्ष नहीं है सुदास पैजवन के विषय में तो बिल्कुल भी नहीं।

बहुत से विद्वानों ने तीनों सुदासों के एक्य के प्रमाण प्रस्तुत किए, अंतिम निष्कर्ष के तौर

पर उन्होंने कहा भी कि सुदास केवल एक ही था... और वह था सुदास पैजवन।[15] किन्तु किन्हीं समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत किए गए इस एक्य समीकरण से, असल समस्या तो अब शुरू होती है कि तब उस राम दाशरथी का क्या, जो सुदास का नाती लगता था....? सुदास पैजवन के राजनैतिक जीवन का क्या और कितना प्रभाव राम के राजनैतिक जीवन पर पड़ा था.....? प्रभाव न पड़ा हो.... ऐसा नहीं हो सकता.....। क्योंकि सुदास पैजवन ने अपनी समूची जिंदगी में शत्रु ही शत्रु बनाए थे, वह जीवन भर न तो स्वयं चैन से बैठा और न ही किसी को चैन से बैठने दिया। उस पर भी वह अने अभिषेखकर्ता गुरु वशिष्ठ से उलझ बैठा। उसे हटा कर विश्वामित्र को अपने गुरु पद पर नियुक्त कर लिया। सम्वर्ण के हाथों सुदास पैजवन की पराजय और मृत्यु के उपरान्त राज्य पर मंड़राते ''वशिष्ठ सहयोगी संकट'' से निपटने के लिए सर्वप्रथम आवश्यक था कि गुरु विश्वामित्र सुदास पैजवन के किसी निकटतम और योग्य उत्तराधिकारी की नियुक्ति सृज्जयों-वीतीहव्यों-पृथु-निषादों के केन्द्रीय राजा के रूप में करें। यहीं आकर कथानक रामकथा जुड़ता है। यहाँ से विद्वानों को एक लकीर फलांगनी है। इस लकीर के दूसरी तरफ़ इतिहास ही इतिहास है.... अनछुआ, अन्जाना और अदभुत.....!

अब विश्वामित्र राम को लाए, यह घटना रामायण में वर्णित है, वहाँ कारण दूसरा है किन्तु जो छिपाया गया है वह तथ्य यह है कि राम सुदास पैजवन के नाती थे, उत्तराधिारी थे, उनके बाद के राजा थे... ऋ 10.93.14 में दुशीम और पृथवान के बाद वेन... यही सुदास पैजवन है तो इसके बाद प्रामे-राम है।

इस प्रकार राम, ''वशिष्ठ विश्वामित्र संघर्ष'' के चरम युग में सरस्वती प्रदेश की राजनीति में अवतरित हुऐ। यहाँ यह भी कहना उचित होगा कि राम के राजनैतिक जीवन की भूमिका में सुदास पैजवन है, अत: राम तक आने के लिए और सरस्वती प्रदेश की राजनीति में राम की भूमिका को समझने के लिए हमें सर्वप्रथम सुदास पैजवन के राजनैतिक, सामाजिक, व्यक्तिगत आदि हर पहलू पर विचार करना होगा कि पुत्र प्रतर्दन के रहते, किसी दूसरे वंश-गोत्र का सुदास पैजवन, त्रुत्सु दिवोदास का उत्तराधिकारी कैसे बन बैठा....? क्या है सुदास पैजवन की वंश परम्परा? वंश परम्परा तो उसके अभिषेखकर्ता गुरु वशिष्ठ की भी नहीं है मित्र-वरुण का उर्वशी के गर्भ से अदभुत रूप में जन्म लेने वाला पुत्र है वशिष्ठ। तब क्यों वशिष्ठ तो छा जाता है समूचे भारत की राजनीति, सभ्यता, समाज, संस्कृति, इतिहास और साहित्य पर और सुदास पैजवन.....उसके तो आगे और पीछे, दोनों तरफ अंधेरा ही अंधेरा है।

सहायक ग्रंथ और पाद टिप्पणियाँ

1. **प्रो. लक्ष्मीनारायण तिवारी, ''वैदिक वांगमय में रामकथा''**, पृ. 20
   कामिल बुल्के, ''रामकथा'', इलाहाबाद, 1993, पृ. 2
   विश्वेश्वर नाथ रेउ, ''ऋग्वेद पर एक ऐतिहासिक दृष्टि'', दिल्ली, 1967, पृ. 103, पाद टिप्पणी-3
2. **कामिल बुल्के**, पृ. 2,3; वैदिक साहित्य में ''राम'' नामक तीन अन्य व्यक्तियों का उल्लेख है किन्त राजा के रूप में राम केवल ऋग्वेद 10.93.14 में वर्णित हैं।
3. **आर सिद्धांत शास्त्री, 'हिस्ट्री ऑफ प्री- कलयुग इण्डिया'** दिल्ली, 1977, पृ. 58 पर, गुरु वशिष्ठ को गलती से मानव मॉस खिला देने के कारण वशिष्ट ने सुदास को राक्षस

हो जाने का शाप दे दिया। इस राक्षस राजा ने विश्वामित्र के उकसाने पर वशिष्ठ के पुत्र शक्ति की हत्या कर दी थी।

4. **मैकड़ोनेल, ''वैदिक मिथोलोजी''** पृ. 156 **रांगेय राघव, ''प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास''**, दिल्ली 1990, भूमिका, पृष्ठ-''ण'' वृत्र के लिऐ एकाध स्थल पर ऋग्वेद में देव शब्द का प्रयोग हुआ है परन्तु असुर शब्द का प्रयोग अनेक देवों के लिए हुआ है। ऋग्वेद प्रथम अष्टक में वरुण (24,14); सूर्य (35,7); सविता (35,10); इन्द्र (54,3); मरुदगण (64,2); ऋतित्वगण (108,6); तवष्टा (110,3); के लिए असुर प्रयोग हुआ है। सायण ने असुर का अर्थ बलवान, शत्रुहन्ता, वृष्टिदाता किया है। असुर तूरानी या द्रविड़ परिवार के लोग थे। **दामोदर सात्वलेकर ''वैदिक आख्यान माला''**-26 में रक्षकों के राक्षस; पृ0-2 से 5 तक में ऋ. 1.35.7 में सूर्य **''असुर : सुनीथः है''** 1.35.10 में सूर्य **''हिरण्य हस्तो असुरः सुनीथः''** है

ऋ 1.54.3 में इन्द्र और ऋ 2.1.6 में रुद्र असुर है- **त्वमग्ने रुद्रो असुरो महादिवः** ऋ 3.3.4 में अग्नि असुर है- **पिता यज्ञानां असुरो विपाश्रिताम** ऋ 5.15.1 में वैश्वानर अग्नि असुर है- **घृतप्रसत्तो असुर सुशेवो** ऋ 5.27.1 गौवों के समेत रहने वाले बलवान और धनवान अग्नि- **गावा चेतिष्वो असुरो मघोनः** ऋ 5.42.1 में वायु असुर है- **अर्तुतपन्था असुरो मयो भूः** ऋ 5.51.11 में पूषा असुर है- **स्वस्ति पूषा असुर दधातु नः** ऋ 5.83. 6 में पर्जन्य असुर हैं ऋ 8.42.1; 1.10.1 में देवो में बलवान वरुण असुर हैं ऋ 9.73. 1 ; 9.74.7; 10.74.2 में सोम असुर है ऋ 7.40.2 में- **निषि चन्नसुरः पिता नः न्यग्नि सीददसुरो न होता** असुरत्व का अर्थ बड़ा भारी सामर्थ्य वाला; अथर्ववेद 4.15.12 में जलवृष्टि करने वाला; अथर्ववेद 5.27.1 में शरीर का पतन न करने वाला; अथर्ववेद 20. 35.10 में प्राणों का रक्षक; अथर्ववेद 4.8.3 में बलदायक; अथर्ववेद 6-62.1 में विश्वरूप होकर असुर शक्तियाँ धारण करने वाला; अथर्ववेद 18.1.2 में परमात्मा की शक्ति से शरीरों की रचना करने वाला दिया गया है। ऋ 7.56.24 में तो असुर पुत्र की इच्छा की गई है-

अस्मे वीरो मरुतः शुष्मयस्तु
जनानां यो असुरो विधर्ता।
अपोयेन सुरक्षितये तरेम
अध स्वमोके अभि व स्याम॥

''हे मरुदत्तो हमें उत्तम, बलवान, उत्साही, वीर पुत्र हो जो (**जनानां विधर्ता असुरः**) लोगों का विशेष उत्तम रीति से धारण करने वाला बलवान हो। जिस पुत्र की सहायता से (**सुक्षितये**) हमारा निवास सुखकारक हो और शत्रु का (**तरेम**) पराभव करके हम सब संकटों से पार हो जाएंगे और अपने स्थान पर उत्तम रीति से रहेंगे'' अपना पुत्र असुर हो अर्थात बलवान हो- यह अर्थ है।

5. **रामविलास शर्मा, ''पश्चिम ऐशिया और ऋग्वेद''** दिल्ली, 1994, पृ. 179-180
6. **कैलाशनाथ द्विवेदी, ''ऋग्वैदिक भूगोल''** कानपुर, 1985, पृ. 304
7. **कीथ व मैकडोनेल, ''वैदिक इण्डैक्स'', अनु. राम कुमार राय,** वाराणसी, 1962, भाग 2 पृ. 18
8. **शास्त्री**, पृ. 31, 32; भागवत 4.23.24 के अनुसार महाराज पृथु की अनत्येष्टि मंदराचल पर्वत पर (सोलन जिले में) पर हुई थी। **राणा प्रसाद शर्मा, ''पौराणिक कोष''**, वाराणसी, 1986, पृ. 388
9. वही, पृ. 36, 39
10. **रामशरण शर्मा, ''शूद्रों का प्रचीन इतिहास''** दिल्ली, 1995, पृ. 34
11. **कीथ व मैकड़ोनेल**, भाग-1, पृ. 73 पर ऐत्तरेय ब्रा. 7.17, शांखायन श्रोत्र सूत्र 16.11.

2 में शुनशैप को अजीगृत कहा गया है; काठक संहिता 19.11 में अजीगृत अंगिरस कुल का है।

12. प्राचीन साहित्य में ब्राहमण की बलि का कोई प्रावधान नहीं है। जबकि शुनशैप अंगिरावंशी ब्राहमण अजीगृत का पुत्र था।
13. **कीथ व मैकड़ोनेल**, भाग-2, पृ. 389, 532-33 पर "जैमिनीय ब्राहमण 4.390 के अनुसार वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को जीवित ही अग्नि में फिंकवा देना सौदासों के पतन का कारण बन; ऋग्वेद 3.53 15-16; 21-24 के अनुसार ऐसा विश्वामित्र ने सौदासों का सहारा लेकर किया।
14. **कीथ व मैंकड़ोनेल**, भाग-2, पृ. 309 पर एेत्तरेय ब्राहमण 7.34.9 व 8.24.11 और शांखायन श्रौत सूत्र 16.11.14 में सुदास पैजवन का अभिषेख कर्ता व परुष्णी संग्राम में उसका सहयोगी गुरु वशिष्ठ।
15. **सीतानथ प्रधान**, "**क्रोनोलॉजी ऑफ एन्सीऐंट इण्डिया**" दिल्ली, 1979, पृ. 91-92 पर मई 1915 के ढाका रिव्यू में डा. सुरेन्द्र नाथ सेन ने दक्षिण कौशल और सरस्वती क्षेत्र के सुदासों को एक माना है। पार्टीजर ने जर्नल ऑफ रॉयल ऐशियाटिक सोसायटी 1910 में वैदिक सुदास और पांचाल सुदास को एक ही व्यक्ति माना है। जबकि बाबू सुविमलचन्द्र सरकार सुदास जीवन पैजवन को राम के पूर्वज रघु से मिलाते हैं।

अध्याय – 2
दिवोदास-सुदास पैजवन और राम समकालीन राजनैतिक परिपेक्ष्य

सरस्वती नदी प्रदेश के वध्र्यश्व के पुत्र दिवोदास, ऋग्वेद 6.61.1 में यदु ओर तुव्रशु जनों के और ऋग्वेद 7.19.8 तथा 9.61.2 में पणियों और पारावतों के शत्रु है।[1] दिवोदास ने चालीस वर्षो के लम्बे संघर्ष के उपरान्त शंभर को पराजित किया और उसके सौ गढ़ों को नेस्तनाबूद कर दिया। (ऋग्वेद 3.130.7; 2.19.9; 2.14.6);2 दिवोदास के उपरान्त सरस्वती प्रदेश की राजनीति में सुदास पैजवन का आगमन हुआ। सुदास पैजवन को विद्वान त्रुत्सु दिवोदास का पुत्र, पौत्र या वंशज मानते हैं इसके लिए उनके पास ऋग्वेद 7.18.25 में "**इमं नरो मरुदत; सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदास;**" को आधार है[3] एक अन्य विचार यह भी हो सकता है कि सुदास पैजवन के समर्थक सृञ्जय जनों के त्रुत्सु जनों से सम्बंध मित्रता के थे इसका प्रमाण ऋग्वेद 7.47.22 में सृञ्जय के पुत्र प्रस्तोक, त्रुत्सु वर्ध्याश्व के पुत्र दिवोदास द्वारा गर्ग भारद्वाज को दिए गए दान उल्लेख से मिलता है। एक ही गुरु में आस्था का वर्णन वृहद्देवता 7.124-138 और शांखायन श्रौत सूत्र 16.11.11 में भी है।[4] तुर्वशों और वरशिख के पुत्र वृचीवन्तों द्वारा पराजित प्रस्तोक सृञ्जय और पृथुवंशी अभ्यवर्ती चायमान के लिए वाजिन

भारद्वाज के पुत्र पायु ने यज्ञ किया था। यज्ञ के उपरान्त दोनो राजाओं ने वृचीवन्तों को हरियूपिया के तट पर पराजित किया। (ऋग्वेद 6.27.5-8). पौराणिक वंशावली में सुदास को दिवोदास के बाद का उसका पुत्र, पौत्र या वंशज दिखाया जाता है। जबकि अन्य कई प्रमाण इन तथ्यों के विरोध में हैं। ''प्रतर्दन दिवोदासि'' के रूप में दिवोदास के उत्तराधिकारी पुत्र का वर्णन कौशितकि उपनिषद 26.5 में है, कुलगुरु भारद्वाज जन प्रत्येक स्थान पर प्रर्तदन दिवोदासि या उसका पौत्र क्षत्रश्री के साथ हैं। सबसे बड़ा प्रमाण तो यह है कि परूषणी तट पर हुए दासराज संग्राम में त्रुत्सु जन, सुदास पैजवन के विरोधी पक्ष की ओर है, ऋग्वेद 7.18.15 में कहा गया है **''ये त्रुत्सु लोग इन्द्र के बुरे मित्र व ज्ञानहीन लोग हैं वे इन्द्र के साथ युद्ध करने लगे और युद्ध छोड़ने की इच्छा से वे नीचे की ओर बहते हुए जल के समान भागे, घिर जाने की अवस्था में उन्होंने अपना समस्त धन सुदास पैजवन को सौंप दिया।''** ऋग्वेद 7.18.8 में दासराज संग्राम के घटनाक्रम में वर्णन है कि सुदास पैजवन ने पृथुवंशी अभ्यवर्ती के पुत्र कवि को मारकर पशु की भांति जमीन पर सुला दिया।[5] ऋग्वेद 7.33.6; 83.6-8 और 7.18.13 से पता चलता है कि त्रुत्सु भरतों की शाखा थी और सुदास पैजवन को भरतों और त्रुत्सुओं से भिन्न बताया है।[6] इन तथ्यों से सुदास पैजवन त्रुत्सु नहीं और उनका मित्र नहीं बल्कि उनक शत्रु ही प्रतीत होता है।

ऐसा लगता है कि समान गुरु में आस्था और सृज्जय-त्रुत्सु-पृथु जनों के बीच मित्रता, मिलकर शत्रु से लड़ने के सभी आयाम मात्र एक ही पीढ़ी के बाद पलट गए। यह हो सकता है क्योंकि मित्र सदा मित्र नहीं रहता। किन्हीं परिस्थितियों के चलते अवश्य ही इनके हित आपस में टकराए होंगे। वशिष्ठ, भारद्वाज और भार्गव आदि के साथ विग्रह के बाद सृज्जयों-वीतीहव्यों और भोजों का अश्मेघ यज्ञ अंगिरावंशियों ने किया था (ऋग्वेद 3.53.7)। दासराज संग्राम में सुदास पैजवन द्वारा पराजित शत्रुओं का नेतृत्वकर्ता कुशिक विश्वामित्र इस यज्ञ में सुदास पैजवन का गुरु और ''होता'' है। इसलिए परिस्थितियां बदलती रहती हैं और इतिहास बनता रहता है ऐसी ही किसी परिस्थिती के वश **सुदास पैजवन, त्रुत्सु दिवोदास के बाद सत्ता में आया अवश्य, किन्तु यह उसका दायाद अधिकार नहीं था।** दिवोदास का दायाद और औरस उत्तराधिकारी तो प्रतर्दन था (काठक संहिता 21.10 में प्रतर्दन दिवोदासि) कुलगुरु भारद्वाज जन प्रतर्दन के साथ हैं और उसके उपरान्त उसके पुत्र क्षत्रश्री के साथ। तब सुदास पैजवन कौन है?... दिवोदास का औरस उत्तराधिकारी न होते हुए भी वह सत्ता में कैसे आ गया, उसकी वंश परम्परा क्या है? वंश परम्परा तो उसके गुरु और सहयोगी वशिष्ठ की भी नहीं मिलती... ऋग्वेद 7.33.10-13 में वशिष्ठ, उर्वशी और मित्र वरुण का पुत्र है। जबकि पुराणों में वह ब्रहमा का पुत्र है अर्थात वहाँ वह प्रतिष्ठित है। किन्तु ऋग्वेद में सुदास पैजवन के काल से पहले वह वर्णित क्यों नहीं? सरस्वती नदी के प्रदेश में त्रुत्सु राजवंश में एक विचित्र परम्परा देखने को मिलती है कि राजकुमारों में से एक राजा बने और दूसरा अन्य ऋषि हो जाए। हालांकि यह नियम कहीं लिखा हुआ नहीं मिलता फिर भी यह उचित नहीं लगता, इसका कारण सम्भवत यह हो सकता है कि ब्राहमण, याजक या पुरोहित की भूमिका तब राजपरिवार के ही सदस्य निभाते होंगे किन्तु त्रुत्सुओं के कुलगुरु तो भारद्वाज जन हैं, वे पुरोहित भी है और सलाहकार भी....। तब यह विचित्र परिपाटी राजा की मृत्यु पर उत्तराधिकार के लिए राजकुमारों में संघर्ष की सम्भावना को निर्मूल करने हेतु स्थापित की गई होगी।.... कारण चाहे जो भी हो, त्रुत्सु वध्र्यश्व के उपरान्त उसका एक पुत्र दिवोदास तो राजा बना और दूसरा सुमित्र ऋषि हो गया। इसी प्रकार दिवोदास का भी दूसरा पुत्र पुरूच्छेप

ऋषि हो गया। (ऋग्वेद के प्रथम मंडल में 127 से 129 तक के सूक्त का रचियता बना और अपने पिता दिवोदास द्वारा शम्भर के वध को वर्णित किया) और बड़ा पुत्र प्रर्तदन राजा बनता. ...। किन्तु प्रर्तदन राजा नहीं बन सका.... सुदास पैजवन ने त्रुत्सु सत्ता पर बलात अधिकार कर लिया था।[7]

सुदास पैजवन ने त्रित्सु दिवोदास की सत्ता पर बलात अधिकार किया था, इस बात के पूरे प्रमाण पुराणों के हैहय वंश और काशी के राजवंश में मिलते हैं अथर्ववेद के कथन **''भृगु हिंसित्वा सृञ्जया वीतीहव्या पराभवन''** से पता चलता है कि वीतीहव्य सृञ्जय ही पुराणों का वीतीहोत्र हैहय है। सहत्रबाहु, सुदास पैजवन हैं। तालजंघ शब्द त्रञ्जय या सृञ्जय का अपभ्रंश है। अर्जुन, आर्जुनायन प्रदेश का व्यक्तिवाचक संबोधन है। काशी वंश विवरण के अन्त में कहा गया है कि दिवोदास ने भारद्वाज ऋषि के सहयोग से सत्ता दुबारा प्राप्त की, वास्तव में यह सत्य नहीं है। सरम्वती नदी प्रदेश में त्रित्सु, सत्ता में वापिस कभी नहीं आ सके। दिवोदास और उसके पुत्र प्रतर्दन को काशी के विवरणों में विजेता की तरह पेश करना ''कलम'' द्वारा जीत प्राप्त करने का प्रयास मात्र है।

काशी के पौराणिक वंश विवरण में दिवोदास के कुलगुरु भारद्वाज हैं, वे दिवोदास के लिए उसी प्रकार से यज्ञ करते हैं जैसे वैदिक विवरण है कि वृचीवन्तों से पराजित अभ्यवर्ती चायमान और प्रस्तोक सृञ्जय के लिए भारद्वाज के पुत्र पायु ने यज्ञ किया (ऋ 6.17.5-8) यज्ञ के उपरान्त दोनों राजाओं ने वृचीवन्तों को हरियूपिया नदी के तट पर पराजित किया था।[8] इसी प्रकार काशी के दिवोदास भी यज्ञ के बाद हैहयों को पराजित कर अपना राज्य वापिस जीत लेते है। दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने हैहय वीतीहोत्र को उसकी राजधानी में घुस कर हराया. ... वीतीहोत्र अपने कुलगुरु भार्गवों के आश्रम में जाकर ऋषि हो गया, इस प्रकार उसकी जान बची। पुराणों के इस विवरण में कोई सच्चाई नहीं, इस काल्पनिक कथा का आधार भले ही वैदिक घटनाएं हों किन्तु सरस्वती प्रदेश में त्रुत्सु दिवोदास और उसका पुत्र प्रतर्दन सृञ्जयों से अपना राज्य वापिस कभी नहीं जीत सके। काशी के पौराणिक विवरण में दिवोदास और प्रतर्दन की विजयों और भार्गवों की शरण में अंतिम हैहय नरेश के जाने का वर्णन करना वही..... कलम से जीत हासिल करना है।

काशी के पौराणिक विवरणों में दिवोदास की पत्नी का नाम दृष्द्वती और शुत्र का नाम शम्भर होना संकेत करता है कि दिवोदास, केवल एक ही था और वह सरस्वती प्रदेश का वैदिक दिवोदास था। काशी का दिवोदास और उसका वंश तथा विवरण कल्पना है।

हैहय और तालजंघ दोनों ही शब्द सृञ्जय शब्द से ''ऋ'' का लोप कर ''ल'' और ''स'' को ''ह'' में परिवर्तित कर गढ़े गए हैं। सहस्त्रबाहु अर्जुन निस्संदेह सुदास पैंजवन है। अर्जुन शब्द आर्जुनायन प्रदेश (सृञ्जयायन) होने का द्योतक हैं। पुराणकार ने आत्याचारी सुदास पैजवन की सहयोगी सृञ्जय जाति को आधार बनाकर ''हिरण्य'' शब्द की सृष्टि कर एक और काल्पनिक वंश एवं कथा भी गढ़ी। हिरण्यदैत्य नामक कोई जाति या वंश भारत भूमि पर कभी नहीं हुआ। सृञ्जयजन ही हिरण्य थे, उनका निवास स्थान सृञ्जयाना या हिरण्याणा का अपभ्रंश शब्द है आज का हरियाणा। सृञ्जयों या हिरण्यों के निवास का एक नाम पाताल आज का पटियाली नदी क्षेत्र है। जो घघ्घर नदी की सहायक है घघ्घर का पौराणिक नाम हिरण्यवती भी है। हिरण्यमयवर्ष शिमला कसौली का पर्वतीय क्षेत्र था।

वशिष्ठ मित्र का अदभुत रूप से जन्म लेने वाला पुत्र है। ऋग्वेद 10.69.1 7-8 में त्रुत्सु सुमित्र के परिवार ''सौमित्र'' का उल्लेख है[9] हो सकता है वशिष्ठ, सौमित्र हो, किन्तु अदभुत

रूप से जन्म (?) लेने के कारण उसे न तो पिता का नाम मिल पाया और न ही वंश का नाम। ऋग्वेद 10.69.3-5 के अनुसार सुमित्र ने पिता वध्र्यश्व के लिए अग्नि से प्रार्थनाऐं रचीं।[10] उधर वशिष्ठ भी अनगिनत ऋग्वैदिक मंत्रों, सूक्तों का लेखक बना.... सम्भवतः उसकी शिक्षा-दीक्षा और यहाँ तक कि जन्म भी सुमित्र के आश्रम में हुआ हो.... अपसरा उर्वशी के गर्भ से....; जो आश्रम में ऋषियों की सेवा हेतु आती रही होगी.... ऐसे में दिवोदास... वशिष्ठ का पिता समान, चाचा या ताया ही तो लगा... तभी तो ऋग्वेद 7.18.25 में वशिष्ठ कहता हैं..... **''इमं नरो मरुदतः सश्चतानु दिवोदास न पितर सुदासः''** कि हे मरुदतो यह नर (मेरे) पिता समान दिवोदास नहीं है अपितु सुदास है.... अर्थात यहाँ वह दिवोदास को सुदास का पिता समान नहीं अपितु अपना पिता समान कहता है। और भी अनगिनत स्थानों पर जहाँ-जहाँ वशिष्ठ कहते हैं कि त्रुत्सुगण तुम्हारी पूजा करते हैं या त्रुत्सुगणों की अर्भ्यतना स्वीकार करो, वहाँ-वहाँ वह स्वयं अपने या अपने परिवार के सम्बोधन में यह शब्द प्रयोग करता है......।[11] सुदास पैजवन का दिवोदास से सम्बंध तो मात्र शत्रुता का है, पुत्र-पौत्र या वंशज का नहीं। सुदास तो भरत राजा देववात का नाती (पुत्री का पुत्र) है, ऋग्वेद 7.18. 22 में **''द्वै नप्तुर्देववतः शते गोर्द्वारथ वधुमन्ता सुदासः''** और इसीलिए उसे देववात के वंशज सृञ्जयों का समर्थन भी प्राप्त होता है। पिता की ओर से सुदास अंगिरावंशी वेन है। काम्यकवन में निवास करने वाली छोटी सी वेन जाति का नेता था वह। वशिष्ठ ने पाँच अंगिरा पृथु वेन जातियों के संयुक्त नेता के रूप में उसका अभिषेख किया, तब वह कहलाया सुदास पैजवन!

वशिष्ठ को उसके भाई अगस्त्य ने त्रुत्सु राजाओं से मिलवाया था। किन्तु इस मुलाकात का कोई विशेष लाभ वशिष्ठ को नहीं हुआ। त्रुत्सुओं के पास इस काम के लिए कुलगुरु भारद्वाज जन थे। वशिष्ठ निराश हो गया... बहुत सम्भव है कि अद्‌भुत रूप से जन्म लेने के कारण वशिष्ठ और उसके ज्ञान की उपेक्षा की गई; दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि वशिष्ठ त्रुत्सु राज्य में जो मान सम्मान या पद पाना चाहता होगा, वह उसे न मिला हो, क्योंकि गुरु या पुरोहित पद तो वहाँ भारद्वाजों को पहले से ही प्राप्त था। सम्भवत वह समझ गया था कि यदि उसे सरस्वती प्रदेश की राजनीति में अपनी पहचान बनानी है तो उसे अपने लिए एक राजा का निर्माण करना होगा। वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धती के भाई, कश्यपवंशी पर्वत और नारद दोनों ही सृञ्जय राजा सहदेव के पुरोहित (ऐत्तरेय ब्रा. 7.34.9)[12] और अभिषेख कर्ता थे और सुदास सृञ्जयों का भान्जा था। वशिष्ठ और सुदास पैजवन की मुलाकात यहीं हुई होगी....। वशिष्ठ के भागीरथ प्रयत्नों से सृञ्जयों का समर्थन भी सुदास को मिला... और सुदास पैजवन ने सरस्वती भूमि से त्रुत्सु सत्ता को उखाड़ फैका...। इसके बाद सुदास पैजवन ने अपने जीवन में शत्रु ही शत्रु बनाऐ, जीवन भर वह न तो खुद चैन से बैठा और न ही अपने शत्रुओं को चैन से बैठने दिया। परुष्णी तट पर दासराज संग्राम में अनु, द्रुहयु, यदु, पुरु, तुर्वसु, पक्थ, अलीना, भलनास, विषानिन, शिवि, त्रुत्सु, पृथु, भार्गव, कौशिकवसु, शिम्यु आदि दो दिशाओं (विकर्णो-पूर्व और पश्चिम) के इक्कीस राजाओं को सुदास पैजवन ने पराजित किया। (ऋग्वेद 7.18; 7.20.2; 25.3; 32.10; 33.3; 64.3; 83.1; 83.8 अर्थवेद 10. 128.12)[13] ऋग्वेद के अनेकों पृष्ठ दासराज संग्राम के इन विवरणों से भरे पड़े हैं।

इसके बाद वह पूर्व में यमुना तट की ओर बढ़ा। दिवोदास पहले ही सोम्ब नदी के सोम्बरों को उनके 100 नगरों सहित नष्ट कर चुका था। सुदास ने कुछ और आगे बढ़कर अजनाभखण्ड के अजः शिग्रु और यक्षुव जनों को कुचल दिया (ऋग्वेद 7.18.18-19, 13.

3; 83.4)[14] हो सकता था कि सुदास पैजवन कुछ और आगे बढ़ता किन्तु वह एक अजीब सी समस्या को लेकर अपने गुरु वशिष्ठ से संघर्ष में उलझ गया।

सुदास-वशिष्ठ संघर्ष की भूमिका व कारण

वशिष्ठ ने उर्वशी के गर्भ से अदभुत रूप से जन्म लिया था, इस कारण उसे उसके पिता और वंश का न तो नाम ही मिल पाया ओर न ही वह सरस्वती नदी प्रदेश में किसी अच्छे भविष्य की कल्पना कर सकता था। त्रुत्सु राजाओं से मुलाकात के बाद तो निराश, क्षोब और ग्लानि से भरा वशिष्ठ, प्रदेश की उस समूची सामाजिक व्यवस्था को बदल देना चाहता था जो उनमुक्त यौन संबंधों और सामाजिक व्यवहार से वशिष्ठ और अगस्त्य जैसे बालक उत्पन्न करते हों। उसे वह नियमों के तहत लाना चाहता था...। स्त्री का मिलन, चाहे वह किसी भी रूप में हो ''राक्षसी, गन्धर्व, पैशाचिक, अनुमति से, बिना अनुमति के, क्रय करके, दान में देकर'' वह विवाह ही माना जाएगा, ताकि उत्पन्न संतानों को उनके नाम, वंश, औरसता, और अधिकार मिल सकें। हालांकि इसके लिए वर्ण व्यवस्था के सभी कारक समाज में पहले से ही मौजूद थे किन्तु वे वंशानुगत और मर्यादित नहीं थे बल्कि कर्म प्रधान थे। सुदास और वशिष्ठ का मेल या सन्धि दोनों की एक जैसी परिस्थिति के वश हुई थी। और अब जबकि सुदास पैजवन को उसकी सभी उँचाई प्राप्त हो चुकी थी... बारी वशिष्ठ की इच्छाओं की आती थी, और वशिष्ठ की इच्छा थी वंशानुगत वर्ण व्यवस्था और नई सामाजिक मानव संहिता/मनु संहिता....।[15] इसके लिए अवसर भी था क्योंकि उसका कृपापात्र सुदास पैजवन परुष्णी नदी से लेकर यमुना नदी तक विशाल प्रदेश का सार्वभोम सम्राट बन चुका था।

यह उचित था कि सुदास पैजवन का साम्राज्य भारतीय इतिहास में पहली बार सबसे बड़ा था किन्तु इतने बड़े साम्राज्य की ढेर सारी समस्याएं भी तो इतिहास में पहली बार ही थीं। सुदास पैजवन महसूस कर रहा था कि इस समय वर्ण व्यवस्था को वंशानुगत करना उसकी आवश्यकता नहीं है। अपितु आवश्यकता है कि बाहरी सीमाओं पर उसकी सुरक्षा की। आन्तरिक विद्रोहों से निपटने के लिए क्षमता प्राप्त करने की....। और इसके लिए आवश्यकता थी क्षत्रिय कार्यों को बढ़ावा देने की, अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण करने की, एक विशाल सैन्य व्यवस्था बनाने की, जबकि गुरु वंशिष्ठ उस समय भार्गव आदि ब्राहमंण जातियों के साथ मिलकर वंशानुगत वर्णव्यवस्था और मानव संहिता के नियम निर्धारित करने में लगे थे। सुदास पैजवन ने दासराज संग्राम के पराजित नेता विश्वामित्र कुशिक (ऋग्वेद 3.33.5) की नियुक्ति अपने क्षत्रिय गुरु और सलाहकार के पद पर कर ली। बड़े साम्राज्य की बड़ी समस्याओं से निपटने के लिए ढेर सारी जातियों-समाजों को व्यवस्थित कर उन्हें एक शासन व्यवस्था के अन्तर्गत लाने के लिए दो गुरुओं की आवश्यकता तो उसने महसूस की ही होगी, वैसे भी ऐसा करके सुदास पैजवन न केवल अपनी क्षत्रिय, सैन्य सम्बंधी समस्याओं से मुक्ति पा सकता था बल्कि उन जातियों के विद्रोह की आशंका से भी मुक्त हो सकता था जिन्हें वह दासराज संग्राम में पराजित कर चुका था, क्योंकि वे जातियाँ अपने नेतृत्वकर्ता को अपने हितों के संरक्षक के रूप में एक प्रमुख पद पर पाऐंगी।

विश्वामित्र को गुरुपद पर आसीन करना सुदास पैजवन की आवश्यकता थी, दूरदर्शिता थी या मूर्खता, किन्तु गुरु वशिष्ठ का अहं इसे स्वीकार नहीं कर पाया कि एक पराजित नेतृत्वकर्ता उसके बराबर खड़ा हो और वह भी क्षत्रिय हो। उसने विश्वामित्र को नकार दिया। विश्वामित्र ने भी वशिष्ठ की प्रत्येक नीति और प्रत्येक कदम का विरोध किया। सुदास पैजवन ने विश्वामित्र का समर्थन किया। विश्वामित्र और वशिप्ठ की ईर्ष्या, वैमनस्य में बदल गई और

वैमनस्य संघर्ष में। और संघर्ष भी इतना बढ़ा कि विश्वामित्र ने सौदासों/सुदास के सैनिकों का सहारा लेकर वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को अग्नि में जीवित जलवा दिया....! शक्ति की हत्या की कथा पारासर की माता द्वारा परासर को सुनाने का विवरण पुराणों में है।[16]

वर्ण व्यवस्था के प्रश्न के चलते हुए ब्राहमणवाद के विरुद्व संघर्ष में पड़ोसी राजा सत्यव्रत ने विश्वामित्र का पक्ष लिया। ब्रहमणों के विरुद्व कार्य करने के कारण उसे एक बार पहले ही पिता के समय राज्य से निष्कासित होना पड़ा था। ब्राहमणों के बढ़ते प्रभाव और राज्यकाज में हस्तक्षेप से पुरु राज्य के सत्यवृत के हृदय में उनसे विद्रोह की भावना रही होगी। इससे पहले भी राजा अनरण्य को गुरु को खुश करने के लिए अपनी कन्या दधीचि ऋषि के वृद्व पुत्र पिप्पलाद को ब्याह देनी पड़ी थी। वशिष्ठ ने सत्यव्रत और उसके सहयोगी अंगिरा वंशी अजीग्रत ऋषि के तीनों पुत्रों शुनोलागूल, शुनपुच्छ और शुनशैप को चांडाल घोषित कर अपमानजनक नाम (अर्थ कुत्ते की पूँछ) दे दिए। सम्भवत : सत्यव्रत भाग निकला, किन्तु चांडाल घोषित किए गए शुनशैप की बलि का आयोजन किया गया। वरना किसी ब्राहमण की बलि देने का कोई प्रावधान प्राचीन साहित्य में नहीं मिलता। विश्वामित्र ने हस्तक्षेप कर यज्ञ विध्वंश किया। शुनशैप को बचा कर उसके स्थान पर हाथ पड़ गए शक्ति की ही बलि दे दी गई। वशिष्ठ ने विश्वामित्र के समर्थक सत्यव्रत को चांडाल बनाया था, बदले में विश्वामित्र ने वशिष्ठ के समर्थक हरिश्चन्द्र को चांडाल का भी दास बनाकर शवदाह का कार्य करवाया। पुराणवर्णित सत्यवादी हरिश्चन्द्र की कथा की प्रारूप सृज्जयों/ सौदासों पर ब्राहमणवाद की पूर्ण विजय के बाद लिखा गया। ताकि इस वशिष्ठ समर्थक को आने वाले समय में भावनात्मक सहानुभूति मिल सके किन्तु जैसा कि कथा के अंत में कहा गया- लगता नहीं कि हरिश्चन्द्र को पुरुराज्य की सत्ता दुबारा प्राप्त हो सकी हो। रोहतक को रोहिताश्व द्वारा बसाया गया नगर माना जाता है। विश्वामित्र द्वारा किए गए यज्ञ विध्वंस से जान बचाकर भागे वशिष्ठ संवर्ण के यहाँ चले गए।

वैदिक साहित्य में न सम्वर्ण है और न हस्तिनापुर। सुदास पैजवन ने यमुना तट पर अज, शिग्रु और यक्षुव जनों को पराजित किया था। अज.... अजनाभखण्ड की जाति है और अजमीढ सम्भवत: स्थानवाचक नाम...। पुराणों में ऋक्ष, अजमीढ का पुत्र है यह भी स्थानवाचक या जातिवाचक नाम है... सम्वर्ण इसी ऋक्ष का पुत्र है सम्वर्ण और शम्भर में साम्य प्रतीत होता है। शम्भर को दिवोदास ने पराजित किया था। पुराण कहते हैं कि सुदास सम्वर्ण को एक बार पराजित कर चुका था। वशिष्ठ सिन्धु नदी/हिण्डन के वनों में निर्वासित जीवन बिताते सम्वर्ण के पास गए और उसे सुदास पर चढ़ा लाए.... सुदास पराजित हुआ और मारा गया।[17] अब यदि अजमीढ का अज जनों से साम्य है तो अजों को सुदास पैजवन ने पराजित किया था, इसका अर्थ यही हुआ कि सम्वर्ण अगला शम्भर अर्थात सोम्ब नदी प्रदेश के विस्थापित जनों का नेता था और अपने क्षेत्र अजनाभखण्ड के अजजनों का राजा था।

इतिहास का भूला हुआ पृष्ठ-सरस्वती प्रदेश के वैदिक राजा थे राम दशरथी

ऋग्वेद 10.93.14 में "**प्रतदु:शीमे प्रथवाने वेने प्ररामे वोचमसुरे मधवस्तु**" से पता चलता है कि राम सरस्वती प्रदेश के वैदिक राजा थे। दुशीम, पृथवान और वेन के उपरान्त उस समय, जब ऋग्वेद का दसवाँ मण्डल लिखा जा रहा था... राम का समय था। पुराणों के अनुसार वेन, पृथु-अंगिरा वंशी है अत्याचारी, नास्तिक ओर क्षत्रिय कर्मों को बढ़ावा देने वाला वर्णित है। इस पौराणिक वेन का आधार सुदास पैजवन ही है क्योंकि वही है जिसका सहारा लेकर विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को अग्नि में जीवित जलवा दिया था

(ऋग्वेद 3.53.15-16; 21-24), शक्ति की हत्या सुदास के पतन का कारण बनी (जैमिनीय ब्रा. 2.390); वशिष्ठ ने पुत्र की हत्या का प्रतिशोध लिया (तैत्तरीय ब्रा. 7.4.7.1; कोशितकि ब्रा. 4.8),18 वही है जिसके सहयोगी सृज्जय-वीतीहव्यों ने भार्गवों को त्रस्त किया था (अर्थवेद 7.18-11) और ब्राहमणों को त्रस्त करने के कारण सृज्जयों का पतन हुआ (अर्थवेद 5.19.19)[19] बाद में भार्गवों ने वीतीहव्यों को पराभूत किया-

भृगु हिंसित्वा सृज्जया वीतीहव्या पराभवन (अथर्ववेद 5.19.1)

सृज्जय वीतीहव्य और भार्गवों का यह संघर्ष पौराणिक हैहय वीतीहोत्र की कथा का आधार है। सृज्जय जन ही वे हैहय थे, जिन्होंने काशी के दिवोदास का राज्य छीना था। इस पौराणिक कथा का आधार है- सुदास पैजवन द्वारा त्रुत्सु सत्ता पर बलात अधिकार करना। वही है जिसने ब्राहमणों द्वारा लागू की जा रही वंशानुगत वर्ण व्यवस्था का विरोध किया, जिसके कारण वशिष्ठ-विश्वामित्र वैमनस्य बढ़ा, संघर्ष -अराजकता-अनिश्चितता-विप्लव की अग्नि में सम्पूर्ण सरस्वती प्रदेश झुलसने लगा। हालांकि प्राचीन ग्रन्थों का कथन है कि वर्ण व्यवस्था में अड़ंगा वेन ने ही तो लगाया था।[20] सुदास पैजवन जो काम्यक वन में निवास करने वाली पाँच वेन जातियों का नेता था, पृथु-अंगिरावंशी ही तो है। वह अंगिरा कुल का है तभी उसे नीचा दिखाने के लिए हरिश्चन्द्र के यज्ञ में एक अंगिरा वंशी शुनशैप की बलि का प्रयोजन किया जाता है। इस प्रकार पौराणिक वेन और हैहय-काशी वंशों के विवरण से हमें पता चल जाता है कि हैहय सहस्त्रबाहू और पृथुवेन, सुदास पैजवन ही है और सुदास पैजवन ही ऋग्वेद 10.93.14 में पृथुवंशी वेन है।

पर्सियन इतिहास ग्रन्थों से **गोविन्द कृष्ण पिल्लै** एक उद्वहरण देते हैं (ई.वि.रि. बुक-5 में प्रकाशित ट्रे.हि.ई. में पृ. 74 से 77) कि बेबीलोन की रानी सेमिरनीस ने छ: लाख सैनिकों के साथ सिंध नदी के पार एक अभियान किया था। जिसे सतहबोस ने विफल कर दिया, **अजीत कुमार सिंह** सतहबोस को हैहय तालजंघ से मिलाते हैं।[21]

किन्तु तालजंघ.... त्रज्जय अथवा सृज्जय का अपभ्रंश है और सतहबोस स्पष्टत: ... सुदास पैजवन। ऐसे में परुष्णी तट पर लड़े गए दासराज संग्राम में भलनास शब्द बेबीलोनियन के लिए प्रयुक्त हुआ होगा और विशानिन, पक्थ, अलीना, सेमिरनीस की सेना में विभिन्न स्थल और जातियों के सैनिक रहे होंगे।

ऋग्वेद 10.93.14 सूक्त में वेन के उपरान्त अगला नाम राम का है.....।

अर्थत राम का सम्बंध वर्तनाम अयोध्या से नहीं अपितु नदी प्रदेश से था। सुदास पैजवन की मृत्यु के उपरान्त पूर्व में राक्षी नदी क्षेत्र के राक्षसों ने अवसर देख कर सीमाओं का अतिक्रमण किया! गुरु विश्वामित्र सृज्जयों के केन्द्रीय राजा के रूप में राम को लाए! रामायण में यह घटना वर्णित है किन्तु वहाँ कथानक और कारण दूसरा है वह कवि की कल्पना है।

घघ्घर की एक उपरी सहायक नदी कौशल्या का क्षेत्र कौशल रहा होगा जो रामायण में उत्तर कौशल कहा गया है, कसौली इसी कौशल का अपभ्रंश लगता है। दक्षिण कौशल, पटियाला जिले के आसपास का क्षेत्र था, पटियाला जिले में घुरम को राम की नन्साल कहा जाता है।[22] सरस्वती तट पर मिली सिन्धु घाटी की मोहरों के अध्ययन के बाद प्रसिद्ध पुरातत्वविद **एम.बी.एन. कृष्णराव** इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि राम की जन्मभूमि वर्ततान अयोध्या में नहीं बल्कि हिसार जिले के वनवाली में थी।[23]

राम ने राक्षी नदी प्रदेश के रक्षों को पीछे धकेल दिया। ब्राह्मणों, गुरुओं, पराजित राजाओं और असन्तुष्ट प्रजाजनों के सहयोग से सम्वर्ण, वशिष्ठ ने सुदास पैजवन को पराजित किया

था... और तुरन्त ही सम्वर्ण, सुधन्वा, प्रतर्दन, राक्षस रावण, बलि पुत्र वाणासुर आदि शैव्यजनों ने वशिष्ठ, भार्गव, भारद्वाजों आदि के नेतृत्व में आगे बढ़ कर (सृज्जयों को पूर्णतया कुचलने के लिए) सृज्जय राजा सोमक पर घेरा डाल दिया। **ऋग्वेद का ''सृज्जय सोमक साहदेव्य'' ही पौराणिक ''शीरध्वज जनक विदेह'' का आधार है।**[24] शैव्यों का घेरा जो सोमक के राज्य पर पड़ा, पौराणिक शिव धनुष है। इस घेरे को राम ने तोड़ा और सृज्जय को संकट से उबार लिया।[25]

इस प्रकार राम सरस्वती प्रदेश में सृज्जयों, वीतीहव्यों, वेनों, निषादों, अंगिरा-पृथुओं के संयुक्त राजा बने।.... सीता सरस्वती का क्षेत्र राम का हो गया... किन्तु सबसे बड़ा संघर्ष तो अभी बाकी था।

सीता जो एक नदी थी, मदराचल और गन्धमादन पर्वतों के बीच बहने वाली शैलोदा ही थी। केतुमाल वर्ष से होकर भद्राश्ववर्ष की ओर पूर्व वाहिनी जब युगन्धर प्रदेश में आती तो शैलोत्सीता कहाती थी। प्रस्त्रवण पर्वतों (शिवालिक और मसूरी पर्वतमाला के बीच) से निकलने के कारण यही प्रस्त्रा या पलक्षा थी मैदानों में उतरकर पश्चिमवाहिनी होती तो धन-धान्य विद्या-बल की दायिनी सरस्वती थी..... पलक्षविणी-लक्ष्मी थी... लक्ष्मी चंचला होती है.... सरस्वती भी थी....। तभी तो सरस्वती ने अपना बहाव मार्ग बदला..... यह राक्षी नदी के रक्षों की करतूत थी या प्रकृति का खेल.... किन्तु सीता चली गई। मैनाक पर्वत (शिवालिक पर्वतमाला) की तराई में जगाधरी के उत्तर पूर्व का सम्पूर्ण क्षेत्र विशाल समुद्र जैसे शीतोदसर में बदल गया। वर्षाकाल के उपरान्त जब बाढ़ का पानी कम हुआ तो पता लगा कि सीता रक्षों के राज्य में चली गई। सात दिनों के अथक प्रयासों से पत्थर की एक विशाल संरचना बनाकर सीता को उसके पुराने बह्राव मार्ग पर लाया गया। रक्षों ने इसका विरोध भी किया किन्तु विजय अन्ततः राम की हुई।

राक्षी नदी क्षेत्र के रक्षों की लंका

लंका दक्षिण में थी, किन्तु दिशाओं का सापेक्ष बिन्दु सुमेरु था... सिरमौर की उत्तरी सीमा का चूड़ाधार शिखर तब सुमेरु था। शिवालिक पर्वत माला मैनाक थी और गंगा यमुना दोआबे में यही शिवालिक पर्वतमाला ऋक्ष पर्वत था जिस के आसपास के क्षेत्रों में वानर, ऋक्ष, भल्लूक, पिशाच आदि टोटेमिक जातियाँ थीं। यही ऋक्ष पर्वतमाला ऋष्यमूक थी। सुग्रीव की आज्ञा से हनुमान ऋक्ष पर्वत से जाकर मलयगिरी (मसूरी पर्वतमाला) पर आकर पहली बार राम से मिले थे जो सीता (नदी) को खोज रहे थे। ऋष्यमूक या ऋक्ष पर्वत जिस पर कहीं किसकिन्धा खश-वानराओं की बस्ती थी अवश्य ही गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वतमाला थी। रामायण में कहा गया है कि राम ने किसकिन्धा पर खड़े होकर हिमालय के दर्शन किए थे। वानरों और रक्षों में निकटता के कारण शत्रुता के ही सम्बंध थे। पुराणों में वानरों को देवताओं और यक्षिणियों की संतानें कहा गया है। कथन है कि रावण द्वारा यक्षों की पराजय के उपरान्त ब्रहमा ने देवतओं को आदेश दिया कि वे यक्षिणियों के गर्भ से वानर उत्पन्न करें।[26] हुआ यह होगा कि यमुना क्षेत्र में यक्षों को पहले तो सुदास पैजवन ने पराजित किया (ऋग्वेद 7.18.18-19; 13.3, 83.4) उसके बाद हिमाचल प्रदेश की ओर से आए खशों की एक अन्य शाखा रक्षों ने पराजित यक्षों के बीच बसने का अवसर देखा। पहले पहले तो वे विस्थापितों की भांति आऐ और बहुत संभव है कि वे सुदास पैजवन के आक्रमण से भी पहले इस क्षेत्र में आकर यक्षों के दासों, सेवकों, कर्मकारों के रूप में बसे हों और युद्व के समय में मूकदर्शक बने रहे हों। हो सकता हे बहुत छोटे स्तर पर वे यक्षों की ओर से लड़े

भी हों, किन्तु थोड़े और प्रभावहीन होने के कारण उनका नाम पराजित जनों के साथ न जुड़ा हो, यक्षों की पराजय के उपरान्त उन्होंने उत्थान का अवसर देखा.... और प्रभावशाली होकर राज्य की रक्षा का भार अपने उपर ले लिया अन्ततः उन्होंने यक्षों को मार भगया। यक्षों को अपनी विलासिता और समाज में घुलते-मिलते जा रहे रक्षों को हल्के समझना मंहगा पड़ा। यक्षजन अपने ग्राम गोत्रों, पशु-कृषि-धन से विस्थापित कर दिए गए। पुरुष यक्ष लगभग समाप्त हो गए थे किन्तु यक्ष स्त्रियों ने निकटवर्ती जातियों (ऋक्ष पर्वत की जातियों) के पुरुषों के संसर्ग से सन्तानें उत्पन्न की। इस प्रकार यक्षिणियों से वानर, ऋक्ष, भल्लूक आदि उत्पन्न हुए और रक्षों अथवा यक्षों का संघर्ष एक पीढ़ी बाद वानरों और रक्षों के संघर्ष में बदल गया। इस तथ्य का दूसरा पहलू यह भी है कि ऋक्ष पर्वत क्षेत्र में बसी ऋक्ष, भल्लूक/भालू, वानर, पिशाच, अप्सरा आदि टोटेमिक जातियों के मूल में कहीं न कहीं यक्ष जाति थी और यक्षों में समाज मातृ सत्तात्मक था। उक्त घटना चक्र यमुना नदी के समीप उसी क्षेत्र में हुआ जहाँ सुदास पैजवन ने यक्षों को पराजित किया था। रक्ष-यक्ष-वानर घटना चक्र से लंका के जगाधरी के दक्षिण में होने की धारणा को बल मिलता है।

यक्षों से भी पूर्व राक्षी नदी क्षेत्र पर केतुमती नदी (वर्तमान गिरीक्षेत्र) के केतुमालव/तिग्मकेतु जनों का प्रभाव था, सुमाली, माली और माल्यवान जो कि रावण के मातृपक्ष के लोग कहे गए हैं। के नामों से इनके मालव जन होने की धारणा बनती है। बाद के घटना चक्र में मालव और रक्ष सिन्धु-सतलज क्षेत्र की ओर पलायन कर गए जहाँ हम इन दो मित्र जातियों को मालवों और क्षुद्रकों के रूप में देखते हैं। वहाँ भी दोनों जातियाँ मित्र थी।

यक्ष जन कैलाश पर्वत क्षेत्र में थे। कैलाश आज कालेसर पर्वत है इसके उत्तर में डंडा सुखचैनपुर, दक्षिण में ड़ंड़ा सहजादवाला और गिरिनदी-यमुना नदी के बीच उत्तरीतट पर डंडा अम्बोआ नाम का सघन वन तब दण्ड़क वन था। मस्कारा और बूढ़ी यमुना नदियों के पर्वतीय भागों में साल का वृक्ष भी है जिन्हें उखाड़ कर वानर राक्षसों पर फैंकते हैं जबकि वर्तमान लंका में साल का वृक्ष नहीं मिलता।

लंका को स्वर्ण का बताया जाता है यह अतिश्योक्ति है, विश्व का कोई भी नगर, कस्बा या गाँव सोने का नहीं हो सकता-असल में लंका स्वर्णप्रस्थ क्षेत्र में थी। जगाधरी और उसके दक्षिण का क्षेत्र स्वर्णप्रस्थ कहलाता था। इस क्षेत्र में सोनीपत उसी स्वर्णप्रस्थ का अपभ्रंश हैं।

रावण द्वारा पराजित की गई जातियाँ-यक्ष, भूत, प्रेत, पिशाच, यम, नाग, गन्धर्व सभी जगाधरी के आसपास के क्षेत्रों में सिद्व होती है।[27]

राम सीता को वपिस लाए... सूखा और अकाल भोगते जनों की कृषि की अधिष्ठात्री देवी आई.... सरस्वती आई। धन-धान्य, बुद्विबल, सुख-वैभव आया... लक्ष्मी आई...। घर-घर दीप जलाने की परम्परा शुरू हुई। राम को उसके इस महान दुर्घुर्ष कार्य के लिए वसुन्धरा/बहुधान्यक के सर्वाधिक पूज्य देवता विष्णु के अवतार का पद मिला। किन्तु प्रकृति ने फिर पुराना खेल खेला... नदी में कम पानी और स्थान को लेकर धोबी समुदाय में संघर्ष हुआ होगा। इस बार दोष लगाया गया कि एक वर्ष राक्षसों के राज्य में रहने के कारण सीता पवित्र नहीं रही-कथाओं का स्वरूप चाहे जो भी रहा हो, सत्य को न समझकर, इस बार भी यह रक्षों की करतूत मानी गई। इस बार उनके विरुद्व अभियान पर शत्रुघ्न को भेजा गया। शत्रुघ्न ने रक्षों को पराजित किया (लवण/रावण एक पद था, इस जातियों के नेता मिलकर इस पद पर सर्वोच्य रावण का चुनाव करते थे)[28] को मारा।[29] किन्तु सीता वापिस नहीं लाई जा सकी। सम्भवतः पहले जैसा भागीरथ प्रयास नहीं हो पाया, यह भी हो सकता है कि

गोत्र धारण कर लिया जिससे अगस्त्य ने उन्हें मिलवाया था।'' किन्तु वशिष्ठ कहीं भी त्रुत्सु राजाओं द्वारा प्रतिपालित नहीं दिखाई देते।

12. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2, पृ. 122
13. **प्रधान**, पृ. 90
14. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2, पृ. 532 और 334-35
15. मनु संहिता जो एक प्रकार से समाज को व्यवस्थित और मर्यादित करने वाली मानव संहिता ही थी, की रचना किसी मनु ने नहीं बल्कि ब्राहमण वर्ग ने की थी किन्तु इस शास्त्र की रचना सुदास पैजवन और विश्वामित्र के विरूद्व संघर्ष में ब्राहमणों और ब्राहमणवाद की विजय के उपरान्त ही हो पाई। यजुर्वेद, अथर्ववेद आदि ग्रन्थों की रचना का काल भी यही रहा होगा।
16. दक्षिण कौशल के वंश विवरण में यह तथ्य कि शक्ति की स्त्री अदृश्यन्ती ने पुत्र परासर के जवान होने पर उसके पिता शक्ति की विश्वामित्र के राक्षस द्वारा हत्या का विवरण सुनाया गलत प्रतीत होता है क्योंकि संघर्ष के समय तक परासर का जन्म न केवल हो चुका था बल्कि वह पूर्ण रूप से जवान भी था। ऋग्वेद 7.18.21 के अनुसार ''हे इन्द्र जिनके मारे जाने की कामना राक्षस गण करते हैं। उन वशिष्ठ, परासर आदि ऋषियों ने आपकी स्तुति की है....।'' **सीतानाथ प्रधान**, पृ. 91 इस श्लोक के तुरन्त बाद ऋ. 7.18.22 में वशिष्ठ का कथन है ''देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्र मैंने आपकी स्तुति कर देववात के नाती सुदास से गौ और दो रथ प्राप्त किए, अब मैं होता समान यज्ञ स्थल में जाता हूं....।'' निरूक्त 6.30 के अनुसार परासर, वशिष्ठ का पुत्र है और मैल्डनर का विचार है कि ऋग्वेद में परासर का सम्भवत: अपने चाचा शतयातु और पितामह वशिष्ठ के साथ उन तीन ऋषियों के रूप में उल्लेख है जिन्होंने इन्द्र के पास जाकर सुदास के लिए उनकी सहायता प्राप्त की। कृष्ण द्वैपायन व्यास ही वह बालक रहा होगा, जो संघर्ष के बाद जन्मा और जिसे उसकी माता ने शक्ति की हत्या की घटना सुनाई। क्रोध और घृणावश इसी ने सुदास पैजवन को इतिहास के पन्नों से नौंच फेंकने के ध्येय से अठारह पुराणों व महाभारत महाकाव्यों की काल्पनिक कथाओं का प्रतिपादन किया।
17. वाजपेई ''अहिच्छत्र'' पृ. 4 का विचार है कि सम्वर्ण ने सुदास के पुत्र सहदेव या उसके पुत्र सोमक को पराजित कर अपना राज्य वापिस लिया। **ह. रा. दिवेकर, 'ऋग्वेद भाष्य भूमिका'**, ''दिल्ली, 1970, पृ. 24 के अनुसार वशिष्ठ के पौत्र सुवर्चस ने सुदास के पुत्र सहदेव को पराजित करवाया। इस विषय में सुवर्चस की भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता।
18. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2, पृ. 309, 389
19. **वहीं** भाग-2, पृ. 519, 367
20. मनुस्मृति के अनुसार वेन राजा ने वर्ण व्यवस्था में गड़बड़ फैलाई थी, पहले वह भली भांति शासन करने लगा किन्तु बाद में जैन नास्तिकता में फँस गया- **आप्टे, ''संस्कृत हिन्दी कोष''** पृ. 975
21. **अजीत कुमार सिंह, ''प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास,''** मेरठ, पृ. 29
22. **जी.बी. शर्मा, मनमोहन सिंह, ''एक्सकैवियेशन एट घुरम''** प. हि. कां.1979,पृ. 32
23. **हिन्दुस्तान दैनिक**, 12 मार्च 2003
24. सुदास द्वारा राज्य से निष्कासित वशिष्ठ को शरण या सहयोग ना देने के कारण सृज्जय सोमक साहदेव्य को ही पौराणिक साहित्य में शीरध्वज जनक कहा गया है। सृज्जयवंशी प्रस्तोक के पुत्र सहदेव के वंशजों को काफी बाद तक भी सहदेव्य कहा गया है। घृणा या

क्रोधवश इसी सहदेव शब्द सदेह का विलोम विदेह है। रामायण में इसके साथ वशिष्ट के शाप की कथा और जोड़ दी गई। एक तथ्य यह भी है कि रामायण वर्णित मिथिला राज्य की स्थापना निमि के पुत्र विदेह माथव/मिथि ने की थी जो पुरोहित रहूगण के साथ सरस्वती नदी प्रदेश से सदनीरा नदी के तट पर आए थे। इस प्रकार मिथिला के विदेह जन सृञ्जय सहदेव वंशी ही है, सृञ्जय का अपभ्रंश शीरध्वज, सहदेव या सदेह का विलोम विदेह और सोमक का अपभ्रंश ''जनक'' है किन्तु रामकथा की घटनाएें सरस्वती नदी प्रदेश में ही घटी, जिन्हें बाद में नई पृष्ठभूमि के हिसाब से लिख दिया गया। सरस्वती नदी द्वारा मार्ग बदलने या भूपटलीय परिवर्तन से समूचा नदी तन्त्र गड़बड़ा जाने से या नदी द्वारा तंग किए जाने के कारण सृञ्जय भारत के ही विभिन्न भागों में जा बसे, जहाँ जाकर वे वृज्जि, (संयुक्त रूप से समवृज्जि), हैहय वीतीहव्य आदि कहलाऐ। इसी प्रकार त्रुत्सु जन तीरभुक्ति - तिरहुत हुए। इस बात की भी पूरी और उचित सम्भावना है कि सरस्वती क्षेत्र से जन-ग्राम गोत्रों का पलायन नदियों के मार्ग बदलने के कारण उतना नहीं हुआ जितना कि उस लम्बे अकाल के कारण हुआ होगा जिसका महाभारत में उल्लेख है कि शान्तुनु के काल में बारह वर्ष का अकाल पड़ा था। अवध क्षेत्र में इक्षवाकुओं का पलायन भी इसी समय और इसी कारण से हुआ होगा।

इक्षवाकुओं का मूल प्रदेश इक्ष/गन्ना उत्पादक प्रदेश माना जाता है। यह इक्षुमती नदी या घघ्घर नदी के क्षेत्र में था। इक्षु का पर्याय गुड़ होने से उक्त प्रदेश गौड़ों का मूल प्रदेश भी माना जाता है गौड़ जन और इक्षवाकु जन इसी इक्षुमती नदी प्रदेश से पलायन कर विभिन्न भागों-वर्तमान अयोध्या, श्रावस्ती आदि में जा बसे और इक्षुमती नदी प्रदेश पर कुरू जनों का अधिकार हो गया। **आसोपा, 'ओरिजन ऑफ राजपूत्स'**, पृ. 128, किन्तु इक्षुमती जनों का पलायन मेरे विचार से राम के बाद उनके क्षेत्र पर कुरू कौरव्यों की विजयों से हुआ। एक कथा अनुसार स्वप्न में अयोध्या की जीर्ण शीर्ण अवस्था देखकर कुश जो कि दक्षिण कौशल पर राज्य करते थे अयोध्या लौट आए। इसके पीछे कारण स्वप्न नहीं बल्कि कुरू कौरव्यों का प्रसार रहा होगा। कौरव्यों की लगातार विजयों ने कुश को कसौली क्षेत्र स्थित उत्तर कौशल में भी नहीं रहने दिया। कुश ने नागों की कन्या कुन्दावती से विवाह कर स्थिति को शांत करने का प्रयास भी किया होगा किन्तु असंतुष्ट नागों ने उन्हें पराजित कर उनकी हत्या कर दी। गंगा यमुना दोआबे का कुरूवंश ऐल से धृतराष्ट्र तक असल में ऐलपत्र नाग के वंशज कौरव्य का वंश है, देखें **''कृष्ण कथा एवं महाभारत कथा का भौगोलिक धरातल और अजनाभखण्ड''** नामक अध्याय। कुश के वंशजों ने पश्चिम में पलायन कर राबी नदी क्षेत्र में कसूर या कुशावर, इसके बाद बसाया होगा- जहाँ से कुश के वंशज वर्तमान अवध क्षेत्रों में पलायन कर गए। **कनिंघम, ''भारत का प्राचीन भूगोल''**, पृ. 167, पठनीय,

25. सम्वर्ण के पुत्र सुधन्वा द्वारा जनक पर आक्रमण का उल्लेख रामायण 1.71.16 में और प्रतर्दन द्वारा जनक पर आकमण महाभारत 12.99.1-2 तथा रामायण 7.48.15 में है। ये आक्रमण सीता को बलात प्राप्त करने के लिए किए गए थे जिन्हें विफल कर दिया गया। **राम कुमार राय ''वाल्मिकीय रामायण कोश,''** पृ. 395-96; **आर. सिधान्ताशास्त्री**, पृ. 162-63
26. **रामकुमार राय**, पृ. 248,
27. लंका समुद्र से 800 योजन दूर थी। इतने बड़े समुद्र पर पुल पांच दिनों में बांधना तो दूर तोड़ा भी नहीं जा सकता। अत: यह समुद्र, सरस्वती नदी के किसी जलावरोध के कारण कोई विशाल झील रही होगा। बाल रामायण नाटक में लंका विजय से लौटते राम का

विभीषण से कथन कि सिंहल लंका से आगे और कुमारी द्वीप से पहले था। **काव्य मीमांसा, ''अनु. केदारनाथ सारस्वत''**, पृ. 312 इससे कुमारी द्वीप के कान्यकुब्ज और सिंहल, के सहारनपुर, मुजफरनगर का क्षेंत्र होने की धारणा बनती है। जब कि वर्तमान लंका के आगे तो हजारों किलोमीटर तक कुछ नहीं है। सिंहल शब्द सिंध या हिन्डन से बना प्रतीत होता है जो गंगा यमुना के उपरी दोआबा क्षेत्र की नदियाँ है। अलबेरूनी ने द्वीपों और समुद्रों की व्यवस्था के अन्तर्गत लिखा है कि सिथल द्वीप जिसे हम सरान द्वीप कहते है- **अनु. नूर नबी अब्बासी, ''भारत अलबेरूनी''** पृ. 118, यह सरान सराहन का अपभ्रंश है और इसका भी अपभ्रंशे सहारनपुर प्रतीत होता है।

वाल्मीकीय. में सुग्रीव अंगद को भेजते समय लंका से आगे 100 योजन दूर पुष्पितक पर्वत के विषय में बताते हैं। यह पुष्पितक, पुष्पवती या पुष्पवटी या पुष्पावती वर्तमान पूठ रहा होगा जो जिला बुलन्दशहर का प्राचीन नाम है- **वी.के. माथुर, ''एतिहासिक स्थानावली''** जयपुर, 1969, पृं.-573-74 किसकिन्धा समझी जाने वाली कर्नाटक की हास्पेतट में अनगुदी से दक्षिण में जाने वाला दल सीता की निष्फल खोज विन्ध्य पर्वत, मतस्य देश में और गोदावरी क्षेत्र में करता है। मैनाक उत्तर का पर्वत है। सुग्रीव ने शतबलि वानर को मैनाक पर भेजा भी था। फिर यह पर्वत हनुमान को दक्षिण में समुद्र से उपर उभरता किस प्रकार मिला। इससे रामायण में वर्णित भूगोल के कहीं और होने की सम्भावना होती है। उस समय मुख्य रूप से दो भाषाऐं प्रचलित थीं हिन्दु-आर्य भाषी लोगों की संस्कृत और द्रविड़-मुंड़ा। हालांकि तिब्बती भाषा न मुण्ड़ा परिवार की है और न अग्नेयी-ऐशियाई परिवार की, किन्तु इसमें इन भाषाओं से मिलती जुलती अनेक बातें हैं, जिनके कारण इसे इन भाषाओं से बिल्कुल अलग करके नही रखा जा सकता। इसमें ''ग्लिन-का''-एक छोटे नदी द्वीप को या ''नीची भूमि'' को कहते हैं- **रांगेय राघव, प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास''** पृ. 30 जगाध री के पूर्व में भौगोलिक स्थिति कुछ ऐसी है कि छोटे नदी द्वीप या नीची भूमि के लिए तिब्बती शब्द ''ग्लिन का'' अपभ्रंश लंका की धारणा से लंका के कालेसर के दक्षिण में होने के अनुमान को बल मिलता है। राक्षस रावण जिसे काश्यप ही कहा गया है राक्षसों के खश-काश्यपों से संबंध को बताता है। ये खश काश्यप तिब्बती क्षेत्र से विस्थापित होकर इस क्षेत्र में फैले होंगे, क्योंकि सही वैज्ञानिक खोज/एक्सप्लोरेशन के नहीं हो जाने तक धारणा रही कि गंगा नदी मानसरोवर झीलों से निकलती है अतः पश्चिमी तिब्बत में स्थित गांगड़िशेशान पर्वतों के कारण ही नदी को गंगा कहा होगा। इसी प्रकार पर्वत के लिए तिब्बती-चीनी शब्द ''शान'' का भारतीय रूपान्तर पर्वत, असान, अश्मी या शैल है। अतः कालेसर और उसके आसपास क्षेत्र में बसे रक्ष, यक्ष आदि जन आर्य नहीं बल्कि पश्चिमी तिब्बत के रास्ते आए जन थे जो अपने साथ कैलाश, असान, लांगका, ग्लिन-का जैसे शब्द लाए। लंका व उसके निवासियों के लिए और भी देखें अध्याय-3. **''पलक्ष द्वीप, सरस्वती नदी, लक्ष्मी-सीता और राक्षस''**

28. **रांगेय राघव**, भूमिका में पृ. च पर रावण एक पद था। वह पहले आकर सरस्वती तीर पर बसा, हैहयों ने उसे दक्षिण में भगाया, वानर बलि ने ऋष्यमूक से नीचे ढकेला, अन्त में उसने लंका बसाई।

29 सूघन एक बड़ा राज्य था जो सिरमौर पहाड़ियों और उसकी तराई में यमुना नदी के पश्चिम से लेकर गंगा नदी तक अम्बाला, सहारनपुर जिलों तक विस्तृत था। प्राचीन अनुश्रुतियों के अभाव में इस राज्य की जाति, इतिहास आदि के विषय में कहीं कुछ नहीं मिलता। (कनिंघम, पृ. 293) मेरे विचार से यही राक्षी नदी (मस्कारा नदी तब राक्षी के रूप में हरियाणा की भूमि तक जाती थी) क्षेत्र के रक्षों का राज्य था, जिनके अन्तर्गत नाग-यक्ष-यम-मकर आदि दस जातियों के प्रतिनिधि केन्द्रीय सत्ता पर राजा का चुनाव करते थे इसे रावण कहा जाता

था। अहिरावण, महिरावण की भांति लवण भी विभीषण के बाद का रावण ही था। जिसे शत्रुघ्न ने मारा। जिस समय सरस्वत नदी कालेसर के समीप से यमुना के रूप में पश्चिम की ओर कुरूक्षेत्र होकर बहती थी। मेरे विचार से उसी समय हरियाणा के समूचे नदी तन्त्र का श्रोत में सहारनपुर जिले की शिवालिक पहाड़ियाँ (ऋक्ष पर्वत) थी; तब मस्कारा नदी-राक्षी। बूढ़ी यमुना-चितंग, सिन्थाला नदी-रिठाल दुबालधन, मिसरी से बहने वाली नदी थी। काथा नदी तब पानीपत जिले के बाद गोहाना, सोनीपत से बादली बजीरपुर आकर वर्तमान यमुना नदी बन जाती थी। इस प्रकार इन नदियों में पूरे साल पानी भरा रहता था और पांचों नदियों और उनके किनारे बस्तियाँ एक ही समय जीवित थी।

अध्याय – 3

पलक्षद्वीप, पलक्षा नदी, पलंकष और लक्ष्मी-सीता

सरस्वती नदी के लुप्त होने के स्थान विनसन से सरस्वती नदी के उदगम्- पलक्ष प्रस्त्रवण की यात्रा चवालीस दिनों की थी (पंचविंश ब्रा., कात्यायन श्रौत सू.,लाटयायन श्रौत सूत्र और जैमिनीय ब्रा. 4.26.12) इसके बाद के ग्रन्थों में ऐसा कथन है कि पृथ्वी का मध्य बिन्दु (सुमेरु) इससे केवल एक वितस्ति और उत्तर में था।[1] अब पलक्ष प्रस्त्रवण नाहन में है अत: सुमेरु इससे केवल एक वितस्ति (प्रदेश) और उत्तर में सिरमौर (जो कि स्वयं सुमेरु के नाम से बोल रहा है) जिले की उत्तरी सीमा पर नागटिब्बा पर्वत श्रंखला का चन्द्रचूड़ या चूड़ाधार शिखर था।[2] इसके आसपास का क्षेत्र नागों का-सम्भवत: एलपत्र नागों का था, तभी उसे इलावर्त वर्ष कहा गया है।

चन्द्रचूड़ या चूड़ाधार शिखर तथा पलक्ष प्रस्त्रवण के बीच का वह वितस्ति (प्रदेश) गिरि नदी का क्षेत्र था। गिरि नदी तब सीता-शैलोदा थी। जो सुमेरु से निकलकर गन्धमादन और मंदराचल पर्वतों के बीच[3] से होती हुई परियात्र पर्वत (सोलन जिले में) तक पहुँच कर, पूर्व की ओर मुड़कर केतुमाल वर्ष से गुजरती तो केतुमती कहलाती थी; आगे भद्राश्व वर्ष था।[4] बहुत से विद्वान जम्बूद्वीप को समूचा ऐशिया मानकर भद्राश्व वर्ष का अभिज्ञान चीन, कोरिया आदि से कहते है।[5] किन्तु जम्बूद्वीप मात्र जम्बू नदी-यमुना नदी के प्रदेश को ही कहा गया है। और भद्राश्व वर्ष बद्रीनाथ, बदराहू, अगराहू का प्रदेश था। केतुमाल वर्ष (पूर्ववाहिनी गिरी नदी प्रदेश) के उत्तर में माल्यवान पर्वत (मसूरी पर्वतमाला) के दक्षिण में शिवालिक पर्वतमाला तब मैनाक पर्वत कहलाती थी, [6] गंगा-यमुना दोआबा के बीच का दर्रा क्रौंचरन्ध्र था।[7] सीता शैलोदा (गिरि) पिशाचिनी (आसान नदी) और भूतलय प्रदेश की भूता (बाटा) नदी[8] मिलकर, जम्बूवन (जमोत्वाला, जामुनवाला नामक साल वन)[9] से होती हुई जम्बू नदी के नाम से ही क्रौंचरन्ध्र को पारकर कालेसर (कैलाश शिखर) के पूर्व से मैदानों में प्रवेश करती थी। आजकल यह नदी यमुना है। कैलाश पर्वत के आसपास यक्षों

का निवास था।

इस तथ्य से, कि ''कश्यप के दक्ष कन्या खशा से दो पिशाच पुत्र उत्पन्न हुए, एक ''जनु'' नामक यक्ष था और दूसरा ''अज'' राक्षस[10] पिशाच अजराक्षस, यक्ष और यहाँ तक कि यतुधान भी एक ही ''खश'' जाति के प्रतीत होते हैं। क्योंकि कुष्मांड़ पिशाच के पुत्र अज से यतुधान की पुत्री यतुधना को यतुधान नामक पुत्र पैदा हुए थे।[11] इन दो तथ्यों से यह भी धारणा बनती है कि वे खश जिनके विषय में अनुमान लगाया जाता है कि वे भारत में 1500 ई.पूर्व से 1000 ई.पू. के बीच आकर कश्मीर से नेपाल के भू-भाग में फैले,[12] कोई बहुत अधिक सभ्य नहीं था[13] और यदि थे भी तो उतना नहीं कि इनका सम्बंध कृषक या गैरिक मृदभड़ संस्कृति से जोड़ा जा सके। गंगा-यमुना के उपरी दोआबे में गैरिक मृदभांड़ संस्कृति, इन खशों द्वारा हिमाचल से भगाए गए नागों ने स्थापित की थी, वे धीरे-धीरे दक्षिण में फैल कर सुव्यवस्थित हो रहे थे किन्तु अधिक संख्या में आने के कारण खश भी अन्ततः अपेक्षाकृत ऊंचे पहाड़ी प्रदेशों से उतरने लगे, कुछ समय बाद ही दोनों आपस में घुल-मिल गए। इसकी आवश्यकता भी थी क्योंकि पश्चिम में यमुना पार, इनसे तकनीकी रूप से अपेक्षाकृत अधिक विकसित कृषक लौह संस्कृति-PGW स्थापित थी और यह धीरे-धीरे पूर्व की ओर विस्तार बना रही थी। सोम्ब नदी क्षेत्र के शम्भरों के शत-शत पुर समाप्त कर दिए गए। सुदास पैजवन ने कुछ और आगे बढ़कर अज, शिग्रुव और यक्षुव जनों का पराजित किया, अब तक यक्षों के अन्तर्गत रह रहे रक्षों ने यक्षों पर अधिकार और फिर विस्तार का अवसर हाथों से नहीं जाने दिया।

रक्षों के प्रदेश की मुख्य नदी राक्षी थी। कनिंधम ने राक्षी का अभिज्ञान दृष्द्वती से किया है तो भी दृष्द्वती उस समय उत्तर में मैनाक पर्वतों से नहीं बल्कि गंगा-यमुना दोआबे की शिवालिक पहाड़ियों/ ऋक्ष पर्वतों से निकलती थी। दृष्द्वती के मूल में द्वार या द्वारका शब्द है। जगाधरी के समीप का प्रदेश प्राचीन काल से ही सभी ओर जाने का प्रवेश द्वार रहा है प्राचीन काल में श्रूघन को कान्यकुब्ज का द्वार कहा जाता था। आज की यमुना तो तब सीता शैलोदा थी कालेसर के समीप से दिशा बदल कर पश्चिमवर्ती हो जाती थी, अब यह कहलाती थी सरस्वती नदी। किन्तु सरस्वती नदी का एक नाम पलक्षा भी था। इसी पलक्षा नदी का प्रदेश पुराणों के प्रथम अध्यायों में वर्णित सप्तद्वीपीय भूगोल का ''पलक्ष द्वीप'' था। पलक्षद्वीप के अभिज्ञान विद्वानों ने भूमदयसागरीय प्रदेश से[14] या स्पेन से स्कैडेनेविया के दक्षिण तथा यूराल पर्वतों तक[15] किए हैं। ''सम्पूर्ण पृथ्वी'' शब्द के भ्रम में पड़कर, सप्तद्वीपों के विश्व के विभिन्न भागों से किए गए इस प्रकार के समीकरण धुर से गलत हैं।

प्राचीन साहित्य में ''पलक्षा'' नाम की किसी नदी का वर्णन नहीं है, किन्तु अप्रत्यक्ष ऐसे बहुत से तथ्य हैं जिनसे सरस्वती नदी को ही पलक्ष कहे जाने की धारणा को बल मिलता है।

प्रसत्रवण पर्वत, उस माल्यवान पर्वत का एक भाग था[16] जिसे हम उपर मसूरी पर्वतमाला कह आए हैं। सीता-शेलोदा नदी कई स्तर-प्रस्तरों/उचाईयों के पर्वतों से गुजरती हुई मैदानों में आती थी, सम्भवत इसलिए उसे प्रस्त्रवणा अथवा प्रस्त्रा कहा गया या प्रस्त्रवण संयुक्त रूप से माल्यवान, मैनाक, नागटिब्बा और ऋक्ष पर्वतों का नाम था-कुछ कहा नहीं जा सकता, किन्तु प्रस्त्रवण शब्द उसके साथ जुड़ा अवश्य-

1. सुमेरु पर्वत, जिससे यह नदी निकलती है के आकार के विषय में वायु. में कहा

गया है, "**प्लक्षाकृति प्रमाणश्य चतुरस्त्रः समुच्छितः**"

2. पंचविश ब्रा. 15.13.4 में दृषद्वती के यमुना के निकट अदृष्ट होने का स्थान "त्रिपलक्ष" कहा गया है।[17]

3. जैमिनीय ब्रा. 4.16.22 और पंचाविंश ब्रा. 25.10.66.22 में "पलक्ष प्रश्रवण" सरस्वती के अदृष्ट होने का स्थान है।[18]

4. आश्वलायन श्रौतसूत्र 12.6.1; शांखायन श्रौत सूत्र 13.29.241 में "पलक्ष प्रस्त्रवण" सरस्वती नदी के उदगम् का नाम है।[19]

5. महाभारत में "पलक्ष प्रस्त्रवण" सरस्वती नदी के उदगम् का ही नाम है और सरस्वती के निकट यमुना के किनारे सारस्वतों की यज्ञ भूमि "पलक्षावतरण" तीर्थ का उल्लेख है।[20]

6. ऋग्वेद 9.113.1 में कुरूक्षेत्र की सर्णयावती झील को शतपथ ब्राहमण में "अन्यत पलक्षा" कहा गया है।[21]

7. वामन पुराण में सरस्वती नदी के विषय में - "**पलाक्षावृक्षात्समुदभूता सरिच्छष्ठा सनातनी।**"[22]

8. महाभारत वन पर्व में सौगन्धिक वन को सरस्वती नदी के उदगम् समीप बताते हुए वर्णन है–

"**पलक्षादेवी स्नुता राजन् महापुण्या सरस्वती।**"[23]

9. मार्कण्डेय. के अनुसार किम्पुरूषवर्ष के "पलक्ष खण्ड" के मनोहर फलों का रस वहाँ के पुरूष सदा पीते हैं।[24]

किम्पुरूषवर्ष का अभिज्ञान परियात्र पर्वत (सोलन जिले में) से सरस्वती नदी तक फैले काम्यक वन से किया जा सकता है। यह कैथल तक विस्तृत था। "कैथल" शब्द काम्यकथल या काम्यकस्थल का अपभ्रंश अधिक प्रतीत होता है। हालांकि इसे कपिल मुनि से सम्बंधित बताया गया है।

10. वायु. के अनुसार केतुमालवर्ष की कई पुण्य नदियों में से एक का नाम "पलाशा" था।[25] उपर्युक्त सभी विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि सरस्वती-सीता शैलोदा-प्रस्त्रवणा ही पलक्षा नदी थी और पलक्षा नदी का प्रदेश पलक्षद्वीप था। नदी के किनारे या नदी क्षेत्र में बसने वाली जाति का नाम नदी के नाम पर ही पड़ जाता था। जैसे सरस्वती नदी -**सारस्वत**, इक्षुमती नदी-**इक्ष्वाकु**, अंगिरसी नदी- **अंगिरा**, दृष्द्वती नदी- **दृषद्वन्त**, जम्बूनदी- **जाम्बवान**। इसी प्रकार पलक्षा नदी क्षेत्र के निवासी **पलंकष** कहे गए.... पलंकष का शाब्दिक अर्थ राक्षस होता है।[26] और "स" के "ह" में परिवर्तन से पता चलता है कि यही पलंकष शब्द-लंका के मूल में है (लंक) इसी प्रकार रावण के दादा "पौलस्त्य" नाम में भी "पलक्षा" शब्द की ध्वनि है। इसके अतिरिक्त जगाधारी के समीप श्रूघन क्षेत्र को हवेनत्सांग ने जो "सू-लो-की-नो" कहा है इसके मूल में लंका शब्द है।

पौलस्त्यों की तरह पुलह भी लगभग इसी पलक्ष से सम्बंधित हैं तभी मृगमन्दा (दक्ष की पुत्री क्रोधवशा से कश्यप की पुत्री) और पुलह ऋषि के एक जाति के वानर पुत्रों को "ऋक्ष" कहा गया है।[27] ऋक्ष (रीक्ष), वानर भल्लूक आदि जन जो राम के लंका अभियान में उनके सहयोगी थे ये सब एक प्रकार से पलक्षा नदी क्षेत्र के पलक्षवान ही थे इन्हीं

पलक्षवानों का व्यक्तिवाचक शब्द का अपभ्रंश लक्ष्मण है जिसे रामकथा में राम के छोटे भाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह भी हो सकता है कि लक्ष्मण पलक्षवानों का देवीय पुरुषरूप हो।

विश्व की प्रत्येक सभ्यता, प्रत्येक संस्कृति नदी किनारे ही फली फूली है, उनकी कृषि, पशुधन, बस्तियाँ, धार्मिक अनुष्ठान आदि सब कुछ नदियों के किनारों पर ही हुए। भारत में तो सभी प्राथमिक और बड़े-छोटे ग्रन्थ-वेद, उपनिषद, ब्राहमण, आरणयक, दर्शन आदि में से अधिकतर सरस्वती नदी क्षेत्र में लिखे गऐ। इस प्रकार सरस्वती **विद्या की** देवी बन गई। इसी के क्षेत्र में कृषकों की कृषि की अधिष्ठात्री ही देवी सीता, इसी **सरस्वती** का एक रूप है.... बिल्कुल इसी तरह पलक्षा नदी का देवीय स्त्री रूप... लक्ष्मी है। ऋग्वेद के विवरणों से भी ऐसा ही लगता है कि सरस्वती का ही वर्तमान रूप लक्ष्मी में है। आज यज्ञ-पूजा व अन्य छोटे बड़े धार्मिक अनुष्ठानों में मन, कर्म और वचन से जो कामना-इच्छा मनुष्य, देवी लक्ष्मी से करता है वैदिक काल में वही सब आशाऐं वह सरस्वती नदी से भी करता था। क्योंकि एक ओर जहाँ अहि, अज, दानव, दैत्य, रक्ष, ऋक्ष, वानर आदि के क्षेत्र में वह नदी पलक्षा थी तो उसका देवीय स्त्री रूप लक्ष्मी था। व्यापारियों के धन देवता कुबेर और प्रथम पूजित गणेश अनार्य देवता है। लक्ष्मी का सम्बंध कामदेव से है बहुत सम्भव है कामदेव, कामधेनु-काम्यकवन और कामधान्यक प्रदेश से सम्बंधित नदी पलक्षा अथवा लाक्षकी का अनुश्रुतियों में चला आ रहा रूप ही लक्ष्मी हो। लक्ष्मी आर्यों में पहले नहीं थी। पुराणों में भी वह समुद्र मंथन से मिली, अर्थात जिस प्रदेश में ऋग्वेद लिखा गया, नाम सरस्वती था आर्य देवतन्त्र पूर्व की ओर बढ़ा तो उन्हें पता चला वह लाक्षकी अथवा लक्ष्मी है, इस प्रकार नदी का देवीय रूप बना।.... वही नदी वैदिक सभ्यता वाले मैदानी जनों के लिए सरस्वती थी......।

सरस्वती पुत्र प्रदान करती है, जैसे त्रुत्सु वध्र्याश्व को दिवोदास नामक पुत्र दिया। ऋ. 6.61.11

सरस्वती दुर्गों की रक्षा करती है। ऋ. 7.95.1
सरस्वती अन्न देती है। ऋ. 6.61. 3-4-6
सरस्वती पालन करती है। ऋ. 9.95.6
सरस्वती श्रांति दूर करती है। ऋ. 10.131.5
सरस्वती बुद्धि को निखारती है। ऋ.1.3.11
सरस्वती कवियों को यशश्वी बनाती है। ऋ.2.41.16
सरस्वती कल्याण करती है। ऋ.7.96.3
सरस्वती यज्ञ भाग ग्रहण करती है। ऋ.7.36.8
सरस्वती शत्रुओं को पराजित करती है। ऋ. 6.61.9
सरस्वती युद्वों में रक्षा करती है। ऋ. 6.61.4
सरस्वती पृथ्वी पर जो धन है उसका ज्ञान कराती है घी और दूध देती है।ऋ.7.95.2
सरस्वती धन की ओर ले जाती है। ऋ. 6.61.14
सरस्वती धन देती है। ऋ. 7.95.5; 6.61.6
सरस्वती निदंकों से रक्षा करती है। ऋ. 6.61.11
सरस्वती अभिलाषाऐं पूर्ण करती है। ऋ. 10.17.8
सरस्वती श्रेष्ठ माता, श्रेष्ठ नदी और श्रेष्ठ देवी है। ऋ. 2.41.16 [28]

वैदिक काल की सरस्वती के सभी गुण-धर्मों से युक्त लक्ष्मी, सरस्वती का ही प्रतिरूप हैं। लक्ष्मी और उसका अवतार कही गई सीता, दोनों के मूल में पलक्षा या सरस्वती है। पद्मम. उत्तरखण्ड अ. 55 में लाक्षकी, सीता का एक नाम है।[29]

जो सरस्वती और पलक्षा है वही सीता है और शेलोदा है, शैलोदा का अपभ्रंश, शारदा है।

वाल्मिकी. में सीता के पिछले जन्म में वेदवती होने का वर्णन है। वहाँ वह ऋषि[30] राजा कुशध्वज (जनक के भाई) की पुत्री है जो रावण द्वारा कुदृष्टि डालने पर अगले जन्म में उसे नष्ट कर देने का शाप देती है। वैदेही, वेदवती (पारियात्र पर्वत से निकलने वाली एक नदी)[31] वैद्यूत या वैद्यूर्य पर्वत (पारियात्र पर्वत का पूर्वी भाग) में कुछ साम्य है। पारियात्र पर्वत, मैनाक (शिवालिक पर्वतमाला) का एक भाग था जो सोलन से यमुनानगर जिले में सोम्ब नदी तक था। इसी परियात्र के सबसे पूर्वी भाग का पर्वत था-वैद्यूत, वैद्यूर्य या सौद्युम्न पर्वत। आज मार्कण्डा नदी की एक सहायक, तब इसी पर्वत से निकलने वाली वैद्युली/वेदवती/सौद्युम्नि अथवा सदादेनी नदी थी। यही वह नदी है जो आदि बद्री के समीप से निकलकर सधौरा होती हुई मारकण्डा में मिल जाती है। बाद में इसी वेदवती को वास्तविक सरस्वती माना गया है और सीता-शैलोदा/पलक्षा सरस्वती (पश्चिम वाहिनी यमुना) की अनिश्चितता और ऐतिहासिक घटनाओं के मिश्रण से अनुश्रुतियों, किवन्दितयों और पौराणिक कथाओं का जन्म हुआ। जिस समय राक्षी नदी के रावण ने इस क्षेत्र को पददलित किया; कुछ समय के लिए सरस्वती नदी का उदगम आदि बद्री से होता होगा। अतः वेदवती (नदी) के शाप की कथा बनी कि अगले जन्म (सीता शैलोदा के रूप में) वह रावण को नष्ट कर देगी।[32]

लोक किवन्दितियों और अनुश्रुतियों में सीता को रावण की पुत्री भी कहा गया है यह बिल्कुल उसी तरह है जैसे कि सृज्जय वंशी सहदेव वशिष्ठ के शापवश सदेह से (विलोम) विदेह हो गए, सौद्युम्नि सहदेवी हो गई अथवा वेदवती/विद्वती या वैदेही नदी का क्षेत्र विदेह कहलाया और सृज्जय सोमक-शीरध्वज जनक। सोमक (जनक) के राज्य की नदी वेदवती, जनक कुशध्वज की पुत्री कहलाई, उसी प्रकार सीता जो राक्षसों के राज्य से होकर बही तो रावण की पुत्री हुई... वही सीता-सरस्वती, जनक के राज्य से बही तो उसकी पुत्री भी कहलाई।

सीता धरती की पुत्री भी है, बौद्ध कथाओं में यह राम की बहन है (इ.हि.क्या- 15. 1943,पृ.293) वैदिक साहित्य में सीता, सवितृ इन्द्र की स्त्री है। इलियट का मानना है कि सीता असल में आदिम निवासियों की कृषि सम्बंधी देवी है। जो बाद में आर्यां द्वारा स्वीकार कर ली गई। कईयों के मुताबिक राम और सीता की काल्पनिक कथाओं में ऐतिहासिक तथ्य नहीं हैं।[33] मेरे विचार से उन अनुश्रुतियों के पीछे जिनसे मिथकों एवं काल्पनिक कथाओं का जन्म होता है अंश भर सच्चाई तो रहती ही है।

पौराणिक साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं को व्यक्तिवाचक बनाते समय नदी को माता, पुत्री, स्त्री लिखने का विशेष तरीका अपनाया गया है किसी नदी क्षेत्र में जन्म लेना ''नदी का माता होना'' है जैसे दिवोदास की माता का नाम दृष्द्वती है। वहीं वह वधर्याश्व की स्त्री है तो अनुमान लगाया जा सकता है कि वध्र्याश्व सरस्वती प्रदेश का राजा था किन्तु दृष्द्वती क्षेत्र उसने जीत लिया होगा। राम ने भी तो सीता का क्षेत्र जीता था। इसी प्रकार दृष्द्वती, कौशिकी विश्वामित्र की स्त्रियाँ हैं तो रावण के मातृपक्ष के लोग माली, माल्यवान और

सुमाली की स्त्रियों के नामों वसुधा, सुन्दरी और केतुमती से अनुमान लगाया जा सकता है। कि माली ने वसु जनों के वसुधान्यक क्षेत्र पर और सुमाली ने केतुमती नदी क्षेत्र पर अधिकार किया था। हेती (-विद्युत सम्भवतः वैद्यूत पर्वत क्षेत्र के जनों का द्योतक) के पुत्र विद्युतकेष की स्त्री सुकेश को जन्म देकर मदराचल पर्वत छोड़ कर गई थी, सुकेश को देववती नामक गन्धर्वी ब्याही थी, सुकेश को शिव ने पाला था। सुकेश के तीन पुत्रों के विवाह गन्धर्वियों से हुए। यह वंश विवरण संकेत करता है। कि उक्त घटनाक्रम गन्धमादन पर्वत के आसपास ही हुआ था। यह जाति वैद्यूत पर्वत (सधौरा के उत्तर में) मंदराचल पर्वत (सोलन जिले के उत्तर में) और गंधमादन पर्वत (सोलन जिले के पूर्व में गिरि नदी के पूर्व-पूर्व में उत्तर तक क्षेत्र) से केतुमालवर्ष (पूर्व वाहिनी गिरि नदी क्षेत्र) में आई इसके बाद यमुना नदी क्षेत्र में उतरी। बाद में खशों की एक शाखा यक्ष ने यमुना क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। पलक्षा नदी क्षेत्र के पौलस्त्य या पंलकष जन जो राक्षी के राक्षस भी थे, ने यक्षों को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया। रक्षों को उत्तर के ऋक्ष पर्वत के आदिम-अर्धसभ्य टोटेमिक जनों-ऋक्षों, वानरों, भल्लूकों की सहायता से राम ने पराजित किया।

सन्दर्भ, निबन्ध एंव पाद टिप्पणियां

1. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2, पृ. 60
2. पर्वत श्रंखला का नाम "नागटिब्बा" से इस क्षेत्र में कभी नागों के निवास क्षेत्र होने की धारणा बनती है।
3. कथन है कि स्वर्ग से मेरु पर गिरी गंगा की चार शाखाऐं-सीता, अलखनन्दा, चक्षु और भद्रा हो गई। इनमें से सीता, गन्धमादन पर्वत पर गिरी; शैलोदा को शैलोत्सीता कहा गया है। **वी. के. माथुर**, पृ. 659; गन्धमादन शिवालिक से सम्बंधित था। **सूर्यवंशी**, "**ज्योग्राफी ऑफ महाभारत**; पृ. 112, 141. मंदरगिरी/मदराचल गन्धमादन के दूसरी ओर है और केतुराट इसका महावृक्ष-**राणाप्रसाद शर्मा**, पृ. 388 महावंशसतारा जातक में गन्धमादन से निकलकर केतुमालवर्ष होकर गुजरने वाली नदी को केतुमती है। माल्यवान की स्त्री का नाम केतुमती था-**सूर्यवंशी**, पृ. 122, 114 इन सभी समीकरणों से हिमाचल प्रदेश में गिरि नदी के उस सीता शैलोदा होने की धारणा बनती है जो एकाएक पश्चिम से पूर्व की ओर बहने लगती है पश्चिमवाहिनी गिरि नदी के पूर्व में गुमा-गुण्ड-गोडना से सोलन तक गन्धमादन पर्वत था और सोलन से शिमला, रोहड़ू, जुब्बल और पब्बर नदी तक मदरांचल पर्वत।
4. गन्धमादन और मदरांचल के बीच बहने वाली नदी शैलोदा थी, यह पूर्व में भद्राश्ववर्ष की ओर चली जाती थी। **वी.के. माथुर**, पृ. 911, **सूर्यवंशी, पृ.** 133
5. भद्राश्ववर्ष को **वी.के. माथुर, "ऐतिहासिक स्थानावली"**, **वासुदेव शरण अग्रवाल, "भारत सावित्री"** और **एस. मुजफ्फर अली** सिक्यांग से मिलाते हैं जबकि **सूर्यवंशी, "ज्योग्राफी ऑफ महाभारत"** में भद्राश्ववर्ष को तिब्बत से दक्षिण चीन तक के भू-भाग से समीकृत करते हैं।
6. प्राचीन भूगोलवेत्ता शिवालिक पहाड़ियों को मैनाक नाम से जानते थे। मैनाक कैलाश के उत्तर में था। कैलाश और करवीर सुमेरु के दक्षिण में वर्णित हैं-"**विमलचरण लाहा; प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल**" अनु. पृ. 28
7. विरजलोक के पितृगणों की पुत्री मैना हिमवान की स्त्री थी, इनके दो पुत्र क्रौंच और मैनाक थे- **राणा प्रासद शर्मा**, पृ. 433 इस तथ्य से निष्कर्ष निकलता है कि समूची शिवालिक

पर्वतमाला एक समय हिमवान या हिमवन्त कहलाती थी। एक गिरित्र समुद्र का वर्णन है जिसमें मैनाक पर्वत जा छिपा था- वही, पृ. 433 गिरित्र समुंद्र, किसी अवरोध के कारण समूचे गिरि मेरु या गोवर्धन पर्वत क्षेत्र में वनी विशाल झील थी, जिसका पानी शिवालिक के उत्तर में भरा था। शिव पुत्र कार्तिकेय ने, अन्य विवरण के अनुसार परसुराम ने क्रौंच को विद्रीण किया था; वही, पृ. 137 उसी भौगोलिक घटना से जुड़ती प्रतीत होती है। जिसमें किसी भूकम्प आदि के कारण सीता-शैलोदा के मार्ग में आ गए अवरोध को कुमार कार्तिकेय और परसुराम ने हटाया होगा। क्रौंच केतुमाल देश के एक जनपद का भी नाम है-वही पृ. 438 इन तथ्यों से क्रौंच के गिरि-यमुना संगम के बाद दक्षिण में किन्तु कालेसर के उत्तर में होने की संभावना बनती है।

8. कैलाश पर्वत का क्षेत्र बोली, कंसाली, पथराला, अम्बावाली और नाकुद आदि छोटी-छोटी खोलों का उदगम् स्थल है; कैलाश पर्वत को हेमकूट, शंकरगिरि या भूतेश गिरि भी कहते थे- **लाहा, पृष्ठ-28 और** 149, **सूर्यवंशी, पृ.** 113 भूतलय को अपवित्र स्थल बताते हुए इसका उल्लेख युगन्धर के साथ किया गया है- **युगन्धारें दीप प्राश्य उषित्वा चाच्चुत स्थले, तदवद भूतलये स्नात्वा वास्तुमर्हषि वी.के. माथुर**, पृ. 675; चि.वि. वैद्य ने इसका अभिज्ञान यमुना नदी के तट पर किया है। यह अवश्य ही बाटा नदी का प्रदेश रहा होगा और युगन्धर तो जींद, जगाधरी, देहरादून का प्रदेश था ही।

9. मानचित्र 53-एफ-11 सर्वे ऑफ इण्डिया जम्बू नदी सुमेरु शिखर से निकलती थी-**लाहा, पृ.** 218 मेरुमंदर के जम्बू वृक्ष से निकलने वाली नदी चैत्ररथ वन से होकर गुजरती थी। **ओ.पी. भारद्वाज** ने चैत्ररथ वन को जौनसार बाबर के देववन चकरौता से समीकृत किया है। **''वाल्मीकीज हिस्टोरिकल ज्योग्राफी ऑफ कुरूक्षेत्र''** पंजाब हिस्ट्र कांफ्रेंस -12, पृ. 31 जतुनाभ यक्ष की पुत्र मणिवरा, रजतनाभ की स्त्री थी इनका एक पुत्र मणिभद्र चैत्ररथ पहाड़ी पर चन्द्रप्रभा नगरी के यक्षों का सेनापति था। यक्ष जन इसी के पुत्र थे। इसी के 30 पुत्रों को गुहयक् कहा गया है। यह मणिभद्र शिव का एक गण था, जो सती के साथ दक्ष के यज्ञ में हरिद्वार गया था **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ. 180

10. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ. 181

11. **वही**,, पृ. 180

12. **लक्ष्मण, एस. ठाकुर, हूमैन सैक्रिफाईज-भूंडा**, पंजाब हिस्ट्री कांफ्रेंस, 1982, पृ. 31

13. सम्भवत; तभी मनुस्मृति में खशों को शूद्र मलेच्छ कहा गया है-**तेजराम शर्मा ''ऐंशेंट ट्राईब्स ऑफ पंजाब हिल स्टेटस''**, पंजाब हिस्ट्री कांफ्रेंस, 14वां अधिवेशन, 1980, पृ. 58-59

14. **एस. मुजफ्फर अली और भगवानसिंह सूर्यवंशी** का समीकरण

15. **रोशन गुप्ता ''द फर्स्ट चैप्टर ऑफ हिस्ट्री ऑफ ऐंशेट इण्ड़िया''**, पंजाब हिस्ट्री कांफ्रेंस, 1986,पृ. 29

16. **मंजुला श्रीवास्तव, ''वाल्मीकी युगीन भारत''**, वाराणसी, 1984, पृ. 40; वी.के. माथुर पृ. 741,911

17. **लाहा**, पृ. 591

18. **वही**, पृ. 815

19. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2, पृ. 60

20. **वी.के माथुर**, पृ. 592-93; 675

21. रायचौधरी, पृ. 24; द्विवेदी पृ.164
22. के.सी. यादव, हरियाणा का इतिहास, पृ. 12
23. वी.के. माथुर, पृ. 996
24. संक्षिप्त मार्कण्डेय पुराण, सम्वत 2050 संस्करण, पृ. 158
25. राणाप्रसाद शर्मा, पृ. 296
26. आप्टे, ''संस्कृत हिन्दी कोष'', दिल्ली, 1989, पृ. 596
27. ऋक्ष एक जाति के वानर जो पुलह और मृगमन्दा के पुत्र थे-राणाप्रसाद शर्मा, पृ. 69, प्रजापति पुलह अग्निवात पितरों, वानर, मृग, व्याल आदि के पिता कहे गए है वही, पृ. 327
28. रामविलास शर्मा, ''पश्चिम ऐशिया और ऋग्वेद'' पृ. 194; 138; 149; दुखी, पृ. 28-29
29. राणाप्रसाद शर्मा, पृ. 452
30. कामिल बुल्के, पृ. 293-94
31. राणाप्रसाद शर्मा, पृ. 478
32. रांगेय राघव, पृ. 190
33. खगोलविद्यों के लिए विशेष आमंत्रित लेख

एक अन्य शोध के अनुसार रामकथा का घटनाक्रम धरती पर नहीं अपितु धरती के ऊपर हुआ था। प्राचीन ऋषिमुनियों, विद्वान खगोलविद्यों ने आकाशीय घटनाओं के अपने वैधों को अगली पीढ़ीओं तक पहुँचाने या अपने ज्ञान को दूसरों को भली-भाँति समझाने के लिए उन्हें कथारूप में लिखा, इस प्रकार हम यह नहीं कह सकते रामकथा में सच्चाई नहीं है; वहाँ तो इतनी अचम्भित करने वाली सच्चाई है कि सहज विश्वास नहीं होता। आईये रामकथा के तथ्यों के लिए रात्रि के आकाश का अवलोकन करें। हमारी आकाश गंगा Milkey Way Galaxy के मध्य भाग (वृश्चिक scorpio और धनु sagitaurus तारामंडल क्षेत्र में) के आसपास गैसीय मेघों के विस्तार के कारण इसकी एक शाखा कुछ दूरी तक दिखाई नहीं देती। आकाशगंगा की यह शाखा हंस तारामण्डल cygnus के त्रित deneb तारे के समीप से निकलकर दक्षिण आकाश में किन्नर या नराश्व centaurus तारामंडल के बीच स्थित स्वास्तिक crux मंडल तक जाती दृष्टिगोचर होती है।

Deneb तारे से निकलती आकाश गंगा की यह शाखा सर्पधर Ophechus तारामंडल में Chelab तारे के समीप तक आते-आते गैसीय मेद्यों के विस्तार के कारण अदृश्य हो जाती है और नराश्व / किन्नर Centaurus के समीप वृक Lupus में यह पुनः प्रकट होती है। आकाश में हंस तारामंडल Cygnus की आकृति एक हल की है, इसकी फाल का तारा त्रित Deneb जैसे मध्याकाश वृश्चिक scorpio और सर्पधर Ophechus के समीप से भूमि को जोतता हुआ.... उत्तर तक पहुँच रहा है। पश्चिम वालों का Cygnus भारतीय पुराणों का अग्नि से सर्म्बधित जनक है.... जनक और अग्नि Cygnus शब्द का अपभ्रंश है। जनक विद्वान थे, दार्शनिक थे, विद्वानों के आश्रयदाता थे.... वे विद्या देवी सरस्वती के वाहन.... हंस हैं अर्थात सरस्वती आकाशगंगा है जिसे ब्रह्म Aurigo के कमण्ड़ल से निकलता बताया गया है। जनक के हल की फाल Deneb तारे के समीप से अलग निकलती इसकी शाखा.....सीता है... जो राम (अभिजित Vega) की स्त्री कही गई। सर्पधर Ophechus के Chelab तारे के समीप पाँच तारों (पंचवटी) तक आकर लुप्त हो जाती है.... किन्नर Centaurus के समीप वृक Lupus में प्रकट होकर स्वास्तिक Crux तक जाकर पुन मुख्य आकाशगंगा में मिल जाती है...। जैसे उसे रावण ले गया.... अशोकवाटिका

में रखा.....। किन्नर Centaurus के तारे अल्फा को भारतीय ज्योतिष में जय अर्थात रावण कहा गया है। वह विश्रवा (विशाखा>विसरवा) / तुला Libra और कैकसी (Kekua तारा वृक Lupus में) के पुत्र है। Crux का अपभ्रंश अशोक (वाटिका) है....धुर दक्षिण के तारामंडल Doradus का अर्थ.... स्वर्ण नगरी होता है। आज की वृश्चिक scorpio तारामंडल.....सर्पधर/शिव Ophechus का अंश.... हनुमान है वह वैदिक साहित्य का द्यौस / दोस्त अथवा मित्र है.... राम का मित्र है।

Serpens Cauda तारामंडल सूपणखा है और सर्पधर Ophechus के आधार के तीन तारे Sabik, Han, Yedpost त्रिशिरा है। दूषण द्यौस अर्थात वही मित्र या वृश्चिक scorpio है। मेघनाद धनु Sgitaurus तारामंडल। यह तारामंडल.... वैदिक साहित्य का वरूण है और पौराणिक कामधेनु सुरभि गाय या कामदेव cupid ; सुरभि गाय कामधेनु की पुत्री नन्दिनी. आज वृश्चिक scorpio है। दूसरे रूप में धनु वैदिक पर्जन्य अर्थात मेद्यों का देवता है तो वृश्चिक उस पर्जन्य का पुत्र पर्जन्यजात अर्थात पारिजात....!

और राम को भी चौदह वर्षों का वनवास मिला था.... यहाँ वर्ष समय की इकाई नहीं है और न भारतवर्ष भारतभूमि का नाम है। असल में वर्ष अन्तिरिक्षीय इकाई है ; सम्पूर्ण आकाश को चौदह वर्षों में बाँटा गया था....भारतभूमि के ऊपर के आकाश को भारतवर्ष की संज्ञा दी गई...!

आकाशगंगा / सरस्वती की सीता शाखा Deneb तारे के पास से निकलकर जिस स्वास्तिक crux तारामंडल में मूल आकाशगंगा से मिलती है.... उत्तरी भारत से वह तारामंडल दिखाई नहीं देता। किन्तु सदा ऐसा नहीं रहता। 25800 वर्षों के अयन दोलन चक्र के दौरान जब खगोलीय विषुवत वृत्त को काटते हुए सूर्यपथ कन्या तारामण्डल Virgo में उत्तरायण होता है उस समय खगोलीय विषुवत रेखा वृश्चिक scorpio के दक्षिण से गुजरती है.... अर्थात लगभग 12000 वर्ष पहले दक्षिण आकाश का जो भाग अदृश्य था... इस समय दिखाई देने लगता.... दूसरे शब्दों में तब आकाश का चौदहवाँ वर्ष दिखाई देता है.... यह वह समय रहता है जब पृथ्वी का ध्रुव त्रित Deneb से अभिजित Vega तक होता है। उस समय पूरे चौदह वर्षों का आकाशीय अवलोकन पूरा होता है... सीता शाखा... पंचवटी में लुप्त होकर स्वास्तिक Crux तक जाती है, यह पता चलता है। 25800 वर्षों के अयन चालन के दौरान वृश्चिक / हनुमान जब दक्षिण आकाश से उत्तरी आकाश में आते हैं तो सीता का पता लाते हैं कि वह अशोक वाटिका में है.... है न आकाशीय वेध का मिथकीय रूप।

अब एक और तथ्य पर विशेष गौर कीजिए..... उपर्युक्त आकाशीय वेध को रामकथा के रूप में उत्तरी गोलार्द में लिखा गया... जहाँ सीता शाखा.... जनक या Cygnus से निकलती है तो वह जनक की पुत्री कही गई है.... वह लुप्त होकर दक्षिण में चली जाती.... अर्थात रावण उसका हरण कर लंका ले जाता है। अब इस मिथक को उल्टा करके देखें तो दक्षिण आकाश वालों के लिए सीता रावण की बेटी भी तो हुई..... मिथकों में किसी भी प्रकार वह जनक को प्राप्त हुई। रावण उसे चुरा ले गया.... राम उसे वापिस जीत लाऐ..... किन्तु यह सब एक ही बार हुआ हो ऐसा नहीं है। अयन चालन के कारण यह आकाशीय घटनाचक्र प्रति 25800 वर्षों में एक बार..... बार-बार दोहराया जाता है और दोहराया जाता रहेगा। राम हुए थे साढ़े आठ लाख वर्ष पूर्व...। बेशक उस समय मानव अग्नि से अपरिचित.. नग्न रहता था। वह होमो हेबिलस, होमो इरैक्टस था या होमो सेपियन्स था.... लेकिन राम हुए थे....। वे अभिजित Vega तारा है, पृथ्वी का अक्ष $22^{1/2}$ अंश से लेकर $25^{1/2}$ अंश के बीच

दोलन करता है। इस कारण अयन चालन के कारण 25800 वर्षों बाद ध्रुव पुन: उसी स्थान पर नहीं आ पाता.... उसी स्थान के अगल-बगल होकर गुजर जाता है.... अत: राम अर्थात अभिजित Vega...... आज से 12000 वर्ष पहले नहीं बल्कि साढ़े आठ या नौ लाख वर्ष पूर्व.. पृथ्वी के धुर उत्तर में थे अर्थात ध्रुव तारा बने थे, खगोलविद्यों को सही समय जानने के लिए स्टीक गणना करनी चाहिए।

25800 वर्षों के अयन चालन चक्र और 40000 वर्षों के अक्ष पर झुकने-उठने के पृथ्वी के ध्रुवचक्र का इतना बारीकी से ज्ञान भले ही हमारे प्राचीन ऋषि खगोलविदों को न हो, किन्तु प्रभाव का ज्ञान तो उन्हें था ही ; आज पश्चिमी विद्वान कहते हैं कि आकाश गंगा के केन्द्र की खोज हार्ले शापलो ने की किन्तु प्राचीन ऋषियों ने जिसे मूल नक्षत्र की संज्ञा दी है फिर वह क्या है? और क्यों उसका नाम मूल है।

असल में ऋग्वेद.... अन्तरिक्ष वेध का ग्रन्थ है उसमें पृथ्वी के धरातल का घटनाचक्र नहीं अपितु पृथ्वी के ऊपर अन्तरिक्ष का घटनाचक्र है.... उसमें वर्णित देवता आकाशीय तारामंडल हैं। सर्पधर Ophechus की आकृति हूबहू कैलाश पर्वत की आकृति है... वही सुमेरू..... वही हनुमान (Scorpio) द्वारा हाथों पर उठाकर लाया जाता औषधि पर्वत द्रोण है। सर्पधर, वृश्चिक और तुला को मिलान करने पर शिवलिंग की आकृति बनती है तो धनु और वृश्चिक वह कच्छप है जिस पर सुमेरू पर्वत को टिकाकर समुद्र मन्थन हुआ था। इसकी रस्सी वासुकि नाग है। समुद्र मंथन से निकले 14 रत्न आसमान में ही मिल जाऐंगे।

वैदिक साहित्य में एक स्थान पर लिखा है कि दक्ष अदिति से और अदिति दक्ष से पैदा होते हैं.... इसे काल्पनिक मानकर बिना विवेचना के छोड़ दिया गया.... यह अन्तिरिक्षीय घटनाक्रम है, 25800 वर्षों का अयनकाल चक्र इस दौरान दक्षादिती तारामंडल Cetus, Pegasus, Andreomeda के बीच चलती खगोलीय विषुवत रेखा.... बार-बार दक्ष से अदिति और अदिति से दक्ष को उत्पन्न करती दिखाई देती है। अदिति तारामंडल ही जब उत्तरी खगोल में होता है तब (आदित्यों की माता) अदिति या भद्रा कहलाती है और जब दक्षिणी खगोल में सरक जाता है तब वही दैत्य माता दिती या भद्दी कहलाती है। अदिति का सबसे छोटा और प्रिय पुत्र विष्णु... मोहिनी रूप वाला मीन है। मीन के समीप कुंभ Aquarius वैदिक साहित्य का शारंग्ड धनुष है जिसकी डोरी से उसका सिर कट गया था। भदराहू या भद्राश्व Pegasus है। विष्णु का आदित्य रूप सूर्य उसे उसके धड़ केतु Cetus से अलग करता है।

अध्याय – 4
सप्तद्वीपीय भूगोल

पुराणों में प्रयुक्त ''सम्पूर्ण पृथ्वी'' और ''सर्वोच्च गिरिश्रंग सुमेरु'' शब्दों के भ्रम में पड़कर विद्वानों ने पुराणों के प्रथम अध्यायों में वर्णित सप्तद्वीपीय भूगोल के सबसे छोटे-जम्बू द्वीप को पृथ्वी के सबसे बड़े महाद्वीप ऐशिया या उसके भागों से समीकृत किया है–

एस. मुजफ्फर अली जम्बू द्वीप को उत्तरी ध्रुव, यूरारल पर्वत से मंगोलिया, चीन और भारत तक[1] तथा **भगवानसिंह सूर्यवंशी** कैस्पियन सागर, यूराल पर्वत से भारतीय प्रायद्वीप तक मानते हैं।[2] **कर्नल गेरिनी, एफ. विल्फोर्ड और वी. वी. अयरयर** जम्बू द्वीप का

समीकरण मात्र भारत भूमि से करते हैं[3] ये समीकरण सुमेरु शिखर को माउंट ऐवरेस्ट अथवा पामीर का पठार मान कर किए गए हैं।

पलक्ष द्वीप को **भगवानसिंह सूर्यवंशी** और **एस. मुजफ्फर अली** ने यूरोप के भूमध्य सामरीय प्रदेश से;[4] कर्नल गेरिनी ने बरमा, अशकान से; **एस. विल्फोर्ड** ने अनातोलिया से; **वी.वी अय्यर** ने यूनान [5] और **रोशन गुप्ता** ने यूरोप के ही भूमध्यसागर से स्कैंड़ेनेविया के दक्षिण व यूराल पर्वत तक माना है।[6]

इस प्रकार के समीकरण चाहे वे समुद्र के आधार पर, महाद्वीपों के आधार पर अथवा जलवायु आदि के आधार पर किए गए हों धुर से ही गलत प्रतीत होते हैं, क्योंकि ये "सम्पूर्ण पृथ्वी" और "सर्वोच्च गिरिश्रंग सुमेरु" वाली पुराणों की भाषा को जस का तस समझ कर किए गए। भारत के प्राचीन वैदिक या पौराणिक इतिहास की किसी भी घटना से इन समीकरणों को कसौटी पर नहीं कसा गया, ऐसे में कुश द्वीप को अरब से[7] शाक द्वीप को बरमा, चीन, मलाया से[8] अथवा सीथिया से[9] तथा पुष्कर द्वीप को हवॉगहो नदी प्रदेश मंचुरिया कोरिया साईबेरिया जापान से[10] या स्कैंडेनेविया, ग्रीनलैण्ड़, आर्कटिक से[11] या तुर्किस्तान से[12] से समीकृत करने का कोई लाभ नहीं और पुराणकार के मस्तिष्क में शाल्मली द्वीप के लिए अफ्रीका[13] या मलाया प्रायद्वीप[14] या मध्य यूरोप[15] या सारमेतिया[16] नहीं रहा होगा क्योंकि आगे वह इन समीकृत भू-भागों के विषय में हमें कुछ भी बताने वाला नहीं था। पुराणों के प्रथम अध्यायों में वह उस भूगोल का ही वर्णन तो करेगा जहाँ के बारे में वह अगले अध्यायों में लिख रहा था। वरना ऐसा करने का उसका औचित्य क्या? हम भी पहले के विद्वानों द्वारा दिए गए समीकरणों में मात्र थोड़ा सा हेर फेर करके क्रौंच द्वीप को काला सागर से यूराल पर्वत तक[17] या पश्चिमी यूरोप[18] या ऐशिया माईनर[19] अथवा उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका[20] न मान कर इसका उल्टा मान लें तो कोई लाभ होगा या नहीं यह बाद की बात है अलबत्ता हम समस्या को अधिक उलझातें हुए अपने ही इतिहास और भूगोल से कोसों दूर चले जा रहे होंगे।

असल में "सम्पूर्ण पृथ्वी" शब्द से उसका अभिप्राय आज के संदर्भ में सम्पूर्ण पृथ्वी नहीं तब तक के ज्ञात भू-भाग (Explored Earth) से था। उतनी ही ज्ञात भूमि के सर्वोच्च शिखर को उसने सुमेरु कहा, मुझे नहीं लगता कि पुराणकार ने माउन्ट किलोमांजरो[21] अल्टाई शान[22] माउन्ट ऐवरेस्ट[23] पामीर का पठार या उत्तरी ध्रुव को किसी भी कारण से सुमेरु लिखा होगा। यह तो नवीनतम खोजों द्वारा हम जानते हैं कि माउंट ऐवरेस्ट विश्व का सबसे ऊंचा शिखर है पामीर का पठार विश्व का सबसे ऊंचा पठार है आज से दो ढ़ाई हजार वर्ष पहले के माप-यंत्र इनमे परिष्कृत नहीं रहे होंगे कि अक्षरस सत्य तथ्य प्रदान कर सकें।

मतस्य. और वायु. का **"द्विरापत्वात स्मृतो"** प्राय हर पुराण में कहा गया है अर्थात जिसके दोनों ओर जल हो, वह द्वीप है। वायु. में "द्वीप" और "महाद्वीप" में "द्वीप पर्व" देवी भागवत. में "उपद्वीप" लिंग पुराण में "अनु द्वीप" और वायु में आया 'अन्तर्द्वीप" शब्द से लगता है कि दो नदियों के बीच के प्रदेश, पर्वतों के बीच, अलग-थलग भूमि, सागरस्थ अथवा नदी द्वीप आदि के लिए भी द्वीप शब्द का प्रयोग हुआ है।[26]

अधिकतर पुराणों में यूं तो एक ही क्रम है-

जम्बू द्वीप-क्षार समुद्र-**पलक्षद्वीप**-इक्षुरस समुद्र-**शल्मली द्वीप**- मदिरासमुद्र- **कुशद्वीप**-घृतसमुद्र-**क्रौंचद्वीप**-दधि समुद्र-**शाकद्वीप**-दुग्ध समुद्र-**पुष्करद्वीप**-मधुजल समुद्र। किन्तु

भागवत. पदम्. में द्वीपों की संख्या नौ और महाभारत आदि. में तेरह है। बौद्ध परम्परा में सुमेरु के चारों ओर सात पर्वत और सात सागर हैं। इन सात पर्वतों के बाहर कुरु, अपर गोयन, विदेह और जम्बू इन चार द्वीपों के अतिरिक्त दो सहत्र परित्र / छोटे-छोटे द्वीप है।[27] महाभारत भीष्म. में द्वीपों की संख्या तो सात है किन्तु गिनाए गए नामों में पलक्ष और क्रौंच द्वीप छोड़ दिए गए है।[28]

आज हम जानते हैं कि प्रत्येक पहले को परिवृत किए हुए दुगने आकार का द्वीप अथवा समुद्र! पृथ्वी पर इस प्रकार का कहीं कोई भूगोल नहीं। द्वीपों के विवरणों में और यहाँ तक कि द्वीपों के क्रमों में विरोधाभाष है जैसे कि मतस्य. में क्रम जम्बू, शाक, कुश, क्रौंच, शाल्मली, गोमेद और पुष्कर से लगता है कि द्वीपों की कोई निश्चित सीमा रेखा नहीं थी और न ही ये द्वीप समुद्रों से परिवृत थे।

सुमेरु शिखर-

स्वयं सिरमौर के नाम से बोल रहा है, सिरमौर जिले की उत्तरी सीमा पर नागटिब्बा पर्वत श्रृंखला का चन्द्रचूड़ शिखर। पंचविंश ब्रा.; कात्यायन श्रौतसूत्र; लाटयायन श्रौत सूत्र; और जैमिनीय ब्रां. 4.26.12 में उल्लेख है कि सरस्वती के अर्न्तधान होने के स्थान से पलक्ष प्रस्त्रवण की यात्रा चवालीस दिनों की थी इसके बाद के ग्रन्थों में ऐसा कथन कि पृथ्वी का मध्य बिन्दु (सुमेरु) इससे केवल एक वितस्ति (प्रदेश) और उत्तर में स्थित है।[30]

आश्वलायन श्रौत सूत्र 12.6.1 और शांखायन श्रौत्र सूत्र 13.29.241 में पलक्ष प्रस्त्रवण'' शब्द से सरस्वती से उदगम् का ही तात्पर्य है, ऐसे में सरस्वती के उदगम् से चन्द्रचूड़ या चूड़ाधार शिखर के बीच मात्र एक वितस्ति (प्रदेश) ही है- गिरि नदी का प्रदेश। यह प्रदेश सुमेरु शिखर के प्रदेश इलावर्तवर्ष के दक्षिण का केतुमालवर्ष कहलाता था। गिरि नदी तब शैलोंदा-सीता कहलाती थी, मेरु से मंदराचल और गन्धमादन के बीच बहती थी।[31] गन्धमादन पर्वत से निकलकर भद्राश्ववर्ष की ओर पूर्व गामिनी थी, और भद्राश्व वर्ष जिसे अधिकतर विद्वान सिक्यांग मानते हैं[32] असल में बद्रीनाथ, बदराहूं, अंगराहू, अगालटा का प्रदेश था। देहरादून में कालसी के समीप जगतग्राम से प्राप्त लेख में यह प्रदेश युगशैल कहा गया है- **युगे खरस्या युगशैल महीपते;**। शैलौदा शैलोत्सीता थी।[34] अत: तब तक की सीता शैलोदा आज की गिरि नदी है और इसका उद्गम तब का सुमेरु शिखर था।

जम्बू द्वीप

पुराणों में जम्बू द्वीप के नामकरण का कारण द्वीप में बहुतायत में मिलने वाले जम्बू वृक्षों को बताया गया है। जम्बूवाला, जमोत्वाला जामुनवाला नामक वन आज भी गिरि नदी और बाटा नदियों के बीच स्थित है जो प्राचीन काल में और अधिक विस्तृत रहा होगा। मेरे विचार से जम्बूनदी या यमुना नदी के नामकरण के पीछे यह वन था। सुमेरु पर्वत से जम्बूनदी के निकलने का वर्णन है।[35] मेरुमन्दर से निकलने वाली नदी चैत्ररथ वन से होकर बहती थी। ओ. पी. भारद्वाज, चैत्ररथ वन की पहचान जौनसार बाबर, देववन-चकरौता से करते हैं।[36] अर्थात जम्बू द्वीप, जम्बू / यमुना और उसकी सहायक नदियों का प्रदेश था, सुमेरु शिखर के आग्नेई दिशा वाला प्रदेश था। मनु के पुत्र प्रियवृत ने जम्बूद्वीप अपने सबसे बड़े पुत्र आग्नीध्र को प्रदान किया था। अर्थात आग्नेई धार, धौला धार के आग्नेई दिशा की धार पर्वत माला। दीपवंश में कहा गया है कि गौतम बुद्ध प्राय जम्बू द्वीप में आया करते थे[37] इससे पता चलता है कि जम्बू द्वीप न तो समूचा ऐशिया था और न ही आज के सन्दर्भ वाला समूचा भारतवर्ष, वह तो उत्तरी भारत का एक छोटा-यमुना नदी का प्रदेश था।

जम्बू द्वीप के विभाग

जम्बू द्वीप के वर्ष

1. **हिरण्यमय वर्ष**- हिरण्यवती नदी (घघ्घर)[38] का उपरी और उदगम् प्रदेश, (शिमला, सोलान जिले में)।

2. **रम्य /रभ्यक/ रमणक**- हिरण्यमय वर्ष का एक भाग[39] घघ्घर नदी का उपरी मैदानी क्षेत्र, शिवालिक पर्वत माला की तराई में वर्तमान लुधियाना व पटियाला। पुराणों में हिरण्य दैत्यों का निवास पाताल (वर्तमान पटियाली नदी क्षेत्र था)[40] हिरण्य दैत्य ऋग्वेद के ब्राहमण विरोधी सृज्जय जन ही हैं। हिरण्यों और सृज्जयों का एक और पौराणिक प्रतिरूप हैहय है।

3. **उत्तर कुरुवर्ष**- शिमला व इसके उत्तर का पर्वतीय भूभाग, उत्तरकाशी जिले का श्रंगकाठा शिखर[41] तक सतलुज नदी से पब्बर, टौंस, रूपिन व यमुना नदी का पर्वतीय क्षेत्र। **''परेण हिमवन्त''** उत्तर कुरुवर्ष के लिए प्रयोग किया गया है इसमें हिमवान, मैनाक पर्वत माला शिवालिक को कहा गया है मैनाक मैना और हिमवान का पुत्र था।[42]

4. **भद्राश्ववर्ष**- बद्रीनाथ, भदराहू, अगराहू का प्रदेश, यह यमुना नदी के पूर्व में था।

5. **निषदवर्ष**- गिरि और जलाला नदियों के बीच शिवालिक पर्वत का भू-भाग। शिवालिक पर्वत माला के इस क्षेत्र में उगने वाले बॉस (वेण) के नाम पर जाति का नाम भी वेन पड़ा, अंगिरावंशी (अंगिरा नदी / घघ्घर) वेनों के वे वंशज जो मैदानों में उतर कर कृषि करने लगे- पृथु कहलाए, किन्तु जो पर्वतों में वनों पर आश्रित रहे और मैदानी पृथुओं की अपेक्षा न के बराबर धार्मिक थे (इन्द्र- मित्र वरुण वाले देवतन्त्र के विरोधी) निषाद कहलाए।[43] किन्तु वे शिव पूजक तो थे ही।

6. **भारतवर्ष**-आज के संदर्भ में हम भले ही भारत को असम-अरुणाचल से सिंध - बिलोचिस्तान और पामीर के पठार से कन्याकुमारी तक समीकृत करते हों किन्तु प्राचीन काल में भारतवर्ष छोटा सा प्रदेश था जो भरतों का मूल प्रदेश था। यूं भी पहले पहले तो उस भूमि का नाम अजनाभखण्ड था; भारत नाम तो बाद में ऋषभ देव के पुत्र भरत के नाम पर पड़ा। इसके विपरीत भरत दौष्यन्ती के नाम पर देश का नाम भारतवर्ष पड़ा[44] दोनों ही तथ्य सहीं हैं- ऋषभ के पुत्र भरत के समय से भरत जाति अस्तित्व में आनी शुरू हुई थी। किन्तु उसका प्रबल विस्तार भरत दौष्यन्ती के बाद हुआ। भरत जाति के पाँडु जनों ने भले ही गंगा यमुना दोआबे के नाग कौरव्यों को पराजित किया था किन्तु उत्तर भारत से उनकी पूर्ण समाप्ति जनमेजय के नाग यज्ञ के बाद ही हो पाई। इस प्रकार जनमेजय के काल तक भी भारतवर्ष, आज की सीमाओं वाला नहीं बल्कि तक्षशिला-आर्जुनायन से गंगा-यमुना के दोआबे तक ही सीमित था।

7. **किम्पुपरुषवर्ष**- घघ्घर नदी के पूर्व में शिवालिक पर्वतमाला से सरस्वती / दृष्द्वती के पार तक फैले विशाल काम्यक वन का प्रदेश[45] इस वन में रहने वाली, वेन, निषाद, नाग आदि जातियाँ जो मुख्यतः वनों पर आश्रित थीं और अति सभ्य कृषक जातियों के मुकाबले लगभग अर्थसभ्य थीं, न ही उनके जितनी धार्मिक थीं, इन्द्र, मित्र, वरुण पूजकों के यज्ञ-पूजा और बड़े ताम-झाम वाले धार्मिक अनुष्ठानों के विपरीत वे शिव-पूजक थे। इन सब के लिए न तो उनके पास वक्त था, न ही कोई सोच, इन का सामाजिक ढाँचा उनसे भिन्न था। काम्यक वन में निवास करने वाले जनों के पास लोहे के अस्त्र-शस्त्र नहीं थे, मिलकर शत्रु का मुकाबला करने की गहरी सोच से भी वे अपरिचित थे.... क्योंकि

ऐसी आवश्यकता उन्हें पहले कभी नहीं पड़ी थी अतः सामना होने की स्थिति से वे सदा बचते थे.... ऐसे में इन्द्र-मित्र-वरुण पूंजक देवतन्त्र वाले कृषक जनों ने इन किम्पुरुषों को नंपुषक और कापुरुष का कहा।

जम्बू द्वीप के पर्वत

1. **गन्धमादन पर्वत**- गिरि नदी के उदगम् क्षेत्रों में गुमा-गुण्ड-गोडना से सोलन जिले में पारियात्र पर्वत तक गन्धमादन उत्तर कुरु के अन्तर्गत था।

2. **पारियात्र पर्वत**- सोलन जिले में शिवालिक पर्वत माला[46] इसके उपर गुरु अत्रिजनों का निवास था। बाद में यहीं से पुरुजन सरस्वती नदी तक फैल गए। पारियात्र पर्वत से निकलने वाली नदी वेदवती पारियात्र पर्वत के पूर्वी भाग के सुद्युग्न/विद्युत/वैद्युत पर्वत से निकलने वाली सौद्युम्नि/सदादेनी/ सांदी या विद्युती-वेदवती ही रही होगी। आज मार्कण्डा की सहायक यह नकटी नदी कभी सरस्वती का मुख्य उदगम् मानी जाती थी। वेदवती के क्षेत्र को ही वेदवाहा या विदेह कहा गया होगा। वैद्यूत पर्वत पर ही किसी निवास स्थान का नाम वैजयन्ती रहा होगा जहाँ का राजा शम्भर कहा गया। शम्भर सोम्ब नदी प्रदेश के जनों का द्योतक है।

3. **मंदराचल पर्वत**- दक्षिण वाहिनी गिरि नदी के पश्चिम-पश्चिम होकर शिमला, पब्बर और इसके भी पूर्व तक स्थित पर्वतमाला। पृथु जनों का आदि निवास इस पर्वत पर सोलन के आस-पास था।[47]

4. **माल्यवान पर्वत**- केतुमालवर्ष (पूर्व वाहिनी गिरि नदी प्रदेश) के उत्तर में मंसूरी पर्वत माला। प्रस्त्रवण पर्वत का एक भाग।[48] यही मलय पर्वत था। ऋक्ष पर्वत (ऋषयमूक-गंगा यमुना दोआबे की शिवालिक पर्वत माला) पर, किसकिन्धा नगर के निर्वासिन भोग रहे सुग्रीव ने राम को मलय पर्वत से उस ओर आते देखा तो उन्होंने हनुमान को भेजा। हनुमान मलय पर्वत पर राम से मिले थे। मलय द्वीप को लंका कहते हैं।[49]

5. **मैनाक पर्वत**- यमुना नदी के पश्चिम में शिवालिक पर्वतमाला।[50] कैलाश पर्वत, मैनाक के दक्षिण में व इसका एक भाग था[51] मैनाक पर्वत मय जाति का निवास था,[52] आंबिकेय पर्वत के निकट मैनाक वर्ष को क्षेमक देश कहा गया है।[53] आम्बिकेय, कालेसर के समीप अम्बावाली खोल का उदगम् रहा होगा।

6. **ऋक्ष पर्वत**- गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वतमाला, यहाँ ऋक्षों का निवास था। यह एक कुल पर्वत भी था। मेरे विचार से राक्षी और दृष्द्वती नदियों का उदगम् उस समय यही पर्वत था। यमुना की तरह ही मस्कारा, बूढ़ी यमुना, साँदली और काथा भी तब हरियाणा की भूमि पर बहती थी। यही पर्वत रामायण का ऋक्षयमूक भी था। ऋक्ष पर्वत के पूर्वी भाग में हरिद्वार के आसपास दक्ष जन, उत्तरी भाग में पिशाच,[54] उत्तर पश्चिम में गुहयक (यमुनापार महेन्द्र पर्वत पर) पश्चिम में यमुना पार भूत, शिव। पौंटा साहिब के आस-पास यमुना ही पम्पा सरोवर (घाट) था, जिस में गिरकर ऋक्षरजस स्त्री हो गया था तब उसे इन्द्र और सूर्य से दो पुत्र बाली और सुग्रीव हुए ; ब्रहमा ने उसे स्त्री योनि से छुड़ा कर ऋष्यमूक का राजा बना दिया था। ऋक्षरजस के स्त्री बन जाने की कथा के पीछे उसका किसी ऐसे स्त्री बहुल कबीले या समाज में फंस जाना रहा होगा, जहाँ पुरुष स्त्रियों की भांति घर में रहकर बच्चों की देख भाल करते और अधिक संख्या में होने के कारण स्त्रियां वनों में शिकार आदि का बाहरी काम करती होंगी। ऐसे समाज को अमेजन कहते हैं; यहाँ पुरुषों की संख्या नहीं के बराबर होने से पुरुषों को खतरों से बचाने के लिए इस प्रकार की प्रथा की

आवश्यकता पड़ती। मनु के पुत्र सुद्युम्न का स्त्री हो जाना भी किसी ऐसे ही समाज में फंस जाना रहा होगा जहाँ समाज पूर्णतया मातृ सत्तात्मक, स्त्री बहुल या स्त्री शासित था। एक ऐसे ही स्त्री राज्य का वर्णन है जहाँ की रानी प्रमिला ने अर्जुन से युद्ध किया था, एटेकिंस ने इसे पूर्वी तिब्बत में पिनचिउ नामक रानी द्वारा शासित ''नू-वांग'' राज्य माना है।[55] पुराण प्रसिद्ध इलावर्त खण्ड में स्थित अम्बिका वन, जहाँ जाने से पुरुष स्त्री हो जाता था, कालेसर के उत्तर में थानवांग के पार आज भी अम्बिका फोरेस्ट के नाम से ही है। तव यह क्षेत्र ब्रज के अन्तर्गत, सरस्वती नदी के किनारे, नागों का निवास भी कहा गया है। सरस्वती यमुना का ही एक नाम है और ब्रज शब्द विरज का अपभ्रंश, यह पीछे हम कह आए हैं। रामायण में यक्षों का एक ऐसी जाति के रूप में वर्णन है जिस पर हुए रावण के आक्रमण के कारण पुरुष यक्ष समाप्त हो गए थे, ब्रहमा ने देवताओं को यक्ष स्त्रियों से सन्तानें उत्पन्न करने का आदेश दिया[56] सन्तानोत्पत्ति के लिए अन्य जातियों के पुरुषों का सहारा लेकर यक्षिणियों ने वानर, ऋक्ष, भल्लूक इत्यादि उत्पन्न किए।

7. **अनुपर्वत**- ऋक्ष पर्वत ही अनुपर्वत (पदम् हस्ति जनों का पदमवन भी) है इसके उत्तर में लोहित्य पर्वत था जिस पर शिव का गण मणिभद्र यक्ष (चैत्ररथ पर्वत वासी) का भाई मणिधर यक्ष निवास करता था। हिरण्य दैत्य के वंशज बलि, ययाति पुत्र अनु के वंशज बलि और कृष्ण के भाई बलराम अनुपर्वत के प्रदेश से साम्य रखते प्रतीत होते हैं साथ ही यक्ष वानर, हस्ती व अपसराऐं भी अनु पर्वत प्रदेश से सम्बन्धित लगते हैं। ययाति का पुत्र अनु... व्यक्तिवाचक नहीं अपितु इस पर्वत पर निवास करने वाले सभी जनों का संयुक्त एवं द्योतक नाम था.... अनुजनों का ही आनर्त था। गुजरात सौराष्ट्र का आनर्त....कुछ बाद में यहाँ से पलायन कर जा बसे जनों ने बसाया होगा। गंगा यमुना दोआबे के अन्तर्वेदी नाम के पीछे यही अनुपर्वत का आनर्त है। बलि, बलराम आदि बोली नदी प्रदेश के जनों का द्योतक नाम हैं। बलि की सवारी के काम आने वाले भद्र हाथी के अंजन, वामन, पद्यम, नाग, नन्द, संकीर्ण, सुप्रतीक और भद्र ये आठ पुत्र थे। संकीर्ण शंकर (ग्यारह रुद्रों में से एक) और संकर्षण (बलराम का नाम) समान क्षेत्र के निवासियों का द्यातक है। आनर्त के पुत्र रैवत की पुत्री रेवती और राज्य रैवतक बलराम को मिले थे। आनर्त की राजधानी कुशस्थली, यक्षों ने उजाड़ी थी। अब यक्षों के संकेत गुजरात में नहीं बल्कि यमुना तट पर मिलते हैं ऐसे में कुशस्थली अवश्य ही कौशिकी नदी के उपरी क्षेत्र में रहा होगा। लोहित्य पर्वत जहाँ यक्ष रहते थे, रैवत पर्वत और रूद्र में अपभ्रंशता की समानता है। नन्द पलक्ष द्वीप का प्रदेश था और वह पिछले जन्म का द्रोण वसु है। अंजन, अजनाभ, गज, हस्ती, वानर में साम्य है, अंजना पुत्र हनुमान के नाम में इसी अनु शब्द की ध्वनि है। हनुमान एक रूद्र भी कहा जाता है। पीछे हमने पितरों-पिशाचों का विरज क्षेत्र अनु जगाधरी, सहारनपुर के आस-पास कहा है यही विरज शब्द यादवों-युगन्धरों के ब्रज में है तो यही विरज बलि के पिता के नाम विरोचन में भी है। बलि की कथा में विष्णु के वामन अवतार का साम्य भद्र हाथी के पुत्र वामन से जुड़ता है। वसु-वासुकि जनों के वसुन्धरा (वसुधान्यक-बहुधान्यक-भादानक) क्षेत्र का प्रमुख देवता विष्णु था।..... मेरे विचार से विष्णु आर्य देवता नहीं अपितु प्रोटो आस्ट्रेलाईड कोलों-नागों का देवता है तभी तो इसकी शैय्या शेषनाग की है... कौमुदकी इसकी गदा है, कुमुद एक नाग है और एक हाथी भी है... नागों का इच्छाधारी होना प्रसिद्ध है। यह अपना टोटेम अथवा मुखौटा या वेश बदलकर दूसरे कबीले समाज में घुस जाने की घटनाऐं हैं। भद्र हाथी के पुत्र अंजन, वामन, नन्द, पदम, संकीर्ण, नाग, सुप्रतीक नाम हस्तिजन के विभिन्न

टोटेमिक कबीलों के द्योतक है। एक समय भद्र हस्ति बहुल्य क्षेत्र-बोली नदी क्षेत्र के किसी नेता को वामन जनों का टोटेम या मुखौटा, वेश धारण कर किसी ने पराजित किया होगा, हार या जीत देवता की कृपा से ही होती थी अतः विष्णु के बारे में वामन अवतार की कथा वनी। विष्णु के नर्सिंह अवतार और वराह अवतार आदि के पीछे ऐसी ही टोटेमिक घटनाऐं रही होंगी।

8. **महेन्द्र पर्वत**- सात कुल पर्वत में से एक परसुराम यहाँ दो बार बारह-बारह वर्षों के लिए तप करने गए थे। यह गुहय (गुहयकों) द्वारा शासित महेन्द्र भौम भी था।[57] यह कालेसर पर्वतमाला से उपर हरियाणा-हिमाचल प्रदेश का सीमा पर्वत लालधांग था। शिव पुत्र कार्तिकेय की भाँति परसुराम के साथ क्रौंचरन्ध के विद्रीण करने की कथा जुड़ी है।[58] इस पर्वत के पूर्व यमुनापार एक स्थल करौंदी है। इसी के समीप करौंदीवाला राव है। नदी तट के साथ ही शिवालिक पर्वत माला (क्रौंच शिखर) बहुत ऊंची-ऊंची है। यह दुर्गम और विकट है इतना घना वन है कि अभी तक यहाँ किसी सड़क का निर्माण नहीं हो पाया है। वर्षा और भूस्खलन से बड़े-बड़े पत्थर यमुना के बहाव मार्ग में गिरकर घाटी को अवरूद्ध कर देते हैं। जिसको यमुना की बाढ़ के कारण कालेसर के उत्तर में महेन्द्र पर्वत की तलहटी में बसी शिव बस्तियों के विनाश का खतरा उत्पन्न हो जाता था। परसुराम द्वारा या फिर कुमार कार्तिकेय द्वारा क्रौंचरन्ध को विद्रीण करना, अवरोधों को हटाना ही है। महेन्द्र पर्वत पर विल्ववृक्ष (बेलपत्र) के पाए जाने का उल्लेख है, विल्व पत्र का शिव पूजा के प्रयोग से महेन्द्र पर्वत के कालेसर के समीप होने की धारणा को बल मिलता है। भण्ड़ से युद्व के समय देवी ने महेन्द्र को चारों ओर अग्नि से घेर दिया था।[59] इस क्षेत्र में जंगलों में आग लगने का खतरा इतना अधिक हैं कि सुखराव नदी के क्षेत्र में सरकार द्वारा एक फायर लाईन घोषित है।[60]

9. **अंजन पर्वत**- गंगा यमुना दोआबे की शिवालिक पर्वत का यमुना के समीप दक्षिणी भाग में बड़कला पर्वत, गजपुर और गेजरी राव (बरसातीनदी) का क्षेत्र। आजकल यमुना नदी के पश्चिम में हथिनी कुंड का क्षेत्र भी। अच्छोदसर की निवासिनी आद्रि अपसरा केसरी की दूसरी पत्नी थी। यमुना पार महेन्द्र पर्वत की निवासिनी पुंजकस्थला अपसरा अगले जन्म में विरज वानर कुंजर की पुत्री अन्जना हुई जो वानर केसरी को अंजन वन में मिली थी। इन तथ्यों से लगता है कि अपसराऐं पिशाच जाति की स्त्रियाँ थी। कैलाश पर्वत के दक्षिण में पिशंग पर्वत और ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली पिशाचिका नदी[61] जो बूढ़ी यमुना ही थी तब हरियाणा की भूमि तक बहती थी, का क्षेत्र पिशाचों का मूल प्रदेश था किन्तु साथ ही यह क्षेत्र अपेक्षा कृत नीचा था। क्रौंचरन्ध बंद हो जाने का सीधा प्रभाव इस क्षेत्र पर पड़ता था..... विशाल बाढ़ से यह क्षेत्र विनाशकारी अच्छोदसर में परिवर्तित हो जाता था। विस्थापित पिशाच जाति की स्त्रियाँ दूसरे क्षेत्र में जीवनयापन के लिए भकटती व अपसराओं का कार्य करतीं। पिशाचों को हेय समझने वाले समाजों में पिशाच स्त्रियों (अपसराओं) को रखना सामाजिक प्रतिष्ठा माना जाता रहा होगा। विवाह के बाद भी पर पुरुष से सम्बंधों के लिए पिशाच स्त्रियाँ स्वतन्त्र होतीं थीं। चाहे ऐसी प्रथा जीवनयापन के लिए हो। केसरी वानर की प्रथम स्त्री अंजना का सम्बंध पवन (?) से और दूसरी स्त्री का सम्बंध उपरिचर वसु से इस प्रकार के सम्बंधों का खुलासा करते हैं। जीवन यापन के लिए अपनी स्त्रियों से ऐसा कार्य करवाने की प्रथा नटों/करनटों में मिलती है। (रांगेय राघव का उपन्यास "कब तक पुकारुं" इसी सच्ची प्रथा पर आधारित कथानाक है)। अजमेर से

लगभग तीस कि.मी. दूर जयपुर मार्ग पर वानर सुन्दरी ग्राम के निवासियों का सम्बंध प्राचीन कालीन वानर सुन्दरियों (अपसराओं) से प्रतीत होता है। केसरी वानर था और सम्भवत: गेजरा राव क्षेत्र में निवास करता था, इसी प्रकार पुंजकस्थला अपसरा, (बहुत सम्भव है कि पुंजकस्थला अंजन पर्वत से निकलने वाली बरसाती नदी पंजाराव के क्षेत्र की निवासिनी का द्योतक नाम हो)। जो कि किसी प्रकार अंजन वन में चली आई थी, वानरी कही गई है, पिशाचों से इनके संबंध को ("आद्रि" अप्सरा के विवरण को देखते हुए) नकारा नहीं जा सकता। आद्रि का एक पुत्र आद्रि, पिशाचों का राजा हुआ और पुत्री अजगन्धा शान्तुनु की महिषि बनी। परासर मुनि का पुत्र कृष्ण द्वैपायन इसी मतस्यगन्धा से उत्पन्न हुआ था। इसी प्रकार वानर राज शुक की बहन ऋक्षा के पुत्र जाम्बवान के व्याघ्री से उत्पन्न सोलह पुत्रों में से एक नाम् पिशाच है। जाम्बवान अवश्य ही ऋक्ष पर्वत यमुना नदी प्रदेश की जाति का नाम था। व्याघ्र भी इन्हीं की तरह इस क्षेत्र की एक कबीलाई टोटेमिक जाति थी। इन का सम्बंध बहुत कुछ गंगा-यमुना के उपरी दोआबे में गैरिक मृदभांड़ जनों से लगता है। किन्तु गैरिक मृदभाण्ड़ समाज इन की अपेक्षा अधिक सभ्य जनों का था वे सम्भवत: अहि या नाग थे। वानरियों अपसराओं और गन्धर्वियों में भी समानता थी।

10. **क्रौंच पर्वत**- मैनाक और ऋक्ष पर्वतों (यमुना नदी के पश्चिम और पूर्व की शिवालिक पहाड़ियों) के बीच का पर्वतीय क्षेत्र जिसे क्रौंचरन्ध्र कहा गया है किसी कारण सम्भवत भूकम्पीय घटना से क्रौचरन्ध बंद हो गिरित्र नामक विशाल जलोध (जलावरोध) वन जाता था।[62] कैलाश कालेसर के निवासी शिव के पुत्र कार्तिकेय (अथवा कुछ के अनुसार परसुराम) ने क्रौंचरन्ध्र को विद्रीण किया था। क्रौंच और मैनाक, मैना और हिमवान के पुत्र थे।[63]

11. **श्रंगवान पर्वत**- उत्तर कुरु वर्ष का सीमा पर्वत। उत्तरकाशी जिले का आधुनिक श्रंगकाठा।

12. **श्वेत पर्वत**- हिरण्यमयवर्ष का सीमा पर्वत, हिमाचल प्रदेश की धौलाधार पर्वत माला अथवा गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वतों का उत्तर-पश्चिमी भाग।

13. **नील पर्वत**- शिवालिक पर्वतमाला सोलन जिले का पश्चिमी भाग

14. **मलय पर्वत**- माल्यवान पर्वत (मसूरी पर्वतमाला) ही मलय पर्वत का मलय द्वीप था। जिसे द्वितीय मंदर, अगस्त्य आश्रम और लंका भी कहते हैं[64] रक्षों के उत्कर्ष के समय उनके अधिकार क्षेत्र में आता होगा।

15. **हिमवान**- मैनाक और पारियात्र पर्वत का संयुक्त नाम, यमुना नदी के पश्चिम में शिवालिक पर्वत

16. **कैलाश पर्वत**- यमुना नदी के समीप कालेसर क्षेत्र में। क्रौंचरन्ध्र (यमुना के बहाव मार्ग) के भूकम्प/भूस्खलन आदि के कारण करौंदी क्षेत्र में जमा जल महेन्द्र पर्वतमाला और कैलाश पर्वतमाला की तलहटी में बहता हुआ शिवों की बस्तियों को प्रभावित करता होगा। अत: क्रौंचरन्ध्र को तोड़ना आवश्यक हो जाता था। दूसरा मार्ग बना कर बहता यमुना जल गिरित्र समुद्र, अच्छोदसर आदि का निर्माण करता आगे की बस्तियों को प्रभावित करता होगा। अच्छोदसर ही बिन्दुसर था और राक्षी (मस्कारा नदी क्षेत्र) नदी क्षेत्र में राक्षस ताल प्राकृतिक रचना थी। राक्षस ताल और बिन्दुसर दोनों को मानसरोवर के संयुक्त नाम से जाना जाता था। जो कैलाश के दक्षिण में थी। क्रौंचरन्ध्र बंद होने की घटना अक्सर आँधी, तूफान, वर्षा, भूकम्प और भूस्खलन के कारण होती थी और नदी के कारण

विनाश इसके दक्षिण में। समीप क्षेत्र में बसे होने के कारण ही शिव को आँधी-तूफान-प्रलय (जल) धरती के हिलने (भूकंप)-विनाश अथवा संहार का देवता कहा गया होगा। दूसर शब्दों में किसी कारण कुपित होकर इसे शिव का कृत्य ही माना जाता था।

जम्बू द्वीप की नदियां

1. **सीता नदी**- गुमा, गुण्डा, गोड़ना से निकलने वाली वर्तमान गिरि नदी। गंगा सुमेरु पर गिरकर सीता सहित चार भागों में विभक्त हुई। सीता नदी गन्धमादन और मंदराचल के वीच से बहती हुई केतुमालवर्ष होकर पूर्व में भद्राश्व वर्ष की ओर जाती थी[65] यह केतुमालवर्ष में केतुमती कहलाती थी। प्रस्त्ररण पर्वतों के कारण यही प्रस्त्रा/पलक्षा नदी थी। कालेसर से मैदानों में उतर कर पश्चिमवर्ती होती तो सरस्वती कहलाती। इसके पश्चिम दिशा में मुड़ने का स्थान प्रभाष क्षेत्र था। प्रभाष (वसु) का क्षेत्र कभी कृष्ण का भी रहा था। प्रभु शब्द प्रभाष के आराध्य देवता के लिए प्रयुक्त शब्द रहा होगा। सीता का एक नाम लाक्षकी भी है।[66] पलक्षा नदी क्षेत्र में निवास करने के कारण निवासी पलंकष कहलाये। यही पलक्षा या पंलकष शब्द ''पौलस्त्य'' और लंका के मूल में है। पंलकष का अर्थ राक्षस होता है।[67] राक्षसों के नामकरण में राक्षी नदी का कारण भी प्रमुख रहा होगा। मस्कारा तब राक्षी या दृषद्वती के रूप में पश्चिम में हरियाणा की भूमि तक बहती रही होगी।

2. **शैलोदा नदी**- उपर्युक्त सीता, केतुमती, लाक्षकी या सरस्वती इसी शैलोदा के क्षेत्रीय नाम थे। उत्तर कुरू की इस प्रसिद्व नदी के तटों पर तंगण-परतंगण, खस-प्रधस, कुलिन्द, पारद-अर्हप्रदर, ऐकासन आदि जनों का निवास था।[68] सीता और शैलोदा में साम्य है विष्णुपुराण ने इसे शैलात्सीता कहा है।[69] देहरादून के जगतग्राम के समीप कालसी के निकट मिले लेख में इस प्रदेश का नाम युगशैल कहा गया है।[70] खशों के गाँव के गाँव आज भी दक्षिण पूर्वी हिमाचल प्रदेश में फैले हैं।[71] शैलोदा नदी के तटों पर कीचक नामक बाँस वन था। वाल्मीकी. किसकिन्धा. में कहा गया है।[72]

तं तु देशमति क्रम्य शैलोदानाम निम्नगा।
उभयोस्तीरयोस्तस्याः कीचका नाम वेणवः॥

पदम चन्द्र कश्यप ने कीचक (चीनी भाषा का शब्द) को रामपुर से महलौग तक सतलुज नदी के बाँये तट पर माना है। उनके विचार में मतस्य इसी के समीप कालका से रोहडू तक था जो त्रिगर्त के समीप था। महाभारत में कीचक मतस्य के राजा विराट का साला है। त्रिगर्तराज शुशर्मा का मतस्य पर आक्रमण दोनों राज्यों के निकट होने पर ही सम्भव था। बाद में मतस्य जन जयपुर अलवर क्षेत्र के बीच जा बसे होंगे। मेरे विचार से मतस्यों का मूल सहारनपुर जिले में मस्कारा नदी तट और बेहाट में था।

3. **चक्षुनदी**- वर्तमान घघ्घर, जो तब चंक्षु/ चक्षुमती/ईषुमती/ हिरण्यवती और अंगिरसी आदि क्षेत्रीय नामों से जानी जाती थी। यह नदी हिरण्यमयवर्ष से निकलने के कारण हिरण्यवती (कुरू देश की एक नदी)[73] अंगिराओं के कारण अंगिरसी, इक्ष्वाकुओं के प्रदेश में इक्षुमती[74] और पुरु जनों के देश की पुरीषिणी (ऋग्वेद 5.53.9) थी।[75] चक्षु नदी माल्यवान से निकलकर केतुमाल वर्ष से गुजरती हुई पश्चिम की और जाती थी।[76]

4. **अम्बरनदी**- मेरु पर्वत से निकलने वाली अम्बर नदी देवभ्राज, महाभ्राज तथा वैभ्राज महावनों को सींचती हुई सितोदक झील में गिरती थी। वहाँ से सुपक्ष, शिखि, कंक, वैदूर्य, कपिल, गन्धमादन, पिंजर, सरस, कुमुदांचल, मधुमन्त, मुकुट, कृष्ण,श्वेत, सहस्त्रशिखर और पारिजात पर्वतों से होती हुई केतुमालवर्ष को प्लावित करती पश्चिमी सागर में गिरती

थी।[77] सिरमौर जिले में यमुना के पश्चिम में गिरि-यमुना नदियों के बीच पौंटा साहिब के पश्चिमोत्तर में डंडा अम्बोआ वन; सिरमौर जिले में यमुना नगर की सीमा पर यमुना के पश्चिम में किन्तु निकट की लालधांग पहाड़ियों के उत्तर में अम्बिका फोरेस्ट; कालेसर से कुछ दक्षिण में एक बरसाती नदी अम्बावाली खोल और कैलाश/ कालेसर के शिव की स्त्री का नाम अम्बा-पार्वती से उस यमुना /गिरि के ही अम्बर नदी कहे जाने की धारणा बनती है जो कभी कालेसर के उपरान्त पश्चिमवाहिनी सरस्वती के नाम से जानी जाती थी। अम्बाला, काला अम्ब और सहारनपुर जिले में शाकम्भरी से इस नदी क्षेत्र को स्त्रियों द्वारा शासित स्त्री बहुल अथवा मातृसत्तात्मक कबीले समाजों का अम्बा क्षेत्र कहे जाने का पता चलता है। पितृों पिशाचों का विरज, मथुरा के ब्रज का आधार है किन्तु जिस ब्रज के अन्तर्गत उस अम्बिकावन/उमावन का वर्णन है जहाँ जाने वाले पुरुष स्त्री हो जाते थे[78] यमुना नगर सिरमौर की सीमा के आसपास रहा होगा। इसी क्षेत्र को ही शंकर-पार्वती की वह क्रीडा भूमि कहा गया है जहाँ जाने पर मनु का पुत्र सुद्युम्न स्त्री हो गया था।[79] इसके अतिरिक्त वह पंपासर जिसमें गिर कर स्त्री हो गए ऋक्षरजस ने बाली और सुग्रीव को जन्म दिया[80] अवश्य ही पौंटा साहिब के आसपास था। कैलास/कालेसर के दक्षिण में हथिनी कुंड के उपरान्त का क्षेत्र यमुना नदी की अनियमितताओं के कारण छोटी-बड़ी असंख्यों झीलों का मानसरोवर था। ये बिन्दुसर थे। सूर्यवंशी मान्धाता की स्त्री यादवी बिन्दुमती और उसके पुत्र अम्बरीष के मिथकों के पीछे इस क्षेत्र की भौगोलिक-ऐतिहासिक घटनाऐं हो रही होंगी। सरस्वती नदी के कारण मान्धाता और अम्बरीष सूर्यवंशी कहे गऐ किन्तु यह क्षेत्र तो वसुओं/वासुकियों/यादवों का था। इन्द्र-मित्र-वरुण प्रजक PGW जनों को कोई ग्राम-गोत्र सरस्वती नदी के किनारे किनारे आगे बढ़ कर ज्यामद्यों (जमुना नदी क्षेत्र के यादवों जनों का एक द्योतक नाम) के बिन्दुसर क्षेत्र में आ बसा, यहाँ से आगे बढ़ कर मान्धाताओं (मुचकुन्द) ने किसी कर्कोटक नाग की नगरी छीन ली। मधुचादव ने मान्धाता की हत्या की। मथुरा इसी मधुयादव ने बसाई थी (किन्तु यह वर्तमान मथुरा नहीं अपितु जगाधरी के आसपास कोई छोटा कबीलाई ग्राम था) कर्कोटकों की नगरी हैहयों (सृज्जयों) ने छीनी. ... यह घटना ऋग्वेद में है कि सुदास पैजवन ने यमुना तट पर अज (नागों) शिग्रु और यक्षु जनों को पराजित किया था।

कृषक PGW जनों के पास इन्द्र-मित्र-वरुण वाला विस्तृत देवतंत्र था जबकि वसु-वासुकि, यदु-योगन्धरों के दो ही देवता थे-विष्णु और शिव; अम्बर नदी क्षेत्र के ये दोनों देवता इसीलिए संभ्वतः अम्बा (स्त्री वाचक) के अम्बरीष (पुरुष वाचक) कहें हैं।[81] वरुण भी अम्बुपति या अम्बुप है।[82] ग्यारह आदित्यों में वरुण सबसे बड़ा और विष्णु सबसे छोटा है वहाँ शिव नहीं है इन्द्र है। इन्द्र का वाहन ऐरावत हाथी है और विष्ण का वाहन गरूड़। गरूड़ः सम्भवतः गो क्षेत्र के रूद्र ही हैं.... गो रूद्र-गरूड़। किन्तु गरूड़ नागों के शत्रु और शिव नागों के रक्षक.... कहीं शिव और रूद्र अलग-अलग तो नहीं? **मतस्यों का "प्राक मतस्य"**- कालेसर क्षेत्र में यमुना नदी के एक ओर आम्ब वन है तो दूसरी ओर बारा/ बरकला वन, इन्हीं दोनों के कारण नदी को अम्बर नदी नाम दिया गया लगता है। गेजरा राव, बादशाही बेग और पंजाराव के दक्षिण में बरकला राव और मस्कारा नदियों का प्रदेश पहले प्राक-मतस्य था। अच्छोद सर (अजसर) अथवा हथिनी कुण्ड की निवासिनी आद्रि अपसरा से उपरिचर वसु के अजगन्ध/अजगन्धा/मतस्यगन्धा/मछोदरी नामकपुत्री और आद्रि पिशाचों नामक पुत्र था आद्रि मछोदर ही था। मस्कारा नदी मच्छकारा अथवा मतस्यकारा

का अपभ्रंश लगती है और बरकला राव नदी के क्षेत्र में मतस्यों का मूल नगर वैराट (बाराअट अथवा बेहाट) रहा होगा। यह भी हो सकता है कि पुरात्तववेत्ताओं ने बड़गांव के रूप में वैराट को ही खोद डाला हो। इस सम्पूर्ण क्षेत्र का नाम वैराज-पितरों-पिशाचों का विरज था, कोई आश्चर्य नहीं यदि वैराज अथवा वैराट जन इन्द्र के शत्रु वृत्र हों क्योंकि भरत दौष्यन्ती ने गंगा-यमुना क्षेत्र में वृत्रघन किया था....

ऋग्वेद 7.18.6 में मतस्यों को सुदास पैजवन का शत्रु बताया गया है और मतस्यों का द्वैवतन सरस्वती तट पर था।[83] शतपथ ब्रा. 13.5.4.9 में ध्वसन द्वैतवन ने सरस्वती तट पर अश्वमेघ यज्ञ किया था। युद्व में विजयश्री मिलने पर राजा द्वैतवन ने इन्द्र वृत्रहन के लिए चौदह घोड़े तैयार किए थे। महाभारत में द्वैतवन वन और झील दोनों का उल्लेख है। यदि द्वैतवन सरस्वती तटों पर था तो प्राक मतस्य जयपुर-अलवर के बीच वर्तमान वैराट नहीं हो सकता। प्राक मतस्य की उचित स्थिति पाई जा सकती है- द्विविद, क्रौंच द्वीप की एक पहाड़ी का नाम है और क्रौंच अर्थात करोंदी, कालेसर के पार यमुना के पूर्वी तट पर, करौंदीवाला राव का प्रदेश....था। बरकला वन, बरकला नदी अथवा बारा क्षेत्र के निवासी हुए बारा नर... अर्थात बानर। द्विविद उस वानर मैंद का भाई भी है जिस की पुत्री वानर बलि के पुत्र अंगद की स्त्री थी। द्विविद से दृष्द्ववती क्षेत्र का भान होता है। द्विविद नरकासुर का मित्र था। कृष्ण द्वारा नरकासुर के वध के उपरान्त द्विविद रैवत में आकर उत्पात करने लगा उसने कुशस्थली उजाड़ दी। बलराम द्वैतवन आए थे। उन्होंने द्विविद को मारा। सम्पूर्ण घटनाच्रक दृष्द्वती कौशिकी नदियों के उपरी क्षेत्र में घटित हुआ लगता है। बरकला राव और मस्कारा तब इनकी उपरी सहायक नदियाँ थीं और यदि दृष्द्वती नदी क्षेत्र में द्वैतवन था तो संबंधित द्विमीढ़ और यादवों का द्विमीढ़ यहीं था ऋग्वेद के अज-शिग्रुव-यक्षुव जनों को ही संयुक्त रूप से मतस्य कहा गया है। वे बारा क्षेत्र के ऋक्ष बारानर (बानर) भी थे और पिशाच, गज, हस्ति और नाग आदि भी। विष्णु और शिव दोनों ही वसु-वासुकी अर्थात अजों/नागों के देवता हैं थोड़ा सा आगे बढ़ कर कहें तो ग्यारह आदित्यों वाला देवतन्त्र अजानाभखण्ड के अजों का ही है। अज-आदित्य-अदिति में साम्य है। आदित्य का अर्थ मातृसत्तात्मक समाज। वरुण महाभारत कालीन वारणावत के मूल में है और वरुण का पुत्र सुषेण, वानर बलि का स्वसुर है। पुराणों में पृथु और अर्चि के पौत्र हर्विधान के गय आदि छह पुत्रों में से एक वर्हिषद या प्राचीन बार्हि का उल्लेख है इनके पुत्र दक्ष आदि प्रचेतागण थे। दक्ष का निवास कनखल (हरिद्वार) है और वर्हि या बर्हि, बारा बरकला का प्रतिनिधत्व करते हैं। इन्द्र शत्रु वृत्र, पुरुवंशी (भरत), उपरिचर वसु का पुत्र ब्रहद्रथ महाभारत काल में पिशाचों का राजा वृहन्तः उत्तर कुरूओं से सम्बंधित वृष और महावृष, और वंश प्रवर्तक बुध भी बारा बरकला से सम्बंधित प्रतीत होते हैं, बुध - वृहद या वृहत या भरत। विष्णु का वराहरूप.... बारा क्षेत्र की वराह जाति ही थी।

इस सम्पूर्ण क्षेत्र का नाम विरज, महाभारत कालीन वारणावत, यादव युगन्धरों का वृष्णि वंश, कृष्ण से सम्बंधित वृन्दावन यहीं से संबंधित है और मणिपुर भी पूर्वी भारत में असम के समीप नहीं वरन मणिशैल का प्रदेश था जहाँ के यक्षों के अधिपति कुबेर थे। यह बारा बरकला प्रदेश ही था जहाँ की चित्रांगदा का पुत्र बब्रूवाहन था। मणि से संबंधित अधिकतर नाम नागों अथवा यक्षों के ही है। मंदर मणिधर का पर्याय लगता हैं, मणिभद्र यक्ष चैत्ररथ पहाड़ी... जौनसार बाबर पर रहता था। मणिवर यक्ष कैलाश के यक्षों का राजा और मणिवरा से तीस गुहयकों का पिता भी था।

अर्जुन द्वारा बबूवाहन के वध के उपरान्त सौतेली माता उलूपी द्वारा उसे जीवित करने की घटना से चित्रवाहन का मणिपुर हरिद्वार कनखल के समीप बारा बरकला या उससे उत्तर में जौनसार बाबर तक प्रतीत होता है– समीपता की दृष्टि से यही उचित है। यह भी बहुत संभव है कि बारा बरकला क्षेत्र के निवासी बर्हिषदों के वंशज प्रचेताओं का अपभ्रंश ही पिशाच-पितृ हों और दक्ष प्रचेताओं/पिशाचों में से एक हो।

वाड़वामुख, जिसके विषय में कहा गया है कि इस अग्नि से चराचर जगत के प्राणी विकल होने लगे तब ब्रहमा ने सरस्वती को आदेश दिया कि वह वाड़वा को ले जाकर समुद्र में बहा दे, वाड़वा के सम्पर्क में आकर नदी का जल खौलता हुआ समुद्र बन गया। सरस्वती ने वाड़वा को भूगर्भ मार्ग से ले जाकर समुद्र में डुबो दिया, किन्तु स्वयं भी वापिस नहीं आ सकी। वाड़वामुख असल में बारा/बरकला वन में लगी भीषण आग ही थी और इसी समय सरस्वती के मार्ग परिवर्तन की घटना भी हुई थी, इससे दोनों घटनाओं की संयुक्त अनुश्रुति का जन्म हुआ।

सन्दर्भ ग्रंथ, निबंध एवं पाद टिप्पणियाँ

1. **एस. मुजफ्फर अली**, **''ज्योग्राफी ऑफ पुराणाज''** दिल्ली, 1983, पठनीय
2. **भगवानसिंह सूर्यवंशी**, **''ज्योग्राफी ऑफ महाभारत''**, मुख्य पृष्ठ पर मानचित्र,
3. **एस. मुजफ्फर अली** पृ. 39 और 200 पर पाद टिप्पणी 37, 38, 39
4. वही, पृ. 41-42
5. वही, पृ. 39 और 200 पर पद टिप्पणी 37, 38, 39
6. **रोशन गुप्ता**, **''द फर्स्ट चैप्टर ऑफ हिस्ट्री ऑफ ऐंशेंट इण्ड़िया''** पंजाब हिस्ट्री कांफ्रेस'' 1986, पृ. 29
7. **भगवान सिंह सूर्यवंशी**, वही
8. वही,
9. **एस. मुजफ्फर अली** पृ. 39, **वी.वी. अय्यर** का समीकरण
10. **भगवान सिंह, सूर्यवंशी**, वहीं; **एस. मुजफ्फर अली** पृ. 39
11. **रोशन गुप्ता**, पृ. 29
12. **एस. मुजफ्फर अली** पृ. 39, **वी वी अययर** का समीकरण
13. **भगवानसिंह सूर्यवंशी**, वही **रोशन गुप्ता**, पृ. 29
14. **एस. मुजफ्फर अली** पृ. 39, **कर्मल गेरिनी** का समीकरण
15. वही ,पृ. 39, **एस. विल्फोर्ड** का समीकरण .
16. वही पृ. 39, **वी.वी. अय्यर** का समीकरण
17. **भगवानसिंह सूर्यवंशी** वही,
18. **एस. मुजफ्फर अली** पृ. 39 एफ विल्फोर्ड का समीकरण
19. वही पृ. 39 **वी. वी. अय्यर** का समीकरण
20. **रोशन गुप्ता**, पृ. 29
21. माउंट किलोमांजरो को **के.एम. वैद्य सुमेरू** शिखर मानते हैं **''क्या पुराणों का मेरू पर्वत अफ्रीका में है?** धर्मयुग, 7 दिस, 1980, पृ. 19-20
22. अल्टाई शान को ड़ा. आर. जी. हर्षे सुमेरू कहते हैं, **बलदेव उपाध्याय ''पुराणविमर्श''** पृ. 319-20
23. माउंट ऐवेरेस्ट को **श्याम नारायण पाड़ेय** सुमेरू से समीकृत करते हैं **''हिस्टोरीकल**

ज्योग्राफी ऑफ महाप्रलय गिविंग राईज टू जम्बू द्वीप कल्चर'', आई. एच. सी. 48वाँ अधिवेशन, पृ. 56

24. पामीर के पठार को सुमेरू मानने वालों में एस. मुजफ्फर अली परमानन्द पटेल, रोशन गुप्ता, द्वारिका प्रसाद मिश्र, वासुदेव शरण अग्रवाल, डा. मोती चन्द्र, बलदेव उपाध्याय आदि हैं।
25. विश्वेश्वरनाथ रेउ ''ऋग्वेद पर एक ऐतिहासिक दृष्टि'' पृ. 255 पर सुमेरू को उत्तरी ध्रुव से समीकृत करते हैं।
26. रमाशंकर भट्टाचार्य, ''प्राचीन भारत का इतिहास'', दिल्ली, 1971, पृ. 211
27. सर्वानन्द पाठक, पृ. 20-21
28. वासुदेव शरण अग्रवाल ''भारत सावित्री'' खण्ड-2 दिल्ली, पृ. 126
29. बलदेव उपाध्याय, पृ. 323, एस. मुजफ्फर अली पृ. 28
30. कीथ व मैकड़ोनेल भाग-2 पृ. 60
31. वी.के माथुर, ''ऐतिहासिक स्थनावली'' पृ. 911, सूर्यवंशी पृ. 133
32. वी.के. माथुर, वसुदेव शरण अग्रवाली, एस मुजफ्फर अली भद्राश्व वर्ष को सिक्यांग मानते हैं जबकि भगवान सिंह सूर्यवंशी तिब्बत से दक्षिण चीन तक के भू-भाग को भद्राश्व वर्ष कहते हैं।
33. वासुदेव शरण अग्रवाल, ''पाणिनी कालीन भारतवर्ष'' पृ. 72
34. वी. के माथुर पृ. 659
35. विमल चरण लाहा, ''प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल'' अनु. ग्रन्थ', पृ. 218
36. ओ.पी. भारद्वाज, ''वाल्मिकीज हिस्टोरीकल ज्योग्राफी ऑफ कुरूक्षेत्र'', पंजाब हिस्ट्री कांफ्रेंस, 1978, पृ. 32
37. लाहा, पृ. 15-16
38. हिरण्यवती नदी कुरू राज्य की नदी थी- रेउ, पृ. 107 हिरण्यमयवर्ष या हिरण्यमय की नदी हैरण्यवती थी-वी.के. माथुर पृ. 1023, वासुदेव शरण अग्रवाल ''पाणिनी कालीन भारतवर्ष'' पृ. 72 और भारत सावित्री, भाग-2 पृ. 124
39. सूर्यवंशी, पृ. 99
40. हालांकि भारत में हिरण्यदैत्य नाम की कोई जाति नहीं रही। सृज्जयों के ब्राहमण विरोधी कृत्यों के कारण पुराणकार ने सृज्जयों को आधार बनाकर, ब्राहमणों और उनके देवतन्त्र विरोधी हिरण्यदैत्य की काल्पनिक वंशावली व कथाओं की रचना की। इसमें उसने मात्र ''स'' का ''ह'' में परिवर्तन किया।
41. मनुसंहिता में ब्राहमण पिता व शूद्र माता की सन्तान को निषद कहा गया है- लाहा ''ऐंशेट इण्डियन ट्राईब्स'', पृ. 61 जबकि पुराणों में निषाद, अंग के अत्याचारी, नास्तिक, ब्राहमण विरोधी पुत्र वेन का पुत्र है- वही, पृ. 63 निषादों की राजधानी ''गिरिप्रस्थ'' नाम से पता चलता है कि निषाद, सरस्वती नदी के आस-पास यमुना नदी क्षेत्र में ही थे। वह स्थान जहाँ से सरस्वती नदी मार्ग बदलकर यमुना के रूप में बहने लगी (लुप्त हुई) से आगे के क्षेत्र में अपने उत्कर्ष में निषाद रहते होंगे क्योंकि महाभारत में कहा गया है कि ''द्वारं निषाद राष्ट्रस्यं येषां दोषात सरस्वती पृथिवि वीर मा निषदा हि मां बिन्दु। वी. के. माथुर, पृ. 503, निषादों के उत्कर्ष का काल सुदास पैजवन का काल था। इसके राज्य के अन्तिम वर्षों में सम्भवत: सरस्वती नदी के मार्ग बदलने की अनिश्चितता शुरू हो गई थी।
42. उपाध्याय, पृ. 333-34 कुछ लोगों का मत है कि द्रविड़ों के अन्तर्गत भर जाति जो कभी पूर्वी संयुक्त प्रान्त में रहती थी, के कारण ''भारत'' का नाम पड़ा। भर जाति के मानव की

खोपड़ी बयाना में गम्भीर नदी के किनारे धरती में 35 फुट नीचे मिली है।- **रांगेय राघव, ''प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास''** पृ. 5

43. महाभारत आरण्यक पर्व के अनुसार काम्यक वन, कुरू जांगल से सरस्वती नदी के उद्‌गम तक (कालका से थानेसर) तक फैला था- **सूर्यवंशी** पृ. 143-145 पतंजलि के आधार पर **अलबेरूनी (सरवाउ ''अलबेरूनीज इण्ड़िया''**, जिल्द-1, पृ. 249) किम्पुरूष वर्ष की जिन दो नदियों -सांदी और मदयन्दा का जिक्र करता है वे सौद्युम्नि या सदादेनी और मघुश्रवा (वामनपुराण में हरियाणा क्षेत्र की सात नदियों में से एक -**के. सी. यादव, ''हरियाणा का इतिहास''** भाग-1पृ. 27 से 29) माधवी या मार्कण्ड़ा रही होगी। कैथल को (जिसे हनुमान से संबंधित कपिस्थल या ऋषि कपिल से सम्बंधित कपिलस्थल का अपभ्रंश माना जाता है और अलबेरूनी ने कवितल तथा ऐरियन ने काम्बिस्थलोई लिखा है- **वी.के. माथुर,** पृ. 136) बहुत कुछ काम्यक/काम्यकथल अथवा कामथल का अपभ्रंश प्रतीत होता है। थानेसर से 15 कि.मी. दूर पेहवा रोड़ पर कामोड़ ग्राम को कामेश्वर महादेव से सम्बंधित माना जाता है **ओ. पी. भारद्वाज, ''गौतम बुद्धा इन कुरूक्षेत्र''** पृ. 51-54 ब्रहमा की छाया से उत्पन्न किम्पुरुषों का निवास कैलाश पर्वत पर बताया जाता है, **तेज राम शर्मा, ''ऐशेट ट्राईब्स ऑफ पंजाब हिलस्टेटस''**, पंजाब हिस्ट्री कांफ्रेंस 1980 पृ. 69, कैलाश शिखर मैनाक पर्वत माला (शिवालिक) का एक भाग था-**लाहा** पृ. 28 178 और **सूर्यवंशी**-पृ. 113, इससे किम्पुरुषों का निवास किम्पुरुषवर्ष यमुना नदी के पश्चिम में होने की धारणा को बल मिलता है।

44. गन्धमादन ओर पारियात्र पर्वत आपस में मिले हुए थे। पारियात्र पर्वत पर बड़ी संख्या में गन्धर्वों का निवास बताया गया है-**लाहा**, पृ. 129, **सूर्यवंशी**-112

45. **सूर्यवंशी** का समीकरण-**मंजुला श्री वास्तव, ''वाल्मिकीय युगीन भूगोल''** पृ. 44, **रामकुमार राय, ''वाल्मीकिय रामायण कोष''** पृ. 97

46. महाराज पृथु की अन्त्येष्टि क्रिया मदरांचल पर्वत पर हुई थी **राणा प्रसाद शर्मा** 388

47. **मंजुली श्रीवास्वत** , पृ. 40; **वी.के. माथुर** पृ. 592; 741

48. **राणा प्रसाद शर्मा ''पौराणिक कोश''** पृ. 403, देहरादून जिले में असान नदी की सहायक सीतला राव के उदगम स्थल मसूरी पर्वतमाला में एक स्थान लंघा है। यह रावण की लंका तो नहीं थी किन्तु अगस्त्य आश्रम हो सकता है। लंका तिब्बती शब्द-ग्लिनका का अपभ्रंश (अर्थ छोटे नदी द्वीप या नीची भूमि) **रांगेय राघव,** -च (भूमिका में)

49. **लाहा**, पृ. 178

50. **लाहा**, पृ. 28; 178, **सूर्यवंशी** पृ. 113

51. मय दानव की हेमा अपसरा से उत्पन्न एक पुत्री माया, पड़ोस में सोम्ब नदी के शम्भरों को दूसरी पुत्री मंदोदरी राक्षी नदी क्षेत्र के राक्षसों में ब्याही थी। **राणा प्रसाद शर्मा,** पृ. 389, 400; मयदानव भवन निर्माता और शिल्पी थे वही पृ. 400, विश्वकर्मा तवष्टा भी मय पुत्र माना गया है। मेरे विचार से ये इन्द्र-मित्र वरुण पूजक कृषक PGW जनों की भांति ईटों का प्रयोग करके पत्थरों को जोड़ कर घर मकान बनाने की कला में माहिर थे। विश्वकर्मा, प्रभाष वसु के पुत्र थे जो वृहषपति की बहन वरस्त्री से उत्पन्न हुए-**राणा प्रसाद शर्मा,** पृ. 335

52. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ. 433

53. पिशाचिका ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली नदी थी- **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ. 309 ऋक्ष पर्वत निकलने वाली ऋक्षा नदी वही राक्षी रही होगी।

54. **नन्दो लाल डे, ''द ज्योग्राफिकल डिक्शनरी.....''** पृ. 194

55. **रामकुमार राय,** पृ. 248

56. राणाप्रसाद शर्मा पृ. 412
57. वही, पृ. 137
58. वही, पृ. 412
59. मानचित्र 53 एफ-11, देहरादून, सर्वे ऑफ इण्डिया
60. राणाप्रसाद शर्मा, पृ. 308-309
61. गिरित्र उस समुद्र को कहा गया है जिसमें इन्द्र के भय से मैनाक पर्वत जा छिपा था। इन्द्र द्वारा पर्वतों के पंख काट देने की घटना के पीछे कोई बड़ी भूकम्पीय घटना रही होगी जिसमें पर्वतों के खण्ड़ टूट कर गिरे। इस भूस्खलन से क्रौंचरन्ध्र के बंद होने से गिरित्र समुद्र बना होगा। सीता नदी क्षेत्र की भी ऐसी ही किसी झील को सीतोदसर कहा गया।
62. राणाप्रसाद शर्मा, पृ. 433
63. वी.के. माथुर, पृ. 911 पर शैलोदा मेरु और मदराचल पर्वतों के बीच बहती थी- सूर्यवंशी पृ. 133
64. राणाप्रसाद शर्मा पृ. 452
65. आप्टे, पृ. 596
66. वी. के माथुर, पृ. 384-85; 400-567, 911
67. वही, पृ. 659
68. वासुदेव शरण अग्रवाल, ''पाणिनी कालीन भारतवर्ष'' पृ. 72
69. शिमला से सिगटोड, धार चांदना, शिमला से अगराहू, सिरमौर की चेथा घाटी, प्योरन्तरा घाटी, न्यौल घाटी, बदराहू, लोराण, ठुहन्डु, सनाई, पजायक, मत्याना, बलसन आदि में खशों की बस्तियाँ है- लक्ष्मण एस. ठाकुर, पृ. 31 बंशीधर शर्मा, पृ. 238
70. वी. के. माथुर पृ. 111
72. राणाप्रसाद शर्मा पृ. 552
73. जयनारायण आसोपा ''ओरीजिन ऑफ राजपूत्स'' पृ. 127, वी. के. माथुर. पृ. 77 और ओ. पी. भारद्वाज, पृ. 32 यह प्रदेश इक्ष्वाकुओं और गौड़ों का मूल स्थान था, मेरे विचार से ईष जनों का ईषान्धर भी यही प्रदेश था।
74. कीथ व मैकड़ोनेल, भाग-1, पृ. 616
75. राणा प्रसाद शर्मा पृ. 421 वंक्षु नदी देवभ्राज, महाभ्रज और वैभ्राज वनों को पार कर शितोदसर में आती थी जहाँ से यह नदी सुपक्ष, शिखि, कनक, वैदूर्य, कपिल, गन्धमादन, पिंजर, कुमुदाचल, मधोमान, मुकुट, कृष्ण, श्वेतशैल, शेलेन्द्र होते हुए पारियात्र पर्वत के पार चली जाती थी-एस. मुजफ्फर अली पृ. 89
76. वही, पृ. 5
77. वही, पृ. 6
78. वही, पृ. 525
79. वही, पृ. 68
80. वही, पृ. 5
81. रांगेय राघव पृ. 85
82. वही,
83. राय चौधरी, पृ. 55

अध्याय – 5
अजनाभ खण्ड़

समस्या का स्वरूप

पुराणों में कहा गया है कि ऋषभ देव के पुत्र भरत के नाम पर ''अजनाभ खण्ड़'' का नाम भारतवर्ष पड़ा,[1] कहीं-कहीं यह श्रेय भरत दौष्यन्ती को दिया गया है।[2] जो भी हो किन्तु भारतवर्ष नाम पड़ने से पूर्व अजनाभखण्ड़ का इतिहास क्या था? यह कहीं भी वर्णित नहीं है। सर्वप्रथम उपर्युक्त देश को अजनाभखण्ड़ नाम देने वाली जाति या राजा भी तो प्रबल, और विस्तार वाले रहे होंगे। भरतों के अधिकार में आने से पूर्व उन्होंने भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष किया होगा? संघर्ष का स्वरूप और परिणाम, जिसके फलस्वरूप अजनाभखण्ड़ वासियों की पराजय या पलायन हुआ या वे भरतों में ही सम्महित हो गए, क्या था? इन सभी प्रश्नों के उत्तर कहीं नहीं मिलते।

अजनाभखण्ड़ और उसके निवासी

ब्रहमा, विष्णु, शिव और कामदेव को जन्मबंधन से मुक्त होने के कारण अज कहा गया है,[3] अजगव शिव धनुष का नाम है,[4] और अजैकयाद सरूप और भूत से उत्पन्न हुए करोड़ों रूद्रों में से एक का नाम भी है।[5] कश्यप और सुरभी से उत्पन्न हुए ग्यारह रूद्रों में से एक अज है।[6] इन तथ्यों से प्रकट होता है कि अज मुख्यत शैव्य जाति थी जो भूतों और रूद्रों से भिन्न नहीं थी और उत्तर भारत का वह क्षेत्र जहाँ पुराणों की रचना हुई, शुरूआत में ब्रहमा, विष्णु, शिव और कामदेव जैसे देवताओं को मानने वाले अज: जनों का अजनाभ खण्ड़ था। अजनाभखण्ड़ में निवास करने वाले यक्ष, अहि, नाग, हस्ति, दानव, असुर, पिशाच, वानर, ऋक्ष, यतुधान, रक्ष आदि सभी जनजातियाँ संयुक्त रूप से अज कहलातीं थीं। यह बिल्कुल उसी प्रकार था जैसे भारत में बंगाली, मराठी, असमी, उड़िया, पंजाबी आदि जन संयुक्त रूप से भारतीय कहलाते हैं। एक दूसरे में गुंथे हुए ऐसे बहुत से तथ्य हैं जो इन जातियों के कभी न कभी मूल रूप से एक होने का प्रमाण देते हैं। कश्यप के खशा से दो पिशाच पुत्र हुए, इनमें से एक ''जनु'' यक्ष था। और दूसरा ''अज'' राक्षस।[7] कुष्मांड़ पिशाच के पुत्र अज को यतुधान की पुत्री यतुधना ब्याही गई और इसके पुत्र यतुधान कहलाए।[8] यतुधान जाति का उल्लेख ऋग्वेद 7.104, 15-25 में है, जहाँ आपसी ईर्ष्या और वैमनस्य के चलते ऋषि वशिष्ठ, विश्वामित्र और उसके सहयोगियों को राक्षस की संज्ञा देते हैं। जबकि विश्वामित्र, वशिष्ठ को यतुधान कहता है। इन तथ्यों से पता चलता है कि यक्ष, राक्षस, यतुधान आदि एक ही जाति के अन्तर्गत आते थे।

यक्षों का निवास स्थान शिवालिक पर्वत माला के आस-पास यमुना नदी क्षेत्र में था। रजतनाभ यक्ष का एक पुत्र मणिधर यक्ष, लोहित्य, पर्वत के सुर्वण शिखर पर रहता था। तो दूसरा मणिभद्र यक्ष, चैत्ररथ पहाड़ी पर रहने वाले यक्षों का सेनापति था। इसी मणिभद्र के 30 पुत्रों को गुहयक, कहा गया है। चैत्ररथ पहाड़ी या चित्ररथ वन उत्तराचंल का देववन, चकरौता क्षेत्र था। मणिभद्र, शिव का एक गण था जो सती के साथ दक्ष के यज्ञ में हरिद्वार-कनखल गया था। सती के अग्नि कुण्ड़ में कूद जाने पर शिव के गणों ने यज्ञ विध्वंस कर दिया। दक्ष के कटे हुए शीश के स्थान पर अज: का शीश आरोपित करने की कथा

का मूल अर्थ यही है कि अज जनों ने दक्षों को पराजित कर उनके क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।

पिशाच-वानर और अज-हस्ती एवं नाग

प्राचीन साहित्य, किवन्दितियों और लोक मान्यताओं के अनुसार पिशाच, बेताल और प्रेतों के भक्षक थे। जबकि गौपथ ब्राहमण और अश्वलायन श्रौत सूत्र में आए पिशचवेद और पिशाच विद्या जैसे शब्दों से उनके मानव जाति का होने का पता चलता है। अथर्ववेद 2.18.4, 4.20.6 और 5.29.4 में पिशाच दानवों के एक वर्ग का नाम है जबकि काठक संहिता और तैत्तरीय आरण्यक में ये राक्षसों और असुरों के साथी तथा देवों, मनुष्यों और पितरों के विरोधी वर्णित है।[9] मेरे विचार में पिशाच वन-अरण्यों में निवास करने वाली और वनों तथा शिकार पर आश्रित अर्धसभ्य जाति थी जो अग्नि के प्रयोग और कृषि जीवन से नितान्त अपरिचित थी। वे कच्चा माँस खाने वाले और आवश्यकता पड़ने पर अपमार्जक भी थे। साथ ही वे अपने पड़ोसी भूत जनों (यमुना नदी की एक पश्चिमी सहायक नदी भूता या बाटा, क्षेत्र के निवासी) और प्रेत पारियात्र पर्वत-मसूरी पर्वत माला का पूर्वी भाग जनों के कटर शत्रु थे। मौका मिलने पर या अकेला पाकर वे इन्हें मार कर खाने में संकोच नहीं करते होंगे। ऐसी शत्रुता हम वानरों और लंगूरों के बीच देखते है।

पिशाच और वानर जन एक ही क्षेत्र की जातियाँ थीं इनके बीच अन्तर मात्र इतना ही था कि वानर जन जहां वनों पर आश्रित सभ्य जन थे, वहीं पिशाच जन आदिम और अध सभ्य। पिशाच और वानरों के एक ही जाति गोत्र के होने का प्रमाण है। केसरी वानर की दूसरी स्त्री "आद्रि" एक अप्सरा थी जो शापवश बिल्ली के मुख वाली पिशाचिनी हो गई थी। इसका पुत्र "आद्रि" तो पिशाचों का राजा था और पुत्री अजगन्धा, मत्सयगन्धा के नाम से परासर मुनि के पुत्र कृष्ण द्वैपायन "वेदव्यास" की माता बनी।[10] अज और आदि एक ही अर्थ के लिए प्रयुक्त शब्द लगते हैं या फिर इनमें से एक किसी दूसरे का अपभ्रंश है। केसरी वानरर की प्रथम स्त्री अंजना शब्द, अज शब्द से साम्य रखता प्रतीत होता है। अंजना के पुत्र हनुमान थे,[11] वानरों को निरा बंदर या ऋक्षों को मात्र रीक्ष समझना भंयकर भूल है। वे टोटेम चिन्ह वाले जन थे। पिशाचों का टोटेम बिल्ली, अहि या नागों का टोटेम सर्प था.... सभी टोटेमिक जातियां अपने टोटेम की पूजा करती थी और उसे श्रेष्ठ मानती थी।

अंजनी विरज वानर कुंजर की पुत्री थी। अंजन एक कद्रू पुत्र नाग का नाम भी है और सीतोदसर के पश्चिम में एक पहाड़ी का नाम भी, जहाँ हाथियों के जंगल में हाथियों से अंजना को केसरी वानर ने ही बचाया था।[12] कुंजर एक वानर का नाम भी है नाग का है और हाथी का नाम तभी हस्तिनापुर नगर का एक नाम नागसाहव्यम भी है, इस क्षेत्र में हाथियों की अधिकता को हस्तिनापुर के नामकरण का कारण कहा गया है।[13]

ऋक्ष-विरज और वानर में साम्य

ऋक्ष एक जाति के वानर हैं, जो पुलह ऋषि की संतान हैं[14] ऋक्ष गिरि या ऋक्ष पर्वत भारतवर्ष का एक कुल पर्वत था। यह मध्यभारत में नहीं अपितु गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वत था। इसी क्षेत्र के अज जनों के राजा का द्योतक नाम अजमीढ़ था और उसका पुत्र था ऋक्ष, जिसकी राजधानी अजस्थनापुर का अपभ्रंश बाद में हस्तिनापुर कहा गया। सुग्रीव और बालि के पिता का नाम ऋक्षरजस है।[15] वानर राज शुक की बहन ऋक्षा के पुत्र जाम्बवान के व्याघ्री से उत्पन्न जयन्त आदि सोलह पुत्रों में से एक का नाम पिशाच था। ऋक्षराज के नाम से प्रसिद्व जाम्बवान, जम्बू नदी (यमुना) के तटों पर निवास करने

वाले जनों का द्योतक नाम है। वानर राज शुक के पुत्र ऋक्ष, विरजा के पति थे। जिस प्रकार ऋक्ष, ऋक्ष पर्वत (शिवालिक) पर निवास करने वाले जन थे उसी प्रकार वैराज, विरजा, विरज भी विरज क्षेत्र में निवास करने वाले जनों को कहा गया है।

पितृलोक (विरज) के निवासी थे- ऋक्ष, पिशाच और यक्ष

वैराज या विरज, ऋक्ष पर्वत के समीप पितृलोक या पिशाच लोक का नाम था, अर्थात शिवालिक पर्वत माला की तराई में यमुना नदी का क्षेत्र, यही क्षेत्र शीतोदसर था। ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम पिशाचिका था, यह देहरादून जिले की असान नदी थी। कुबेर का निवास मानसरोवर के दक्षिण में पिशाचक पर्वत था।[16] कुबेर यक्षों का अधिपति था। अजः शिग्रुव और यक्षुव जनों को सरस्वती नदी क्षेत्र के सुदास पैजवन ने यमुना तट पर ही पराजित किया था (ऋग्वेद 7.1.19)[17] शिवालिक पर्वत माला को विमलचरण लाहा के अनुसार, प्राचीन भूगोलवेता मैनाक पर्वत के नाम से जानते थे[18] मैनाक पर्वत का पूर्वी भाग कैलाश पर्वत था। यमुना नदी के पास कालेसर स्थान और पर्वत का नाम कैलाश शब्द का अपभ्रंश है। ऋग्वेद वर्णित इन्द्र, वरुण, वायु आदि देवताओं के पूजक PGW सभ्यता वाले जन भले ही पंजाब के भूभाग पर फैले किन्तु शिवपूजक, आदिम, अर्थसभ्य, टोटेमिक जातियाँ जो इन्द्र पूजकों की विरोधी थी, का निवास यही शिवालिक पर्वत माला के प्रदेश में था। गंगा नदी क्षेत्र में दक्ष जन थे। ऋक्ष पर्वत पर ऋक्ष, वानर पिशाच, और दून घाटी में दानव थे। मैनाक पर्वत पर मय ; बाटा नदी क्षेत्र में भूत थे,[19] तो परियात्र पर्वत पर प्रेत....। जगाधरी के आसपास यमुना के क्षेत्र में विरज था अर्थात पितृलोक, जो सभी आदिम-अधसभ्य, वनों में रहने वाली जनजातियों का केन्द्र था। पितृगण विशेष प्रकार के देवता हैं जो सभी जीवों के आदिपुरूष माने गए है।[20] दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि पंजाब के भूभाग पर सरस्वती नदी क्षत्र PGW सभ्यता के भरतजन थे तो यमुना-गंगा क्षेत्र में अज जन। एक ओर अग्नि का प्रयोग, कृषि का ज्ञान, और बेहतर अस्त्र-शस्त्र वाले, निपुण, आक्रामक, भाषा व लिपि के ज्ञाता सभ्य जन थे तो दूसरी ओर अर्धसभ्य आदिम जीवन जीने वाले वनों पर आश्रित, सामना होने की स्थिती से बचने वाले अजः जन।

सरस्वती प्रदेश के सभ्य यज्ञ करते थे। यज्ञ के नाम पर वे नदी किनारे के वन-अरण्यों में अग्नि प्रज्जवलित कर देते थे, क्योंकि बढ़ती जनसंख्या के लिए नए नगर बसाने और कृषि के लिए उपजाऊ नदी किनारों वाली जमीन प्राप्त करने के लिए यह सब आवश्यक था। सबसे पहले परियात्र पर्वत से लेकर सरस्वती नदी तक फैले काम्यकवन पर सबकी गृद्ध, दृष्टि लगी थी। वन जल रहे थे। नदी के किनारों पर अधिक से अधिक भूमि प्राप्त करने की होड़ में पुरु, त्रुत्सु, पृथु, सृज्जय आदि जन वनों से बाहर थे तो वनों के भीतर वनों पर आश्रित वेन, निषाद, आदि काम्यक जन थे, जिन्हें संघर्ष से बचने, सामना होने पर वनों में और भी भीतर पलायन करने के कारण किम्पुरुष या कापुरुष कहा गया। कैसी विड़म्बना थी कि अस्त्र सस्त्रों से सुसज्जित संगठित सभ्य जनों ने अर्धसभ्य, आदिवासी जनों को नपुंसकता के पर्याय का नाम दे दिया था।

सरस्वती नदी प्रदेश का दिवोदास सोम्ब नदी के किनारे बसे (सोम्बरों) शम्भर के शत-शत गढ़ों की समृद्धि और पशुधन पाने के लिए उनसे उलझा था। किन्तु अजनाभखण्ड में ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली ऋक्ष नदी (राक्षसों) के तटों पर यक्ष और रक्ष शान्ति से रह रहे थे। ऋक्षा नदी तब प्रस्त्रवण (मसूरी पर्वत माला) से निकलने वाली, प्रस्त्रवणा (पलक्षवणा) नदी से स्वतंत्र भी।

सरसवती नदी ही सीता, पलंकषा, शेलोदा या पलक्षा नदी थी

पलक्षवणि..... तब लक्ष्मिणी थी। धन-धान्य, सुख-वैभव, ऐश्वर्य, निरोग, विद्या, बुद्धि तब कुछ देने वाली पलक्षविणी... लक्षिमणी या लक्ष्मी। वही पलक्षा नदी जब पशिचमवाहिनी होकर मैदानों में उतरती तो सरस्वती कहलाती थी।... अर्थात..... सरतसीता.... था...। पहाड़ों की सीता नदी का मैदानी रूप, और नदी का दैवीय रूप था लक्ष्मी.....।

प्राचीन ग्रन्थों में कहा गया है कि पृथ्वी का केन्द्र-सुमेरू पलक्ष प्रस्त्रवण (सरस्वती नदी के उदगम-नाहन के समीप) से केवल एक वितस्ति (प्रदेश) और उत्तर में है।[21] अर्थात (सिरमौर, जो कि स्वयं सुमेरू के नाम के बोल रहा है) जिले की उत्तरी सीमा पर नागटिब्बा पर्वत श्रंखला का चन्द्रचूड़ या चूड़ाधार शिखर तब सुमेरू था। गंगा इसी शिखर पर गिरकर चार शाखाओं में विभक्त हो गई थी।[22] इन्हीं चार शाखाओं में से एक थी सीता नदी..... गन्धमादन और मंदराचंल पर्वतों (सिरमौर जिले की पशिचमी सीमा पर पूर्व और पशिचम में स्थित पर्वत मालाएं) के बीच से बहती हुई सीता नदी केतुमाल वर्ष में पूर्ववाहिनी होकर भद्राश्ववर्ष, की ओर बहती थी[23] सीताशैलोदा, केतुमती, पलक्षा, पंलकषा और सरस्वती बहुत से क्षेत्रीय नाम थे तब इस नदी के। आज यह हिमाचल प्रदेश की प्रसिद्व गिरि नदी है विष्णु पुराण में सीता नदी को शैलोत्सीता कहा गया है।[24] इसी का अपभ्रंश सरत्सीता या सरस्वती नदी हुआ है शैलोदा का अपभ्रंश शब्द ही शारदा है।

जम्बू द्वीप

प्राचीन ग्रन्थों में कहा गया है कि जम्बूद्वीप का नामकरण वहाँ बहुतायत में पाए जाने वाले जम्बू वृक्षों के कारण हुआ,[25] यमुना नदी के पर्वतों से उतरने के स्थान से उत्तर में पौंटासाहिब के समीप मुख्यतह साल वृक्षों का एक विशाल सधन वन है प्राचीन काल में यह आवश्य ही बाटा और गिरि नदियों के बीच यमुना नदी तक विशाल क्षेत्र में फैला रहा होगा। इसका नाम आज भी जामुनवाला, जमोत्वा, जमोटवाला है। इन वन पर्वतों के बीच बहने वाली क्षुद्र बरसाती नदी का नाम भी जामुनवाला और जामोत्वा है।[26] बहुत संभव है कि इस विशाल वन का सम्बंध यमुना नदी और जम्बूद्वीप के नामकरण के साथ रहा है।

वसुजनों की ''वसुन्धरा'' में था कृष्ण का पैतृक निवास क्षेत्र ''प्रभाष''

आज हम ''वसुन्धरा'' को सम्पूर्ण पृथ्वी के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयुक्त करते हैं किन्तु प्राचीन काल में यह ''वसुजनों की धरा, का नाम था। भले ही किसी विद्वान ने वसुजनों पर कुछ न लिखा हो किन्तु प्राचीन काल में वसु एक महत्वपूर्ण जाति थी। सर्वप्रथम यह जाति इन्द्र, वरुण, मित्र आदि की पूजक नहीं वरन शैव्य थी और शिवालिक पर्वतमाला की तराई में अम्बाला, जगाधरी, जींद क्षेत्र में बसी हुई थी। वसुओं का निवास स्थान वसुन्धरों या वसुधान्यक कालान्तर में बिगड़ कर बहुधान्यक और फिर भादानक हो गया। शिव का एक नाम वसु है।[27] महाभारत में आठ वसुओं के नाम धर, ध्रुव, सोम, प्रभाष, प्रस्यूष, विष्णु, अनल, अनिल हैं।[28] प्रभाष वसु का क्षेत्र जगाधरी के आसपास का क्षेत्र था। कृष्ण पूर्णतया वसुजनों से संबंधित पुरुष प्रतीत होता है; प्रभाष वसु के क्षेत्र में रहने वाली (यौधय) यदु जाति का था कृष्ण और ऐसा मानने का कारण भी है कि कृष्ण के पिता के नाम ''वसुदेव'' में वसु शब्द है जो उसे वसुओं से जोड़ता है।

''शूर'' जो कि वसुदेव के पिता थे, एक क्षेत्रीय जातिगत नाम प्रतीत होता है और यह शूर जगाधरी क्षेत्र में प्राचीन श्रूधन या त्रूघन से जुड़ता है। शिवालिक पहाड़ियों, सिरमौर, और यमुनानगर क्षेत्र में फैले श्रूघन की राजधानी या मुख्यनगर ''सुघ'' यमुना के सूखे

प्राचीन बहाव मार्ग पर पुरातात्विक महत्व का केन्द्र है।

जगाधरी क्षेत्र का प्राचीन नाम जग रहा होगा, इसी कारण कृष्ण को जगन्नाथ भी कहा गया है प्राचीन काल से ही सभी ओर जाने के प्रवेश द्वार रहे जगाधरी क्षेत्र की प्रसिद्ध नदी दृषद्वती थी। द्वार क्षेत्र, दृष्द्वती और द्वारका तीनों शब्दों में साम्य से कृष्ण के उक्त क्षेत्र में होने की सम्भावना बनती है। दूसरे यह क्षेत्र सरस्वती नदी के मार्ग बदलने की अनिश्चितता के कारण प्रभाव या डूब क्षेत्र में आता था और बॉसुरी जो कि कृष्ण का मुँह से फूंककर बजाया जाने वाला प्रमुख यंत्र था के बनाने के लिए बांस मुख्यत: जगाधरी के समीप शिवालिक की पहाड़ियों पर अधिक उगता है।

वसु आठ है। कृष्ण भी देवकी और वसुदेव का आठवाँ पुत्र है, उसका जन्म अष्टमी को हुआ था, उसकी आठ ही पटरानियाँ थी, वह विष्णृ का आठवाँ अवतार कहा गया है। महाभारत में भीष्म के साथ भी आठ वसुओं की कथा का साभ्य है, कृष्ण की भाँति भीष्म के पहले सात भाई भी जन्म लेते ही मार डाले गए थे।

कृष्ण की रक्षा के लिए उसे नन्द के यहाँ भेजना प्रासंगिक ही नहीं बल्कि इस का कारण भी है। नन्द को पिछले जन्म का द्रोण नामक वसु और उसकी स्त्री यशोदा को द्रोण पत्नी धरा कहा गया है।[28] अगर संयुक्त रूप से देखा जाए तो द्रोणन्द और यशोधरा। वैसे नन्द भी व्यक्तिवाचक नहीं बल्कि स्थानवाचक या जातिवाचक नाम है।

सरस्वती नदी प्रदेश में सुदास पैजवन के गुरू वशिष्ठ की कामधेनु गाय का नाम है नन्दिनी था और शिव के गण या वाहन का नाम नन्दी। दोनों तथ्य नन्द को शिवालिक की तराई में सरस्वती क्षेत्र में समीकृत करते हैं। पलक्षद्वीप के अधिपति मेघातिथी के चतुर्थ पुत्र द्वारा नन्द राज्य की स्थापना का उल्लेख है।[29] प्लक्षा नदी सरस्वती है और पलक्षद्वीप सरस्वती नदी का प्रदेश। पुरात्तवेत्ताओं के प्रयासों से सौराष्ट्र के प्रभाषपट्टन तट पर समुद्र में डूबी एक नगरी के अवशेष तो मिले हैं किन्तु प्रमाणों के अभाव में नहीं कहा जा सकता है कि यह कृष्ण की द्वारिका थी या सिन्धु सभ्यता का कोई नगर।[30] दूसरे प्रभाष तट क्षेत्र में सरस्वती है ही नहीं, जबकि ग्रन्थों में कहा गया है कि सरस्वती नदी प्रभाष में पश्चिम वाहिनी थी।[31] पुरातत्वविदों के अनुसार सरस्वती तो कच्छ की रन में गिरती थी और वहाँ भी वह दक्षिण वाहिनी थी। अत: द्वारिका गुजरात के समुद्र तट प्रभाषपट्टन में नहीं, बल्कि वसुधान्यक (भादानक) प्रभाष वसु क्षेत्र में थी, यहाँ सरस्वती नदी पश्चिमवाहनी है। किसी सूघन या त्रुघन जन (सूर) के पुत्र वसुदेव इसी प्रभाष क्षेत्र से मथुरा आए थे, कारण था. ...... जीवन यापन के साधनों की खोज और इसका भी कारण था...... सरस्वती नदी।

स्वर्ग लोक जब मृत्युलोक बन गया था

भूवैज्ञानिकों के अनुसार भारतीय प्लेट के ऐशियन प्लेट में टकराने से हिमालय पर्वत का जन्म हुआ था किन्तु आज भी शिवालिक पर्वत की तराई का भूभाग संवेदनशील है। किसी भूकंपीय घटना या ज्वालामुखी पर्वत के कारण सरस्वती नदी का मार्ग अवरूद्व हो गया था। जगाधरी क्षेत्र में एक विशाल झील सीतोदसर का निर्माण करते हुए नदी ने अपना मार्ग बदल दिया था। अब यह पश्चिम की ओर न जाकर दक्षिण में यमुना नदी के रूप में बहने लगी थी। इसका पहला प्रभाष क्षेत्र पर ही पड़ा। शुरू शुरू में तो नदी के बहाव मार्ग में अनियमितता ही रही। कभी वह मार्ग बदलकर पश्चिम की ओर बहने लगती तो कभी दक्षिणवर्ती हो जाती थी, निश्चित नहीं था कि नदी कब और किस स्थान से अपना प्रवाह मार्ग बदल लेगी।....... किसी भी स्थिति में प्रभाष क्षेत्र जो कभी स्वर्ग था यम का

मृत्युलोक बन गया।..... इस क्षेत्र में योजनों तक कहीं भी निवास स्थान बनाना खतरनाक था..... सर्व प्रथम वसु जनों ने प्रभाष क्षेत्र छोड़ दिया और नदी के किनारे दक्षिण की ओर चल दिए। वसु जनों के दल के दल यमुना नदी के किनारे-किनारे होते हुए मथुरा तक आए। जो दल पहले आए थे, वे किसी तरह मथुरा या उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में स्थान पाकर वहीं बस गए। द्रोण नन्द या उसका पिता या उसका पूर्वज उन्हीं पहले आए दलों में से एक रहा होगा।....... शरणार्थी वसुओं की बढ़ती जनसंख्या और सीमित साधनों ने मथुरा में एक असन्तुलन पैदा कर दिया था। शान्त प्रकृति के उग्रसेन वस्तु स्थिति से शान्ति से ही निपटना चाहते थे किन्तु युवराज कंस इस विषय पर कठोर दृष्टिकोण वाला था। उसने पिता को बंदी बनाया और शरणार्थी वसुओं को किसी विशाल बाढ़ेनुमा स्थान पर रोक दिया। इनमें बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्रियाँ सभी रहे होंगे.....। इस प्रकार की बंदी जैसी अवस्था में अनेक गर्भवती स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया। भोजन-पानी के अभाव, कुपोषण व उचित देखभाल के अभाव में बहुत से नवजात बच्चे मर भी गए होंगे, किन्तु एक समर्थ वसु नेता, किसी वसुदेव ने घनघोर वर्षा, कीचड़, अस्त-व्यस्तता के कारण आई पहरे में ढ़ील का लाभ उठाया और उसने अपने नवजात पुत्र को नन्द के यहाँ पहुँचा दिया। गोकुल, नामक बस्ती में नन्द एक सुव्यवस्थित और प्रभावशाली नेता था, तभी तो नवजात शिशु की हत्या के लिए भेजे गए प्रत्येक व्यक्ति को खाली हाथ लौटना पड़ा।........ यह भी हो सकता है कि गोकुल शरणार्थी वसुओं द्वारा यमुना पार बसाई गई नवीन बस्ती रही हो जिन्होंने राजा की आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया हो।...... यमुना पार होने के कारण यहाँ राजा का अधिक जोर या आज्ञा न चले पाई हो..... जो भी हो, कृष्ण यहाँ पला और बड़ा हुआ। बाद में किसी द्वन्द युद्व में उसने कंस की हत्या की, किन्तु वह न तो मथुरा में रह पाया और न ही गोकुल लौटा।. .... सम्भवत अपने जनों को लेकर वह पैतृक प्रभाष क्षेत्र में लौट गया था।.... इस आशा में कि अब उस क्षेत्र में नदी का विकराल रूप सम्भवतः शान्त हो चुका होगा।

प्रभाष क्षेत्र में पहुँच कर उसने पाया कि नदी का बहाव मार्ग अब निश्चित हो चुका है और वहाँ बस्तियाँ बसाई जा सकती हैं। जगाधरी क्षेत्र, सदियों- सहत्राब्दियों से सभी ओर जाने का प्रवेश द्वार रहा है। मध्यकाल में भी इसी रास्ते महमूद गजनवी, तैमूर, बाबर आदि गुजरे थे। किसी नए अथवा मुख्यनगर को द्वारिका ही कहा गया। वसुजन शीघ्र ही धन धान्य से परिपूर्ण, सुखी और समृद्व हो गए थे। अब कृष्ण ने क्षेत्रीय राजनीति में भाग लेना शुरू किया।

इस समय गंगा यमुना दोआबे में पणि-पणिडु पाँड़व शरणार्थियों की बाढ़ आ रही थी, पणिडु शरणार्थी पंजाब के इन्द्र, मित्र, वरुण, अश्विनीकुमार आदि देवतन्त्र को मानने वाले PGW सभ्यता के कृषक जन थे। पूंडरी, पणिप्रस्थ से इनके पलायन का कारण शान्तनु के काल में पड़ा बारह वर्षीय अकाल रहा होगा, उत्तर भारत में कम वर्षा और वर्षा का न होना इसका कारण रहा, जिसका समान रूप से प्रभाव समूचे उत्तर भारत में पड़ा। पणि स्त्रियों की आर्य पुरुषों की संतानें (पांडु लोग) गंगा-यमुना दोआब में आ रहीं थीं। अजनाभखण्ड़ का राजा धृतराष्ट्र स्थिती को समझ नहीं पा रहा था। वह अवश्य ही एक नाग राजा था जबकि पुराणों मे इसे आर्य कहा गया है। PGW जनों की पणि स्त्रियों/अपसराओं, कुड़तियों की कुंड़ सन्तानों के पास अपने पिताओं के नाम नहीं थे किन्तु सभी तकनीकियाँ तो थीं। ये पशु पालक भी थे। अर्धपणि अर्धआर्यजनों की हस्तिनापुर पर सम्पूर्ण विजय हासिल करने के बाद उन की जाति और श्रेष्ठ हो गई। सामान्यतः किसी भी रूप में किसी

स्थान पर बाहर से आकर बसने वाला व्यक्ति अपने आपको श्रेष्ठ ही प्रदर्शित करता है सौभाग्य से उनके पास कई और बेहतर तकनीकी तो थी ही।

शम्भर और नाग

सरस्वती नदी क्षेत्र से पूर्व की ओर बढ़ते इन्द्र पूजक कृषक जनों का संघर्ष एक प्रकार से मुख्यत नागों से रहा था शम्भर मैनाक पर्वत की तलहटी में बसा नाग था।-

यःशम्भर पर्वतेषु क्षियन्ते च्वत्वारिश्यां शरधन्वविन्दते।
ओजायमानं यों अहिं जघान दानुंश्यान सजसान इन्द्र॥

अर्थात शम्भर असुर भी है और अहि भी। पुराणों में वह दानव है। मयदानव (मैनाक पर्वत का निवासी) की बड़ी पुत्र माया का पति था यज्ञ विरोधी शम्भर का उल्लेख है कि राजधानी दण्ड़क वन के निकट वैजयन्ती थी। यह दिवोदास का शत्रु था, दण्ड़क वन यमुना नदी के पश्चिम में कालेसर के समीप ड़ण्ड़ा सुखचैनपुर और डण्ड़ा सहजादवाला का वन है और वैजयन्ती के मूल में विरज क्षेत्र है जिसे पीछे हम जगाधरी के आसपास का क्षेत्र मान आए है।

इन्द्र का महान शत्रु वृत्र भी दानव और अहि दोनों है।

सरस्वती नदी क्षेत्र के सफीदों (सर्पादेवी, सर्पिदधि)[32] से लेकर असन्ध (अहिस्थला)[33] हस्तिनापुर (नागसाहव्य)[34]

अहिच्छत्रा तक बसे नाग जाति के जन, अहि/असुर या अज जन कहे गए हैं।

सरस्वती नदी तट पर वासुकी नाग से संबंधित नागधन्वातीर्थ प्रमुख है।[35]

सम्पूर्ण पंजाब हरियाणा में वासुकी नाग की बहन मनसा देवी की पूजा की जाती है।

अजः जन नाग, दानव और अहि भी है-

दनु के एक पुत्र का नाम अजमुख है। विप्रचित्ती दानव के सौ पुत्रों में से एक का नाम अज है। मयदानव और रम्भा के छह पुत्रों में एक अजकर्ण है।[36]

निरमण्ड़, नारकण्ड़ा और कुल्लु प्रदेश उन अठारह नागों का क्षेत्र है जो 6500 ई. पूर्व में पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में फैले प्रोटो आस्ट्रेलाईड कौलों की सन्तान हैं।[37] तारिम उपत्यका की ओर से 4000 ई. पूर्व से 1500 ई. पूर्व तक कई दलों में आए अठारह नरैण से इन नागों का संघर्ष हुआ। जी.डी. बैरीमान के अनुसार 1500 ई. पूर्व से 1000 ई. पूर्व तक भारत में आए खशों ने नागों को पराजित कर दिया।[38] हिमाचल की लोक परम्परा आर्यो और खशों को नागों का शत्रु मानती है। दीपावली बाद के दिआउड़ी या मशराड़ी मेले में खश-दानव युद्व का अभिनय होता है जिस के अन्त में खशों पर जीत की खुशी में नाचते हुए दानव के हाथों के सर्प को खश छल से काट देते हैं।.... परम्परागत अभिनत बताता है कि दानवे या तो नागों के सहायक हैं या वे सर्प टोटम वाले नाग हैं।[39] खशों के गांव के गांव शिमला, अंगराड, अगालता, मंदार, बदराहू, चौपाल, चेथा, प्यौंतरा, न्यौलघाटी, सिरमोर आदि में फैले हैं तो सिरमौर की उत्तरी सीमा से हरिद्वार तक की पर्वत श्रंखला का नाम नाग टिब्बा है।

आर्य नहीं अपितु नागों का वंश है....... हस्तिनापुर का कुरू राजवंश

हालाँकि विश्वास कर पाना कठिन है कि पौराणिक साहित्य और महाभारत आदि में आर्य कहा गया हस्तिनापुर का राजवंश असल में नागों का वंश था। उन्हें आर्य सम्भवतः कृतज्ञता के लिए कहा गया क्योंकि सुदास पैजवन के राज्य से अपमानित-निष्कासित वशिष्ठ को उनके यहाँ न केवल शरण मिली बल्कि सुदास से अपने पुत्र शक्ति की हत्या का

प्रतिशोध लने में वशिष्ठ की उन नागों ने सहायता भी की थी। इसी वशिष्ठ का प्रपौत्र था पुराणकार या महाभारत कार वेदव्यास-कृष्णद्वैपायन, वरना तो पुरूरूवा एल से लेकर धृतराष्ट्र तक कुरूवंश के वे 15 शासक जिनके नाम वैदिक साहित्य में से लगभग आठ नागों से संबंधित है।-

एल- एलपत्र नाग एलपत्र नाग की पुत्री उलूपी ने अर्जुन को हरिद्वार में गंगा स्नान करते समय पकड़ा था। **धृतराष्ट्र**- एक नाग का नाम। **नहुष**- नहुष नाग, नहुष का अर्थ अजगर, अज या अहि। ये अहिवृत्र की मृत्यु के बाद प्रमुख बनाए गए थे। **अजमीढ**- स्वयं अहि या अज प्रतीत होता है जबकि इसकी स्त्री धुमिनी, धुम्रवर्ण नाग के सम लगती है। सम्बंध- कुछ खास मैत्री पूर्ण नहीं थे इसके अतिरिक्त संकट की घड़ी में कृष्ण स्वयं के लिए भी एक सहायक चाहते होंगे। नगर बसाने और घर-मकान आदि बनाने के लिए कामगार प्रभाष क्षेत्र के विश्वकर्मा (पुराणों में प्रभाष के पुत्र) ही थे। इस तथ्य से भी कृष्ण के प्रभाष और वसु क्षेत्र का होने का पता चलता है। वनों में आग लगा देने से असंख्यों नागों की जानें भी गई और उनसे आश्रय स्थल छिन गए थे। हालाँकि कर्ण/महाकर्ण नाग ने यमुना नदी के पश्चिमी तट पर करनाल में एक बस्ती बसाई थी, हो सकता है कि सरस्वती के मार्ग बदल लेने से उसका नगर या राज्य किसी अन्य क्षेत्र से उठकर वहाँ बस गया हो। विस्थापितों का सा यह संकट उसे पाड़ंवों से अवश्य जोड़ता था किन्तु वह नाग था और इस कारण दोआबे के अजों से भी जुड़ता था। वह किसी भी प्रकार से उन्हें नाराज नहीं करना चाहकर उनसे मित्रतावत सम्बंध स्थापित किए रहा। खाँडवप्रस्थ में नागों के मरने और उनके आश्रय स्थल छिन जाने से प्रभावित नागों का पक्ष कौरव्य नागों ने लिया। एक नया बसा राज्य आक्रमण जैसी किसी अप्राश्चित घटना के लिए तैयार नहीं था.... एक बहुत छोटी सी कार्यवाही कर कौरव्यों ने पाँड़वों का राज्य जीत लिया। इसे दुर्योधन का अपमान और फिर जुए में जीत जैसी घटना से जोड़ना कवि की कल्पना है....... तो भी दुर्योधन का पांडवों का भवन देखकर आश्चर्यचकित होना या भूल भुलैया में पड़ जाना संकेत करता है कि पाण्डु जनों की विकसित भाषा-लिपि, समृद्व देवतन्त्र, भांड़ों, वस्त्रों, अस्त्र-शस्त्रों, कृषि में नई तकनीकी, अग्नि के बेहतर प्रयोग की समझ और भवन निर्माण शैली उन्हें परावर्ती नागों OCPC से कहीं तेजी से विकासशील बनाती थी। उनकी भवन निर्माण शैली को महाभारत में बढ़ा-चढ़ा कर बताया गया है।

कौरव्यों द्वारा खाण्ड़वप्रस्थ जीतने के उपरान्त पॉडु जन एक बार फिर पुरानी स्थिती में आ गए। वे यह भी समझ गए थे कि स्थान पाने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ेगा.... पाँच जातियों के लिए पाँच गाँवों की माँग ठुकरा दी गई.... अन्तत एक युद्व हुआ.... तो भी वह उतना बड़ा नहीं था जिसमें कहा गया कि समस्त पृथ्वी पर अधिकार के लिए दोनों पक्षों की ओर से लाखों-करोड़ों योद्वाओं ने प्राणों की आहुति दी। हो सकता है कि यह तब तक के युद्वों में सबसे बड़ा कबीलाई युद्व रहा हो।

एल से धृतराष्ट्र तक का वंश कौरव्य नागों का वंश हैं इनकी नागों से शत्रुता नहीं, क्योंकि वे स्वयं नाग है और पाँडु जन, जिनका पक्ष उचित ठहराने के उद्देश्य से महाभारत कार ने उन्हें कौरवों का बड़ा भाई बना कर पेश किया, पग-पग पर नागों के शत्रु हैं। नागों के शत्रु-कृष्ण के मित्र हैं। पाँडु जन नागों से वैवाहिक सम्बंध बना कर उन्हें अपने पक्ष में करने की नीति पर चलते हैं। धृतराष्ट्र की पराजय के उपरान्त भी नागों से उनकी शत्रुता समाप्त नहीं होती और न ही अपनी पराजय और बरबादी को नाग ही भूलते हैं। कृष्ण और पाँडु

जन दोनों ही उनके शत्रु बन गए थे।

शम्भर, जाम्बवान और बलि पुत्र बाणासुर ये तीन नाम ऐसे हैं जो राम के समय में भी थे और कृष्ण के समय में भी। इसका कारण मात्र यही है कि तीनों व्यक्ति नहीं, अपितु स्थानवाचक जातिवाचक नाम थे, शम्भर सोम्ब नदी क्षेत्र के सोम्ब थे तो जाम्बवान यमुना नदी क्षेत्र के। बोली नदी क्षेत्र के निवासी बलि कहलाए। कृष्ण ने सोम्ब नदी के दक्षिण में जगाधरी में द्वारका की स्थापना की, अतः निकटवर्ती जातियों से उनके सम्बंध शत्रुता के थे। कृष्ण ने तीनों जातियों को पराजित किया। इनके अतिरिक्त उस क्षेत्र में कृष्ण का एक शत्रु था जो द्वारिका पर हर वर्ष एक आक्रमण करता था, वह था जरासन्ध।

वसु क्षेत्र की प्राकृतिक घटना है...... जरासन्ध

उपरिचरवसु का पौत्र जरासन्ध, ब्रहद्रथ की दो रानियों से आधा-आधा पैदा हुआ था, जरा नामक राक्षसी द्वारा जोड़े जाने से इसका नाम जरासन्ध हुआ। इसकी दो पुत्रियाँ कंस को ब्याही थी। कृष्ण द्वारा कंस का वध किए जाने से क्रुद्व जरासन्ध ने कृष्ण पर अठारह वर्षों तक लगातार प्रतिवर्ष एक आक्रमण किया। कृष्ण ने भीम के हाथों इसका वध करवाया, 27 दिनों के लगातार चलने वाले मल्ह युद्व के उपरान्त भीम ने अतः इसे दो भागों में चीर दिया और विपरीत दिशाओं में फैके जाने से यह पुनः जुड़ नहीं सका। बच्चों को बहलाने वाली यह परी कथा जैसी महाभारत वर्णित घटना अपने आप में एक अदभुत इतिहास छिपाए हुए है। यह इतिहास सरस्वती-यमुना की उस भौगालिक घटना से संबंध रखता है जिसमें वह अपने मार्ग परिवर्तन के दौर में अनिश्चितता के चलते, वर्षा काल में प्रतिवर्ष की बाढ़ से जगाधरी प्रदेश में लगभग प्रलय जैसी स्थिती उत्पन्न करती थी। उस समय राक्षी, चितांग आदि नदियों का उद्गम भी निश्चित नहीं था, अतः सरस्वती की अनिश्चतता से मात्र कृष्ण की द्वारिका ही प्रभावित नहीं हो रही थी बल्कि समूचा हरियाणा प्रभावित हो रहा था। वर्षा काल में तो सोम्ब, यमुना-सरस्वती, राक्षी, चितंग और मेरे विचार से बूढ़ी यमुना और मस्कारा नदियाँ भी जगाधरी और उसके दक्षिण में एक विशाल झील जैसी जलसन्धि बना देती थी और जलसन्धि का यह आक्रमण प्रतिवर्ष होता था। कृष्ण और भीम ने अपने भागीरथ प्रयासों से इसे कई बार दो भागों में बाँटा किन्तु हर बार वह पुनः जुड़ जाता था। इस काम में सफलता अन्ततः तब मिली जब इस जलसन्धि की दोनों धाराओं को विपरीत दिशाओं में बहाया गया। कृष्ण का यही महान कार्य उसे अवतार पुरुषों की श्रेणी में ले आया वरना जन्म से लेकर महाभारत युद्व तक मेरे विचार से कृष्ण का कोई ऐसा काम नहीं जिसके कारण उसे यह महान उपाधि दी जा सके। इस महान कार्य में हरियाणा पंजाब की सीमाओं पर निवास करने वाले सृज्जय-सहदेव वंशी जन भी अवश्य लाभन्वित हुऐ क्योंकि सरस्वती नदी की अनिश्चितता से वे भी लगभग बरबाद हो रहे थे। इसलिए सहदेव कृष्ण के समक्ष पूर्ण कृतज्ञ होकर उपस्थित हुआ। इसी सहदेव को महाभारत में जरासंध का पुत्र और मगध का अगला राजा कहा गया है। सरस्वती प्रदेश का ऋग्वेद वर्णित सृज्जय वंशी सहदेव ही पौराणिक मगध के सहदेव के आधार हैं। उपरिचर वसु में वसु शब्द इस समूचे घटना चक्र को वसुओं के क्षेत्र जगाधरी आदि से जोड़ता है।

उपरिचर वसु के पुत्र ब्रहद्रथ और पौत्र जरासन्ध ही नहीं, उपरिचर वसु को भी ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं माना जा सकता। क्योंकि इतने प्रसिद्व व्यक्ति से संबंधित विवरण सभी पुराणों में समान होने चाहिए थे। मतस्यपुराण में ब्रहद्रथ और उसका पुत्र जरासन्ध चैद्य उपरिचर वसु से दसवीं और ग्यारहवीं पीढ़ी में है। यहाँ जरासन्ध के पिता का नाम ब्रहद्रथ

नहीं बल्कि उर्जा है। विष्णु. में उपरिचर वसु के पिता का नाम कृतक और मतस्य पुराण में कृमि है। यह कृमि या कृतक हरिवंश और भाग्वत पुराण में समूची वंशावली में कहीं नहीं है। यहाँ उपरिचर वसु के पिता का नाम चयवन है।[48] उपरिचर वसु अर्थात उपरांचल वसु प्रदेश; जरासन्ध-जलसंन्धि और सहदेव तथा उसका पुत्र सोमापि सरस्वती प्रदेश के ऋग्वेद वर्णित सृज्जय सहदेव तथा उसके पुत्र सोमक का आधार लिए हुए काल्पनिक पात्र है। यूं तो इस कथा की शुरूआत में ही दो स्त्रियों से आधा-आधा बालक पैदा होना और फिर जुड़कर एक सम्पूर्ण जीवन जीना काल्पनिक और नाटकीय है। जरासन्ध वास्तव में ऐतिहासिक पुरुष था ही नहीं। शाब्दिक रचना व उसके अर्थ के हिसाब से मगध शब्द गाद या कीचड़ से उसी प्रकार जुड़ता है जैसे कुशिक वंशी गाधि। कुशिक और गाधि दोनों का अर्थ गाद ही है। कौशिकी नदी का क्षेत्र अत्याधिक कीचड़ गाद वाला क्षेत्र रहा होगा। वही क्षेत्र वसुओं का मगध भी था और सहदेव जरासन्ध का मगध भी।

यादवों के विनाश के दोषी

अपने क्षेत्र को नदी की बाढ़, प्रलय और अनियमितता से बचाने के वे भागीरथ प्रयास जो कृष्ण और भीम ने किए थे, प्रकृति के सामने धरे रह गए। वर्षों बाद ही सही किन्तु पूर्ण विनाश किया सरस्वती नदी ने, एक बार फिर अपना बहाव मार्ग बदला। बहाव मार्ग में अवरूद्वता ने एक बड़ी झील जैसी सीतोदसर की सृष्टि एक बार फिर कर दी। इस बर कृष्ण की द्वारिका उसमें डूब गई। बहाव मार्ग में बह गई..... बड़ी संख्या में यादव/ वसु जन मारे गए, सम्पूर्ण पशु धन नष्ट हो गया। कहा गया है कि कृष्ण ने ही गृहयुद्व में फंसा कर यादवों का विनाश करवा दिया। उचित ही है कि सभी को कृष्ण ने ही तो मरवाया था। दशकों पहले शूर या वसुदेव द्वारा त्याग दिए प्रभाष क्षेत्र में जाति को दोबारा से ला बसाने का काम कृष्ण ने ही तो किया था।

एक और कथा के अनुसार कृष्ण के पुत्र साम्ब के गर्भ से उत्पन्न लोहे के मूसल के कारण यादव जनों का नाश हो गया था। यह कथा अपने आप में एक महत्वपूर्ण तथ्य छिपाऐ हुए है। पंजाब में सरस्वती के विनाश से कुछ ही पूर्व लोहे का आगमन हुआ था। अत: धारणा बन गई होगी कि लोहा ही सारे विनाश का कारण है। सरस्वती नदी प्रदेश से विस्थापित हुए जन पूर्व की ओर बढ़ते हुए यादवों के प्रदेश से होकर गुजरे तो उन्होंने अन्न या आवशकता की वस्तुऐं प्राप्त करने के लिए बदले में अपने लोहे की वस्तुओं का विनिमय करना चाहा। यादव वसु नई धातु से अन्जान थे। ताँबे और कांसे के स्थान पर लोहे का प्रयोग करने से पूर्व साम्ब ने जानकारों/ऋषियों से इसके विषय में अधिक जानना चाहा होगा। ऋषि आशंकित था उसने बताया कि लोहे के कारण पश्चिम के जन और नगर नष्ट हो गए, अब यदि यादव जन इसी लोहे का प्रयोग करेंगे तो वे भी नष्ट हो जाएंगे। वे डरे या नहीं किन्तु आशंका अवश्य थी.... तो भी उन्होंने साम्ब द्वारा त्यागे गए लोहे के छोटी-छोटी कील या अन्य औजारों को बनाने में प्रयोग अवश्य किया। फैंके गए लोहे की अमूल्यता जानकार धातु गलाने वालों ने उससे औजार आदि बनाए। लोहे के प्रयोग और विनाश से सम्बंधित आशंका सही साबित हुई.... द्वारिका नष्ट हो गई, किन्तु दोष का ठीकरा लोहे के सिर फोड़ना भ्रमवश गलत था।[48]

कंसाली नदी [49] क्षेत्र के कबीलाई जन थे ''कंस जन''

एक विचार यह भी है कि अपने प्रथम पलायन के समय जगाधरी क्षेत्र प्रभाष वसु या यदुजन मथुरा की ओर गए ही नहीं, बल्कि उत्तरपूर्व में कंसाली नदी क्षेत्र में जाकर

शरणागत हुए। यह क्षेत्र मैदानी भाग की अपेक्षा थोड़ा ऊँचे पहाड़ी क्षेत्र है जिस प्रकार सरस्वती नदी के निवासियों को सारस्वत, दृष्द्वती नदी क्षेत्र के निवासियों को दृष्द्वन्त, सोम्ब नदी क्षेत्र के निवासियों को शम्भर, ऋक्षा या राक्षी नदी के जनों को राक्षस; अंगिरसी नदी प्रदेश के निवासियों को अंगिरा; इक्षुमती (घघ्घर) नदी प्रदेश के निवासियों को इक्षवाकु कहा गया उसी प्रकार कंसाली नदी के क्षेत्रों में निवास करने वाले जन कंस कहे गए हों।

यदि घटनाओं को अत्याधिक बढ़ा-चढ़ा कर न देखा जाए तो उस समय का इतिहास छोटी-छोटी नदियों के किनारे आवास करते कबीलाई-गोत्र समाजों का इतिहास है। उपरी गंगा यमुना दोआबे में मस्कारा, बूढ़ी यमुना, काथा, कृष्णी, सांदली, हिण्ड़न, और उपरी काली नदी के तटों पर विकसित हुए ''गेरूऐ मृदभांड सभ्यता'' वाले जनों से सोम्ब नदी के शम्भर, कंसाली नदी के कंस, ऋक्षा नदी ऋक्ष, जम्बू नदी के जाम्बवान कतई भिन्न नहीं थे। इन्हें संयुक्त रूप से त्रूघन/श्रूघन/शूर या फिर अजनाभखण्ड़ के अज कहा जा सकता है। इन परवर्ती नागों का समय 1000 ई. पूर्व तक का है। **एफ.ई. पार्जीटर** के अनुसार महाभारत युद्व का समय 950 ई. पूर्व से प्राचीन नहीं है। यही वह समय है जब आर्जुनायन क्षेत्र से आए यौधय (पांडु जन) जनों के साथ चित्रित धूसर भांड़ संस्कृति और लोहे के प्रयोग ने गंगा यमुना दोआबे की गेरूऐ मृद भांड़ संस्कृति और तांबे के प्रयोग पर अधिकार किया। पांडु जन यौधयों का अपने मूल बहावलपुर, जोहियावार, भंटिडा आदि से पलायन सतलुज नदी के मार्ग परिवर्तन कर पश्चिम में सिंधु नदी से जा मिलने के कारण हुआ होगा।

ताँबे का प्रयोग करने वाले गेरूऐ मृदभांड़ संस्कृति के कबीलाई जन, लोहे का प्रयोग करने वाले चित्रित धूसर मृदभांड़ वाले इन्द्र-वरुण पूजक जनों के विरोधी ही थे। कृष्ण ने इन्द्र पूजा का विरोध किया, वह इसमें सफल भी हुआ क्योंकि किसी भूकम्पीय घटना से / भूपटलीय परिवर्तन से सरस्वती, दृष्द्वती आदि नदी तंत्रों के गड़बड़ा जाने से पंजाब-हरियाणा क्षेत्र में बसे इन्द्र-मित्र-वरुण पूजक जन लगभग बरबाद और विस्थापित हो गए, और ताँबा-काँसे वाले गेरूऐ मृदभांड़ संस्कृति के कृष्ण ने इन्द्र पूजा के विरोध का अवसर देखा। वैसे तो दोनों सभ्यताओं के बीच विरोध सुदास, दिवोदास, वर्ध्याश्व, मुदगल और उससे काफी पहले से ही चला आ रहा था किन्तु इस संघर्ष की परिणती कृष्ण के काल में हुई। कृष्ण का इन्द्र पूजा का विरोध करना और साम्ब की कथा में लोहे से संस्कृति के नष्ट हो जाने का भय तथा जाम्बवान ऋक्ष का गुफाओं में निवास, संकेत करता है कि कृष्ण गेरूऐ मृद भांड़ संस्कृति के एक कबीलाई नेता थे। जिस में बुआ के पुत्र के साथ बहन के विवाह, शत्रु को पराजित कर उसकी पुत्री के साथ विवाह, मामा का उत्तराधिकारी बनना, विवाह के लिए लड़के का अपहरण करना गलत नहीं था। कृष्ण यही सब करता है और उसके पड़ोसी बकासुर और शम्भर भी यही करते हैं, अनिरूद्व और साम्भ दोनों का हरण होता है।

जगाधरी क्षेत्र में द्वारिका के नष्ट होने या डूबने के उपरान्त यदु जनों का दूसरा पलायन निश्चित रूप से वर्तमान मथुरा क्षेत्र में हुआ था। मथुरा में गेरूऐ मृदभांड़ संस्कृति के चिन्ह न मिलना संकेत करता है कि वर्तमान मथुरा कृष्ण के एक या दो पीढ़ी बाद ही बसी थी, इसे बसाने वाले जन श्रूघन/त्रूघन के प्रभाष क्षेत्र से आए वसु/यादव जन थे। कृष्ण तो जगाधरी क्षेत्र के ही थे सम्भवत्त: तभी उन्हें जगन्नाथ भी कहा गया है।

कृष्ण का पौत्र ब्रज, बचे खुचे लोगों को लेकर मथुरा क्षेत्र में पहुँचा, परीक्षित के सहयोग से ब्रज ने मथुरा के चारों ओर बहुत सी बस्तियाँ बसाई थीं। ब्रज का नाम जगाधरी क्षेत्र के तत्कालीन विरज के निवासियों का द्योतक है विरज क्षेत्र के प्रत्येक पुरुष को विरज और स्त्री

को विरजा कहा गया है। मथुरा और उसके आसपास विरज जनों की बस्तियाँ बसने से संपूर्ण क्षेत्र ब्रजमण्डल कहलाने लगा।

नाग समाप्त नहीं हुए थे। जब भी अवसर मिलता वे विद्रोही हो जाते और बदला लेते थे। प्रभाष से यदुकुल की स्त्रियों को लाते समय अर्जुन को आभीरों ने घेर कर लूट लिया था, **ये आभीर लुटरे अहि जन ही थे।** आभीरों के सरस्वती तट पर निवास करने का विवरण है। राजा परीक्षित के समय नाग काफी प्रबल, प्रभावशाली और संगठित हो गए थे..... उन्होंने परीक्षित की हत्या कर दी। परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने नागों के विरूद्व बड़े पैमाने पर अभियान किया, एक-एक नाग को ढूँढ़-ढूँढ़ कर मारा गया...... कुछ नागों का पलायन मध्य भारत की ओर भी हुआ। समूचे पंजाब और गंगा-यमुना दोआबे को नागों से खाली करा लिया गया। दोआबा क्षेत्र से नागसत्ता का अन्त भले ही युधिष्ठर के नेतृत्व में पाँडु जनों ने किया था। किन्तु सतलुज-गंगा-यमुना के विशाल क्षेत्र से नाग संस्कृति को पूर्णतया समाप्त करने का कार्य जनमजय ने किया.......। अत: अजनाभखण्ड़ को भारतवर्ष बना देने का श्रेय भरत बाहुबलि या भरतदौष्यन्ती को नहीं अपितु जनमेजय को दिया जाना चाहिए। जनमेजय भरतवंशी था इस हिसाब से भरतों के नाम पर अजनाभखण्ड का नाम भारतवर्ष पड़ा। किसी एक भरत को इसका श्रेय देना उचित नहीं ठहरता।

सहायक ग्रन्थ, निबंध और पाद टिप्पणियाँ

1. **बलदेव उपाध्याय, ''पुराण विमर्श''** वाराणसी, 1987, पृ. 332-34, पर अजनाभ का अर्थ अज (अजन्मा विष्णु) के नाभिकमल पर स्थित देश। **राणा प्रसाद शर्मा, ''पौराणिक कोश,''** वाराणसी, 1986 पृ. 14 व 17 पर-भरत के पिता ऋषभ देव अजनाभखण्ड़ के राजा थे वाद में भरत के नाम पर यह देश भारत वर्ष कहलाया गया।
2. **उपाध्याय**, पृ. 370
3. **शर्मा**, पृ.3
4. वही, पृ.14
5. वही, पृ.15
6. वही,
7. वही, पृ. 18
8. वही, पृ. 180
9. **कीथ व मैकडोनेल, ''वैदिक इण्डैक्स,'' अनु. रामकुमार राय,** वाराणसी 1962, भाग-1, पृ. 607-608
10. **शर्मा**, पृ. -62
11. वही, पृ. 18
12. वही, पृ. 13, 18
13 **ज्योति प्रसाद जैन, ''हस्तिनापुर''** लखनउ, 1955, पृ. 14 पर- हस्तिनापुर के नामकरण का श्रेय भरत की छटी पीढ़ी के हस्तिन को है। महाभारत (पूना संस्करण) और भागवत. से पता चलता है कि हस्तिन से कई पीढ़ी पूर्व यह नगर गजपुर नागहव्य, आंसदीवत आदि किसी नाम से प्रसिद्व हो चुका था।
14. **शर्मा**, पृ. 69
15. वही, पृ. 68
16. वही, पृ. 308

17. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-1, पृ. 14-15
18. **विमल चरण लाहा, "प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल"**, लखनउ, 1972, पृ. 28
19. भूतलय, युगन्धर से संबंधित एक अपवित्र स्थल था- **देवेन्द्र हांड़ा, "सम इम्पॉर्टेन्ट टाउन्स ऑफ हरियाणा,"** जर्नल ऑफ हरियाणा स्टड़ीज, 1971, पृ. 1
20. **शर्मा**, पृ. 306
21. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2, पृ. 60
22. **शर्मा**, पृ.-143
23. **वी. के. माथुर, "ऐतिहासिक स्थानावली,"** जयपुर, 1969, पृ. 911 पर शेलोदा मेरू और मदराचल पर्वतों के बीच बहती थी। **भगवत. सिंह सूर्यवंशी, "ज्योग्राफी ऑफ महाभारत,"** पृ. 133; पद्यमपुराण उत्तरखंड-55 में सीता नदी का एक नाम लाक्षकी भी है जो उसे पलक्ष और लक्ष्मी शब्दों से जोड़ती है।
24. **वी.के. माथुर** पृ. 659-देहरादून के समीप कालसी के निकट जगतग्राम में प्राप्त एक लेख में यह प्रदेश युगशैल कहा गया है- **"युगेश्वररस्या युगशैल महीपतेः" वासुदेव शरण अग्रवाल "पाणिनी कालीन भारतवर्ष"**, पृ. 72
25. सुमेरु पर्वत से जम्बू नदी निकलने का वर्णन है। मेरुमन्दर पर्वत से निकलने वाली नदी, चैत्ररथवन से होकर गुजरती थी- **लाहा**, पृ. 218 चैत्ररथ वन की पहचान **ओ.पी. भारद्वाज** जौनपुर बाबर, चकरौता क्षेत्र से करते है (**वाल्मिकीज हिस्ट्रोरिकल ज्योग्राफी ऑफ कुरूक्षेत्र,** "पंजाब हिस्ट्री कांन्फ्रेस," 1979, पृ.32)[30] गुहयकों का पिता, शिव का गण मणिभद्र यक्ष चैत्ररथ पहाड़ी का निवासी था और यक्षों को सुदास पैजवन ने यमुनातट पर पराजित किया था।
26. 53 एफ, मानचित्र, सर्वे ऑफ इण्डिया, देहरादून।
27. **शर्मा**, पृ. 459
28. वही, पृ. 458
29. वही, पृ. 256
30. वही
31. **गुणाकर मुले, "कहाँ थी कृष्ण की द्वारिका"** दैनिक ट्रिब्यून, 28 अगस्त 1997; **जवाहरलाल कौल "हिमाचल से समुद्र तक"** हिन्दुस्तान दैनिक, 25 जनवरी 2001; **जमना दास अख्तर, "गुजरात फिर उभरेगा"** हिन्दुस्तान दैनिक, 6 फरवरी 2001; **जमना दास अख्तर, " कच्छ की रन में गिरती थी सरस्वती"** हिन्दुस्तान दैनिक 27 फरवरी 2001;
32. **शर्मा**, पृ. 335 पर प्रभाष पश्चिमवाहिनी सरस्वती नदी के कारण प्रसिद्व था
33. **ओ.पी. भारद्वाज, "जनमेजय परीक्षित एण्ड टू ऐंशेट ट्रिडीशन्स ऑफ दे पंजाब"**,8 पंजाब हिस्ट्री कान्फ्रेस-16 मार्च 1982 में
34. **ओ.पी. भारद्वाज, " सम इम्पोर्टेन्ट वैदिक साईटस ऑफ हरियाणा,"** "जर्नल ऑफ हरियाणा स्टडीज," जिल्द 15 ; नवम्बर 12, 1983 पृ. 6; **वी.के. माथुर**, पृ. 72; **राधा कुमुद मुकर्जी, "हिन्दु सभ्यता"** दिल्ली, 1995, पृ. 164;
35. **वी. के माथुर**, पृ. 487-88, 1015-16 पर- हस्तिनापुर का नाम नागसाहव्यम और नागपुर दिया गया है।
36. वही, पृ. 486
37. **शर्मा**, पृ. 14
38. **पदमचन्द्र कश्यप, "हिमाचल प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास"**, पृ. संख्या अनुप्लब्ध
39. **लक्ष्मण एस. ठाकुर, "हूमैन सैक्रिफाईज- भूड़ा"**, पंजाब हिस्ट्री कांफ्रेस, 1982, पृ. 31

40. **पदमचन्द्र कश्यप**, पृ. संख्या अनुप्लब्ध
41. **दामोदर धर्मानन्द कौशाम्बी, "प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता", अनु. गुणाकर मुले**, दिल्ली, 1993, पृ. 124
42. **जूहरअली खान, "काली नदी-दा हिस्ट्री आफ ए रिवर"** आई.एच. सी. 1987, पृ. 748
43. **माखनलाल, "डिवलपमैंट एण्ड़ डिस्पैरसल ऑफ ऐग्रीकल्चर सैटलमैंट इन गंगा-यमुना दोआबा"**, आई. एच. सी. 1987
44. **हैमचन्द्र रायचौधरी, "प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, दिल्ली,"** पृ. 34
45. **के.सी. यादव, "हरियाणा का इतिहास"** भाग-1, पृ. 110
46. वही, पृ. 109
47. **आर. सिधान्ता शास्त्री, "इण्ड़ियन हिस्ट्री ऑफ दा प्रि कलियुग इण्डिया,"** पृ. 162-63
48. सरस्वती नदी के लुप्त हो जाने के कारणों के विषय में सही जानकारी न होने, से इसका दोष प्राचीन लेखकों ने अपने विराधियों के मत्थे मढ़ा। कहा गया है कि यह निषद राष्ट्र का द्वार है और यही वह स्थान है जहाँ निषादों के संसर्ग-दोष से बचने के लिए सरस्वती धरती में समा गई जिससे निषाद उसे न देख सकें। **वी. के. माथुर,** पृ. 503; सरस्वती के लुप्त हो जाने का दोष विश्वामित्र को दिया गया कि विश्वामित्र ने सरस्वती का जल रक्तरंजित कर दिया, इस लज्जा से सरस्वती धरती में विलीन हो गई। **डा. सन्तोष सिंह, "सरसधारा सरस्वती"** कादम्बिनी, मार्च 1944, पृ. 86 शुद्र और आभीर सरस्वती नदी के किनारे रहते थे, इन के प्रति वैर भाव के कारण सरस्वती मरूभूमि में विलीन हो गई-**रामशरण शर्मा, "शूद्रों का प्राचीन इतिहास"**, दिल्ली, 1995, पृ. 33 और 47; एक अन्य कथा के अनुसार ब्रहमा ने सरस्वती को आदेश दिया कि वाड़वा को समुद्र में बहा दे। वाड़वा के सम्पर्क में आने से नदी का जल खौलता समुद्र बन गया, नदी में ज्वालामुखी वाड़वा को भूर्गभ मार्ग से लेजाकर समुद्र में तो डुबो दिया किन्तु स्वयं भी वापिस नहीं आ सकी। यह वाड़वा तेज जलोध समुद्र में और्व ऋषि के तेज से उत्पन्न था सुग्रीव के मतानुसार इसने चराचर जगत को उदयरस्त कर लिया था- **मंजुला श्री वास्तव, "वाल्मिकी युगीन भारत,"** वाराणसी, पृ. 60; वाड़वा सम्भवत शिवालिक पर्वत माला क्षेत्र में हुई कोई ज्वालामुखी घटना रही होगी जिसका कारण भूकम्पीय हलचल होने से भूपटल में आकार प्रकार में पविर्तन हुआ और सरस्वती के मार्ग में अवरोध से जलोध (जलावरोध) नामक किसी विशाल झील की सृष्टि हो गई होगी और नदी के मार्ग में परिवर्तन शुरू हो गए। विन्ध्य पर्वत शिवालिक माला का एक भाग था इसके अन्य नाम वैदूर्य या वैदयूत पर्वत थे। कुमार कार्तिकेय से संबंधित विन्ध्य पर्वत पर सुन्द उपसुन्द के तप के कारण धुआं निकलने लगा था **शर्मा** पृ. 463; अनुमान है कि विन्ध्य से धुंआ निकलना और वाड़वा तेज की भौगोलिक घटना एक रही होगी जिसे अलग-अलग कथाओं का रूप दे दिया गया।
49. कंसाली नदी, यमुना नगर जिले के उत्तर पूर्वी भाग में सोम्ब नदी की सहायक पथराला नदी की छोटी सहायक नदी है। **मानचित्र** 53 **एफ**-7 **सर्वे ऑफ इण्ड़िया देहरादून**।

अध्याय – 6
पलक्ष-गोमेद-गोलोक और कृष्णकथा

अधिकतर पुराणों में जम्बू द्वीप के उपरान्त पलक्ष द्वीप का वर्णन है।[1] योग वशिष्ठ 3.73. 52-8 में गिनाऐ गए सात द्वीपों में स्वेत और गोमेद जहाँ नये नाम हैं वही शाल्मली और पलक्ष द्वीपों को छोड़ दिया गया है, रोमक सिद्वान्त में चन्द्र और गोमेद को क्रौंच और शाक द्वीप कहा गया है। वहीं वहाँ गोमेद और पलक्ष दोनों द्वीपों का उल्लेख है।[2] महाभारत भीष्म पर्व में द्वीपों की संख्या तो सात है किन्तु गिनाए गऐ पाँच नामों में पलक्ष और क्रौंच द्वीप छोड़ दिए गए है।[3] इस प्रकार के परस्पर विरोधी वितरणों से सप्तद्वीपीय भूगोल की कोई सच्ची तस्वीर नहीं उभर पाती। मेरे विचार से पलक्ष, गोमेद और क्रौंच तीनों नाम एक ही हैं..... क्रौंचमेद- गोविंद .... सभी एक दूसरे से साभ्य रखते हैं।

पलक्ष द्वीप, पलक्षा नदी का प्रदेश था और पलक्षा नदी, सरस्वती नदी का ही एक नाम था यह हम पीछे कह आए हैं। सरस्वती नदी का एक नाम ''गो'' अथवा ''गौ'' भी है। गौ के अन्य अर्थ-पृथ्वी, माता और गाय आदि हैं [4] इस प्रकार सरस्वती नदी का प्रदेश ही गोलोक अथवा गौलोक भी था। पलक्ष द्वीप के शान्तमय देश का नाम गोमद है गोमेद को इक्षुरस समुद्र से घिरा बताया गया है जिसके बीच कुमुद पर्वत था।[5] पलक्ष द्वीप भी इक्षुरस समुद्र से घिरा था, अतः पलक्ष और गोमेद एक ही है; गोमेद और कुमुद में भी साम्य है।

इस ग्रह के प्रत्येक नाम के पीछे एक इतिहास है। वैवस्वत मनवन्तर में पृथु वेन्य द्वारा इसका दोहन करने के कारण नाम पृथ्वी हो गया[6]। प्रत्येक मन्वन्तर में इसका दोहन किए जाने के विवरण पुराणों में है। सर्वप्रथम दोहन ब्रहमा ने किया था। प्रथम नाम गौ अथवा गो था जो यूनानी मिथकों में छह टीटनों में से एक यूरेनस की स्त्री के नाम Gaea से मिलता है।[7] प्रथु ने कृषि कार्य का विकास किया, पृथ्वी को प्रोथित समतल बनाया गया।[8] इस कथा का अर्थ यह भी उचित है कि पृथु वेन्य तक आते-आते पशुपालक समाज, ग्राम एवं गोत्र, कृषक बन चले थे।

पहले उनके निवास क्षेत्रों, पर्वतों, घाटियों एवं जाति-गोत्रों का नाम गो से संबंधित करके थे यह वही क्षेत्र था जिसे हम पीछे पितृों/पिशाचों का पितृलोक विरज कह आए हैं। विरज, ब्रज, पिशाच, वानर, यक्ष, अज, गज-हस्ति अदि जनों में साम्य था, सभी जातियों सहित शिव और कृष्ण भी जगाधरी-सहारनपुर, देहरादून व दक्षिणी सिरमौर जिले के श्रूघन/त्रूघन पलक्ष से संबंधित थे..... कृष्ण व शिव के समय जब तक कि सरस्वती नदी पशिचम वाहिनी थी और आर्य देवतन्त्र का प्रसार इस क्षेत्र में नहीं हुआ था, यह समूचा क्षेत्र गो नदी का गोलोक था। कृष्ण का काल कई समाजों संस्कृतियों का संक्रमण काल था.... बारह वर्ष लम्बे अकाल और सरस्वती के बार-बार मार्ग बदल लेने की अनियमितता ने सम्पूर्ण सप्तसैन्धव प्रदेश को वीरान-शमशान बना दिया था, आर्य देवतन्त्र जिसका प्रसार धीरे-धीरे पूर्व की ओर बढ़ रहा था, पर से लोगों का विश्वास ड़गमगा गया था।

''गो'' अथवा उच्चारण परिवर्तन से गो में अन्य अक्षरों के मिलन से इस प्रदेश का एक नया किन्तु समूचा ऐतिहासिक भूगोल उभर कर सामने आता है। शिव व उनसे सम्बंधित पिशाच, यक्ष, नाग आदि जातियाँ और कृष्ण इस गो नदी (सरस्वती) क्षेत्र से पूर्णयता सम्बंधित प्रमाणित होते हैं।

गैरिकः गिरि अथवा पहाड़ पर उत्पन्न होने वाला।

गौरी:- पार्वती का नाम।[9] गौरी, अम्बा, सती में साम्य है, हिमवान और मैना की पुत्री। हिमवान व मैनाक यमुना नदी के पश्चिम की पर्वत माला का नाम है। उस क्षेत्र में कालेसर, कैलाश पर्वत था जिसके आसपास के क्षेत्र में अम्बिका वन, अम्बावाली खोल, अम्बाला, काला अम्ब इत्यादि स्थित हैं।

गौरी वैराज की पत्नी का नाम था। गौरी, क्रौंच द्वीप की एक नदी का नाम था। मैनाक पर्वत माला में अम्बिकेय पर्वत ही सम्भवत गौरीलोक था जो शिवलोक (कालेसर-कैलाश) के बॉई ओर था। गौरीशंकर शिव पार्वती का संयुक्त नाम है।

गिरिजा :- पार्वती का एक नाम, पर्वतीय क्षेत्र का द्योतक

गिरिका :- पर्वत राज कोलाहल की पुत्री-गिरिका कोलाहल्या, यह उपरिचर वसु की स्त्री थी।

गोमेदक

पलक्ष द्वीप का एक भाग, अम्बिकय पर्वत से लगा हुआ मोदक यही था और इसे ही मैनाक कहा गया है। भाषान्तर के कारण इसका अपभ्रंश गोविन्द भी है जो कृष्ण का एक नाम था, सम्भवत: इसलिऐ कि कृष्ण के वे क्रियाकलाप, जिनके कारण उन्हें विष्णु के अवतार का पद मिला था, इसी गोविन्द[10] गोमेद/गोमेदक क्षेत्र, द्वीप अथवा पर्वत पर हुऐ। गोविन्द क्रौंच द्वीप का पर्वत है। यही कोविंद/क्रौच/ क्रौंचरन्ध भी है जहाँ कालेसर के समीप पर्वतों से उतरकर यमुना नदी मैदानों में प्रवेश करती है। इस क्रौंचरन्ध्र (घाटी) के बंद हो जाने से गिरित्र में विशाल झील नुमा समुद्र बन जाता था और मैनाक पर्वत की निचली घाटियाँ उसमें डूब जाती थीं। गिरित्र में विशाल मात्रा में जमा होते पानी से शिव के प्रियस्थान गोकर्ण (कालेसर नगर के आसपास यमुना नदी का पश्चिमी क्षेत्र) को विशेष खतरा होता था यह एक प्रकार से उत्तर और दक्षिण का प्रदेश द्वार था।

रुद्र का प्रिय स्थान गोकर्ण समुद्र में चला गया था, बलराम के कहने पर वरुण ने इसे पुनः लौटा दिया, इस का अर्थ है कि क्रौंचरन्ध्र के बंद हो जाने से शिवजनों का क्षेत्र प्रभावित होता था। इस बंद को तोड़ना/विद्रीण करना/ रुकावटों को हटाना-समय-समय पर आवश्यक हो जाता था। न केवल परसुराम और कार्तिकेय ने क्रौंचरन्ध्र को विद्रीण किया अपितु बलराम ने भी यही किया। अन्तर केवल इतना है कि वहाँ उसका नाम यमुनाभिद है जो बलराम ने अपने हल द्वारा यमुना के दो भागों में विभक्त करके किया था।[11] रुके हुए अथवा बाढ़ के जल को सुचारू रूप से बहाया। कृष्ण द्वारा गोकुल वासियों को बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को ऊंगली पर उठाना एक ही घटना से जुड़े दो अलग-अलग प्रयास प्रतीत होते है कि दोनों भाईयों में से कृष्ण लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले गए और बलराम ने जल की निकासी दुरुस्त की। गोविन्द, कोविंद अथवा गोवर्धन में साम्य है। गो नदी क्षेत्र में ही कृष्ण-बलराम का निवास स्थान गोकुल रहा होगा। वरुण गोकर्ण से सम्बंधित था, उसके पुत्र सुषेण, पुष्कर और गो है। इन्द्र महेन्द्र पर्वत से सम्बंधित बताया गया है। इन्द्र के सारथि मातलि के गुणकेशी नाम की पुत्री और गोमुख नामक पुत्र था।

आर्य देवता इन्द्र के विरोध का अर्थ- एक और महत्वपूर्ण तथ्य इसी घटना से जुड़ा लगता है कि अब तक वसुजनों के वसुन्धर/ यदु जनों के युगन्धर क्षेत्र में शिव अथवा विष्णु को पूजने वाले इस पशुपालक समाज में पश्चिम में बसे कृषक PGW सभ्यता के इन्द्र, मित्र, वरुण वाले देवतन्त्र के प्रति फैल रही आस्था डगमगा गई थी। क्योंकि इन्द्र, वर्षा का

देवता कहा जाता था और अत्यधिक वर्षा, बाढ़, विनाश की स्थिती से बचाव के लिए की गई इन नवीन देवताओं की पूजा-अर्चनाऐं काम नहीं आईं। लोगों को अपने ग्राम-ग्रोत्र छोड़कर पर्वतों में शरण लेनी पड़ी। हो सकता है कि जन हानि कम हुई हो किन्तु ग्रामों, घरों, सामानों, पशुओं आदि की तो क्षति हुई होगी। बाढ़ जनित बीमारियाँ बेशक बाद की बातें हों किन्तु एक बार तो सब कुछ समाप्त हो ही गया था। इन्द्रादि नए देवतन्त्र के प्रति डगमगाए विश्वास वाले समाज में कृष्ण और बलराम ने इन्द्र, वरुण, सविता, द्याता, अश्विनी कुमार वाले देवतन्त्र पर अंतिम चोट की और यह देवतंत्र यमुना पार पहुँचने से पूर्व ही ध राशाई हो गया। कृष्ण इस देवतन्त्र का विरोधी था या नहीं इस बहस में पड़ने से पूर्व हालातों का अध्ययन उचित होगा, कृष्ण यदि देवता होते तो दूसरे देवता का विरोध सम्भव नहीं था। वे परिस्थितियों ही थीं जिन्होंने इन्द्र का पराभव कर दिया और कृष्ण जननेता के रूप में उभरे। मानव सुद्युम्न का पुत्र गय भले ही व्यक्तिवाचक रूप में वर्णित है।[12] तो भी वह गौ क्षेत्र के निवासियों का द्योतक शब्द अधिक प्रतीत होता है। द्वारिका (दृष्द्वती नदी क्षेत्र में द्वार शब्द की ध्वनि) के समीप गोवर्धन तीर्थ, कृष्ण के प्रथम निवास स्थान गोकुल, वहाँ के निवासी गोप में ही गो अक्षर नहीं है बल्कि इस क्षेत्र का प्रमुख अस्त्र गदा में भी गो की ध्वनि है।....... प्रमुख अस्त्र इसलिए कि कालान्तर में दुर्योधन और भीम दोनों ही इस क्षेत्र के बलराम से गदायुद्व सीखने आते है।

गौ क्षेत्र के निवासी गज भी कहे गए, उन कबीलाई जनों का टोटेम गज अथवा हाथी रहा होगा... हाथी को अज भी कहा जाता है..... अजमीढ़ और हस्ती से इसका पता चलता है। गन्धर्वों का गजमुख होना लिखा है।[13] सम्पूर्ण गो क्षेत्र के गज (या गय सौद्युम्नि) कई कबीलों जातियों में बंटे थे। रामायण के अनुसार ब्रहमा ने गन्धर्वों को यक्षिणिओं के गर्भ से वानरों की उत्पत्ति करने का आदेश दिया था।

गन्धर्वियाँ, गजिनी, हस्तिनी, उल्लुकियाँ, पिशाचिनी और वानरियाँ थी- अपसराऐं

गन्धर्व नाचने-गाने बजाने का कार्य करते थे, "हा हा" और "हू हू" आदि सात संगीत विशारद गन्धर्वों का उल्लेख है।[14] पितृगणों और पिशाचों में कोई भेद नहीं। गन्धर्वों के साथ क्रीड़ारत रहने वाली अपसराओं ने पृथ्वी रूपी गौ के दोहन के समय गन्धर्वों का साथ दिया था। वे बर्हिषद पितृगणों की उपासना करतीं थीं और कैलाश पर्वत पर भी जाती थी। इनकी दैविक संख्या-10, लौकिक-34, कुल प्रधान-1060 थी। इनकी संख्या वैसे साढ़े तीन करोड़ कही गई है।[15] इन तथ्यों से सच्ची तस्वीर इस प्रकार उभरती है कि अपसराऐं कैलास पर्वत क्षेत्र में रहने वाली गन्धर्वियाँ हीं थीं वे पिशाचिनी भी हैं और वानरियाँ भी। वे ही हस्तिनी हैं और वे ही गजिनी, गजगामिनी। रामायण तथा पुराणों के अनुसार समुद्रमन्थन से उदभूत हुई ये अपसराऐं देवों और असुरों द्वारा पत्नी रूप में तो स्वीकारी नहीं गई किन्तु स्त्री रूप में वे सर्वसुलभ रहीं[16] क्या कहें कि वे रह ही नहीं सकतीं थीं? उनके जाति कुल-कबीले नाचने, गाने, जी बहलाने का कार्य करते थे.... इन्द्र उन्हें किसी व्यक्ति विशेष का तप अथवा ध्यान भंग करने भेजा करता था..... वे जातीं थीं, कई बार वर्षो तक साथ रहतीं.... किन्तु किसी भी कथा में कोई अपसरा अपने बच्चे को साथ नहीं ले गई और बच्चा उत्पन्न होने पर भी, उस व्यक्ति उसके घर और सम्पत्ति, यहाँ तक कि बच्चे पर उसने कभी कोई अधि कार नहीं जताया, और तो और उनके अपने पतियों को उनके इन कामों से कोई परहेज नहीं था।

घृताची अपसरा के एक नाम कपिंजली[17] से पता चलता है कि वह वानरी ही थी। केसरी

वानर की दूसरी स्त्री आद्रि जो कि एक अपसरा थी, शापवश बिल्ली के मुख वाली पिशचिनी होकर अच्छोद झील क्षेत्र में यमुना तट पर रहती थी....... उपरिचरवसु से उसके दो संतानें हुई अजगन्धा/मतस्यगन्धा जो बाद में सत्यवती के नाम से कृष्ण द्वैपायण की माता बनी और शान्तुनु की महिषि, और दूसरा एक पुत्र आद्रि जो पिशाचों का राजा बना, मेरे विचार से यही मतस्य भी था। हो सकता है कि मस्कारा नदी का प्राचीन नाम मतस्यकारा या मच्छकारा, हो। इसकी सहायक बड़कला राव के क्षेत्र में बेहाट इन प्राग मतस्यों का बैराट हो। बारा वन, और बरकला नदी नाम से क्षेत्र का नाम वैराट की ध्वनि आती है। यह भी हो सकता है कि बड़गाँव के रूप में पुरातत्व विदों ने वैराट खोद डाला हो अर्थात मतस्य जन पिशाच अथवा वानर ही थे। अपसराऐं ठसकदार होती थीं यदि उन्हें लगता कि सामने वाला पुरुष उन्हें पत्नी रूप में अपनाना चाहता है तो वे ऐसी शर्तें रखतीं थीं, जिनका पालन न करने पर उन्हें उनसे छुटकारा मिल सके....। सभी अवस्थाओं में वे इस प्रकार के किसी बंधन में नहीं बंधना चाहतीं थीं। हैमा अपसरा ने मयदानव से कहा था कि वह जब तक चाहेगी उसके पास रहेगी.... और जब भी वह जाना चाहेगी मय उसे रोकेगा नहीं। मयदानव के चार बच्चों माया, मंदोदरी, मायावी और दुंदुभी को जन्म देने के बाद हैमा मय को छोड़ कर चली गई। इसी प्रकार पुरुरुवा के सामने उर्वशी ने शर्त रखी..... कि वह उसकी भेड़ों की देखभाल करेगा.... केवल घृत का ही सेवन करेगा, संगम के अतिरिक्त उसे नग्न अवस्था में कभी नहीं दिखेगा, किन्तु छह पुत्र उत्पन्न होने के बाद गन्धर्वों के प्रयत्न से पुरुरुवा उसे नग्न दिख जाता है और वह चली जाती है। शर्तों के आधार पर शान्तुनु की प्रथम स्त्री गंगा के भी कोई अपसरा होने की धारणा बनती है कि वह अपनी मर्जी की मालिक होगी.... शान्तुनु उससे कभी कुछ नहीं पूछेगा... किन्तु आठवें पुत्र के जन्म पर शान्तुनु ने शर्त तोड़ दी और गंगा चली गई। गंगा आठ वसुओं की माता बनी थी.... वह वसु क्षेत्र की ही रही होगी। वसुओं में समाज मातसृत्तात्मक था हालाँकि इसके अन्य संकेत नहीं मिलते। किन्तु वसुजन भी वासुकी नाग ही थे। अपसरा वर्ग भेड़ भी रखता था। केवल घृत के सेवन की शर्त इसलिए थी कि उर्वशी अपनी पंसद का भोजन चाहती थी यह भी हो सकता है कि केवल घृत का सेवन करने से पुरुरुवा खीज कर अथवा दुखी होकर शर्त तोड़ देगा। या फिर वह आर्य न बने... पशुपालक यायावर ही बना रहे। उर्वशी की कथा में गन्धर्वों का उल्लेख बताता है कि उर्वशी गन्धर्वी ही थी और उसकी जाति के पुरुषों ने ही उसकी मुक्ति का प्रयास किया जिसमें वे सफल भी रहे।

उर्वशी..... गन्धर्वों, पिशाचों की एक जाति उलूकों से सम्बंधित प्रतीत होती है। उरग नागों की एक जाति है। उरगरिकेतन गरुड़ का नाम है। गरुड़ गौ क्षेत्र के रुद्र ही हैं (गोरुद्र-गरुड़); उरणक उर्वशी की भेड़ों का नाम है। उर्मि सोम वसु का पुत्र है। उर्वरीवान पुलह का एक पुत्र है। उर्जा अपसराओं, उलूखलगन पिशाचों का उलूक देश गंगा यमुना दोआबे का उपरी प्रदेश ही था। नाग कौरव्य की पुत्री उलूपी ऐरावत की स्त्री थी, अर्थात पति होते हुए भी उसने अर्जुन को वरा। पता नहीं वह अपसरा थी या नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि वह किसी परम्परा का निर्वाह कर रही थी। रांगेय राघव लिखते हैं कि हिमाचल प्रदेशों में इस प्रथा को मानने वाली पहाड़ी जातियाँ हैं जिनके यहाँ घर की लड़की अतिथि का हर प्रकार से सत्कार करती है। ऐसा लगता है कि पिता के घर सत्यवती मतस्यगन्धा परासर का सत्कार कर यह परम्परा निभा रही हो और कुन्ती भी ऐसी ही परम्परा का निर्वाह करती है युधिष्ठिर, अर्जुन या भीम को जन्म देकर नहीं अपितु सूर्य का अतिथि सत्कार

करके। श्वेतकेतु की माता की घटना भी कहीं इस परम्परा से जुड़ती तो प्रतीत नहीं होती, श्वेतकेतु की माता को गणगोत्र के अधिकारानुसार एक ब्राहमण संभोग के लिए जबरदस्ती पकड़ कर ले गया, श्वेतकेतु के नाराज होने पर पिता उद्दालक ने कहा यह सनातन रीति है।

गन्धर्वियाँ, वानरियाँ, पर्णिनियाँ, कुंड़नियाँ, पिशाचिनियाँ जो इस प्रकार का कार्य करती थी उन्हें समाज ने इज्जत से अपसराओं का नाम दिया और उनकी जाति के पुरुषों को घृणावश पिशाच आदि कहा। किन्तु उनके इस काम में उतरने के पीछे बढ़ते समाज घटते साधनों के साथ-साथ प्राकृतिक आपदा भी एक कारण था जो लगभग प्रत्येक वर्ष पिशाचों और वानरों के क्षेत्र में घटता था। पिशाचों का पर्वत पिशंग कैलाश, (कालेसर) के दक्षिण में था। काफी समय तक यमुना नदी के बहाव मार्ग में पश्चिम और दक्षिण की अनिश्चितता रही, पता नहीं चलता था कि नदी कब अपना प्रवाह मार्ग बदल लेगी, उस पर कभी-कभी क्रौंचरन्ध्र के बंद हो जाने पर बनी गिरित्र झील...। कुल मिलाकर उनका क्षेत्र कभी विनाश तो कभी महाविनाश की चपेट में आता ही रहता था। पूरी तरह सभ्य नहीं तो अर्धसभ्य तो वे थे ही। वनों पर आश्रित वे पशु-पालक थे अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। किन्तु इतना तो तय है कि वे कृषक नहीं थे, उनका मूल क्षेत्र इस काम के लिए था भी नहीं। ऐसे में वर्षा, बाढ़ विनाश और महाविनाश के कारण विस्थापित होकर दूसरे कबीले, समाज और जातियों के क्षेत्र में जाकर जीवन यापन करने की लाचारी ने उन्हें इन कामों में ढ़केल दिया... इस जाति ने इस कार्य को पारम्परिक तौर पर अपना लिया। जब इस क्षेत्र में कृषक-PGW सभ्यता का आगमन हुआ, तब तक उनकी यह परम्परा स्थाई रूप ले चुकी थी- यही वह घटना है जिसके विषय में कहा गया है कि अपसराओं को न तो देवों ने और न ही असुरों ने पत्नी रूप में अपनाया.... अर्थात वे सर्व-सुलभ बनीं रहीं।

जयपुर अजमेर मार्ग पर लगभग तीस कि.मी. दूर इस प्रकार की वानर सुन्दरियों का एक पूरा गाँव है। जो प्राचीन काल के वानरों और उनकी प्रथा से जुड़ा प्रतीत होता है...... स्थान का नाम वानर सुन्दरी है। कृष्णावतार के समय ही 16000 गोपियों के रूप में अवतीर्ण हुई अपसराओं की कथा [18] से पता चलता है कि कृष्ण का सम्बंध गो नदी क्षेत्र से था, अपसराओं की बड़ी संख्याऐं उनकी एक जाति होने की धारणा की पुष्टि करती है। यमुना नदी के समीप कालेसर के आसपास हाथी/हस्ती, गज जाति का अस्तित्व था। इसके बहुत सारे प्रमाण है-

1. शिव के पुत्र गणेश, गजानन एवं गजमुखी है इन्होंने एक गजासुर को मारा था।

2. एक गजासुर कुवलयापीड़ का वध कृष्ण ने भी किया था।[19] कुवलयापीड़ हाथी नहीं अपितु हाथी टोटेम वाली गज जाति का व्यक्ति रहा होगा।

3. रुद्रों का निवास स्थान गजशैल था जो मेरु के दक्षिण का पर्वत था।[20]

4. शिव का एक नाम गजचर्म निवासी है।[21]

5. शूर (किसी श्रूघन नेता) के पुत्र का नाम गदवर्मा।

6. विष्णु की कौमोकी (कुमुद-कोविद-गोविन्द) गदा। कुमुद एक वानर का नाम; विष्णु का एक पार्षद; एक नाग का नाम; एक यक्ष का नाम;

7. कुश द्वीप, गोमेद द्वीप और शल्मली द्वीप के पर्वतों का नाम।[22]

8. कृष्ण के भाईयों या वासुदेव के पुत्रें का नाम गद[23]

9. स्वफलक की स्त्री; अक्रूर की माता का नाम गन्दिनी[24]

10. कालेसर के दक्षिण में खादर क्षेत्र में हथिनी कुण्ड़ प्रसिद्व है।

11. जाम्बवान और केसरी दोनों के पिता का नाम गदगद था। जाम्बवान जमुना नदी क्षेत्र के निवासी का द्योतक है, वह ऋक्ष भी है और कृष्ण कथा के अनुसार गुफामानव भी, सम्भवत इन्हें ही गुह्य कहा गया हो। इसके एक पुत्र का नाम पिशाच भी था।

हाथीबड़कला वन अथवा अंजन पर्वत से निकलने वाली बरसाती नदी गेजरा राव-यह गज और केसरी वानर दोनों से ही साभ्य रखती है। केसरी ने अंजना को हाथियों से इसी वन में बचाया था। केसरी वानर का क्षेत्र प्रभाष क्षेत्र के निकट था, वह शंखशबल नामक हस्ति से प्रभाष क्षेत्र में लड़ता है।

यमुना नदी से लगभग आठ कि.मी. दूर पूर्व में गजपुर (एक अन्य बरसाती नदी बादशाही बेग के तटों पर, हाथी बड़कला वनों के पश्चिम-दक्षिण में)

गोरी, गुजरिया या गूजरी जैसे शब्दों का स्त्री के लिए प्रयोग हमें सर्वप्रथम कृष्ण सम्बंधी कथाओं में मिलता है। गजगामिनी अथवा हस्तिनी जैसे अलंकारों की व्युत्पत्ति के पीछे जातीय नाम गज ही है। जिस प्रकार निवास स्थान के लिए "नगर" शब्द की उत्पत्ति नागजाति से, "पुर" शब्द की उत्पत्ति पुरुजनों से हुई उसी प्रकार "गाँव" या "गढ़" शब्द के पीछे गज या गन्धर्व जाति रही होगी।

यह भी बहुत सम्भव है कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में प्रमुख जाति गुर्जर और प्रदेश का नाम गुजरात गौ नदी (सरस्वती) के इन गजों से सम्बंधित हो। सरस्वती नदी का एक नाम पलक्षा था और तटीय क्षेत्र में निवास करने वाले पलक्षवानों का द्योतक शब्द, लक्ष्मण, इन गुर्जरों के प्रथम पुरुष के रूप में वर्णित है। प्रतिहार शब्द प्रस्त्रवण/माल्यवान/मसूरी पर्वतों से निकलने वाली प्रस्त्रा नदी (इसी सरस्वती) का द्योतक है। यूँ गज क्षेत्र, नदी के मैदानों में उतरने के साथ ही पड़ता था अत: गज/ गुर्जर एक प्रकार से नदी के प्रतिहारि (द्वारपाल) ही थे। यह भी हो सकता है कि इस क्षेत्र की नदी दृष्द्वती के कारण द्वारका अथवा द्वारपाल जैसे नाम पड़े। वैसे यह क्षेत्र प्रभाष वसुओं का तो था ही। यहाँ यक्षों का भी निवास था। कुबेर की अलकापुरी का एक नाम प्रभा था। प्रभा सूर्य पत्नी थी, प्रमथ, 36 करोड़ राक्षस शिवगण है जो क्रूर पशुओं वाली मुखाकृति और दुष्ट दृष्टि वाले हैं। ये नंदी के नेतृत्व में असुरों से लड़े और कृष्ण ने इन प्रमथों को बाणासुर की राजधानी में परास्त किया था ये ही प्रचेता, मरुदत, पिशाच, बर्हि अप्सरस, नाग, गज हस्ति आदि हैं सुद्युम्न, पुरुरवा और ऐल का प्रतिष्ठान/प्रयाग यही जगाधरी-सहारनपुर क्षेत्र था। "प्रति" एक स्थानवाचक शब्द है इस क्षेत्र के अराध्य देवों का प्रभु शब्द प्रभाष से ही निकाला है। कुशद्वीप (कौशिकी नदी क्षेत्र) के एक खण्ड का नाम प्रभाकर, उपरिचर वसु के पुत्र प्रात्यागृह, राक्षस प्रहस्त, ब्रज के पुत्र प्रतिबाहु भी प्र से सम्बंधित हैं।

द्वारका और कुशस्थली

पीछे हम द्वारका को जगाधरी के आसपास कह आये हैं। यह दृष्द्वती नदी का क्षेत्र ही था। यूँ भी स्रुघन क्षेत्र को कान्यकुब्ज का द्वार कहा गया है। कौशिकी भी हरियाणा की प्रमुख नदी है। इसका उदगम उन दिनों गंगा-यमुना के बीच शिवालिक पर्वतों से होता था...... अर्थात क्रौचद्वीप से अगला.... कुशद्वीप था। इसके चारों ओर घृत समुद्र था। कुशद्वीप जो कौशिकी नदी के क्षेत्र को कहा गया है बहुत कुछ जगाधरी और उसके दक्षिण-पश्चिम का प्रदेश था। इसके चारों ओर का समुद्र घृत घृताची अपसराओं के क्षेत्र से मिलता है। घृताची को अपसरा नहीं अपितु एक सम्पूर्ण जाति मानना होगा.... इसके प्रमाण भी हैं।

कुशवती-अपसराओं की बर्हि जाति की जननी[26]

घृतस्थला......एक अपसराओं का नाम

घृताची[27] व्यास के पुत्र शुकदेव की माता।

चयवन वंशी प्रमिति के पुत्र रूरू की माता।

भारद्वाज के पुत्र द्रोण की माता।

महोदय नरेश कुशनाभ की 100 कन्याओं की माता।

रुद्राश्व के दस पुत्र दस पुत्रियों की माता

इन सभी का समय अलग-अलग है किन्तु ये घृताची अपसराऐं वानरियाँ ही थीं। घृताची अपसरा का एक नाम कपिंजली भी थीं। कपि विष्णु का नाम भी है वानर अथवा कपि टोटेनिक जाति अपने प्रथम आराध्य देवता विष्णु को कपि कहती होंगी बहुत सम्भव है कि कपिल और कांम्पिल्य इन्हीं कपियों अथवा इनके स्थान से सम्बंधित रहे हों। गज, घृत अथवा गद.... शब्द कुश सम्बंधी शब्दों से जुड़े मिलते हैं। काम्पिल्य को कपि जनों ने और हस्तिनापुर को हस्ति अथवा अज जनों ने बसाया होगा। कपि जन भी पिशाचों के अन्तर्गत ही थे।[28]

महोदय नरेश कुशनाभ ने घृताची अप्सरा से 100 कन्याएं उत्पन्न की थी।

कुशाम्बु... कुशिक के पुत्र और गाधि के पिता थे गाधि या गाद का शाब्दिक अर्थ कीचड़ है जो इस क्षेत्र के कतई अनुरूप था।

गुजरात स्थित आनर्त राज्य की राजधानी कुशस्थली और उसके समीप द्वारका काफी बाद में बसी होगी कथन है कि रैवत की कुशस्थली को यक्षों ने ध्वस्त कर दिया था[29] अब यक्षों का निवास तो जगाधरी सहारनपुर क्षेत्र में यमुना नदी प्रदेश था अत: कुश स्थली इसी क्षेत्र में कोशिकी नदी प्रदेश में होनी चाहिए-''गिरनार पर्वत'' श्ब्द का मूल भी गिरि नदी क्षेत्र में गैरिक /गौरिक-गौरी है...यही रैवतक भी है। रैवत के बाद यहाँ यादवों का अधिकार हो गया था।

यादव जन-युगन्धर हैं युगन्धर....जींद, जगाधरी...... सहारनपुर, देहरादून का प्रदेश था।

सहायक ग्रंथ, निबंध एवं पाद टिप्पणियाँ

1. भागवत. गरुड़. वामन. ब्रहम. लिंग. अग्नि. वायु. देवी भागवत. मार्कण्ड़ेय. कूम. विष्णु. में सप्तद्वीपों का क्रम-जम्बू, पलक्ष, शालमली, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर है। जबकि मतस्य. वराह., स्कंद. पद्यम, महाभारत और सिद्वान्त शिरोमणि में दूसरे नम्बर पर शाकद्वीप बताया गया है- **एस. मुफ्फर अली-''ज्योग्राफी ऑफ पुराणाज''** पृ. 28-29 तालिका
2. वही,
3. **वासुदेव शरण अग्रवाल, ''भारत सावित्री''** खण्ड़-2, दिल्ली 1985, पृ. 126
4. **आप्टे,** पृ. 353; **राणाप्रसाद शर्मा,** पृ. 155
5. **राणाप्रसाद शर्मा,** पृ. 158
6. वही, पृ. 324
7. टीटनों के जोड़े CRONUS-Rhea: OCENUS (PONTUS)- Tethys; HYPERION-Thea (Euryphassa): EUREMEDON (IAPTAS)- Mnemosyne: जिन की सन्तति समूचे यूनान में फैलीं..URANUS (आकाश देवता) और Geae की संतानें कहीं जातीं हैं।- **राबर्ट ग्रीव्स ''द ग्रीक माईथ्स''**
8. राणाप्रसाद शर्मा, पृ. 323

9. वही, पृ. 158
10. वही,
11. वही, पृ. 136
12. वही, पृ. 147-148
13. वही, पृ. 145-146
14. वही, पृ. 551
15. वही, पृ. 25
16. वही,
17. वही, पृ. 83
18. वही, पृ. 25
19. वही, पृ. 128
20. वही, पृ. 145
21. वही,
22. वही, पृ. 117
23. वही, पृ. 147
24. वही, पृ. 152
25. वही, पृ. 335
26. वही, पृ. 121
27. वही, पृ. 162
28. कपि अज और शण्ड नाम के दो पिशाचों का पिता था जो पूर्व जन्म का कूष्मांड पिशाच था। वही, पृ. 83 इससे कपि जाति के वानर, पिशाच और अज जनों के होने की धारणा बनती है। कपि रैवत के एक पुत्र का नाम है।- वही, इससे पता चलता है कि कपि जनों का प्रसार रैवत पर्वत लोहित्य तक था..... शिव कपाली है और दुर्गा भवानी कपर्दिनी अथवा कपालिनी। हनुमान कपि है रूद्रावतार भी अत: शिव कमोवेश कपिओं से संबंधित व इनके आराध्य हुए।
29. उल्लेख है कि रैवत पर कुशस्थली को मैद वानर के भाई द्विविद ने बलराम के समय उजाड़ा था। इससे यक्षों और वानरों में साम्य का पता चलता है और यह भी कि राम और कृष्ण के काल में मात्र एक पीढ़ी का ही अन्तर है।

अध्याय – 7

सूर्य और चन्द्रवंश ; इतिहास और ऐतिहासिक भूगोल

कालिन्दी उस यमुना नदी का एक नाम है जिसके किनारे गोकुल में कृष्ण का बचपन बीता था। काली पार्वती का एक नाम है। विप्रचित्ती दानव की पुत्री काली से उत्पन्न हजारों कालिकेय दानव देवासुर संग्राम में बलि की ओर से वसुजनों के विरूद्ध लड़े थे[1] काल भैरव शिव का एक अनुचर था। कालकंटक, कालनाथ स्वयं शिव के नाम हैं कालिय नाग गरूड़ के ड़र से ब्रज के समीप कालिन्दी नदी के एक सर में आ छिपा था। मान्धाता के जमाता सौभरि ऋषि के शाप के कारण गरूड़ यहाँ नही आ सकता था।[2] कृष्ण ने इस कालिय नाग का दमन कर उसे समुद्र में भेज कर लोगों को भय मुक्त किया।[3]

कालिन्दी, कालिन्द पर्वत से निकली यमुना नदी का नाम है।[4] किन्तु आज कालिन्दी नाम का कोई पर्वत यमुना और उसके किसी सहायक नदी का उदगम् पर्वत नही है। मैदानों में उतरने से पूर्व यमुना नदी हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले की सीमा पर लालधांग पर्वतमाला के पूर्व में करोंदी क्षेत्र से गुजरती हुई कालेसर आती है। लगभग डेढ़ किलोमीटर संकरी इस करोंदी घाटी के पूर्व में बरकला पर्वत और यमुना पार पश्चिम में लालधांग पर्वत है। इस करोंधी घाटी को पुराणों में क्रोंचरन्ध्र कहा गया है।

पुराणों में कहा गया है कि हिमवान (हिमालय) के वैराज पितृगणों की कन्या मैना से दो पुत्र मैनाक और क्रौंचरन्ध्र थे।[5] हिमवान तो शिवालिक पर्वतमाला थी किन्तु इसके नाम यमुना नदी के पश्चिम में मैनाक[6] और पूर्व में गंगा यमुना दोआबे में क्रौंच थे। मेरे विचार से बरकला पर्वत माला के अमसोट शिखर 957 मीटर[7] से निकली करोंदी वाला नामक पहाड़ी नदी जो करोंदी में यमुना नदी से मिलती है को ही कालिन्दी कहा गया है और अमसोट शिखर अवश्य कालिन्द पर्वत रहा होगा। करोंदी वाला नदी और करोंदी घाटी तथा इसके दक्षिण का क्षेत्र वड़कला/कला/काला/कारा है। करोंदी से सहारनपुर में फैजाबाद तक यमुना की शाखा का नाम खारा या कारा है... यही तब कालिन्दी थी। यमुना का अस्तित्व तब कभी-कभी वर्षा ऋतु में रहता था। तब सीता सरस्वती नदी उत्तर से आकर कैलाश (वर्तमान कालेसर) के उपरान्त पश्चिमवाहिनी हो जाती थी... कारा-कालिन्दी तब और सम्भवत: कभी कभार स्वतन्त्र रूप से बहती रही होगी। वर्षा काल में सरस्वती और कारा-कालिन्दी अन्य नदियों के साथ एक रूप हो जाती थी। उत्तर के पर्वतों से आने वाला अत्याधिक अतिरिक्त पानी, पश्चिम में सरस्वती नदी और दक्षिण में पूर्व के कारा कालिन्दी में प्रवाहित होने के साथ-साथ इन नदियों के तटों को तोड़ता-लांघता दक्षिण में बढ़ता, यहां एक विशाल सागर जैसी झील का निर्माण कर देता था यही कैलाश/कालेसर के दक्षिण का मानसरोवर था... राक्षी नदी क्षेत्र में यह राक्षस झील थी... इस अतिरिक्त जल की निकासी ने धीरे-धीरे यमुना नदी का रूप ले लिया, वर्षा काल बीत जाने पर भी काफी लम्बे समय तक मानसरोवर का अस्तित्व बना रहता था और ग्रीष्म ऋतु में पानी अपेक्षाकृत कुछ छोटे तालाब/झीलों के रूप में बना रहता था संयुक्त रूप से इन्हें ही बिन्दुसर झीलें कहा गया।

अतिरिक्त पानी से किसी सागर जैसी झील का बनना और सरस्वती के तटों को लांघ कर इस क्षेत्र में भर जाना अथवा एक अतिरिक्त नदी (यमुना) के रूप में बहने लगना, इस क्षेत्र के निवासिओं के लिये मृत्यु सम कष्टकारी था, दूसरी ओर सरस्वती और इस क्षेत्र की अन्य नदियों के बहाव मार्ग में अनिश्चितता और अनियमितता भी थी। सरस्वती नदी कभी

अपना बहाव मार्ग बदल कर यमुना नदी के रूप में बहने लगती तो कभी पुनः अपने प्राचीन मार्ग पर लौट जाती... कुल मिलाकर कालेसर, यमुनानगर के दक्षिण के प्रदेश में निवास करना यमलोक में निवास करना था। यही नरकासुर का नरक भी था।

ऋक्ष पर्वत गंगा-यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वतमाला, जिसका यमुना के समीप पश्चिम भाग करोंदी/क्रौंच पर्वत था। इससे निकलने वाली राक्षी नदी के तटों पर तब राक्षस थे। मस्कारा नदी का नाम मतस्यों और मकरों की मतस्यकारा रहा होगा। कारा या खारा नदी का प्रदेश कारापथ था। दृष्द्वती नदी के एक प्रदेश का नाम ही कभी दशार्ह अथवा दशार्ण था। इसी दशार्ह को हम दशरथ के नाम में पाते हैं और दशार्ण का अधिपति दशार्णन कहलाता था रावण का नाम दशानन इसी दशार्णन का अपभ्रंश है वरना तो रावण दस नेत्रों वाला नहीं अपितु बीस नेत्रों वाला लिखा जाना चाहिये। रावण का भाई खर खारा/कारा नदी से और बहन सूपनखा शूर/श्रूघन क्षेत्र के द्योतक है। कैलाश पर्वत/कालेसर और उसके आसपास का प्रदेश ही कभी पितृों/पिशाचों का विरज था, प्रदेश का नाम विरज, पुरूष वैराज और स्त्रियाँ विरजा कहलातीं थीं। इस प्रदेश के मूल निवासी यादव जन जिन्हें शूर वंशी कहा गया है श्रूघन को छोड़कर जब मथुरा में आये तो विरज शब्द का अपभ्रंश ''ब्रज'' अपने साथ ले आये। विरज/ब्रज जनों का यह पलायन द्वारका के समुद्र में डूब जाने के बाद हुआ। मूल द्वारका गुजरात के सौराष्ट्र तट पर नहीं बल्कि कान्यकुब्ज का द्वार कहे जाने वाले शूर-राष्ट्र/श्रूघन में सरस्वती नदी के किनारे वहां थी जहां सरस्वती पर्वतों से उतरने के उपरान्त पश्चिम वाहिनी होती थी। गुजरात के सौराष्ट्र में तो सरस्वती नदी है ही नहीं और कभी रही होगी, इसकी सम्भावना नहीं है। यदि तर्कों द्वारा सरस्वती को सौराष्ट्र तट तक खीच लायें तो वहां सरस्वती नदी दक्षिण वाहिनी ही रही होगी... जबकि ग्रन्थों में कहा गया है कि द्वारका में सरस्वती पश्चिम वाहिनी थी।[8] जगाधरी से पूर्व की कोई मूल बस्ती द्वारका थी जो सरस्वती नदी की अनियमितता अथवा बाढ़ से बने सागर में बह गई... डूब गई।

यमुना तट का यह क्षेत्र अजः गज अथवा हस्तियों का भी मूल प्रदेश था। ऋग्वेद 7.18. 18-19 13.3 के अनुसार सरस्वती नदी प्रदेश के सुदास पैजवन ने यमुना तट पर अज, शिग्रु और यक्षुव जनों को पराजित किया था। अजों का यह प्रदेश, भरतों के इस प्रदेश में प्रसार से पूर्व अजनाभ खण्ड था... अजमीढ़ था। पश्चिम में सरस्वती नदी के उत्तरी तटों पर पुरू जनों का पुरूमीढ़ था तो यमुना क्षेत्र में कुछ दक्षिण में यदु जनों का द्विमीढ़ था। मुजफ्फरनगर जिले में काथा नदी का क्षेत्र क्रथ था तो सिनीवाली/केसिनीवाली नदी (?) अथवा कौशिकी नदी का प्रदेश कैशिक...। यमुना क्षेत्र के उपरान्त काथा नदी का क्षेत्र जीत कर ही सुदास पैजवन कृतवीर्य/क्रथवीर कहलाया। पुराणों में कृतवीर्य अर्जुन सहत्रबाहु प्रसिद्ध है यह वहाँ हैहय वंशी है अर्थववेद 5.19.1 के ''**भृगु हिंसित्वा सृज्जया वीतीहव्या पराभवन**'' से हमें पता चलता है कि पुराणों का वीतीहोत्र असल में सृज्जय वंशी था। पुराणों में इस सृज्जय का अपभ्रंश हैहय है। अतः सुदास पैजवन ही सहत्रबाहू है और आर्जुनायन प्रदेश का विजेता होने के कारण ही उसे अर्जुन भी कहा गया है। ऋग्वेद का प्रसिद्ध दासराज संग्राम परूष्णी तट पर नहीं लड़ा गया अपितु परूष्णी नदी से यमुना नदी के पार तक लड़ा गया इस महासंग्राम में सुदास पैजवन ने अनु,द्रुहयु, यदु, पुरू, तुर्वशु, त्रित्सु, पक्थ, अलीना, भलना, विषानिन, शिवि, भार्गव, कौशिक, पृथु, अज, शिग्र, यक्षु, शिग्र, यक्षु, मतस्य आदि सभी जनों को पराजित किया था।[9] अज जनों ने तो यमुना तट से दक्षिण पूर्व में पलायन कर हस्तिनापुर बसाया।[10] सरस्वती नदी की अनियमितता, बाढ़ का प्रकोप और महाभारत काल में चित्रित धूसर मृदभांडों वाली

सस्कृति के इस क्षेत्र में प्रसार के कारण गज जन वर्तमान मथुरा और उसके दक्षिण में पलायन कर गये गुजरात, गुर्जर, गूजर शब्द इन्हीं गज/हस्ति जनों के प्रतीक है गुर्जरों अथवा गुजरों के साथ लगे अहीर शब्द के मूल में अहि शब्द है, कहने का अर्थ यह है कि यादव जन, जैसा कि विद्वान मानते आये है गुजरात से दोआबे की ओर कभी नहीं आये[11] बल्कि जगाधरी, जींद के अपने मूल प्रदेश से मथुरा और मध्य भारत की ओर गये थे। वे सहारनपुर मुजफ्फरनगर (और जगाधरी) जिलों में कभी बसे गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति के लोग थे और बाद में मध्य तथा पूर्वी भारत में जाकर उत्तरी काले- लाल मृदभांड़ो वाली संस्कृति के जनक हुऐ। समूचे श्रूघन और उसके आसपास बसे गैरिक मृदभांड़ों वाली सस्कृति के जनों का जीवन अन्य किसी संस्कृति के जनों की अपेक्षा काफी दुष्कर था... उनके एक शत्रु आदिम और अर्धसभ्य थे तो दूसरे शत्रु शिमला, सोलन की पहाड़ियों से उतरकर मैदानों में आ बसने वाले पृथु-अंगिरा-मान्धाता जन। टोटेमिक कबीलाई समाज में जातिगत और बस्तियों के आपसी संघर्षो के अतिरिक्त सरस्वती और अन्य नदियॉ भी उनकी शत्रु ही थी। अनिश्चित बहाव, बाढ़, और अतिरिक्त जल की निकासी न होने के कारण बनने वाली सागरनुमा झील... उनके लिऐ साक्षात प्रलय का तांडव ही था।

उपरोक्त सागर क्षेत्र में बसी जाति को ही ऋग्वेद में शिग्रु कहा गया है। शिग्रओं का प्रदेश श्रूघन था, शिग्रओं को सुदास पैजवन ने पराजित किया था। शिग्रुजनों, सगर और उनके शत्रु भोजों, तुंडीकेराओं आदि यादवों के विषय में हम आगे चर्चा करेगें।

मान्धाता और उसके वंशज

पुराणों में मान्धाता राम से सात पीढ़ी पहले का अयोध्या नरेश है मान्धाता-अम्बरीष-दिलिप-रघु-अज-दशरथ-राम। इनमें से दशरथ, मान्धाता और राम का उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है। दशरथ ऋ0 1.126.4 में वर्णित है।[12] मान्धातृ का वर्णन ऋ1.112.13 8.39.8 42.12 10.22 में आश्विनों के आश्रित और प्रत्यक्षत: किसी राजा के रूप में और ऋ 8.39.42 तथा 1.1.47 में नाभाक के वंशज एक राजर्षि के रूप में है जबकि गौपथ ब्रा0 1.2.10 और बाद में कहा गया है कि मान्धाता यौवनाश्व को कबन्ध आथर्वण के पुत्र विचारिन ने शिक्षित किया था।[13] अज का नाम यमुना तट की एक जाति के रूप में ऋ 7.18.18-19 और 13.3 में है जहां वे सुदास पैजवन के हाथों शिग्रु और यक्षुव जनों के साथ पराजित होते हैं।[14] राजा के रूप में राम का एक मात्र वर्णन ऋ 10.93.14 में दुशीम, पृथवान और वेन के साथ है।[15] किन्तु इतिहासकार एवं विद्वानों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि यहां दुशीम, पृथवान और वेन के साथ-साथ राम को भी असुर की संज्ञा दी गई है। आज और लगभग दो सहस्त्राब्दियों से भारतीय समाज, सभ्यता और संस्कृति तथा जनमानस के रोम-रोम में विष्णु के अवतार के रूप में बसे वाल्मिकी रामायण के राम दशरथी का इसके अतिरिक्त कोई अन्य वैदिक आधार नहीं मिलता। ऐसे में जन सामान्य की धारणाओं के अनुसार यदि मान ले कि यह राम रामायण का राम नहीं वरन कोई दूसरा राम रहा होगा तब रामायण के राम का वैदिक आधार क्या है, वेदग्रन्थ पुराणों से पहले लिखे गये थे..... दूसरी ओर ऋग्वेद 10.93.14 के इस असुर राम का इतिहास और भौगोलिक धरातल क्या है कयोंकि श्लोक के अनुसार पाँच सौ रथ अथवा अश्व जुतवाने वाले दुशीम, पृथवान, वेन और राम कोई छोटे मोटे राजा तो नहीं रहे होंगे। और यदि सम्भावना के विपरीत 10.93.14 का असुर राम रामकथा का राम दशरथी ही हुआ तब?

वैदिक युग के प्रारम्भिक कालों में "असुर" का प्रयोग नैतिक आचरण, वीर और दुर्धुर्ष

योद्धा के लिये किया गया है अर्थात ऐसा कार्य जो किसी वीर और दुर्धुर्ष व्यक्ति के लिये भी सम्भव न हो और कोई उसे कर जाये। ''असुर कार्य'' (महान) को करने वाला असुर कहा जायेगा।

ऋग्वेद में देवताओं को भी असुर की संज्ञा दी गई है-

वरूण, सूर्य, सविता, इन्द्र, मरूदगणों, ऋतुित्व, तवष्टा,[16] रूद्र, अग्नि, वैश्वानर अग्नि वायु, पूषा, पर्जन्य, वरूण, सोम को असुर कहा गया है।[17] यदि वैदिक साहित्य की सहायता से असुर शब्द का अर्थ करें तो असुरत्व बड़ा भारी सामर्थ्य वाला देवों में बलवान जल वृष्टि करने वाला शरीर का पतन न करने वाला प्राणों का रक्षक बलदायक परमात्मा की शक्ति से शरीरों की रचना करने वाला विश्वरूपक होकर असुर शक्तियाँ धारणा करने वाला होगा... और तो और ऋ 7.56.24 में अपने यहाँ असुर पुत्र अर्थात बलवान पुत्र की इच्छा, मरूदगणों से प्रार्थणा में की गई है।[18]

ऐसा लगता है कि इसके विपरीत अर्थो (दुष्ट, पापी, दुरात्मा आदि) में असुर शब्द का प्रयोग बाद में किन्तु पौराणिक साहित्य में हुआ। इसका अर्थ, जैसा कि विद्वान मानते हैं यह हो सकता है कि उर्पयुक्त देवतन्त्र ईरान अथवा तूरान की ओर से आया, जहाँ असुरों को देवता माना गया और वहाँ उनके विरोधी सुंर थे किन्तु भारत भूमि पर कुछ समय बाद, पौराणिक युग में स्थिती पलट गई...।

किन्तु वैदिक साहित्य में राम देवता नहीं है

ऋ 10.93.14 का असुर राम कोई वैदिक देवता नहीं है क्योंकि उसका नाम वैदिक देवतन्त्र के इन्द्र, मित्र, वायु, ऋजित्व, पर्जन्य, वरूण, नासत्य, दस्त्र, सविता, पूषा आदि देवताओं में है ही नहीं। राम यदि वैदिक देवता होता तो अन्य देवताओं की भांति वेदों में उसके नाम की असंख्यों ऋचाऐं होतीं। वह तो केवल एक ही जगह ऋ 10.93.14 में ही है... ऐसे में वह अवश्य कोई साधारण राजा है जो ऐसा महान कार्य कर गया, जिसके कारण उसे असुर की उपाधि मिली... यहीं नहीं बाद के पौराणिक साहित्य ने उसे हाथों-हाथ उठा कर अवतार की संज्ञा दे ड़ाली किन्तु वैदिक साहित्य में राम का वह असुर कार्य वर्णित नहीं है। रामकथा के अन्य पात्रों में सीता ऋ 4.57.4 में इन्द्र सवित्र की पत्नी और ऋ 4.57.4 से 9 में कृषि की अधिष्ठात्री देवी है।[19] पुराणों में सूर्यवंश के प्रथम पुरूष इक्षवाकु का उल्लेख ऋ 10.60.4 और अर्थर्ववेद 14.39.3 में है किन्तु मान्धाता, इक्षवाकु, सीता, राम किसी का कोई आपसी सम्बन्ध वैदिक साहित्य में नहीं मिलता..., अयोध्या, लंका, रावण, किसकिन्धा, सुग्रीव, हनुमान आदि वेदों में हैं ही नहीं। राम का वर्णन भी किसी ने भागते-भागते कर दिया। यह उस युग की बात रही होगी जब ऋग्वेद का अन्तिम मंड़ल लिखा जा रहा था। किसी अप्राश्चित घटना के चलते उत्पन्न हुऐ अराजकता, असमंजसता, विप्लव, अशांति, विद्रोह, संघर्ष और भागम भाग के युग में ऋग्वेद की ऋचाओं का लेखन बन्द हो चला था, जब जीवन बचाने और जीवन यापन के साधनों के लाले पड़े हो तो यह कार्य हो भी कैसे सकता था। समूची वस्तुस्थिती को समझने के लिये हमें थोड़ा सा पीछे लौटना होगा।

यह तो निर्विवाद है कि यदि राम, चाहे वह किसी भी रूप में हो यदि ऋग्वेद में वर्णित है तो वह एक वैदिक नरेश था अर्थात वह सरस्वती नदी प्रदेश में ही किसी स्थान का राजा रहा होगा।[20] क्योंकि ऋग्वेद में मूलत: सरस्वती नदी प्रदेश की घटनाओं का ही संकलन है। इस प्रकार राम वर्तमान अयोध्या का नहीं बल्कि उसमें प्रथम बस्ती के संकेत 700 ई0 पू0 से प्राचीन समय का राजा था। अयोध्या शब्द के मूल में अज जाति (जिसे सुदास पैजवन

ने यमुना तट पर पराजित किया था) और उस जाति का प्रदेश था, और अज यमुनानगर, सहारनपुर जिलों में यमुना क्षेत्र के निवासी थे।

अज-आद्रि उनका अजनाभखण्ड़ और अयोध्या

अज और आद्रि एक ही शब्द के पर्याय है, इनके अर्थ हाथी (गज), नाग (अहि) एवं पिशाच आदि है। कपि और पिशाच में कोई विभिन्नता नहीं, कपि वानर भी थे। पुलह की एक स्त्री कपिशा से सोलह जोड़े पिशाच पुत्र हुऐ और दूसरी स्त्री श्वेता से दस वानर पुंगव हुऐ।[21] दूसरी ओर कश्यप के क्रोधवशा से पिशाचों के सोलह जोड़े उत्पन्न होने का उल्लेख है और पुलह को मृगमंदा से ऋक्ष जाति के वानर पुत्र हुऐ। कश्यप के खशा से जनु और अज दो पिशाच पुत्र हुऐ थे। वानरराज शुक (इनके पुत्र ऋक्ष थे) की बहन ऋक्षा के पुत्र मार्जार और पिशाच आदि सोलह पुत्र हुऐ।[22] मार्जार बन्दरों की एक जाति है जो पुलह और हरिभद्रा की संतान थी।[23] पिशाच, वानर, अज, आद्रि, मतस्य आदि के एक ही होने का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण हनुमान के पिता केसरी वानर की दूसरी स्त्री आद्रि से उत्पन्न संतानों का विवरण है। आद्रि अपसरा शापवश बिल्ली (मार्जारी) के मुख वाली पिशाचिनी होकर यमुना नदी की अच्छोद सर में रहती थी, उपरिचर वसु चेदि राज से आद्रि के आद्रि नामक पुत्र हुआ जो अजमुख पिशाचों की एक जाति का राजा बना, यह अजगन्ध अथवा मतस्यगन्ध के रूप में मतस्यराज हो सकता है और यह भी हो सकता है कि इसी ने कथित मतस्य राज्य की स्थापना की हो भले ही वह मतस्य...मस्कारा नदी (< मतस्यकारा अथवा मच्छकारा) के क्षेत्र में बेहाट (सहारनपुर) के आसपास रहा हो। आद्रि/अज/गज में साम्य से हम अनुमान लगा सकते हैं कि अच्छोदसर जो कि यमुना नदी में आद्रि अपसरा का निवास स्थान था कालेसर के दक्षिण में हथनीकुंड़ रहा होगा।

पिशाच के मूल में पूषी शब्द है जिसका अर्थ है बिल्ली अथवा मार्जारी है। बिल्ली के टोटेम वाले ये पिशाच जन चित्रित धूसर मृदभांड़ों वाली संस्कृति के प्रसार के समय अपने मूल निवास स्थान सहारनपुर, जगाधरी के आसपास से निकल कर दक्षिण में विशेष कर यमुना नदी के पश्चिम में फैल गये... आज समूची हरियाणा भूमि पर माजरा से सम्बन्धित अंसख्यों ग्राम-कस्बे और बस्तियाँ हैं। इन्हीं में से कुछों ने आगे बढ़कर जयपुर अलवर के बीच के भूभाग पर जनपद कालीन मतस्य बसाया होगा। बिल्ली टोटेम वाले ये जन ही पुराणों में 60000 हजार बालखिल्य अथवा बाल्हीक जन कहे गये होंगें और ये ही बोली नदी क्षेत्र के बलि/बाली जन रहे हों। अजमुख पिशाचों और इनके राजा आद्रि जो कि उपरिचर वसु का पुत्र था, को मतस्य मानने के पीछे कारण भी है कि उपरिचर वसु की आद्रि अपसरा/पिशाचिनी से उत्पन्न पुत्री मछोदरी/मतस्यगन्धा को अजगन्धा भी कहा गया है। यह परासर मुनि से उत्पन्न पुत्र कृष्ण द्वैपायन की माता बनी थी और बाद में हस्तिनापुर नरेश की सत्यवती नामक स्त्री भी। पुराणों में मनु के पुत्र इक्षवाकु की सातवीं पीढ़ी में आद्र का नाम है:- मनु - इक्षवाकु - विकुक्षी - काकुस्थ्य - अनेना - पृथु - विश्वगश्व - आर्द्र, ऐसे में बहुत सम्भव है कि दशरथ के पिता अज, उनके पूर्वज आद्र और अयोध्या के मूल में अज और आद्रि रहे हों। अपने प्रसार के समय इक्षवाकु जन श्रूघन प्रदेश में अजों/आद्रिओं के स्थान पर आ बसे होंगे, वे श्रूघन क्षेत्र में इक्षुमती नदी से क्षेत्र से आये थे। **ओ० पी० भारद्वाज** ने इक्षुमती नदी की पहचान पंजाब-हरियाणा की सीमा पर बहने वाली घग्घर नदी से की है[24] **जयनारायण आसोपा** ने इक्षुमती नदी के प्रदेश को इक्षुवर्त बताते हुऐ उसे इक्षवाकुओं का मूल प्रदेश माना है।[25] **वी० के० माथुर** इक्षुमती नदी को इक्षुला, इक्षु और

चक्षुष्मती भी मानते है।[26] पटियाला जिले में घुरम को राम दशरथी की ननिहाल माना जाता है।[27] यदि सभी तथ्यों को मिलाये तो इक्षुमती/घघ्घर नदी का प्रदेश पुराणों का कथित दक्षिण कौशल था और सरस्वती नदी प्रदेश का सुदास पैजवन राम का नाना (!) हालांकि वैदिक साहित्य में कौशल अथवा दक्षिण कौशल और राम के नाना जैसा कुछ भी वर्णित नहीं है। तो भी दौनों के बीच इस सम्बन्ध का एक अच्छा प्रमाण यह है कि वशिष्ठ और विश्वामित्र दोनों ... राम की भाँति सुदास पैजवन के गुरू भी हैं। दूसरे, पुराणों में विश्वामित्र के बहकावे में आकर दक्षिण कौशल के सुदास द्वारा वशिष्ठ के पुत्र शक्ति की हत्या का उल्लेख है।[28] ऋ0 3.53.15-16 21-24 में वर्णन है कि सौदासों का सहारा लेकर विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को जीवित ही अग्नि में जलवा दिया था।[29] शक्ति की हत्या की समान घटना के आधार पर दक्षिण कौशल के सुदास को सरस्वती नदी प्रदेश का वैदिक सुदास पैजवन माना जा सकता है[30] ऐसे में दक्षिण कौशल के सुदास का नाती राम, सुदास पैजवन का नाती भी तो सिद्ध हो जाता है, इसके अतिरिक्त राम, सुदास पैजवन के बाद का उसका उत्तराधिकारी राजा भी सिद्ध होता है क्योंकि सुदास पैजवन के दौनों गुरू वशिष्ठ और विश्वामित्र राम के भी तो गुरू हैं। आगे इस विवरण के आधार पर कि राज्य बंटवारे में कुश को दक्षिण कौशल भी मिला था सिद्ध होता कि सरस्वती नदी प्रदेश में सुदास पैजवन की मृत्यु के उपरान्त उनके नाती राम ने उनका राज्य पाया था। ऐसे में श्रृंगवीरपुर नगर के मूल में सृज्जयवीरपुर नाम होना चाहिये, क्योंकि सुदास पैजवन को सृज्जयजनों का सर्मथन प्राप्त था।

वैदिक सुदास पैजवन ने अपने अभिषखकर्ता गुरू वशिष्ठ (ऐत्तरेय ब्रा0 7.34.9 8.24. 11 शांखायन श्रौत सूत्र 16.11.14) जो कि परूषणी तट पर हुऐ महान दासराज संग्राम में उसके सहयोगी और परामर्श दाता भी थे, के पुत्र शक्ति को अग्नि में जीवित जलवाया था। सृज्ज़यों ने ब्राहमणों पर अत्याचार किये (अर्थवेद 5.19.19) उनकी शाखा वीतीहव्यों ने भार्गवों को त्रस्त किया (अर्थववेद 5.18.10-11 5.19.1)[31] तो पुराणों का वह कथित अत्याचारी, नास्तिक और क्रूर वेन की कथा का आधार निसंसदेह सुदास पैजवन ही है।

दिवोदास और सुदास पैजवन का सम्बन्धा शत्रुता का है, पिता पुत्र का नहीं...

पैजवन को कोई व्यक्ति मानना या त्रित्सुवंशी दिवोदास का पुत्र मानना अथवा च्यवन आदि से मिलाना[32] गलत है वह तो काम्यक वन की पाँच वेन्य जातियों का संयुक्त नेता रहा होगा तभी उसे पैजवन कहा गया.. सुदास, सृज्जय देववात का नाती था-

द्वैनप्तुर्देववतः शते गोर्द्धारथ वधुमन्ता सुदासः । ऋ 7.18.22

और इस कारण उसे सृज्जयों का समर्थन प्राप्त होता है, वरना तो वह सृज्जय नहीं था. .. वह त्रित्सु दिवोदास के उपरान्त त्रित्सु सत्ता में आया अवश्य परन्तु यह उसका दायाद अधिकार नहीं था... दिवोदास का दायाद उत्तराधिकारी तो प्रर्तदन दिवोदासि (कौषितकि उप0 26.5) था और यदि उस समय तक प्रतर्दन किसी युद्ध में मर चुका था (काठक संहिता 21. 10 कौषिताकि उप0 3.1)[33] तो उसका पुत्र क्षत्रश्री था (ऋ 6.26.8)[34], कुल गुरू भारद्वाज जन प्रतर्दन और क्षत्रश्री के साथ ही वर्णित मिलते हैं सुदास पैजवन के साथ नहीं क्योंकि सुदास पैजवन न तो दिवोदास का पुत्र था और न ही त्रित्सु वंशी था।

त्रित्सुओं से सुदास पैजवन का सम्बन्ध तो मात्र शत्रुता का था। इस बात का संकेत दासराज संग्राम में मिलता है ऋ. 7.18.15 में कहा गया है **त्रुत्सु इन्द्र के बुरे मित्र व ज्ञानहीन लोग हैं वे इन्द्र से युद्ध करने लगे युद्ध छोड़ने की इच्छा से वह इस प्रकार भागे जैसे**

नीचे की ओर बहने वाला जल भागता है, बाधा उत्पन्न होने पर उन्होंने प्रयोग की सभी वस्तुऐं सुदास को दे दीं। ऐसे में अभी तक दिवोदास का पुत्र पौत्र अथवा वंशज समझे जाने वाले सुदास की गुत्थी और भी उलझा जाती है कि दासराज संग्राम का यह महान विजेता आखिर है कौन..?

यादव था सुदास पैजवन

ऋ 3.53.7 के आधार पर सुदास पैजवन यादव प्रतीत होता है क्योंकि वहाँ उसके वंशज भोज कहे गये हैं।[35] सृज्जय शब्द का अपभ्रंश हैहय है और वीतीहव्य उनकी शाखा है। वही उसके याजक अंगिरा वर्णित हैं। जब गुरू वशिष्ठ भार्गव, भारद्वाज, गौतम उनके राज्य से पलायन कर जाते हैं तब उसका अश्वमेघ यज्ञ अंगिराओं द्वारा ही सम्पन्न करवाया जाता है। ऋ. 3.53.7 में वर्णित है कि **''हे इन्द्र, यज्ञ करने वाले ये सुदास वंशी भोज नामक क्षत्रिय, उनके याजक अनेक अंगिरा गोत्रीय ऋषि एवं देवों में बलवान रूद्र के पुत्र मरूदत इस अश्वमेघ में गुरू विश्वामित्र को धन देते हुऐ मेरे धन को बढ़ावें।''**

गुरू वशिष्ठ से विग्रह के उपरान्त ब्राहमण वर्ग को त्रस्त करने वाले सुदास पैजवन का साथ देकर अंगिराओं ने वशिष्ठ के लिये आर पार के संघर्ष का मोर्चा खोल दिया था। वशिष्ठ उस समय पुरूवंशिओं की अनरण्य शाखा के सत्यव्रत के राज्य में उनके पुरोहित भार्गवों के यहाँ शरणागत था।

पुराणों में भले ही यह कहा गया हो कि दस्युओं को त्रस्त करने के कारण पुरूकुत्स के पुत्र का नाम त्रसदस्यु हुआ किन्तु ऐसा लगता नहीं कि त्रसदस्यु ने किन्हीं दस्युओं को त्रस्त किया। ऋ. 4.42.8-9 से हमें पता चलता है कि पुरूकुत्सानी ने बन्दी अवस्था मे पुरूओं का भाग्य लौटाने वाले पुत्र त्रसदस्यु को जन्म दिया, उस समय पुरूकुत्स भारी विपत्ती में था[36] हो सकता है कि वह सुदास पैजवन के विरूद्ध संघर्ष में उलझा हो, बन्दी हो या मर चुका हो।[37] ऋ. 1.63.7 में सुदास पैजवन और पुरूकुत्स के बीच संघर्ष का संकेत हैं।[38] हो सकता है उस समय वह नागों की रक्षा हेतु मोनेय गन्धर्वो से उलझा हो। जो भी हो पुरूकुत्स की मृत्यु के उपरान्त स्थिती बदली होगी, वे पुरूजन जो सुदास पैजवन और विश्वामित्र के विरोधी थे दासराज सग्राम में पराजित हुऐ किन्तु जो सुदास के समर्थक बन गये ब्राह्मणों ने उन्हें त्रिवृषण, त्रिधात्व, त्रय्यारूण, त्रिशंकू जैसे अपमान जनक नामों से पुकारा, त्रसदस्यु इन नामों में सबसे पहली कड़ी था।

पुरूओं की अनरण्य शाखा और ब्राहमणवाद के शिकार सत्यव्रत त्रिशंकु

पुरूराज्य ब्राहमणों के बढ़ते प्रभाव से त्रस्त था राजा अनरण्य को अपनी कन्या पदमा, दधीचि ऋषि के वृद्ध पुत्र पिप्लाद को ब्याह देनी पड़ी थी। गुरू पुरोहित अथवा ब्राहमणों को प्रसन्न रखने के लिये यह सब आवश्यक था वरना ब्राहमणवाद के उस चरम युग में...परिणाम भयानक हो सकता था।

अनरण्य को जिसका नया पुरू राज्य राक्षी नदी क्षेत्र के राक्षसों के निकट था, (राक्षी के राक्षसों के विषय में हम आगे बात करेंगे) राक्षस रावण ने पराजित कर मार ड़ाला। अपनी ब्राहमण विरोधी गतिविधिओं के कारण राजा त्रय्यारूण के पुत्र सत्यवृत को वशिष्ठ द्वारा राज्य से निष्कासित कर दिया गया। बाद में भी जब पिता की मृत्यु के बाद उसे वापिस लाकर राजा बनाया गया और उसने नास्तिकता तथा मूर्खता पूर्ण बातें नहीं छोड़ी (?) तो उसे वशिष्ठ ने गदद्दी से उतार कर चांड़ाल बना दिया और गदद्दी पर ब्राहमणों के समर्थक उसके पुत्र हरिश्चन्द्र को बैठाया। हरिश्चन्द्र ने न केवल ब्राह्मणवाद बल्कि उनकी वर्ण व्यवस्था का भी

समर्थन किया...कथानक चाहे जो भी हो अंगिरावंशी अजीगृत ऋषि के पुत्र शनुशैप की बलि का आयोजन किया गया कहा गया है कि हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व ने उसे उसके पिता के क्रय किया था जो भी हो **ब्राहमणवाद और वर्ण व्यवस्था के चरम युग में एक ब्राहमण की बलि...! ? और वह भी दूसरे ब्राहमण द्वारा...! ?**

ऐत्तरेय ब्रा0 7.17 ; शांखायन श्रौत सूत्र 16.11.2 में शुनशैप को आजीगृत कहा गया है और काठक संहिता 19.11 के अनुसार अजीगृत अंगिरस कुल का है। ऐत्तरेय ब्रा0 7. 16.1 शांखायन श्रौत सूत्र 15.21.4 के अनुसार वशिष्ठ ने शुनशैप के यज्ञ में ब्राहमण (होता) का कार्य किया था [39] भार्गव जमदग्नि भी इस यज्ञ में अधवर्यु थे।[40] इस बलि के आयोजन का कारण हरिश्चन्द्र का जलोदर रोग और वरूण देवता के कोप ऐत्तरेय ब्रा0 7. 13-18 शांखायन श्रौत सूत्र 15.20.1 16.11.2[41] से बचाना नहीं था। अपितु ऐसा करके वशिष्ठ और भार्गव...सुदास पैजवन तथा उसके गुरू विश्वामित्र और अश्वमेघ यज्ञ में उसके याजक अंगिराओं को नीचा दिखना चाहते थे। शुनःशैप, शुनोलागूल और शुनपुच्छ, तीनों आजीगृत भाईयों के नाम है, नाम का अर्थ अपमानजनक है... कुत्ते की पूँछ...! यह सम्भव है कि सुदास पैजवन और विश्वामित्र की नीतिओं के समर्थक सत्यवृत को चांड़ाल घोषित किये जाने के समय ही अजीगृत के इन तीनों पुत्रों को भी चांड़ाल घोषित कर दिया गया हो और जिस प्रकार सत्यव्रत को त्रिशूंक नाम दिया गया... अजीगृत के पुत्रों को भी शुनशैप, शुनोलागूल और शुनपुच्छ जैसे नाम दिये गये हों... बहुत सम्भव है कि पुरू राज्य में सत्ता के विरूद्ध ब्राहमणों का षड़यन्त्र रक्तपात से भरा रहा हो... जिसमें हाथ आये मुख्य दोषियों को चांड़ाल घोषित कर बलि का प्रायोजन किया गया।...

किन्तु सत्यव्रत भाग निकलने में सफल हुआ...सुदास पैजवन के क्षत्रिय गुरू विश्वामित्र ने समय पर पहुँच कर यज्ञ विध्वंस कर दिया... उसने शुनशैप को बचा कर उसे अपना देवराट नामक पुत्र बना लिया...। वशिष्ठ तो जान बचा कर भाग गये... हरिश्चन्द्र-रोहिताश्व आदि विश्वामित्र के हाथों में पड़ गये... जमदग्नि की हत्या सम्भवतः इसी समय हुई... वशिष्ठ के भी बहुत से पुत्र-पौत्र मारे गये... किन्तु शक्ति जीवित पकड़ा गया... पुराणों में सत्यवादी हरिश्चन्द्र की कथा काफी मर्म भेदी है किन्तु उसके पिता सत्यव्रत को उसके सामने चांड़ाल बनाया गया था... पिता के संघर्ष में पिता के साथ न खड़े रहना... सत्ता के लिये हरिश्चन्द्र के लोभ को दर्शाता है और यह भी कि सत्यव्रत के विरूद्ध ब्राहमणों के षड़यन्त्र में वह शामिल रहा हो[42] तभी तो विश्वामित्र के समर्थक सत्यव्रत को वशिष्ठ ने चांड़ाल बनाया, बदले में विश्वामित्र ने वशिष्ठ के समर्थक हरिश्चन्द्र को चांड़ाल का भी दास बना दिया, वरना वर्ण व्यवस्था के उस चरम युग में जब चांड़ाल ग्राम-बस्तियों से बाहर निवास करते थे, जीवन यापनं के लिये ग्राम-बस्ती वासिओं की दया पर निर्भर रहते थे... लोहे के आभूषण पहनते... और बिना लाठी की ठक ठक किये ग्राम के अन्दर नहीं घुस सकते थे... उस युग में एक चांड़ाल अपने लिये दास क्रय करने के साधन, साहस और अधिकार कहां से लाया? वशिष्ठ ने विश्वामित्र के समर्थक शुनशैप को बलि चढ़ाना चाहा था बदले में विश्वामित्र ने वश्ष्ठि के पुत्र शक्ति की ही बलि दे दी..., शक्ति को अग्नि में जिन्दा जलवा दिया गया!!! सत्यव्रत को विश्वामित्र ने दोबारा सत्ता पर बैठा दिया...!

वशिष्ठ-सुदास पैजवन विग्रह के कारण

वशिष्ठ, सुदास पैजवन के अभिषेककर्ता और गुरू थे, सहयोगी और सलाहकार थे फिर वह कारण, जिनको लेकर सुदास और वशिष्ठ में विग्रह हुआ, और वशिष्ठ को हटा कर

सुदास ने परूषणी नदी के दासराज संग्राम में पराजित जनों के नेतृत्वकर्ता विश्वामित्र कुशिक को अपना गुरू बना लिया, छोटे-मोटे नहीं रहे होंगे। ब्राहमण, गुरू अथवा पुरोहित का राज्यकाज में बढ़ता हस्तक्षेप एक कारण हो सकता है किन्तु मेरे विचार में दूसरा कारण बड़ा था। सुदास पैजवन से पूर्व का समूचा इतिहास राजाओं का नहीं अपितु छोटे-छोटे कबीलाई नेताओं का है मुदगल, वर्ध्याश्व, दिवोदास इत्यादि अपेक्षाकृत थोड़े से बड़े किन्तु कबीलाई नेता ही थे। सुदास पैजवन सच्चे अर्थो में एक राजा था... राजा नहीं, अपितु सम्राट था उसने अपने भाई वृन्द यादवों को ही नहीं अपितु अनु, द्रुह्यु, पुरू, तुर्वसु, मतस्य, भार्गव, वसु-कौशिक आदि सभी जनों को पराजित किया। पक्थ, अलीना, भलनास विषनिन, शिवि आदि विदेशी आक्रमणकारियों को रोका। त्रित्सुओं को सत्ता से उखाड़ फैंका...। भारतीय इतिहास में वह पहला था जिसका साम्राज्य परूषणी नदी से यमुनापार तक फैला, सब से बड़ा था, और यदि उसका साम्राज्य इतिहास में सबसे बड़ा पहली बार था तो इतने बड़े सम्राज्य की बड़ी और ढ़ेर सारी समस्याऐं भी तो पहली बार ही थीं। इतने बड़े साम्राज्य में फैली असंख्यों कबीलाई जातियों को व्यवस्थित करना, उन पर शासन करना, उनकी भलाई, न्याय व्यवस्था, आन्तरिक विद्रोहों की सम्भावना, बाहरी आक्रमणों से रक्षा आदि सभी के लिये आवश्यकता थी क्षत्रिय कार्यों को बढ़ावा देने की। एक बड़ी किन्तु व्यवस्थित और स्थाई सैन्यशक्ति की। और इस सबके लिये आवश्यक था एक क्षत्रिय गुरू और सलाहकार। जबकि वशिष्ठ ब्राहमण था, पुरोहित था मेरा विचार है वशिष्ठ इस बड़े समाज को व्यवस्थित करने के लिये नई मानव संहिता के नियमों में वर्ण व्यवस्था को वंशानुगत करना चाहता था। हालांकि वर्ण व्यवस्था के सभी कारक समाज में पहले से ही मौजूद थे किन्तु वे वंशानुगत नहीं थे... कर्म पर आधारित थे। क्षत्रिय कार्यों की देख रेख के लिये रखा गया नया गुरू विश्वामित्र एक क्षत्रिय होने के नाते वह ब्राहमणवाद को बढ़ावा देने के वाली इस प्रकार की व्यवस्था के खिलाफ था। सुदास जिसके लिये इस प्रकार की व्यवस्था प्रथम आवश्यकता कतई नहीं थी धीरे-धीरे विश्वामित्र का समर्थक बनता गया। पहले राजा ही अपने कबीले-समाज अथवा जाति के लिये पुरोहित की भूमिका निभाता था, वह मंत्रों, प्रार्थनाओं, ऋचाओं की रचना भी करता था, बाद में यह कार्य राजपरिवार का ही कोई अन्य सदस्य भी करने लगा। क्षत्रिय विश्वामित्र कुशिक, पुरोहित, गुरू, सलाहकार और वैदिक ऋचाओं का लेखक बना, किन्तु नई व्यवस्था कर्म व योग्यता पर आधारित वर्ण व्यवस्था पर रोक लगाती थी। इस विषयवस्तु पर कई बार वाद-विवाद भी हुआ होगा। जिसमें राजा ने विश्वामित्र का पक्ष लिया। विवाद इतना बढ़ा कि वशिष्ठ को सुदास पैजवन का राज्य छोड़ कर जाना पड़ा या वे निष्काषित किये गये कुछ कहा नहीं जा सकता। बात यदि यहीं तक रहती तो इतिहास की भीषणतम और भयावह घटना से बचा जा सकता था।... निष्काषित किये गये अथवा राज्य छोड़कर गये वशिष्ठ को कहीं शरण नहीं मिल सकी।[43] क्योंकि सभी पड़ोसी राजा या जातियाँ या तो सुदास पैजवन द्वारा पराजित थी या उसके प्रभाव में थीं, या फिर सुदास पैजवन की देखा देखी ब्राहमण और वर्ण व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह की भूमिका लगभग सभी जगह बन रही थी। ऐसे में भार्गवों के यहाँ शरणागत वशिष्ठ ने सत्यव्रत के विरूद्ध षडयन्त्र कर उसे सत्ता से उखाड़ फैंका... अतत: जिसकी परिणति वशिष्ठ के पुत्र शक्ति की हत्या में हुई। जमदग्नि ऋषि भी मारे गये। इस प्रकार भार्गव और वशिष्ठ जन भी सुदास पैजवन के विरूद्ध ऐके में उसके विरोधी सम्वर्ण से आ मिले। सुदास पैजवन द्वारा राजच्युत किया गया प्रतर्दन दिवोदासि और उसके कुलगुरू भारद्वाज जन भी उस समय सम्वर्ण

के पास दोआबे में थे। रक्षों-भरतों-शैव्यों-अजों- शिग्रुओं आदि ने भार्गवों, भारद्वाजों, वशिष्ठों आदि के नेतृत्व में सुदास पैजवन पर आक्रमण किया... सम्वर्ण ने सुदास पैजवन को पराजित कर मार ड़ाला[44] यही वह स्थान है जहाँ इहितास आकर चुप हो जाता है।

पीछे हमने कहा है कि यदि दक्षिण कौशल का सुदास सरस्वती नदी का प्रदेश का सुदास पैजवन ही था जैसा कि शक्ति की हत्या की समान घटना और वशिष्ठ और विश्वामित्र दो समान गुरूओं के आधार पर सिद्ध होता है तो दक्षिण कौशल के सुदास का नाती राम... सुदास पैजवन का नाती भी तो हुआ। और उसका उत्तराधिकारी भी, ऐसा मानने का कारण यह है कि परस्पर विपरीत विचारधाराओं वाले और आपस में शत्रु ये दौनों गुरू राम को भी विरासत में मिले थे, हालांकि रामकथा में दौनों के बीच शत्रुता या वैमनस्य जैसा कुछ नहीं झलकता। सुदास पैजवन की मृत्यु के बाद उसके गुरू विश्वामित्र का परम कर्तव्य बनता है कि वह सुदास पैजवन के योग्य उत्तराधिकारी को गद्दी पर बैठाये। किन्तु वैदिक साहित्य में उसके किसी पुत्र का उल्लेख नहीं है... तब योग्य और निकटतम उत्तराधिकारी की यही खोज विश्वामित्र को राम दशरथी तक ले आई... यहाँ आकर घटनाचक्र राम कथा से जुड़ता है।

भरतों, शैव्यों, रक्षों, शिग्रु (सगर), त्रित्सु (प्रर्तदन), वशिष्ठ, भार्गवों, भारद्वाजों आदि का संयुक्त सैन्य दल बचे सृज्जयों और उनके सहायक वीतीहव्यों, भौजों, आदि को कुचलने के लिये आगे बढ़ा। उन्होंने एक अन्य सृज्जय प्रमुख सृज्जय सोमक पर घेरा ड़ाल दिया। विश्वामित्र ने राम को साथ लेकर एक चाल चली। उन्होंने राक्षी नदी क्षेत्र के राक्षसों के अग्रिम सैन्य सन्निवेस पर आक्रमण किया, ताड़का और सुबाहू मारे गये, राम ने मारीच को घायल कर भाग जाने दिया, ताकि वह नये सृज्जय राजा राम द्वारा राक्षसों पर आक्रमण की सूचना रावण को दे, चाल कामयाब रही। रावण को राम के आक्रमण की सूचना उस समय मिली जब वह भरतों-शैव्यों की संयुक्त सैन्य के साथ सृज्जय सोमक के नगर राज्य पर घेरा ड़ाले हुऐ था। अपने राज्य पर आक्रमण की सूचना पाकर रावण आपने राक्षस सैनिकों के साथ अपने राज्य की रक्षा के लिये लौट गया। किन्तु राम और विश्वामित्र आगे नहीं बढ़े... वे पीछे लौट... राक्षस रावण के चले जाने से कमजोर हुऐ घेरे को राम ने तोड़ दिया और सृज्जय सोमक को पराजय से बचा लिया। वैदिक सृज्जय सोमक... रामकथा का शीरध्वज जनक है[45]... और घेरा धनुष है ज़िसे राम ने तोड़ा। भार्गव परशुराम जो संयुक्त सैन्य के नेतृत्वकर्ता थे, घेरा/धनुष के टूटने पर क्रोधित होते हैं?... लेकिन उससे क्या... राम और परशुराम के बीच द्वन्द्व युद्ध का वर्णन रामायण में है। इस प्रकार सीता का प्रदेश राम का हो गया। राम ने रक्षों से एक चाल चल कर सृज्जय सोमक को तो बचा लिया किन्तु अपना पैतृक राज्य भरतों के हाथों खो दिया..राम को वनों में पलायन करना पड़ा. आगे के घटनाचक्र में रावण ने सीता का हरण कर लिया।

एक नदी थी सीता

किन्तु सीता तो एक नदी थी, यह मदराचल (शिमला-सोलन जिले में) और गन्धमादन (सिरमौर सोलन जिलों में) पर्वतों के बीच बहने वाली शैलोदा (गिरि) नदी ही थी। गिरि-शैल-अश्मी (गिरि एक सहायक नदी) में साम्य है। केतुमालवर्ष से होकर पूर्व में भद्राश्ववर्ष (बद्रीनाथ, बदराहू, अगराहू, देहरादून का प्रदेश-युगशैल)[46] की ओर आने वाली नदी शैलोत्सीता थी। यही प्रस्त्रवण पर्वतों (शिवालिक पर्वत माला) से निकल कर कालेसर के बाद पश्चिमवाहिनी होती तो प्रस्त्रा/पलक्षा नदी थी। पलक्षा नदी का प्रदेश पलक्ष द्वीप कहलाता था।[47] और पलक्ष द्वीप के निवासी पंलकष (राक्षस)[48] पुलस्त्य और पुलह जन

तो पलक्षा शब्द से निकले प्रतीत होते हैं। और पुरुष शब्द की व्युतपत्ति पुरु शब्द से नहीं अपितु पलक्षा, पौलस्त्य या पुलह से रही होगी। सम्भव है कि पूषी के पुल्लिंग शब्द पूषा से यह पुरुष शब्द निकला हो। स्त्री के लिये बिल्ली/बिल्लो उच्चारण में हमें पूषी शब्द मिलता है। तब कालेसर के पूर्व और दक्षिण में राक्षी के तटों के निवासी राक्षस जन थे। यही प्रदेश कभी यक्षों का था। सुदास पैजवन द्वारा यमुना तट पर अज, शिग्रु और यक्ष जनों की पराजय के उपरान्त रक्षों का उत्थान हुआ इन्होंने यक्षों की बची खुची शक्ति को तोड़ दिया। उनकी लंका के मूल में पलक्षा/पलकंष शब्द ही है। रांगेय राघव ने लंका शब्द के मूल में तिब्बती भाषा के शब्द ''ग्लिन-का'' के होने का अनुमान किया है।[49] अब सीता शैलोदा नदी जो कालेसर के उपरान्त पश्चिमवाहिनी होती तो सरस्वती कहलाती थी। इसी सरस्वती के तटों पर सृज्जयों के नगर, ग्राम ग्रोत्र थे। सृज्जयों को पराजित करने, उन्हें पूर्णतया बरबाद करने के लिये राक्षसों ने सीता शैलोदा को (हरण कर) अपने राज्य की ओर मोड़ लिया या यह कुछ-कुछ अन्तराल पर स्वत: होने वाली प्राकृतिक घटना थी। रामायण के रोचक कथानक में दोष का ठीकरा राक्षसों के सिर फोड़ा गया है। वन में निवास कर रहे राम ने माल्यवान पर्वत (मंसूरी पर्वत माला) से ऋक्ष पर्वत तक के अपेक्षाकृत आदिम- अर्धसभ्य टोटेमिक कपि, वानर, ऋक्ष, भल्लूक आदि की सहायता से रक्षों पर अभियान किया। लगभग पाँच दिनों में पत्थर की एक विशाल संरचना बना कर वे नदी को वापिस पश्चिम में मोड़ लाये। नदी के बिना बरबाद हो रहे हरियाणा पंजाब की भूमि पर बसे सृज्जय जनों के शरीरों में नवीन प्राणों का संचार हुआ, धान्य, धन, ऐश्वर्य, सुख-वैभव की दायिनी सरस्वती आई सीता आई, पलक्षा (लक्ष्मी) आई, घर-घर दीप जलाने की परम्परा शुरू हुई।[50]

क्रूर, नास्तिक अत्याचारी ब्राह्मण विरोधी और गुरू के पुत्र शक्ति की हत्या करने वाले सुदास पैजवन को भले ही महाभारत शान्तिपर्व में शूद्र कहा गया, उसे इतिहास के पन्नों से नौंच फैंकने के लिये अठारह पुराणों में कहीं भी उसको या उसकी उपलब्धियों को एक पंक्ति में भी दर्ज नहीं किया किन्तु सम्भवत: उस अत्याचारी सुदास पैजवन का उत्तराधिकारी होने के कारण राम को ऋ 10.93.14 में असुर अवश्य लिख दिया गया हो, यह उसके सीता सरस्वती नदी को वापिस मोड़ लेने के महान असुर कार्य की बदौलत भी हो सकता है जो उसे महान विष्णु के अवतार की श्रेणी में ले आया।

राम को अवतार अथवा मर्यादा पुरूषोतम कहना कुछ-कुछ वैसे भी हो सकता है जैसे हरिश्चन्द्र को धर्म पर अडिग धर्म की रक्षा के लिये, की संज्ञा दी गई है कारण यह है कि राम का समूचा जीवन संघर्ष में गुजरा उसके प्रथम गुरू विश्वामित्र थे। सुदास पैजवन के राजनैतिक जीवन, उसके कर्मों-दुष्कर्मों का पूरा प्रभाव राम के राजनैतिक जीवन पर पड़ा। एक दूसरे को यतुधान और राक्षस कहने वाले, परस्पर विरोधी गुरू विश्वामित्र और वशिष्ठ[51] में कभी सुलह समझौता हुआ हो, ऐसा नहीं लगता। रामकथा और पुराणों में राम के वन-गमन के पश्चात विश्वामित्र की कोई (विशेष) भूमिका नहीं है। ऐसा लगता है कि उनका जीवन, सुदास पैजवन की ही भाति ब्राहमणवाद और वंशानुगत वर्ण व्यवस्था के विरोध में संघर्ष की भेंट चढ़ गया... रह गये राम...! उन्होंने भले ही राक्षस साम्राज्य को पराजित कर मान्धाता वंश की नींव पुख्ता करने का प्रयास किया। भले ही राम सीता-सरस्वती को उसके मूल बहाव मार्ग में मोड़ लाये किन्तु अपने गुरू विश्वामित्र और मातामह सुदास पैजवन द्वारा शुरू किया गया संघर्ष वे हार गये... ब्राहमणवाद के समक्ष वे अंततः झुके, शूद्र

शम्बूक की हत्या कर उन्होंने यज्ञ पूजा आदि करने का ब्राहमणों का अधिाकार मान लिया शूद्र शम्बूक की हत्या से हमें पता चलता है कि राम ने वंशानुगत वर्ण व्यवस्था को न केवल मान लिया अपितु समाज में उसे कड़ाई से लागू भी किया। यहीं वह मर्यादा है जो राम ने स्थापित की... वरना तो राम चतुर्थ और पंचम वर्ण से सम्बन्धित आदिम-अर्धसभ्य टोटेमिक जनों, निषाद-शबर आदि से सहायता तो प्राप्त करता है.. . कभी उनके काम नहीं आता... एक राजा होने के नाते जिस शूद्र शम्बूक की उसे रक्षा करनी चाहिये थी ब्राहमणों के हित के लिये वह उसी शूद्र शम्बूक की हत्या कर देता है।

अब सुदास पैजवन से सम्बन्धित एक आखिरी पेच... कि यदि सुदास यदुवंशी हैहय था तब क्यों ऋग्वेद 7.18.25 में दिवोदास को सुदास पैजवन का ''पितरं'' कहा गया ?

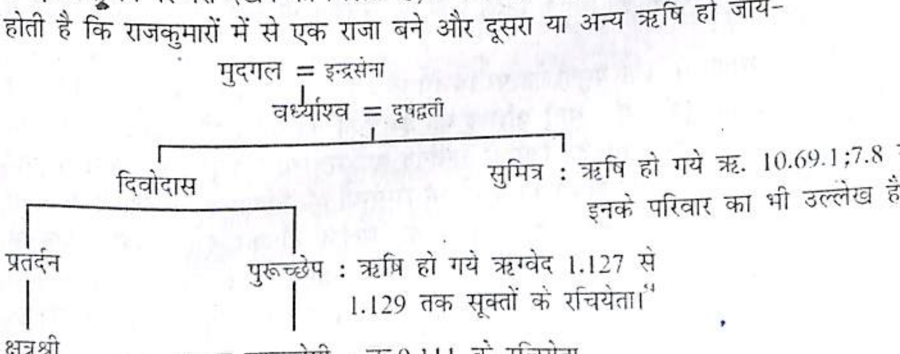
इमं नरो मरूदतः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदास : ऋ 7.18.25

विद्वानों को वशिष्ठ द्वारा रचित इस सूक्त का भावार्थ समझने का प्रयास करना चाहिऐ भले ही सूक्त में वशिष्ठ ने मरूदतों से सुदास और उसके कुल अथवा धन की रक्षा करने की प्रार्थना की हो किन्तु पितरं शब्द का प्रयोग उसने दिवोदास से सुदास के सम्बन्ध में नहीं किया। उसने यहॉ दिवोदास को अपना पितरं कहा है सुदास का नहीं...।

वशिष्ठ त्रित्सु वंशी सुमित्र का पुत्र था

ऋ 7.83.4 से स्पष्ट होता है कि वशिष्ठ गण (वशिष्ठ और उसका परिवार) त्रित्सु हैं। यहाँ वह स्वयं को त्रित्सु कहता है- **''हे इन्द्र और वरूण तुमसे सुदास को बचाया त्रित्सुओं के स्त्रोत सुने, उन का पौरोहित्य संग्राम के समय सफल हो गया''** और भी ऋग्वेद 7 83.8 **''जहाँ कर्मवान त्रित्सुगण उपासना करते हैं वहीं दस राजाओं द्वारा घिरे सुदास को तुमने बल दिया''**

ऋ 7.83.4 ऋ 7.83.8 ऋ 7.33.10-13 में वशिष्ठ, उर्वशी और मित्रावरूण का अदभुत रूप से जन्म लेने वाला पुत्र है। जबकि पुराणों में वह ब्रहमा का मानस पुत्र है अर्थात पूर्व प्रतिष्ठित है यदि ऐसा है तो वह मुदगल, वध्र्याश्व, दिवोदास के समय में क्यों वर्णित नहीं है.. जाहिर है वह दिवोदास के बाद दूसरी पीढ़ी का है वशिष्ठ के त्रित्सु कहे जाने पर वेदिक इण्डैक्स के लेखकों का मत है कि अदभुत रूप से जन्म लेने के कारण वशिष्ठ को एक गोत्र की आवश्यकता थी तो उसने अपने उन प्रतिपालक राजाओं का गोत्र धारण कर लिया जिससे अगस्त्य ने उन्हें मिलवाया था।[52] किन्तु वशिष्ठ कहीं भी त्रित्सु राजाओं द्वारा प्रतिपालित नहीं दिखाई देते, अगस्त्य द्वारा मिलवाये जाने के बाद भी नहीं। सरस्वती नदी प्रदेश के त्रित्सु परिवार में एक विचित्र परम्परा देखने को मिलती है, तथापि यह कहीं लिखी नहीं मिलती फिर भी शंका होती है कि राजकुमारों में से एक राजा बने और दूसरा या अन्य ऋषि हो जायें-



ऐसे में हो सकता है वशिष्ठ मित्र का पुत्र नहीं अपितु वध्यश्व के दूसरे ऋषि हो गये पुत्र सुमित्र का अदभुत रूप से जन्म लेने वाला पुत्र हो, उसी प्रकार जैसे उसका अग्रज अगस्त्य था, त्रित्सु सुमित्र ऋषि के आश्रम में समय समय पर आने वाली कोई उर्वशी उसकी माता हो। सुमित्र वैदिक सूक्तों का रचियेता है, वशिष्ठ भी वैदिक ऋचाओं, सूक्तों, मन्त्रों का रचियेता है, सम्भव है सुमित्र ही उसका पिता हो उसी के आश्रम में वशिष्ठ ने शिक्षा-दीक्षा, परवरिश पाई हो। यदि ऐसा है तो वह उचित ही अपने आपको त्रित्सु कहता है। इस प्रकार ऋ 7.18.25 में दिवोदास वशिष्ठ का पितरं ही तो हुआ... अर्थात पिता समान[55] पिता सुमित्र का भाई दिवोदास पिता समान ही तो कहा जायेगा।

अब यदि वशिष्ठ त्रित्सु सुमित्र का पुत्र है और दिवोदास के शत्रु सुदास पैजवन (यदु वंशी) का पुरोहित, अभिषेककर्ता तथा सहयोगी है तो अवश्य ही वशिष्ठ एक असन्तुष्ट त्रित्सु रहा होगा, जिसने त्रित्सुओं के विरूद्व सुदास पैजवन का साथ दिया। उसका असन्तुष्ट होना सम्भवतः इसलिये भी हो कि उर्वशी और मित्र/सुमित्र का अद्भुत रूप से जन्म लेने वाला पुत्र होने के कारण उसे त्रित्सु समाज व राज्य में वे मान-सम्मान और अधिकार न मिले हो जिसकी अपेक्षा ''त्रित्सु राजवंश का अंश'' होने के कारण वह करता रहा होगा। अग्रज अगस्त्य ने उसे त्रित्सु प्रमुखों से मिलवाया भी किन्तु उसे इसका लाभ नहीं मिला, क्योंकि इस काम के लिये त्रित्सुओं के पास कुलगुरू भारद्वाज जन थे।[56] **ऐसे में महत्वाकांक्षी वशिष्ठ समझ गया होगा कि यदि सरस्वती प्रदेश की राजनीति में उसे भारद्वाजों जैसा स्थान पाना है तो उसे अपने लिये एक सम्राट का निर्माण करना होगा।** वह अपनी स्त्री अरून्धती के भाई पर्वत और नारद के यहाॅ गया। जहाँ उसकी मुलाकात सृज्जय देववात के नाती सुदास से हुई। पर्वत और नारद दौनों सृज्जयवंशी सहदेव के गुरू, पुरोहित और अभिषेक कर्ता थे।[57] वशिष्ठ के भागीरथ प्रयत्नों से काम्यक वन का एक तुच्छ सा वेन न केवल सुदास पैजवन बना अपितु उसे सृज्जयों का सहयोग भी मिला और उसने दिवोदास की त्रित्सु सत्ता को उखाड़ फेंका। 7.18.25 का रचना समय यही रहा होगा जिस में वशिष्ठ मरूदतों से सुदास और उसकी सम्पत्ति-घर आदि की रक्षा के लिये प्रार्थना करता है-

इमं नरो मरूदतः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदास...

अर्थात, ''हे मरूदतो यह नर (मेरे) पिता समान दिवोदास नहीं अपितु सुदास है... उनके समान ही (जैसे कि तुम दिवोदास के लिये करते थे) सुदास के घर की भी रक्षा करो, उसकी सेनाऐं जरारहित और अविनाशी हों।'' इस प्रार्थना के द्वारा वशिष्ठ (जो कि स्वयं त्रित्सु है) सुदास को दिवोदास का उचित उत्तराधिकारी बनाने का प्रयास करता है और आशा करता है कि न केवल देवताओं का बल्कि त्रित्सु प्रजा का समर्थन भी उसे मिले क्योंकि वह स्वयं उसके पक्ष में है।

दासराज संग्राम में, और यमुना तट पर विजय के उपरान्त जबकि सुदास को उसकी सभी उंचाईयाँ प्राप्त हो चुकीं थीं... बारी वशिष्ठ की इच्छाओं की आती थी... और वशिष्ठ की इच्छा थी एक नई मानव संहिता, जिसके अर्न्तगत वर्णव्यवस्था वंशानुगत हो सके। यह नई मानव संहिता स्त्री पुरूष के किसी भी प्रकार के सम्बन्धों को विवाह की मर्यादा में ले आती थी। ऐसा करके वशिष्ठ लूट कर, क्रय करके, बलात भोगकर (पैशाचिक), दान में लेकर/देकर, प्रेम से (गन्धर्व) आदि किसी भी प्रकार के स्त्री पुरूष के उन स्वच्छन्द सम्बन्धों पर रोक लगाना चाहते थे जो वशिष्ठ और अगस्त्य जैसे बालक उत्पन्न करते हों। अदभुत रूप से जन्म लेने वालों को सम्मान, अधिकार, माता-पिता-वंश-ग्रोत्र का नाम तभी मिल

सकता था जब विवाह के अतिरिक्त, वर्ण व्यवस्था भी वंशानुगत हो। किन्तु सुदास की प्राथमिकताएें क्षत्रिय कर्मो को बढ़ावा देने वाली बन चुकी थी। उसने सम्भवत: यह सोचकर कि पराजित जातियॉ अपने हितों के संरक्षक के रूप में दासराज संग्राम में अपने नेतृत्वकर्ता को एक प्रमुख पद पर पाऐंगी... विश्वामित्र को अपना क्षत्रिय गुरू और सलाहकार नियुक्त किया। इससे उन पराजित जातियों के विद्रोह की आशंका कम हो जाती है। यह सुदास पैजवन की राजनैतिक सोच थी, परम आवश्यकता थी या फिर मूर्खता थी कुछ कहा नहीं जा सकता किन्तु गुरू वशिष्ठ का अहमं, एक पराजित क्षत्रिय गुरू को अपने साथ खड़ा सहन नहीं कर सका। नई मानव संहिता को लेकर दौनों के बीच लगातार बढ़ते विवाद ने बाद में संघर्ष का रूप ले लिया था।

पलकषों (राक्षसों) से मान्धाता जनों का संघर्ष

पीछे हमने राक्षी नदी क्षेत्र के रक्षों/राक्षसों को लंका के निवासी पलकषों को (पलक्षा/सरस्वती नदी क्षेत्र के) पुलस्त्य अथवा पुलह जन माना है। सरस्वती नदी की अनियमितता और अनिश्चितता तथा वर्षा काल में अतिरिक्त पानी अथवा बाढ़ से राक्षी नदी में बनने वाली झील राक्षस झील कहलाती थी और शिवालिक पर्वत की तराई में विशाल तथा अन्य छोटी बड़ी सभी झीलें बिन्दुसर। बिन्दुसर झीलों का समूचा क्षेत्र जो कभी यादव-युगन्धरों का था कालान्तर में मान्धाता जनों के इस क्षेत्र में आ बसने के कारण मानसरोवर कहलाने लगा। मान्धाताओं के इस क्षेत्र में आ बसने से सम्भवत: शशिबिन्दु यादव की पुत्री बिन्दुमती से मान्धाता के विवाह का मिथक बना। मान्धाताओं का क्षेत्र राक्षी नदी के राक्षस जनों के निकट किन्तु उनके उत्तर और पूर्व में रहा होगा। प्राचीन साहित्य में राक्षसों तथा यादव जनों के साथ मान्धाताओं के संघर्ष का वर्णन है- मान्धाता ने यमुना तट पर यज्ञ किये थे।[58] मान्धाता को रावण के विरूद्ध पुलस्त्य और गालव ने रोका।[59] रावण के मौसेरे भाई लवणासुर ने इन्द्र के उकसाने पर मान्धाता और उसकी सेना को भस्म कर दिया था।[60]

कुछ के अनुसार मान्धाता की हत्या मधुयादव ने की थी। इसी ने मधुपुरी (मथुरा) बसाई थी, यह माधवी/मधुश्रवा नदी के क्षेत्र में अथवा सुघ/श्रूघन रही होगी, यदि बहुत आगे बढ़कर सोचा जाये तो यह मधु हैहयवंशी था जिस समय सुदास पैजवन ने यमुना तट पर आक्रमण किया, मधु ने मान्धाताजनों को उनके क्षेत्र में नेस्तनाबूद किया होगा। पुराणों में वर्णित यदु के पुत्र सहस्त्रजित सरस्वती नदी प्रदेश के वैदिक सृज्जय हैं तो क्रोस्ट अवश्य गंगा यमुना दोआबे में काथा नदी क्षेत्र के नये बसे यादवों का द्योतक है यही क्षेत्र विजय अथवा विदर्भ भी था। क्रोस्ट शब्द का काथा के साथ साथ उस क्रथ से साम्य दिखता है जो पुराणों में कैशिक का भाई था। क्रथ और कैशिक विदर्भ के पुत्र और ज्यामद्य के पौत्र थे।[61] कैशिक अथवा कौशिक कौशिकी नदी क्षेत्र का द्योतक है। मान्धाता के एक वंशज अनरण्य का रावण द्वारा वध का उल्लेख है।[62]

मधु यादव के पुत्र लवण को बाद में राम के भाई शत्रुघ्न ने मारा था और मथुरा पर अधिकार कर लिया। श्रूघन के मूल में शत्रुघ्न शब्द नहीं अपितु श्रूघन और शत्रुघ्न दौनों के ही मूल में शूर शब्द है और यही शूर, सूरसेन का आधार भी है तथा वर्तमान मथुरा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। ऋग्वेद काल में यदु जन, जिनके वंशज पौराणिक शूर हैं, त्रित्सु दिवोदास के शत्रु थे वे जींद, जगाधरी, देहरादून क्षेत्रों के निवासी थे। पुराणों में चाक्षुष मनु के पुत्र अत्यराति जान्तपति का वर्णन है ऐत्तरेय ब्रा0 8.23 के अनुसार इन्होंने अगम्य उत्तर कुरू को जीतने का असफल प्रयास किया था। उनका कार्य मान्धाता ने पूरा किया। वर्णन है कि

मान्धाता की उत्तर कुरू विजय के उपरान्त बहुत से उत्तर कुरूवासी उनके साथ आकर जम्बू द्वीप में बस गये।[63] मान्धाता ने देवलोक पर विजय का उद्योग किया था।[64] किन्तु अत्यराति जान्तपति की असफलता के बाद सम्भवतः भ्रम और आशंका फैल गई होगी कि उत्तर कुरू को जीता नहीं जा सकता। मान्धाता ने भले ही उत्तर कुरू जीत किन्तु मधु यादव द्वारा उनकी हत्या से आंशका को बल मिला, ऐसी ही आंशका हम महाभारत में अर्जुन और उत्तर कुरू के विषय में पाते हैं। उत्तर कुरू को अगम्य कहा गया है[65] यह अगम्यता झीलों तथा दलदली भूमि के कारण थी। विचार यह भी है कि मान्धाता पुराणों का चाक्षुष मनु है। मान्धाता और उसके पुत्रों (वंशजों) ने सरस्वती नदी क्षेत्र में बस्तियाँ बसाईं या फिर पूर्व और दक्षिण-पूर्व में प्रसार के समय गेरूऐ मुदभांड जनों की बस्तियों पर अधिकार किया, हो सकता है सौ अवश्मेघ यज्ञ और सौ राजसूय यज्ञों की संख्या में अतिश्योक्ति हो (राम ने केवल एक अश्वमेघ यज्ञ किया था) तो भी माना जा सकता है कि मान्धाता ने हर सफलता के उपरान्त एक अश्वमेघ और एक राजसूय यज्ञ किया हो, ऐसे में मान्धाता ने असंख्यों बस्तियों पर अधिकार किया होगा अथवा असंख्यों बस्तियाँ बसाई होंगी, यहाँ मान्धाता से अभिप्राय किसी एक व्यक्ति से नहीं है बल्कि सभी चाक्षुष मानवों से है जो इन्द्रपूजक/इन्द्र द्वारा पोषित थे। तभी इन्हें इन्द्र द्वारा दूध पिलाया हुआ कहा गया है।

कुरू - कौरव्य नागों का वंश था हस्तिनापुर का राजवंश

हस्तिनापुर राजवंश कथित आर्यों का वंश नहीं था अपितु एलवंशी (एलपत्र वंशी) नाग कुरू/कौरव्यों का वंश था और वे दोआबे में यमुना तट के अज अथवा अहि जन थे जिन्हें सुदास पैजवन ने पराजित किया था, किन्तु इससे पूर्व मान्धाता जन दोआबे में आकर बस चुके थे। उत्तर कुरू यमुना तट पर हस्ति, गजों, अजों, पितरों, पिशाचों का विरज ही था। ऐत्तरेय ब्रा0 8.14 में उत्तर कुरू और उत्तर मद्र के लिये कहा गया है कि ये हिमवान से परे थे और यहां वैराज्य प्रथा थी- **एतस्यामुदीच्यां दिशि ये के च परेण हिमवन्त जनपदा उत्तर कुरू उत्तर मद्रा इति वैराज्यायैव ते अ भिषिच्यन्ते॥**

हिमवान और मैना के दो पुत्र क्रौंच और मैनाक थे। मैनाक को प्राचीन भूगोलवेता शिवालिक पर्वत के नाम से जानते थे और क्रौंच शिवालिक पर्वतों के बीच वह करोंधी नामक घाटी है जिससे गुजर कर यमुना नदी मैदानों में प्रवेश करती है। करोंधी का दक्षिण भाग अजों-गजों-ऋक्षों-पितरों-पिशाचों का विरज (ब्रज) लोक था। यहीं हस्तिनापुर और कुरूक्षेत्र के नाग कुरू-कौरव्यों का मूल प्रदेश उत्तर कुरू था। इसी विरज क्षेत्र के निवासी विरज अथवा वैराज, स्त्रियाँ विरजा तथा रीति-रिवाज-प्रथाऐं वैराज्य कही गई। वैराज्य प्रथा का अर्थ राज्यहीन अथवा बिना राज्य की शासन पद्यति अथवा गणराज्य का कोई प्रकार[66] लगाना उचित नहीं है, हाँ यह हो सकता है कि उस क्षेत्र में उस समय तक राज्य शासन पद्यति जैसे विचारों ने जन्म ना लिया हो। हस्तिनापुर से प्राप्त गैरिक मृदभांड का स्तर का सम्बन्ध नागवंशी कुरू कौरव्यों से है, नागों अजों, गजों, हस्तियों ने ही चित्रित धूसर मृदभांड वाले कथित आर्य पांडु जनों से पराजित होकर भारत के विभिन्न भागों में पलायन कर लाल काले ओपदार मृदभांड़ों की शुरूआत की, मगध के संस्थापक उपरिचर वसु के पुत्र वृहद्रथ भी वसु-वासुकी नाग जन ही थे यदि वे आर्य होते और हस्तिनापुर के पांडु जनों से सम्बन्धित होते तो मगध में कहीं ना कहीं चित्रित धूसर मृदभांड अवश्य मिलते।

मान्धाता के पुत्रों में पुरूकुत्स, मुचकुन्द्र और अम्बरीष का नाम है पुरूकुत्स ने नर्वद नागों की रक्षा के लिये मोनेय गन्धर्वो से युद्ध किया था[67] मोनेय गन्धर्व मान सरोवर क्षेत्र में

बसे गन्धर्वों को कहा गया होगा। नाग कन्या नर्वदा से इसका पुत्र त्रसदस्यु था। मुचकुन्द को कर्कोटक नागों ने पराजित किया था। अम्बरीष ने सम्भवत: अम्बा (कालेसर के समीप ड़न्ड़ा अम्बोआ; अम्बावाली खोल का क्षेत्र) और ऋक्ष (गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वत माला का पश्चिमी भाग) में बस्तियाँ बसाई होंगी अम्बरीष जन भद्राश्व वर्ष (भद्राश्व > भद्राह > भ्रद्राहू > राहू > रघु) और अज जनों के प्रदेश में भी बसे होंगे। तभी उसके वंशजों में अम्बरीष - दिलिप - रघु - अज नाम है इनके व्यक्तिवाचक नाम न होने की सम्भावना इसलिये है कि वैदिक साहित्य में इस प्रकार का कोई वंश नहीं अत: पुराणों में जाति और स्थानवाचक नामों को व्यक्तिवाचक बनाकर कथा रूप में पेश किया गया है।

मुचकुन्द और नाग कर्कोटक

मुचकुन्द से कर्कोटक नाग ने उनकी नगरी छीनी, जिसे बाद में हैहय महिष्मत ने छीना[68] हैहय, वेदों में सृञ्जय हैं जिन्होंने यमुना पार तक अभियान किया था। सृञ्जय का सायण के अनुसार शाब्दिक अर्थ काला भैंसा (महिष) कारा या खारा नदी क्षेत्र के नाग ही कर्कोटक कहे गये हैं, जिन मान्धाता जनों/चाक्षुष मानवों ने मूल निवासी अजों/हस्तियों को दक्षिण में खदेड़ कर अपनी बस्तियाँ बसाई वे मुचकुन्द जन थे। साम्य देखिये- मुचकुन्द/मतस्यगन्धा/अजगन्धा (उपरिचर वसु -उपरी अंचल के वसु/वासुकी की पुत्री ; महिषमती अर्थात महिष जाति का प्रदेश सम्भवत: सहारनपुर जिले में मस्कारा नदी क्षेत्र मस्कारा > महिषकारा > मतस्यकारा। महिष, मतस्य, मकर या तो एक ही थे या एक ही क्षेत्र की तीन अलग-अलग कबीलाई टोटेमिक जातियाँ।

सागर में मछली से पैदा हुआ हनुमान का पुत्र मकरध्वज

ऋक्ष की पुत्री का पुत्र ऋक्ष गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वत माला थी।

यादवों (यादव-युगन्धर) पर आक्रमण के समय जरासन्ध ने मकर व्यूह की रचना की थी। जरासन्ध असल में सहारनपुर क्षेत्र में मस्कारा / राक्षी / कौशिकी / कारा-कालिन्दी / शाकम्भरी / पंजाराव गेजराराव आदि नदियों का वर्षा काल में अतिरिक्त पानी से बना जलसन्धि क्षेत्र था यह जलसन्धि प्रत्येक वर्ष द्वारका (जगाधरी के स्थान पर कोई प्राचीन बस्ती) पर आक्रमण करती थी।

रावण के भाई खर का पुत्र मकराक्ष जिसे राम ने मारा; यह खर, खरा अथवा कारा नदी क्षेत्र में निवास करने वाला राक्षसों की सहायक जाति का व्यक्तिवाचक नाम हो सकता है। रावण के समय मस्कारा क्षेत्र इन्हीं खरों के अन्तर्गत आता रहा होगा। खर का भाई दूषण दृषद्वती क्षेत्र के दृषद्वन्तों का द्योतक > द्रूषण ?

खर का एक अर्थ मार्जार भी होता है अर्थात कारा/खारा क्षेत्र के खर भी मार्जरों के अन्तर्गत थे। मकरानन, शिव का एक अनुचर; मस्कारा क्षेत्र शिवपूजक जातियों का था इसलिये उसे शिव का अनुचर माना गया है। निकट ही आज का कालेसर शिव कैलाश था।

महिषासुर मर्दनी, उमा पार्वती (शक्ति) का एक रूप। महिष का अर्थ या अपभ्रंश भैंसा किन्तु सृजय का अर्थ स्पष्टत: काला भैंसा है।

उपर्युक्त सभी तथ्य किसी मकर/महिष/मतस्य जाति की ओर इशारा करते हैं जो मस्कारा नदी क्षेत्र में थे। हनुमान के मकरध्वज सम्बन्धी मिथक में तो स्पष्टत: मतस्या (यह कोई स्त्री रही होगी) का उल्लेख भी है जो मतस्यों और मकरों का अभिन्न सम्बन्ध बताता है।

मुचकुन्द नाम मुंजपृष्ठ प्रदेश के सम है। यह रूद्रसेवित स्थान है।

मुंजवट कुरूक्षेत्र की सीमा में एक तीर्थ है।

मुंजवान (अरूण पर्वत) पर शिव के तपस्या करने का उल्लेख है।

मुंड़पृष्ठ पितरों पिशाचों से सम्बन्धित वह स्थान है जहाँ शिव ने तपस्या की थी

मुंड़वेदांग एक नाग का नाम भी है।

नास्तिकों का एक वर्ग भी।

ये सभी कथित आर्यो के मुकाबले आदिम अर्धसभ्य थे और उनकी भांति कर्मकाँड़ी नहीं होने के कारण नास्तिक कहे गये, ये अवश्य गैरिक मृदभांड़ सस्कृति के जन थे। बलि (बोली नदी के क्षेत्र के जनों का द्योतक शब्द) के एक सेनापति का नाम मुंड़ था। सेनापति चंड और मुंड का वध करने के कारण उमा भगवती का एक नाम चामुंडा भी है।[69] ये सभी तथ्य मुंज/मुड़/मुचकुन्द < मच्छकुन्द < मतस्य को शिव के स्थान कैलाश/कालेसर अथवा उसके समीप और मस्कारा नदी के क्षेत्र में प्रमाणित करते है। शिव को आदिनाथ कहते हैं इस आदि शब्द के मूल में आद्रि (पिशाच) अथवा अज है जो अपने आदिम अर्धसभ्य काल से वहाँ के मूल निवासी थे। मुंज एक प्रकार के नरकुल/सरकण्ड़े की छाल से बनता है। इसे उपरी सरस्वती नदी के क्षेत्र में बहुतायत से देखकर सरकुन्द/सरकण्ड़ा कहा गया होगा। मुंजपृष्ठ/मुंड़पृष्ठ/मुजावट/मूजवट में आ बसने वाले मान्धाता जनों-मुचकुन्दों को यहाँ के मूल निवासी अथवा समीप ही कारा नदी क्षेत्र में बसे कर्कोटकों ने पराजित किया और कर्कोटकों को सृज्जयों (हैहयों) ने हराया। इस पराजय में कर्कोटक, अंज जनों के साथ अथवा उनके रूप में थे।

अजनाभखण्ड के अजमीढ़ों का व्यक्तिवाचक नाम है- अज

राम के प्रपिता का नाम भी अज है।[70] अज जातिवाचक नाम है जिसे वंशावली में व्यक्तिवाचक बनाकर पेश किया गया है और ये वही अज हैं जिन्हें यमुनातट पर सृज्जय सुदास पैजवन ने पराजित किया था। राम इन्हीं अजों में से एक है, इस उलझी हुई स्थिती को हम अज-इन्दु के मिथक द्वारा समझ सकते हैं। इन्दु अज की स्त्री का नाम है जो वैदर्भी थी। स्त्री इन्दु की मृत्यु के उपरान्त दुखी और वियोगी अज ने राजकाज बिल्कुल त्याग सा दिया था...। इन्दु, सागर, सिन्धु अथवा सिन्धुनदी प्रदेश (गंगा यमुना दोआबे में हिड़न नदी प्रदेश) का प्रतीक है। यह घटना चक्र सुदास पैजवन द्वारा यमुना तट पर अजों की पराजय से जुड़ता है अर्थात अजों ने पराजय में इन्दु (सिन्धु प्रदेश खो दिया, और वे निर्वासित हो गये। इसे कथा रूप में इन्दु की मृत्यु पर अज का वियोगी दुखी बनकर राजकाज त्याग कर भटकना बताया गया है।

पुराणों में एक अन्य सूर्यवंशी सागर की स्त्री केसिनी भी वैदर्भी है। सगर अयोध्या नरेश थे किन्तु विद्वान उन्हें मध्यप्रदेश के सागर क्षेत्र में हुआ मानते हैं, यह गलत है, असल में सगर यमुना तट के समीप अजः जाति के क्षेत्र में हुऐ थे। आज का सहारनपुर किसी सागरनपुर का अपभ्रंश है। सगर नाम असल में यमुना तट के उन शिग्रु जनों का द्योतक है जो अजों और यक्षुव जनों के साथ-साथ सृज्जयों के हाथों पराजित हुऐ थे। सगर की स्त्री केसिनी वैदर्भी... विदर्भ यादवों के सिनीवाली/कौशिकी अथवा केसिनीवाली क्षेत्र की द्योतक है जहॉ शिग्रु जनों का क्षेत्र था।

यादव युगन्धरों का मूल प्रदेश जींद-जगाधरी में माना जाता है सरस्वती नदी प्रदेश का त्रित्सु दिवोदास उनका शत्रु था। सहारनपुर में शिवालिक पर्वतमालाओं की तलहटी में बाढ़ अथवा अतिरिक्त जल से बनने वाले बिन्दुसरोवरों का क्षेत्र शशिबिन्दु यादवों का था जब, उनके क्षेत्र में मान्धाता जनों ने बस्तियॉ बसाई (मान्धाता की स्त्री बिन्दुमती शशिबिन्दु यादव

की पुत्री थी) तो यादव कुछ दक्षिण में सरक आये। शशिबिन्दु के पुत्र का नाम ज्यामद्य जय क्षेत्र (द्यौ अथवा द्याता) का प्रतिनिधित्व करता है (इस विषय पर चर्चा कुछ आगे की गई है) ज्यामद्य का पुत्र विदर्भ... द्याता अथवा दृष्द्वती नदी क्षेत्र का द्योतक तो विदर्भ के पुत्रों क्रथ और कैशिक का नाम काथा अथवा किन्थाला (सिन्थाला) नदी और कौशिकी/केसिनीवाली अथवा सिनीवाली नदी क्षेत्र से साम्य रखते प्रतीत होते है।[71] अजमीढ़ जिसकी एक स्त्री का नाम केसिनी था, कौशिकी क्षेत्र के अजों का द्योतक है। इसी प्रकार राक्षी नदी क्षेत्र के रक्ष रावण की माता केकसी का एक नाम केसिनी भी है ऐसा लगता है कि केसिनी अथवा सिनीवाली कौशिकी नदी के ही नाम थे।

आर्य देवतन्त्र के धाता-विधाता है जय-विजय के मिथक का आधार

पुराणों में वर्णित जय और विजय के तीन जन्मों तक राक्षस होने का मिथक[72] अपने साथ एक भौगोलिक विवरण लिऐ है। जय और विजय के मूल में द्याता और विद्याता शब्द है। अंगिरा की चार पुत्रियाँ कूहू, सिनीवली, राका और अनुमति द्याता को ब्याही थीं।[73] ये चारों एक ही समय हरियाणा प्रदेश की नदियों के नाम थे। राका... राक्षी है जो उस समय गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वतों से निकलती थी आज उस स्थान पर मस्कारा है. .. मस्कराक्षी > मकराक्षी > राक्षी। अनुमती अंशुमती है जिसके तटों पर ऋग्वेद कालीन असुर कृष्ण का उल्लेख है।[74] कूहू और सिनीवाली, कौशिकी अथवा उसकी कोई सहायक केसिनीवाली रही होगी। हो सकता है दोआबे की नदी कृष्णी को केसिनीवाली कहा गया हो। कौशिकी या कृष्णी/केसिनीवाली का क्षेत्र ही पुराणों का कुशद्वीप हो सकता है।

बारह आदित्यों वाले देवतन्त्र में द्याता के साथ विधाता है।[75] लक्ष्मी को द्याता और विधाता की बहन कहा गया है।[76] इसका अर्थ यह है कि चाक्षुष मानवों/अगिंरा जनों के क्षेत्र-कूहू, सिनीवाली, राका और अनुमति नदियों के तटों पर द्याता-विधाता वाले देवतन्त्र का विकास हुआ। उत्तर की शिवालिक पर्वत माला अपने भीतर से नदियों को प्रवाह देकर PGW चित्रित धूसर मृदभांड़ों वाली सभ्यता के कृषकजनों के भाग्य लिखने वाला विधाता बना। इसे ही विन्धय/वैदूत/विद्युत सौद्युम्न (हेती) कहा गया है। इससे निकलने वाली नदी वेदवती (वैद्युती) बोली (विद्युली अर्थात बिजली का अपभ्रंश) और सदादेनी/सौद्युम्नी थी।

सोम्ब नदी क्षेत्र के निवासिओं का द्योतक शम्भर की पुरी का नाम बैजयन्ती/वैद्युन्ती। बोली नदी के निवासिओं के द्योतक बलि की स्त्री का नाम विन्ध्यावली। हिरण्यदैत्यों में हिरण्याक्ष के पुत्र अथवा वंशज हेती और प्रहेती; हेती का अर्थ विद्युत/बिजली ; **रूद्र की हेती हमें छोड़कर अन्यत्र जाये...** (सातवलेकर 2.3.14)[77] हेती का पुत्र विद्युतकेष/आगे इसके पुत्र सुकेस के तीन पुत्रों माली, माल्यवान और सुमाली में से सुमाली की पुत्री केकसी (केसिनी)का पुत्र राक्षस रावण था। रावण पौलस्त्य वंशी था। पौलस्त्य के मूल में पलक्षा नदी के पलकंष (अर्थ राक्षस) है।

माल्यवान पर्वत मसूरी पर्वतमाला है। तीनों माली भाईयों की माता देववती और उनकी स्त्रियाँ सुन्दरी, बसुधा और केतुमती गन्धर्वियाँ हैं। रक्षों के आराध्य कैलास/कालेसर के शिव, रक्षों के सभी शत्रु मान्धाता, अनरण्य, यक्ष, पिशाच, यम आदि सभी यमुनातट क्षेत्र के सिद्ध होते हैं। लंका के मूल में पलकंष / पलक्ष शब्द है रावण का साढू शम्भर जो कि दिवोदास का शत्रु था सोम्ब नदी क्षेत्र का है ये सभी तथ्य राक्षसों को वर्तमान कही जाने वाली लंका द्वीप का नहीं अपितु राक्षी/मस्कारा/दृषद्वती नदी क्षेत्र का सिद्ध करते है। एक और महत्वपूर्ण तथ्य देखिये-विंध्य/विधाता क्षेत्र ... निवासियों [illegible] (अर्थ पिशाचिनी)

कहा गया जो अज/आद्रि/मतस्य जन ही थे। और जय विजय के राक्षस जन्म हमें इसी क्षेत्र के ब्राहमण विरोधी सृज्जयों (पौराणिक हिरण्यों: इनकी चर्चा हम आगे करेंगे) और राक्षस रावण में मिलता है। हिरण्याक्ष का पाताल सृज्जयों के सरस्वती नदी क्षेत्र में पटियाली नदी का क्षेत्र है। वैद्यूत-विधाता-विन्ध्य तलहटी का क्षेत्र धाता कहा गया है इसी क्षेत्र की सरस्वती नदी पलक्षा भी थी, जिस का देवीय रूप लक्ष्मी था। इस प्रकार धाता और विधाता की बहन लक्ष्मी कही गई है।

दशरथ और दशानन आदि मिथकीय नामों का भौगोलिक धरातल

द्याता और सिनीवाली के एक पुत्र का नाम दर्श है।[78] ऋक्ष पर्वत (गंगा-यमुना दोआबे की शिवालिक पर्वतमाला) से निकलने वाली एक नदी का नाम दशार्णा है।[79] दर्श और दशार्णा के मूल में दृषद्वती शब्द है। इस दृषद्वती नदी का क्षेत्र दशार्ण अथवा दशार्ह था। दशार्ण का वर्णन जरासंध की सहायक एक जंगली जाति के रूप में है।[80] जरासन्ध जो कि जलसन्धि, अन्य नदियों के साथ-साथ दशार्ण नदी क्षेत्र भी इस में सहायक बनता था। इसी दशार्ण क्षेत्र के रक्ष रावण को दशार्णन कहा गया है, दशानन इसी दशार्णन शब्द का अपभ्रंश है। वैसे भी रावण दशानन नहीं अपितु बीसआनन होना चाहिऐ था, इसी प्रकार दसकन्धर नहीं अपितु बीसकन्धर होना चाहिऐ। असल में हुआ यह होगा कि दशार्णन का अपभ्रंश दशानन प्रयोग कर उसे दसकन्धर, दसग्रीवा, दसशीश मान लिया गया... जो कि यह भयंकर त्रुटि थी। वर्ना तो शिव का नाम दशबाहू भी है, उसका धनुष दस रंगों वाला दशवर्ण धनु कहलाता है[81] दृषद्वती नदी के आसपास का क्षेत्र (जगाधरी-सहारनपुर में) दशार्ण अथवा दशार्ह कहलाता रहा होगा और उस क्षेत्र में निवास करने वाली लगभग दस शैव्य जातियाँ-रक्ष, यक्ष, नाग पिशाच आदि शिव का दशवर्ण धनुष कहलाती होंगी। ऐसे में जबकि दृषद्वती नदी का सम्बन्ध दर्श दशार्ण, दशार्ह आदि से जुड़ता प्रतीत होता है।

दृषद्वन्त और सौद्युम्नी जन थे भरतों के पूर्वज

जिस समय सरस्वती नदी के तटों पर कृषक, चित्रित धूसर मृदभांड़ संस्कृति के वैदिक जनों की सभ्यता और संस्कृति का विकास हो रहा था; वे भरत जन सौद्युम्नि/सदादेनी नदी के तटों पर सौद्युम्न पुत्र[82] और दृष्द्वती नदी के तटों पर दृषद्वंत/दुष्यंत कहे गये। यह तो सभ्यों की बात है और उनकी बात है जो कृषक/चित्रित घूसर मृदभांड़ संस्कृति वालों के यदि समकक्ष नहीं थे तो कम से कम उनसे उन्नीस अवश्य थे,

दास और दस्यु भी दृषद्वती नदी क्षेत्र के दृषद्वन्त जन थे

किन्तु वे जो इन के मुकाबले अर्धसभ्य थे और दृषद्वती नदी के किनारे वनों पर आश्रित थे-दस्यु कहे गये, बहुत सम्भव है कि दस्यु शब्द दृष्यु अथवा दर्श से निकला हो-सारस्वत, यम, गांगेय और सैन्धव की तर्ज पर दृषद्वती/दर्श क्षेत्र से दस्यु। वनों पर आश्रित ये जन कृषि कार्य आदि न करने के कारण वे बस्तियों में अथवा मार्गों में चोरी, लूट आदि अवश्य करते थे। इससे दस्यु शब्द चोर और लुटेरों का पर्याय बन गया। दस्यु और दास दौनों ही दृष्द्वती नदी क्षेत्र के होते थे किन्तु दस्युओं को पराजित कर मार ड़ाला जाता रहा होगा क्योंकि चोर और लुटेरा पराजित होने पर विश्वासपात्र कामगर दास नहीं हो सकता। इसके विपरीत दृषद्वती क्षेत्र के कबीले व बस्ती गोत्र के व्यक्ति सामाजिक होने के कारण पराजित कर दास बना लिये जाते थे। बाद के समय में दास या दस्यु समानार्थी होकर दृषद्वती क्षेत्र के अतिरिक्त भी अन्य सभी स्थानों के पराजित जनों के लिये प्रयुक्त होने लगा।[83] वैद्यूत/विन्धय/विधाता पर्वत (शिवालिक) की तलहटी में दृषद्वती नदी का क्षेत्र दृष/दर्श/दृह/द्वार कहा गया जो द्वारका

के मूल में है। विदूरथ कुरूक्षेत्र का एक नाम है और एक पुरूवंशी राजा भी है जिसके पुत्रों को ऋक्षवान पर्वत (गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक) के रीछों ने पाला-पोषा। जगाधरी के आस पास का क्षेत्र कान्यकुब्ज का द्वार कहा गया है। द्वारका का कृष्ण जगन्नाथ जग (युगन्धर शब्द से बना) और द्वार दौनों का स्वामी था,[84] यही क्षेत्र शुरूआती वेदकाल में विधाता/शिवालिक पर्वत की तलहटी का द्याता था अर्थात पोषण करने वाला, दाता अर्थात देने वाला। कृषि कार्यों के लिये जितना निर्भर वे नदियों पर थे उतनी ही आवश्यकता उन्हें वर्षा की भी थी। इन्द्र वर्षा, नदियों को नियंत्रित कर उन्हें सुचारू रूप से बहाने वाला देवता बन कर उभरा। वैदिक जनों ने अपनी प्रत्येक विजय का श्रेय इन्द्र को दिया, ऐसा वर्णन किया जैसे युद्ध में स्वयं इन्द्र उनकी ओर से लड़ा हो। दूसरे शब्दों में मनु-जनों ने स्वयं को इन्द्र द्वारा पोषित माना। अपने सबकुछ का श्रेय इन्द्र को देने वाले इन जनों के लिये माता और पिता दोनों ही इन्द्र थे। यही मान्धाता के इस पौराणिक मिथक का आधार है कि युवनाश्व से उत्पन्न पुत्र मान्धाता को इन्द्र ने दूध पिलाया था। विधाता और द्याता दौनों मनु के साथ रहते थे सम्भवत तभी मान्धाता मनुधाता हो।

मान्धाता के तीनों पुत्र अम्बरीष, मुचकुन्द और पुरूकुत्स मनुओं की तीन शाखाओं के द्योतक हैं। पुरूजन सोलन जिले में परियात्र पर्वत (शिवालिक) की तराई से सरस्वती नदी के पार होते हुऐ यमुना के पशिचम में कुरूक्षेत्र करनाल, रोहतक तक फैले। सरस्वती नदी के दक्षिण पूर्व में फैलने वाली शाखा अनरण्य की थी। अनरण्य शाखा राक्षी नदी के रक्षों के निकट बसी थी इससे रक्ष रावण के साथ इनका संघर्ष अवश्यम्भावी था। अनरण्य को रावण ने पराजित कर मारा। कुछ समय बाद अनरण्य जन दक्षिण में सरक गये। रोहतक को अनरण्य शाखा के हरिश्चन्द के पुत्र रोहिताश्व द्वारा बसाया गया माना जाता है।

अम्बरीष जन उन मान्धाता जनों को कहा गया है जो कालेसर के आसपास किन्तु यमुना नदी के दोनों ओर बसे। अम्बावाली खोल, अम्बिकावन, ड़ंड़ा अम्बोआ, ऋक्ष पर्वत इनके स्थान थे। अम्बरीष के पुत्र दिलिप को गौरक्षक, कामधेनु नन्दिनी की सेवा करने वाला कहा गया है। पलक्ष द्वीप (पलक्षा नदी > सरस्वती) के एक प्रदेश का नाम पुराणों में नन्द है। यह कामधेनु बहुत सम्भव है कामधान्यक/काम्यकवन क्षेत्र का द्योतक है वैसे सरस्वती का एक नाम गो अथवा गौ भी है।

दिलिप के पुत्र रघु राहु > भद्राहू > भद्राश्व (वर्ष) का द्योतक शब्द है। भद्राश्व वर्ष यमुना नदी के पूर्व का पर्वतीय प्रदेश था जिस में बद्रीनाथ, भद्रा, बदराहू अगराहू आदि क्षेत्र आते थे। रघुवंश में रघु द्वारा यक्षपति कुबेर पर विजय का वर्णन सिद्ध करता है कि यमुना नदी के प्रदेश में कालेसर से देवबन-चकरौता तक का सम्पूर्ण यक्ष प्रदेश रघु के अर्न्तगत था। रजतनाभ और मणिवरा के दो पुत्रों में से मणिभद्र चन्द्रप्रभा नगरी के यक्षों का सेनापति था। यह चैत्ररथ पर्वत पर निवास करने वाला तथा शिव का एक गण था। पुण्यजनी और **मणिभद्र के ३० पुत्र गुहयक कहलाये और मणिभद्र के** 24 **पुत्र यक्ष हुऐ।**[85] ओ0 पी0 भारद्वाज ने चैत्ररथ वन की पहचान जौनसार बाबर के देववन चकरौता से की है।[86] मृत इन्दु की याद में अज का वियोग और राजकाज छोड़कर भटकना, सुदास पैजवन द्वारा यमुना तट पर अज-जनों की पराजय और उनके निर्वासन को दर्शाता है। अज का पुत्र दशरथ है... दशरथ शब्द दृष्द्वती नदी क्षेत्र में दशार्ह/दश/दर्श अथवा दर्शाण का द्योतक है।[87] यह क्षेत्र उस सोम्ब नदी के निकट था जहाँ के शम्भरों को पराजित करने में दशरथों ने त्रृत्सु दिवोदास की सहायता की थी। रामकथा में दशरथ कौशल के राजा है। मान्धाता जनों के मूल में कौशल

है। पिंजौर के समीप घघ्घर/अंगिरसी/ इक्षु/इक्षुमती/चक्षु नदी की सहायक कौशल्या नदी है जो सोलन जिले के कसौली क्षेत्र से निकलती है। चाक्षुष/अंग-अंगिरा जन जिनकी कोई शाखा मनु-मानव कहलाई विधाता (शिवालिक) की तराई के द्याता क्षेत्र में बसी और मान्धाता कहलाई। कहने का अर्थ यह है कि मान्धाता जनों का मूल कौशल, कौशल्या नदी का कसौली क्षेत्र था। यहाँ से वे जहाँ-जहाँ भी जाकर बसे उन्होंने अपने क्षेत्र का नाम कौशल ही रखा। सुदास पैजवन और दशरथ के सम्बन्धों पर और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है किन्तु इतना तो तय है सुदास पैजवन के उपरान्त ब्राहमणवाद और वर्णव्यवस्था के विरूद्व संघर्ष में विश्वामित्र द्वारा राम को लाया गया...(राम का क्षेत्र अज जनों का दर्शाह था। ऐसे में विश्वामित्र राम को न लाते तब भी राक्षसों से राम का संघर्ष होता। सुदास पैजवन के प्रथम गुरू वशिष्ठ, भार्गवों, भारद्वाजों के साथ-साथ हस्तिनापुर के सम्वर्ण, त्रित्सु प्रर्तदन, रक्ष रावण की ओर थे, इन सबने मिल कर सृज्जयों के विरूद्ध सरस्वती क्षेत्र पर अभियान किया; सम्वर्ण ने सुदास पैजवन को मारा; प्रर्तदन, सुघन्वा, भार्गव, रावण, बाण बलिय ने सृज्जय सोमक (जनक) के राज्य पर घेरा (धनुष) ड़ाला ऐसे में मान्धाता जनों के राम भरतों-शैव्यों-राक्षसों के विरूद्ध विश्वामित्र की सहायता ही पा सकते थे। विश्वामित्र के समर्थन पाने का अर्थ था-सृज्जयों का सहयोग मिल जाना। राम विश्वामित्र के साथ सृज्जय-सोमक के राज्य पर पड़े भरतों और शैव्यों के घेरे (धनुष) को तोड़ने में तो सफल हो गये किन्तु उनकी पैत्रिक भूमि पर भरतों का अधिकार हो गया।[88] राम को वनों में निर्वासित होना पड़ा। राजनीति के बदलते आयामों में राम ने रक्षों के विरूद्ध उनके निर्वासित शत्रु यक्षों के वंशज वानरों का सहयोग लिया।[89] वानर जन एक प्रकार से यक्ष ही थे। रावण द्वारा यक्षों की पराजय के उपरान्त ब्रहमा ने देवताओं को आदेश दिया कि यक्षिणिओं के गर्भ से वानरों को उत्पन्न करें।[90]

राम ने दशार्णन (रावण पर) विजय के उपरान्त ऋक्ष, भल्लूक, वानर जनों की सहायता से भरतों से अपना दशार्ह राज्य वापिस पाया। राम ने राक्षस राज्य पर दो अभियान किये, पहले आक्रमण में विजय मिली और दूसरे आक्रमण में अधिकार...। शत्रुघ्न (शिग्रु-श्रूघन-सागरेय)[91] ने लवण (रावण) को मारा और राक्षस राज्य पर अधिकार कर लिया। कथाओं में मथुरा का लवण और लंका का रावण अलग-अलग है किन्तु ऐसा लगता है कि जिस विभीषण को राम ने लंका का अधिपति नियुक्त किया था, उसे मथुरा के लवण ने हटा दिया होगा।

द्रविड़-विदर्भ और दृष्द्वन्तों में साम्य

पुराणों में द्रविड़ों द्वारा लंका पर अधिकार का वर्णन है।[92] द्रविड़-विदर्भ में साम्य है वैसे ही जैसे विदर्भ में दर्भ/दार्भि, कुछ आगे बढ़कर गर्दभ- इसे दशहरे में रावण के शीश पर बैठा दिखाते है उसे मूर्ख बताने के लिये नहीं अपितु गर्दभ और विदर्भ में साम्य है; इसी से द्रविड़ शब्द बना है। विदर्भ और मधु दोनों का सम्बन्ध यादवों से है अतः मधु यादव (जो कि रावण का मौंसा था और जिसने क्षेत्रीय राजनीति में भाग लेकर उस क्षेत्र में आ बसने वाले मान्धाता को मारा था) का पुत्र लवण ; राम द्वारा स्थापित राजा विभीषण के विरोध में रहा होगा. . उसने विभीषण को हटाकर स्वयं को नये रावण के रूप में स्थापित किया होगा ; वह विर्दभ का था अर्थात वही द्रविड़ है; दूसरे शब्दों में दक्षिण भारत के द्रविड जन (विदर्भ जन) दृष्द्वती नदी क्षेत्र से पलायन कर गये जन ही हैं।

राम का हस्तिनापुर पर आक्रमण

शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर को पराजित कर उसका राज्य अधिकृत कर लेना, दोआबे में काली सिंध के पार हस्तिनापुर में जाकर बसे अज-अहि/नाग/हस्ति/ कुरू-कौरव्यों के लिये एक

करारी चोट थी, क्योंकि सरस्वती नदी प्रदेश के सृज्जयों के विरूद्ध आक्रमण के समय से ही राक्षस जन उनके सहयोगी रहे थे। ऐसे में कुरू-कौरव्य जन शान्त बैठ गये होंगे, इसकी सम्भावना नहीं लगती। दूसरे यदि अपनी नई बसाई बस्तियों में वे चुपचाप बैठ भी गये थे तो क्या वे भविष्य में अपनी सीमाओं से बाहर नहीं निकलेंगे? ऐसे में वे कभी भी खतरनाक हो सकते थे। तीसरे सरस्वती नदी प्रदेश के सृज्जय सोमक को घेरने वाले, स्वयं राम के पैतृक राज्य पर सोलह वर्षो तक अधिकार रखने वाले और सबसे बढ़कर तो सुदास पैजवन को मारने वाले भरतों-शैव्यों-नागों-त्रित्सुओं-राक्षसों आदि के संगठन में से केवल राक्षस, त्रित्सु, भरतजन ही तो पराजित हो पाये थे... राम के मुख्य शत्रु के रूप में हस्तिनापुर के नाग कुरू-कौरव्य तो अभी शेष थे। पूर्ण विजय और सम्पूर्ण शत्रु नाश के हेतु राम का हस्तिनापुर पर आक्रमण आवश्यक था। आनन्द रामायण के पूर्णकाण्ड, सर्ग 1-4 में सोमवंशी राजाओं के राम पर आक्रमण का वर्णन है; राम सेना लेकर गये; हस्तिनापुर में छह महीने तक भीषण युद्ध चलता रहा, अन्नतः सीता के अनुरोध पर सन्धि कर ली गई।[90]

राम के हस्तिनापुर पर आक्रमण के समय वहाँ का अधिपति सम्वर्ण रहा होगा। नाग-कौरव्य कुचले नहीं जा सके और यह मान्धाता जनों के भविष्य के लिये ठीक नहीं हुआ; कुछ समय तक तो शान्ति रही किन्तु राम के पश्चात, सम्वर्ण के पुत्र कुरू ने सरस्वती प्रदेश को रोंद दिया।

कुश ने नाग कन्या कुमुदावती से विवाह किया था, नागों ने कुश को पराजित कर[94] उसकी हत्या कर ही दी। कुरूओं के हाथों अपना मूल कौशिकी नदी क्षेत्र खोकर कुश जन पश्चिम में रावी-सतलज क्षेत्र में पलायन कर गये, जहाँ उन्होंने कुशावती (कसूर) और लव जनों ने लवकोट (लाहौर) बसाया; संक्षिप्त में कहा जाय तो इन्द्र पूजक-चित्रित धूसर मृदभांड़ वाले वैदिक जनों का मनु-मान्धाता द्वारा शुरू किया गया अजनाभ खण्ड़ की विजय का अभियान पूरा होते-होते रह गया..., वे वापिस सरस्वती नदी क्षेत्र के भी पश्चिम में ध केल दिये गये।

अजनाभ खण्ड़ के अजमीढों पर दूसरा अभियान पाँडवों का था जो राम के बाद, दो अथवा अधिक से अधिक तीन पीढ़ीयों बाद हुआ। इस बार तो केवल हस्तिनापुर पर विजय ही दर्ज की गई। एलों (एलपत्र नाग) के वंशज कुरू-कौरव्यों के अन्तिम राजा धृतराष्ट्र का पतन हो गया। किन्तु नागों का पूर्ण पराभव तो जनमेजय ने किया था।

जन क्षेत्र, जनस्थान और जनमेजय

पुराणों में बहुत से जनमेजयों का विवरण है।[95]

1. **पुरू का पुत्र जनमेजय** पश्चिमी देशों को जीता ; मान्धाता ने पराजित किया था।
2. **दुश्यंत का पुत्र और भरत का सौतेला भाई जनमेजय**
3. **मरूदत वंशी सोमदत्त का पुत्र जनमेजय** जिसका पुत्र सुमति दशरथ के समकालीन
4. **ययाति के पुत्र अनुवंशी पुरंजय का पुत्र जनमेजय** जिसके पुत्र महामानस/महाशील
5. **परीक्षित का पुत्र जनमेजय,** नाग-यज्ञकर्ता
6. **कुरू के पॉच पुत्रों में से एक जनमेजय**
7. **नाग जनमेजय**

''जन'' एक क्षेत्र था जिसमें बसने वाली जाति अथवा शासक को जनमेजय कहा गया है[96] हो सकता है शुद्ध शब्द यमुना/जमुना से सम्बन्धित रहा हो; यमुनेयजन > जनमेजय।

इस प्रकार जन, जनु, जानु या जन्हू से भी इसका साम्य है। सम्भावना है कि ये जनु/जन ही कालान्तर में जैन कहे गये हों।

जन को पाँचवा लोक कहा गया है जहाँ मनुष्य उत्पन्न होते हैं।[97] जन लोक वरूण लोक है जनों, जनुओं, जन्हुओं अथवा जनमेजयों का क्षेत्र शिवालिक की तराई में अजों का ही क्षेत्र था। खशा और कश्यप के दो पिशाच पुत्र जनु थे; जिनमें से एक अज तो यक्ष था और दूसरा राक्षस। यतुधान की पुत्री जतुधना, अज को ब्याही थी। जतुनाभ उस मणिवरा यक्षिणी का पिता था जो रजतनाभ यक्ष की स्त्री थी। रजतनाभ और मणिवरा की सन्तति यक्षों और गुहयकों के रूप में लोहित्य पर्वत, चैत्ररथ (देववन-चकरौता) पर्वत आदि क्षेत्रों में फैली।[98] जय > जयरा > जरा (राक्षसी) शब्द बहुत कुछ जगाधरी (जयगा) से मिलता-जुलता है। जया तीर्थ कुरूक्षेत्र की एक झील है जो पितरों के लिये पवित्र है। जया नाम के बारह समुद्रतुल्य हद है।[99] दुर्गा का एक नाम जया है और कार्तिकेय की एक अनुचरी एक मातृका का नाम जयावती है।[100] इन्द्र, जिसका निवास हम हरियाणा के यमुनानगर और हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले की सीमा पर स्थित लाल धांग पर्वत माला (महेन्द्र पर्वत) पर मानते हैं का पुत्र जयन्त और पुत्री जयन्ती थी। जम्बू नदी क्षेत्र के जाम्बवान के सोलह पुत्रों में से एक का नाम जय है। यह जय और विजय (विष्णु के पाषर्द) में से (जिन्हें हम द्याता और विद्याता का अपभ्रंश कह आये हैं) द्याता के मिथक से जुड़े क्षेत्र का नाम था अर्थात शिवालिक पर्वतों की तराई। बहुत सम्भव है इसी जय क्षेत्र/अजनाभखंड़ पर वैदिक जनों (जिनमें महाभारत की कालीन पाँडुजन भी सम्मिलित है) की जीत का ग्रन्थ ''जयभारत'' हो जिसे बाद में महाभारत कहा गया।[101] पितरों-पिशाचों का क्षेत्र ''विरज'' और शशिबिन्दु के पुत्र ''ज्यामद्य'' नाम मे ''जय'' शब्द गोचर है।

जन, जानु या जन्हु जाति का नाम व भौगोलिक क्षेत्र जय का मिलान हमें उस जन्हू ऋषि तक लाता है जिसका आश्रम गंगा के बहाव में बह गया था। प्राकृतिक कारणों से गंगा नदी ने मार्ग बदला होगा; अनियमितता और अनिश्चितता के चलते वह अवरूद्ध भी हुई होगी; जन्हू जनों की बस्तियाँ भी बह गई होंगी। आखिर जन्हू जनों ने इसको वश में किया होगा। इससे मिथक बना कि जन्हू ने गंगा को पी लिया; बाद में इसे किसी दूसरे अंग से निकाला[103] ; गंगा का एक नाम कावेरी भी था; कावेरी को अर्धगंगा कहते है। सम्भवत: कावेरी, गंगा के प्राचीन बहाव मार्ग का नाम रहा होगा-रूड़की, मुजफ्फरनगर, मेरठ, वाला बहाव मार्ग, जहाँ जन्हू जन बसे थे। युवनाश्व की पौत्री, मान्धाता की पुत्री कावेरी जन्हू ऋषि की स्त्री कही गई है। कावेरी-गगा अपना प्राचीन मार्ग छोड़ गई। फिर भी अनियमितताऐं बनी रहीं; आखिरी और सफल प्रयास भागीरथ के नाम रहा; चाहे यह सब प्राकृतिक अथवा भौगोलिक कारणों से अपने आप हो गया हो। किन्तु कावेरी नदी नहीं लाई जा सकी; वह गंगा के रूप में आई। कावेरी को लाने के प्रयास आज भी होते हैं... कावेरी का अपभ्रंश शब्द आज काँवर या काँवड़ है।

कावेरी नदी क्षेत्र के कावेर जन थे कुबेर यक्ष

सहारनपुर-रूड़की के बीच नागदेव की खोल, हो सकता है तब नर्वदा (नागरवदा) हो और यह उक्त कावेरी से संगम करती रही हो, जहाँ कुबेर ने तप कर शिव से यक्षों के राजा हो जाने का वरदान पाया था। कावेरी स्त्रीलिंग है, पुल्लिंग कावेर रहा होगा जिसका अपभ्रंश या पौराणिक रूप कुबेर हो? जो भी हो कावेरी-गंगा के तटों पर निवास करने वाले कावेर-कुबेरजन यक्ष ही थे। काव्य गण पितरों (पिशाचों) के एक वर्ग का नाम है; वे घी

पीते थे। उर्वशी अपसरा (अपूषरा > पूषा-पूषिनी > पिशाचिनी) भी केवल घी का सेवन करती थी। पौराणिक कथा है कि शिव की नंग-धड़ंग बारात देख कर पूषा हंसा था इस पर शिव के गण मणिभद्र ने उसके दाँत तोड़ दिये थे, सम्भवतः इसीलिये वह कुछ खाने चबाने लायक नहीं रहा और केवल घृत का सेवन करता रहा होगा। कावेरी भद्राश्ववर्ष (बद्रीनाथ, बदराहू अथवा वर्तमान उत्तरांचल) की नदी है। यह भी सम्भावना है कि कावेरी, सोलानी नदी हो और कभी नागदेव की खोल से मिलती रही हो या फिर कुछ कुछ ऐसी ही दूसरी कोई सम्भावना रही होगी... क्योंकि दक्षिण भारत की कावेरी और मध्य भारत की नर्वदा नदियों का संगम तो होता ही नहीं; और हो भी नहीं सकता; ऐसे में कावेरी-नर्वदा संगम की व्याख्या सहारनपुर-मुजफ्फरनगर जिलों में ही हो सकती है क्योंकि यक्षों-पिशाचों-पूषा जनों का प्रदेश यहीं सिद्ध होता है।

जनु/जानु/जन्हू जनों का साम्य उन दनु जनों से भी बैठता है जो 61 थे। मतस्य में दानवों की संख्या 100 है। जनु/जानु/जन्हू/जाम्ब (वन्त)/ जन्तु/यतु/दनु-दानव एक ही अज-अहि आदि (पूषा-पिशाच) जन ही थे इनकी अलग-अलग बस्ती-कबीलों, टोटेमों व देशान्तर के कारण आये शाब्दिक उच्चारण में अंतर से ये अलग-अलग कहे गये। अज शब्द से ही उस अजय की व्युत्पत्ति है जो अजमेर नामक स्थान में है। कालान्तर में जब अज/गज लोग इस क्षेत्र से राजस्थान-गुजरात क्षेत्र में गये तो गुर्जरों के रूप में उभरे। वे अपने साथ अजमेर, सम्पादलक्ष (शिव-पाद-पलक्ष); नागरवदा/नागदा शाकम्भरी (देवी) जैसे शब्द दोआबे के शिवालिक क्षेत्र से ही लाये थे।

गुजरात में नहीं अपितु श्रूघन था यादवों और गुर्जर प्रतिहारों का मूल प्रदेश

यादवों का मूल प्रदेश गुजरात मानते हुऐ विद्वानों का कहना है कि पहले गुजरात के कच्छ-काठियावाड़-आनर्त-प्रभाष की ओर से दोआबे की ओर बढ़ आये यादव जन कृष्ण के काल में पुनः अपने मूल प्रदेश में लौट गये [१०३] असल में कच्छ, काठियावाड़, आनर्त नामों के पीछे क्रौंच (मैनाक/शिवालिक के यमुना के समीप का भाग) काथा/किन्थालाा (सिन्थाला नदी क्षेत्र) और मनु/ऋक्ष (दोआबा क्षेत्र में शिवालिक) की तराई में अर्न्तवेदी भूभाग है। यादवों का गुजरात की ओर से मथुरा अथवा दोआबे की ओर पलायन कभी नहीं हुआ। वे असल में सरस्वती नदी के हरियाणा प्रदेश में निवास करने वाले गैरिक मृदभांड संस्कृति के जन थे जिन्होंने भारत के विभिन्न भागों में मूलतः मध्य, दक्षिणी और पश्चिमी भारत में जाकर लाल कृष्ण मृदभांड़ों की शुरूआत की। यहॉ तक कि समूचे एलवंशी, अनु, अमावसु, पांचाल, कुरू कौरव्य आदि जन कथित आर्य और चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति वाले वैदिक जन थे ही नही। कपिलवस्तु के शाक्य (जिनके विषय में आगे पढ़ेंगे) लिच्छवी, वज्जि आदि भी यादव जनों की भांति गैरिक मृदभांड संस्कृति के ही जन थे।

ऋग्वेद 1.174.9 ; 4.30.17 ; 5.31.8 ; 6.20.12 ; 6.45.1 में इन्द्र द्वारा यदुओं को जलप्लावन से उबारे जाने का उल्लेख[104] से ज्ञात होता है कि यादवों के साथ यह घटना सरस्वती नदी प्रदेश में ही घटी, क्योंकि ऋग्वेद इसी भू-भाग पर घटी घटनाओं का संकलन है। घटना का क्षेत्र यमुनानगर सहारनपुर, करनाल, कुरूक्षेत्र रहा होगा क्योंकि यही क्षेत्र सरस्वती, यमुना, कालिन्दी, कौशिकी, दृष्द्वती-राक्षी, मस्कारा शाकम्भरी और गेजराराव, आदि नदियों का क्षेत्र था। यादवों के क्षेत्र में ही मान्धाता जनों की बस्तियॉ बसीं। बस्तियाँ बसाने के लिये उचित स्थान के चुनाव में मस्कारा (> मतस्यकारा/मच्छकारा) नदी प्रदेश के मतस्य जनों ने उनकी सहायता की होगी-यही घटना जलप्लावन के बाद मनु-मतस्य के

मिथक का आधार बनती है।

सगर

पुराणों में सूर्यवंश की एक शाखा बाहुकवंश की है :- बाहुक - सगर - असमन्जस - अशुंमान - दिलिप - भागीरथ। सगर राजा बाहुक के पुत्र थे, उनकी माता यादवी थी। सगर के 60000 पुत्रों को कपिल मुनि ने भस्म कर दिया था। आधुनिक विद्वान सगर का राज्य मध्यप्रदेश में बेतवा और केन नदी क्षेत्र में सागर के आसपास मानते हैं। इसके लिये उनके पास समीप ही नर्वदा क्षेत्र के हैहयवंशिओं का आधार है। हैहयों ने सगर के पिता बाहुक का नव स्थापित राज्य छीना था। बाद में सगर ने काशी के प्रर्तदन और हैहयों के कुलगुरू भार्गवों की सहायता से हैहयों को पराजित कर पिता बाहुक का राज्य वापिस छीना था। प्रर्तदन ने हैहय वीतीहोत्र को उसकी राजधानी में घुसकर हराया ; प्राणरक्षा का दूसरा कोई उपाय न देख कर वीतीहोत्र कुलगुरू भार्गवों के आश्रम में शरणागत हुआ... अंततः ऋषि हो गया।

पुराणों में सगर को अयोध्या का राजा कहा गया है... अतः कम से कम वह मध्यप्रदेश के सागर जिले से सम्बन्धित नहीं हो सकता। वह अयोध्या जो सगर की थी... यमुना तट पर अजों, यक्षुवों और शिग्रुओं के क्षेत्र (अजनाभ खण्ड़) में रही होगी। ऋ0 3.53.7 **में वर्णित "सुदास वंशी भोज क्षत्रिय"** शब्द के आधार पर सुदास सहत्रबाहू प्रमाणित होता है। **अथर्ववेद** 5.19.1 में **"भृगु हिंसित्वा सृज्जया वीतीहव्या पराभवन"** से हमें पता चलता है कि सृज्जयों की वीतीहव्य शाखा ही भार्गवों को प्रताड़ित -परेशान करने वाले (अथर्ववेद 5.18.10-11) हैहय हैं। तब **"सगर के पिता बाहुक का राज्य हैहयों ने छीना था"** का आधार है कि सुदास पैजवन ने यमुना तट पर शिग्रुओं को पराजित किया था। साम्य देखिये शिग्रु > श्रूघन > सहारन (पुर) > सागरन (पुर) > सागर > सगर/शिग्रु।

हस्ती जन थे शिग्रुओं के पूर्वज सगर के पिता का बाहुक नाम शिवालिक पर्वतों की तलहटी में बसे वसुजनों का द्योतक है (वसु > वसुधान/वसुन्धरा > बहुधान्यक > भादानक)। वसुओं/वासुकियों के साथ-साथ यमुनानगर-सहारनपुर-जींद-जगाधरी का क्षेत्र यादव-युगन्धरों का भी मूल प्रदेश था। दृष्द्वती नदी क्षेत्र का दर्श/दर्ह/दर्भ... यादवों के विदर्भ के मूल में है। सगर की स्त्री केसिनी (सिनी-वाली नदी का द्योतक शब्द) वैदर्भी थी। हि0 रा0 सा0 के अनुसार सगर के पिता का नाम असित और माता का नाम कालिन्दी था। कालिन्दी कारा-कालिन्दी क्षेत्र का द्योतक है तथा असित और बाहुक में साम्य है- यमुना के सहारनपुर जिले में अज जनों का मूल प्रदेश था। अज जन ही अजमीढ़ है अर्थात अजनाभखण्ड़ के वे हस्ति/गज जिन्होंने हस्तिनापुर बसाया। हस्ती का अपभ्रंश हस्त - हाथ - बाहु और इसी हस्ती का अपभ्रंश अस्त अथवा असित। या फिर अज/अहि से बना असि > असित।

कपि/कपिल और कपिलवस्तु सगर के 60000 पुत्रों की संख्या एकदम अविश्वसनीय है; तो भी उन्हें कपिल मुनि द्वारा भस्म किये जाने की पौराणिक कथा का भौगोलिक आधार मिलता है। यह हो सकता है कि मान्धाता जनों के यमुनानगर और यमुना नदी के पार प्रसार के उपरान्त कुछ सागरेय जनों ने कुछ और पूर्व में बढ़कर रूड़की तथा हरिद्वार के आस पास व इसके दक्षिण में बस्तियाँ बसाई हों। उस समय यह क्षेत्र कपि जनों के अन्तर्गत रहा होगा और अपने क्षेत्र में बसी सागरेयों की बस्तियों को कपि जनों ने उजाड़ दिया होगा। कपि अजनाभखण्ड़ के अन्तर्गत अजों की एक जाति थी। अज, अहि, कपि, कपिल, पिशाच, वानर और यहाँ तक कि कपोत जनों में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

– कपि, अज और शण्ड़ नामक दो पिशाचों का पिता था

– कपिला, दक्ष प्रजापति (निवास स्थान हरिद्वार-कनखल) की एक पुत्री का नाम है

– दक्ष का वध करने पर दक्ष का कपाल शिव के हाथों से चिपक गया... शिव एक कपि का वध कर कपाली कहलाये, (जिस प्रकार मधु के वध के पश्चात विष्णु मधुसूदन हुऐ) दक्ष एक कपि ही था तभी उसकी पुत्री का नाम कपाली हुआ होगा (जैसे जनक की पुत्री जानकी); दक्ष के कबन्ध पर अज का शीश स्थापित करने का अर्थ यह है कि उपरी दोआबे में कपि जनों के बाद अजों/शैव्यों का अधिपत्य हो गया, जैसे कभी यमुना तट पर यक्षों के पूर्ण पराभव के उपरान्त रक्षों-राक्षसों का प्रभाव स्थापित हुआ; यह अलग बात है कि कपिजनों का पूर्ण पराभव कभी नहीं हो पाया, हॉ कुछ समय के लिये शक्ति सन्तुलन अवश्य अजों के हाथों में आ गया था, कपिजन समाप्त या कम प्रभावी नहीं हुऐ थे।

– कपिशा कश्यप की स्त्री और पिशाचों की माता थी ।

– पुलह की स्त्री कपिशा से पिशाच और कुष्माड़ हुऐ।

– कपिल और कपित्थक क्राद्रवेय नाग हैं

– एक राक्षस और खशा की सात पुत्रियाँ कपिला हैं जिन्हें कपिलेय गण कहा जाता है।

सारांश यह है कि कपि अथवा कपिल जन गंगा यमुना दोआबे के गैरिक मृदभांड़ संस्कृति **OCP** के जन रहे होंगे; शुरूआत में **PGW** वाले सागरेय (शिग्रु) जनों से इनका संघर्ष हुआ। पिछले जन्म के कुष्मांड़ पिशाच-कपि के अज और शण्ड़ नाम के दो पुत्र हुऐ।[105] हनुमान वानर भी था और कपि भी। हाथी रूपी साम्ब दानव को हनुमान के पिता केसरी ने मारा था। सुग्रीव का स्वसुर सुषेण वानर था किन्तु उसके पंख थे उसका सम्बन्ध नागों से था[106] कपि, रैवत के पुत्र का नाम है अर्थात रैवत पर्वत पर कपि जनों का निवास था। रैवत लौहित्य का पर्यायवाची लगता है। और उस इलावर्त का भी जो जम्बू द्वीप के मध्य एक खण्ड़ था। मणिवरा और रजतनाभ का पुत्र तथा चैत्ररथ पर्वत पर रहने वाले यक्षों के सेनापति मणिभद्र यक्ष का भाई मणिधर लौहित्य पर्वत पर निवास करता था ; वह एक यक्ष था।[107] और रैवत की कुशस्थली को यक्षों ने उजाड़ा था। रैवत की पुत्री रेवती बलराम की स्त्री थी। यह भी उल्लेख है कि मैंद के भाई द्विविद वानर ने रैवत पर्वत पर कुशस्थली को उजाड़ा। अर्थात यक्षों का मूल लौहित्य पर्वत यमुना तट के आस पास होना चाहिये सम्भवतः कौशिकी नदी क्षेत्र ही कुशस्थली/कुशद्वीप हो-वहीं जहाँ यमुना तट पर सुदास पैजवन ने अजों-यक्षुवों और शिग्रु जनों को पराजित किया था। गुजरात के आर्नत अथवा रैवतक से यक्षों का सम्बन्ध का आधार यमुना तट की घटना है।[108]

सगर जनों के सामने असमंजस की स्थिती

सगर (शिग्रु जनों) का राज्य यमुना तट के समीप था, ऋक्ष पर्वत ऋक्षों (रीछों) भल्लूकों, वानरों, कपियों, पिशाचों-पितरों का मल निवास स्थान था। सगर के पुत्र असमंजस के विषय में किवंदिती है कि वह कुछ दिन ऋक्ष वानरों में रहा और फिर पश्चिम में चला गया। कहा गया है कि प्रजा असमंजस को सहने को तैयार नहीं थी।[109] असल में हुआ यह होगा कि कपिल/कपि जनों द्वारा सागरेय जनों की असंख्यों बस्तियाँ उजाड़े जाने के उपरान्त सागरेय जन कुछ पीछे पश्चिम में हटे होंगे।

अपने 60000 पुरखों को तारने के लिये भागीरथ गंगा नदी को पृथ्वी पर लाये। इसका अर्थ यह नहीं है कि भागीरथ से पूर्व गंगा नदी का अस्तित्व नहीं था; पहले वह कावेरी या भद्रा के नाम से हरियाणा की भूमि पर बहती हुई भद्रा नोहर की तरफ पश्चिम में निकल जाती थी।

भारतीय प्राद्योगिकी संस्थान (*I.I.T.*) रूड़की के भूवैज्ञानिक **डा० ब्रहमप्रकाश** ने विस्तृत अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष दिया है कि 8000 वर्ष पूर्व से 2500 वर्ष पूर्व तक गंगा, हरिद्वार से रूड़की होकर मेरठ की ओर बहती थी और संगम तब मेरठ के समीप था।[110] यह संगम गंगा-यमुना का नहीं अपितु गंगा और कारा-कालिन्दी का रहा होगा। बाद में जब गंगा के मार्ग परिर्वतन की घटना हुई तो यह उस स्थान से बहने लगी जहाँ कपि/कपिल जनों ने 60000 सागरेयों को उजाड़ा था। गंगा के इस मार्ग परिवर्तन की घटना पूर्णतया प्राकृतिक ही थी ; जिसे भागीरथ प्रयास के पौराणिक मिथक का रूप दे दिया गया। हो सकता है कि शुरूआत में गंगा के बहाव मार्ग नियमित करने का प्रयास भागीरथ ने किया हो। कपि और कपिल जनों को भी गंगा की अनियमितता ने उजाड़ा होगा... फलत पहले काम्पिल्य और फिर आगे बढ़कर कपिल वस्तु इन्हीं कपि-कपिल जनों ने बसाया होगा।

राज्य बंटवारे में ययाति के पुत्र अनु को हरिद्वार, सहारनपुर के उत्तर में शिवालिक पर्वतों के पार का पर्वतीय भूभाग मिला था। शिवालिक पर्वत माला अनु पर्वत था और इसके दक्षिण का दोआबा प्रदेश अन्तर्वेदी। अनुवंशी राजा उशीनर की इन्द्र द्वारा परीक्षा लेने की कथा पुराण-प्रसिद्ध है। जिसमें अग्नि ने कपोत का रूप धरा और इन्द्र ने बाज का। उशीनरों का प्रदेश गंगा के उपरी प्रदेश को माना जाता है। कथा के पीछे ''इन्द्र पूजक **PGW** जनों का पूर्व की ओर प्रसार'' ही आधार है उशीनरों जो अज जन ही थे, ने कपोत/कपि/कपिल जनों को और उनके क्षेत्र को नई सभ्यता-संस्कृति के आग्नेय जनों से बचने की कोशिश की होगी। कथा का स्वरूप जाहे जो रहा हो किन्तु दोनों ही नहीं बच पाये। बाद के घटनाचक्र में अनुजन यौधय, शिवि, वृषदर्भ, सुवीर, कैकय, मद्र आदि शाखाओं में पशिचम की ओर पलायन को बाध्य हुऐ तो कपोत/कपि/कपिल जन पूर्व और दक्षिण पूर्व में पलायन कर काम्पिल्य, कपिलवस्तु और उसके आगे निकल गये। जहाँ जाकर इन गैरिक मृदभांड़ के जनों ने काले चमकदार मदृभांड़ संस्कृति BPW का सूत्र पात किया। - अर्थ यह कि कपिल वस्तु के जन एंव शासक सूर्यवशी थे ही नहीं, कपिलवस्तु,. अयोध्या, जनकपुरी, वैशाली आदि के वंश सूर्यवंशी कहे गये हैं किन्तु इनके ठिकानों पर कथित आर्यो के चित्रित धूसर मृदभांड़ मिलते ही नहीं, कपिलवस्तु का राजवंश तो अज था। चित्रित धूसर मृदभांड़ संस्कृति के इन्द्र मित्र वरूण पूजक कथित आर्यों अथवा वैदिक जनों के विरोधी उनके ब्राहमणवाद, एवं वर्ण व्यवस्था के विरोधी... आगे भी इस विरोध के सभी लक्षण हम कपिलवस्तु से चले बौद्ध धर्म में पाते हैं...

इस प्रकार सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में सूर्यवंश और चन्द्रवंश आदि की कोई भूमिका नहीं... बौद्ध धर्म के बढ़ते प्रभाव ने ब्राहमण वर्ग का एक प्रकार से बहिष्कार ही कर दिया था; जिसके कारण ब्राहमणों ने पुराणों तथा बाद के साहित्य में बुद्ध को विष्णु का एक अवतार बताकर उसे राम से भी जोड़ दिया जो पुराणों में अज का पौत्र है। अज अर्थात अहिं जिस विष्णु के अवतार है वह भी कपि है अर्थात कपिजनों का आराध्य देवता। तभी तो नारद द्वारा रूप माँगने पर विष्णु उसे अपना कपिरूप दे देते हैं जिसके कारण अपमानित होने पर नारद उन्हें शाप देता है कि राक्षस संहार के लिये जब आप जन्म लेंगे तब कपि ही आपकी सहायता करेंगे। कपि और पिशाचों में कोई भेद नहीं और कपिलवस्तु का राजवंश भी पिशाचों से सम्बन्धित है, यह बात हम सिंहल की चर्चा में साफ समझ सकते हैं।

सिंहल और पिशाच

सिंहल को सीलोन से समीकृत करते हुऐ कई विद्वान सामान्य तह लंका और सीलोन

को एक ही मानते हैं जबकि दोनों के अलग-अलग होने के प्रमाण हैं। अश्वमेघ यज्ञ के अश्व की खोज में राजा सगर के पुत्रों ने पृथ्वी को चारों ओर खोदा, जिससे आठ उपद्वीप-**चन्द्रशुक्ल, आवर्तन, रमणक, मन्दिरहरण, पाँञ्चजन्य, लंका, सिंहल और स्वर्णप्रस्थ** बन गये। सगर सहारनपुर क्षेत्र के शिग्रु जनों का द्योतक है तो लंका राक्षी नदी क्षेत्र में थी- सहारनपुर जिले के दखिण पश्चिम में; स्वर्णप्रस्थ, सोनप्रस्थ अथवा सोनीपत है।[111] निकटता की दृष्टि से सिंहल, सहारनपुर और सोनीपत जिलों के बीच मुजफ्फरनगर या करनाल जिलों में कहीं होना चाहिऐ। बालरामायण नाटक के दशम अंक में लंका से लौटते हुऐ राम का विभिषण से कथन -**''पश्यस्मग्रे जलधि पारिखं मंड़लम सिंहलनाम''** के अनुसार सिंहल लंका से आगे, किन्तु कुमारी द्वीप से पहले था।[112] जबकि वर्तमान लंका से आगे दक्षिण में हजारों कि0 मी0 तक समुद्र ही समुद्र है और जाहिर है सिंहल, हिन्द महासागर या अन्टार्कटिका को नहीं कहा गया होगा। इसके बाद भी कुमारी द्वीप था। इससे लंका का हमारा अभी भी तक का समीकरण गलत हो जाता है।

लंका वास्तव में राक्षी नदी क्षेत्र में सहारनपुर जिले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में थी। अलबेरूनी ने एक स्थान पर लिखा है **''सिंहल जिसे हम सरान द्वीप कहते हैं''** यहाँ सारान द्वीप का सहारनपुर से और सिंथल का सिंहल से साम्य दृष्टिगोचर है। बहुत सम्भव है कि सीता-सरस्वती के सरत्सीता > सीता नदी के नाम पर प्रदेश का नाम सिंथल पड़ा हो। सहारनपुर जिले के दक्षिण-पश्चिम में यमुना नदी की एक छोटी सी सहायक नदी सांदली है। यह सांदली < सिन्दल < सिन्थल < सिंहल में साम्य बताती है, भाषान्तर में सिन्थल = किन्थल = काथा। हालाँकि काथा इसके दक्षिण में दूसरी नदी है किन्तु सिंहल यहां तक भी विस्तृत रहा होगा... इसके दक्षिण पूर्व में कान्यकुब्ज को कुमारी द्वीप कहा गया है। राक्षी नदी के राक्षसों को निकट क्षेत्र में होने के कारण सिंहल के निवासी भी राक्षस ही कहे गये।

पीछे हमने मान्धाता के सन्दर्भ में द्याता और विद्याता क्षेत्रों की चर्चा की, जिनसे जय-विजय के मिथक का विकास हुआ। विष्णु के इन दो पार्षदों को मोहिनी-स्वयंवर में अपने कपिरूप पर हंसने के कारण तीन जन्मों तक राक्षस हो जाने का शाप नारद ने दिया था। सहारनपुर का पश्चिमी क्षेत्र पितरों-पिशाचों का विरज था। पिशाच के सोलह जोड़े जुड़वाँ कहे गये है।[113] पिशाचिनियाँ बिल्ली के मुख वाली विड़ाली व्याघ्री एवं मार्जारी थी। अर्थात एक टोटेमिक जाति।[114]

सोलह की संख्या का मिथक अपने आप में एक विस्मयकारी इतिहास छिपाये है। सोलह उस आठ का दुगना है जो आठ वसुओं, नागों के अष्टकुल के साथ कृष्ण से कई प्रकार से सम्बन्धित है कृष्ण की सोलह हजार रानियाँ थी (सोलह हजार एक सौ आठ); जाम्बवान को विद्याधर कहा गया है जो उसे विजय के मिथक से जोड़ता है। महावंश की कथा के अनुसार वंग देश की राजकुमारी का विवाह एक व्याघ्र से हुआ, जिससे एक पुत्र और एक पुत्री हुऐ। पुत्र के बड़ा हो जाने पर राजकुमारी ने उसके हाथों अपने पति व्याघ्र का वध करवा दिया और अपने पिता के पास लौट आई। इसके पुत्र और पुत्री ने भटकते हुऐ आपस में विवाह कर लिया; एक नगर बसाया और राज्य स्थापित किया। इनके सोलह जोड़े पुत्र हुऐ। इनमें से सबसे बड़ा विजय बहुत क्रूर और अत्याचारी था। देश निकाला मिलने पर यह अपने साथ सात सौ सेवक लेकर सीलोन (सिंहल) गया जहाँ इसने राक्षसों का संहार किया और अपनी सत्ता स्थापित की, बाद में विजय एक पुण्यात्मा राजा बना।[115] विजय और विद्याद्यर में साम्य है और जाम्बवान के व्याघ्री से पिशाच, मार्जार आदि सोलह पुत्र हुऐ,

जाम्बवान जमुना नदी के क्षेत्र के निवासियों का यदि द्योतक नाम है तो क्या इसके वंशज पिशाच आदि सिंहल के निवासी बने थे ?

पिशाचों को रावण ने पराजित किया था इससे इनके लंका के समीप होने की धारणा बनती है। राक्षसों के पराभव के उपरान्त पिशाचों ने पुनः अपने क्षेत्र सिंहल पर अधिकार कर लिया होगा। उपरोक्त कथा में वंग पूर्व का वंग नहीं अपितु आनवों के अन्तर्गत वे वंग हैं जो बाद में पूर्व की ओर पलायन कर जाते है रोमिला थापर जी का कथन है कि महावंश के विजय और सिंहल के मिथक में वर्णित घटनाऐं वही मालूम होती हैं जिनका वर्णन एक रूढ़ के रूप में सातवीं सदी ई0 पू0 में उत्तरी भारत के कुछेक गणतांत्रिक राज्यों के उदभव के सिलसिले में अन्य बौद्ध ग्रन्थों में (महावंश I 348-52) में किया गया है। इनमें से कई उदभव मिथकों में कौटम्बिक विवाह और सोलह जुड़वाँ जोड़ों का जिक्र हुआ है इसका एक उदाहरण उत्तरी बौद्ध पराम्परा की कृति महावस्तु में वर्णित शाक्यों का उदभव है।[116] विजय की सीलोन यात्रा और सोलह जोड़े जुड़वाँ तथा कौटम्बिक विवाह परम्परा, पिता का व्याघ्र होना उसे पिशाचों/अजों/कपियों से जोड़ता है और कपिलवस्तु के उन शाक्यों से भी जिन्हें बाद के ब्राहमण साहित्य ने सूर्यवंशी बना दिया। शाक्यों का उदभव और यहाँ तक कि इक्षाकुओं का उदभव भी उत्तरी बौद्ध पाठों में मतस्यवंशी राजा तामनत्सो से ही होती है।[117] इक्षवाकु जन भी तितिक्षू[118] ताक्ष्य[119] ऋक्ष, दक्ष, रक्ष, तक्ष, यक्ष आदि की भाँति एक ही सभ्यता-संस्कृति के जन प्रतीत होते हैं, इनमें से कुछ पशुपालक और वनों पर आश्रित खाद्य पदार्थों के संग्राहक ही बने रहे जबकि दूसरे इससे थोड़ा सा आगे बढ़कर पशुपालक कृषक बन गये जिनका समाज काम के हिसाब से वर्णों में बंटा और अधिक धार्मिक आस्था वाला कर्मकांडी हुआ; ये इन्द्र पूजक चित्रित धूसर मृदभांड़ों वाले कथित आर्य हुऐ और दूसरे जिनके विकास की दर कम रही... गैरिक भांड़ों वाले जन थे। **आर्य कोई समाज, शाखा या वंश नहीं अपितु अरि (शत्रु) पर विजय प्राप्त करने वाले उर-अंगिरा जनों को ही कहा गया है।** सोलह जुड़वाँ जोड़ों की कथा कोलिय और वैशाली के लिच्छवी वंश के उदभव के विषय में भी है जो शुरू में चरवाहे (पुशपालक सभ्यता वाले) थे।[120] इससे इनके गंगा यमुना दोआबे के उपरी भागों में गैरिक मृदभांड़ संस्कृति के जन होने की धारणा को बल मिलता है इन अज/कपि/पिशाच/मतस्य/वानर/नाग जनों ने ही पूर्व में उत्तरी काले ओपदार मदृभांड़ों की शुरूआत की होगी। इनके अनेक स्थलों पर काले -लाल मदृभांड़ों का एक पतला सा स्तर प्राप्त हुआ जो उ0 का0 ओ0 मृ0 काल के पूर्व बस्तियों के प्रारम्भ को प्रदर्शित करता है।[121]

कम्बोज

काम्बोज भारतीय इतिहास का सर्वाधिक विवादास्पद विषय है; पुराणों के अनुसार काम्बोज नर्वदा के हैहयों के सहयोगी थे। इन्हें सगर ने पराजित किया था। अब जैसा कि हम ऊपर कह आये है कि हैहय वैदिक सृज्जय जन हैं और सगर, यमुना तट के उन शिग्रु जनों का द्योतक शब्द है जो सहारनपुर जिले में सरस्वती, यमुना, कारा-कालिन्दी आदि नदियों के अतिरिक्त पानी से बनने वाले छोटे-बड़े असंख्य सरों वाले सागर क्षेत्र में निवास करते थे तो कम्बोज जिन्हें सगर ने पराजित किया था वैदिक जन होने चाहिऐ। आधुनिक विद्वान काम्बोजों को काश्मीर में राजौरी से जोड़ते हैं।[122]

ऋ0 5.1.126-7 में अच्छी ऊन के लिये प्रसिद्ध कम्बोज और गंधार महाभारत में एक दूसरे से सम्बन्धित कहे गये हैं।[123] मेरे विचार में गन्धार वे द्रहयु अथवा गन्धमादन के निवासी

गन्धर्व जन है जो गिरि नदी के उदगम में गुमा, गुण्ड़, गोड़ना से लेकर नदी के पूर्वी तटों पर होते-होते शिमला सोलन में शिवालिक पर्वतों (तब का पारियात्र पर्वत) पर बसे थे। पर्वतों से वे उत्तरी हरियाणा व सहारनपुर जिलों में फैल गये थे। इनका मुख्य व्यवसाय घुमन्तु चरवाहों के रूप में गाते-बजाते हुऐ लोगों का मनोरंजन करना था। ऋग्वैदिक काल के उपरान्त वे पश्चिम में पलायन कर गये। दूसरी ओर कम्बोज जन जिन्हें भूरिदत्त जातक में अनार्य व जंगली कहा गया है[124] सरस्वती नदी के दौनों ओर विस्तृत काम्यक वन में निवास करने वाले वसु/वासुकीजन थं। वसु जन ही बहु > भोज जन थे। सुदास पैजवन के अश्वमेघ यज्ञ के समय भोजों का वर्णन सुदास पैजवन के वंशजों के रूप में और उसके सहायक के रूप में ऋ0 3.53.7 में किया गया है। सृज्जयों/पौराणिक हैहयों का नेतृत्वकर्ता सुदास पैजवन ही सहत्रबाहु कृतवीर्य अर्जुन था। सुदास पैजवन के प्रत्येक अभियान में साथ किम्य-भोजों/कम्बोजों को सुदास की मृत्यु के बाद सगर/शिग्रु जनों ने पराजित किया। सुदास के वंशज यदि भोज थे तो पौराणिक साहित्य में भोज यादवों की शाखा है। महाभरत में कहा गया है **''कम्बोजानाजच्येगण''**[125] प्रोफेसर **रीज डै़विस** के अनुसार आरम्भिक युद्ध काल में द्वारका कम्बोजों की राजधानी थी।[126] अवश्य ही प्रोफेसर **रीज डै़विस** सही हैं क्योंकि कम्बोज सरस्वती नदी प्रदेश में था, वहीं जगाधरी के स्थान पर शुरूआती मूल बस्ती द्वारका थी जो सरस्वती की अनियमित बहाव में डूब गई। महाभारत या कृष्णकाल के तुरन्त बाद बौद्ध काल शुरू होता हैं किन्तु लोक मान्यताओं में भोजों की राजधानी द्वारका बनी रही। भोज और कम्बोज में विशेष अन्तर मात्र इतना है कि भोज यादव संघ के अन्तर्गत रहे होंगे जबकि जो भोज वनों पर आश्रित थे, बस्तियों से दूर रहजनी करते, बर्बर, मलेच्छ बने रहे और ये ही कम्बोज कहलाये। कर्ण ने करनाल के समीप इन्हीं कम्बोजों की बस्ती, किसी राजपुर को जीता होगा। निकटता की दृष्टि से यह उचित भी है। कर्ण कभी काश्मीर को ओर नहीं गया होगा, हाँ बाद में कम्बोजों की कोई शाखा काश्मीर की ओर जाकर गन्धार के आसपास बसी होगी।

भोज, अन्धक आदि यादवों के सम्बन्ध में आया वृष्णि शब्द बहुत कुछ उस वराह से मिलता जुलता है जो विष्णु के वराह अवतार में है। ये मस्कारा नदी क्षेत्र के मकर भी थे। यादव युगन्धार क्षेत्र के वराह > वृहषि > वृष्णि > बर्हि > बल्हि अथवा बाल्हीक थे। इन्हीं का भाषान्तर बैल अथवा वृषभ या वृष्णि है। महाभारत द्रोण पर्व में वृष्णि तथा अन्धक दोनों वंशों को ब्रात्य कहा गया है। अन्धकजन ही वे यादव जन हैं जो दक्षिण भारत में जाकर आन्ध्र कहलाये। शतपथ ब्रा0 13.5.4.21 में भरतवंशी राजाओं द्वारा अन्धक वृष्णि के पूर्वज सात्वत को हराये जाने की चर्चा है और भरतवंशी जिन्होंने सात्वतों से उनके यज्ञ का घोड़ा छीन लिया था, ने शतपथ ब्रा0 13.5.4.11 ; ऐत्तरेय ब्रा0 8.23 और महाभारत के अनुसार सरस्वती, गंगा और यमुना के तटों पर यज्ञ किया था।[127]

हिरण्य दैत्य

ऋ0 3.53.7 में कहा गया है कि भोज क्षत्रिय सुदास वंशी थे। इसका अर्थ यह हुआ कि सुदास पैजवन, यादव था। अथर्ववेद 5.18.10 ; 5.19.1 के **''भृगु हिंसित्वा सृज्जया वीतीहव्या पराभवन''** के अनुसार वीतीहव्य सृज्जयों की शाखा है जिन्होंने भार्गवों को त्रस्त किया था। पुराणों में वीतीहोत्र हैहयवंशी है हैहयों ने भार्गवों को त्रस्त किया था। इन सब का अर्थ यह हुआ कि वैदिक सृज्जय ही पौराणिक हैहय हैं और हैहय कृतवीर्य सहत्रार्जुन (सहत्रबाहु) सुदास पैजवन ही है।

इसी समीकरण को आगे बढ़ाते हुऐ ब्राहमण विरोधी वैदिक सृज्जय ही पौराणिक हिरण्य

दैत्य है, ''स'' अक्षर का ''ह'' में परिवर्तन है बस... और इसका अर्थ भी यही हुआ कि सृज्जय, यादव और हिरण्य दैत्य एक ही हैं... सृज्जयों का सृज्जयाना ही हिरण्यों (हिरण्यवती नदी/घघ्घर) का हिरण्ययाणा अर्थात हरियाणा है। हिरण्याक्ष का क्षेत्र पाताल-पातालवाली अर्थात पटियाला की पटियाली नदी है। सृज्जयों की शाखा भोज और वीतीहव्य... मध्यभारत के नर्वदा नदी तट पर माने जाने वाले हेहयों की शाखा के रूप में पुराणों में वर्णित है-

सृज्जय/हैहय यादव हैं और वे ही हिरण्य है तो हिरण्यों और यादवों में और भी साम्य मिलना चाहिये... और वह मिलते भी हैं :-

यादवों से सम्बन्धित कंस व शिशुपाल को पुराणों व महाभारत में पिछले जन्म का हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष कहा गया है इसके अतिरिक्त वासुदेव के एक भाई श्यामक के एक पुत्र का नाम तो स्पष्टत: हिरण्याक्ष ही है। समान वंश-समान नाम का यह छोटा सा उदाहरण हो सकता है मानने में थोड़ी मुश्किल हो, तब भी हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु के अतिरिक्त दो और दिति पुत्र हैं... बज्रांग और अन्धक। बज्रांग नाम यादवों के भजमान वृजिनवान, शिनी, वृष्णि नामों से मिलता जुलता है। वृजिन/वृष्णि अथवा वज्रांग हो सकता है ऋ0 6.27.4-5 के उन वृचिवन्तों या उनके नेता वरशिख हों जिन्हें अभ्यवर्ती चायमान ने एक हार के बाद पराजित कर दिया था और जैसा कि कीथ व मैकडौनेल अनुमान करते हैं ऋ0 2.14.6; 4.30; 14-15; 6.47.21 आदि के दास या असुर वर्चिन से इन वृचीवन्तों के सम्बन्ध हो सकते हैं। यतुधान के दस राक्षस पुत्रों में से एक उग्र के पुत्र का नाम बज्रहा है। पिशाचों-पितरों का निवास क्षेत्र विरज ही वृजिन/वृष्णि/बज्रांग जनों का प्रदेश हो सकता है। बज्र अर्थात हेति अर्थात विद्युत/सौद्युम्नि (नदी) वेदवती का प्रदेश जो विन्ध्य पर्वत (शिवालिक पर्वत) की तराई में आज की सदादेनी नदी (मार्कण्ड़ा) का प्रदेश था विरज था। हेती और प्रहेती नाम के हिरण्याक्ष पुत्र मुर्गे और म्यूर के रूप में मृकंडु मुनि के आश्रम में गये थे[128] यह तथ्य बताता है कि हिरण्याक्षजन जिनका टोटेम मुर्गा और म्यूर रहा होगा भारकण्ड़ा के प्रदेश में थे, या आ बसे हों। यदुवंशी वृजिन/वृष्णि का बज्रांग और इसके विरज से सम्बन्ध की पुष्टि एक और तथ्य से होती है कि बज्रांग और वंरागी के पुत्र तारक जिसे शिवपुत्र कार्तिकेय ने मारा था का साम्य तार्क्ष्य से और फिर तार > ताल से मिलता है। पुराणों में तालजंघ यादव हैहयों की एक शाखा है। तार्क्ष्य/तारक तिर्यक अथवा पक्षी टोटेम वाले जन थे। दिति के पुत्र बज्रांग और अन्धक के समान यादव भीम सात्वत के पुत्र वृष्णि और अन्धक हैं। अन्धक के वंश में कुकर, तित्तिर, कपोत जैसे टोटेमिक नाम हैं। यदुवंशी अनु, कपोतरोमा, तित्तिर शब्द हरिद्वार के उत्तर में बसे ययाति के पुत्र अनु के वंशज महारोमा, अश्वरोमा, तितिक्षू, उशीनर (कपोत कथा) से साम्य बताते हैं कि अन्धक जनों का निवास यमुना नदी के आसपास का शिवालिक पर्वतमाला क्षेत्र था। कैलाश (कालेसर) के शिव के पुत्र कार्तिकेय ने तारक को मारा। इस क्षेत्र के थोड़ा सा दक्षिण में प्राचीन काल की शिग्रु जाति का श्रूघन था। जींद, जगाधरी, देहरादून तक का क्षेत्र यादव युगन्धरों का था, ऐसे में शिग्रु और श्रूघन का साम्य यदुकुल के शूर और उसके शूरसेन से प्रमाणित होता है। दृष्द्वती नदी का यह क्षेत्र जो विन्धय के दक्षिण में था विधाता > विदर्भ था। काथा-किन्थाला < सिन्थाला > सांदली नदी क्षेत्र कृथ यादव से मिलता है। हो सकता है राक्षसों के समर्थक, सहयोगी या उनकी तरह आचरण करने वाले अथवा आदिम-अर्धसभ्य यदुजनों को यतुधान कहा गया हो... जो भी हो उनमें समान क्षेत्र में निवास करने की समानता तो थी ही।

यादव मधु राक्षस रावण की मौसी कुब्बीनसी का पति था। मधु के पुत्र लवण को असुर

कहा गया है मधु का नाम हैहय और यादव दौनों वंशों में है किन्तु उसके पुत्र लवण का नाम वंशावली में नहीं है तो भी इससे इसके दूसरा अथवा तीसरा मधु होने की सम्भावना इसलिये नहीं बनती क्योंकि रावण के शत्रु मान्धाता की हत्या मधु यादव ने हत्या की थी। रिश्तेदारी, निकट सहायक होने के कारण उसका ऐसा करना उचित भी था। यादवों की वंशावली में शिनि का नाम कई बार आया है। हिरण्यकशिपु दैत्य के पुत्र अनुहलाद के सूर्म्या से वाष्कलि, महिष, सिनीवाली और भद्रा मणिवरा नामक संतानें थी यादव शिनि और दैत्य सिनीवाली दौनों एक ही और सिनीवाली नदी क्षेत्र के निवासिओं का द्योतक प्रतीत होता है।

यदव हैहयों के अन्तर्गत तालजंघ की एक शाखा तुण्ड़िकेरा या कुण्ड़िकेरा है और ज्यामद्य के पुत्र विदर्भ के दो पुत्रों कृथ और कैशिक में से कृथ का पुत्र कुन्ति है। विदर्भ की राजधानी का नाम कुण्ड़िनपुर था। दूसरी ओर तुण्ड़ यदि महादेव का नाम है तो कुण्ड़ोदर महादेव का एक गण है। प्रहलाद पुत्र विरोचन के गवेष्ठि नामक पुत्र के दो पुत्र शुंभ और निशुंभ तथा प्रहलाद के दो पुत्र कुंभ और निकुंभ में साम्य है। पीछे हमने कृथ यादवों का क्षेत्र काथा नदी प्रदेश माना है। काथा (किन्थाला-सिन्थाला) का सांदली से साम्य है और इसका भी सम्बन्ध सुन्द से लगता है जो तुण्ड या कुण्ड़ का ही एक नाम प्रतीत होता है। कश्यप और अनायुषा के अररू, वल, वृत्र, विज्जर और वृष इन पॉच पुत्रों में से वल का पुत्र निकुंभ था, इसे ब्रहमा0 में निसुन्द कहा गया है। इसके दो पुत्र सुन्द और उपसुन्द थे[129] वायु0 में ये हिरण्यकशिपु के वंशज कहे गये हैं।[130] जो भी हो वे दौनों तिलोत्मा अपसरा के लिये लड़ मरे थे। पीछे हमने अपसराओं को वानरी/पिशाचिनी कहा है। तिल पितरों पिशाचों को प्रिय है[131] तिलोत्तमा भाषान्तर में तिरोत्तमा; और इसी प्रकार ताल अथवा ताड़ से जुड़ती हई ताड़का के सम होती है[132] जो सुन्द की स्त्री थी और मारीच तथा सुबाहू नाम के दो यक्ष पुत्रों की माता थी। यक्षों का निवास यमुना नदी क्षेत्र में अज और शिग्रु जनों के साथ था। आगे सुन्द - सुण्ड - तुण्ड़ नाम हस्ति/अज/गज जनों से जुडते हैं। इसी प्रकार कुण्ड/कुम्भ - निकुम्भ अन्य मिथकों में राक्षी नदी/दृषद्वती के दक्षिण में रक्षों/रावण के भाई कुम्भकर्ण से जुड़ता प्रतीत होता है जिसके भी कुम्भ-निकुम्भ नाम के दो पुत्र कहे गये हैं।

सुन्द-उपसुन्द ; कुम्भ-निकुम्भ; सुन्द-ताड़का; शुंभ-निशुंम्भ और तुण्ड़िकेरा-कुण्डिकेरा आदि, सभी मिथकों की उत्पत्ति का स्थान केवल एक ही है और इसी स्थान का नाम कभी सुन्दर था जिसके नाम पर रामायण के एक कांड का नाम सुन्दरकांड़ है। इसी प्रदेश में कभी मेघनाद ने निकुम्भला देवी की पूजा अर्चना की थी। मूल विदर्भ और इसकी राजधानी कुण्ड़िनपुर इसी काथा-सांदली नदी क्षेत्र में रही होगी।

अन्धक हिरण्य दैत्यों में से एक है यह नाम यदुवंश में भी कई बार आया है। यादवों में अन्धकों की एक शाखा है। कृष्ण के सारथि कहे गये सत्यक के पुत्र सात्यकि का एक नाम युयुधान है; हरिवंश के अनुसार इसके पौत्र का नाम युगन्धर था, इन दौनों नामों का साम्य युगन्धर (जगाधरी) प्रदेश के निवासी यतुधान अथवा जतुधान से होता है।

संदर्भ एवं टिप्पणियॉ

1. बलि, बोली नदी क्षेत्र के गैरिक मृदभांड संस्कृति के जनों का द्योतक है और वसु जनों का क्षेत्र वसुधान्यक > बहुधान्यक > भादानक घघ्घर से यमुना नदी तक शिवालिक पर्वतों की तराई क्षेत्र था। बलि की स्त्रियों के नाम सुदेष्णा और विंध्यावली उस विन्ध्य, वैद्यूत, सुदुम्न पर्वत की द्योतक है जहाँ से वेदवती/वैद्युती अथवा सदादेनी नदी निकलती है। सदादेनी

सौद्युम्नि का अपभ्रंश प्रतीत होती है।

2. राणाप्रसाद शर्मा ''पौराणिक कोष'' वाराणासी, 1986, पृ0 108; सौभरि एक वैखानस ऋषि था, जो एक आश्रम में अपनी 50 पत्नियों के साथ रहता था, ये 50 पत्नियाँ मान्धाता की पुत्रियाँ कही गयीं हैं। वैखानस बस्तियों की सीमाओं या उनसे कुछ दूर आश्रम बनाकर रहने वाले सन्यासी होते थे जो ब्रहमचर्य का पालन करते हुऐ सभ्यता संस्कृति का प्रचार कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे- **रोमिला थापर ''प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास'', अनु० आदित्य नारायण सिंह** दिल्ली, 2001, पृ0-64
3. वही पृ0 105
4. वही
5. वही पृ0 137
6. प्राचीन भूगोल वेत्ता शिवालिक को मैनाक के नाम से जानते थे-**विमल चरण लाहा,'' प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल'' अनु० रामकृष्ण द्विवेदी**, लखनउ; 1972; पृ0 178
7. मानचित्र 53 एफ-11, सर्वे आफ इण्ड़िया, देहरादून
8 द्वारावती अथवा द्वारका में दृष्द्वती शब्द की तरह द्विर शब्द की ध्वनि है। इसका एक नाम कुशस्थली कौशिकी से मिलता है द्वारका पर अधिकार करने वाली कुकुर जाति कोई कुकुर के टोटेम वाली जाति रही होगी जो वृष्णि (वृषण > वल्हि अथवा वाल्हीकों से संयुक्त किन्हीं दस जातियों में से एक थी **''कुकुरान्ध वष्णिभिः युक्ता।''** यादव राजा उग्रसेन को कुक्कुरोदभव् कहा गया है। अन्ध्रक का मूल आंध्र/आंण्ड्र अण्ड (वृषण) प्रतीत होता है सम्भवतः आंध्र (आद्रि) जनों का सम्बन्ध उन यादवों के साथ हो जो कभी सरस्वती/यमुना क्षेत्र से दक्षिण में पलायन कर गये थे। आद्रि जन अज/अहि/वानर/कपि अथवा पिशाच़ ही थे। समान क्षेत्र में या निकट क्षेत्र में निवास करने के कारण यादवों और पिशाचों की भाषा में समानता थी **भगवान सिंह सूर्यवंशी** का कहना है कि पैशाची की सबसे अधिक निकटता शौरसैनी से है जो सारस्वत प्रदेश की भाषा थी-**भगवान सिंह सूर्यवंशी हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य** दिल्ली, 2003, पृ0 422
9. ऋग्वेद 7.18.7 ; 7.20.2 ; 25.3 ; 32.10 आदि और अथर्ववेद 10.128.1
10. अज/अहि (नाग) जन है जो आद्रि (पिशाचों) से सम्बन्धित है। शम्भर (सोम्ब नदी क्षेत्र में निवास करने वाले टोटेमिक जनों का द्योतक है शब्द) को अहि कहा गया है।

    वृत्र भी अहिवृत्र है। भरत ने गंगा-यमुना दोआबे में वृत्रघन किया था अर्थात नागों का उन्मूलन किया था। शम्भर को चालीस वर्षों के लम्बे संघर्ष के उपरान्त त्रित्सु वर्ध्याश्व के पुत्र दिवोदास ने मारा था। सुदास पैजवन ने यमुना तट पद अजों को पराजित किया। सम्वर्ण ने सुदास को पराजित कर मार ड़ाला, शम्भर और सम्वर्ण में साम्य है। अज का अजमीढ़ से साम्य है, अजमीढ़ों ने हस्तिनापुर बसाया अर्थात सम्वर्ण जन वे अहि शम्भर ही थे जिन्होंने पीछे हटकर भी संघर्ष जारी रखा।

    हस्ती/गज/अहि/नाग एक ही है। हस्तिनापुर को नागसाहव्यम या नागपुर भी कहते हैं। हस्तिनापुर के संस्थापक हस्ती के अजमीढ़ द्विमीढ़ और पुरूमीढ़ नामक तीन पुत्र भौगोलिक क्षेत्रों के द्योतक हैं, अजमीढ़ का पुत्र ऋक्ष सम्वर्ण का पिता था गंगा-यमुना दोआबें में शिवालिक पर्वतमाला का नाम था। ऋक्ष पर्वत पर ऋक्ष जनों का निवास था। इससे निकलने वाली नदी राक्षी के क्षेत्र में रक्ष/राक्सस रहते थे। ऋक्ष वानर भी थे और रीछ भी। संयुक्त रूप से अज/अहि या नाग कहाते थे। सफीदों (सर्पदलन) से गंगा नदी तक इन नागों का निवास था। हस्तिनापुर का राजवंश एल पत्र, अजमीढ़, कौरव्य, नहुष, धृतराष्ट्र, महाकर्ण, धनन्जय, बाल्हीक (बलाहक) सभी नागों के नाम है... त्रुत्सु दिवोदास ने शम्भर अहि को मारा; सुदास पैजवन ने अजों को पराजित किया। किन्तु नागों ने पीछे हट कर संघर्ष जारी रखा... सम्वर्ण ने सुदास पैजवन को मारा और राम दाशरथी ने भी हस्तिनापुर पर अभियान

किया। अन्ततः पाँड़वों ने महाभारत युद्ध में धृतराष्ट्र को पराजित किया... नागों ने परीक्षित का वध किया सबसे अन्त में जनमेजय ने नाग यज्ञ कर सप्तसिन्धु से गंगा पार तक का क्षेत्र नागों से खाली करवा लिया। अर्थात दोआबे की गैरिक मृदभांड़ संस्कृति के जन उजड़ कर पूर्व और मध्य भारत में पहुँचे और उनके मूलस्थान पर चित्रित धूसर मृदभांड़ वाले जनों का अधिकार हो गया।

11. ऋग्वेद 1.174.9 ; 4.30.17 ; 5.31.8 ; 6.20.12 ; 6.45.1 में इन्द्र द्वारा यदुओं के जलप्लावन से उबारे जाने का उल्लेख है। एक स्त्रोत में उनके समुद्र पार से आने और एक अन्य में दूर से आने के जिक्र से विद्वान मतलब लगाते है कि वे समुद्र के निकट गुजरात से आये थे। हरिवंश के अनुसार आनर्त (काठियावाड़) के यदु के नाना मधु ने आर्नत से मथुरा तक का भूभाग जीता था। इससे विद्वान अरावली के साथ-साथ दोआबे की ओर देशांतरण का संकेत पाते हैं और मानते हैं कि जरासन्ध द्वारा मथुरा के अन्धक और वृष्णि यादवों पर आक्रमण के कारण वे पुनः भाग कर द्वारका पहुँच गये। किन्तु इन सबका कोई पुरातात्विक प्रमाण नहीं मिलता क्योंकि वह लाल कृष्ण मृदभांड़ जिनका सम्बन्ध यादवों से जोड़ा जाता है मथुरा में लगभग अनुपस्थित ही हैं और लगभग वैसा ही द्वारका में भी है। **पार्जीटर** द्वारका के वंश को आधुनिक बनास और माउंट आबू क्षेत्र से सम्बन्धित मानते हैं - **रोमिला थापर**, पृ0 213.14 ; 228 ; सम्पूर्ण अध्याय-10 पठनीय
जिस जल प्लावन से इन्द्र ने यदुओं को बचाया वह तो उनके क्षेत्र (श्रूघन) में सरस्वती नदी के अनियमित बहाव के कारण बार बार होता था, जिसके कारण वे बार बार विस्थापित होकर यहाँ से वहाँ तक भटकते रहते थे। उनका मूल प्रदेश बनास अथवा आबू के समीप कायथा नहीं, वरन मुजफ्फरनगर जिले की काथा नदी थी जो यमुना नदी के अस्तित्व में आने से पूर्व रोहतक सोनीपत में बंहती थी। रोहतक (हिसार ?) का क्षेत्र तब यादवों का द्विमीढ़ था वही पृष्ठ 211; यही काथा नदी गुजरात के काठियावाड़ के मूल में है और आनर्त, अनु पर्वत/ऋक्ष/शिवलिक पर्वत माला की तलहटी में गंगा-यमुना दोआबे का वह भाग है जो अन्तर्वेदी के पूर्व में था। यताति पुत्र अनु और उसके वंशज उशीनरों को गंगा दोआबे के पर्वतीय प्रदेश में माना गया है।

12. **चत्वारिश दशरथस्य शोणाः सहस्त्रस्योग्रे श्रेणिं नयन्ति** - ऋग्वेद 1.126.4
अर्थातः- "दशरथ के चालीस भूरे रंग के घोड़े, एक हजार घोड़ों के दल का नेतृत्व ले रहे है।-" **कामिल बुल्के "रामकथा"** इलाहबाद 1993, पृ0 1

13. **कीथ व मैकडोनेल, "वैदिक इन्डैक्स", अनु० रामकुमार राय;** वाराणसी; 1962; भाग-2 पृ0 148

14. वही भाग-1; पृ0 14-15

15. **कामिल बुल्के**, पृ0 2

16. **रांगेय राघव "प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास"** दिल्ली;1990;भूमिका में पृ0 ण

17. **दामोदर सात्वलेकर, "रक्षकों के राक्षस" वैदिक व्याखान माला**-26 पृ0 2,3 और आगे पठनीय।

18. वही, पृ0 4-5 पर-

    अस्मे वीरो मरूतः शुष्मयस्तु जनाना यो असुरो विर्धता।
    अपोयेन सुरक्षितये तरेम अध स्वामोको अभि व स्याम॥ ऋ. 7.56.24

19. **कामिल बुल्के** पृ0 9 से 18 तक पठनीय

20 प्रसिद्ध पुरातत्व वेत्ता **एम० वी० एन कृष्णराव** ने सिन्धु घाटी की मोहरों के अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष दिया कि राम की जन्म भूमि वर्तमान अयोध्या में न होकर वनवाली (हिसार) में थी- हिन्दुस्तान दैनिक 12 मार्च 2003

21 **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 124 व 126

22 वही, पृ0 420

23. वही

24. **ओ० पी० भारद्वाज** **''बाल्मिकीज हिस्टोरीकल ज्योग्राफी आफ कुरूक्षेत्र''** पंजाब हिस्ट्री कान्फ्रेंस, 12वां अधिवेशन मार्च 1978

25. **जयनारायण असोपा**, **''ओरिजन आफ राजपूत्स,''** दिल्ली, 1976, पृ0 127-128 26. **वी० के० माथुर**, **''ऐतिहासिक स्थानावली''** जयपुर 1990 पृ0 78

27. **जी० बी० शर्मा और मनमोहन सिंह** **''एक्सकैविएशन एट घुरम,''** पंजाब हिस्ट्री कान्फ्रेंस, 1978 ; पृ0 32

28. **सीतानाथ प्रधान**, **''क्रोनोलाजी आफ ऐंशेट इड़िया,''** दिल्ली 1979, पृ0 91-92

29 **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2; पृ0 389; 532-33 तैत्रीय ब्रा0 7.4.71; कौशितकि ब्रा0 4.8 और पंचविश ब्रा0 में उल्लेख है कि पुत्र का वध हो जाने पर वशिष्ठ ने सुदासों से प्रतिशोध की इच्छा व्यक्त की और उन्हें इसमें सफलता मिली।- वही, पृ0 309

30. **पार्जीटर** ने पांचाल सुदास और वैदिक सुदास के एक्य का समीकरण जनरल आफ रायल ऐशियाटिक सोसायटी के 1910 के अंक में प्रस्तुत किया है। **सुरेन्द्रनाथ सैन** वैदिक सुदास पैजवन को दक्षिण कौशल के सुदास से मिलाते हैं। **बाबू सुविमल चन्द सरकार** सुदास पैजवन को राम के दादा रघु मानते है- **प्रधान**, पृ0 88

32 **प्रधान**, पृ0 88

33. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2, पृ0 33

34. **प्रधान**, पृ0 25

35. ऋ0 3.53.7 में सुदासवंशिओं को भोज क्षत्रिय कहा गया है। पौराणिक साहित्य में भोज हैहय यादवों की पांच शाखाओं (वीतीहोत्र, भोज, अवन्त, शर्याति और तुण्डिकेरा या कुण्डिकेरा) में से एक है। ये पाँचों शाखाऐं तालजंघ कहलाती हैं। तालजंघ और हैहयों दौनों शब्द वैदिक ''सज्जय'' का अपभ्रंश है।

तालजंघ > तृज्जय > सृज्जय (''ऋ'' का ''ल'' में और ''स'' का ''त'' में परिवर्तन हैहय > सृज्जय (ऋ का लोप और ''स'' का ''है'' में परिवर्तन) ; अथर्ववेद 5.19. 1 में कथन **भृगु हिंसित्वा सृज्जया वीतीहव्या पराभवन** से भी हमें पता चलता है कि वीतीहव्य सृज्जयों की एक शाखा थी; वीतीहव्य का पौराणिक रूप वीतीहोत्र है जिसे प्रतर्दन ने उसकी राजधानी में घुस कर हराया था। प्राणरक्षा का दूसरा उपाय न देख कर वीतीहोत्र भार्गवों के आश्रम में शरणागत हुआ और अन्ततः ऋषि हो गया। हैहयों और भार्गवों के पौराणिक विग्रह का आधार सृज्जय वीतीहव्य और भार्गवों के विग्रह की वैदिक घटना में है। ऐसे में हैहय अर्जुन क्रातवीर्य सहत्रबाहु सरस्वती नदी प्रदेश का आर्जुनायन और क्रथ (काथा नदी क्षेत्र) का विजेता सुदास पैजवन हुआ। पर्सियन इतिहासकारों (**गोविन्द कृष्ण पिल्लै ई० वि० रि० बुक** 5 में प्रकाशित ट्रे0 हि0 ई0 में पृ0 74) के अनुसार बेबीलान की रानी सेमिरनीस ने छह लाख सैनिकों के साथ सिन्धु नदी के पार अभियान किया था किन्तु सतहबोस ने उसे पराजित किया। **अजीत कुमार सिंह** सतहबोस को तालजंघ से मिलाते है-**अजीत कुमार सिंह** **''उत्तर भारत का राजनैतिक इतिहास''** , बरेली 1977 पृ0 29 असल में सतहबोस सुदास पैजवन था और रानी सिमिरनीस की बैबीलोनियन सेना में पक्थ, अलीना (ऐरियाना) भलनास, (बेबीलोनियन) विषानिन (?) शिवि (सिबोई) सैनिक रहे होंगे जिन्हें सुदास पैजवन ने परूष्णी तट पर पराजित किया था।

36. **कीथ व मैकड़ोनल**, भाग 1 पृ0 617-18

37. **विश्वेश्वरनाथ रेउ**, **''ऋग्व्दे पर एक ऐतिहासिक दृष्टि''** पृ0 105

38. **प्रधान**, पृ0 63
39. **कीथ व मैकड़ोनेल**, भाग-2, पृ0 8
40. वही, पृ0 310 ; भार्गव जन नरबलि के समर्थक थे काओ, ममेल, दत्तनगर, नीरथ और निरमण्ड़ में हिमाचल प्रदेश के वे पाँच थाना (स्थल) है जहाँ परशुराम ने तपस्या की थी यहाँ कभी बड़े पैमाने पर भूड़ा (नरमेघ) का आयोजन होता था। जहाँ-जहाँ परसुराम गये ये चार ठेहरियाँ हैं- लालसा, उनसा, शिड़ड़ा, शिनैरी। परसुराम के तपस्या स्थलों को छोड़-छोड कर लोग जहाँ-जहाँ जाकर बसे, वे नौ फरसियाँ कहलाती है- मसली, गूमा, धौली, टोड़सा, नड़ल्ला, चिउड़ी, पारसा, खशकंडी, अन्दरेउटी। पंजाब डिस्टिक्ट गजेटियर 1908, पृ0 19 पर उपरोक्त स्थलों के अतिरिक्त देओठी, मंझोओली, शिगंला, ड़ान्सा, नंदवा, कलगाव, नग्गर, खराहन, दलगॉव, सराहन, बारहल, करसौंग, बछूँद, सपेल, रायका में भी छोटे-बड़े पैमाने पर भूंड़ा यज्ञ होता था- **बंशीधार शर्मा ''हिमाचल लोक संस्कृति के श्रोत''** दिल्ली 1986, पृ0 139; ''पंजाब हिस्ट्री कान्फ्रेंश 1982, **लक्षमण, एस ठाकुर ''हुमन सैक्रिफाईज-भूंड़ा''**... पृ0 29 पाद टिप्पणी-14 ; **सुदर्शन वशिष्ठ, ''भूडा़ उत्सव''** साप्ताहिक हिन्दुस्तान 3 नवम्बर 1991, पृ0 16-17
41. **कीथ व मैकड़ोनेल**, भाग 2 पृ0 427
42. हो सकता है कि हरिश्चन्द्र ने ब्राह्मणों से ड़र कर उनका साथ दिया हो, क्योंकि उनकी बात न मानने पर हरिश्चन्द्र की स्थिती भी पिता सत्यव्रत की तरह हो सकती थी।
43. वशिष्ठ द्वारा मिथिला के राजा को शाप देने की कथा वायु0 और वृहद देवता 7.59 में है-**रायचौधारी ''प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास''** दिल्ली, पृ0 44 ; यह वशिष्ठ के स्थान पर गौतम ऋषि को पुरोहित बना लेने के विषय में है।
44. सम्वर्ण द्वारा वशिष्ठ की सहायता से पाचाल नरेश सुदास की पराजय और मृत्यु का विवरण पुराणों में है। मुदगल, वर्ध्याश्व; दिवोदास, सृज्जय आदि वैदिक नामों के आधार पर माना जा सकता है कि पांचाल सुदास और वैदिक सुदास पैजवन एक ही व्यक्ति थे। पांचालवंश विवरण में यह तो है कि किसी बात पर रूष्ट होकर वशिष्ठ सुदास का राज्य छोड़कर हस्तिनापुर नरेश सम्वर्ण के यहॉ चले गये ; किन्तु वशिष्ठ के पुत्र शक्ति की हत्या का उल्लेख यहाँ नहीं मिलता।
45. सम्वर्ण के पुत्र सुधन्वा का शीरध्वज जनक पर आक्रमण का उल्लेख रामायण में और प्रतर्दन के जनक पर आक्रमण का उल्लेख रामायण तथा महाभारत में हैं; कहा गया है कि ये आक्रमण सीता को बलात प्राप्त करने के लिये किये गये थे, जिन्हें विफल कर दिया गया- **रामकुमार राय ''वाल्मिकीय रामायण कोश''**, वाराणसी, 1965 पृ0 395-96 ; **आर. सिद्धान्ता शास्त्री**, पृ0 162-63 और **रायचौधरी**, पृ0 40
46. **वी० के माथुर**, पृ0 911 ; **सूर्यवंशी**, पृ0 133 **वासुदेव शरण अग्रवाल ''पाणिनी कालीन भारत''**, पृ0 72 में देहरादून में कालसी के समीप जगत ग्राम से प्राप्त लेख में इस प्रदेश के विषय में कहा गया है- **''युगेश्वरस्या युगशैलमहीपतेः''**
47. सरस्वती नदी से सम्बन्धित **''पलक्ष''** नाम के स्थानों में-
त्रिपलक्ष-दृषद्वती नदी के यमुना के निकट अदृष्ट होने की स्थान ;**पलक्ष प्रस्वण**-सरस्वती के अदृष्ट होने के स्थान ; **पलक्षावतरण**-यमुना किनारे सारस्वतों की यज्ञ भूमि **पलक्ष प्रस्त्रवण**-सरस्वती नदी का उदगम **अन्यतपलक्षा**-कुरूक्षेत्र में सर्णयावत झील **पलक्षा वृक्षात्समुद भूता**-सरस्वती नदी के लिये **पलक्षाकृति**-सुमेरू के लिये, जहाँ से सरस्वती नदी निकलती है - **लाहा** पृ0 591, 815; **वी० के० माथुर**, पृ0 592-93; 675 ; 996 **राय चौधरी**, पृ0 21 ; **कीथ व मैकडोनेल**, भाग 72 पृ0 60
48. तिब्वती भाषा में ''गिलनका'' का अर्थ छोटा नदी द्वीप अथवा नीची भूमि है- **रांगेय राघव,**

पृ0 30 जगाधरी अथवा इसके पूर्व और दक्षिण की भूमि अपेक्षाकृत कुछ नीची है और युमना नदी में द्वीप भी हैं किन्तु उस काल में यहाँ की भौगोलिक स्थिती कुछ भिन्न रही होगी। यमुना का अस्तित्व तब वर्षा काल में अतिरिक्त पानी के आने से ही सम्भव होता होगा या फिर तब जब सरस्वती नदी अपना बहाव मार्ग बदलती होगी... शिवालिक की तराई में सोम्ब, मस्कारा, कारा-कालिन्दी नदियाँ एक विशाल झील का निर्माण कर देती होंगी, जिसे रामकथा में समुद्र की संज्ञा दी गई है। वर्षा काल के महिने- पन्द्रह दिन बाद यह क्षेत्र पूर्णतया अगम्य नहीं रहता होगा, भले ही छोटे बड़े असंख्यों सर, कीचड़, दलदल का अस्तित्व कुछ समय तक के लिये और बना रहता हो। ग्रीष्म काल आते-आते क्षेत्र पूरी तरह सूख जाता होगा। कालेसर जिसे हम कैलाश से समीकृत करते हैं से लेकर सहारनपुर के दक्षिण तक राक्षसों का निवास था। वर्षाकाल में बनने वाले इस सागर के दक्षिण में लंका थी।

50. सरत्सीता; सरस्वती; सीता; शैलोदा; पलक्षा एक ही नदी के क्षेत्रिय नाम हैं। पलक्षा नाम से ही धन, वैभव सम्पन्नता की देवी "लक्ष्मी" के नाम का प्रार्दुभाव हुआ। सीता वैदिक काल में कृषि की अधिष्ठात्री देवी थी। पद्यम0 उत्तरखड़ अ0 55 में लाक्षकी सीता का एक नाम है। सीता को लक्ष्मी का अवतार कहे जाने के पीछे तथ्य यही है कि सीता और पलक्षा एक ही नदी थी। वर्षों, दशकों अथवा शताब्दी तक चली सरस्वती नदी के बहाव मार्ग में अनियमितता के चलते रावण के उत्थान अथवा पश्चिम-पश्चिमोत्तर पर उसके आक्रमण के समय सरस्वती कुछ काल के लिये यमुना के रूप में दक्षिण वाहिनी हुई; ऐसे में कुरूक्षेत्र की सरस्वती का उदगम् विद्युत पर्वत/वैद्यूत/सौद्युम्नी को मान कर मूल सरस्वती वैद्युती/वेदवती/सौद्युम्मनी को कहा गया। इस तथ्य को धयान में रखते हुऐ कि दक्षिण की ओर बहने वाली सीता सरस्वती कभी तो अपने पश्चिम वाले बहाव मार्ग पर लौटेगी (क्योंकि ऐसा पहले भी कई बार हो चुका था); वेदवती के अगले जन्म का मिथक बना कि रावण के कुदृष्टि ड़ालने के अपराध में वेदवती अगले जन्म में सीता वन कर रावण को नष्ट कर देने का शाप देती है' वाल्मिकी0 उत्तर सर्ग-17

वैद्यूत पर्वत (आदि बद्री के स्थान पर) से निकली वैद्युती > वेदवती के कारण प्रदेश का नाम विदेह हुआ; ऋग्वेदिक काल में त्रित्सुओं के मित्र सृज्जयों में सहदेव नामकरण वैद्यूत पर्वत अथवा वेदवती नदी के दूसरे नाम सौद्युम्न पर्वत अथवा सौद्युम्नि नदी के कारण हुआ होगा। आज सौद्युम्नि नदी सदादेनी है। इसी प्रकार पुराणों में भरत के पिता का नाम दुष्यंत और शतपथ ब्राहमण में सौद्युम्न है- **बलदेव उपाध्याय "पुराण विमर्श"**, वाराणसी, 1987 पृ0 381 यह भरत जाति के मूल क्षेत्र दृष्द्वती और सौद्युम्नी नदी क्षेत्र में निवास करने वाले दृष्द्वन्त और सौद्युम्न जनों का व्यक्तिवाचक नाम है।

स्वर्ग से मेरू पर गिरी गंगा नदी चार भागों में विभक्त हुई- सीता, अलखनन्दा, चक्षु, भद्रा। इनमें से सीता गन्धमादन पर्वत पर गिरी। **वी० के० माथुर** पृ0 659 ; **सूर्यवंशी** गन्धमादन को शिवालिक से सम्बन्धित मानते हैं- **सूर्यवंशी "ज्योग्राफी ऑफ महाभारत"**; पृ0 112, 141; (सिरमौर स्वयं सुमेरू के नाम से बोल रहा है) जिले के उत्तरी सीमा पर नागटिब्बा पर्वत श्रंखला का शिखर चन्द्रचूड़/चूड़ाधार सुमेरू था। इससे निकलने वाली गिरि नदी सीता-शैलोदा थी।

51. ऋ0 7.104.15-25 में विश्वामित्र वशिष्ठ को यतुधान कहता है जबकि इसके बाद में वशिष्ठ विश्वामित्र और उसके सहयोगियों को राक्षस कहता हुआ इन्द्र और वरूण से उनकी मृत्यु की प्रार्थना करता है। ऋ0 7.18.21 और वायु 1.177 में विश्वामित्र और उसके अनुचरों द्वारा वशिष्ठ के पौत्र परासर को शारीरिक हानि पहुँचाने के प्रयास का वर्णन है। - **सीतानाथ प्रधान**, पृ0 91-92

52. **कीथ व मैकड़ोनेल**, भाग 2 पृ0 310; वही, भाग-1, पृ0 359 पर ऋग्वेद 7.33.1 और 7.83.8 में त्रित्सुओं और वशिष्ठ की केश सज्जा ... में समानता का संकेत है।

53. **सीता नाथ प्रधान**, पृ0 6
54. वही, पृ0 98
55. वही, पृ0 87
56. त्रित्सु जन मेरे विचार से उस वेदवर्णित महर्षि त्रित के वंशज थे जिन्होंने तवष्टा के पुत्र विश्वरूप त्रिशिरा को मार कर उसकी गायों का हरण किया (ऋ0 10.8.8-9), भुज्जु के पिता तुग्र को मारा। अपत्य या विभूवस के पुत्र महर्षि त्रित को सालावृकि ने मार कर अंधकूप में फैंक दिया था। महर्षि त्रित को वृहषपति ने अन्धकूप से निकाला और सालावृकि का वध कर उसका धन त्रित को दिया (ऋ0 10.105.17)- **लीलाधर दुखी ''सरस्वती नदी..''** दिल्ली 1986, पृ0 48, 50-51

    सम्भावना है कि बाद में सरस्वती तीर पर जब इन महर्षि त्रित के वंशज त्रित्सुओं ने राजसत्ता स्थापित की तो वे अपने पूर्व पुरूष त्रित पर किये गये वृहषपति के अहसानों को नहीं भूले और उन्होंने वृहषपति के पुत्र भारद्वाज और उसके वंशजों को अपना कुल गुरू बना लिया।

    पुराणों में गौतम मुनि के तीन पुत्रों में से एक त्रित है जो भाग्वत पुराण के अनुसार चाक्षुष मनु के पुत्र थे। महाभारत में कहा गया है कि ये भेड़िये (वृक) के भय से सरस्वती नदी के तट पर कुऐं में गिर गये थे - **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 206

    त्रित इन्द्र और वरूण के मित्र ; इन्द्र उसके साथ सोम पीते हैं त्रित ने वृत्र दानव को मारा था- **रामविलास शर्मा, ''पश्चिम ऐशिया और ऋग्वेद''** दिल्ली, 1994, पृ0 186-187
57. **सीता नाथ प्रधान** पृ0 90,99
58. वही, पृ0 201; मान्धाता ने 100 अश्वमेघ यज्ञ और 100 राजसूय यज्ञ किये थे। **आर० सिद्धान्ता शास्त्री**, पृ0 50
59. **रामकुमार राय ''वाल्मीकी रामायण कोश''**, पृ0 234
60. वही
61. **आर० सिद्धान्ता शास्त्री**, पृ0 140
62. वही पृ0 50
53. **लाहा** पृ0 84
64. **रामकुमार राय**, पृ0 234
65. **वी० के० माथुर** पृ0 90-91
66. वही पृ0 91-93
67. **आर० सिद्धान्ता शास्त्री**, पृ0 50
68 **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 89
69. वही, पृ0 424-425
70. वाल्मीकी रामायण के अनुसार अज नाभाग के पुत्र थे किन्तु रघुवंश आदि ग्रन्थों मे अज को राजा रघु का पुत्र लिखा है; **बनार्फे** के अनुसार अज पृथुश्रवस का पुत्र है- **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 13; राम पृथुवंशी है 10.93.14 में वे दुशीम, पृथवान और वेन के उपरान्त वर्णित **''प्रतदुःशीमे पृथवाने वेने परामे वोचमसुरे मघवस्तु''** इसमें पृथवान के उपरान्त वेन सुदास पैजवन हैं जिसे अपनी ब्राह्मण विरोधी गतिविधियों के कारण पुराणों में नास्तिक और अत्याचारी वेन कहा गया है।
71. पुराणों में केसिनी का उल्लेख कई स्थानों पर है-

    कश्यप और प्रभा की पुत्री केसिनी-एक अपसरा ; विश्रवा की स्त्री कैकसी,- रावण की माता का एक नाम केसिनी ; सुहोत्र की स्त्री, जन्ह की माता ; अजमीढ़ की एक रानी- **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 131; केसिनी नामक जाति का उल्लेख शतपथ ब्रा0 11.8.4.6 में

है-आर. सी मजूमदार **''दा वैदिक ऐज,''** बम्बई, 1971, पृ0 263

72. पुराणों के अनुसार जय और विजय दौनों ही विष्णु के दो पार्षद थे। नारद ने स्वयंवर जीतने के लिये विष्णु से उसका रूप माँगा ; किन्तु विष्णु ने उसे अपना कपि रूप दे दिया था। स्वयंवर में नारद के कपि रूप को देखकर मोहिनी रूपा लक्ष्मी ने उनके गले में वरमाला नहीं ड़ाली। विष्णु के दोनों पार्षद नारद पर हँसते रहे। नारद ने अपना मुँह पानी में देखा। अपमान, क्षोब और ग्लानि से भरे नारद ने जय और विजय को तीन-जन्मों तक राक्षस योनि में जन्म लेने का शाप दे दिया। ये तीन जन्म हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु; रावण और कुभकर्ण; कंस और शिशुपाल के रूप में हुऐ थे।
73. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 22, 249
74. **दामोदर धर्मानन्द कौशाम्भी, ''प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति''** अनु० **गुणाकर मुले**, दिल्ली 1993, पृ0 148
75. **राणा प्रसाद शर्मा,** पृ0 217, 467
76. वही
77. **रामविलास शर्मा ''पश्चिम ऐशिया और ऋग्वेद''** दिल्ली, 1994, पृ0 184
78. **राणा प्रसाद शर्मा,** पृ0 217
79. वही पृ0 218
80. वही
81. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 218
82. पुराणों में वैवस्वत मनु के पुत्र सुद्युम्न का भी वर्णन है जो शिव पार्वती की क्रीड़ा स्थली अम्बिकावन (मेरे विचार से कालेसर के उत्तर में ड़न्ड़ा अम्बोआ वन) में जाकर स्त्री (इला) हो गया, इसके सोम पुत्र बुध से पुरूरूवा का जन्म हुआ। बाद में वशिष्ठ के अनुरोध पर शिव ने इसे शाप मुक्त किया। तब यह गय, उत्कल आदि का पिता बना- **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 535

83 दास और दस्यु वैदिक जनों के शत्रु कहे गये हैं। वैदिक साहित्य में कृष्ण, इलविश, धुनि, चमुरि, शम्भर, वर्चिन, पिप्र आदि अनेक दासों का वर्णन है किन्तु दस्युओं के नामों का अभाव है इसी से इनके आदिम, अर्धसभ्य, चोर, लुटेरे, रहजन होने की धारणा बनती है जबकि दास कबीलों और बस्तियों में निवास करने वाले दृष्द्वती तटवासी जन थे। हिल्लेब्रांट द्वारा दासों को ईरान के दहाऐ जनों से मिलाया जाना -**आर. सी. मजूमदार ''दा वैदिक एज''**, पृ0 253; उचित प्रतीत नहीं होता।

84 वायु पुराण 101.64 के अनुसार दशकृत्व उन याम गणों को कहते है जो वैराज में दस खण्ड़ों में निवास करते थे। **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 217 ; दर्शहक द्वारका की रक्षक जाति का नाम था- वही पृ0 218 ; उपर्युक्त तथ्य वैराज ; (जिसका अपभ्रंश बाद में साहित्य में व्रज अथवा ब्रज है) को दृषद्वती/यमुना क्षेत्र में सिद्ध करते हैं। यामगण यमुना/जमुना क्षेत्र के याम्यों/जाम्यों/जामवन्तों को कहा गया है। दर्श कृष्ण और कालिन्दी के एक पुत्र का नाम है यह दृष्द्वती/यमुना-कालिन्दी क्षेत्र के निवासिओं का ही द्योतक है। दर्श सिनीवाली और द्याता के पुत्र का नाम है।

कृष्ण के पिता का नाम वसुदेव होने के कारण वे उन वसुजनों के क्षेत्र से जुड़ते हैं जो वासुकी ही थे। वसु-वासुकि जनों का क्षेत्र वसुधान्यक > बहुधान्यक > भादानाक हुआ। नागों के प्रधान कुल आठ हैं **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 267 ; वसु भी आठ हैं कृष्ण देवकी का आठवाँ पुत्र है उसका जन्म अष्टमी को हुआ था उसकी आठ पटरानियाँ थीं वह विष्णु (वसु-वासुकि जनों का आराध्य) का आठवाँ ही अवतार माना जाता है। नागों/वसु-वासुकियों का उन गजों-हस्तियों से साम्य है जो संख्या में आठ ही थे... प्रत्येक दिशा का एक लोकपाल। हस्ती द्वारा बसाई गई हस्तिनापुर ... कुरु और ... नागों का एल, नहुष,

बाल्हीक, कुरू, अजमीढ़, धृतराष्ट्र, धनंजय, कर्ण आदि नाम नागों से साम्य रखते हैं। कृष्ण की भाँति भीष्म भी अपनी माता का आठवाँ है। भीष्म से पहले सात भाई भी उसके जन्म से पूर्व मर चुके थे-यह साम्य अन्यथा नहीं है। नाग-वसु-वासुकि-गज-हस्ति-अज सब एक ही थे। कालान्तर में श्रूघन क्षेत्र से गज जनों ने पलायन कर वर्तमान गुजरात बसाया। गुर्जर जनों के मूल में गेजरा-राव क्षेत्र के मूल गज/हस्ति ही थे।

वसुओं में से एक का नाम प्रभाष है ये प्रभाष वसु ही श्रूघन से गुजरात के समुद्र तट पर जा बसे थे।

इन्दप्रस्थ और कृष्ण की द्वारका (जगाधरी में) बसाने में सहयोगी विश्वकर्मा, प्रभाष वसु और वरस्त्री (वृहस्पति की बहन) के पुत्र थे; प्रभाष तीर्थ द्वारका के अन्तर्गत था, जहाँ सरस्वती नदी पश्चिम वाहिनी थी। अब सरस्वती नदी गुजरात के प्रभाषपटटन में नहीं पहुँचती; वह प्रभाष जो प्रभाषवसुओं का क्षेत्र था, श्रूघन में था ; और यहीं सरस्वती उत्तर से आकर कालेसर के बाद पश्चिमवाहिनी हो जाती थी। अतः कृष्ण युगान्धर के यादव थे; वसु-वासुकी जनों का प्रभाष उनका क्षेत्र था। उनके पूर्वज शूर के मूल में श्रूघन है। वे जिस नन्द और यशोदा के यहाँ पले वे भी पिछले जन्म के द्रोण नामक वसु और धरा (उनकी स्त्री) हैं। **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 256

85. **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 180
86. **ओ० पी० भारद्वाज ''बाल्मिकीज हिस्टोरिकल ज्योग्राफी आफ कुरूक्षेत्र''** पं हि कां
87. महाभारत का विदुर बहुत कुछ वैदूर्य/विदूरथ (कुरूक्षेत्र) का द्योतक है। रामकथा में जाम्बवान (जम्बू/यमुना) नदी क्षेत्र का द्योतक शब्द को विद्याधरेन्द्र कहा गया है महाभारत के विदुर का सम्वर्ध दर्शाहू से भी है।
88. सबसे अन्त में जब ब्राहमणवाद की विजय हुई और उनके दबाब में आकर अथवा सरस्वती नदी प्रदेश को सुदास पैजवन के समय से चली आ रही अराजकता, ईर्ष्या वैमनस्य, संघर्ष, एवं रक्तपात से बचाने के लिये राम ने वंशानुगत वर्ण व्यवस्था की बात मान ली; शूद्र शम्भूक की हत्या उसके यज्ञ करने के अपराध में की और चतुर्थ वर्ण को उस की सीमाऐं बताते हुऐ यज्ञ, पूजा, व अन्य धार्मिक अनुष्ठानों को करवाने का अधिकार ब्राहमण वर्ग को दे दिया। जिसमें ब्राहमण का महत्व बहुत अधिक बढ गया था।
89. सुदास पैजवन ने यमुना तट पर अज और शिग्रुवों के साथ-साथ यक्षों को भी पराजित किया था (7.18.19)। रही सही कसर यक्षों के अन्तर्गत ही रह रहे रक्षों/राक्षसों ने पूरी की ; यक्षों की पराजय के उपरान्त उन्होंने अपने उत्थान का अवसर देखा और यक्षों को पराजित कर निर्वासित कर दिया। रक्षों ने बड़ी संख्या में पुरूष यक्षों का नाश किया, इतना कि उनकी तो जाति ही लगभग समाप्त हो चली थी। यक्षिणियों ने वनों और दूसरी जातियों के क्षेत्रों में निर्वासित जीवन बिताते हुऐ अन्य जातियों के पुरूषों से जो सन्तानें उत्पन्न कीं... वे वानर कहलाईं...। वानर इसलिये कि उनकी माताऐं तो यक्षिणियाँ थी किन्तु पिता यक्ष नहीं थे। उन्हें अपने पिताओं के जाति-गोत्रों का नाम भी नहीं मिल सका... विरासत में उन्हें केवल राक्षसों के विरूद्ध शत्रुता की भावना ही मिली थी। इसलिये राक्षसों के विरूद्ध राम की सहायता करना वानरों के लिये मात्र प्रासंगिक नहीं था बल्कि यह एक राजनैतिक आवश्यकता थी।

बाली बोली नदी क्षेत्र के और सुग्रीव सागर/श्रूघन क्षेत्र के यक्ष/वानर जन थे। रामायण में दोनों के बीच मय दानव के पुत्र मायावी को लेकर शत्रुता का वर्णन है। हुआ यह होगा कि मैनाक (शिवालिक) पर्वत के मय जनों ने जब बोली नदी क्षेत्र के बाली यक्ष-वानरों पर आक्रमण किया तो शिग्रु यक्ष-वानरों ने उनका साथ नहीं दिया, या फिर हो सकता है कि शिग्रु यक्ष-वानरों ने उनके साथ विश्वासघात किया हो। इससे बोली के बाली यक्ष-वानर

शिग्रुओं के शत्रु बन गये। ऐसा भी हो सकता है कि यक्ष-वानरों की राक्षसों से चिर शत्रुता थी किन्तु इसके विपरीत बोली का बाली वानर समाज राक्षसों का मित्र और समर्थक बन गया हो और इसी कारण उन्हें समीपवर्ती समूचे वानर समाज में सर्वोच्चता प्राप्त हो गई हो। दूसरी ओर शिग्रु वानर जन थे जो रक्ष-यक्ष शत्रुता की भावना के कारण राक्षसों के सच्चे शत्रु थे। इस कारण उनके शत्रु जितने राक्षस थे... उतना ही बाली भी था... और जाहिर है ऐसा व्यक्ति बड़ी सावधानी से और छिपकर रहेगा... राम ने सर्वप्रथम बाली को छिपकर मारा, क्योंकि जिसके पास सत्ता हो वह बली है; जिसके पास बल है उसे छिपकर अथवा धोखे से ही मारा जा सकता है। सैन्य दल-बल के साथ, मर्यादाओं सहित बाली से युद्ध लड़ने के साधन न तो राम के पास थे और न ही सुग्रीव के पास... अतंत: जो एकमात्र मार्ग था राम ने उसे ही चुना। दूसरे गदा, पत्थरों, पेड़ के डन्ड़ों से युद्ध करने वाली जाति से धनुष-बाण द्वारा युद्ध करने को ही हो सकता है कि छिपकर युद्ध करने की संज्ञा दी गई हो, जो एक समाज की दृष्टि में गलत था क्योंकि सम्मुख युद्ध करने वाले व्यक्ति से काफी दूर रहकर धनुष बाणों से लड़ा जाना नियमानुसार युद्ध नहीं था और विजेता पक्ष ने तर्कों द्वारा वह युद्ध उचित ठहराया। जो भी हो राम ने रक्षों के विरूद्ध यक्षों/वानरों के दबे हुऐ आक्रोश को उभारा। बोली के बाली जन राक्षस समर्थक व उनके मित्र थे... इसलिये राम का पहला शत्रु, जो उन्हें मिला... बाली ही था। राक्षसों पर आक्रमण करने से पूर्व उनके इस मित्र को समाप्त कर राम ने राक्षसों की शक्ति को एक प्रकार से कम ही किया था।

90. रामकुमार राय ''वाल्मिकी रामायण कोष, पृ0 24 इन वानरों का स्थान लगभग वही था जो यमुना तट के समीप अजों/गजों; यक्षुवों का क्षेत्र था, मिलान कीजीऐ- अज/अजमीढ़/अजनाभ - गज/हस्ति - अंजन पर्वत/ अंजन वन/अंजन नाम हाथी ; केसर द्रोणि-कुमुद व अंजन पर्वतों के बीच केसरी वानर और अंजना - हनुमान/अनु (आनव जनों का प्रेदश -उशीनर) अन्तर्वेदी (अनु पर्वत की तलहटी, गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वत की तराई व उसके दक्षिण में); युगन्धर (जगाधारी < गजाधरी; तथा गढ़वाल में गज शब्द की ध्वनि। गजों की बस्तियों सम्भव गज > गढ़ ; प्रमुख अस्त्र गदा < गजा, वसुजनों का वसुन्धर > वसुधान्यक > बहुधान्यक > भादानक ; वसुओं के देवता विष्णु का प्रमुख अस्त्र अस्थियों की बनी गदा - **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 146 ; गन्धर्व का एक नाम गजमुख भी है वही पृ0 145 यह उचित लगता है कि यक्ष जन ही वानर भी थे और गन्धर्व भी। रावण द्वारा पराजित होने पर गन्धर्व पत्नियों से देवताओं द्वारा वानर उत्पन्न करने का आदेश ब्रहमा ने दिया (रामायण 11.7.5) **रामकुमार राय** पृ0 96

91. पलक्षा/सरस्वती नदी क्षेत्र के दक्षिण में राक्षी नदी के रक्षों/पलकषों की दूसरी पराजय शत्रुघ्न के हाथों हुई। शत्रुघ्न शिग्रु अथवा श्रूघन या सगर जनों का द्योतक है। शत्रुघ्न के पुत्र बाहुक को मथुरा/लवण का राज्य मिला था। बाहुक सगर के पिता का नाम भी है। कहीं-कहीं सगर के पिता का नाम असित मिलता है। बाहुक और असित में साम्य है। उक्त श्रूघन प्रदेश अजों/गजों/हस्ति जनों का मूल प्रदेश था जिन्होंने दक्षिण में पहुँच कर हस्तिनापुरी बसाई थी। हस्ति का अपभ्रंश हस्त है। हस्त अर्थात हाथ अर्थात बाहु। और इसी हस्ती या हस्त का अपभ्रंश असित है। अत: रामकथा में वर्णित सगर/शिग्रुव/श्रूघन वे मान्धाता जन ही थे जो अजों और हस्ति/गजों को दक्षिण में खदेड़ कर उनके क्षेत्र में आ बसे थे।

92. नारद पूर्व पुराण खण्ड़ और पद्यम पुराण, पाताल खण्ड़ में कथा है कि द्रविड़ों ने विभीषण को कैद कर लिया था, राम ने विभीषण को मुक्त करवाया। आन्नद रामायण के अनुसार राम और सीता ने शतस्कंध रावण और मूलासुर द्वारा पराजित विभीषण की सहायता के लिये लंका की यात्रा की थी - **कामिल बुल्के, ''रामकथा''**, प्रयाग 1993 पृ0 497-98;

स्कदपुराण नागर खण्ड़ में लिखा है कि राम ने लक्ष्मण की मृत्यु के उपरान्त सुग्रीव के साथ लंका की यात्रा की और विभीषण के अनुरोध पर सेतु नष्ट कर दिया। आन्नद रामायण में उल्लेख है कि राम ने विभीषण की सहायता के लिये भरत और शत्रुघ्न को भेजा। इन विवरणों से अनुमान लगाया जा सकता है कि लंका की विजय करके राम शान्ति से नहीं बैठ पाये। विभीषण से असन्तुष्ट और लंका पार के शत्रु बार-बार आक्रमण कर न केवल विभीषण को तंग करते रहे अपितु उन्होंने लंका को पुनः अपने अधिकार में लेने का प्रयास भी किया होगा, उनको राम ने बाद में विफल कर दिया।

93. **कामिल बुल्के**, पृ0 498
94. रघुवंश में कथन है कि कुश को राम के नाना का दक्षिण कौशल भी मिला था, वे दक्षिण कौशल (श्रंगवेश्वर < सृज्जवीरपुर) से शासन करने लगे। अयोध्या लगभग उजड़ गई। एक बार अयोध्या ने नारी रूप में कुश को स्वप्न में दर्शन देकर अपनी जीर्ण-शीर्ण अवस्था दिखाई, कुश द्रवित हुऐ और अयोध्या लौट आये-सम्भवतः दक्षिण कौशल का राज्य कुरूओं ने जीत लिया होगा और कुश को वहाँ से भागना पड़ा होगा।
95. **आर. सिद्धान्ता शास्त्री, ''हिस्ट्री आफ प्रि कलियुग इण्ड़िया''**, दिल्ली, 1977 पृ0 199
96. कुरू और वाहिनी के पुत्र जनमेजय के आठ पुत्रों के नाम -धृतराष्ट्र, पाण्डु बाल्हीक, निषाद, जम्बूनद, कुण्ड़ोदर, पदाति, वसाति से कुरू-कौरव्यों के प्रदेश के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र और उनकी जातियों का बोध होता है जिन पर समय-समय पर जनमेजय अथवा बहुत सम्भव है कौरव्यों ने या तो विजय प्राप्त की या शासन किया। इसी प्रकार इन जनमेजय के पुत्र धृतराष्ट्र ने जिन जातियों पर शासन किया होगा उन्हें पुराणों में उसका पुत्र कहा गया है- कुंड़िक, हस्ती, वितर्क, क्राथ, कुण्ड़िन, हविश्रवा, इन्द्रायु और ममन्यु।
97. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 180-181
98. वही
99. ''हद'' अर्थात झील, तालाब या नदी किनारे का विशाल घाट अथवा कुंड़। जिस का अपभ्रंश (उल्टा) ''दह'' है- जैसे मथुरा यमुना किनारे काली दह।
100. **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 183
101. मूल महाभारत जिसे जय अथवा इतिहास कहा जाता था उसमे मूलतः केवल 8800 श्लोक थे कालान्तर में इसमें 24000 श्लोकों का विस्तार हुआ और इसे ''भारत'' कहा जाने लगा। अंततः इसमें एक लाख श्लोक हो गये और गुप्त काल में इसे महाभारत का स्वरूप मिला। **हॉपकिन्स** महाभारत के 14 वें और 15 वें पर्वो के साथ-साथ शान्ति पर्व और अनुशासन पर्व को नकली महाकाव्य मानते हैं उसने हरिवंश तथा अन्तिम दो पर्वो को भी अलगकर प्रथम पर्व के बड़े भाग को उसी श्रेणी में रखा। इसी प्रकार रामायण के बालकांड़ तथा उत्तरकांड़ भी गुप्तकालीन प्रतीत होते हैं। अपने मूल स्वरूप में रामायण के 6000 श्लोक जो बाद मे बढ़कर 12000 हुऐ गुप्तकाल में 24000 हजार हो गये- **रामशरण शर्मा ''प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति एवं सामाजिक संरचनाऐं''**, दिल्ली, 1993 पृ0 188-189; 207 पर टिप्पणी-6
102. **आर. सिद्धान्ताशास्त्री**, पृ0 302
103. **रोमिला थापर** पृ0 214
104. वही पृ0 213
105. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 83
106. **रांगेय राघव**, पृ0 192
107. **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 180; पुराणों में कहा गया है कि हैहयों ने विश्वामित्र के पुत्र अष्टक और पौत्र लौहि को पराजित किया था। अष्टक विश्वामित्र और दृष्द्वती का पुत्र था इससे

ज्ञात होता है कि अष्टक दृष्द्वती नदी क्षेत्र के अच्छोदसर (हथनी कुण्ड) के आसपास के वसु-वासुकीजन थे। अच्छोदा का एक नाम अष्टक है-**राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 39 ; वसु ही वासुकी जन थे। नागों के प्रधान कुल आठ (अष्टक) की भाँति वसु भी आठ ही हैं। लौहि सम्भवत: लोहित्य पर्वत (यक्षों के निवास) के निवासिओं का द्योतक शब्द है। लौहित्य ताम्रवर्णी है, इसे ही मूल ताम्रद्वीप या ताम्रपर्णी कहा गया हो।

108.बलराम का रैवतक पर्वत बोली नदी क्षेत्र में रहा होगा। बलराम नन्द का पुत्र है और नन्द पिछले जन्म का द्रोण वसु कहा गया है -**राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 256 अर्थात वसु जनों के प्रदेश में बलराम एक यदु जन था। बलि या बल, बोली नदी क्षेत्र के निवासिओं का द्योतक नाम है। बलि (दैत्य) की सवारी में काम आने वाले भद्र-हाथी के पुत्र अंजन, वामन, पद्यम, नाग, नन्द, संकीर्ण, सुप्रतीक और भद्र थे। बलि की सवारी भद्र अर्थात बलि भद्र **>** बलभद्र। हस्तियों में एक नाम नन्द भी है और संकीर्ण भी। बलराम को संकर्षण भी कहा जाता है। ग्यारह रूद्रों में से एक शंकर से संकर्षण को मिलायें तो शिव का निवास कैलास/कालेसर, बोली नदी के समीप था। बलराम को शेष नाग का अवतार भी कहा जाता है अर्थात बलराम नाग है पितर-पिशाच है। तभी तो पुराणों में उसकी किसी वंशावली का विवरण नहीं मिलता। मणिवर यक्ष और देवजनी के एक पुत्र का नाम बाल है। ब्रहमा के रोयों से उत्पन्न 60000 बालखिल्य भी वास्तव में पिशाच हैं; पिशाच के एक वर्ग का नाम बलाद है। कैलाश/कालेसर के शिव बालनाथ है। बालखिल्य जन बाल्हीक नाग ही थे।

109.**रांगेय राघव**, पृ0 -187

110.**पारूल शर्मा** की रिपोर्ट दैनिक ट्रिब्यून, 17 मई 2004; मेरे विचार से गंगा के प्राचीन बहाव का नाम उस समय कावेरी था; जिसके तटों पर जन्हू जनों का निवास था।

111.**वी. के. माथुर ''ऐतिहासिक स्थानावली''** पृ0 980; **देवेन्द्र हाड़ा, ''सम इम्पार्टेंट टाउन्स''** पृ0 5-8 पर स्वर्णप्रस्थ को पाणिनी ने सोणप्रस्थ, महाभारत वन0 में सुवर्णतीर्थ, रामायण में स्वर्णद्वीप कहा गया है।

112.**राजेशेखर, ''काव्य मीमासा'' अनु० केदारनाथ शर्मा ''सारस्वत''** पटना, पृ0 - 312

113.कश्यप के क्रोधवसा से पिशाचों के सोलह जोड़े उतपन्न हुऐ।

114.जाम्बवान की स्त्री व्याघ्री थी इसके पिशाच, मार्जार, जय, जयन्त, सर्वज्ञ आदि सोलह पुत्र थे **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 309 ; मार्जार बन्दरों की एक जाति थी- वही, पृ0 420; जाम्बवान को विद्याधर है जो उसे विधाता अथवा विजय से सम्बन्धित करता है।

115.**रोमिला थापर**, पृ0- 242, 272

116.**रोमिला थापर**, पृ0 -243, व 250 पर पाद टिप्पणी-10

117.वही, पृ0- 267 **विमल चरण लाहा, ''सम क्षत्रिय ट्राईब्स आफ एंशैंन्ट इंड़िया''** वाराणसी 1975, पृ0 - 162 और आगे

118. तितिक्षू आनव वंशी महामना के पुत्र थे। तितिक्षु के भाई का नाम उशीनर था। उशीनर का प्रदेश हरिद्वार के उत्तर में माना जाता है और कपि/कपिल/कपोत जन हरिद्वार और उसके दक्षिण में थे जिन्होंने बाद में काम्पिल्य तथा कपिल वस्तु की स्थापना की/ ऐसे में पूर्व की ओर पलायन करने वाले तितिक्षू जन तितिर अथवा तीतर टोटेम वाले जन ही हो सकते हैं। अनुजन हस्ती/अहि ही थे दक्षिण भारतीय भाषा में ''आनै'' का अर्थ हाथी- **रांगेय राघव**, भूमिका पृ0 - ''न''

119.तार्क्ष्य भाग्वत0 में कश्यप का नामान्तर है। इनका विवाह दक्ष की चार पुत्रियों विनता, कद्रू, पतंगी और यामिनी से हुआ था इनकी संतत्ती नाग, गरूड़ आदि भी तार्क्ष्य या तार्क्ष कहलाये। एक यक्ष का नाम तार्क्षि है। यह तार्क्ष्य/तार्क्ष उस तार से साम्य रखता प्रतीत होता है जो शिव तथा विष्णु का भी नाम है। हरितगण के दस देवों के नाम तार है। बाली की स्त्री

तारा के पिता का नाम तार है। पाठान्तर में यही तारा, वरूण के पुत्र सुषेण नाम वैद्य की पुत्री थी-**राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 197, 534; एक तारा वृहस्पति की पत्नी थी जिसे चन्द्रमा ने हरण कर अपने पास रख लिया। घोर युद्ध हुआ ; ब्रहमा ने तारा वृहस्पति को वापिस दिलवा दी, किन्तु तारा से उत्पन्न पुत्र बुद्ध, चन्द्रमा को वापिस मिल गया। यह तारा भी वरूण के पुत्र सुषेण की पुत्री है। रामायण का सुषेण वानर है उसके पंख है और उसका सम्बध नागों से है- **रांगेय राघव**, पृ0 192 बज्रांग और वारांगी के पुत्र तारक को जो कि पारियात्र पर्वत पर रहता था, कुमार कार्तिकेय ने मारा था। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी समय कैलाश/कालेसर के समीप से लेकर पूर्व में गंगा पार तक दो प्रकार के टोटेमिक जन अवश्य थे- एक पक्षी टोटेम वाले ताक्ष्य दूसरे पशु टोटेम वाले। किन्तु थे सभी पितर, पिशाच, यक्ष या वानर। अब यदि सुषेण वानर के पंख थे तो वह ताक्ष्य भी था अर्थात वही तार था जिसकी पुत्री तारा थी । वरूण का पुत्र सुषेण ही तार अथवा तारक था, इसका एक और उदाहरण है कि रामायण में उसका एक पुत्र सुनीथ है- **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 526; ध्रुव की माता सुनीति का एक नाम तारका भी है- वही, पृ0 -197 सम्पूर्ण; तार/ताक्ष्य जनों को मिथकों में तारक कहा गया है इन तारों/ताक्ष्य/तारकों की बढ़ती शक्ति को शैव्य-कार्तिकेयों ने तोड़ा। इन्द्र पूजक अंगिरा वृहषपति जनों का ताक्ष्यों की भूमि पर अधि कार का अर्थ है तारा का वृहषपति की स्त्री होना, जिसे सोम भगा ले गया, अर्थात सोमवंशियों द्वारा ताक्ष्य भूमि पर एक बार पुनः अधिकार, किन्तु अन्ततः अंगिरा वृहषपति जन ही विजेता रहे और तित्तिरों, कपोतों/कपि जनों का पलायन पूर्व की ओर हुआ। ताक्ष्यों का ताम्र व ताम्रा से साम्य और सम्बन्ध है। दक्ष की पुत्रियॉ ताम्रा, विनता, कद्रू, पतंगी, यामिनी कश्यप को ब्याही थी। भाग्वत0 में कश्यप ताक्ष्य है। ताम्रा व ताक्ष्य की संतानें क्रौंची, भाषी, श्येनी, धृतराष्ट्र, श्येशुकी थी। मतस्य0 में पुलह की पुत्री अपसराओं की माता है। ब्रहमा0; वायु0 में ताम्रवर्ण सिंहल द्वीप का नाम है और ताम्रवर्ण एक हाथी है जो पुष्पदंत दिग्गज का पुत्र था- **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-197 इसका अर्थ यह है कि गंगा यमुना दोआबे में ताम्र (तांवा) संस्कृति वाले गैरिक मृदभाँड़ जनों का सम्बन्ध ताक्ष्य जनों से है वे ही कभी जब अपने उत्थान पर थे तो तारक थे। पहले उन्हें कैलाश कालेसर के शैव्य-कार्तिकेयों ने कुचला फिर इन्द्र पूजक **PGW** अंगिरा वृहस्पति जनों ने। मान्धाता जनों के आते-आते वे गिने चुने रह गये वायु0 में ताम्राभ मेरु के दक्षिण में सीतोदसर के पश्चिम में एक पर्वत था जहाँ तक्षक का निवास था। तक्षक और ताक्ष्य जनों में साम्य उसी प्रकार दिखाई देता है जैसे तार और ताल में। ब्रहमा0 में ताल एक राज्य का नाम है जहाँ से चक्षु नदी बहती थी और भाग्वत0; विष्णु0 में तालवन ब्रज के अन्तर्गत एक वन था। ब्रज... पितरों-पिशाचों (यक्ष वानरों) के प्रदेश विरज का अपभ्रंश है

120.**रोमिला थापर**, पृ0- 268

121.**रामशरण शर्मा**, **''प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति एंव सामाजिक संरचनाऐं''** पृ0-147 व इसके बाद और पृ0- 233-234

122.रामायण; महाभारत और मुद्राराक्षस-**II** में कम्बोज बाल्हीक से एकदम भिन्न है। महाभारत में कम्बोज पर कर्ण की विजय के संदर्भ में आये राजपुरम (**कर्ण राजपुरम गत्वा कम्बोजा निर्जिता स्तव्या**) के आधार पर विद्वान कम्बोज को काश्मीर के राजपुर नाम का स्थान पर जो कि पुंछ से दक्षिण पूर्व में था, मानते हैं। कनिंघम ने भी राजपुरा को राजौरी से समीकृत किया है जबकि **रायचौधरी** राजौरी को कम्बोज का केवल एक भाग मानते हैं। **एलफिन्सटन** के अनुसार यहाँ के आदिवासियों में कमोज कोमोजी नाम प्राचीन कम्बोज की याद सहज करते हैं-**रायचौधरी, ''प्राचीन का राजनैतिक इतिहास''** पृ0-115

123. वही, पृ0 -114

124. वही, पृ0 -116
125. वही, पृ0 -117
126. वही, पृ0 -46
127. वही, पृ0 -107-110
128. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0-552
129. वही,
130. वही, पृ0 -200
131. वही, पृ0 -199
132. ताड़ > ताल शब्द उसे तार/तार्क्ष्य अथवा तारक से जोड़ते हैं जो ताड़ के पत्तों से बनी पंख जैसी संरचना धारण कर पक्षी की भाँति दिखते होंगे। ताड़का जम्व के पुत्र सुन्द यक्ष की स्त्री थी, किन्तु जम्भ कई हैं। एक जम्भ हिरण्यकशिपु की स्त्री कयाधू और महिषासुर का पिता था। हिरण्यकशिपु, प्रहलाद और उसके दौनों पुत्र वाष्कलि तथा विरोचन इन चारों के एक-एक पुत्र का नाम जम्भ है ऐसा लगता है कि जंभ यमुना या जमुना नदी के क्षेत्र की निवासी जाति का द्योतक नाम है; उसी प्रकार जैसे जाम्बवान है

अध्याय-8

पणि जन और भारतीय इतिहास में उनकी भूमिका

पौराणिक युग से मध्यकाल के काफी बाद तक भी भारतीय इतिहास में नागों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उत्तर भारत में वैदिक जनों के प्रसार ने नागों को मध्य और दक्षिण भारत में धकेल दिया। किन्तु आश्चर्य का विषय है कि नागों का कोई विशेष उल्लेख वैदिक साहित्य में नहीं है। हालांकि नागों की भाँति ही यदु-यादव जनों का पलायन भी उत्तर भारत से मध्य, पश्चिमी और दक्षिणी भारत की ओर हुआ, किन्तु वे वैदिक और पौराणिक युग से आज तक महत्वपूर्ण भूमिका में रहे। जबकि दूसरी ओर भारतीय इतिहास की अबूझ पहेली रहे पणि, मात्र वैदिक युग तक ही सीमित हैं। वे बेशक लगभग चालीस से अधिक स्थानों पर वैदिक साहित्य में वर्णित हैं किन्तु वहाँ भी उनकी कोई विशेष भूमिका नहीं मिलती।

हिल्लेब्रांट का अनुमान है कि यमुना तट के पारावतों के साथ पणिओं का उल्लेख ऋग्वेद 6.61.1-3 में है, सरस्वती नदी क्षेत्र के त्रित्सु राजा दिवोदास के विरोधियों के रूप में वर्णित पणि, वेदों में गौ चोर (ऋ0. 10.108.1-11); दास-दस्यु (अथर्ववेद 5.11.6. 0. 5.34.5-7); दैत्य (अथर्ववेद 4.23.5, 19.46.2; ऋ0 1.32.11, 2.24.6, 4.58.4 और भी, शतपथ ब्रा0 13.82.3; शत्रुता के प्रतीक भेड़िया (ऋ0.6.51.14) देवों को हवि और पुरोहितों को दक्षिणा न देने वाले (ऋ0. 1.33.3 और भी; अथर्ववेद 5.11.7, 20.128.4, वाजसनेई संहिता 35.1) और ब्याज खाने वाले वेकनाटों (ऋ0. 8.66.10) और कंजूसों के रूप में उल्लिखित हैं।[1] किन्तु हैरानी की बात है कि इन अनार्य पणिओं का वैदिक युग के बाद कोई संकेत नहीं।

रॉथ, त्सिमर, लुड़विग उन्हें कंजूस, विनमय करने वाली आदिम जाति मानते हैं। **डा० बेवर** पणिओं का सम्बन्ध बेबीलोनिया से; **हिल्लेब्रान्ट** दहाये लोगों से समबन्धित किसी जाति से मानते हैं। **डा० ए.सी.दास** और **डी. पी. मिश्रा** का मानना है कि आर्यो द्वारा तिरस्कृत पणि लोग जहाजों द्वारा सप्तसिन्धु प्रदेश से गुजरात होते हुये मालाबार पहुँचे, जहाँ से बेबीलोन होते हुये सीरिया गये.... वहाँ कालान्तर में वे फोनेसियनों के रूप में विख्यात हुये।[2] विद्वानों का यह मानना कि वे आर्यो द्वारा पराजित कर भगा दिये गये; दोनों ही बातें तर्कसंगत नहीं क्योंकि साहित्य में न तो उनके पलायन का संकेत मिलता है और न ही यह कि आर्यो के साथ उनका कोई इतना बड़ा संघर्ष हुआ, जिसके कारण वे पलायन कर गये। दूसरे वे इतने उच्च कोटि के व्यापारी नहीं थे कि उनका साम्य फोनेशियनों से बैठाया जा सके।

वैदिक जनों के लिये आवश्यक पणि

विद्वान पणिओं को पण, पर्ण (मुद्रा) से जोड़ते हैं कि पणि क्रय विक्रय या ब्याज से ध न कमाने वाले वणिक लोग थे। किसी भी समाज के लिए चाह कर भी ऐसे लोगों से पीछा छुड़ाना आसान नहीं होता। अनार्यो के समाज में वैश्यों की भूमिका नहीं मिलती। इस का अर्थ यह हुआ वे अनार्य तो थे किन्तु वे वैदिक जनों की बस्तिओं में आवश्यकता की वस्तुओं-जैसे वनों से एकत्रित खाद्य सामग्री, फल, लकड़ी, शिकार/माँस, शहद, जड़ी बूटी, मूँज, बॉस, कन्द, डाब, मछली लाकर मेले, पैंठ आदि लगते थे ऐसे में अधिक मूल्य पर उधार; ब्याज, रात में चोरी चकारी, पशुओं को खोल ले जाना जैसी विसंगतियों से भी ये जुड़े होंगे, इन्हीं विसंगतियों के कारण वे आर्य समाज के लिए अत्याधिक आवश्यक होते हुये भी हीन, तिरस्कृत, बने रहे।

पणिओं की कुड़ संतानें थे पॉडु जन

पाणी.... नाग थे। नागहृदय यदि हस्तिनापुर था, तो फण.... पणि थे। आर्यो का प्रथम सम्पर्क इन्हीं पणिओं से हुआ, और सम्पर्क अंत तक बना भी रहा एक दिन अन्ततः इन्हीं पणिओं के कारण मूल वैदिक जनों और उनके समाज का धीरे-धीरे पतन हो गया। पणियों की स्त्रियाँ आर्य बस्तियों में जाकर अपसरा कर्म करतीं थीं, जिस से पणिओं में कुंड़ सन्तानों का प्रतिशत बढने लगा था। किसी स्त्री द्वारा पति के जीवित रहते हुऐ, दूसरे पुरूष के साथ संसर्ग से उत्पन्न संतान को ''कुंड़'' कहा जाता है।[3] एक अनुमान यह भी है कि पणिजनों और उनकी स्त्रियों ने पहले तो वैदिक समाज के नैतिक पतन में हिस्सा लिया। बाद में पणि स्त्रियों की वैदिक पुरूषों से उत्पन्न संतानों में वैदिक समाज के सभी तत्व, और जानकारियॉ आती चली गई। वैदिक समाज दो चार पीढ़ीयों बाद कुण्ड़ पॉडु जनों में पलटता चला गया। बाद का इतिहास इन्हीं पॉडु - कुण्ड़ जनों की संतानों और दोआबे के मूल नाग-कुरू कौरवों के बीच संघर्ष का इतिहास है जो माता की ओर से नागों के बान्धव ही थे।

इसे स्वीकार करना कठिन है किन्तु संकेत यही है कि वैदिक संस्कृति के प्रसार में अधिक पणिओं की कुण्ड सन्तानों का योगदान है - इन कुंडों को जन्म देने वाली कुण्ड़तियाँ [> कुन्ती] , पणिओं की स्त्रियाँ थीं और इन वैदिक पणि जनों का पौराणिक रूप (पणिजनों की सन्तानें) पणिड़ू > पॉडु है पाँचाल शब्द के पीछे भी यही पाँडु (चाल) शब्द है।

अष्ट कुल का मिथक

नागों के अष्टकुल और आठ वसुओं की भाँति वज्जिगणों के भी शाक्य, कोलिय आदि आठ कुल कहे गये हैं। इस आठ की संख्या का साम्य हमें कृष्ण कथा में भी मिलता है - जैसे कृष्ण अपनी माता का आठवाँ पुत्र है, वह विष्णु का आठवाँ अवतार है, उसका जन्म

भी अष्टमी को हुआ था और उसकी आठ ही पटरानियाँ थीं।

कृष्ण के पिता का नाम वासुदेव है... कृष्ण के पालक पिता नन्द को पिछले जन्म का द्रोण वसु कहा गया है.... वह वसुओं की धरा वसुन्धरा (> बहुधान्यक >भादानक) पर निवास करने वाला यादव था, अर्थात् यादवों और वसु जनों में कुछ न कुछ साम्य है क्यों कि पाँडवों के लिए खांडवप्रस्थ और स्वयं कृष्ण के लिए द्वारिका बसाने का कार्य प्रभाष वसु के पुत्र विश्वकर्मा ने किया था। द्वारिका नगरी भी प्रभाष तट पर, किन्तु गुजरात में नहीं अपितु सरस्वती नदी के तट पर वहाँ थी जहाँ वह पश्चिमवाहिनी थी.... सम्भवतः जगाधरी के स्थान पर कोई प्राचीन बस्ती....। यह क्षेत्र वैदिक काल में यादव-युगन्धरों का युग > जुग > जग कहा जाता था.... यह क्षेत्र दृषहती नदी क्षेत्र में सभी ओर जाने का (प्रवेश) द्वार था और कान्यकुब्ज का द्वार भी, तभी इस क्षेत्र में कृष्ण की नगरी का नाम द्वारावती > द्वारिका था। और वह समुद्र जिसमें द्वारिका डूबी.... सरस्वती नदी की अनिश्चितता और अनियमितता के कारण बना था।

कृष्ण के जन्म का आठवाँ क्रम और वसु जनों से उसका सम्बन्ध उसे उस शान्तुनु पुत्र भीष्म से मिलाता है जिसके विषय में एकदम आरम्भ का महाभारतीय मिथक है कि वह आठवाँ वसु था जिसे वशिष्ठ की कामधेनु गाय हरण करने के अपराध में पृथ्वीपर जन्म लेने का शाप मिला था। हस्तिनापुर का कुरूवंश वसुओं से सम्बन्धित था और वसु, वासुकि जनों से सम्बंध थे। अर्थात नाग थे वसु-वासुकी जन।

नाग थे कुरु-कौरव्य जन

हस्तिनापुर का राजवंश में नील एल (ऐरावत नाग) नहुष (नहुष नाग), बाल्हीक (बलाहक नाग), कर्ण (महाकर्ण नाग), /धृतराष्ट्र (नाग) अजमीढ (अज, अहि), धनंजय (धनंजय नाग) धूमिनी धूम्रवर्ण नाग नाम नागों से सम्बन्धित हैं। वंश का नाम कुरू स्वयं कौरव्य नाग के नाम से बोल रहा है। इन के राज्य में सफीदों (सर्पदलन/ सर्पादेवी/ सर्पादधि) हस्तिनापुर (नागसाहव्यं) अहिच्छत्रा (अहि/नाग) आदि नगर थे। धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से अनेकों के नाम नागों के हैं। अश्वत्थामा, नागों के मणिधर होने के विश्वास और पौराणिक आख्यान के कारण नाग ही है उसकी मणि छीन लेने का अर्थ नाग सत्ता की समाप्ति ही है। दोआबे में अतरंजीखेड़ा भी अहि शब्द से बना अहितरंजी खेड़ा प्रतीत होता है।

पाँड़वों और कौरव्यों के संघर्ष की भूमिका

महाभारत में पाँडु (पाँड़व) धृतराष्ट्र (पुत्रों) से बड़े भाई हैं, हस्तिनापुर में यदि नाग थे तो उनके फण.... पणि और उनकी सन्तानें पाँडु और पाँड़व थे। पहले उनका ही सम्पर्क वैदिक जनों से हुआ। सरस्वती नदी क्षेत्र के वैदिक जनों के एकदम समीप और सम्पर्क में रहने के कारण कुण्ड़ती पुत्र वैदिक जनों के कृषि, धातु कर्म, लोहा, बरतन, भवन, वस्त्र निर्माण की नई तकनीकी, अस्त्र शस्त्र, युद्धकला और सबसे बड़ा ताँबे काँसे के भौंड़े- भौंथरे, अस्त्रों-शस्त्रों के स्थान पर लोहे के अपेक्षाकृत हलके तेज अस्त्रों-शस्त्रों का प्रयोग करते थे। यह उन्हें हर प्रकार से ताम्र सभ्यता/गैरिक मृद भाण्ड संस्कृति के कुरू कौरव्यों से श्रेष्ठ बनाता था। भले ही उन कुण्ड़ती पुत्रों/पाँड़वों के पास उनके पिताओं के नाम न हों किन्तु इन्द्र, धर्म, वायु, अश्विनी कुमार वाला विस्तृत देवतन्त्र तो उनके पास था ही। दूसरी ओर उनकी माताऐं चाहे पर्णिनियाँ रही हों कि किन्तुः वे थे वैदिक जनों पुरूषों की सन्तानें ही और निकट सम्पर्क में रहने के कारण वे सभ्यता-संस्कृति, रहन-सहन और यहाँ तक कि सम्भवतः भाषा में नाग कुरू कौरव्यों से बिल्कुल भिन्न हो चले थे जब किसी प्राकृतिक

कारण से नदी मुख्यत: सरस्वती की अनिश्चितता और अनियमितता, से बहाव मार्गों में परिवर्तन या अकाल, बाढ आदि के कारण वे गंगा यमुना दोआबे में चले आये तो नाग-कुरू कौरव्यों द्वारा नकार दिये गये.... भले ही नागों में मातृसत्तामक समाज था, किन्तु काली पर्णिनियों के ये पीतवर्ण पुत्र तो वैदिक जनों की भांति पितृसत्तामक समाज के पक्षधर थे। इसलिये एक विशेष प्रकार की मानसिकता तो आढ़े आ रही थी। उन्हें शरण नहीं मिली, जिसने महाभारत युद्ध और जनमेजय नाग यज्ञ के बीज बो दिये थे।

कौटम्बिक विवाह और अपसरा समाज

नागों, पणि-पाँडुओं के समाज और उनकी तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों को समझने के लिये कौटाम्बिक विवाह, सोलह जुड़वाँ जोड़ों का मिथक और अपसरा समाज तीनों विषयों को जोड़ कर देखना होगा क्यों कि इन सबका सीधा सम्बन्ध नागों-पणि-पाँड़वों से था।

वज्जि गणों के उदभव् सम्बन्धी मिथकों में कौटम्बिक विवाह (भाई-बहनों की बीच); और पिशाचों की भाँति सोलह जुड़वाँ जोड़ों का जिक्र हुआ है। सोलह जुड़वाँ जोड़ों का अर्थ... . कि उनमें कौटम्बिक विवाह होता था। ऐसा किसी भी समाज की आदिम और प्रारम्भिक अवस्था है विश्व की सभी सभ्यता-संस्कृति के मिथकों की शुरूआत इसी प्रकार के कौटम्बिक विवाह से होती है। मिश्र में तो काफी बाद तक भी ऐसा होता रहा है बाद में यूनानी रक्त के राजवंश टोलेमियों ने भी मिश्र में आकर इस प्रथा को अपनाया।

सिंहल जिसे सहारनपुर, मुजफ्फरनगर में साँदली नदी क्षेत्र में समीकृत किया जा सकता है, के राजा विजय का साम्य उन विद्याधरों से बैठता है जो जम्बू/जमुना/यमुना नदी क्षेत्र के जाम्बवान लोग थे। जाम्बवान के व्याघ्री (विड़ाल वंशी) से पिशाच, मार्जार (विड़ाल-बिलाव/बिल्ली-पूषा/पूषी) आदि सोलह पुत्र थे। जाम्बवान को ऋक्षा का पुत्र ऋक्षराज (रीछों का राजा) और विद्याधर (विद्या > विड़ाल) कहा गया है.... ऋक्ष अर्थात् राक्षी नदी क्षेत्र से उसका सम्बन्ध था। वज्जि शब्द के मूल में भी विजय अथवा विद्याधर शब्द प्रतीत होता है। चाहे ये कितने भी सभ्य, सांस्कृतिक और मेरे विस्वास में ताँबा धातु से जुड़े गैरिक मृद भाण्ड संस्कृति के जन थे किन्तु इनके मातृ सत्तात्मक समाज में कौटम्बिक विवाह की प्रथा के कारण पितृसत्तामक समाज वाले कथित आर्यों ने इन्हें आदिम, अर्धसभ्य, पिशाच, अधार्मी की संज्ञा दी वरना तो वे वनों पर आश्रित, खाद्य संग्राहक और पशुपालक भी थे। ये जन कृषि से एकदम तो अनजान नहीं रहे होंगे और भाषा जो कि पिशाची या ब्राह्मी थी की लिपि भी उनके पास थी। किन्तु पठन-पाठन, धार्मिक कर्मकाड़ के लिये कोई अलग वर्ग नहीं था फलत् पुरोहित वाद, ब्राहमणवाद, विस्तृत धार्मिक कर्मकाण्ड़ और वर्ण व्यवस्था जैसी चीज उनके लिये काफी दूर की बात थी।

अनार्यों में विवाह संस्था का विकास न होने के कारण स्त्रियाँ स्वतन्त्र थीं, उनकी इसी स्वतन्त्रता के कारण उन्हें अपसरा सम्बोधित किया गया। कुछ तो अपनी स्वतन्त्रता के चलते और कुछ जीवन यापन के लिये अपसराओं ने वैदिक जनों की निकटता का लाभ उठाया और वे उनके समाज में घुस गई, अपसराऐं विवाहित भी होती थीं किन्तु इनके पिता, पति, पुत्र, भाई इत्यादि को उनके आर्य पुरूषों के साथ सम्बन्ध पर कोई ऐतराज नहीं होता था। हो सकता है शुरू-2 यह बुरा लगने का विषय रहा हो, किन्तु जीवनयापन की विवशताओं ने धीरे-2 इसे एक आम बात बना दिया होगा। वैदिक समाज इसे अनैतिक मानता था धीरे-2 पूषा-पूषिनी जैसे जातिगत नाम पिशाच-पिशाचिनी में बदल गये। पणियों की कुण्ड़ सन्तानों-पाँड़वों का जनसंख्या में प्रतिशत बढ़ता जा रहा था.... अप्सरा कर्म ने उनका समाज ''बहुपति प्रथा''

की ओर ढकेल दिया, यह प्रथा आर्यो के उदभव से पूर्व पणिओं में नहीं रही होगी। इस प्रथा में पर पुरूषों से सम्बंध के लिए स्त्री स्वतन्त्र होती थी।

प्रथम वर्ग की अपसराऐं अपनी शर्तो पर आर्यो के समाज में घुस कर सन्तानें उत्पन्न करतीं थीं; सन्तानों के प्रति आगे की जिम्मेदारी वे नहीं उठाती थीं, वे उन्हें त्याग देती थीं। त्यागी हुई कोई संतान जगली जानवरों से बच जाती, या किसी प्रकार ग्राम बस्तियों से बाहर बने ऋषियों-वैखानसों के आश्रमों में पहुँचा दी जाती तो वे वहाँ न केवल पल जाती थी बल्कि पठन-पाठन और वैदिक पद्यति से पूजा पाठ, यज्ञ आदि में पांरगत हो जाती थी ये ही ब्रहमः अर्थात ऋषि कहलाये। दूसरे वर्ग की अपसराओं ने अपने से उत्पन्न वैदिक जनों की सन्तत्ति को अपने पास रखा। उन्हें पणि-पाँडु पिता का नाम दिया। कुण्ड़ती पुत्र पाँड़व ऐसे ही जन थे।

अतिथि सत्कार की प्रथा

इसके अतिरिक्त उनमें एक और प्रथा भी थी, कि अतिथि के आने पर घर की पुत्री उसकी हर प्रकार से सेवा सत्कार करती थी।[5] उस युग में जब जनसंख्या का घनत्व अत्यन्त कम था, थोड़े से घर-परिवारों की छोटी-2 बस्तियाँ भी मीलों दूर (और वह भी अनिश्चित) होतीं थीं, जीवन में कुछ भी नया नहीं था ऐसे में बहुत हद तक कौटम्बिक विवाह उनकी मजबूरी थी। सुदूर और अनिश्चित दूरियों पर बसी इन इक्का-दुक्का बस्तियों की यात्रा, हिंसक जानवरों से भरे जंगलों से, बिना किसी निश्चित मार्ग के गुजर कर करना, ना के बराबर या बहुत कम ही होती थी। वर्षो या दशकों में कभी कभार किसी अतिथि का आना सम्पूर्ण बस्ती के लिए सौभाग्य की बात हुआ करती थी। बस्ती के सम्पूर्ण परिवार उसकी सेवा के लिए तत्पर रहते थे और इसका कारण सम्भवतः यह रहता होगा कि अतिथि की सेवा करके वे सुदूर स्थित बस्तियों, वहाँ के लागों के खानपान, रहन सहन, जीवन यापन के साधन, किस्से-कहानियाँ, वस्त्र, घर निर्माण की कला, अस्त्र शस्त्र, धातुकर्म, शिकार के तरीके, बरतन, कला, तकनीकी का ज्ञान, धर्म-पूजा, देवी- देवता, आदि के विषय में जान सकते थे। इस ज्ञान को अपना कर जीवन में बेहतरी विविधता या नयापन लाया जा सकता था। इस प्रकार प्राप्त किया गया ज्ञान, उस परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ा देता होगा जिस परिवार ने वह ज्ञान उस अतिथि से प्राप्त किया है। ऐसा नहीं है कि अतिथि-सत्कार की यह प्रथा मात्र भारत में ही थी, प्राचीन मेसोपोटामिया के जिग्गुरातों और यूनान में देवताओं के मन्दिरों में पुजारिनें अतिथिओं की सेवाऐं करती थीं। ये मन्दिर या जिग्गूरात विदेशियों के लिये सराय ही थे। इस प्रकार नगर में आने वाले अतिथि की सेवा करना उनके इरादों को जानने का एक साधन भी था। प्राचीन काल में कज्जाकों द्वारा रेशम मार्ग पर व्यापारियों की सेवा में अपनी लड़की या स्त्री पेश करना जीवन यापन के लिऐ धन कमाने का एक साधन भी रहा होगा।[6]

नाग कौरव्य की पुत्री उलूपी जो कि ऐरावत नाग की पुत्रवधु थी, ने विवाहित होते हुऐ अर्जुन को वरा,[7] जाहिर है यह विवाह नहीं था; विवाह इस प्रकार के सम्बन्ध को वैधता देने के लिऐ बाद के साहित्य ने बना दिया; क्यों कि अर्जुन द्वारा चित्रांगदा और उलूपी से विवाह का वर्णन तो है किन्तु वे अर्जुन के साथ नहीं आईं। ऐसा लगता है कि वे अथिति सेवा वाली प्रथा का निर्वाह कर रही हैं बस ! उददालक की स्त्री, (श्वेतकेतु की माता) को घर आया अतिथि ब्राहमण जबरदस्ती भीतर ले जाने लगता है तो बालक श्वेतकेतु के विरोध प्रकट करने पर पिता उददालक कहते हैं कि ''पुत्र यह तो सनातन धर्म है'' अर्थात घर-परिवार में पुत्री के न रहने पर घर की स्त्री अतिथि का सेवा-सत्कार करतीं थीं।.... पिता के घर में कुन्ती पहले दुर्वाशा की सेवा करती है और फिर सूर्य की; विवाह हो जाने के उपरान्त भी वह

सेवा-सत्कार करने की प्रथा नहीं छोड़ती। पाँडु की दूसरी स्त्री माद्री (क्रय करके स्त्री बनाई गई) भी सेवा सत्कार की प्रथा अपनाती है।

ऐसा लगता है कि कुन्ती किसी एक स्त्री के लिऐ प्रयुक्त नाम नहीं हैं। गन्धार देश की प्रत्येक लड़की गान्धारी; विदेह देश की प्रत्येक लड़की वैदेही, मद्र देश की माद्री, कैकय देश की कैकई; जैसे बंगालिन, मद्रासिन, गुजराती, पंजाबी, बिहारी, गढ़वाली, वैसे ही कुंती और वैसे ही पांडु...। पानीपत, पिंजोर, पिंजोला ही नहीं अपितु पंजाब के नामकरण के पीछे भी ''पणि'' शब्द होना चाहिये; यही शब्द पांचाल या पांचाली के मूल में भी है; पणिजनों की बस्तियाँ ''पिण्ड'' कही गई; जो आज गाँवों-स्थानों के लिये पंजाबी भाषा का शब्द है। पणिओं की सम्भवत: बहुपति प्रथा हमें पांचाली- द्रोपदी के विषय में देखने को मिलती है। इसी प्रथा से कुन्ती भी जुड़ी प्रतीत होती है।

पणि पूषा/अपसरा समाज के पीढ़ीयों के चले आ रहे वैध माने जाने वाले सेवा कर्म को गलत ठहराते हुए कथित आर्यो के समाज ने पाँडु की पाँडुरोग (पीलीया) के कारण स्त्री से संभोग न कर पाने का कारण देकर, फिर से वैध बनाने का कार्य किया। तब केसरी वानर के साथ कोई कारण क्यों नहीं दिया गया? केसरी वानर के तीन बच्चों में से एक भी औरस नहीं है। उसकी प्रथम स्त्री अंजना का पुत्र हनुमान, पवनदेव का रूद्रावतार पुत्र है और दूसरी स्त्री आद्रि अपसरा के विषय में कहा गया है कि वह शापवश बिल्ली के मुख वाली पिशाचिनी हो गई थी इससे उपरिचर वसु के दो सन्तानें हुई। एक पुत्री अजगन्धा या मतस्यगन्धा और दूसरा एक पुत्र आद्रि जो पिशाचों का राजा बना। सेवा करने वाली अपसराओं की पुत्रियाँ भी सेवा ही करती थीं।

आद्रि अपसरा की पुत्री अजगन्धा/ मतस्यगन्धा ने परासर मुनि की सेवा की थी इसका पुत्र कृष्ण द्वैपायन हुआ, और बाद में यह हस्तिनापुर के राजा शान्तुनु की पत्नी बनी।

एक और मतस्य कन्या से हनुमान का पुत्र मकरध्वज हुआ, सम्बन्धों को वैधता देने के लिऐ कथा का स्वरूप चाहे जो दिया गया हो, किन्तु वह हनुमान के पुत्र की माता तो थी ही। मेनका अपसरा की पुत्री शकुन्तला (शतपथ ब्राहमण0 में यह अपसरा कही गई है) के दुश्यंत के साथ सम्बन्ध को शाप और अगूँठी की कथा देकर वैध बनाने का प्रयास किया गया जबकि अपसरा समाज में यह पहले ही वैध था। महाभारत में राक्षसी हिड़िम्बा हिमाचली लोक संस्कृति में नाग देवी है, भीम हिड़िम्ब का वध करके ही हिड़िम्बा को प्राप्त कर सका, तो भी यह विवाह नहीं था, कारण चाहे जो दिया गया हो कि पाँड़व उस समय छिपकर भटक रहे थे या भीम बड़े भाईयों से पूर्व विवाह नहीं कर सकता था, तो क्या यह हिड़िम्बा का अतिथि सेवाभाव नहीं था ? कहा जा सकता है कि अनार्यो में विवाह के नियम आर्यो जितने कड़े नहीं थे, स्त्रियाँ विवाह से पूर्व और विवाह के उपरान्त स्वतन्त्र ही थी। उर्वशी पाँच छह पुत्रों के जन्म के उपरान्त भी पुरुरूवा को छोड़ गई। गंगा आठ पुत्रों को जन्म देने के बाद शान्तुनु को छोड़ कर चली गई, बन्धन का कोई रिवाज नहीं था.... गंगा जो चाहेगी करेगी, शान्तुनु उससे कुछ नहीं पूछेगा; ऐसा लगता है कि सन्तानों का बन्धन भी उन्हें बाँध नहीं सकता था जाहिर है ऐसी अपसराऐं ठसकदार होती होंगी; वे अपनी शर्तो पर पुरूष के साथ रह सकती थी-उर्वशी तीन शर्ते रखती है; गंगा एक; मतस्यगन्धा/सत्यवती भी शर्त पर ही शान्तुनु की दूसरी रानी बनी कि उसी के गर्भ का पुत्र गद्दी का अधिकारी रहेगा

हरण प्रथा

एक समय तीन प्रकार के समाज थे पहले आर्य, जिनमें विवाह संस्था थी(और स्त्री

कतई स्वतन्त्र नहीं थी। दूसरे पूषा-अपसरा जिनमें स्त्री-पुरूष का साथ रहना तभी तक संम्भव था जब तक पुरुष, स्त्री की स्वतन्त्रता को स्वीकार करता रहेगा। और तीसरे वे जिन में पुरुष और स्त्री को हरण कर, लूटकर उनकी स्वतंत्रता समाप्त कर दी जाती थी, इस विषय में एकाधा अपवाद को छोड़ कर पुरुष या स्त्री की मर्जी का कोई अर्थ नहीं था। दूसरे प्रकार का समाज धीरे-2 तीसरे प्रकार के समाज में बदल गया, फिर पहले प्रकार का आर्य समाज हावी हो गया और स्त्री तथा पुरुष दोनों की ही स्वच्छन्दता/स्वतन्त्रता समाप्त हो गई.... विशेषकर स्त्री की ! कृष्ण तीसरे प्रकार के समाज का व्यक्ति था जिसमें विवाह के लिए हरण की व्यवस्था, वैधाता थी। कृष्ण रुकमणी का हरण करता है, अपनी बहन सुभद्रा का हरण करवाता है, उसके पुत्र साम्ब और प्रद्युम्न का हरण होता है और क्या पता कंस ने अपनी बहन देवकी से विवाह के लिऐ वासुदेव का हरण किया हो, तभी तो वह उसे बन्दी अवस्था में रखता है यदि शाप, वरदान, आकाशवाणी, भविष्यवाणी जैसी जिदों को छोड़ दें तो? इस प्रकार के जबरी विवाह की प्रथा आज भी बिहार प्रदेश में है।

दृषद्वती नदी क्षेत्र था पांडयों और पौन्ड्रजनों का मूल स्थान

भारत के धुर दक्षिण में ताम्रपर्णी नदी के तट पर मदुरै के शासक पांड्यों का उदगम् उत्तरी भारत के दृष्टद्वती नदी क्षेत्र के दृष्दन्त जनों पणि/पर्णि/पाँडुजनों से प्रतीत होता है। पौरव वंशी दुष्क्रंत/दुष्यन्त सुत आंड़ीर के चार पुत्रों में से एक पांड्य देश का प्रधान था; पाँड्य देश का राजा जनापीड़ के चार पुत्रों में एक था और जनापीढ दुष्क्रंत सुत शरूथ (मतस्य0 में वरूथ) का पुत्र था।[8]

पांडु जनों का प्रदेश हरियाणा में पिंडारा; पिंडारसी; पूंडरी से लेकर पूर्व में यमुना पार तक था। यही प्रदेश पांडुर पर्वत कहा गया होगा, जहाँ विद्याधरों का निवास बताया गया है।[9] जाम्बवान, विद्याधर है, स्रिंहल (काथा-साँदली नदी क्षेत्र)के विजय से उसका साम्य पिशाच, र्माजार आदि सोलह पुत्रों के कारण भी प्रतीत होता है। इसी प्रकार पिंडारा, पिंडारसी, पूंडरी, पांडुर का साम्य पुण्ड्र देश, उसकी राजधानी पुण्ड्रवर्धन, निवासी पुण्ड्रवाणों और राजा पौंड्रक से भी होता है। बाद में भले ही ताम्रद्वीप (स्वर्णप्रस्थ/ सोनीपत के उत्तर में) से जाकर अनु (ययाति पुत्र); के वंशज बलि के पुत्र पुण्ड्र ने पूर्वी समुद्र तट पर ताम्रलिप्ती और पुण्ड्र देश बसाया हो और पाँडु वंशजों ने सुदूर दक्षिण में ताम्रपर्णी नदी के तटों पर पाँड्य राज्य बसाया(किन्तु वे थे वसु-वासुकी जनों के वसुधन/बहुधान/बहुधान्यक/भादानक ही। मूल पौंड्रक जो अपने आप को वासुदेव कहता था, बिल्कुल कृष्ण की भाँति वसु-वसुन्धरा का था। किन्तु पौंड्रक तीसरे और अपसरा/पूषा-पणि/पर्णिनी समाज का था, और कृष्ण दूसरे और हरण को वैध मानने वाले समाज के; इस प्रकार पौंड्रक द्वारा अपने आप को वसुदेव कहे जाने से कृष्ण और उसके वसु-यादव समाज का भी अपमान होता था.... फलतः दोनों के बीच कटुता और फिर संघर्ष अनिवार्य था।

कृष्ण की वे 16000 पत्नियाँ जो उन्होंने नरकासुर की कैद से छुड़ाई.... अपसरा कर्म करने वाली स्त्रियाँ ही थीं, जिन्हें कृष्ण ने एक प्रकार के नर्क कर्म से निकाला, उन्हें संरक्षण दिया.... पति का नाम दिया.... यह कृष्ण की महानता थी क्योंकि ऐसी स्त्रियों को पति के नाम की (वैधाता) देना भी तो उस समाज में जीवट का काम था। सरस्वती नदी प्रदेश में बढ कर विकराल होती जा रही अपसरा या कुण्ड सन्तानों जैसी विकृति को समाप्त करना आसान नहीं था। जीवनयापन के लिये अप्सरा कर्म को करतीं 16000 स्त्रियों को पति का नाम देकर; सरंक्षण देकर कृष्ण ने समाज से इस विकृति को

उखाड़ फेंका। अपसरा, गणिका, या फिर कुण्ड स. तानों के पीछे भूमिका में भले ही पुरुष रहे हों, किन्तु प्रत्यक्ष में कोई भी इनसे सम्बन्ध नहीं रखना चाहता.... यह पुरुष और उसके बनाये समाज की मानसिकता है। ऐसे में केवल और केवल कृष्ण, न केवल यह कह सके बल्कि निभाये भी कि कुण्ड़ती उसकी बुआ है और पाँड़व उसके फुफेरे भाई....; ऐसे व्यक्ति को अवतार से छोटी संज्ञा देना उसकी उपलब्धियों को कम कर के आंकना ही होगा।

''भारत'' या ''भरत'' शब्दों के मूल में भाग्रत शब्द है।

भगदत्त नाग था; कामयकवन क्षेत्र में नरों का निवास ही नरक था, बाद में यहाँ के नागों ने पलायन कर पूर्वी भारत में कामरूप की स्थापना की दक्षिण भारतीय भाषाओं में ''भाग'' नागों को कहते हैं। मतस्य, वराह, नाग, गरूड़, कूर्म भारत की टोटेमिक जातियाँ थीं, सबके नाम पर एक-एक पुराण है, प्रमुख जाति नागों के नाम का नागपुराण नहीं है? असल में वह है....भाग्वतपुराण के रूप में ; भगवान शब्द भी नागों के प्राथमिक आराध्य के रूप में है, दूसरे शब्दों में ''भगवान'' (नागों के लिऐ) ईश्वर का पर्याय है। उनके देश, भूमि का नाम भाग्रत है जिसका अपभ्रंश आज भारत है। भरत... भगरत अर्थात नाग थे और तीसरी चौथी शत्ताबदी के शक्तिशाली भारशिव.... पद्यमावती के नागवंश के भाग्रशिव ही थे। राहुल सांकृतायन के मतानुसार दोआबे में रहने वाली भर जाति के कारण देश का नाम भारतवर्ष हुआ। ये भर ही भग्र रहे होंगे।

उत्तरी हरियाणा की कोशिकी नदी का क्षेत्र कुशद्वीप था, पुण्ड्रा कुशद्वीप की एक नदी थी।[10] कालेसर के उत्तर में यमुना की करौंदी घाटी क्रौंच द्वीप था। कालेसर के दक्षिण में हथनीकुंड अच्छोदसर और अंजन पर्वत की तलहटी का क्षेत्र था। हनुमान की माता अंजना को पिछले जन्म की पुञ्जस्थला अपसरा कहा गया है जिसमें पुण्ड्रक स्थला की ध्वनि है। पुञ्जस्थला मार्कण्डेय मुनि का तप भंग करने गई थी किन्तु असफल रही।[11] इसका अर्थ यह है कि पौंड्र स्थल (पूंडरी, पिंड़ारसी, पिंड़ारा) की अपसराऐं मार्कण्ड़ा नदी क्षेत्र की आर्य बस्तियों में जाती होंगी.... बाद में जब यमुना के तटों पर नई बस्तियाँ बसीं तो वे जीविका की खोज में वहाँ चली आईं। इसी घटना को पुञ्जस्थला अपसरा का दूसरा जन्म विरज वानर (वैराज पितृगणों/ पिशाचों) के यहाँ अंजना के रूप में कहा गया है।

पणि और पुण्ड्र-पॉड्डु जनों में बहुत अधिक साम्य है.... विशेषकर कर्म का ! पुञ्जस्थला और पर्णिनी अपसराऐं सहेलियाँ कही गई हैं।[12] पुराणों में पर्णिनी मेनका आदि दस अपसराओं में से एक है; यह मौनेय गन्धर्वों की बहन, 34 अपसराओं में से अन्यतम कही गई है[13] बहुत सम्भव है कि पणिजनों की स्त्रियाँ पर्णिनियाँ कहलाती हों और पणि ही यक्ष पुण्यजन (राक्षसः राक्षी नदी क्षेत्र के) हों तथा पानीपत के मूल में पणिप्रस्थ शब्द पणि जनों के बाहुल्य क्षेत्र का द्योतक हो। यदु जनों के मूल मृतिकावती वाली पर्णाशा नदी मूलरूप से पानीपत के क्षेत्र की कोई नदी थी जो गोहाना, रोहतक होकर राजस्थान में भद्रा से आगे जाने वाली लोहित्या नदी थी।

मद्र जन

पुराणों के अनुसार शाल्मलि द्वीप को परिवृत किये हुये मदिरा समुद्र वास्तविक समुद्र ना हो कर मद्र जनों का निवास स्थल था।[14] जनपद काल में मद्रक जन पश्चिमी पंजाब के रावी-चेनाव दोआबे के बीच थे, इनकी राजधानी शाकल की पहचान कनिंघम ने यंगलवाला टिब्बा से की है।[15] मद्रों का मूल निवास और पौराणिक काल में महाभारत युद्ध तक उनका क्षेत्र उपरी यमुना के तटवर्ती श्रूघ्न प्रतीत होता है।

श्रूघन क्षेत्र या उसके विभिन्न भागों का नाम समय- समय पर बदलता रहा। इन नामों के साथ थोड़ी बहुत ''अनिश्चत सीमाऐं'' भी बदली, किन्तु सभी नाम स्मृतियों, व्यक्तिवाचक, जातिवाचक के रूप में सुरक्षित भी बने रहे और सभी, नाम एक दूसरे से सम्बन्धित भी रहे और प्रयोग में आते रहे। ज्निहें हम आज देवता कहते हैं - शिव, इन्द्र, वरुण-विष्णु, ये किसी एक व्यक्ति के नाम नहीं, अपितु किसी समस्त जाति के कल्पित आराध्यों के नाम थे। जिसके साथ समय-समय पर ऐतिहासिक और भौगोलिक घटनाओं के मिथक जुड़ते चले गये ये जातियाँ भी शुरु में टोटेमिक थी। एक सम्पूर्ण बस्ती चाहे वह बहुत छोटी सी हो अथवा बड़ी एक जाति-एक टोटम का प्रतिनिधित्व करती थी, जैसे-2 जनसंख्या बढी. ... बस्तियों की संख्या भी बढी, कुछ नये टोटेम आये, कुछ बदल गये, कुछ समाप्त हो गये। बस्तियाँ बढ़ने के साथ-2 नये क्षेत्रों का अन्वेषण हुआ....।

मैदा (न) के मधु/मद्र जनों पर विष्णु पूजक वासुकीजनों का अधिकार

जब पृथ्वी पर मधु और कैटभ नाम के दैत्य भाईयों के उपद्रव बढ़ गये तब विष्णु ने उन्हें मारा और उनके मेदा से पृथ्वी की रचना की, तभी से पृथ्वी मेदिनी कहलाई।[16] जब विकास के किसी अगले चरण में पर्वतीय क्षेत्रों की नदी घाटियों में बसे वसु-वासुकी जन[17] नीचे मैदानों में उतरे तो उन्होंने पाया कि नदियों के समीप के जीवनयापन की सुविधाओं से पूर्ण स्थानों पर पहले से ही लोग बसे हुऐ हैं। किसी दूसरे उपयुक्त स्थल की खोज में भटकने से अधिक आसान रास्ता सोचा गया; मैदानों के मेद/मद > मद्र/मधुजनों को पराजित कर या खदेड़ कर उसके साधनों, भूमि, बस्ती, पशुधन पर अधिकार कर लिया गया; मेदों/मद्रकों/मधुओं के मैदान इस प्रकार वसु-वासुकी जनों की वसुमती या बसुन्धरा बन गई। मध ु के मैदा से विष्णु ने पृथ्वी नहीं बनाई अपितु मधु-जनों के मैदा (न) देश को जीत कर विष्णु पूजक जनों ने अपनी (पृथ्वी) बनाया।

सरस्वती नदी के मैदानी भागों में बसे वैष्णव सुर भी कहलाये। मधुजनों/मद्रकों, मद्रों का मैदान अब सुर अथवा शूर जनों का शूरसेन/सूरसेन या श्रूघन बन गया। बढ़ती जनसंख्याँ-परिवारों-समाजों के कारण कालान्तर में वसु-वासुकी जन आठ कुलों में बंट गये और इन अष्टकुलों से असंख्यों शाखाऐं भी चल निकली। यदु-यादव जन भी वसु ही थे कृष्ण के पिता का नाम वसुदेव है, वह अपनी माता का आठवाँ पुत्र है (वसुओं के अष्टकुल से साम्य), उसका जन्म अष्टमी को हुआ था, उसकी आठ पटरानियाँ हैं और वह विष्णु का आठवाँ ही अवतार कहा गया है। नन्द और यशोदा जो कि उसके पालक माता-पिता हैं, को पिछले जन्म का द्रोण वसु और उसकी पत्नी धरा कहा गया है।[18] द्रोणनन्द और यशोधरा !

आग्नेय वेन्य/निषाद और प्रथुजन

पृथ्वी के नामकरण का एक मिथक अंगिरा वंशी पृथु का है। पृथु के पिता वेन को जो कि चाक्षुष मनु के सबसे बड़े उर के छह पुत्रों में से सबसे बड़े अंग का पुत्र था। वेन एक अत्याचारी, क्रूर, नास्तिक किन्तु महान विजेता था। प्रजा ने ब्राहमणों के नेतृत्व में विद्रोह किया। वेन बिना किसी उत्तराधिकारी के मारा गया। वेन के दो पुत्रों में से निषाद (जाँघ से जन्मा हुआ) पिता की भाति नास्तिक हुआ, अतः इसे वनों में निष्काषित कर दिया गया और पृथु एक धार्मिक, सदाचारी तथा 100 अश्वमेघ कर्ता राजा हुआ, भूमि को पृथ्वी नाम देने वाले पृथु ने पृथ्वी को प्रोथित समतल कर कृषि कार्यों की शुरूआत की और धनुर्विधा की खोज की।[19] यह पौराणिक आख्यान मानव सभ्यताओं में विकास के एक सोपान में

दर्शाता है।

चाक्षुष मानव का अर्थ है दृष्ट मानव, जो शायद पहली बार पर्वतों से मैदानों में उतरा वह अग्नि का जानकार तो था किन्तु फिर भी वनों पर आश्रित वेन्य ही रहा, जाहिर है वह धार्मिक और कर्मकांड़ी नहीं रहा होगा। इन वेन्यों में से कुछ कृषि कार्यों में लगे, उन्होंने नगर-बस्तियाँ बसाई, पशु-पाले ; और रक्षा के लिऐ धनुर्विद्या का विकास किया, जबकि इन वेन्यों का एक बड़ा वर्ग अब भी बस्तियों से दूर वनों पर आश्रित रहा, ये बाजुओं की मेहनत से कृषि कर, खाद्य समस्या को हल करने वाले पृथुजनों की भाँति न तो धार्मिक और कर्मकाण्डी थे और न ही भाषा-लिपि, धातुकर्म, विवाह संस्था, वर्ण व्यवस्था का विकास कर पाये, ये आदिम अर्ध सभ्य, निषाद कहलाये। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी, समाज बढ़ा, बस्तियाँ बढ़ीं कृषि योग्य भूमि और बस्तियाँ बसाने के लिये यज्ञों के नाम पर वनों को जलाकर भूमि प्राप्त की गई। अपनी बस्तियों, कृषि, पशुधन और आवश्यकता की अन्य वस्तुओं की लूट-चोरी से बचाने के लिये ये निषादों, पणिओं, दस्युओं और अन्य उन वेन्य जातियों के विरूद्ध संगठित भी हुये जो वनों पर आश्रित तो थे किन्तु इनके साधनों को लूटने, चुराने के मौंकों की तलाश में रहते थे, यह संगठन क्षत्रिय वर्ण की नींव थी।

काम्यकवन के कामदेव (मदन) और कामधेनु

आग्नेयों जनों ने सर्वप्रथम कामदेव (काम्यकवन) के अंगों (भागों) सरस्वती नदी के तटों से लेकर करनाल और उससे आगे तक के भूभागों पर जंगलों का दहन कर कृषि और बस्तियों के लिऐ भूमि प्राप्त की।

काम्यकवन्य का पूर्वी प्रदेश धन्व प्रदेश था। जगाधरी, सहारनपुर का वह प्रदेश जहां सोम्ब, बोली, पथराला, सरस्वती, कालिन्दी, गेजराराव, मस्कारा, सांदली, कृष्णी, काथा नदियाँ थोड़ी-2 दूर पर बहती थी....। इस क्षेत्र में सदा ज़ल रहता था। धन्व का अर्थ ही है जहाँ सदा जल रहे।[20] काम्यकवन का धान्य प्रदेश.... इसीलिऐ कामधेनु था। यही इन्द्र का नन्दन वन था। सरस्वती नदी का एक नाम ''गो'' भी है.... गौलोक यही था... कामधेनु गौ नन्दिनी थी। इसी धन्व, धेनु का अपभ्रंश है द्रोण (वसु) यही द्रोण वसु अगले जन्म में नन्द हुऐ। धान्व प्रदेश का पशुधन गौ अर्थात् धन ; धन्व प्रदेश की उपज (खाद्यान्न) अर्थात् धन, प्राचीन काल में विनमय का साधन खाद्यान्न ही था.... वही धन था। कालान्तर में जब यहाँ निवास करने यक्षों (कॉवेरवंशी, नागदेव की खोल > नर्वदा की कोई सहायक नदी, के तटों पर निवास करने वाले) कॉवेरों > कुबेर का अधिपत्य इस क्षेत्र पर हुआ तो कुबेर (यक्ष) धनद बन गये अर्थात सम्पूर्ण धन्व क्षेत्र के धन के स्वामी। धन्व प्रदेश के नाग ही धंनजय कहे गये. .... तब भी मधु- (कैटभ) मंद/मैद/मद्र नाम चलता रहा। कैलाश पर्वत (कालेसर) के निकट कोई यमुना सरोवर (घाट) मंदोदक था, इसके समीप नन्दनवन था और इस मंदोदक से ही मंदाकिनी नदी निकलती थी। मंदाकिनी ऋक्षवान पर्वत से निकली नदी का नाम है। [21] अवश्य ही यह मंदाकिनी गंगा नहीं अपितु राक्षी रही होगी जो तब गंगा यमुना दोआबे की शिवालिक पर्वतों से निकल कर हरियाणा की भूमि पर बहती थी..... आज यह मस्कारा (मस्कराक्षी) नदी है। जो सरस्वती नदी के दक्षिण में (यमुना के रूप में) बहने लगने से यमुना नदी में ही मिलने लगी। मकरध्वज/मदन कामदेव के ही नाम।[22] मंदाकिनी के तटों पर ऋक्ष पर्वत के ऋक्षों, पलक्षा नदी (सरस्वती) के पलक्षवानों (पलंकष > पुलह > पौलस्त्य पुत्रों = राक्षसों) ने अधिकार किया तो मिथक बना कि राक्षस (रावण) की मंदोदरी, जिसे मैनाक पर्वत के निवासी मयदानव की पुत्री कहा गया है।[23] मैनाक को प्राचीन भूगोलवेत्ता शिवालिक

के नाम से जानते हैं और मैनाक, कैलाश के उत्तर में था।[24] इस क्षेत्र में हस्ती (हाथी) जन मंद कहाते थे। जम्बूद्वीप का उपद्वीप कहा गया "मन्दिर हरण" यहीं मैद/मद्र/मधु/अर्थात शिवालिक की तलहटी में था। जगाधरी के उत्तर में शिवालिक पर्वत का एक भाग; मैनाक के पश्चिम में सौद्युम्नि/ वैदयूत/विद्युत/ विन्ध्य/विन्ध्याचल था। जहाँ से निकलने वाली नदी मद्रा भी थी, यह सदादेनी/वेदवती > वैद्युति से भिन्न रही होगी। इस क्षेत्र में बसे यादव जनों का प्रतीक मधु नाम है।

गंगा यमुना दोआब के उशीनर आनव जनों का अधिपत्य भी यहाँ हुआ आनब शिवी के चार पुत्रों में से एक का नाम मद्र, जाति-स्थान का द्योतक व्यक्ति वाचक नाम है। माद्री इसी क्षेत्र की स्त्रियों को कहा गया; सांदली और काथा नदी क्षेत्र के पिशाच, विदर्भ, क्रथ और कौशिकी के कैशिकजनों की भाँति मद्रों-माद्रियों में भी अपसरा प्रथा थी। पणि जनों की स्त्री कुण्ड़तियों से हुये आर्यों के कुण्ड पुत्र-पाँड़वों की भाँति ही, माद्रियों के पुत्र भी कुण्ड ही हुये। वैदिक जनों के प्रसार से सम्पूर्ण पणि भूमि आर्यों की अपसरा सन्तानों से भर गई। बाद में समय-2 पर इनका इस क्षेत्र से देश के विभिन्न भागों की ओर पलायन भी हुआ। मद्र/मद/मंद/मदु (मधु) जनों ने देश के विभिन्न भागों पर बसकर उन क्षेत्रों, नगरों, नदी-पहाड़ों को इस क्षेत्र के नाम दे दिये। मेदपाट (मेवाड़), मंड़ौर (यहाँ मंदोदरी का मायका माना जाता है।), माँडू, मंडावर, मद्र (रावी-चेनाब क्षेत्र में) ; मथुरा, (वर्तमान)मंदसौर, मेड़ता, मांड़वी, दक्षिण भारत में पाँड़यों (ताम्रपार्णि) और उनकी राजधानी मदुराई। पांड़व भले ही वैदिक जनों द्वारा पणि स्त्रियों/अपसराओं से उत्पन्न कुण्ड सन्तानें हों, तो भी वैदिकजन भी नागों की ही एक शाखा थे।[16] एक समय उत्तर भारत में गज, हस्ति, वानर, कपि, वराह, कुकुर, तार्क्ष्य, ऋक्ष, पणि-पारावत, वसु, रक्ष-यक्ष, कपोत आदि जितने भी टोटेनिक सभ्य-असभ्य-अर्द्धसभ्य जन थे सभी नाग ही थे। यमुना-सरस्वती-शिवालिक का क्षेत्र अम्बाला, सहारनपुर, देहरादून, सिरमौर, कुरुक्षेत्र, करनाल आदि जिलों को हम भारतीय पुराणों से सम्बन्धित जनों-जातियों का "सभ्यता का पालना" कह सकते हैं... मध्यकालीन भारतीय इतिहास में योगदान करने वाले समूचे क्षत्रिय राजवंश-प्रजा नाग, हस्ती, गज आदि ही हैं अर्थात ऋक्षपुत्र....। ऋक्षवान या ऋक्ष पर्वत से निकले इन्हीं ऋक्षपुत्रों का अपभ्रंश नाम "राजपूत" है.... वे सभी ऋक्षपुत्र है क्यों कि लगभग सभी वंशावलियों में नागावलोक, नागभट्ट-नागादित्य,[25] नागदेव, पद्यम.... व्यक्तियों के नाम और नागपुर, नागौर, नागसाहव्यं, सांपला, अहिच्छत्रा, नागदा, नागलोई, सफीदों, नगीना जैसे स्थानवाचक नाम मिल जायेंगे....।[26]

अगर केवल एक पंक्ति में कहें तो वैदिक जन भी भारतीय मूल के नाग ही थे अन्तर केवल यही है कि वैदिक जन अपने भाई वृन्द नागों की अपेक्षा पहले बस्तियाँ बसाकर कृषक कामगर और सभ्य दर सभ्य बनते गये। नाग जो कि आर्यो कि अपेक्षा अधिक समय तक वनों पर आश्रित, शिकारी, खाद्य संग्राहक जीवन बिताते गये उनकी अपेक्षा हर क्षेत्र में पिछड़ गये; तो भी शेष भारत में राज्य बसाने का काम तो नागों/पणिओं ने ही किया-विशेषकर वैशाली के वैश्य तो पणिजन ही थे;

संदर्भ और टिप्पणियाँ

1. **कीथ व मैकड़ोनेल, " वैदिक इण्ड़ैक्स," भाग-1;** पृ0- 532-35 पुराणों में कुरूराजा को पूण्य कहा गया है ; पूण्येय ययाति वंश का राजा था। पूण्यक विष्णु का नाम है और 0 8.32.17 और 18 में इन्द्र को पण्य कहा गया है। पुण्यजन एक असुर भी था

जिसने कुशस्थली नष्ट की – रांगेयराघव,'' प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास,'' दिल्ली, 1990, पृ0–95

2. कैलाशनाथ द्विवेदी, ''ऋग्वैदिक भूगोल'', कानपुर, 1985, पृ0– 306–311 एस. मुजफ्फर अली ''ज्योग्राफी आफ पुराण'', दिल्ली 1983; पृ0 197; अध्याय.–1 की टिप्पणी–3

3. मनु स्मृति 3.174 (याज्ञ0 1.222 पर, ''पत्यो जीवति कुंड : स्यात'' –वामन शिवराम आप्टे, ''संस्कृत हिन्दी कोष,'' दिल्ली, 1989, पृ0–283; और अब विचार करने योग्य विषय है कि कुण्ड को जन्म देने वाली स्त्री को क्या कहेंगे....? कुण्डती...! इसी ''कुण्डती'' का अपभ्रंश.... बनाया गया शब्द कहीं ''कुंती'' तो नहीं है। इसी प्रकार पंड: शब्द का अर्थ होता है..... हीजड़ा... नपुंषक......। वहीं, पृ0–566 और पांड़व का अर्थ क्या होना चाहिये....? हिजड़े या नपुंषक का पुत्र!

4. दामोदर धर्मानन्द कोशाम्बी ''मिथक और यथार्थ'' अनु० नन्दकिशोर नवल, दिल्ली, 2001 पृ0 105 टिप्पणी–9

5. रांगेय राघव, ''प्राचीन भारतीय परमपरा और इतिहास'''दिल्ली, पृ0–247

6. नेशनल ज्योग्राफिक का मार्कोपोलो की चीन यात्रा के विषय में प्रसारित एक फीचर, सांय दिनांक 8 जून 2004

7. रांगेय राघव, पृ०–228

8. राणा प्रसाद शर्मा, ''पौराणिक कोष'',काशी, 1986, पृ0–299; जैसा कि मेगास्थनीज ने इण्डिका में लिखा है कि पांडय जाति का शासन नारियाँ करतीं थीं; छह वर्ष की उम्र में ही सन्तान उत्पन्न करती थीं। पंडाईया राज्य की स्थापना हिरेक्लीज की पुत्री ने की –रमाकान्त त्रिपाठी, ''प्राचीन भारत का इतिहास'', दिल्ली, 1971, पृ0–34 सिंहल के राजा विजय का विवाह पांडय कन्या से हुआ (महावंश), एक शासक का नाम कंडूग्गोन, एक उपाधि ''मदुरैकोण्ड'' जन श्रतियों में पांडयराज अधिकेसरी मारवर्मन का नाम, '' कुनू पाण्य'' और दक्षिण भारत में कौंडा'' (नागार्जुनकौंडा) सम्बन्धित नाम – वही, पृ0–340–342 उन्हें पणि कुण्डति, मातृसत्तात्मक, छोटी उम्र से ही बिना रोक टोक वाला उन्मुक्त यौन जीवन (अपसरा) वाले समाज से जोड़ता है।

9. वही

10. वही, 310

11 वही, पृ0–309

12. वही, पृ0– 295 ; और सहेलियों का अर्थ एक ही बस्ती अथवा क्षेत्र की।

13. वही

14. उसी प्रकार जैसे जम्बूदीप–जमुना/यमुना नदी का प्रदेश जहाँ के निवासी यम, जम्भ, जाम्बवान कहे गये हैं। इक्षुरस समुद्र–इक्षु (गन्ना उत्पादक प्रदेश, इक्षवाकु जनों का मूल प्रदेश,–जयनारायण आसोपा, ''ओरिजन आफ राजपूत,'' पृ0–128–129 के अनुसार इक्षुमती/ईषुमती/घग्घर नदी का क्षेत्र ; पलक्षद्वीप – पलक्षा नदी/ सरस्वती नदी का मैदानी प्रदेश; पलक्ष प्रस्त्रवण (नाहन) से अन्यत पलक्षा/ सर्णयावती झील के आसपास से कालेसर (कैलाश) तक, सरस्वती उस सीता नदी का ही क्षेत्रीय मैदानी नाम था जो सुमेरू शिखर (सिरमौर जिले की उत्तरी सीमा पर चन्द्र चूड़/चूड़ाधार) से निकलती थी.... वर्तमान गिरी नदी। कुश द्वीप – हरियाणा प्रदेश में कौशिकी नदी प्रदेश ; शाल्मलीद्वीप– हो सकता है यहाँ शाल्मलि या शमी वृक्षों की बहुलता हों किन्तु शाल्वजाति का प्रदेश तो यह था ही। शाल्मली का अर्थ हेती, विद्युत वैभ्राज (चमकीला) बिजली, सौद्युम्नि और विद्युत तथा सौद्युम्नि क्षेत्र की नदी वेदवती या आज की सदादेनी मार्कण्डा नदी। हिरण्याक्ष

के वंशज हेती प्रहेती यातुधान जो म्यूर मुर्गा टांटेम वाले गन्धर्व ब्रहमधान राक्षस भी मार्कण्ड़ा नदी क्षेत्र में आये थे पहले वे वैभ्राज वन के निवासी थे सम्भत: इन्हीं ब्रहमधानों के नान पर सरस्वती दृष्द्वती नदी क्षेत्र का प्राचीन नाम ब्रहमवैवर्त था **क्रौंचद्वीप**- शिवालिक पर्वतों के बीच की उस घाटी का प्रदेश जहाँ से यमुना नदी पर्वतों से मैदानों में उतरती है ; जम्बू पलक्ष शाल्मली आदि द्वीपों की कोई निश्चित सीमा रेखाएें नहीं थीं।

15. **एस० मुजफ्फर अली, ''ज्योग्राफी ऑफ पुराणाज''**, दिल्ली, 1986, पृ0-146
16. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-132
17. वसु-वासुकी दोनों एक ही क्षेत्र की दो जातियाँ थीं, वसु-वैष्णव जनों ने वासुकी-शेष आदि नाग जातियों को पराजित किया। वासुकियों के क्षेत्र में बस कर यह नई विजेता जाति भी वसु ही कहलाई..... सम्भवत: ये वसु, यदु-यादव ही थे। (वसुन्धरा/ बहुधा > यहुधा > यदु) और शायद इसी कारण वसुदेव का पुत्र कृष्ण पग-2 पर नागों का शत्रु है और नागों के शत्रुओं का साथ देता है। वसु और वासुकी (नाग) अलग-अलग थे इसका एक प्रमाण यह भी है कि भीष्म सत्यव्रत जो आठवाँ वसु ही था नाग कुरू कौरव्यों की गद्दी हस्तिनापुर में कितना भी प्रभावशाली रहा, किन्तु राजा नहीं बन सका। इसे यूँ कहें कि दोआबे में वसुजनों के एक के बाद एक सात प्रवाह (दल) पहले भी आये और आठवाँ दल हस्तिनापुर तक पहुँचा, किन्तु सत्ता प्राप्त नहीं कर सका, नाग कुरु-कौरव्यों ने उन्हें नकार दिया, वे अवश्य कुरू कौरव्यों की प्रजा बन कर रहे, और **king maker**, की भूमिका निभाने वाले भी बने, यहाँ तक कि नागों के एक वर्ग (महाकर्ण) के विरोध का सामना भी उन्हें करना पड़ा। हस्तिनापुर की राजनीति में वसु-भीष्म और महाकर्ण नाग एक दूसरे के परस्पर विरोधी थे, दोनों ही एक दूसरे को अविश्वास की दृष्टि से देखते हुऐ अपने आप को कुरुओं का विश्वासपात्र जताते, उनके ऐसा करने की जरूरत इसलिये थी क्योंकि नाग-कुरुओं के लिये दोनों ही विदेशी थे। भीष्म हस्तिनापुरी में आ बसे वसु थे और प्रतिज्ञाबद्ध थे कि सत्ता कभी नहीं लेंगे (हथियाऐंगे), प्रत्येक कुरु राजा में पिता की छवि देखते हुए उसके हितों की रक्षा करेंगे। यह विश्वास पात्र रहने की शपथ थी। जबकि दूसरी ओर करनाल के महाकर्ण थे जिन्होंने हस्तिनापुर की सहायता से नया राज्य स्थापित किया था। दृषद्वती क्षेत्र के पणि-पाँडुजनों के साथ हस्तिनापुर के संघर्ष में करनाल के महाकर्ण एक रक्षक दीवार की भाँति काम कर सकते थे। किन्तु जैसी कि कथा है महाकर्णों ने वसु-भीष्म के साथ अविश्वास-विवाद के चलते वसुओं की समाप्ति तक युद्ध में हिस्सा नहीं लिया था। हो सकता है महाकर्ण अन्तिम अस्त्र के रूप में पीछे रखे गये हों।

सरस्वती क्षेत्र में आर्यों के समीप जो नाग थे उन्हें ही वेदों में पणि कहा गया > फण = नाग और पणियों की स्त्रियाँ अपसरा कर्म करती थीं। काली कुंडतियों की पीले कुंण्ड हुऐ पाँड़व ; महाकर्ण भी एक कुण्डतीपुत्र था। कुछ अपसराओं ने अपनी सन्तानों को अपने पणि पतियों का नाम दिया और कुछ अपसराओं, जो कि कुवाँरी ही आर्य पुरूषों से सम्बन्ध बना बैठी थीं अपनी सन्तानों को पिताओं नाम न दे सकी। ऐसी सन्तानें अवश्य ही आर्य विरोधी थी। ऐसा ही एक महाकर्ण नाग, पिता का नाम न होने के कारण अपमानित और तिरस्कृत हो दृष्द्वती नदी क्षेत्र छोड़कर हस्तिनापुर चला गया। वसु भीष्म का कहना था कि वह एक कुण्ड है अर्थात आर्य सन्तान! और उसका विस्वास नहीं किया जा सकता। ऐसी ही बात महाकर्ण नाग, भीष्म के लिये कहता है कि भीष्म वसु है नाग नहीं। हो सकता है कि महाकर्ण नाग युद्ध के शुरु में, पाँडवों का कुण्ड़ भाई होने के कारण युद्ध में ना उतरा हो ; पाँडवों की कुटिल चालों ने उसे युद्ध से दूर रखा और जब तक वह इस चाल को समझा.... देर हो चुकी थी।

पुराणों के अनुसार शूर और मरिषा (ऐरावत कुल के आर्यक नाग पुत्री) ने अपनी पुत्री प्रथा,

कुन्तिभोज को गोद दी थी इसं पुत्री का नाम कुन्ती प्रसिद्ध हुआ। पुराणों में यादवों की वंशावली में भोज, भजमान जैसे नाम हैं वहीं जैन श्रोतों में भज या भोज के सम ''भोग'' नाम है। जैन श्रोतों में जदु के दो पुत्र सोरियपुर और सुवीर वंश के संस्थापक थे। सोरियपुर के संस्थापक के अंधकवन्हि और भोगवन्हि नामक पुत्र थे । नागों की नगरी भोगवती थी, में सरस्वती नदी का एक नाम भोगवती भी है इससे विस्वास हो जाता है कि भोज, भजमान, भोग (वती), भय (दत्त) भोग (वन्हि) नागों से सम्बन्धित हैं। दक्षिण भारतीय भाषाओं में नाग के लिये ''भाग'' शब्द है.... ऐसा प्रतीत होता है कि नागलोग अथवा नागरत शब्द भागरत हो; जिस का अपभ्रंश कालान्तर में भारत हुआ और जिन्हें भरत- जन कहा गया वे असल में नाग ही हैं। इन्हीं भरतों (नागों) में से कुछ लिपि का विकास करने वाले, अत्याधिक धार्मिक, कर्मकांड़ी कृषि तथा सर्वप्रथम लोहे को अपनाने वाले.... अरि (शत्रु) के विजेता आर्य हुये.... वे अलग से नहीं है और न ही कहीं बाहर से आये। कोई देवपुत्र नहीं... वे भी नाग ही हैं उनके यहाँ हुये ब्राहमणवाद और वर्णव्यवस्था के विकास ने उन्हें कट्टर आर्य बना दिया बस।

18. **राणाप्रसाद शर्मा, पृ०-240**
19. **आर० सिद्धान्तशास्त्री, ''हिस्ट्री ऑफ प्रिकलियुग इण्डिया''**; दिल्ली, 1978, पृ0-31
20. **राणा प्रसाद शर्मा, पृ०-245**
21. वही, पृ0-388-389
22. वही, पृ0-39
23. वही, पृ0-400
24. मैनाक पर्वत (शिवालिक) पर अथवा मैनाक की तलहटी मयदान (मैदान क्षेत्रों) में निवास करने वाले मयदानवों को ही भाषान्तर के कारण मयत्स > मतस्य अथवा महिष कहा गया होगा। ऐसा मैदा > मद्र > माद्री और मतस्या मतस्यगंन्धा (मछोदरी सत्यवती) के साथ प्रथागत साम्य से पता चलता है। क्योंकि माद्री, मछोदरी सत्यवती, आद्रि सभी कुंड सन्तानें पैदा करती हैं।
25. **विमलचरण लाहा, ''प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल''** पृ0-28
26. नाग या नागदित्य - 646 ई. में मेवाड़ का गुहिल राजा ; नागदेव - चालुक्य भीम 1022-1064 ई0 का पिता ; नागावलोक (नागभट) : भड़ोरे का प्रतिहार राजा।
27. बहुत सम्भव है कि नर्वदा शब्द ''नागरवदा'' और ''नारनौल'' शब्द ''नागरनौल'' जैसे शब्दों का अपभ्रंश हो। गुजरों जिनका निकास गज-हस्ती आदि नाग जनों से ही है, में '' नागर'' गोत्र मिलता है। नागजनों की बस्ती को ही सर्वप्रथम नगर कहा गया हो, इन्हीं नाग जनों के क्षेत्र नरक (नागरक), निवासी ''नर'' हुये। नाग नाम समूचे भारतीय परिवेश में रचा-बसा है।

अध्याय-9

अंग, मगध और द्वारिका

पुराणों के अनुसार अंग, बंग, कलिंग, सुहय् और पुण्ड्र राज्यों की स्थापना बलि के क्षेत्रज पुत्रों ने की थी, जो बलि पत्नी सुदेष्णा में ऋषि दीर्घतमस से उत्पन्न हुऐ थे[1] बंग, कलिंग,

सुहय् और पुण्ड्र राज्यों के समीप ही, विद्धानों ने अंग राज्य को बिहार में भागलपुर के आसपास का क्षेत्र माना है।[2] अयोध्या के दशरथ समकालीन अंग नरेश रोमपाद थे। जिन्हें दशरथ ने अपनी कन्या शान्ता गोद दी थी; शान्ता के पति ऋष्यश्रंग ने ही दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया था। यह घटना रामकालीन है किन्तु महाभारत के युग की घटनाओं जैसे ''दुर्योधन ने कर्ण का अभिषेक अंग के राजा के रूप में करके [3] उसे अपना ऋणी बना लिया था'' से बिहार का अंग महाभारतकालीन अंग प्रतीत नहीं होता; हमारे ऐसा न मानने के कई कारण भी हैं। महाभारत काल में हस्तिनापुर राज्य और बिहार में समीकृत अंग राज्य के बीच अयोध्या, मिथिला, वैशाली, मगध पांचाल, काशी के राज्य थे... मगध के राज्य को छोड़कर अन्य राज्य बेशक शक्तिशाली न रहे हों, फिर भी इन्हें फलांग कर हस्तिनापुर का अंग पर शासन, गले नहीं उतरता। दूसरे पुराणों और महाकाव्यों में किसी ऐसे पुरू-कुरु राजा का कोई उल्लेख नहीं जिसने अंग को जीत लिया हो। ऐसे में इस घटना की सत्यता प्रमाणित नहीं होती कि दुर्योधन ने अंग का राज्य कर्ण को दिया था क्योंकि जब वह उनका था ही नहीं और न ही दुर्योधन के किसी पूर्वज ने अंग का राज्य जीता था तो उसे कर्ण को कैसे दिया जा सकता है। अब यदि यह घटना सत्य है तो दुर्योधन द्वारा कर्ण को दिया गया अंग राज्य कहीं और होना चाहिये... वह भी हस्तिनापुर राज्य का एक भाग; अथवा उसकी सीमाओं से लगता हुआ क्षेत्र जो पूर्णतया हस्तिनापुर राज्य के प्रभाव में हो।

ऐसा एक मात्र स्थान जो हस्तिनापुर के समीप; सीमाओं से लगता और सम्भवतः हस्तिनापुर के कुरू कौरव्यों के प्रभाव में था, साथ ही कर्ण से भी सम्बन्धित कहा जाता हो, हरियाणा का करनाल है। कहते है महाभारत युद्ध के समय यहाँ कर्ण का शिविर था।[4] करनाल व उसके आसपास न केवल कर्ण का शिविर था अपितु उसका राज्य अंग भी था और इसके संकेत हैं- ब्रहमा की पुत्री का नाम अंगजा है;[5] और सर्वविदित है कि ब्रहमा की पुत्री सरस्वती है अर्थात सरस्वती/अंगजा नदी का प्रदेश सारस्वत अथवा अंग होना चाहिये।

अंगज कामदेव का भी एक नाम है और कामदेव के अंगदहन की कथा का अर्थ यही है कि अंगिरसी नदी (वर्तमान घघ्घर[6]) के अंग-अंगिरा जनों, जिनकी एक शाखा कृषि कर्म करने वाले अत्याधिक धार्मिक, कर्मकांडी और यज्ञ आदि करने वाले पृथु जन थे, ने आगे बढ़कर सरस्वती नदी के किनारे काम्यकवन को स्थान-स्थान पर जला कर साफ करते हुऐ बस्तियाँ बसाने, कृषि कर्म करने के लिये भूमि प्राप्त की। ये अंग जन जहाँ-जहाँ तक बसे, फैले, समूचा प्रदेश अंग ही कहलाया, बाद में भले ही वह प्रदेश प्रोथित समतल करने वाले पृथुओं के नाम पर पृथ्वी कहलाने लगा।[7] यह सम्भव है कि सरस्वती का नाम अंगजा इन्हीं अंग जनों के कारण पड़ा हो, किन्तु सरस्वती नदी के किनारे काम्यकवन का प्रदेश/अंग इसके व्यक्तिवाचक नाम कामदेव के अंग कहे गये। अंग-अंगिरा जनों की भाँति काम्यकवन को अग्नि प्रज्जवलित कर बस्तियाँ बसाने और कृषि योग्य भूमि प्राप्त कर उन्हीं की तरह जीवन जीने के लिये काम्यक वन ने शैव्य जनों को भी ललायित किया होगा; उन शव्यों में से बहुत से ऐसे रहे होंगे जिन्होंने वनों पर आश्रित अर्धसभ्य जीवन छोड़ कर अंगिरा-पृथु-आर्यों की भाँति बस्तियाँ बसाई और कृषि कार्य शुरू कर दिये। इस प्रकार देखते-देखते लगभग समूचे काम्यक वन को जला-फूँक कर बस्तियाँ बसी... अंगिरा-पृथु जनों ने तो केवल शुरूआत की थी... उनकी देखा-देखा... शैव्यों ने इस कार्य को पूर्ण किया... अर्थात शिव ने कामदेव के अंगों का दहन कर दिया।

बस्तियाँ बसने और शैव्यों के कृषि कार्य में उतरने तथा अंगिरा-पृथुओं की पद्यति से

जीवन जीने लगने के कारण रतियों/अपसराओं की स्वच्छंदता समाप्त हो चली थी; उनके पति जो पहले खाद्यसंग्राहक थे, कृषि कर्म, पशुपालन, धातु कर्म, वस्त्र निर्माण, बरतन निर्माण आदि में फंसते हुऐ, बेशक सभ्य दर सभ्य बनते जा रहे थे किन्तु यह एक बंधा हुआ जीवन तो था ही, यह भी हो सकता है कि धीरे-धीरे शैव्यों में अंगिरा-पृथुओं की भांति विवाह संस्था का विकास होता जा रहा हो, जिसने स्त्रियों की स्वच्छंदता समाप्त कर दी हो क्योंकि अब पुरूष वर्ग काम्यकवन के कामदेव नहीं रह गये थे... और अब उनका समाज स्त्री प्रधान नहीं अपितु पुरूष प्रधान बन रहा था... अतः रति/अपसरा वर्ग में छटपटाहट अनिवार्य थी, किन्तु उपयुक्त समय के इन्तजार के अतिरिक्त और किया भी क्या जा सकता था।

कृष्ण, आर्यों की पुरूषप्रधान विवाह संस्था के विरोधी थे और साथ ही स्त्री पुरूष के स्वचछन्द यौन सम्बन्ध (अपसरा कर्म) तथा नागों पणिओं के सीधे कौटाम्बिक विवाह को भी उन्होंने नकारा। उन्होंने एक नये प्रकार की विवाह-व्यवस्था... "हरण" को प्राथमिकता दी... जिससे स्त्री या पुरूष इच्छानुसार, मनपसंद जीवनसाथी प्राप्त कर सकते थे। आर्यों की विवाह संस्था और पणिओं-नागों के स्वच्छन्द यौनसम्बन्ध इस प्रकार की स्वतन्त्रता नहीं देते थे क्योंकि आर्य पद्यति में जहाँ स्त्री स्वतन्त्र नहीं थी वहीं पणिओं नागों में स्त्री अत्याधिक स्वतन्त्र थी। कृष्ण द्वारा मान्य "हरण" पद्यति ने स्त्री पुरूष दोनों की पंसद का ख्याल रखते हुऐ बराबरी के अधिकार दिये; अर्जुन ने सुभद्रा का हरण किया, कृष्ण ने रूकमणी का हरण किया; किन्तु ये हरण अब तक पुरूषों ने ही किये थे किसी स्त्री (उषा < रति) द्वारा किसी पुरूष (अनिरूद्ध < कामदेव) के हरण की पहली घटना पर जब समाज ने उसे वैधता दी... तो उसे रति के पति कामदेव का दूसरा जन्म माना गया।[8]

अंग को उल्मुक (कुरू और आग्नेई) का पुत्र कहा गया है।[9] कुरूओं की भूमि कुरूक्षेत्र थी... इस प्रकार कुरू (क्षेत्र) के आग्नेई दिशा (दक्षिणपूर्व) अंग (प्रदेश अथवा जाति) थे। अंगिरसी नदी (घघ्घर) से सरस्वती के तटों पर बढ़ते हुऐ अंगिरा-पृथु जन और उनसे प्रभावित शैव्य-सृज्जय आदि जनों के प्रदेशों का कालान्तर में नाम बदलता चला गया, वहीं महाभारत के काल तक भी पानीपत-करनाल का क्षेत्र अंग ही कहलाता रहा होगा। सरस्वती नदी के दक्षिण में बसा ऋग्वेद काल का पणि समाज जहाँ धीरे-धीरे पणि स्त्रियों (वैश्य स्त्रियों/अपसराओं) से उत्पन्न आर्यों की कुण्ड सन्तानों अर्थात पाँडुजनों (पणि > पणिडु > पाँडु) में बदल ही रहा था वहीं पूंडरी, पिंड़ारा, पिंड़ारसी के पूर्व में पानीपत (पणिप्रस्थ) के पणि अपनी पीढ़ीयों पुरानी प्रथाओं से जुड़े रहे। पणियों की कुण्ड संतानें पाँडु जहाँ अर्ध आर्य-अर्धपणि थे, वहीं पाँडुओं की संतानें पूरी तरह से आर्य सभ्यता-संस्कृति से ओत-प्रोत "पाँडव" बन चुके थे, ऐसे में एक और कुण्ड़ती पुत्र कर्ण ने अंग प्रदेश में अपने नाम से "करनाल" की स्थापना की।[10] किन्तु कुँवारी अवस्था में किसी कुण्ड़ती द्वारा जन्मा गया यह पुत्र न तो पाड़वों द्वारा अपनाया गया और न ही आर्यों द्वारा। रहा होगा ऐसे कुण्डों का भी एक वर्ग; जो आर्यों-पणि-पाँडु-पाँडवों से घृणा करता रहा होगा... और जिसे हस्तिनापुर के कुरू-कौरव्यों द्वारा मित्र मानकर अपने संरक्षण में ले लिया गया। सरस्वती नदी प्रदेश में बढ़ती जनसंख्या, बढ़ते ग्राम- गोत्र धीरे-धीरे पूर्व की ओर सरककर नई बस्तियाँ बसा रहे थे। पाँड़वों का प्रसार/अतिक्रमण दोआबा क्षेत्र में होने लगा था। ऐसे में जबकि स्पष्ट दिख रहा था कि संघर्ष आवश्यक हो चला है, समूचे प्रदेश में सत्ता और शक्ति के नये समीकरण उभर रहे थे। एक बार तो पाँडवों को वापिस धकेल भी दिया गया...उन्होंने खाँड़ववन जला कर इन्द्रप्रस्थ की बस्ती भी बसा ली थी; किन्तु हस्तिनापुर के कुरूकौरव्य नागों ने उन्हें वहाँ नहीं बसने दिया।

इस घटना ने संघर्ष को और भी अवश्यंभावी बना दिया था।

पणि जन ही थे वैशाली के वैश्य

सरस्वती नदी प्रदेश में आर्यों की बस्तियों में मंडी, पैंठ लगाकर वनों-अरण्यों से एकत्रित सामग्री बेचने वाले पणि... वैश्य कहे गये। वैश्यों का प्रदेश वैश्याल > विशाल; वैश्याली > वैशाली था। पणि जनों की बस्तियाँ आर्यों की बस्तियों के ही समान्तर अथवा उनसे कुछ दूरी पर होती थीं किन्तु वे एक स्थान पर स्थायी नहीं बसते होंगे; दो आर्य बस्तियों के बीच वस्तु विनिमय का कार्य भी सम्भवतः इन्हीं का था। ये पणिजन, अंगिरा-पृथु आर्यों के वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत आने वाले वैश्य वर्ण से नितान्त भिन्न ही थे आर्यों का वैश्य वर्ग बस्तियों में रह कर ही बरतन, वस्त्र, औजार आदि बना कर बेचता था। आर्यों का वैश्यवर्ण वस्तुओं का निर्माता भी था जबकि पणि निर्माता नहीं अपितु संग्राहक थे। अपने विशाल (वैश्य) प्रदेश से कालान्तर में भले ही ये पलायन कर बिहार के वैशाली प्रदेश में जाकर बसे, किन्तु इनका मूल सरस्वती नदी प्रदेश में सृञ्जय सहदेव-सोमक के रूप में था; मिलान कीजिये सृञ्जय- वृज्जि; त्रित्सु- तिरहुत/ तीरभुक्ति ऋग्वेद वर्णित सृञ्जयवंशी और वैशाली के वंश के नामों में साम्य है:-

ऋग्वेद के अनुसार	हरिवंश में[11]	रामायण में[12]
सरस्वती नदी प्रदेश के सृञ्जयवंशी	अहिच्छत्रा के पांचाल	वैशाली राजवंशी
सृञ्जय	सृञ्जय	1 मनु
सहदेव, प्रस्तोक	पचंजन	2 इच्छवाकु
सोमक (सहदेव का)	सोमदत्त	3 विशाल
	सहदेव	7 सृञ्जय
	सोमक	8 सहदेव
		9 कुशाश्व
		10 सोमदत्त
		11 सुमति

वैशाली के संस्थापक मूल रूप से सरस्वती नदी प्रदेश के ही थे इसका एक प्रमाण यह भी है कि विशाल का पिता तृणबिन्दु काम्यक वन का निवासी बताया गया है।[13] इसके अतिरिक्त मगध के राजवंश के नामों का भी उपर्युक्त तीनों वंशों के नामों से कुछ साम्य है। ब्रहद्रथ की दो स्त्रियों से आधा-आधा जन्मा और फिर जरा नाम की राक्षसी द्वारा जोड़ा गया जरासन्ध, इतिहास पुरूष सिद्ध नहीं होता और न ही महाभारत कालीन मगध बिहार

में प्रमाणित होता। असल में वसुचैद्योपरिचर और अमावसु में कुछ साम्य है। एक ही ऐतिहासिक घटनाचक्र से दौनों के मिथक बनाये गये।

वसुजनों की धरा वसुन्धरा (आज समूची पृथ्वी का पर्यायवाची नाम) वसुन्धरा > वसुधान्यक > बहुधान्यक > भादानक और भादानक शिवालिक की तराई में था- सम्पूर्ण सहारनपुर, अम्बाला, लुधियाना का प्रदेश। यही प्रदेश कुशिक का भी था। कुशिक का अर्थ गाद या कीचड़। वे कुशिक, कुशाश्व, कुशाम्ब, कुश जो कौशिकी नदी क्षेत्र के गाद प्रदेश में बसे वसु गाधि का द्योतक हैं तो वही गाद मगध में भी है। कान्यकुब्ज और मगध दोनों वंशावलियों में सुहोत्र नाम हैं, अन्तर मात्र यही है कि कान्यकुब्ज वंश में अमावसु है और मगध वंश में चैद्य उपरिचरवसु। वसु जनों का वृषों-वासुकियों से साम्य है।

अब उस ऐतिहासिक घटना की बात करें, जिसे पुराणों ने जरासन्ध के रूप में व्यक्तिवाचक बना कर मिथकीय रूप दे दिया।

	अहिच्छा के शासक[14]	मगध के शासक[15]
मतस्य के अनुसार	विष्णु पुराण के अनुसार	हरिवंश के अनुसार
मुदगल	मुदगल	1 कुरू
ब्रहमिष्ठ	वध्र्यश्व	2 सुधन्वा
इन्द्रसेन	दिवोदास	3 सुहोत्र
विंध्याश्व	मित्रायु	4 चयवन
मित्रायु	चयवन	5 चैद्योपरिचर
चैद्यवरा	सुदास	6.14.बृहद्रथ, कुश, चेदि, कारूष, मतस्य
सुदास	सहदेव	15 जरासन्ध
सोमक	सोमक	16 सहदेव
		17 सामागि

जरासन्ध या जलसन्धि

उस समय जब यमुना नदी शिवालिक पर्वतों से उतरकर कालेसर के बाद पश्चिम की ओर मुड़कर सरस्वती नदी के रूप में बहती थी, तब कारा-कालिन्दी (करोंदी नदी); बूढी यमुना, मस्कारा, सांदली और काथा, ऋक्ष पर्वत (दोआबे में शिवालिक पर्वत माला) से निकल कर थोड़ी-थोड़ी दूर पर हरियाणा की भूमि से बहतीं थीं। वर्ष के छह सात महीने तक तो लगभग सब कुछ ठीक रहता था किन्तु वर्षाकाल में अत्याधिक जल की मात्रा जगाधरी, करनाल, सहारनपुर के क्षेत्र में इन सभी नदियों को लगभग एक कर दती थी। बाद में हुऐ भौगोलिक परिवर्तनों ने पश्चिमवाहिनी सरस्वती नदी का बहाव मार्ग अनियमित कर दिया... शुरू में यमुना अपना समुचित मार्ग नहीं बना पाई। फलत वर्षाकाल और इसके

काफी बाद तक भी एकत्रित रहने वाली जलराशि ने उक्त क्षेत्र में समुद्र जैसे बड़े सर अथवा झील का निर्माण कर दिया... यह मानसरोवर था। सब कुछ अस्त-व्यस्त कर देने वाली स्थित ने समूचे क्षेत्र को नरक बना रखा था...। नरक देवता, यमुना नदी का व्यक्तिवाचक नाम यम था। वर्षा ऋतु के काफी बाद तक और यहाँ तक कि ग्रीष्म काल में भी उस क्षेत्र में जल छोटे-बड़े असंख्यों बिन्दु सरोवरों में जमा रह जाता था। बिन्दुसर (विन्ध्य पर्वत/शिवालिक की तलहटी में होने के कारण) विन्ध्यसर का अपभ्रंश छोटे बड़े अनेकों नदी द्वीप सरीखे प्रदेश में बसी असंख्यों बस्तियाँ ग्राम-गोत्र जल बाढ़ से घिर जाते और प्रभावित होते रहते थे। वर्षों से हजारों जन कारा-कालिन्दी, बूढ़ी यमुना, मस्कारा, सांदली, काथा, राक्षी, दृष्द्वती, सरस्वती नदियों द्वारा बनाई जा रही जलसंन्धि की कैद में थे; और जब सरस्वती नदी मार्ग बदलकर यमुनानदी के रूप में बहती तो स्थिती अत्याधिक विकट हो जाती। एक बार तो लगातार अठारह वर्षों तक इस जलसंधि का आक्रमण यादवों के मधु क्षेत्र पर होता रहा। जलसन्धि के लगातार आक्रमणों से तंग आकर कृष्ण को मधु क्षेत्र छोड़ना पड़ा; और उन्होंने प्रभाष तट पर (प्रभाष वसुओं के क्षेत्र में) द्वारिका की स्थापना की।

द्वारिका

यादवों का मूल गुजरात में माना जाता है, विद्वानों के अनुसार यादवों का प्रसार गुजरात से गंगा-यमुना दोआबे की ओर हुआ; और कृष्ण के बाद वे पुनः गुजरात, मगध और दक्षिण भारत में पलायन कर गये।[16] किन्तु वैदिक साहित्य में ऐसा कोई संकेत नहीं; शुरूआत में ही हम उन्हें सरस्वती नदी क्षेत्र में पाते हैं; वर्तमान मथुरा और ब्रज के मूल में मधु/मैदा/मद्र जनों का मूल प्रदेश और विरज नाम है। विरज... पितृगण वैराज हैं... वैराज पितृ-पिशाच-वानर हैं... अर्थात वनों पर आश्रित अर्धसभ्य टोटेमिक वृष-वृष्णि शब्द के मूल में यही विरज ऋग्वैदिक वर्चिन, या वृचीवन्तों के सम है। द्वारिका के रक्षक कम्बोज[17] काम्यकवन क्षेत्र के निवासी वे भोज नामक क्षत्रिय ही है, जो ऋ. 3.53.7 में सुदासवंशी कहे गये हैं।[18] यह श्लोक संकेत करता है कि सुदास पैजवन यादव था, न कि त्रित्सुवंशी। ऋ. 7.18.15 के अनुसार परूषणी के दासराज संग्राम में त्रित्सुवंशी तो सुदास पैजवन के विरूद्ध लड़े थे; अर्थात दिवोदास का सुदास पैजवन से शत्रुता का सम्बन्ध था।

शूरसेन (श्रूघन) के मधु (मैदा) क्षेत्र से पलायन कर कृष्ण ने जगाधरी के स्थान पर किसी प्राचीन बस्ती के रूप में द्वारिका बसाई होगी। सरस्वती-यमुना द्वारा निर्मित सागर के पास, वहाँ जहाँ सरस्वती नदी पश्चिम वाहिनी थी, का क्षेत्र प्रभाष वसुओं का था।[19] कृष्ण का नाम जगन्नाथ इसी जग/जुग/जुगन्धार > युगन्धर के नाम पर पड़ा। द्वारिका नाम के मूल में दृष्द्वर्ता > द्वारः वती > द्वारावती शब्द है। वैसे भी जगाधरी का प्रदेश प्राचीन काल में कान्यकुब्ज का द्वार कहा जाता था।[20] महाभारत सभा0 में द्वारिका के पश्चिमी भाग में सुकक्ष पर्वत और इसके चारों ओर शतपत्र वन का उल्लेख है, यह सुकक्ष पर्वत म्यूर टोटेमिक सुकेस/सुकेत/विद्युतकेष अथवा हेती या सुद्युम्न जनों के वैद्यूत पर्वत का कोई भाग रहा होगा जो सिरमौर जिला (हिमाचल प्रदेश) में सुकेती के आसपास था, सम्भ्वतः महाभारत में इसे ही सुकट कहा गया हो।[21] तब सुकट या सुकक्ष वन जगाधरी तक विस्तृत रहा होगा। सुकक्ष मतस्य0 के उस पृथु के पुत्र सुकृत के सम है जिसका पुत्र विभ्राज था।[22] इस वैभ्राज का वैद्यूत से सम्बन्ध है। प्रहेती के दोंनो पुत्र ब्रहमधाता और ब्रहमपात जो कुबेर के अनुचर थे वे वैद्यूत पर्वत पर विभ्राज वन के निवासी थे।[23]

इस प्रकार कृष्ण की मूल द्वारिका; सोम्ब नदी क्षेत्र के उन सोम्बरों (शम्भर) के निकट

क्षेत्र में हो जाती है जिन्हें ऋग्वेद काल में कभी त्रित्सु दिवोदास ने चालीस वर्षों के लम्बे संघर्ष के उपरान्त पराजित तो कर दिया था (ऋ. 1.130.7; 2.19.6; 2.14.6)[24] किन्तु सोम्ब क्षेत्र के शम्भर पूर्णतया समाप्त नहीं हुऐ। वे यमुना पार दोआबे में पीछे हट कर हस्तिनापुर के सम्वर्ण के रूप में फिर से सरस्वती नदी प्रदेश के राजाओं के विरूद्ध जम गये। सुदास पैजवन ने यमुना तट पर अज, शिग्रु और यक्षुव जनों के विरूद्ध सफल अभियान भी किया था (ऋ. 7.18.18-19; 13.; 83.4)[25] किन्तु पुराणों के अनुसार वह हस्तिनापुर के सम्वर्ण के हाथों पराजित हुआ और मारा गया।[26] बाद में शम्भर को हम कृष्ण के काल में पाते है, ज़ाहिर है वह कोई व्यक्ति विशेष नहीं अपितु सम्पूर्ण जाति का द्योतक नाम है जैसे जमुना नदी प्रदेश का जाम्बवान; बोली नदी क्षेत्र के बलि अथवा बाली। जाम्बवान और बलि का पुत्र बाण, राम और कृष्ण दौनों के ही काल में है।

साम्ब (कृष्ण के पुत्र) के गर्भ से लोहे से मूसल की घटना

प्रथम दृष्टि में यह एक काल्पनिक मिथक लगती है किन्तु यह एक सत्य घटना को अपने आप में छिपाये हुऐ है-

सरस्वती नदी प्रदेश की अनियमितता से समूचा सरस्वती प्रदेश कही अकाल सूखा और कही बेतरतीब बाढ़ से जूझ रहा था। जिन लगातार अठारह वर्षो तक मधु/सूरसेन (श्रूघन) पर सरस्वती-यमुना जलसंधि ने आक्रमण किये ... सरस्वती नदी ने उन्हीं अठारह वर्षो के दौरान यमुना नदी के रूप में अपने दक्षिण का मार्ग लगभग निश्चित कर लिया था। जब नदी यमुना के रूप में बही तो कालिन्दी, बूढ़ी यमुना, मस्कारा, सांदली, काथा जो कभी हरियाणा की भूमि पर बहते हुऐ वहाँ के जनों-ग्राम-गोत्रों के लिये जीवन दायिनी नदियाँ थी... यमुना नदी से संगम करने लगी। फलत: हरियाणा और पंजाब की भूमि पर बसे जन-ग्राम गोत्र, जो कि चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति वाले, लोहे का प्रयोग करने वाले कृषक जन थे, उजड़ गये। वे अपनी बस्तियों, ग्रामों को त्याग कर उचित-अनुकूल वातावरण और स्थान की खोज में दोआबे की ओर बढ़े। जगाधरी में द्वारिका से गुजरते हुऐ उन्होंने भोजन और आवश्यकता की अन्य वस्तुऐं प्राप्त करने के लिये अपने साथ लाई गयी लोहे की छोटी-बड़ी वस्तुओं-औजारों-कील, काँटों का विनिमय द्वारिकावासियों के साथ किया। द्वारिकावासी उस समय समीप के गैरिक मृदभांड वाले जनों की भाँति ताम्र व कांस्य सभ्यता वाले पशुपालक थे, उन अर्ध यायावर जनों के लिये लोहे के उपकरण, कच्ची धातु, अस्त्र-शस्त्र, औजार, अन्जाने और अनछुऐ थे और यह आश्चर्य और उत्सुकता का विषय था कि ताँबे-काँसे के बेढ़ंगे, भारी, भौंथरे औजारों, अस्त्र शस्त्रों की अपेक्षा लोहे के औजार हल्के, तेज, स्थायी और मजबूत थे। शरणार्थियों से उन्हें इतनी धातु और सामान मिला कि लोगों (साम्ब) के गर्भगृह तक भर गये। अब वे गर्भगृहों में एकत्रित इस नयी धातु के (धातुकर्म, विधि, भविष्य, प्रयोग) विषय में किसी जानकार से कुछ जानना चाहते थे; द्वारिका नगरी के बाहर ठहरे उस ज्ञानी ऋषि ने उन्हें बताया कि गर्भगृह की यह धातु लोहा है, उसने यह भी बताया कि लोहे को प्रयोग में लाने पर सरस्वती प्रदेश वासी उजड़ गये... बरबाद हो गये... और यदि तुम भी इसे प्रयोग करोगे तो...!

वह युग था ही भय, आशंका और विश्वास के बीच झूलते उनके वर्तमान का। हालांकि महाभारत युद्ध से पहले ही कृष्ण ने भीम और अर्जुन के साथ मिलकर 27 दिवसों के अथक असुर प्रयासों के उपरान्त जलसन्धि को दो भागों में बाँट कर विपरीत दिशाओं में फिंकवा (करवा) दिया था। कुछ समय तक सब कुछ नियमित भी हो गया था, किन्तु प्रकृति से लड़ा नहीं जा सकता और न ही उसे अपने अनुसार ढ़ाला जा सकता। प्रकृति के अनुसार मनुष्य

को स्वयं ढलना पड़ता है। द्वारिका के बहुत से लोगों ने किसी अनिष्ट की आशंका से एकत्रित लोहा, औजार सरस्वती-यमुना के समुद्र में फैंक भी दिये...। किन्तु धातु उस युग में अनमोल और दुर्लभ थी। बहुतों ने चोरी छिपे उसे एकत्रित कर औजार-कीले-तीर की नोकें आदि बनाई। इसी धातु के कारण आपसी रंजिश और संघर्ष भी हुआ होगा...[27] किन्तु आशंका भी सही साबित हुई। नदी ने एक बार फिर से अपना बहाव मार्ग बदला... इस बार उनकी द्वारिका इस अप्राश्चित बाढ़ में बह गयी... डूब गयी। लोहे का इसमें कोई दोष नहीं था और न ही मूल द्वारिका गुजरात के प्रभाष तट पर गुजरात में थी, वहाँ तो सिन्धु सभ्यता का कोई अन्य नगर है।[28] मिथक है कि द्वारिका के सागर में डूबने की आशंका से असंख्यों यादवजनों ने द्वारिका छोड़ दी, वे अर्जुन के साथ हस्तिनापुर की ओर चले किन्तु मार्ग में आभीरों द्वारा लूट लिये गये। किसी प्राकृतिक विपत्ति से बचने के लिये सौ-सवा सौ किलोमीटर भागना तो उचित लगता है, जगाधरी क्षेत्र से हस्तिनापुर लगभग इतनी ही दूर है, जबकि गुजरात से हस्तिनापुर की दूरी लगभग सवा हजार किलोमीटर से अधिक है। सरस्वती-यमुना की अनियमितता में जगाधरी-सहारनपुर और इसके दक्षिण का क्षेत्र प्रभावित हुआ, अनियमितता और अप्राश्चित बाढ़ के कारण द्वारिका के डूबने की आशंका भी बन गई थी, सरस्वती -यमुना का दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्र कतई सुरक्षित नहीं था इसलिये हस्तिनापुर की ओर जाने के अतिरिक्त और कोई सुरक्षित मार्ग सोचा भी नहीं जा सकता था और हस्तिनापुर का पाँड़व राजवंश यादवों का मित्र तो था ही।

समुद्र इस प्रकार निकल भागने का अवसर नहीं देता दूसरे गुजरात में द्वारिका पर आई प्राकृतिक आपदा के बाद वहाँ से निकलकर ठहरने, शरण लेने और बस जाने के लिये सैकड़ों हजारों दूसरे सुरक्षित स्थानों की सम्भावना बनती है। दूसरे, गुजरात की द्वारिका के डूबने का समय पुरातत्वविदों के अनुसार 1500 ई0 पू0 का है और उस समय हस्तिनापुर बसा हुआ नहीं था।[29] गैरिक मृदभांड़ों वाली सभ्यता की प्राथमिक बस्ती इस काल के आसपास या इसके बाद लगभग 1200 ई0 पू0 में बसी होगी और चित्रित धूसर मृदभांड़ों का समय तो इसके भी काफी बाद का है। पुरातत्वविद महाभारत युद्ध का समय लगभग 950 ई0 पू0 मानते हैं।

सरस्वती प्रदेश के विरज-वृष्णि यादव जन अपना सब कुछ खोकर दक्षिण की ओर चले आये; मूल शूरसेन, श्रूघन था, जहाँ से चलकर उन्होंने इन्द्रप्रस्थ के काफी दक्षिण में नये शूरसेन/ब्रज की स्थापना की... कुछ दलों ने आगे बढ़कर गुजरात, मध्यभारत का रूख किया. .. कालान्तर में वे कुछ और आगे बढ़कर दक्षिण तक पहुँचे। अन्धक वृष्णि यादव जनों का प्रसार आन्ध्रप्रदेश में हुआ। मेरे विचार में यादवों का यह पलायन सरस्वती नदी प्रदेश में लोहे के आगमन से बाद का है। सरस्वती यमुना के प्रदेश से उनके पलायन का कारण मगध का जरासन्ध नहीं अपितु जगाधरी-सहारनपुर के क्षेत्र में यमुना-सरस्वती नदियों की जलसन्धि था।

आर्य भी नाग ही थे

प्रस्तुत शोध पत्र में मैंने बार-बार कहा है कि आर्य, नागों से जातिय रूप से भिन्न नहीं हैं वे नागों की ही वह शाखा हैं जो अपेक्षाकृत शीघ्र कृषि और लोहे से जुड़ कर अत्याधिक धार्मिक, कर्मकाण्डी और अपने समाज में वर्ण व्यवस्था लागू कर समीपवर्ती नागों की तुलना में श्रेष्ठ बन गये। इसके एक वर्ग ने लिपि का विकास कर ब्राहमण, गुरू और फिर पुरोहित की भूमिका निभाई। नागों के सम्मुख युद्ध के अस्त्रों गदा, मुग्दर, शूल, परसु, खड़ग आदि के विरूद्व धर्नुविद्या का अत्याधिक विकास कर लिया... लोहे और धर्नुविद्या ने उन्हें अपने भाईवृन्दों, जो कि कुछ अधिक देर तक वनों पर आश्रित जीवन बिताते रहे, से श्रेष्ठ

बना दिया। इतना कि पहले तो उनकी बस्तियों के समीप क्षेत्र में बसे नाग पणि उनसे समबन्धित, उनके आश्रित बने रहे और फिर इन्होंने ही आर्य संस्कृति का प्रसार किया। केवल व्यक्तियों के नाम ही नहीं, आर्यों और अनार्य-नागों आदि के देवता भी समान हैं इन्द्र, धाता अग्नि, अर्यमा, पूषा, पर्जन्य को छोड़ दें तो वरूण, शिव, विष्णु दौनों के ही देवता हैं। यह साम्य अन्यथा नहीं हो सकता। तथ्य तो यही कहते हैं कि जो किसी भी प्रकार विजेता रहे या राजवंश के संस्थापक हुऐ वे आर्य कहलाये। वज्जियों, शाक्यों के साथ सोलह जोड़े जुड़वाँ और भाई बहन के बीच कौटम्बिक विवाह की पैशाची प्रथा है ... वे फिर भी सूर्यवंशी कहे गये हैं; इनका सम्बन्ध मनु, इक्षवाकु और राम से जोड़ा गया है। हस्तिनापुर का राजवंश कौरव्य नागों का है वे फिर भी आर्य कहे गये हैं। ऋग्वेद में नागों का उल्लेख नहीं है और ऐसा विचार कि नाग आर्यो के उपरान्त भारत में आये, किसी भी प्रकार मान्य नहीं हो सकता। ऋग्वेद में पणि हैं और पुराणों में वे नहीं मिलते...। उस समय जब समूची भारत भूमि पर कहीं भी और बस जाने के असंख्यों अवसर और स्थान मौजूद थे, वे सब की शरण स्थली भारत को छोड़ कर फोनेशिया भागेंगे-विचार कुछ जमता नहीं। भारत का अब तक का इतिहास गवाह है कि यहाँ विभिन्न जातियाँ आई तो है... यहाँ से कहीं गयी नहीं... अग्रेजों, पुर्तगीजों, फ्रांसीसिओं की भाँति कोई आकर लौट गया हो यह बात अलग है। गुर्जरों का मूल उन गज-हस्ती... अज (मीढ़) - अहि जनों से ही है जिन्होंने हस्तिनापुरी बसाई थी... और राजपूत शब्द टोटेमिक ''ऋक्षपुत्र'' का अपभ्रंश है।

सब की भाँति मै भी मानता हूँ कि अग्नि से चार वीरों की उत्पत्ति नहीं हो सकती, किन्तु चन्द्रवरदाई की इस बात में तो तथ्य है कि इन चार जातियों की उत्पत्ति से पूर्व आबू क्षेत्र में एक अन्य जाति का बाहुल्य था, जो यज्ञ में विघ्न ड़ालतीं थीं, आखिर इन्हीं से यज्ञ की रक्षा के लिये ही तो चार वीरों की उत्पत्ति की गई थी।[30] वह जाति, चन्द्रवरदाई के कथन के अनुसार राक्षस थी, अर्थात वे यज्ञ और ब्राहमण विरोधी थे, इनका संघर्ष इस क्षेत्र के चारों ओर आकर बसे चालुक्य, चौहान, परमार और प्रतिहारों से भी हुआ... इस संघर्ष का प्रारूप और परिणाम छोटा मोटा नहीं रहा होगा, क्योंकि वह जाति कुछ प्रबल ही थी इसी लिये एक के विरूद्ध चार को लाया गया/या आये! चारों दिशाओं से मोर्चा बाँधा गया।

सिकन्दर के आक्रमण के उपरान्त सिन्धु नदी प्रदेश के मालव वह प्रदेश छोड़कर मध्य भारत के मालवा में आ बसे, ऐसा लगभग सभी विद्वानों का मानना है। सिंध प्रदेश में मालवों के सहयोगी क्षुद्रक, मेरे विचार से आबू क्षेत्र में आ बसे ; क्षुद्रकों के साथ मद्रक भी समान क्षेत्र में आये। पीछे हमने मधु और मद्रजनों को एक ही माना है इसी मधु > मद्र में अगली कड़ी है मेदपाट > मेवाड़ की। राणा-महाराणा शब्द उन्हें रावणा से जोड़ता है। वाप्पा रावल द्वारा एकलिंग पर शीश अर्पित करना सिसोदियों की कथा.... रावण द्वारा शिव को शीश अर्पित करने से जुड़ती है.... समीप मंडौर में मंदोदरी का मायका माना जाता है। वंशावली में एक नाम महाराणा कुंभकर्ण भी है। पड़ोस की पहाड़ियों में एक स्थान का नाम किसकिंधा है। मंदसौर का एक नाम दशपुर है।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. **राणाप्रसाद शर्मा, ''पौराणिक कोष,''** वाराणसी, 1986, पृ0 1 ; **आर० सिद्धान्ताशास्त्री, ''हिस्ट्री ऑफ प्रि कलियुग इड़िया''**, दिल्ली; 1978; पृ0 174

2. **राणाप्रसाद शर्मा,** पृ0 1
3. अंग देश की राजधानी, प्राचीन चम्पा-भागलपुर के निकट एक पहाड़ी कर्णगढ़ महाभारत के कर्ण से सम्बन्धित है। दिग्विजय करते समय भीम का मगध के गिरिव्रज के पश्चात मोदगिरि (मुंगेर) के पूर्व में कर्ण से युद्ध का वर्णन है। इसी प्रकार मुगेर के निकट कर्णचूर पहाड़ी भी महाभारत के कर्ण के नाम से विख्यात है- **वी० के० माथुर, ''ऐतिहासिक स्थानावली,''** जयपुर, 1969, पृ0 143
4. **वी० के० माथुर,** पृ0 140
5. **राणाप्रसाद शर्मा,** '' पृ0 1
6. **ओ० पी० भारद्वाज, ''वाल्मीकीज हिस्ट्रोरिकल ज्योग्राफी आफ कुरूक्षेत्र''** पंजाब हिस्ट्री कान्फ्रेंस, 1978, अधिवेशन 10, भाग-1, पृ0 2
7. बाद में पृथ्वी शब्द सम्पूर्ण ग्रह के नाम का पर्याय बना किन्तु शुरू में यह केवल उस भूमि तक के लिये प्रयुक्त होता होगा जो पृथुओं (कृषकों) ने प्रोथित-समतल की।
8. कृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र अनिरूद्ध का अपहरण, बलि की पौत्री या बाणासुर की पुत्री उषा ने (अपनी सहेली चित्रलेखा के द्वारा) करवाया था।
9. **राणाप्रसाद शर्मा,** पृ0 1
10. करनाल से लगभग 25 कि0 मी0 दूर और पानीपत से लगभग 20 कि0 मी0 दूर पुरातत्विक महत्व की वस्ती कुनाल को और पानीपत-शामली (मुजफ्फरनगर) मार्ग पर कैराना को ये नाम करणों ने ही दिये होंगे।

    मनु0 के अनुसार व्रात्य क्षत्रियों की उसकी सवर्णा स्त्री से उत्पन्न संतान को करण कहा जाता है। मनु0 10.22 और ब्रमहवैवर्त पुराण के अनुसार वैश्य पुरूष और शूद्रा स्त्री से उत्पन्न ''करण'' कहे जाते है जो लिखने का काम करते हैं-तिरहुत में अब भी करण पाये जाते है-**राणाप्रसाद शर्मा,** पृ0 87

    मेरे विचार में पणि (वैश्यों) की सन्तान जिन्होंने आर्यो के सम्पर्क में आकर लिखना पढ़ना तो सम्भवत: उतना नहीं किन्तु हिसाब-किताब रखना अवश्य सीख लिया होगा क्योंकि कालान्तर में पूर्ण वैश्यों की भूमिका इन्हें ही तो निभानी थी। कुराना, कुनाल, कुंजपुरा और यमुना पार सहारनपुर जिले में कुण्ड, मुजफ्फरनगर जिले में कराना, कन्धाला, खन्दावली, कुण्डली; नदियों-काथा और सांदली आदि नाम एक बड़े क्षेत्र में करण-कुण्ड-कुण्ड़ती वाले जाति-समाज की ओर ईशारा करते हैं।
11. **आर० सिद्धान्ताशास्त्री,** पृ0 74-75(117-118,
12. वही, पृ0 117-118
13. **राणाप्रसाद शर्मा,** पृ0 203
14. वही, पृ0 74-75 (भाग्वत0 में केवल वध्र्यांश्व का नाम ही है)
15. वही, पृ0 162-163 मतस्य0 में चैद्यउपरिचर को वसु और विष्णु0 भाग्वत0 में उपरिचर वसु कहा गया है। मतस्य0 में चयवन और चैद्योपरिचर वसु के बीच ''कृमि'' नाम और भी है। ऋ0 3.53.7 में सुदास के वंशज भोज क्षत्रिय है। अर्थर्ववेद 5.19.1 में सृज्जयों की शाखा वीतीहव्य, जिनका विग्रह भाग्रवों से हुआ पौराणिक हैहय वीतीहोत्र प्रतीत होते हैं। सृज्जय का अपभ्रंश हैहय शब्द है, सुदास अपने अभिषेखकर्ता गुरू वशिष्ठ से उलझ बैठा; सुदास पैजवन ही पौराणिक नास्तिक, क्रूर, अत्याचारी, ब्रहामण विरोधी वेन और सहस्त्रबाहु अर्जुन है। कृतवीर्य का अर्थ कृतवंशज यादव ही हैं कृतवीर्य अर्जुन सहस्त्रबाहू पांच वंशों का प्रणेता कहा गया है। उसी प्रकार चैद्य उपरिचरवसु भी पांच ही वंशों का प्रणेता है. .. भले ही मगध के वंश विवरण में चैद्योपरिचर नास्तिक अत्याचारी, क्रूर ब्राहमण विरोधी न दर्शाया गया हो किन्तु अहिच्छत्रा के शासकों (मतस्य0 और विष्णु0 की भांति) में

चैद्यवरा, चयवन, सहदेव, सोमक की भाँति, मगध वंश में चयवन, चैद्योपरिचर, सहदेव, सोमापि नाम तो मिलते ही हैं। एक ही व्यक्ति सुदास पैजवन को उसकी ब्राहमण विरोधी गतिविधियों के कारण पुराणों में वेन, सुदास दिवोदासि (काशीवंश); सुदास तुपर्णी (दक्षिण कौशल); सहत्रबाहु कृतवीर्य अर्जुन; और चैद्य उपरिचरवसु (मगध) आदि में बांटा।

16. आनर्त (काठियावाड़) के राजा यदु के नाना मधु राक्षस का राज्य जो आनर्त से मथुरा तक फैला था, को यदु ने जीता। इससे अरावली के साथ-साथ दोआबे की ओर देशान्तरण का संकेत मिल सकता है- **रोमिला थापर,** ''प्राचीन भारत का सामातिक इतिहास,'' **अनु० आदित्य नारायण सिंह,**'' दिल्ली 2001 ; पृ0 213

जरासंध द्वारा मथुरा के अन्धक-वृष्णि यादवों पर आक्रमण, उनके द्वारिका पलायन का कोई पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिलता। कृष्ण-लाल मृदभांड़, जिनका सम्वन्ध यादवों से जोड़ा जाता है मथुरा मे लगभग अनुपस्थित हैं (सौंख के मामूली अवशेषों को छोड़कर), द्वारिका का उत्खनन लाल कृष्ण मृदभांड़ों तक पहुंचा ही नहीं है। यादवों के एक कुल हैहय तालजंघों (शर्याति, भोज, अवन्त, तुण्ड़िकेरा और वीतीहोत्र) ने काशी, वैशाली, विदेह, अयोध्या को पददलित किया था किन्तु कृष्णलाल मृदभांड़ों के साक्ष्य अयोध्या, वैशाली में भी नहीं मिले हैं। पार्जीटर द्वारिका के वंश को पर्णाश नदी (बनास) और मॉउंट आबू से सम्बन्धित करते हैं- वहीं, पृ0 214 ; मगध में यद्यपि लाल-कृष्ण मृदभांड़ों के साक्ष्य हैं किन्तु वहां चित्रित घूसर मृदभांडों का साक्ष्य अनुपस्थित है- वही, पृ0 212

17. रीज डैविस के अनुसार काम्बोजों की राजधानी द्वारिका थी

18. ऋ0 3.53.7 में कहा गया है कि **''हे इन्द्र यज्ञ करने वाले ये सुदावंशी भोज क्षत्रिय और उनके याजक अनेक अंगिरा गोत्रीय ऋषि एवं देवों में बलवान रूद्र के पुत्र मरूदत इस अश्वमेघ यज्ञ में गुरू विश्वामित्र को धन देते हुऐ मेरे धान को बढ़ावें।''**

19. महाभारत में आठ वसुओं के नाम धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभाष हैं- **राणाप्रशाद शर्मा,** पृ0 458 ; कृष्ण के पालक माता पिता नन्द-यशोदा को पिछले जन्म का द्रोण वसु और उसकी स्त्री धरा कहा गया है- **राणाप्रशाद शर्मा,** पृ0 256 ; कामधेनु (काम-धान्यक- कामयकवन) नन्दिनी है, शिव का गण/वाहन-नन्दी; पलक्ष द्वीप (पलक्षा, सरस्वती नदी प्रदेश) का एक भाग नन्द था; शिव का कैलाश, कालेसर में। नन्द, नन्दी नन्दन अथवा द्रोण वसु (सोम्ब नदी क्षेत्र और प्रभाष वसु के क्षेत्र सरस्वती नदी प्रदेश में ही थे।

देवेन्द्र हांड़ा ''सम ईपोर्टेन्ट टाउन्स ऑफ हरियाणा''जर्नल ऑफ हरियाण स्टड़ीज-3, जनवरी 1971, न0 1 ; **सूरजभान, ''एक्सकैविऐशन एट सुघ''** जर्नल ऑफ हरियाण स्टड़ीज -9, न0 1-2, 1977 पृ0 5

20. कृष्ण की पहचान म्यूर पंख है, म्यूर पंख या म्यूर द्रषद्वती नदी क्षेत्र में निवास करने वाली जाति का टोटेम था। उत्तरी हरियाणा क्षेत्र की नदी सदोदेनी मारकण्ड़ा में सदादेनी नाम सौद्युम्नि का अपभ्रंश है। सौद्युम्नि अर्थात विद्युत या बिजली और सौद्युम्नि नदी का अर्थ है वैद्युती या वेदवती। यह मैनाक अथवा शिवालिक पहाड़ियों के सौद्युम्न या वैद्यूत पर्वतों से निकलती थी। एक पौराणिक कथा है-हेती और प्रहेती म्यूर और मुर्गे के रूप में मारकण्ड़ेय मनि के आश्रम में गये थे। हेती शब्द का अर्थ भी सौद्युम्नि या विद्युत है। हेती जन शैव्य थे। हेती के पुत्र सुकेश को जिसे सालकण्टकटा जन्म देकर मदराचल पर्वत पर छोड़ गई थी, शिव पार्वती ने पाला था। ऋग्वेद... में कहा गया है कि रूद्र की हेती हमे छोड़ कर अन्यत्र जाये-**सातवलेकर** 2.3.14-**रामविलास शर्मा ''पश्चिम ऐशिया और ऋग्वेद''**, दिल्ली, 1994, पृ0-184. यह प्रार्थना आर्यो ने हेती जनों से बचने के लिये की होगी। मार्कण्डा शब्द का निंकास म्यूर और मुर्गा शब्द से निकलता प्रतीत होता अर्थात म्यूर मुर्गा टोटेम वाले हेती

जन पहले द्वषद्वती-वैद्यूत क्षेत्र के निवासी थे। हेती के पुत्र का नाम भी विद्युत केष है; यह स्थानवाचक नाम को जाति और व्यक्तिवाचक बनाया गया प्रतीत होता है। अम्बाला के समीप कालका को उन कालिकेयों से सम्बन्धित माना जा सकता है जो हिरण्यदैत्यों की बहन सिंहिका के वंशज कहे गये है, सुकेष और विज्जवला का पुत्र विद्युज्जिजिन्ह रक्ष रावण की बहन सूपनखा का पति था विज्जवला और विद्युज्जिजिन्ह नामों में विद्युत या बिजली शब्द उन्हें हेती जनों से मिलाते है। मार्ककण्ड़ा क्षेत्र में आर्यो के बसने से म्यूर मुर्गी जन कुछ और पूर्व में राक्षी नदी और पलक्षा (सरस्वती)नदी क्षेत्र में आ गये जहाँ पौलस्त्य-पुलह या पलंकष जन उनके सहयोगी-सम्बन्धी बने। पौलस्त्यजन पलक्षा नदी क्षेत्र में बसे हुऐ वृषजन थे, यह रावण के पिता विश्रवा के नाम से पता चलता है। पलक्षा या पंलकंष शब्द में साम्य है जो लंका; के मूल में है। पलक्षा का अपभ्रंश राक्षी है। विद्युतकेष के पुत्र सुकेस के पुत्र तीनों माली भाई-माली, सुमाली और माल्यवान सम्भवतः मालवों, मोरों, म्यूरों या मोर्यो के मूल में हैं। मैनाक के मय, मरूदत और मरूद्वधा का भी इससे साम्य है। मोर्यो को शूद्र कहा गया है अर्थात मौर्य/मालव या राक्षस ही सिकन्दर कालीन मालव हैं और क्षुद्रक के मूल शब्द क्षुद्रक्ष होना चाहिये, इससे धारणा बनती है कि राक्षी-दृषद्वती से वैद्यूत पर्वत तक फैले मालव/म्यूर/मोर्य और राक्षस जन, आर्यों के प्रसार और सरस्वती नदी की अनियमितता के चलते पहले तो सिंध-रावी-सतलज नदी क्षेत्र में जा बसे और वहाँ से सिकन्दर के सेनापतियों के काल में मध्य भारत की ओर पलायन कर गये। मालव तो मालवा में जा बसे और क्षुद्रक्ष आबू और दशपुर (मंदसौर) क्षेत्र में। तब दर्शाण शव्द दृक्षाण < क्षुद्रक्षाण जैसे शब्दों का अपभ्रंश होना चाहिये। रावण भी दशार्नन नहीं अपितु दर्शाणन था अर्थात दशार्ण का अधि पति ; इसका अर्थ यह भी हुआ कि रावण कालीन दशार्णन दृष्द्वती नदी क्षेत्र में था। दशार्ण या दशानन में दृषद्वती का दृष या दश शब्द है। कैलाश कालेसर के शिव का एक नाम. .. दशबाहु भी है उसके धनुष का नाम दशवर्ण है... यही दश शब्द कालान्तर में दशपुर और दशार्ण में आया। मंडौर, मंदसौर, मयों/मंदोदरी से सम्बन्धित हैं। चालुक्य, चौहान, परमार और प्रतिहारों के उदभव् सम्वन्धी मिथक कि आबू के यज्ञ को राक्षसों से बचाने के लिये अग्नि से चार वीरों की उत्पत्ति की गई, से पता चलता है कि आबू क्षेत्र में पहले राक्षसों बाहुल्य था बाद में चार अग्निकुल जातियाँ उनके चारों दिशाओं में आकर बसी, इसका अर्थ यह है कि सिकन्दर के काल के बाद क्षुद्रक/राक्षस इस क्षेत्र में आये थे। दृषद्वती नदी से वैद्यूत पर्वत तक के क्षेत्र में म्यूर-मुर्गा टोटेम वाले वहुत से जन थे, वसु-वृष-वृष्णि से साम्य रखने वाले कृष्ण भी म्यूर टोटेम वाले है क्योंकि वृषिन का अर्थ म्यूर होता है और कृष्ण वृष्णि वंशी हैं

21. हेती-प्रहेती के म्यूर-मुर्गा टोटेमिक जन होने और कुट-कुट या कुक्कुट के सुकट्ठ/सुकेती अथवा सुकक्ष से मिलान करने पर; विद्युतकेष की स्त्री का नाम सालकंटकटा और पुत्र का नाम सुकेस : हिरण्यदैत्यों की बहन सिंहिका और विप्रचित्ती दानव की पुत्री कलिका के वंशज कालिकेय दैत्यों में सुकेत और विज्वला का पुत्र विद्युज्जिन्ह; सभी केतुमाल वर्ष (गिरि नदी घाटी) सुकेती और वैद्यूत/सौद्युम्नि अथवा विन्ध्य पर्वत से सम्बन्धित थे-जो सिरमौर जिले की शिवालिक पर्वतमाला का भाग था। हेती-प्रहेती को यातुधान के दस पुत्रों में से दो कहा गया है। प्रहेती के पुत्र माल्यवान और पुलोमा हैं- **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 430 और 339; अब यतुधानों का उल्लेख हमें ऋग्वेद में भी मिलता है। ऋ0 7.104.15-25 में आपसी वैमनस्य के चलते वशिष्ठ विश्वामित्र को राक्षस कहता है और बदले में विश्वामित्र वशिष्ठ को यातुधान कहता है। वशिष्ठ ने अदभुत रूप से अवश्य जन्म लिया था किन्तु वह यतुधान नहीं था सम्भवतः तभी तो सफाई देते हुऐ वशिष्ठ बहुत बड़ी बात कहता है कि यदि में यतुधान होउँ तो तुरन्त मर जाउँ-**''अद्या मुरिय यदि यतुधानों अस्मि यदि वायुस्ततप पुरूष्य;**

अधसवीरैर्दशाभर्वि यू या यो मा मोघ यातुधनित्याह'' ऋ.7.104.15 यातुधान राक्षसों के साथ रहने वाले अज, पिशाच, प्रेत जन ही थे किन्तु वे पुलह-पुलस्त्य वंशी राक्षसों से भिन्न थे। वायु0 के अनुसार कश्यप के सुरसा के गर्भ से 12 पुत्र यातुधान हएे- **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 438; अन्यत्र भी यतुधानों से यक्ष, व रक्ष अलग हैं, कश्यप और खशा के दो पुत्र थे, एक चार हाथ और चार पैर वाला यक्ष और दूसरा तीन हाथ तीन पैर वाला राक्षस; अज और शंड़ की दो पुत्रियाँ ब्रहमधान और जतुधना इनकी स्त्रियाँ थीं- **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 142 पौराणिक विवरण चाहे जो हो; यातुधान और यादव-वृष्णि सरस्वती नदी प्रदेश के म्यूर टोटेम वाले जन तो थे ही। यादवों का मूल सरस्वती नदी प्रदेश में राक्षसों के साथ रहने वाले यक्षों के रूप में प्रतीत होता है, यक्ष ही यतुधान कहे गये होंगे यह यह जानने में सहायक होता है कि द्वारिका जगाधरी प्रदेश में थी।

शिनी पुत्र सत्यककी है जिसके पुत्र सात्यकि का एक नाम युयुधान...यातुधान से मिलता जुलता है। सात्यकि या युयुधान के पुत्र का नाम तुणि या सिनी है जिसका पुत्र युगन्धर है और मानचित्र पर युगन्धर... स्पष्टत: जगाधरी का क्षेत्र है। अंगिरा की चार पुत्रियाँ सिनीवाली, कूहू, राका और अनुमति, ये सभी उत्तरी हरियाणा क्षेत्र की नदियाँ हैं सिनीवाली जो कि यादव सिनी की शाखा से सम्बन्ध रखती प्रतीत होती है का सम्बन्ध कैसिनी/कैकसी अथवा कौशिकी से भी बैठता है और केकसी, हेती यातुधान के वंशज सुमाली की पुत्री थी जो विश्रवा ऋषि की स्त्री और रावण आदि राक्षसों की माता बनी।

22. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 523
23. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 360
24. **कैलाशनाथ द्विवेदी, ''ऋग्वैदिक भूगोल''** कानपुर ; पृ0 326
    कीथ व मैकडोनेल; ''वैदिक इण्डैक्स'' बनारस; भाग-2, पृ0 396
25. **कीथ व मैकडोनेल**; भाग 2 पृ0 122
26. **के० डी० वाजपेई, ''अहिच्छत्रा''** लखनऊ ; पृ0 4, यहाँ लेखक का अनुमान है कि सम्वर्ण ने सुदास के पुत्र सहदेव या उसके पुत्र सोमक को पराजित कर अपना राज्य वापिस जीता था।
27. भाग्वत0 ; विष्णु0 में कहा गया है कि बढ़ती जनसंख्या के कारण कृष्ण ने ही गृह-युद्ध में फंसा कर यादवों का विनाश करवा दिया।
28. यादवों की कोई शाखा सरस्वती नदी प्रदेश में जगाधरी-काथा नदी प्रदेश से यहाँ आकर बसी होगी उन्होंने अपने मूल क्षेत्र की द्वारिका के नाम पर नये क्षेत्र का नाम भी द्वारिका रख लिया होगा। अन्य सम्बन्धित नाम काठियावाड़, सरस्वती, आनर्त, कुशस्थली, प्रभाष आदि भी वे अपने साथ ही लाये थे। बाद में अगला, पिछला सारा इतिहास, मिथक-पुराण आदि नयी पृष्ठभूमि के हिसाब से लिखा गया। यह उचित भी लगता है क्योंकि गुजरात तट पर द्वारिका से सम्बन्धित मिथक मिलते हैं तो हाल ही में खम्बात की खाड़ी में भी एक डूबी हुई बस्ती पुरातत्वविदों की मिली हैं। समूचे कच्छ गुजरात क्षेत्र में रंगपुर, लोथल, सुरकोटड़ा, देसालपुर, नागवदा धौलावीरा आदि बीसीयों प्रमुख स्थान हैं; इनमें से कोई भी मिथकों से जुड़ा हुआ नहीं है। दूसरे गुजरात के कच्छ में बहुत सारे पुरातात्विक महत्व के स्थानों पर तो किसी सरस्वती नदी के पहुँचने की आशा की जा सकती है (भले ही वहाँ वह दक्षिणवाहिनी हो) किन्तु प्रभाष या द्वारिका में सरस्वती का पहुँचना और वहाँ उसका पश्चिमवाहिनी होना किसी प्रकार सम्भव नहीं, कम से कम अब तक खोजे गये संकेत तो यही कहते हैं। मूल द्वारिका गुजरात में नहीं थी। कहा गया है कि द्वारिका के पश्चिमी भाग में सुकक्ष पर्वत के चारों ओर शतपत्र वन था- **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 -486; जबकि गुजरात में मानी जाने वाली द्वारिका के पश्चिम में न कोई पर्वत है और ना कोई वन, वहाँ तो समुद्र है।

29. भारतीय वैज्ञानिक संस्थान, बंगलूर के वैज्ञानिक **ड़ा० आर. एन. अयंगर** ने महाभारत में वर्णित ग्रहों की स्थिती और पन्द्रह व पैतीस वर्षो के अन्तराल पर पड़ने वाले लगातार तीन सूर्य ग्रहणों को ध्यान में रखते हुऐ कम्पयूटर प्लेनेटोरियम सॉफ्टवेयर की मदद से महाभारत युद्ध की तिथि अक्टूबर 1748 ई0 पू0 और द्वारिका के जलमग्न होने की तिथि 1443 ई0 पू0 निकाली है उनके अनुसार महाभारत वर्णित ऐसे तीनों सूर्यग्रहण 1493, 1778 और 1444 ई0 पू0 में पड़े जब कृष्ण ने यह लोक त्यागा और उसके बाद द्वारिका समुद्र में डूब गई-हरिभूमि दैनिक, 29 नवम्बर 2003; **सरोजबाला, ''द्वारिका सचमुच डूबी थी''**; दैनिक ट्रिव्यून, 4 अप्रैल, 2004; किन्तु ज्योतिष उल्लेख और उन पर गणनाऐं सन्दिग्ध होती है। हस्तिनापुर का पुरातात्विक अन्वेषण महाभारत युद्ध को लगभग 900 ई0 पू0 में रखता है- **बी० बी० लाल, ''एक्सकैविऐशन एट हस्तिनापुर''** एन्शेन्ट इंड़िया न0 10-11 ; हस्तिनापुर में शहरी चरण की स्थिती 500 ई0 पू0 के आसपास सामान्य ही थी 1200 ई0 पू0 से पहले गेरू रंजित मृदभांडों का समय है इसके कुछ अन्तराल के उपरान्त चित्रित धूसर मृदभांड़ मिलना शुरू होता है जिसे कथित आर्यो से सम्बन्धित किया जाता है। **रामशरण शर्मा** का कहना है कि दसवीं शताब्दी ई0 पू0 में इतने बड़े युद्ध के सम्पन्न होने पर, जिसमें लगभग समस्त देश के राजाओं ने भाग लिया हो, यह जानना आवश्यक है कि क्या उस काल में समस्त उत्तरी भारत में बस्तियाँ स्थापित हो गई थी। संगत कार्बन-14 तिथियाँ प्रदर्शित करती हैं कि 1000 ई0 पू0 से पहले बड़ी संख्या में बस्तियों की स्थापना नहीं हई होगी-**रामशरण शर्मा ''प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति एवं सामाजिक संरचनाऐं,''** दिल्ली, 1993, पृ0, 191 दूसरी ओर वेट द्वारिका से सिंधु सभ्यता की परिचायक शंख की ऐसी मुद्रा मिली है जिस पर तीन सिरों वाले काल्पनिक पशु की आकृति है। सांड़ एकश्रंग और बकरे के सिरों वाले इस पशु वाली ऐसी मुद्रा बहरीन से भी मिली है बेट द्वारिका के तटीय समुद्र से मिले काले लाल और चमकीले मृदभांड़ द्वारिका के इतिहास को ई0 पू0 15वीं सदी तक पीछे ले जाते हैं लेकिन द्वारिका या वेट द्वारिका से ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जो वहाँ कृष्ण का निवास सिद्ध करता हो- **गुणाकर मुले, ''कहॉ थी कृष्ण की द्वारिका''** दैनिक ट्रिव्यून, 28 अगस्त 1997
30. **जयनारायण आसोपा, ''ओरिजन आफ राजपूत्स,''** दिल्ली ; 1976 ; पृ0 47

अध्याय-10

अपसरा पितृ-पिशाच और वैदिकजनों के समाज की निर्मिती

महाभारत में हिड़िम्बा का कथन है कि वह राक्षसी है यतुधानी नहीं।[1] इसी प्रकार वशिष्ठ का ऋग्वेद 7.104.15-25 में यह कहना कि **मैं यतुधान होउँ तो तुरन्त मर जाऊँ** यातुधान. .. सभी वर्णो-जाति समाजों से हीन समझे जाते थे। जबकि शिव स्वयं दो रूपों वाले यातुधान हैं।[3] महाभारत के अनुसार यातुधानों की सृष्टि विश्वामित्र ने की थी।[4] वायु0 ; ब्रहमाण्ड0 ; रामायण के अनुसार कुबेर यक्षों, अगस्त्यों के और विश्वामित्र कुशिकों के राजा थे जिनमें

अगस्त्य और विश्वामित्र कुशिक बुद्धिमान ब्रह्मराक्षस थे।[5] पार्जीटर के अनुमान से राक्षस का अर्थ यहाँ दानवों से नहीं अपितु असभ्य अनार्य जातियों से है। जबकि किसी जाति को अध 'सभ्य, असभ्य या अनार्य होने के कारण ही राक्षस नहीं कहा गया... बल्कि राक्षी नदी क्षेत्र के सभी निवासियों को राक्षस कहा गया है, अब चाहे वे अर्धसभ्य हों या असभ्य हों। राक्षी नदी प्रदेश के जो जन सारस्वत वैदिक आग्नेय जनों की भाँति बस्तियाँ बसाकर स्थाई रूप से कृषक, कर्मकार इत्यादि बन गये... वे भी आर्य कहलाये; जैसे रावण राक्षस भी था और आर्य भी !

वशिष्ठ और उसका अग्रज अगस्त्य जो कि मित्रावरूण के उर्वशी से उत्पन्न पुत्र कहे गये हैं आर्यों के समाज के हिसाब से यातुधान थे भी नहीं। आर्यों के पितृ सत्तात्मक समाज में वे कुंड़ या कुंभ थे। पति के जीवित रहते हुऐ किसी दूसरे पुरूष के संसर्ग से उत्पन्न सन्तान को कुण्ड़ कहा जाता था। वशिष्ठ को भी कुण्ड़िन/कुण्ड़िनेय/कुण्ड़िन्य कहा गया है-

सास्थस तु मैत्रावरूणाह कुण्ड़िनाह सप्ताम्स तथा ।
इत्यइते सप्त विजिनेय वशिष्ठा ब्रह्मवादिनाह ।।
मित्रावरूणायोश चैव कुण्ड़िनो ये परिश्रुताह ।
इकारसेयस तथा कान्ये वशिष्ठा नामा विश्रुताह ।।[7]

कुण्ड़ का अर्थ तालाब के सम है तो कुंभ का अर्थ घड़ा, किन्तु कुंभा या कुंभि का अर्थ वैश्या कहा गया है।[8] कुंभा का पुत्र कुंभज होना चाहिऐ। कुंभज मात्र अगस्त्य और वशिष्ठ का ही नहीं अपितु कौरव पाँड़वों के गुरू द्रोणाचार्य का भी विशेषण है। इनके जन्म के विषय में भी समान और काल्पनिक लगने वाला मिथक है।

एक दो अपवादों को छोड़कर इन कुंड संन्तानों के सम्बन्ध भी इसी प्रकार से जन्म लेने वाली स्त्रियों या पितृ पैचाशिक समाज में ही हो पाते थे; इन सम्बन्धों को विवाह नहीं कहा जा सकता। सम्भवतः उस समय जब मानव वनों पर आश्रित, यायावर, खाद्य संग्राहक, पशुपालक जीवन छोड़कर बस्तियाँ बसाकर स्थाई होते हुऐ कृषि धातुकर्म आदि कार्यों में उतरकर सभ्यता की एक और सीढ़ी चढ़ रहा था; उस समय विवाह संस्था का विकास हुआ जिसने घर परिवार की नींव रखी। स्त्री पुरूष के सम्बन्धों को मजबूत किया, उन्हें एक दूसरे पर आश्रित कर दिया।

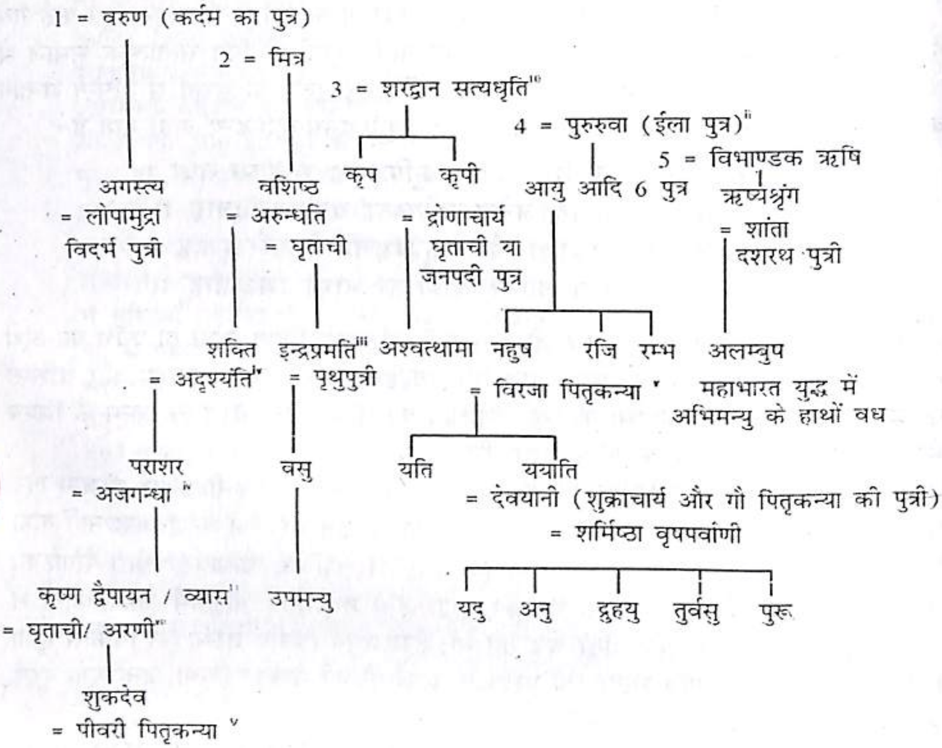
अपसरा उर्वशी ने पांच अलग-अलग पुरुषों के साथ सम्बंध स्थापित कर संतानें उत्पन्न कीं, तनिक विचार करें-

i. उरण/उरभ्र/उरः का अर्थ भेड़ या मेष[12] इससे उर्वशी के भेड़ या मेष पालक जाति के होने का पता चलता है। वह पुरूरूवा के साथ रहने की शर्तों में एक शर्त, पुरूरूवा द्वारा अपनी भेड़ें चरवाने की रखती है। शुरूआत के पशुपालक समाज में भेड़ के लिये मेष और भैंस के लिये महिष शब्द का प्रयोग होता था... जाति के रूप में मेष और महिष का अर्थ एक ही जाति से है। महिष अर्थात रम्भाने वाला... रम्भ। पुरूरूवा और उर्वशी के एक पौत्र का नाम रम्भ है और इस रम्भ का पुत्र महिष था[13] उरः, मेष, महिष, रम्भ सभी एक ही जाति नागों की शाखाऐं या सम्भवतः एक ही रहे होगें क्योंकि उर्वशी का एक पुत्र नहुष है... नहुष एक काद्रवेय नाग का नाम भी है। उर्वशी के पौत्र नहुष को सर्प/अजगर हो जाने का शाप मिला था। यह गलत है, वह तो था ही नाग... अहि या अज। दूसरी ओर उरगः का अर्थ भी सर्प या नाग होता है।[14]

ii. मनु का पुत्र सुद्युम्न... सौद्युम्नि वैद्यूत, विद्युत, हेती या बिजली के अर्थ में प्रतीत होता

है। हेती-प्रहेती यातुधान थे अर्थात सोलह जोड़े जुड़वाँ वाले पितृ पिशाच; जिनमें भाई बहन के बीच सीधे कोटम्बिक विवाह की प्रथा थी। मिथक है कि सुद्युम्न ही इला हो गया था... यह कौटम्बिक विवाह या जुड़वाँ जोड़े, की पैशाचिक प्रथा से जुड़ा प्रतीत होता है। दूसरी ओर पुरूरूवा और उर्वशी भी जुड़वाँ लगते हैं मात्र ''प'' अक्षर का भेद है। मिलान कीजीऐ उरूरूवा=पुरूवसी-उर्यु (आयु)

उर्वशी [i]



iii. वशिष्ठ के घृताची अपसरा से उत्पन्न पुत्र इन्द्रप्रमति को कुणीती; कुनीन और कुन्ती कहा गया है।[15] कुनीन या कुन्ती नाम किसी कुण्डती से उत्पन्न पुत्र को दिया गया लगता है

iv. अदृश्यती का शाब्दिक अर्थ भूतनी, पिशाचिनी, प्रेतनी। प्रेत शब्द ''पितृ'' शब्द का अपभ्रंश है और पुरू शब्द प्रेत का, पुरूष प्रधान समाज का।

v. पितृकन्या का अर्थ बहन होता है शुक्राचार्य की स्त्री गो; शुकदेव की स्त्री पीवरी और नहुष की स्त्री विरजा पितृ कन्याऐं थीं। आयु के पुत्र नहुष की स्त्री पितृकन्या विरजा और आयु के एक पुत्र का नाम रजि... अर्थात रजि...विरजी। रजि के वंशजों का क्षत्रिय हो जाने का उल्लेख है किन्तु कहीं भी उसके किसी वंशज का नाम और राज्य का वर्णन नहीं है। हो सकता है कि रजि ही विरजा हो।

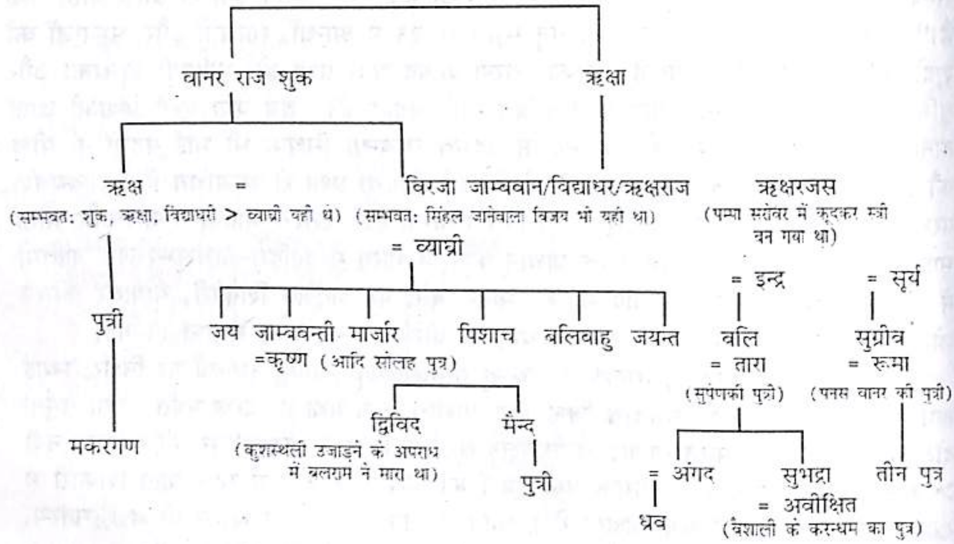
विष्णु0 के अनुसार वृष्णियों में रिश्ते में भाई बहनों के बीच विवाह का चलन था। **टी. आर. ट्राउटमैन** इसका कारण यादवों के पश्चिम भारत में निवास को बताते हैं, जहाँ सौराष्ट्र में उनकी केन्द्रीय बसावट के कारण ऐसी प्रथा थी। समय-समय पर देशान्तर के कारण यह कमजोर भी

पड़ती गई। सौराष्ट्र के मेरों और काफी बाद में भी सौराष्ट्र में आने वाले राजपूत मूल और दर्जे का दावा करने वालों ने भी इस प्रकार की विवाह प्रथा अपनाई।[16] मेरे विचार से यह प्रथा सरस्वती नदी प्रदेश से पलायन कर शेष भारत में जा बसे यदुजनों और उनके वंशजों में काफी बाद तक रही। यदु जन उन यातुधानों से सम्बन्धित थे जिन्हें पुराणों में ययाति का व्यक्तिवाचक नाम दिया गया है। आन्ध्रजन भी यादवों से और यादव कुल के अन्धकों से सम्बन्धित थे क्योंकि महाभारत में वृष्णियों और अन्धकों को समान रूप से ब्रात्य कहा गया है।[17] और कुछ तो बात रही होगी जो मनु स्मृति 10.23 में आन्ध्रों, सात्वतों और अम्बष्ठों को शूद्रों की श्रेणी में रखा गया है। इसका कारण शायद यही प्रथा हो। पाणिनी अन्धकों और वृष्णिओं को संघ शासन पद्यति वाले क्षत्रिय गोत्री बताता है।[18] तब क्या ऐसी प्रथाओं वाले अनार्य भी क्षत्रिय हो सकते थे? शाक्यों के उदभव् सम्बन्धी मिथक भी भाई बहनों के बीच कौटाम्बिक विवाह वाले सोलह जुड़वाँ जोड़ों वाले पैशाची प्रथा से सम्बधित हैं।[19] शाक्यवंश परम्परा में इक्षवाकु अपनी बहन सुभद्रा से विवाह करता है।[20] दशरथ जातक में राम और सीता भाई बहन भी है।[21] निष्कर्ष यह है कि प्राचीन काल में भारत में आदिम-अर्धसभ्य जन जातियों में यह प्रथा प्रचलन में थी। बाद में जब मानव वनों पर आश्रित शिकारी, यायावर जीवन छोड़कर बस्तियाँ बसाकर स्थाई रूप से बसा तो धीरे-धीरे यह प्रथा समाप्त हो गई।

विरज का अर्थ यायावर; घुमक्कड़[22] किन्तु सन्यासी नहीं अपितु अरण्यों पर निर्भर, स्थाई रूप से नहीं बसने बाले, अर्थात वे जिन्हें पितृ-पिशाच कहा गया है, ऋक्ष पर्वत (गंगा यमुना दोआबे में शिवालिक पर्वत माला) से निकलने वाली नदी राक्षी (सहारनपुर की मस्कारा नदी > मस्कराक्षी > मकराक्षी/टोटेमिक मकर जनों का प्रदेश) के क्षेत्र में रहने वाले शिकारी व खाद्य संग्राहक टोटेमिक ऋक्ष अथवा रीक्ष, कपि भल्लूक, वानर जन थे, ये ही यक्ष, मतस्य, नाग व हस्ती जन भी थे। इन्हीं में से कुछ ऋक्ष/यक्ष राक्षी नदी के तटों पर बस्तियाँ बसाकर कृषक बने और आर्य कहलाये! अन्य यायावर जनों, जंगली पशुओं से अपने खेतों, बस्तियों की रक्षा का काम भी उन्हें करना पड़ा। उन्होंने छोटी नदियों के किनारे अपेक्षाकृत अधिक उपजाउ क्षेत्रों पर अधिकार किया था और इस क्षेत्र के उन यक्षों को मार भगाया जो इन्हीं के भाई-वृन्द थे। ये रक्ष-राक्षस कहलाये/कृषि या अन्य कर्मों से जीविकापार्जन करते...ये सामाजिक... और सुसंस्कृत बनते गये, और आर्य कहलाये। दूसरी ओर वनों पर आश्रित यायावर निरे टोटेमिक ऋक्ष अथवा यक्ष ही रह गये... इनमें से कुछ वैद्यूत पर्वत क्षेत्र के विद्याधर थे वे जम्बु जमुना नदी क्षेत्र के जाम्बवान भी थे... जाम्बवान का रूपान्तर जम्भ और विरज भी है जिसका अपभ्रंशता का सम्बन्ध वैद्यूत से भी है और उस विजय से भी जिसे बौद्ध साहित्य में पिशाच कहा गया है। जाम्बवान का इस विजय से अत्याधिक साम्य है। जाम्बवान कहीं गदगद का पुत्र है तो कहीं वानरराज शुक की बहन ऋक्षा का। शुक के पुत्र ऋक्ष की स्त्री विरजा की संताने मकरगण हैं तो जाम्बवान को व्याघ्री से पिशाच, मार्जार, जय, जयन्त; बलिबाहु आदि सोलह पुत्र हुऐ। अन्य उल्लेख के अनुसार कश्यप और क्रोधवशा के सोलह पिशाच पुत्र थे क्रोधवशा की पुत्री मृगमंदा पुलह की स्त्री थी पुलह और मृगमन्दा की संताने ऋक्ष वानर थे तथा पुलह और हरिभद्रा की संतानें मार्जार वानर।[23] इससे लगता तो यह है कि या तो वानरराज शुक और (उसकी) पितृकन्या (बहन) ऋक्षा की संतानें जाम्बवान, व्याघ्र (केसरी) और मकर आदि थे या फिर ये वानरराज शुक के पुत्र पुत्री ऋक्ष और ऋक्षा की संतानें थे। कहना गलत नहीं होगा कि ये सब पिशाच या विरज थे और जाम्बवान ही बौद्ध साहित्य का विजय नामक पिशाच है। कहा गया है कि विजय आर्यों के साथ 483 ई0 पू0 में सिंहल आया,

उसकी भाषा संस्कृत थी। इसने वेड्ड़ा लोगों के राजा की पुत्री से विवाह किया।[24] ब्रहमधानों/यातुधानों/ब्रहमराक्षसों का प्रदेश सरस्वती-दृष्द्वती नदियों का दोआबा ब्रहमवैर्वत था भाषा पैचाशी थी और काफी बाद में विकसित हुई लिपि ब्राहमी।

जब वैदिकजनों की बस्तियाँ बसीं तो यातुधान/ब्रहमधान/ब्रहमराक्षस आदि उनकी बस्तियों में तथा बस्तियों के आसपास मंड़राते थे। उनके इस मंड़राने का कारण भोजन या अन्य



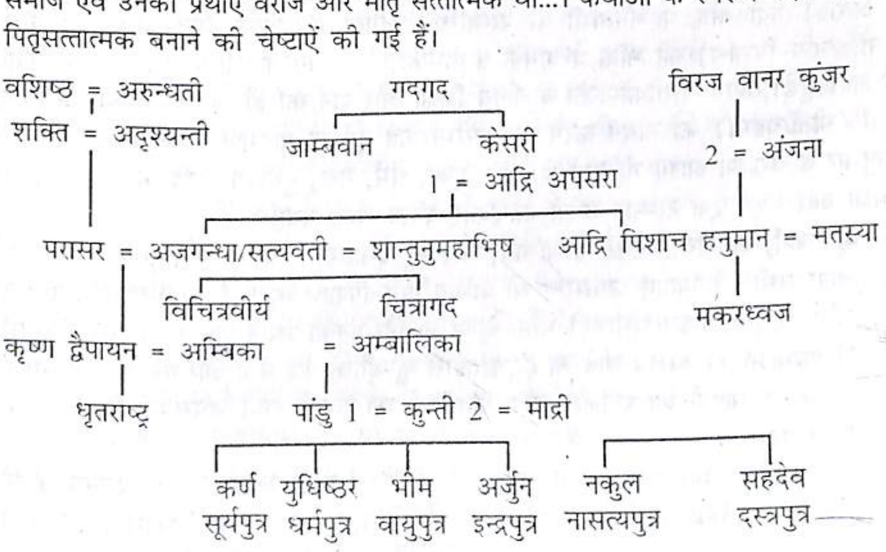
आवश्यकताऐं हीं थीं। शुरू-शुरू में वैदिक जन अपने मृतकों को दफनाते रहे होंगे; ऐसे में क्रव्याद यातुधनों ने भोजन का आसान अवसर देखा; वे मृतकों को उनकी कब्रों से निकाल कर घसीट ले जाते होंगे। समस्या के दूसरे समाधानों का ऐसा ही परिणाम देख कर , अन्तत: वैदिकजनों ने अपने मृतकों को जलाना शुरू कर दिया होगा।

महावंश 6 में कथा है कि बंग देश की राजकुमारी का विवाह एक व्याघ्र से हुआ, इसके एक पुत्र और एक पुत्री हुऐ। पुत्र के जवान होने पर राजकुमारी ने उसके हाथों पति व्याघ्र का वध करवा दिया और पिता के पास लौट आई। राजकुमारी की संतानों ने भटकते हुऐ आपस में विवाह कर लिया। इनकी सोलह संतानों में से विजय क्रूर और निर्दयी था। इसे देश निकाला मिला। यह अपने साथ सात सौ सेवक लेकर पश्चिम में चला गया; वहाँ से यक्षों के देश सीलोन में चला गया। बाद में यह एक धर्मात्मा राजा बन गया। इसने अपने सेवकों के लिये भारत से स्त्रियाँ मंगवाई और देश को रहने लायक बनाया।[25] महावंश की इस कथा का भौगोलिक आधार सहारनपुर-मुजफ्फरनगर जिलों की राक्षी, सांदली और काथा नदियों का प्रदेश है। पौलस्त्य (पलक्षा नदी/ सरस्वती क्षेत्र के पलक्ष जनों-पलंकषों) राक्षसों ने यक्षों-पिशाचों से राक्षी नदी क्षेत्र छीना तो पिशाच (विजय/विद्याधर) राक्षी नदी के किनारे-किनारे पश्चिम में हरियाणा भूमि पर आगे बड़े, किन्तु वहाँ आर्य बस्तियों की अत्याधिक सघनता पाकर पुन: यक्षों के प्रदेश में सांदली नदी क्षेत्र में लोटे। सांदली शब्द सिंथल अथवा सिंहल का अपभ्रंश है जिसे सीलोन कहा गया है।[26] सांदली यमुना की छोटी सी पूर्वी सहायक नदी है... यह राक्षी नदी प्रदेश के रक्षों द्वारा पराजित कर भगाये गये यक्षों का प्रदेश बना...। इस विचार की पुष्टि इस तथ्य से होती है कि वैदिक सुदास पैजवन ने यमुना तट पर यक्षों, शिग्रुओं और अज जनों को पराजित

किया था..., अज और यक्ष, पिशाच ही हैं। जाम्बवान के पिशाच, मार्जार, जय-जयन्त आदि सोलह पुत्र कहे गये हैं। अतः राक्षसों के विरूद्ध जाम्बवान ऋक्ष द्वारा राम का साथ देना प्रासंगिक भी था और राजनैतिक दृष्टि से उचित भी। लंका से लौटते हुऐ राम से विभीषण का कथन-कि सिंहल लंका से आगे किन्तु कुमारी द्वीप से पहले है।[27] स्पष्ट करता है कि राक्षी नदी और कुमारी द्वीप (कान्यकुब्ज/कन्नौज) के बीच का प्रदेश सिंहल था... जबकि वर्तमान लंका के आगे तो समुद्र है।

भाई-बहन के बीच सम्बन्धों की पिशाचों की प्रथा में विवाह का कोई अनुष्ठान अथवा समारोह नहीं होता था । एक ही कुटुम्ब के जवान होते लड़के-लड़कियों के बीच यह सम्बन्ध स्वभाविक ही बन जाता था। आदिम युग से इसी प्रकार के सम्बन्धों की शुरूआत हुई थी। विश्व के कई धर्मों में कौटाम्बिक विवाहों की सामाजिक प्रथा है किन्तु सीधे कौटम्बिक विवाहों को मान्यता नहीं है।

vi. अजगन्धा, मतस्यगन्धा, मछोदरी, काली और सत्यवती ये सभी एक ही स्त्री के नाम हैं यह बिल्ली के मुख वाली पिशाचिनी आद्रि की पुत्री थी। आद्रि वानरराज केसरी की दूसरी स्त्री थी और यमुना तट पर अच्छोद सर में रहती थी। शापवश पिशाचिनी हो गई इस आद्रि अपसरा का पुत्र आद्रि पिशाचों का राजा बना। और पुत्री अजगन्धा/मतस्यगन्धा परासर मुनि के पुत्र कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास की माता बनी। केसरी वानर की दूसरी स्त्री अंजना जो पिछले जन्म (जीवन) में पुंजकस्थला अपसरा थी, का पुत्र हनुमान था। अर्थात हनुमान, शांतुनु महाभिष की रानी सत्यवती (अजगन्धा/मछोदरी) का भाई था और कर्ण, युधिष्ठर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव नामक सभी कुन्ती-माद्री के प्रपौत्र लगे। एक और अजीब तथ्य इस विवेचना से उभरता है कि केसरी की स्त्री आद्रि और अन्जना की तीनों संतानें-अजगन्ध-सत्यवती, आद्रि पिशाच और हनुमान में से एक भी केसरी की औरस संतान नहीं है। इसी प्रकार अम्बिका और अम्बालिका की संतानें धृतराष्ट्र और पांडु तथा कुन्ती और माद्री की छह संतानें कर्ण, युधिष्ठर आदि में से एक भी पिता की औरस संतान नहीं।... सभी कुंड थे! अर्थात पति के जीवित रहते किसी दूसरे पुरूष से उत्पन्न...। दूसरे शब्दों में हनुमान से लेकर पाँड़वों तक का समाज एवं उनकी प्रथाऐं वैराज और मातृ सत्तात्मक थीं...। कथाओं के स्वरूप बदलकर उन्हें पितृसत्तात्मक बनाने की चेष्टाऐं की गई हैं।



मातृ सत्तात्मक समाज से पितृसत्तात्मक समाज की ओर

उस समय का समाज ऐसी कुण्ड् संतानों से भरा पड़ा था। क्योंकि सरस्वती, दृषद्वती आदि नदियों के क्षेत्रों में जब आग्नेय जनों की बस्तियों बसीं तो उस क्षेत्र के वन अरण्यों मे निवास करने वाली पितृ-पिशाच जाति की स्त्रियों ने जीवीकोपार्जन का नया अवसर देखा। वस्त्र, अन्न और आवश्यकता की अन्य वस्तुओं के लिये वे आग्नेय पुरूषों से अनैतिक सम्बन्ध बनाने लगीं। ऐसे सम्बन्धों से उतपन्न संतानों की जिम्मेदारियाँ अक्सर वे पिशाचिनियाँ/अपसराएें नहीं उठातीं थीं, वे उन्हें त्याग देतीं थीं। उनकी जिम्मेदारियाँ उनके आग्नेय पिता भी नहीं उठाते थे। ऐसे में ऐसी संतानें ऋषियों अथवा वैखानसों के आश्रमों में पलतीं-बढ़तीं थीं अत: वे शिक्षित भी हो जाते थे। पिता का नाम न मिल पाने के कारण वे देवताओं के पुत्र कहलाते थे। ऐसे देवपुत्रों से पुराण भरे पडे हैं। आश्रमों में शिक्षित होने और आराध्य देवताओं के लिये प्रार्थनाऐं रचने, यज्ञ पूजा, कर्मकांड आदि में निपुणता के कारण उन्होंने समाज में एक विशिष्ट दर्जा प्राप्त कर लिया, इसी कारण उन्होंने उत्थान का अवसर देखा और उस अवसर का लाभ उठाते हुऐ वे समाज के सर्वोच्च बन गये। बाद के समय में वर्ण व्यवस्था के कड़े नियम लागू हुऐ चूंकि शिक्षित होकर सर्वोच्च वर्ण पा लेने की दिशा में अन्य लोग भी प्रयास करने लगे होंगे; ऐसे प्रयासों को रोकने के लिये वर्ण व्यवस्था, समाज को बाँटकर शासन करने का एक चिर-परिचित फार्मूला बना।

पितृों-पिशाचों को ब्रह्मराक्षस कहा गया है। ऐसे में ब्रह्मराक्षसियों/अपसराओं की आर्य पुरूषों से सन्तान ब्राहमण कहलाई होंगी। पीछे हमने आर्य बस्तियों में या बस्तियों के बाहर पैंठ आदि लगाकर वन-अरण्यों से एकत्रित सामग्री बेचने वाले पणि (फणि > फण > नाग) जाति के विषय में बताया है। ये लोग मातृसत्तात्मक समाज वाले पितृपिशाच जन ही थे। ये लोग दिन में वनों से सामग्री एकत्रित करते अथवा पैंठ आदि लगाते और रात्रि में आर्य बस्तियों में पशु-बरतन, वस्त्र, अन्य सामग्री/औजारों आदि की चोरी चकारी करते थे। इन पणिजनों/नागों/पितृ-पिशाचों की स्त्रियाँ आर्य पुरूषों को फांसकर या उनसे फंस कर वैश्या कर्म करतीं थीं। ऐसे में आर्यपुरूषों की पणि स्त्रियों से उत्पन्न संतानें पणिडू कहलाई होंगी और इसका भी अपभ्रंश पंड़ित अथवा पांडे/पांडेय शब्द रहा होगा। ऋषि शब्द भी टोटेमिक ऋक्ष/राक्षी नदी क्षेत्र के निवासी से सम्बन्धित लगता है। अपने पितृ और मातृ कुल (पणि-नाग-पिशाच) की भाँति वे कृषक व कर्मकारी नहीं बने। किसी प्रकार की उत्पादकता से नहीं जुड़े। अपने जीवीकोपार्जन के लिये भिक्षा और दान को ही आधार बनाया। अथर्वण पदों (गीतों/ब्रहमों) का गायन करने वाले परम्परागत हुऐ तो ब्राहमण कहलाये। पार्जीटर के अनुसार वे वैद्य या ओझा भी होते थे। यज्ञ, पूजा, धर्म, गुरू, पुरोहित आदि कार्य से जुड़कर भिक्षा और दान, एक सम्मान वाला अधिकार बनता चला गया।

कृपाचार्य, शुकदेव, व्यास, द्रोणाचार्य, वशिष्ठ, इन्द्रप्रमति, ऋष्यश्रंग हनुमान, सत्यवती, शकुन्तला सभी की माताऐं अपसराऐं थीं अर्थात पितृ-पिशाच कुल के मातृसत्तात्मक समाज की। पाँचों पाँड़व भी इन सभी की भाँति कुण्ड् हैं और इनका स्थान प्राचीन साहित्य में सबसे उपर है। कथाओं का स्वरूप चाहे जो हो, इतिहास कुण्ड़ों के पक्ष में है और बाद का भी समूचा इतिहास कुण्ड् संतानों का है जिसे कथा कहानियों का सहारा देकर जबरदस्ती पितृसत्तामक बना दिया गया।

जिन मातृसत्तात्मक जनों ने आग्नेय जनों की देखा देखी स्थाई रूप से बसकर उनके नियम, कर्मकांड़, कर्म, देवी देवताओं को अपनाया; असल में तो उनका विकास और निकास

सरस्वती–यमुना नदी क्षेत्र में निवास करने वाले टोटेमिक मातृसत्तात्मक समाज से ही हुआ था। क्रव्याद, यायावर, शिकारी, खद्य संग्राहक पशुपालक मातृसत्तात्मक जन समाज; अंगिरा जनों की देखा देखी स्थाई रूप से बस कर कृषक और कामगार होने लगे तो उस घर के साथ जीवन भर बंधे रहने वाले परिवार अस्तित्व में आये। उसी घर परिवार और उसकी धन सम्पत्ति–पशु आदि की रक्षा हेतु आवश्यक बन गया था कि पहले तो स्त्री और पुरूष एक दूसरे के साथ मजबूती से जीवन भर के लिये बंधें और अपने साथी, घर परिवार के प्रति जीवन भर वफादार भी रहे... इसके लिये स्त्री–पुरूष के जोड़े माता–पिता की मर्जी से और समाज के सामने बंधने लगे... बस्ती में बसकर, कृषक या कामगार बन कर इस प्रकार की विवाह व्यवस्था का अवसर भी था, कि पुरूष बाहर के अथवा जीवीकोपार्जन के कार्य को करे और स्त्री घर में रहकर बच्चों को संभाले, घर की देख रेख और रक्षा करें। इस व्यवस्था ने पुरूष को प्रधान बना दिया और ब्रहमराक्षसों का मातृसत्तात्मक ढाँचा पितृसत्तात्मक बन गया।

पुराण या प्राचीन साहित्य में हालांकि मातृसत्तात्मक जैसी कोई बात नहीं लिखी गई फिर भी इसके संकेत हैं कि एक समय स्त्री स्वतंत्र थी। स्त्री इसलिये भी स्वतंत्र थी क्योंकि वनों पर आश्रित मानव जब शिकारी, खाद्य संग्राहक था तो इन कार्यो में नारी की भूमिका पुरूष के बराबर थी। यह हो सकता है कि शिकार में यदि पुरूष की भूमिका अच्छी थी तो खाद्यसंग्रह में नारी की भूमिका अच्छी थी, किन्तु फिर भी दौनों ही दौनों के काम करने में सक्षम थे। ऐसे में कोई एक, दूसरे का प्रभुत्व क्यों स्वीकार करेगा। मातृत्व के समय स्त्री के भरणपोषण की जिम्मेदारी सहजवृति से पुरूषों की थी। ऐसा प्रतीत होता है कि उस युग और वातावरण में अपने लिए पुरुष चुनने का अधिकार स्त्री का था। यह सर्दियां शुरू होने से पूर्व एक वर्ष के लिए जोड़ा बनाने जैसा था। उस समय वह दूसरी स्त्री से अपने पुरुष की अदला–बदली भी करती थी। यह प्रथा आज भी करवा चौथ पर स्त्रियों द्वारा आपस में करवा बदलने के रूप में बची हुई है।

स्त्री पुरूष के जोड़े कुछ एक अपवादों को छोड़कर अधिकतर जीवन भर के लिये बनते थे। स्त्री को कोई दूसरा पुरूष मिल जाने पर वे अलग–अलग भी हो सकते थे और फिर कुछ समय बाद पुनः मिलकर जोड़ा बना सकते थे। पुरूरूवा उर्वशी की कथा हमें यही संकेत देती है। अपने लिये पुरूष चुनने का अधिकार स्त्री का ही होता था; अन्य जीवों के नरों की भाँति पुरूष केवल लुभाने का प्रयास कर सकता था। पुरूरूवा उर्वशी को छोड़ना नहीं चाहता था और उर्वशी के भीतर पितरों–पिशाचों के स्वतन्त्र और स्वच्छन्द जीवन जीने की छटपटाहट है। वह नहीं चाहती कि उसका पुरूष पुरूरूवा पड़ोसी जनों की स्थाई बस्तियों की देखा–देखी अपना घर बनाये कृषि या अन्य कार्य करे। उसकी दृष्टि में यह एक बन्धनयुक्त जीवन था जबकि पुरूरूवा ऐसे जीवन के प्रति लालायित था जो कि संगठित, सुसंस्कृत, सामाजिक और स्थाई बस्तियों वाला है। स्थाई–कर्मकार जीवन, यायावर खाद्यसंग्राहक व खतरनाक शिकारी जीवन से कहीं अधिक अच्छा था। वह आर्यों द्वारा अग्नि के तीन रूपों में प्रयोग (भोजन पकाने ; धातुकर्म करने; यज्ञ आदि) को आर्यो से सीख–समझ कर सम्भवतः पितरों–पिशाचों को सिखाता रहा होगा। कथन है कि वह प्रत्येक अमावस्या को पितरों–पिशाचों से मिला करता था।

पितरों पिशाचों के मातृसत्तात्मक समाज में सम्भवतः विवाह थे ही नहीं, वहाँ सीधे कौटाम्बिक विवाह की प्रथा थी। यह आवश्यक भी नहीं था, किन्तु एक ही कुटुम्ब–कबीले के साथ–साथ जवान होते भाई बहनों के जोड़े स्वयं ही बन जाते थे। यहाँ आर्यो की विवाह व्यवस्था की भाँति आपस में अग्नि के समक्ष वचन लेनें और देने से कहीं अधिक आपसी विश्वास की

बात थी और इस विश्वास का आधार यही था कि उन्होंने बचपन से ही एक दूसरे की आदतों, आवश्यकताओं, गुणों, सामर्थ्यों आदि को जाना, जाँचा और परखा है। किन्हीं दो कबीलों के स्त्री पुरूष के बीच सम्बन्ध उनकी दृष्टि में उतना विश्वसनीय और टिकाउ नहीं हो सकता था और इसीलिये उनके पास कोई कारण था भी नहीं था कि किसी गैर पर विश्वास किया जाये।

कौटाम्बिक विवाह की प्रथा, यायावर-घुमन्तु; पशुपालक, खाद्य संग्राहक एंव शिकारी जन कबीलों के लिये एक उचित प्रथा थी-अरब और मुस्लिम जन समाज में यह अब भी है। भोजन-पानी अथवा जीवन यापन की अन्य आवश्यकताओं की तलाश में मरूद्दान-मरूद्दान भटकते कबीलों में, जीवन में फिर दोबारा कभी एक स्थान पर लौटना असम्भव ही होता था। ऐसे में दूसरे कबीले के परिवार में बेटी नहीं दी जा सकती। अपनी बेटी सदा अपनी आँखों के सामने रहे, अर्थात उसकी सामाजिक सुरक्षा के लिये उसका सम्बन्ध अपने ही कुटुम्ब में आवश्यक था।... भाषा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज; धर्म प्रत्येक कबीले में अलग-अलग होना भी ऐसे सम्बन्धों के लिये दूसरे कारण थे। निकटवर्ती दो कबीलों में मित्रतावत सम्बन्ध अपवाद रूप में ही कहीं-कहीं होते भी हों तो भी अधिकतर तो टकराव की स्थितियाँ बनी ही रहतीं थीं। खाद्य-संग्रह, शिकार; पशुपालन आदि में एक दूसरे की सीमाओं का अतिक्रमण, चाहे वह जान-बूझकर हो या अनजाने में, एक आम बात थी। अतः निष्कर्ष यही निकलता है कि कौटाम्बिक विवाह उनके लिये एक मात्र और आसान उपाय था। और जब मानव बस्तियाँ बसाकर रहने लगा; पशुपालन के साथ-साथ कृषि व धातुकर्म तथा अन्य धन्धों-उद्योगों में उतरा तो पिछली सभी समस्याओं के विपरीत...समाज, पडोसी एंव दूसरे ग्राम गोत्र से आपसी विश्वास बनाने; संगठित होने; एक दूसरे की सहायता-रक्षा में काम आने, दस्युओं-लुटेरों, आक्रमणकारियों से निपटने आदि के लिये ....कौटाम्बिक विवाह से हटकर ग्राम समाज के स्तर पर आना पड़ा। दूसरे कबीलों ग्राम-गोत्रों से मित्रतावत सम्बन्ध बनाने के लिये भी अब दूसरे प्रकार की विवाह व्यवस्था आवश्यक थी और इसके लिये आवश्यक हुआ कि स्त्री पुरूष के सम्बन्ध, ग्राम-समाज के सामने, अग्नि-चाँद, तारों के साक्ष्य में जुड़ें; विशेष अनुष्ठान या समारोह हों; मन्त्रों के उच्चारण हों। दो ग्राम-गोत्रों/कबीलों में सम्बन्ध के लिये अथवा पराजय या सन्धि के तहत बेटी को दूसरे कबीले, जाति या राजा से ब्याह देने की प्रथा आदिम युग से आज तक चली आ रही है। ऐसा करके कई बार युद्धों से बचा गया है तो कई बार पराजय के बाद होने वाली दुर्गति से।

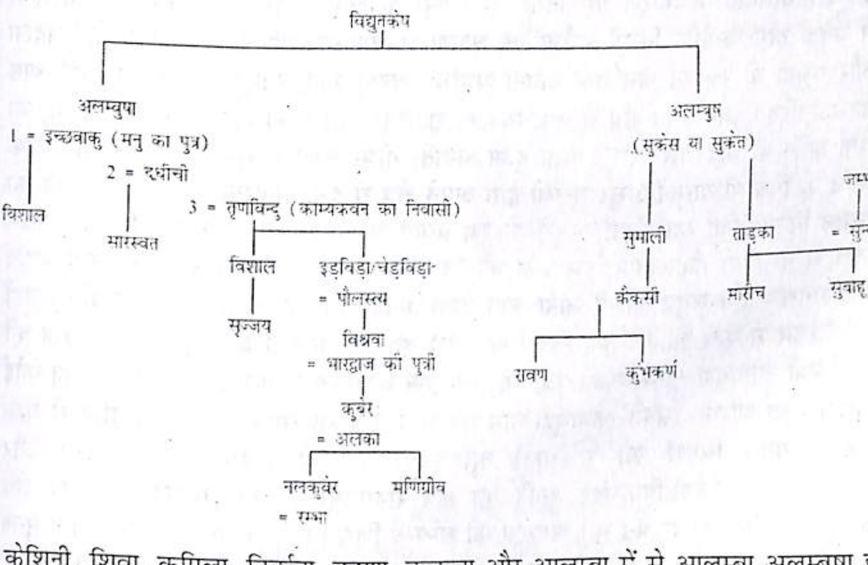
भगवान सिंह का मानना है कि आदिम अवस्था में जीविका आहार संग्रह पर निर्भर थी। तब समाज मातृप्रधान था, मनुष्य ने आखेट करना शुरू किया तो समाज पितृ प्रधान हो गया; फिर कृषि के आदिम प्रयोग स्त्रियों द्वारा करने के कारण समाज फिर मातृ प्रधान हो गया। एक बार जब उन्नत कृषि व हल-बैल का प्रयोग हुआ तो समाज पितृसत्तात्मक बन गया-[29] विद्वानों का यह विचार कि समाज को क्रूरता के साथ पितृसत्तात्मक बनाया गया।[30] ऐसे कोई संकेत नहीं, उल्टे कई प्रधान व्यक्तियों के नाम मातृकुल या माता से जुड़े मिलते हैं-मामतेय, कौंतेय, पार्थ, सौमित्र, उर्वशी पुत्र; सुवर्णाक्षी पुत्र।[31] क्रूरता शब्द का प्रयोग भारतीय समाज में होने वाले बालिका वध; बाल विवाह; सती प्रथा जैसी विकृतियों के कारण किया गया है, जबकि स्वयं ऐहरेनफैल्स ने स्वीकार किया है कि पितृसत्तात्मक होने के बावजूद भी वैदिक आर्य, महिलाओं को अपमानित करने वाली सती प्रथा से मुक्त थे; वहाँ विधवा विवाह की अनुमति थी।[32]

राम से महाभारत के युद्ध तक कहीं आठ दस पीढ़ीयों का अन्तराल है तो कहीं इससे भी अधिक[33] किन्तु यदि मातृसत्तात्मक तरीके से उपर्युक्त वंशावली देखे तो महाभारत युद्ध लड़नें

वाले भीम और अर्जुन के परदादा हनुमान थे...! और महाभारत युद्ध में इस बात का उल्लेख है भी कि वह अत्यन्त वृद्ध अवस्था में भीम से मिले थे। यह मात्र संयोग नहीं है कि अर्जुन के रथ पर हनुमान या उसका कोई स्मृतिचिन्ह विद्यमान था बल्कि अर्जुन और हनुमान के बीच प्रपौत्र और पितामह का सम्बन्ध था। और यदि हनुमान महाभारत के युद्ध के समय जीवित था तो राम और महाभारत के बीच बहुत अधिक अन्तर नहीं रहा होगा। हमें महाभारत के समय में राम के काल के जाम्बवान, द्विविद,[34] परसुराम और बाणासुर भी जीवित मिल जाते हैं। इसके अतिरिक्त विभाण्ड्क ऋषि के पुत्र ऋष्यश्रंग जिन्होंने दशरथ का पुत्रयेष्टि यज्ञ करवाया था, का पुत्र अलम्बुष महाभारत के युद्ध में मारा गया था।[35]

अलम्बुष-अलम्बुषा

महाभारत के अनुसार विद्युतकेष के पुत्र उस सुकेत का एक नाम अलम्बुष भी था जिसके पुत्र सुमाली की पुत्री कैकसी; रावण की माता थी। सुकेत/सुकेष या अलम्बुष की पुत्री ताड़का थी जो जम्भ के पुत्र सुन्द यक्ष की स्त्री थी। वह सुबाहू तथा मारीच की माता हुई। सुकेत अलम्बुष का उस अपसरा अलम्बुषा से सम्बन्ध हो सकता है जिसकी पुत्री इड़विड़ा पौलस्त्य ऋषि की स्त्री थी। सुकेत अलम्बुष और अपसरा अलम्बुषा का राक्षसों से सम्बन्ध और विभाण्ड्क ऋषि के पौत्र तथा ऋष्यश्रंग और शान्ता के पुत्र अलम्बुष को महाभारत में राक्षस कहा जाना तीनों के बीच सम्बन्ध को बताता है। ऐसा लगता है कि वैद्यूत पर्वत पर वैभ्राज वन के निवासियों का द्योतक शब्द ही विभान्ड्क है वरना इनका पौत्र और दशरथ की पुत्री शान्ता (जो उन्होंने अंगनरेश रोमपाद को गोद दी थी) का पुत्र अलम्बुष राक्षस कैसे हो सकता है। रक्ष और यक्ष जन खशा के पुत्र थे रक्खश/यक्खश खशा और कश्यप की सात पुत्रियों



केशिनी, शिवा, कपिला, निर्ऋृता, कृष्णा, उत्कचा और आलम्बा में से आलम्बा अलम्बुषा हो सकती है जिसका साम्य रम्भा से प्रतीत होता है इसी प्रकार महाभारत युद्ध में मारे गये अलम्बुष के नाना के नाम अंगनरेश रोमपाद में भी रम्भा शब्द की ध्वनि है। अलम्बुषा अपसरा के पुत्र विशाल का पुत्र सृज्जय है जिस का शाब्दिक अर्थ काला भैंसा होता है, रम्भा अलम्बुषा के नाती कुबेर के पुत्र नलकुबेर की स्त्री है। तात्पर्य यह है कि अलम्बुष और अलम्बुषा नाम राक्षसों

के हों या वैभ्राज वन के निवासी यातुधानों के या फिर अपसराओं के, ये रम्भ अर्थात रम्भाने वाले महिष (टोटेमिक जनों) के द्योतक हैं। वंशावली में विश्रवा और कैकसी के सम्बन्ध के हिसाब से अलम्बुष-अलम्बुषा भाई-बहन अधिक प्रतीत होते हैं, और वे यातुधान थे क्योंकि रावण का नाना सुमाली, यातुधान हेती का वंशज था रामायण में रावण को **''यातुधानस्य दौहित्र''** कहा गया है।[36]

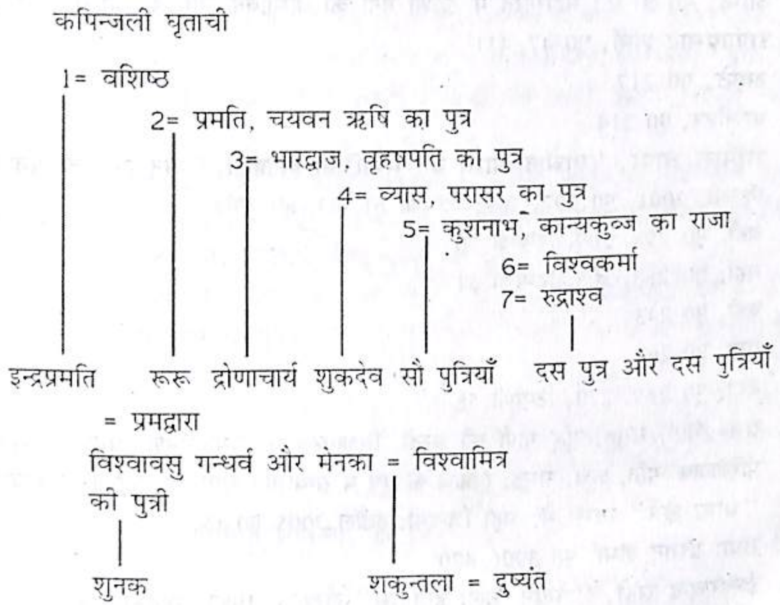
अगस्त्य

मलय पर्वत के निवासी अगस्त्य से बलराम मिलने गये थे और अगस्त्य स्वयं भी कृष्ण से मिलने स्यमंतपंचक आये थे[37] अगस्त्य को पुलस्त्य और हविभ्रू का पुत्र भी कहा गया है इस कारण यह राक्षस हुआ। कहा तो यह जाता है कि यह अगस्त्य मित्रावरूण और उर्वशी का पुत्र न होकर कोई दूसरा अगस्त्य था। पुराणों में इल्वल का अतिथि बनकर वातापी को पचा जाना, नहुष को अजगर होने का शाप देना; तारक आदि दूसरे दैत्यों के कारण समुद्र को पी जाना; विन्ध्य पर्वत को पार करना; विदर्भ की लोपामुद्रा से विवाह करना, लंका में बसना, (राम अगस्त्य को दण्ड़क वन में मिले थे और अगस्त्य ने राम को लंका में देखा- बाल्मीकी0) [38] मलयध्वज पाँडय की पुत्री धृतवृता से विवाह करना, इन्द्रधुम्न पाण्ड़ेय को शाप से हाथी बना देना आदि मिथक कुछ इस प्रकार जुड़े हैं कि दोनों अगस्त्य एक ही माने जा सकते हैं। अगस्त्य भी वशिष्ठ की भाँति आदि से अन्त तक प्राचीन भारतीय साहित्य संस्कृति, धर्म पर छा जाते हैं। उत्तर भारत के प्राचीन इतिहास में जो स्थान वशिष्ठ का है वही स्थान दक्षिण भारत में अगस्त्य का है।

अगस्त्य द्वारा जिस समुद्र को पीने का वर्णन है, वह समुद्र अवश्य सरस्वती-यमुना नदी की अनियमितता के कारण यमुनानगर, सहारनपुर के क्षेत्र में शिवालिक पर्वतों की तलहटी में बनता होगा क्योंकि किसी भूवैज्ञानिक कारण से जब सरस्वती नदी ने अपना मार्ग बदला और यमुना के रूप में जब तक अपना समुचित बहाव मार्ग बना पाई, तब तक वर्षा-बाढ़ का अतिरिक्त जल उक्त क्षेत्र में एक विशाल सागरनुमा झील का निर्माण कर देता होगा, जो वर्षा काल के बाद धीरे-धीरे उतरेता हुआ अन्ततः गीष्म काल में सूख जाता था। शिवालिक पर्वत के निवासी तारकों/असुर राक्षसों द्वारा अपने क्षेत्र से इस अतिरिक्त जल की निकासी का प्रयत्न किया जाता रहा होगा; असुरों के इस प्रयत्न से अवश्य ही अगस्त्य ऋषि का आश्रम जल से प्रभावित होता होगा। इस जल की निकासी के लिये अगस्त्य द्वारा किये गये प्रयत्न को अगस्त्य द्वारा समुद्र को पी जाना कहा गया। अवश्य ही यह घटना काथा नदी क्षेत्र (जहाँ मेरे विचार से कृथ-कैशिक का विदर्भ क्षेत्र था) के उत्तर में घटी होगी। कृथ विदर्भ क्षेत्र की कोई स्त्री लोपामुद्रा अगस्त्य की स्त्री थी तभी उसे वैदर्भी कहा गया है। विदर्भ नाम का कोई यादव राजा था या उसकी लोपामुद्रा नाम की कोई पुत्री थी समकालीनता की दृष्टि से ऐसा नहीं लगता। विदर्भ की राजधानी कुण्ड़िनपुर-कुण्ड़ती स्त्रियों का क्षेत्र था और कुंभ/निकुंभ/कुंभकर्ण/निकुभंला आदि का क्षेत्र सहारनपुर ही था। सांदली नदी का क्षेत्र शुण्ड़ों-सुन्दों का सुन्दर वन था। अगस्त्य का सम्बन्ध जिस विदर्भ से था, वह मूंज अथवा मुन्ज नामक घास की बहुलता वाला सहारनपुर-मुजफ्फरनगर का काथा नदी वाला क्षेत्र था।[39] अगस्त्य की मुलाकात विदर्भ की राजकुमारी लोपामुद्रा से जिस सिंध नदी के तट पर वर्णित है वह सिंध नदी पार्जीटर के अनुमानानुसार गंगा-यमुना दोआबा की काली सिंध नदी ही थी[40]

vii. कपिंजली घृताची और अरणी एक ही हैं क्योंकि कपिंजली में ''अंजली'' और अरणी का शाब्दिक एक ही होता है ''चुल्लू''। वरूण जल का देवता था। कुंभ और कुंड़

जल से सम्बन्धित हैं। कुंभज या कुंभयोनी-अगस्त्य का नाम है।... इनके विषय में जल से सम्बन्धित एक मिथक भी है कि एक बार ये समुद्र को पी गये थे। कुण्ड़िन या कुण्ड़िनेय-वशिष्ठ के नाम है...। जल को ग्रहण करने में सहायक अंजली... और मछोदरी/मतस्त्यगंधा जिससे परासर ने सम्बन्ध बनाया था--मतस्या जल से सम्बन्धित है...कहीं ऐसा तो नहीं कि ये सभी मतस्य टोटेमिक जाति से सम्बन्ध रखतें हों। किन्तु कपि, अज, पिशाच, नाग, हस्ती भी इनसे अलग नहीं थे। चातकी पक्षी का शाब्दिक अर्थ रखने वाली कपिन्जली[41] नाम कपि (वानर) से भी सम्बन्धित है ...। कपि दो कुष्मांड़ पिशाचों-अज और शण्ड़ के पिता का नाम भी है।[42] अपत्तन नामक सिद्ध गन्धर्वो के गण कपिंजल कहाते थे, जिन के राजा का नाम भी कपिंजल था [43] कपिन्जली घृताची जैसा कि नाम से ही विदित होता है कपि-वानर समाज की घृत सेवन करने वाली अर्थात पशुपालक समाज की, किन्तु अपसरा थी। पौराणिक साहित्य में कपिंजली घृताची द्वारा सात पुरूषों से संतानें उत्पन्न करने का उल्लेख है।



पुराणों में कुशद्वीप के चारों ओर घृत समुद्र का वर्णण है। कुशद्वीप कौशिकी नदी का क्षेत्र था यहाँ निवास करने वाले पशुपालक जाति जो पशुओं के दुग्ध/घृत आदि उत्पादों पर निर्भर थी, की स्त्रियों को घृताची कहा गया होगा किन्तु जीविकोपार्जन हेतु वे आर्य बस्तियों में जाकर अपसरा कर्म करतीं रहीं होंगी।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. ई० डबल्यू ० हापकिन्स, ''ऐपिक मैथोलोजी,'' दिल्ली, 1968, पृ0 44
2. पार्जीटर, ''ऐ ई० हि० ट्रे०,'' दिल्ली, 1997, पृ0 209
3. हापकिन्स, पृ0 44
4. पार्जीटर, पृ0 235; पाद टिप्पणी-8

5. **पार्जीटर**, पृ0 241-42
6. **आप्टे, "संस्कृत हिन्दी कोष"** दिल्ली, 1989, पृ0 283,
7. **पार्जीटर**, पृ0 205, 214,
8. **आप्टे**, पृ0 286
9. वही। अगस्त्य के अन्य नाम कुंभसम्भव, घटोदभव, मैत्रावरूणी, और्वशेय- **राणाप्रसाद शर्मा "पौराणिक कोष"** वाराणसी, 1986, पृ0 8
10. कई स्थानों पर कृप और कृपी के जन्म की कथा में जनपदी अपसरा का नाम आता है- **आप्टे**, पृ0 298
11. कुछ के अनुसार कृष्या द्वैपायन की स्त्री अरणी और उनके पुत्र शुकदेव के अन्य नाम व्यासकी, अरणेय, कृष्णी-**पार्जीटर**, पृ0 213
12. **आप्टे**, पृ0 217 ; महाभारत में उर्वशी गंगा का वास्तविक नाम है- **पार्जीटर**, पृ0 135
13. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 47, 411
14. **आप्टे**, पृ0 217
15. **पार्जीटर**, पृ0 214
16. **रोमिला थापर, "प्राचीन भारत का समाजिक इतिहास," अनु आदित्य प्रताप सिंह**, दिल्ली, 2001, पृ0 297, 309; टिप्पणी 61, 63, 69 आदि
17. वही, पृ0 298, 309, टिप्पणी 70
18. वही, पृ0 258, 308, टिप्पणी 51
19. वही, पृ0 243
20. वही, पृ0 267
21. वही, पृ0 269, 270, टिप्पणी 58
22. व्रज= मार्ग, समूह, झुंड़ गोपों की बस्ती, विश्रामस्थल; व्रज्या=गमण, भ्रमण: व्राजक=यात्री; परिव्राजक=गति, कूच; समूह: (आज के युग में सन्यासी) चारों ओर घूमना- **अरविंद कुमार "भाषा क्षेत्रे"** स्तम्भ में, अहा जिन्दगी, अप्रैल 2005 पृ0 68
23. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 390(420
24. **ईश्वरचन्द्र राही, "लेखन कला इतिहास"** लखनउ, 1983, भाग-1(पृ0 216
25. **रोमिला थापर**, पृ0 272 और बोध श्रौतों में पुलिन्दों को सीलोन का निवासी बताया गया है इसका मूल राक्षसी कुवेनि के साथ विजय के विवाह में मिलता है- पृ0 157
26. अलबेरूनी ने द्वीपों और समुद्रों की व्यवस्था के अर्न्तगत लिखा है कि **"सिंथल द्वीप जिसे हम सरान द्वीप कहते हैं" भारत अलबेरूनी, अनु० नूरनबी अब्बासी**, पृ0 118
27. **काव्य मीमांसा; अनु केदारनाथ सारस्वत**; पृ0 312
28. **पार्जीटर**, पृ0 319
29. **भगवानसिंह "भारतीय समाज की निर्मिती"** दिल्ली, 2004, पृ0 63-64
30. वही, पृ0 63
31. वही, पृ0 96
32. वही, पृ0 63
33. **ड़ी० एस० त्रिवेदा, "इण्ड़ियन क्रोनोलोजी"** बम्वई 1963 पृ0 10 के अनुसार रावण की

मृत्यु 4301 ई0 पू0 में और पृ0 13 के अनुसार महाभारत युद्ध 3137 ई0 पू0 हुआ। इस प्रकार दोनों घटनाओं में 1164 वर्षों का अन्तर है। प्रति पीढ़ी 25 वर्ष के हिसाब से लगभग 46 पीढ़ीयों बाद। पुराणों में मगध और अयोध्या आदि के राजाओं की वंशावलियों में यह अन्तर कुछ कम या अधिक हो सकता है किन्तु मातृ पक्ष की वंशावलियां मात्र तीन पीढ़ीयों का अन्तर बताती है। विभिन्न विद्वानों ने महाभारत युद्ध के लिये अलग-अलग तिथियॉ दी हैं-

पी० सी० सेन गुप्ता ने 3102 ई0 पू0; **एस० सी० विद्याभूषण** 1922 ई0 पू0;
के० पी० जायसवाल ने 1424 ई0 पू0; **एच. एच. बिल्सन** 1370 ई पू0;
ए० एस० अल्टेकर ने 1400 ई0 पू0; **बेन्टले** 575 ई0 पू0;
सत्यवृत संम्श्रमी 2400 ई0 पू0; **कल्हन** 2448 ई0 पू0;
जर्नल आफ इण्ड़ियन हिस्ट्री मद्रास 5000 ई0 पू0

पार्जीटर ने इसका समय 950 ई0 पू0 दिया है जो बहुत अधिक मान्य है – ''ऐंशेन्ट इंडिया,'' न0 10-11 एक्सकैविऐशन एट हस्तिनापुर एण्ड़ अदर एक्सप्लोरेशन, पृ0 149; **ड़ी० एस त्रिवेदा**, पृ0 13; **स्वामी विद्यानन्द सरस्वती**, **''आर्यो का आदि देश''** , बम्बई 1989 पृ0-31-32

34. अश्विनी कुमारों के पुत्र मैन्द्र और द्विविद दो भाई थे। द्विविद सुग्रीव का मंत्री और कृष्ण के समय में नरकासुर का मित्र था। द्विविद ने बलराम की राजधानी कुशस्थली उजाड़ी थी जिस कारण बलराम ने उसे मारा- **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 243
35. अलम्वुष मेद नामक एक पौधो का नाम भी होता है- **डा० सावित्री सक्सेना ''द ज्योग्राफिकल सर्वे आफ दा पुराणाज''** दिल्ली, 1995, पृ0 572; **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 34,72
36. **हॉपकिन्स**, पृ0 44
37. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 9
38. **प्रधान**, पृ0 155
39. दर्भ=मूज घास- **डा० सावित्री सक्सैना**, पृ0 573
40. **पार्जीटर**, पृ0 240
41. **डा० सावित्री सक्सैना**, पृ0 545
42. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 83
43. वही, पृ0

अध्याय-11

सदादेनी-मारकण्ड़ा क्षेत्र के म्यूर जन-हिरण्यदैत्य, मरूदत् गण और वृष्णि यादव

रामायण और पुराणों में हेती-प्रहेती प्रथम राक्षस राजा वर्णित हैं। वे हिरण्य दैत्यों में हिरण्याक्ष कुल के हैं। स्वर्ग की एक अपसरा को मोहित करने के लिये दो गन्धर्व हेती और प्रहेती म्यूर और मुर्गे के स्वर में बोले थे तो इन्द्र ने उन्हें शाप से म्यूर और मुर्गा बना दिया; मृकन्ड मुनि के आश्रम में आकर वे इस शाप से छूटे।[1] ऐसा लगता है कि प्रहेती वे ही जन है जिन्हें प्रेत कहा गया है। प्रहेती यतुधान का पुत्र था[2] यतुधान सुरसा और कश्यप के बारह दानव पुत्र थे जो राक्षसों के साथ रहते हुऐ भी राक्षसों से भिन्न थे।[3] किन्तु वे राक्षसों से हेय समझे जाते थे। ऐसा ऋग्वेद 7.104.15-25 में वशिष्ठ के इस कथन से प्रतीत होता है[4] -

''यदि मैं यतुधान होऊँ तो तुरन्त मर जाऊँ''

हेती का शाब्दिक अर्थ है विद्युत या बिजली। यही बिजली शब्द ब्रज में है। हेती के साथ प्रहेती का उच्चारण वैसे ही है जैसे बिजली-विजली, पानी-वानी, नर-वर। क्योंकि हेती का अर्थ विद्युत है और प्रहेती वैद्यूत का निवासी[5] प्रहेती का पुत्र ब्रहमधाता वैद्यूत पर्वत पर वैभ्राज वन के निवासी था, यहाँ सरयू का उदगम था।[6] यह सरयू वेदवती < वैद्यूती अर्थात सदादेनी मारकण्ड़ा (सौद्युम्नि) ही थी। सरस्वती नदी का मैदानों में प्रवेश करने का स्थान आदि बद्री में बद्री शब्द वैद्यूती और बिजली का अपभ्रंश प्रतीत होता है। वैद्यूत शाल्मली द्वीप का एक भाग था और शाल्मली द्वीप, शमी वृक्षों की बहुलता के कारण भी सप्तद्वीपों में से एक का नाम था, यह जिन शाल्वजनों का प्रदेश था वे शाल्व जन ही वैद्यूत अथवा वैभ्राज जन थे क्योंकि शाल्मली का अर्थ बिजली होता है। शिवालिक पर्वत माला का जितना साम्य शिव शब्द से है उतना ही शाल्मलीसे भी प्रतीत होता है।

कुछ साम्यों के आधार पर हेती-प्रहेती का केवल एक ही जोड़ा होने का आभाष होता है। और वे भी म्यूर-मुर्गा टोटेम वाले अज-अहि, गज-हस्ती जनों का व्यक्तिवाचक नाम हैं। एक ही स्थान की परस्पर विरोधी जातियों के किसी घटनाक्रम से अलग-अलग दो, तीन, चार या फिर और भी कई मिथकों का विकास हुआ द्याता-विद्याता ; जय-विजय ; हेती-प्रहेती ; हस्त-प्रहस्त ; देवहूती (?) ; प्रसूती-प्रचेता ; हरि (?) - प्रहरी ; दिति-अदिति ; अस्ति-प्राप्ति ; यति-ययाति आदि।

द्याता-विद्याता

या धाता-विधाता का मिथक कथित आर्यो के देवतन्त्र से सम्बन्धित है तो इसका अनार्य रूपान्तर जय-विजय का मिथक है। विधाता/विद्याता तो शिवालिक पर्वतमाला (मैनाक[7]) के सदादेनी मारकण्ड़ा नदी के उदगम् सौद्युम्नि या वैद्यूत पर्वत का क्षेत्र था और द्याता क्षेत्र में आ बसे अग्नि पूजक अंगिरा मानव जन मान्धाता कहलाये...। यहीं आकर मान्धाता जनों का संघर्ष राका अथवा राक्षी नदी क्षेत्र के राक्षसों से हुआ। पुराणों में कूहू, सिनीवाली, राका और अनुमति अंगिरा ऋषि की पुत्रियाँ हैं जो द्याता को ब्याही थीं।[8] द्याता क्षेत्र में बसे आर्य-अनार्य; सभ्य-अर्धसभ्य; बस्तीजन और वनचर आदि सभी जातियों का भाग्य लेखन विधाता (क्षेत्र) के हाथों में था क्योंकि नदियाँ वहीं से निकलतीं थीं; भूवैज्ञानिक दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र में नदी कब, किस मार्ग से बहने लगेगी। इसी पर द्याता क्षेत्र के जनों-जातियों का भाग्य निर्भर

था। द्याता-विद्याता ; जय-विजय का एकदम सम किन्तु मिश्रित मिथक दिति और अदिति का है कि दिति (द्याता क्षेत्र) की संतानें दैत्य हुईं... हिरण्यकश्यप, हिरण्याक्ष -- हेती-प्रहेती ; बज्रांग, अन्धक, बाणासुर अर्थात म्यूर-मुर्गा टोटेम वाले जन ; और अदिति की संतानें आदित्य अर्थात देवता या (भाग्य) विधाता कहलाईं।

जय-विजय

जय विजय का मिथक उपर्युक्त समान क्षेत्र के उन अर्धसभ्य, वनचरों का है जो बस्तियाँ बसा कर स्थाई रूप से नहीं बसे ; कृषि व धातुकर्म या फिर अन्य सभ्य समाज की समझी जाने वाली गतिविधियों से नहीं जुड़कर; वनों पर आश्रित रहे, अग्नि के प्रयोगों से अन्जान व क्रव्याद रहे... अर्थात कच्चा माँस खाने वाले। वनों में गहरे घुसकर शिकार करने वाले प्राचीन, आदिम, अर्धसभ्य, जंगली जानवरों का शिकार अधिक बनते थे। अतः कुछ कबीले-अर्धसभ्य, वनचर जीवन छोड़कर बस्तियों के बाहर किन्तु आसपास मौकों की तलाश में मंडराते रहते थे। वे मारकर खाते या मृतकों को खाने वाले अपमार्जक थे... पर क्रव्याद अवश्य थें, तो भी किसी व्यक्ति को मार कर खा जाने की घटना अवश्य हजारों में एक ही होती होगी...। किन्तु वही एक घटना उन्हें आदमखोर के रूप में बदनाम करने के लिये काफी रही होगी। प्राचीन साहित्य में विजय पिशाच है, वह सिंहल का राजा है, बाद में वह एक धर्मात्मा राजा बन जाता है उसकी स्त्री उसकी जुड़वाँ बहन है।

राम समकालीन जाम्बवान के व्याघ्री से पिशाच, मार्जार विजय आदि सोलह पुत्र हुऐ। दोनों मिथकों का तात्पर्य एक ही है, यह यमुना नदी की सहायक काथा के उत्तर में सांदली नदी क्षेत्र का घटनाक्रम है। सांदली/सिंथल/सिंहल में साम्य है। पार्जीटर का पिशाचों को ठेठ शैतान और चुड़ैल मानना गलत है। वह आर्यों के मुकाबले किन्तु उनके समकालीन, उनकी पड़ोसी अर्धसभ्य जाति थी। अनार्यों के भी कई प्रकार थे। वे जो बस्तियों से दूर रहते ; सामना होने पर भागकर छिप जाते ; पशुओं को उठा कर ले जाने वाले ; चोरी चकारी करने वाले मौका परस्त ; मांगकर खाने वाले, आर्यों की बस्तियों-खेतों में काम करके आजीविका कमाने वाले और वनों से संग्रहित, मछली, शिकार आदि की पैंठ लगाने वाले। इनमें से बहुत से धीरे-धीरे व आर्यों की देखा देखी अर्धसभ्य से सभ्य बनते गये, किन्तु पहले वालों की बनिस्वत अनार्य ही कहलाते रहे... ये पिशाच, गन्धर्व, राक्षस, मरूदत, नाग, विरज, विद्याधर, वसु, हस्ती, दैत्य कपि, मार्जार आदि थे।

जय और विजय को तीन जन्मों तक राक्षस हो जाने के शाप, का मिथक पुराण प्रसिद्ध है। इसे इस प्रकार कहा जा सकता है कि वे बस्तियाँ बसाकर स्थाई रूप से बस गये किन्तु उनको पूर्णत आर्यों जैसा सामाजिक एंव व्यवस्थित ढ़ाँचा बनाने में तीन पीढीयाँ और लग गई और तब तक वे राक्षस ही कहलाये। उनकी अनार्य प्रथाओं का अन्त कृष्ण के काल में जा कर हो पाया, वरना तब तक वे भाई-बहन के बीच सीधे कौटाम्बिक विवाह जैसी पैशाचिक परम्परा से जुड़े रहे। मेरे विचार से यह मिथक आठ जुड़वाँ अर्थात कुल सोलह का होना चाहिये, क्योंकि नागों के कुल, हस्ती-गजों के कुल वंश और वसु-आठ ही हैं। हरण प्रथा और कौटाम्बिक विवाह प्रथा से जुड़ा कृष्ण अंतिम उदाहरण है। वह म्यूर टोटेम धारण करता है...। वह वृष्णिवंशी है और वृषिन का अर्थ म्यूर होता है।[9] वृष्णि का अर्थ धर्मभ्रस्ट और पाखड़ी है[10] प्रतीत होता है कि वृष्णि जन... कम से कम कृष्ण तक तो आर्यों के इन्द्र आदि देवतन्त्र के विरोधी थे। पितृ-पिशाच, विद्याधर और वैराज पितृगणों में साम्य है। विरज के वैराज और विरजा ब्रज और ब्रज वंशिओं के मूल में है।

हस्त-प्रहस्त

हस्त और प्रहस्त में हस्त या हस्ती तो गज या हस्ती है तथा प्रहस्त विश्रवा ऋषि और पुष्पोत्कटा का पुत्र है। पुष्प एक हस्ती है अर्थात अवश्य ही पुष्पोत्कटा कोई हस्ती जाति की स्त्री थी। गज-ग्राह के मिथक में कहा गया है कि यह घटना त्रिकूट पर्वत की एक झील में घटी। त्रिकूट पर्वत पर लंका थी और पुष्पोत्कटा का पुत्र प्रहस्त रावण का सौतेला भाई एंव सेनापति था। कहा जा सकता है कि लंका न केवल गजों-हस्तियों और ग्राह-मकरों के क्षेत्र में रही होगी अपितु लंका में इन टोटेमिक जनों का भी बाहुल्य रहा होगा। पुलस्त्य और पुलह, जो कि पुराणों में राक्षसों के मूल पुरूष हैं के नाम पलक्षा नदी/सरस्वती के निवासिओं का द्योतक है। पलक्षा नदी क्षेत्र के पलंकष। और पलंकष का अर्थ राक्षस होता है।[11] यही पलंकष शब्द लंका के मूल में है। अब राक्षी या तो मस्कारा < मस्कराक्षी थी या पलक्षा नदी का एक नाम ही राक्षी था जब यमुना पश्चिमवर्ती होकर सरस्वती नदी के रूप में बहती थी, तब राक्षी, चिंतग, दृषद्वती नदियों का उदगम् गंगा यमुना दोआबे की शिवालिक पहाड़ियों से होता रहा होगा। और तो और गंगा नदी का नाम भी सप्तसैन्धव नदियों में लिया गया है।

प्रसूती या प्रहूती

यह विरज की पुत्री थी जो दक्ष की स्त्री बनी। इसके अतिरिक्त एक और प्रसूती है जो एक हथिनी थी; यह प्रसूती दिङ्नाग की पुत्री थी।[12] इसका अर्थ यह है कि या तो नाग और हस्ती जनों में कोई अन्तर नहीं था या फिर नागों और हस्ती जनों में वैवाहिक सम्बन्ध हो सकता था, जो भी हो वे एक ही क्षेत्र की जातियाँ तो थे ही। हस्तिनापुर के अन्यनाम गजसाहव्यं, नागसाहव्यं हैं कुरूवंश को कौरव्यनाग का वंश माना जाना चाहिऐ। क्योंकि समूचे वंश में बहुत सारे नाम नागों के ही हैं।

हरि-प्रहरि

प्रहरि, हस्ती और वैरूप्यसाम के पुत्र सुप्रतीक हाथी के तीनों पुत्रों में से एक था।[13] हरि भी कपि अथवा वानर हैं। ये ही विरज के वैराज्य हैं। विरज वानर कुंजर की पुत्री अंजना केसरी वानर की स्त्री थी, इनके पुत्र हनुमान का किसी मतस्य कन्या से उत्पन्न पुत्र मकरध्वज था। अंजन, और कुंजर हस्ती भी हैं और नाग भी। केसरी सम्भवतः व्याघ्र टोटेम वाला पुरूष है। गंगा-यमुना दोआबे को अन्तर्वेदी कहा गया है अर्थात अनुपर्वत (शिवालिक पर्वतमाला) की तराई। पुराणों के अनु -आनब उशीनर इसी दोआबे के पर्वतीय क्षेत्र के माने जाते हैं...। गढ़वाल सम्भवतः गजवाल का अपभ्रंश हो... और हरि जनों[14] का क्षेत्र था हरिद्वार। हरिद्वार कनखल के समीप नागराज कपिल का उल्लेख है।[15] सम्भवतः वही कपिल जिन्होंने पूर्व की ओर बस्तियाँ बसाते शिग्रु/सगर जनों की असंख्यों बस्तियाँ उजाड़कर 60000 सगर जनों को नष्ट कर दिया था...। ये कपि-कपिल जन कालान्तर में काम्पिल्य, बनारस और कपिलवस्तु के संस्थापक भी हुऐ। कपि, अज, वानर, ऋक्ष, व्याघ्र, मतस्य, मकर, मार्जार आदि जन ही वैराज; या विराज्य, या विरज थे, जो जितने ब्रज के मूल में हैं उतने ही वज्जि, शाक्य आदि जनों के मूल में भी हैं। वज्जि, शाक्य आदि के उद्भव की कथा में सोलह जोड़ों और भाई बहन के बीच सीधे कोटाम्बिक विवाह की प्रथा हैं[16] बनारस शैव्यपूजक उन पणि जनों की बसाई गई नगरी थी (पर्नारस/पर्णारस/पर्णासी) जो आर्य बस्तियों में अपनी वनों से संग्रहित सामग्री की पैंठ लगाते थे। पैंठ का शुद्ध शब्द पणि ठाँव। ठाँव का अर्थ स्थान/प्रतिष्ठान शब्द के मूल में भी प्रहूति/प्रसूति अथवा प्रहरि जनों का ठाँव जैसा अर्थ है-प्रहस्तिठाँव।

पति के जीवित रहते परपुरूष से उत्पन्न संतान को कुण्ड और ऐसी परपुरूष से सम्बन्ध

बनाने वाली स्त्री के पति को पंडू कहा जाता है।[17]

पुरूष को स्त्री के पर-सम्बन्धों से कोई गुरेज नहीं था...। विवाह संस्था का विकास न होने के कारण पहले उनमें भाई-बहनों के बीच ही जोड़े बन जाते थे और ऐसा स्वतः और स्वभाविक ही था... यह रिश्ता जीवन भर चलता भी था; भले ही जीवनयापन के लिये वह कुछ समय या फिर लम्बे समय के लिये उसे छोड़ जाये... किन्तु अन्ततः वह लौटती थी। ऐसी ही प्रथाऐं जो अस्थाई घुमन्तु जनों की होती थी-वैराज्य प्रथा कहलाती थी।

जब आर्य बस्तियाँ बसीं तो कुछ जन गायन करने वाले गन्धर्व बन कर बस्ती-बस्ती घूमते और मनोरंजन का पेशा करते। अज, अहि, हस्ति, गज, वृष, वृष्णि, रक्ष, यक्ष, दक्ष, कपि, हरि, वानर, व्याघ्र, मार्जार, मर्कट, ऋक्ष, विद्याधर, पितृ, पिशाच, गन्धर्व, मरूदत, अर्धसभ्य, टोटेमिक अथवा अनार्य जन धीरे-धीरे सभ्य बने; घुमन्तु जीवन और वनों पर निर्भरता छोड़कर बस्तियाँ बसाई। कृषक बने, धातुकर्मी बने तो प्रत्येक कर्म के लिये एक नये देवता की आवश्यकता पड़ी अर्थात अनार्य धीरे-धीरे आर्य बने। जो आर्य बनकर भी एक बार पुनः अपनी प्राचीन प्रथाओं की ओर लौटे... या आर्य जीवन के मूल को पूरी तरह अपना पाना उन्हें अत्याधिक बन्धन वाला लगा... या फिर किसी प्रकार जिन देवताओं को उन्होंने दूसरों की देखा-देखी अपनाया था, उन पर से उनका विश्वास टूटा या वे जो अपने प्राचीन विश्वास, प्रथा और देवतन्त्र को छोड़ना नहीं चाहते थे उन्होंने वैदिक जनों के देवतन्त्र, विवाह व्यवस्था आदि का विरोध किया; राजतन्त्र के स्थान पर गणतन्त्र जैसी संघीय प्रणाली को अपनाते रहे।

यादवों वृष्णिवंशियों में गणतन्त्र जैसी संघीय प्रणाली रही। इस संघीय व्यवस्था के लिये उन्हें एक रक्तपात भरे भीषण संघर्ष से भी गुजरना पड़ा...। परिणाम बड़ा ही अदभुत मिला, भारत से वैदिक जनों के प्रमुख देवता इन्द्र का सफाया हो गया। म्यूर टोटेम वाले वृष्णिवंशी कृष्ण की पूजा शुरू हो गयी... जाहिर है कृष्ण वैदिकजन नहीं था। फिर भी आर्य, यदि वे भारत में आज भी हैं तो कृष्ण को मानते हैं यह अद्‌भुत परिणाम किन आयामों, व्यवस्थाओं, विषमताओं संघर्षों समझौतों से गुजर कर आया, इसकी कल्पना तक भी करना मुश्किल है। क्योंकि कृष्ण हरि है; हरि ही कपि हैं और हिरण्य जन आर्य विरोधी थे... कृष्ण भी था... हम भी कृष्ण भक्त हैं... इन्द्र को यदा-कदा याद कर लिया जाता है बस... आर्य किसी वंश या जाति के रूप में स्वतन्त्र रूप में कभी हुऐ ही नहीं घर बस्तियाँ/आलय बनाकर स्थाई रूप से बसने वाला प्रत्येक परिवार चाहे वह कृषक था, कामगर या धातुकर्मी; आलय अथवा आरय वाला आर्य कहलाया; बाद में यह शब्द सुसंस्कृत/प्रतिष्ठित/नामी/विजेता/सम्माननीय के अर्थ लेता गया।

प्रचेता

पुराणों में प्रचेता कई हैं, दक्ष भी एक प्रचेता था। एक प्रचेता के सुयशा गन्धर्वी से हरिकेष, कम्बल, कपि, कांचन और मेघमाली ये पाँच पुत्र हुऐ और चार पुत्रियाँ जो अपसराऐं हुईं-[18] जाहिर है अपसरा कोई जाति नहीं अपितु कर्म था जिसे हरि (केष) कपि (वानर), कम्बल (नाग) जाति वाले पुरूषों की बहनें ही किया करतीं थीं। प्रचेता एक प्राचीन जाति थी जिनके काश्यपों, गन्धर्वो, मरीचिओं के मिलन से कई सारी जातियों का प्रार्दुभाव हुआ। पूर्व वर्णित "प्रसूती" प्रचेताओं की सन्तत्ति विशेष कर पुत्रियों के लिये प्रयुक्त किया गया शब्द भी हो सकता है जैसे द्रोपदी, वैदेही, जानकी, कौशल्या, गन्धारी आदि।

मर्कट/मृकंट/मृकंड़/मारकण्डेय

मर्कट का अर्थ वानर, मतस्य भी है। जमुना नदी क्षेत्र के द्योतक जाम्बवान है; वे वैद्यूत

पर्वत से लेकर ऋक्ष पर्वत तक निवास करने वाले ऋक्ष (रीक्ष टोटेम वाले) भी है और विद्याधर भी। इनकी स्त्री व्याघ्री थी और पिशाच, मार्जार आदि सोलह पुत्र थे। निस्संदेह पिशाचों से सम्बन्धित सोलह जोड़ों वाला मिथक यहाँ है। सिंहल का वर्णन बालरामायण नाटक में लंका के बाद और कुमारी द्वीप (कान्य कुब्ज) से पहले है।[19] यहाँ के पिशाच राजा विजय के साथ सोलह जोड़ों वाला सीधे कौटम्बिक विवाह का मिथक जुड़ा है... यह विद्याधर-विजय है। जाम्बवान और केसरी दौनों के पिता का नाम गदगद है; यह गज हस्ती से साम्य रखता है गजों का प्रदेश गजन्धर ही जगन्धर और फिर जुगन्धर अथवा यादवों का युगन्धर-शूरसेन (श्रूघन) है। यही गज अथवा जग प्रदेश है। कृष्ण जगन्नाथ है, उसकी 16000 रानियाँ थीं जो पिछले जन्म की अपसराऐं थी[20] ...

गजन्धर के गज-हस्ति ही गन्धर्व < गजन्धर्व हैं और वे वही युगन्धर/गज-गन्धर्व ही है जिन्हें पूषा और अपसरा (पूषरा, पूषा का स्त्रीलिंग) कहा गया है- गन्धर्व ही पिशाच, प्रेत, भूत हैं। गन्धर्व का अर्थ ''मृत्यु के उपरान्त और पुर्नजन्म से पूर्व की आत्मा'' होता है। गन्धपूतना का अर्थ भूतनी,[21] पूतना सम्भवतः पूषा के स्त्रीलिंग शब्द पूषना का अपभ्रंश है। गन्धर्व अवश्य सरस्वती नदी प्रदेश के निवासी थे क्योंकि गन्धमादनी का अर्थ लाख; गन्धमादन का अर्थ लाख उत्पन्न करने वाला और इस क्षेत्र की नदी पलक्षा अर्थात सरस्वती नदी।

गन्धर्व ही म्यूर, मुर्गा-मर्कट हैं। मर्कट भी पिशाचों से सम्बन्धित थे इसका संकेत है कि मृतकों का सम्बन्ध पिशाचों से माना जाता है। वे मृत्यु के बाद की आत्मा है, पिशाच ही पितृ है। शमशान भूमि के लिये प्रयुक्त शब्द ''मरघट'' मर्कट का ही अपभ्रंश है। पिशाचों को क्रव्याद -- कच्चा माँस खाने वाला कहा गया है। वे शवों को खाने वाले अपमार्जक अवश्य थे किन्तु जब वैदिक जनों ने अपने मृतकों की यातुधान/ब्रहमधानों आदि के हाथों होने वाली दुर्गति/खाये जाने से बचाने के लिये मृतकों को जलाना शुरू कर दिया, तब भी वे ग्राम बस्ती से बाहर मरे हुऐ पशुओं को खाने के लिये पिशाच मंड़राते अवश्य रहते थे... यह जंगली जानवरों का शिकार करने के लिये अधिक गहरे जंगल में जाकर अधिकतर स्वयं ही शिकार हो जाने की अपेक्षा अधिक आसान था...। बाद में ये अपनी इस आदिम अवस्था को छोड़ कर अर्धसभ्य या सभ्य भी बने... किन्तु पिशाच, मर्कट जैसे अपमानजनक शब्द बहुत काल तक इनके पीछे लगे रहे। अर्धसभ्यता से सभ्यता की सीढ़ी पार करते हुऐ मर्कटों का प्रदेश मर्कन्ट... मृकन्ड़ों का प्रदेश मार्कण्ड़ेय हो गया।

भृगु हिरण्यकशिपु के पुरोहित हैं, इनकी स्त्री (पुलोमा की पुत्री) दिव्या से दो पुत्र शुक्र कवि उशना और चयवन थे। भृगु और दिव्या के ग्यारह पुत्र थे। शुक्र बृषपर्वा दानव के पुरोहित थे। शुक्र को पितृकन्या गो (पार्जीटर पितृकन्या का अर्थ बहन मानते है[22]) से तवस्टा, वृत्र, शंड़, मर्क नामक पुत्र थे। शुक्र की पुत्री देवयानी नहुष के पितृकन्या विरजा से उत्पन्न पुत्र ययाति की स्त्री थी अर्थात सीधे कौटम्बिक विवाह की पितृ पैशाची प्रथा। वृत्र इन्द्र का शत्रु है, वैदिक साहित्य में वह दानव, असुर अहि (नाग अथवा अज) वर्णित है। शण्ड़ > शुण्ड > तुंड अथवा हस्ति/गज के सम है और मर्क म्यूर मुर्गा टोटेम वाले यतुधानों का, जो हेती-प्रहेती गन्धर्वों के रूप में मृकण्ड़ मुनि के आश्रम/मारकण्ड़ा नदी क्षेत्र में आये थे। पार्जीटर ने शुक्र उशना के पुत्र मर्क के वंशजों को मारकण्ड़ा क्षेत्र के निवासी माना है।

कौटम्बिक विवाह का विधान, पिशाचों की सोलह संख्या का मिथक... कृष्ण के साथ भी जुड़ा है। कृष्ण की सोलह हजार रानियाँ थीं... वह म्यूर पंख धारण करता है। वृषकम का अर्थ म्यूर पंख है और वृषिण का अर्थ है मोर[23] इससे निष्कर्ष निकलता है कि वृष, वृष्णि म्यूर

टोटेम धारण करने वाले अनार्य थे तभी आर्यों ने वृष्णि का अर्थ धर्म भ्रष्ट, पांखड़ी रखा यदि कृष्ण का पूर्वज वृष्णि वैदिक जन होता है तो ऐसा नाम कैसे रखा जा सकता है। वृष्णि शब्द के सम ''वर्चिन'', वृचीवन्त, वरशिख ऋग्वेद में और हिरण्यदैत्य विरोचन, बज्रांग पुराणों में, वैदिक जनों के विरोधी और उनके देवतन्त्र को नहीं मानने वाले हैं। वृष्णिओं की दो शाखाऐं है- भोजक वृष्णि और अन्धक वृष्णि। ऋ0 3.53.7 में भोज जन वशिष्ठ विरोधी सुदास पैजवन के वंशज कहे गये हैं, अर्थात धर्मभ्रष्ट, पांखड़ी वृष्णि जिस सुदास पैजवन को कहा गया है यादव था। भार्गवों और सगर ने भी हैहयों सृज्जयों/हिरण्यों का साथ देने वाले कम्बोजों (काम्यक वन के भोजों) को पराजित किया था।

पुराणों में ही बज्रांग का भाई अन्धक था, ये हिरण्य दैत्य कहे गये हैं। हिरण्यकशिपु के वंशज बलि के पुत्र बाणासुर की ध्वजा पर म्यूर चिन्ह था और यह चिन्ह पीढ़ी दर पीढ़ी बाणासुर तक आया होगा। अर्थात हिरण्यदैत्य म्यूर टोटेम वाले जन थे और हेती-प्रहेती का सम्बन्ध हिरण्य दैत्यों से था।

यादव अनमित्र के भाई शिनी के पुत्र सत्यक के पुत्र का नाम यतुधान था जिसे सात्यकि भी कहा गया है। इसके पुत्र असंग का पुत्र तुणि, युगन्धर का पिता था... इससे धारणा बनती है कि यादव जन युगन्धर के आसपास क्षेत्र के निवासी थे यादवों की दो मूल शाखाऐं अन्धक वृष्णि और भोजक वृष्णि अनेकों प्रशाखों में बंटी थी। अन्धक के चार पुत्र थे - कुकुर, भजमान, शुचि (ससिन) और कम्बलवर्हि। मतस्य0 में कुकुर के पुत्र वृष्णि, पौत्र धृष्ट, प्रपौत्र कपोत रोमा, प्रप्रपोत्र तित्तिर...। शशिबिन्दु का प्रपौत्र एक तितिक्षु भी है। अब जरा इन नामों के सम अर्थों को लें-

क्रोष्ट्र	=	गीदड़, कोलाहल करने वाला
अन्धाक	>	दृष्टिहीन
कुकुर	>	कुत्ता/शुन यदुवंश में तीन स्थानों पर शिनी नाम है; कुकुर एक नाग भी है-
भजमान	>	भोज/भौंह कुत्ते की बोली > भोमान
सस	>	शश/खरगोश, शुचि के सम
धृष्ट	>	**Rakleses, bold : Insolent :** दुस्साहसी, ढीठ
कपोतरोमा	>	कपोत (कबूतर)
तित्तिर	>	तीतर/ताक्षर्य/पक्षी > तितिक्षु/तित्तिर एक नाग भी है तार्क्ष्य का अर्थ लकड़बघ्या, यह कुकुर/कुता के सम और टोटेमिक है। तारक हिरण्यदैत्य परिवार के एक दैत्य का नाम भी है।
वृष्णि	=	धर्मभ्रस्ट/पाखंड़ी ; वृषिन = मोर ; वृष = वृषभ = बैल = बल्हिओ0 पी0 भारद्वाज ने महावृषों को उत्तर पश्चिमी सीमांत/ गन्धार के उन विशानिनों से मिलाया है जिन्हें सुदास पैजवन ने दासराज संग्राम में पराजित किया था[24]-ऋग्वेद 7.18.7 ये यादव वृष्णि ही थे, जो मुख्यतः सुदास पैजवन के भाई वृन्द थे जिन्हे जीतकर वह एक झण्ड़े तले ले आया था। वशिनी, विजुल और शाल्मली या सैमल आपस में पर्यायवाची शब्द है।[25] वैद्यूत वैभ्राज, यादव-युगन्धर, शाल्वजन एक ही और

समान क्षेत्रीय हैं।

विलोमन = विरूद्ध

कम्बलवर्हि = एक नाग का नाम

हरियाणा में चितांग नदी क्षेत्र का प्रमुख कस्बा असन्ध मूल अन्धक का अपभ्रंश नाम है। कुकुर, वृष्णि, धृष्ट के नामकरण लगभग वैसे ही किये गये लगते हैं जैसे अंगिरावंशी अजीगृत ऋषि के तीन पुत्रों शुनशैप, शुनोलागूल और शुनपुच्छ का, जिनका अर्थ कुत्ते की पूँछ होता है।

इसी प्रकार वृष्णि धर्मभ्रस्ट/पाखंड़ी और उसका पुत्र धृष्ट अर्थात ढीठ/दुस्साहसी। एक धृष्ट है मनु वैवस्वत का पुत्र; कोई अपराध करने के कारण जिस मनु पुत्र नामानेदिस्ट को वैश्य हो जाने का दण्ड़ मिला, यह वही धृष्ट/दिष्ट अथवा नाभाग हो सकता है। हरिवंश में धृष्ट, भजमान यादव का उसकी स्त्री सृंज्जयी से उत्पन्न पुत्र है। काशी के वंश विवरण में सुकुमार का पुत्र और वैनहोत्र का पिता धृष्टकेतु ; वैनहोत्र जिसे वैणुहोत्र या वीतीहोत्र भी माना गया है।[26] वैदिक सृज्जयों के ही पौराणिक रूप हैहय, वैणुहय के मूल में है। वेदों में वीतीहव्य, ब्राहमण विराधी (**भृगुहिंसित्वा सृज्जया वीतीहव्या पराभवन**- अथर्ववेद 5.18.10-11; 5.19.1) और पुराणों में वीतीहोत्र ब्राहमण विराधी तालजंघ का वंशज है अर्थात यदुवंश की हैहय शाखा का है। तालजंघ, सृज्जय शब्द का अपभ्रंश है अर्थात सृज्जयों की शाखा वीतीहव्य थे, वे धृष्टकेतु अथवा धृष्ट है जिन्होंने ब्राहमणों को त्रस्त किया था। नर्वदा नदी के यादव हैहयों द्वारा काशी के दिवोदास का राज्य छीनने की पौराणिक घटना का आधार सृज्जय सुदास पैजवन द्वारा त्रित्सु दिवोदास का राज्य अधिकृत करने की वैदिक घटना है जो कि सरस्वती प्रदेश में घटी थी। दासराज संग्राम में त्रित्सुजनों का सुदास के शत्रु पक्ष की ओर होना (ऋ0 7.18.15) और वैदिक साहित्य में प्रर्तदन दिवोदासि (कौषितकि उप0 26.5) के रूप में दिवोदास के उत्तराधिकारी का नाम मिलना इन धारणाओं की पुष्टि करता है। ऋ 6.26.8 में भारद्वाज ऋषि प्रतर्दन और उसके पुत्र क्षत्रश्री के पुरोहित हैं।

पांचाल नरेश द्रुपद और उनका पुत्र धृष्टद्युम्न और पौत्र धृष्टकेतु उन्हीं वैदिक सृज्जय जनों के वंशज हैं जिन्होंने ब्राहमणों को प्रताड़ित और निष्काषित किया था। सुदास पैजवन द्वारा त्रित्सुओं को राज्यच्युत करने के कारण उनके कुल गुरू भारद्वाज जन भी पलायन कर गये थे...। द्रुपद द्वारा द्रोणाचार्य के अपमान की कथा का आधार वही वैदिक घटना है। ब्राहमणों द्वारा सही गई प्रताड़ना, निष्कासन आदि का बदला..., उस महाभारत ग्रन्थ को लिखकर, कलम द्वारा भी लिया गया जिसमें प्रत्येक पात्र अपने भीतर बदले की कोई न कोई अग्नि सुलगाये बैठा है। बदले की भावना से लिखा गया यह ग्रन्थ लेखक की किसी मानसिकता का परिचायक है, असल में इतने सारे बदले लिये गये होंगे या युद्ध इतने बड़े पैमाने पर लड़ा गया होगा, इसमें शंका है।

मरूदत जन

आर्यों के सहायक-म्यूर मरूदत जन यादव वृष्णि जन ही थे। प्राचीन साहित्य के 49 मरूदत गण और वैशाली के करमन्ध का पुत्र मरूदत, जिन्होंने नि:स्तान होने के कारण पुरूवंशी दुष्यंत को गोद लिया था।[27] दौनों एक ही घटना चक्र के अलग-अलग मिथक हैं। वैशाली भी किसी विशाल ने नहीं अपितु सरस्वती नदी के प्रदेश के वैश्य पणिओं ने वर्तमान बिहार में पहुँच कर बसाई थी। पणिओं के साथ जुड़ा वैश्य शब्द इसलिये नहीं था कि वे आर्य बस्तियों में जाकर वन-अरण्यों से संग्रहित अपनी वस्तुओं का विनियम करते थे अपितु इसलिये था कि पणिजन वृष-वृष्णिजन ही थे उनका प्रदेश ''वृषाल'' भी कहलाता था जिस का अपभ्रंश पौराणिक

विशाल (< वैश्याल) है। बृषाल प्रदेश करनाल के आसपास था। कौशल की कौशल्या, गन्धार की गन्धारी, कैकय देश की कैकयी, विदेह देश की वैदेही की भाँति वृषाल देश की वृषाली... जो करनाल क्षेत्र के कर्ण की स्त्री थी। कृष्ण वसु वृष्णि या वृषजन ही हैं। वृषाल अथवा वैशाली प्रदेश से इसका सम्बन्ध है तभी तो ''स'' अक्षर के ''ह'' में और ''ल'' के ''र'' में भाषाई परिवर्तन से वह विशाल का वैशाली जन... बिहार का बिहारी नाम प्राप्त कर लेता है। किन्तु कृष्ण/बिहारी का यह मूल बिहार सरस्वती नदी प्रदेश में था। विहार/व्रज का शाब्दिक अर्थ है घूमना अर्थात वृष-वृष्णि/पणि-वैश्य घुमन्तू कबीलाई जन थे... पशुपालक थे। पणिओं का सम्बन्ध सोलह जुड़वाँ जोड़ों और भाई वहन के बीच सीधे कौटम्बिक विवाह से था...। बनारस पणिजनों ने ही बसाया था (पर्णारस > बर्नारस); तभी तो बौद्ध साहित्य में बनारस के राजाओं और उनमें कौटम्बिक सम्बन्धों का उल्लेख है।

मरूदतगण कहीं इन्द्र के भाई, तो कहीं दिती पुत्र अर्थात हिरण्य दैत्यों के भाई कहे गये हैं। विष्णु पुराण में ये विष्णु के अंश हैं। मरूदतों के अश्व का नाम प्रषत है।[28] और प्रषत शब्द प्रहस्त /प्रहेती/ प्रसूती/प्रचेता आदि के सम है। वायु0 के अनुसार मरूदतगण रूद्र और वृष्णि के पुत्र हैं।[29] जबकि भागवत0 में मरूदत को यदुवंशी बताया गया है।[30]

करन्धम के नि:सन्तान पुत्र मरूदत ने दुश्यंत को गोद लिया था। इसे इस तरह से कहा जा सकता है कि पहले सरस्वती नदी प्रदेश में म्यूर टोटेमिक वृष्णिवंशी अर्थात वृष-मरूदतों का बाहुल्य था। बाद में दृषद्वती नदी क्षेत्र के दृषदन्तों का बाहुल्य बढ़ा। दृष्द्वन्त शब्द का व्यक्तिवाचक अथवा अपभ्रंश शब्द दुष्यंत है और बाद में मैनाक/शिवालिक पर्वत की मेनकाओं और वसु-वासुकी जनों से उत्पन्न-यदु-युगन्धर (> शकुन्तला) जनों के क्षेत्र में दृष्द्वन्तों के प्रसार-प्रभाव और सम्बन्धों से एक नई जाति-भरतों का प्रार्दुभाव हुआ।

नवीन समाज के लिये ब्राह्मणों का संघर्ष

अधिकार, मान-सम्मान जिसकी अपेक्षा त्रित्सु राजवंश का अंश होने के कारण वशिष्ठ करता था... उसे नहीं मिल पाये क्योंकि वह मित्र (दिवोदास त्रित्सु के भाई सुमित्र) और उर्वशी का अदभुत रूप से जन्मा पुत्र था।... अर्थात वह औरस नहीं था... इसलिये वह असन्तुष्ट बना... एक यादव वृष्णि सुदास पैजवन का साथ देकर उसने-सरस्वती नदी प्रदेश से त्रित्सु दिवोदास की सत्ता को उखाड़ फैंका...। किन्तु जब अनार्यों, वृष्णिओं/वृषों के समाज, को व्यवस्थित करने और आर्यो की विवाह संस्था की बात आई तो सुदास पैजवन उखड़ गया... स्त्री-पुरूष स्वतन्त्र और स्वच्छन्द थे। पर पुरूष या स्त्री से सम्बन्ध बना लेने पर साथी को कोई आपत्ति नहीं होती थी... जाहिर है ऐसे प्रथाऐं ऐसी संतानों को उत्पन्न करतीं थीं जिनके न कोई वंश गोत्र होते थे और न ही अधिकार। मान-सम्मान से अधिक आसान जीवन यापन का प्रश्न था। वशिष्ठ स्त्री पुरूष के प्रत्येक प्रकार के सम्बन्ध को विवाह संस्था के अन्तर्गत लाना चाहता था, का विरोध सुदास पैजवन ने किया... इसमें कोई शक नहीं है कि वशिष्ठ एक अपसरा का पुत्र होते हुऐ समाज के तत्कालीन ढ़ाँचे को बदलकर एक नये प्रकार के समाज के निर्माण के लिये प्रयत्नशील था; जिसमें कि न केवल कुण्ड सन्तानों के बढ़ते प्रतिशत पर रोक लगेगी अपितु किसी भी प्रकार के सम्बन्धों से उत्पन्न सन्तानों को औरसता, नाम, अधिकार मिलेंगे। दूसरे जनसंख्या कितनी भी बढ़े, चारों वर्णो में प्रतिशत समान रहेगा। किन्तु सुदास और उसके नये गुरू को इस व्यवस्था में कमियाँ नजर आई होंगी। क्योंकि यह व्यवस्था पूरे तरीके से विश्लेषण करने पर, ब्राहमणों का हित देखती थी और ब्राहमणवाद को बढ़ावा देने वाली थी। सुदास पैजवन ने इस व्यवस्था को न केवल नकारा अपितु वशिष्ठ को भी निष्काषित कर चलता

कर दिया। वह वृष्णि सुदास पैजवन जिसने शुरू में आर्य समाज संस्कृति के प्रत्येक कारक, प्रत्येक तकनीकी और यहाँ तक कि देवतन्त्र तक को अपनाया था विवाह संस्था को न अपना कर वर्ण व्यवस्था लागू करने में अंड़गा लगा बैठा... आगे के घटना चक्र में संघर्ष, वैमनस्य, ईर्ष्या, इतनी बढ़ी कि सौदासों का सहारा लेकर गुरू विश्वामित्र कुशिक ने वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को अग्नि में जीवित जलवा दिया। ऐसा लगता है कि पहले आर्य नियमों को अपनाना... सुदास पैजवन का एक पाखंड था... बाद में वह फिर से धर्मभृष्ट हो गया था। वृष्णि शब्द का अर्थ धर्मभ्रष्ट और पाखंड़ी होता है।[31]

ऐसा लगता है अपने आप को सर्वश्रेष्ठ रखने के लिये उन्होंने चार वर्ण बनाये, अपने हिस्से पठन-पाठन, यज्ञ पूजा, धार्मिक अनुष्ठान आदि रखकर अपने लिये सम्मान और सेवा करवाने का अधिकार प्राप्त कर लिया। जबकि कर्म और सेवा करने का कार्य बाकी तीन वर्णो का था। बाकी तीन वर्णो में किसी भी वैयक्ति गुण व प्रतिभा का कोई अर्थ नहीं था।

भगवान सिंह का कहना है कि ब्राहमणवादी व्यवस्था में एक कमी थी एक तो वहाँ प्राश्चित के विधान अधिक कठोर थे दूसरे कुछ मर्यादाऐं टूटने पर प्राश्चित करने पर भी वापसी नहीं हो सकती थी और दंड़ित व्यक्ति को न केवल बहिष्कृत किया जाता था बल्कि उसे किसी निचली जाति का दर्जा दे दिया जाता था। अन्य अपराधों को छोड़ भी दें तो अनुलोम विवाह (उँची जाति के पुरूष का नीची जाति की स्त्री से विवाह) तो विधि सम्मत था किन्तु विलोम क्रम (नीची जाति के पुरूष का उँची जाति की स्त्री से विवाह) इतना बड़ा अपराध बन जाता था कि ऐसे सम्बन्ध से उत्पन्न संतान के लिये सामाजिक नरक या जातीय तिरस्कार के कई स्तर खुले रहते थे।[32] अपराधी का कोई भी वंशज फिर से अपने उस पूर्वज का पिछला सामाजिक रूतबा या वर्ण प्राप्त नहीं कर सकता था। मात्र इतना ही नहीं अधिक निचले वर्णो के काम को कोई महत्व न देते हुऐ उनके प्रति घृणा, तिरस्कार, अस्पर्शता की भावना थी और उनके साथ पशुवत व्यवहार होता था। उनकी बलि का भी विधान था। नास्तिक होना एक बड़ा अपराध था। राजा अथवा क्षत्रिय तो नाममात्र या केवल लड़ने के लिये थे असल सत्ता और समूचे अधिकार तो ब्राहमणों और पुरोहितों के पास थे और समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक था कि वह ब्राहमण को खुश रखें, उसका सम्मान करे, उसके रास्ते से हट जाये वरना उसका एक ही वाक्य अपराधी के पीढ़ीयों तक की किस्मत बदल सकता था। पुरोहितों को खुश करने के लिये राजा भी समय-समय पर उन्हें स्वर्ण, धन, रथ आभूषण, पशु, अश्व, स्त्री, दास-दासियाँ यहाँ तक कि अपनी कन्याऐं भी देते थे। रोमपाद की पुत्री शान्ता, ऋष्यश्रंग की स्त्री बनी। मान्धाता की 50 कन्याऐं सौभरि ऋषि की स्त्रियाँ थी। शर्याति की पुत्री सुकन्या वृद्ध व कृषकाय चयवन की स्त्री बनी। दैत्यराज पुलोमा की पुत्री पौलोमी भृगु ऋषि की स्त्री थी। अनरण्य की पुत्री पद्यमा, दधीची ऋषि के पुत्र पिप्पलाद की स्त्री बनी। गाधि की पुत्री सत्यवती जमदग्नि ऋषि की स्त्री थी। राजा तृणबिन्दु की पुत्री इड़विड़ा, पुलस्त्य ऋषि की स्त्री थी। राजा विदर्भ की पुत्री लापामुद्रा अगस्त्य ऋषि की स्त्री थी।

राजाओं के लिये ब्राहमण पुरोहित को छोड़कर क्षत्रिय पुरोहित रखना भी एक अपराध था[33] ब्राहमण पुत्र की मृत्यु का कारण क्षत्रिय पुरोहित[34] या निचले वर्ण के व्यक्ति द्वारा यज्ञ आदि करना[35] बताया गया है। निस्संतान राजाओं की स्त्रियों से नियोग द्वारा संतानें पैदा करने का अधिकार केवल ब्राहमण को ही था। बलि की स्त्री सुदक्षिणा से दीर्घतमस मामतेय ने अंग, बंग, कलिंग, आन्ध्र, पुण्ड्र और सुहय नामक पुत्र उत्पन्न किये। दक्षिण कौशल के सुदास की स्त्री से वशिष्ठ ने अश्मक नामक पुत्र उत्पन्न किया। शान्तुनु पुत्र विचित्रवीर्य और चित्रांगद की

स्त्रियों अम्बिका और अम्बालिका से व्यास ऋषि ने धृतराष्ट्र और पाँडु नामक पुत्र पैदा किये। ऐसा लगता है कि ब्राहमणवाद और उनकी वर्ण व्यवस्था का सबसे बड़ा प्रभाव राजाओं पर ही था इसलिये समय-समय पर उन्होंने विद्रोह भी किया-वेन; सहत्रबाहू अर्जुन; दक्षिण कौशल के सुदास; विदेह माथव, सुदास पैजवन; सत्यवृत त्रिशंकू आदि बहुत से विद्रोही राजाओं की कथाऐं प्राचीन साहित्य में है।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. **राणाप्रसाद शर्मा ''पौराणिक कोष''** पृ0 553
2. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 339, 360, ; यतुधान के उग्र आदि दस पुत्र थे। उग्र के पुत्र का नाम वज्रहा था-**राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 55; वज्रहा हिरण्यदैत्य बज्रांग के सम लगता है, यातुधान का साम्य जतुधान या जंतुधना से भी है यातुधान की पुत्री जंतुधान खशा के दो पुत्रों अज और जनु में से अज की स्त्री थी और अज कुष्मांड़ पिशाच था' -**राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 178;
3. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 438
4. यातुधान का उल्लेख ऋग्वेद 1.35.10 ; 3.7.10 ; अथर्ववेद 1.7.1 ; 4.3.4 ; काठक सं0 37.14 ; वाजसनेई सं0 13.7 ; शतपथ ब्रा0 7.4.1.19 और यातुधानी स्त्री 0 1.191.8; 10. 118.8; अथर्ववेद 1.28.24 ; 2.14.3 आदि में मिलता है **कीथ व मैकडोनेल, ''वैदिक इण्डैक्स; अनु० रामकुमारराय, वाराणसी**, 1962, भाग-2 पृ0 205
5. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 339
6. **वही, पृ०** 360
7. **विमल चरण लाहा, ''प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल'' अनु० रामकृष्ण द्विवेदी**, लखनऊ, 1972 पृ0 178
8. इन अंगिरापुत्रियों में से एक सिनीवाली मारकण्डेय पुराण में एक नदी है- **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 22, 249
9. **वामन शिवचरण आप्टे,''संस्कृत हिन्दी कोष''**, दिल्ली, 1989 पृ0 974
10. **वही** पृ0 973
11. **आप्टे**, पृ0 596, अन्य अर्थ पिशाच, कीचड़, दलदल जिसके कारण सम्भवतः नदी का नाम पलक्षा हो
12. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 338
13. **वही पृ०** 527
14. यमुना तट पर सुदास पैजवन के हाथों पराजित हुऐ अज, यक्षुव और शिग्र जनों (ऋ. 7.18. 19) में से अज तो पौराणिक अहि-नाग हस्ती जन हैं। जिन्होंने दक्षिण पूर्व में पलायन कर हस्तिनापुरी बसाई। पराजित यक्षुव जनों को और भी दबा कर राक्षी नदी के उनके सजातीय बन्धु रक्षों ने अपने उत्थान का अवसर देखा। शिग्रुजन सागरनपुर > सहारनपुर क्षेत्र के सागरेय थे। शूर और श्रूघन के मूल में सागर क्षेत्र के शिग्रुजन ही हैं।
15. **राणाप्रसाद शर्मा** , पृ0 267
16. **रोमिला थापर ''प्राचीन भारत का सामजिक इतिहास''** दिल्ली, 2001 पृ0 265-266
17. **आप्टे**, पृ0 283, 566
18. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 229 दक्ष प्रचेता थे और ययाति के पुत्र द्रुहयु जिनके वंशज गन्धर्व हुऐ, के वंश में अन्तिम राजा प्रचेता कहे गये हैं इनके सौ पुत्र प्राचेतस कहलाये और मलेच्छ हुऐ - **आर० सिद्धान्ता शास्त्री ''हिस्ट्री आफ प्रिकलियुग इण्ड़िया,'' दिल्ली**, 1978;पृ0 148
19. **काव्य मींमासा; अनु० केदारनाथ सारस्वत**, पृ0 312
20. अपसराऐं 16000 गोपियों के रूप में अवतरित हुई किन्तु कृष्ण को पति रूप में प्राप्त नहीं

कर सकीं- **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 25 कृष्ण ने नरकासुर का वध कर 16000 राजकुमारियों की मुक्ति की थी-**राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 128

21. **आप्टे**, पृ0 334
22. **पार्जीटर** पृ0 196, 203
23. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 973-74
24. **ओ. पी. भारद्वाज ''दा मूजवत एण्ड दा महावृसिज''** जर्नल आफॅ इण्डोलोजिकल स्टड़ीज, हरियाणा साहित्य अकादमी, 1985, जिल्द-1
25. **आप्टे**, पृ0 907 ; 931
26. **आर० सिद्धान्ता शास्त्री**, पृ0 209
27. ये मरूदत ययाति पुत्र तुर्वशु के वंशज करन्धम के पुत्र थे जबकि वैशाली के सूर्यवंशी राजा नाभाग के वंश में भी एक मरूदत है इनके पिता का नाम अवीक्षित है यहाँ करन्धम मरूदत के प्रपिता है। मरूदत मनु के सोलहवे वंशज हैं। मरूदत की बारहवीं पीढ़ी के विशाल ने वैशाली की स्थापना की; इस विशाल के पाँचवें, छटे और आठवें वंशजों में सृज्जय सहदेव और सोमदत्त के नाम हैं- **आर० सिद्धान्ता शास्त्री,''** पृ0 74-79 ; 146-147 ; वैशाली के इन तीनों राजाओं का साम्य सरस्वती नदी प्रदेश के राजा सृज्जय सहदेव और सोमक से बैठता है इससे धारणा बनती है कि सरस्वती नदी प्रदेश में वैश्य कर्म/वृष जाति से सम्बन्धित पणि/फणि अथवा नागजन कालान्तर में बिहार के वैशाली के संस्थापक बने होंगे, किन्तु बाद में लिखे गये पुराणों में सरस्वती नदी प्रदेश के सृज्जय सहदेव सोमक आदि के नाम भी नयी पृष्ठभूमि को लेकर लिख दिये गये सरस्वती नदी प्रदेश में भी वैदिक सृज्जयों का सम्बन्ध मरूदतों-म्यूर टोटेमिक जनों-मार्कण्डा जनों से रहा होगा। वायु0 अध्याय 95 और मतस्य अध याय 43 में यादव शशिबिन्दु चैत्ररथ के वंशज एक मरूदत का विवरण है जो वायु0 के अनुसार पृथुश्रवस के पुत्र अन्तर या उसनरस का पुत्र है तो मतस्य0 के अनुसार उशनस के पुत्र तितिक्षू का; किन्तु दोनों ही स्थानों पर मरूदत का पुत्र कम्बलवर्हि है (वही, पृ0 135-136) इस विवरण से मरूदत जनों का सम्बन्ध यादवों से लगता है किन्तु जहाँ विष्णु0 और भाग्वत0 में तितिक्षू, मरूदत और कम्बलवर्हि का वर्णन नहीं है वहीं तितिक्षू ययाति पुत्र अनु का वंशज भी है और कम्बल एक नाग का नाम है। अनुवंशी उशीनर और उसके पुत्र तितिक्षू का यादव उशना और उसके पुत्र तितिक्षू से साम्य बैठता है क्योंकि आनव तितिक्षू (तार्क्ष्य -- पक्षी) के वंशज बलि के पुत्रों अंग, बंग, कलिंग, सुहय, पुण्ड्र द्वारा दक्षिण पूर्व में जाकर राज्य स्थापित करने का विवरण है- (वही पृ0 151) जो कि जस का तस वैशाली के मरूदतों या विशाल सें मिलता है, क्योंकि विशाल का राज्य भी तो दक्षिण पूर्व में बिहार में बसाया गया था। मरूदत जनों का मूल हस्तिनापुर के बहुत समीप सरस्वती प्रदेश में ही होने का एक और साक्ष्य है कि मरूदत्त ने हस्तिनापुर पर आक्रमण कर परीक्षित को मारा था **रांगेय राघव** , पृ0 287 ; बिहार की वैशाली से हस्तिनापुरी पर आक्रमण मिथिला, काशी, पांचाल आदि राज्यों के बीच में होते हुऐ कदापि सम्भव नहीं हो पाता।
28. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 401-02
29. **वही**, पृ0 401
30. **वही**, पृ0 402
31. **आप्टे**, पृ0 974
32. **भगवान सिंह, ''भारतीय सभ्यता की निर्मिति,''** दिल्ली, 2004, पृ0 44-45
33. सुदास पैजवन ने वशिष्ठ के स्थान पर विश्वामित्र कुशिक को अपना गुरू बनाया।
34. पंचविष ब्रा. 13.3.12 के अनुसार त्र्य्यारूण त्रिधात्व ऐक्षवाक राजा के रथ के नीचे दबकर एक ब्राहमण बालक की मृत्यु हो गयी थी। रथ की लगाम उस समय पुरोहित वृषजान के हाथों

में थी- **कीथ व मैकड़ोनेल** भाग-1, पृ0 - 370; वृषजान का पुराहित होना सम्भवतः ब्राहमणों को पंसद नहीं था इसीलिये उन्होंने ऐसी आक्षेप पूर्ण कथा का प्रतिपादन किया है

35. राम कथा में शूद्र शम्बूक द्वारा यज्ञ करने के कारण एक ब्राहमण के पुत्र की अकाल मृत्यु का विवरण रामकथा में है।

अध्याय-12

यातुधान, यादव, यति-ययाति, वैद्यूत, महिष-रम्भ और वृष्णि यादव

यातुधान

यातुधान, गन्धर्व, और राक्षस लगभग एक ही थे वे ब्रहम्राक्षस या ब्रहमग्रह कहे गये हैं। आप्टे ने यात : का अर्थ बीता हुआ, गुजरा हुआ अर्थात भूत दिया है और यातु का अर्थ भूत, प्रेत, पिशाच।[1] अमर कोश में यक्ष, राक्षस और यातुधान सज्जन, पुण्यकर्मी एवं पुण्यजन हैं।[2] राक्षस जहाँ ब्रहम कहे गये है वहीं ब्रहमधानों को यातुधान और ब्रहमराक्षसों के साथ रखा गया है।[3]

यातुधानः पुण्यजनों नैर्ऋतो यातुरक्षसी॥

अथ पुण्यजनों यक्षे राक्षसे सज्जने अपि च ॥

अथर्ववेद में भी पुण्यजन शब्द का अर्थ अच्छे अर्थों में है वे देवों और पितरों के साथ हैं।[4]

गन्धर्वाप्सरस सर्पान् देवान् पुण्यजना् पितृम्। अथर्ववेद 8.8.15; 11.9.24

अरायान बूमो रक्षांसि सर्पान् पुण्यजन् पितृन्। अथर्ववेद 11.6.16

बेशक वे क्रव्याद हों, रात्रिचर हों

राक्षसः कौणपः क्रव्यात् क्रव्यादो अस्त्रप आशरः

रात्रिंचरों रात्रिचर कर्बुरो निकषात्मज॥ अमरकोष 1.59-60

इसका अर्थ यही है कि वे आर्यो की भाँति कृषक, धातुकर्मी स्थाई बस्तियों वाले न होकर वनचर, वनों पर आश्रित अर्थात अर्धसभ्य थे... अग्नि का प्रयोग न जानने के कारण क्रव्याद थे, उनका लूट, चोरी-चकारी के लिये रातों को आर्य बस्तियों में घुस आना कभी कभार या आम बात रही होगी। यह सब खाने पीने के सामान, वस्त्रों, औजारों और पशुओं के लिये ही होता होगा। उन्हें बुरा से बुरा अथवा नरभक्षी तक बना कर पेश करना, बाद के पौराणिक साहित्य ने किया; फलत उनके लिये ''पुण्यजन'' शब्द का प्रयोग बेमानी होता गया और अन्ततः खो गया; इतना कि विश्वास करने लायक विषय नहीं रहा कि वे पुण्यजन भी थे। पुण्यजन काफी बाद तक भी अपने लिये लिपि और उसके लिये साधन आदि का विकास नहीं कर पाये थे। बाद में इनकी लिपि **''ब्राहमी''** का विकास हुआ।

पुण्यजन ही वे ब्रहमराक्षस थे जो सोलन जिले में पारियात्र पर्वत से मोरनी पहाड़ियों में आये। ये हेती-प्रहेती (हस्त-प्रहस्त > प्रेत > पारियात्र पर्वत के निवासी) वैद्यूत पर्वत क्षेत्र (मारकण्ड़ा नदी का उत्तरी पर्वतीय प्रदेश) के म्यूर टोटेम वाले जन थे। मोरनी पहाड़ी क्षेत्र से निकलने वाली नदी मोरनी > मालिनी > मोलिनी जो आज तांगरी अथवा डॉगरी है तब शिखिवास नदी **''अनुतप्ता शिखीचैव विपासा त्रिदिवा क्लमा''** और पर्वत था ''शिखीवासा

: सवैदूर्य: कपिलो गन्धमादन: जारूधि प्रमुख स्तद्वत्पश्चिमे केसराचल''। शिखि का अर्थ मोर होता है। इन पुण्यजनों/म्यूर टोटेमिक/ ब्रहमराक्षसों अथवा वैद्यूतजनों का फैलाव, पहले मारकण्ड़ा नदी क्षेत्र में हुआ। ब्रहमा इन ब्रहमराक्षसों का प्राथमिक और सम्भवत: एक मात्र आराध्य देवता था। इन्हीं के नाम पर इनके प्रदेश का नाम ब्रहमवैवर्त कहलाया। कुरूक्षेत्र का आदिनाम ब्रहमपर्वत/ब्रहमक्षेत्र था।[5] इसके बाद अंगिरसी नदी/घग्घर की ओर से कृषक-पृथुजन इस क्षेत्र में आये; ये इन्द्र, सविता, पूषा, पर्जन्य आदि विस्तृत देवतन्त्र वाले अग्निपूजक थे। हालाँकि ऐसा कोई नाम नहीं दिया गया है, तो भी इस दूसरे प्रसार के बाद हम प्रदेश का नाम ''इन्द्रवैवर्त'' रख सकते हैं। तीसरा प्रसार यमुना नदी की ओर से विष्णुपूजक **''कर''** अथवा **''कुरू-कौरव्य''** जनों का हुआ, ये हस्ती अथवा नाग थे। ''कर'' का अर्थ हस्त या हस्ति और कर्कोटक एक नाग का नाम भी है। नागमाता कद्रू (कुरूद्रम/करदुरम) में अपभ्रंशता दिखती है। इसमें शंका है कि कुरूक्षेत्र बसाने वाले किसी कुरूराजा ''कुरू'' का कोई अस्तित्व वास्तव में रहा हो तो भी ये ब्रहमराक्षसों का ब्रहमवैवर्त... जो धीरे-धीरे इन्द्रवैवर्त बनने जा रहा था अचानक ही कर/कुरू/कुरूदेश बन गया।. सृज्जय जनों का सृज्जयाना अपभ्रंशता में हिरण्य (हिरण्यवती नदी क्षेत्र के) जनों का हिरण्याना > हरियाणा बन गया।

अंगिरा जन औरों की अपेक्षा जल्दी कृषक बने; वे स्थाई बस्तियों बसाकर अग्नि का प्रयोग करने वाले, विवाह संस्था का विकास करने वाले, यज्ञकर्ता, धार्मिक और कर्मकांड़ी थे। इनके पास लिपि और धातुकर्म था। अन्य जातियों पर इनका खासा प्रभाव पड़ा। ये शत्रु और दस्युओं के विरूद्व संगठित थे ; धातुकर्म के कारण अस्त्र शस्त्र इनके पास थे। मिलकर शत्रुओं-दस्यु से लड़ने के कारण ये विजेता भी रहे।... यही वैदिक जन थे। ब्रहमा, शिव और विष्णु पूजकों में से जो जन वैदिक जनों के सहायक उनके सहयोगी और देखा देखी सभ्य बने; वे आर्य कहलाये और बाकी जिन्होंने इस प्रकार का कोई समझौता नहीं किया... आर्यो के विरोधी रहे; जाहिर है वे काफी बाद तक अर्धसभ्य ही रह गये... वे थे ब्रहमराक्षस-भूत, प्रेत, पिशाच, गन्धर्व, राक्षस, नाग, पणि-पारावत।... बाद के साहित्य में ये ही बुरे, नरभक्षी, रात्रिचर, क्रव्याद आदि कहे गये।

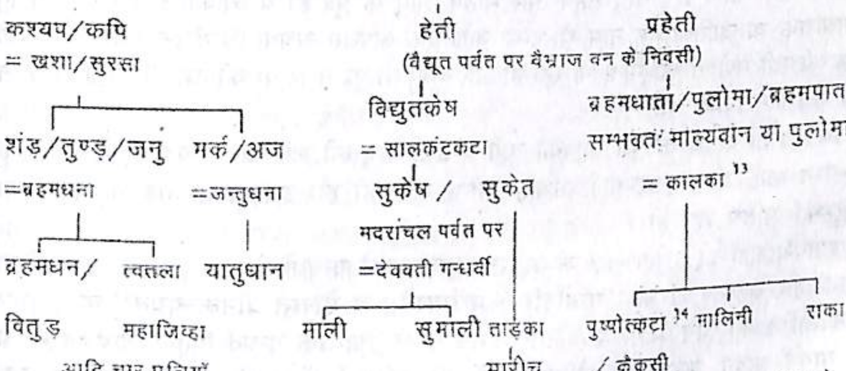
कश्यप और खशा के दो पिशाचपुत्रों में एक जनु यक्ष और दूसरा अज राक्षस कहे गये है। इनकी स्त्रियाँ यातुधान की पुत्री ब्रहमधना और यातुधना थीं। कपि के पुत्र अज और शुण्ड़ पूर्व जन्म में कुष्मांड़ पिशाच थे।[6] ब्रहमधान की पुत्री ब्रहमधना शंड़ की स्त्री थी। शंड़ के पुत्र ब्रहमधन और पुत्री त्वतला थी।[7] कपि के पुत्र अज की पुत्री जतुधना/जातुधना या यातुधना थी[8] कश्यप और सुरसा के बारह यातुधान पुत्रों में से दो हेती-प्रहेती के नाम है।[9] प्रहेती और उसका पुत्र ब्रहमधाता या ब्रहमपात जो कुबेर का अनुचर था, का निवास वैद्यूत पर्वत पर वैभ्राज वन था। रावण को ''यातुधानस्य दौहित्र'' कहा गया है। रावण की माता कैकसी, हेती कुल के सुमाली की पुत्री थी।[10] खशा के पुत्र तुंड़कोश अथवा तुंडकेश का वर्णन है।[11] तुण्ड़िकेरा हैहयवंश की पाँच शाखाओं में से एक थी जो विन्ध्य पर्वत पर रहती थी।[12]

इन सभी विवरणों का मिलान करने पर एक अलग तस्वीर उभरती है कि हेती-प्रहेती ही हस्त-प्रहस्त अथवा गज हैं इन्हें ही तुंड़ अथवा शुंड़ (सूंड़) कहा गया है। ये ही यती-येती अथवा यातुधान थे। कश्यप का अपभ्रंश कपि; सुरसा का अपभ्रंश (हुरशा: > खुशा >) खशा ही रक्खशा, यक्खशा के मूल में है। शुंड़ > शंड्ड > जंड्ड > जनु में कोई भेद नहीं। पिशाच, यातुधान, भूत, राक्षस यदि ब्रह्मराक्षस है तो ब्रहमधान और यतुधान एक ही शब्द होने चाहिये। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मोरनी/मोलिनी/मालिनी[13] प्रदेश के वैद्यूत अथवा

द्युतिमान पर्वत के निवासी म्यूर-टोटेम वाले यातुधान/गन्धर्व हेती प्रहेती ही शंड़ और मर्क है जो मारकण्ड़ा प्रदेश में आये। इनके वंशज माल्यवान, माली, सुमाली नामों में ''माल'' शब्द मारकन्ड़/मारशण्ड़/ मारतण्ड़ > तुंड़/शुंड़/शूंड आदि में दिख रहा है। इसी प्रकार मारीच माली अथवा मारी या मार (कण्ड़) से बना प्रतीत होता है।...[14] सब नाम स्थान एवं ज़ातिवाचक हैं। रक्ष और यक्ष दोनों शाखाऐं-उनमें एक प्रकार से दो वर्ण थे... क्षत्रिय राक्षस और प्रजा। आर्य जन इस वर्ण व्यवस्था को चार अथवा पाँच तक विकसित कर गये, तभी आर्यो की जटिल वर्ण व्यवस्था ने समय-समय पर प्रजा में आक्रोश पैदा किया; इसके विपरीत अनार्यो-ब्रहमग्रहों में व्यवस्था सामान्य थी; विवाह व्यवस्था भी इस कारण अधिक गूढ नहीं थी-सीधी-साधी हरण पैशाचिक गज-गन्धर्वी प्रथा थी... और विवाहोपरान्त भी स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता थी।

यातुधान यादव और यति-ययाति

यातुधन और यातुओं का सम्बन्ध यदु जनों से था, वे यदुओं की असंख्यों शाखाओं में से एक थे। बाल्मिकी0 उत्तर कांड़ में ययाति के पुत्र यदु का सम्बन्ध यातुधानों से स्पष्ट है कि यातुधान यदु द्वारा निर्मित किये गये।[15] अथर्ववेद 19.46.2 में पणिजन यातुधानों के साथ वर्णित किये गये है।[16] रावण की मौंसी कुब्बीनसी को हरण कर (प्रथानुसार) भगा ले जाने वाला मथुरा का मधुयादव दैत्य कहा गया है और इसका पुत्र लवण जिसे राम के भाई शत्रुघन ने मारा, असुर वर्णित है।[17] आर्यो के लिये असुर राक्षस आदि अन्य अनार्यो की भांति जिन्हें कि उन्होंने ब्रात्य कहा है, अन्धक, वृष्णि यादव ब्रात्यों की श्रेणी में गिने गये हैं। [18]



यातुधान और यातुओं का सम्बन्ध केवल यदुओं से ही नहीं अपितु उन यति, ययाति, संयाति आदि से भी प्रतीत होता है जो पुराणों में चन्द्रवंशी नहुष के पुत्र है[19] सम्भवत: वे जो अभी तक असभ्य तो नहीं किन्तु अर्धसभ्य अवश्य थे; थोड़े बहुत पशुपालक तो थे किन्तु वनों पर आश्रित, यायावर थे। वे आर्यो की भाँति स्थाई रूप से बस्तियाँ नहीं बसाते थे, यति-ययाति अथवा यातुधान कहे गये। क्योंकि नहुष पुराणों में एक स्थान पर एक मरूदत का नाम है।[20] यदु के एक पुत्र का नाम भी नहुष है[21] और एक नहुष नाग भी है[82] ऐसा लगता है कि अगस्त्य द्वारा शाप देकर नहुष को अजगर बनाने की कथा काल्पनिक है, वह तो था ही अज-अहि अर्थात पिशाच... अर्थात नाग...।[23]

रम्भ जो अगले जन्म में रक्तबीज हुआ, के पुत्र का नाम महिष था।[24] अब जहाँ आयु के पाँच पुत्रों नहुष, क्षत्रवृद्ध, रजि, रम्भ और अनेना में से एक नाम रम्भ है[25] वहीं किसी दूसरे आयु

के एक पुत्र का नाम महिष भी है[26] इसका पिता आयु कोई दूसरा आयु नहीं अपितु उसी पुरूरवा का पुत्र आयु रहा होगा जो पचास वर्षों तक उर्वशी अपसरा के साथ रहा और उर्वशी की शर्तों के अनुसार केवल घृत का सेवन करता रहा[27] अर्थात वह स्थाई बस्तियों का कृषक आर्य नहीं अपितु वनों पर आश्रित पशुपालक यायावर पिशाच ही था...। इस प्रकार वह चण्ड़ हुआ या चन्द्रवंशी। वैदिक पूषा का अपभ्रंश/पौराणिक रूप पिशाच है और पिशाचिनियाँ... पूषरा अपसरायें थीं, वे कपि भी थीं और मतस्याऐं भी। वे जल अर्थात ''आप'' से सम्बन्धित अपसराऐं। और ये पिशाचिनियाँ या चण्ड़ालिकाऐं ही थीं...। **इन सबको हमें नैतिकता विरोधी अर्थों में नहीं लेना चाहिये। इतिहास विजेता के अनुसार ही लिखा जाता है। आर्यों से इतर सभी अनार्यजनों को नास्तिक, धर्मविरोधी, मूर्ख, नरभक्षी, निशाचर, मृधवाच आदि बताते हुऐ पशु-पक्षी टोटेम जनों में वर्णित कर दिया गया-पिशाच, नाग, हस्ति सुपुर्ण, वानर, अहि, महिष, मतस्य, कपि, म्यूर, तार्क्ष्य, यक्ष, व्याघ्र, मर्कट, मकर रक्ष, वराह, गज, किन्नर, ऋक्ष, भल्लूक, गरूड, कपोत, मण्डूक, गर्दभ, वृष आदि।**

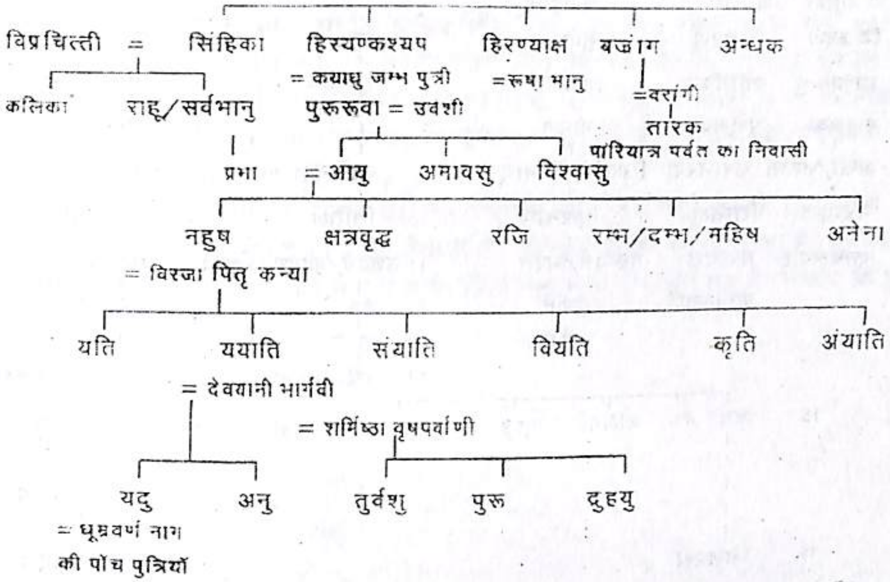
रम्भ, जम्भ, दम्भ, महिष, नहुष सभी में साम्य है। जम्भ= जम्भाई लेने वाला; दम्भ=दम्भी...; रम्भ... रम्भाने वाला अर्थात महिष। महिष जनों का टोटेम महिष अर्थात भैंसा था... जाहिर है महिष का स्त्रीलिंग महिषी=रम्भा था। महिष जन मैनाक पर्वत-शिवालिक पर्वतमाला के मय ही थे। रम्भ जनों का प्रदेश ही रम्यक रहा होगा; पुराणों में रम्यक हिरण्यमयवर्ष का एक भाग कहा गया, महिष जन एक प्रकार से थे भी हिरण्य जन ही। जहाँ एक ओर मय और रम्भा की छह सन्तानों में से एक का नाम महिष है[28] वहीं नहुष और महिष आयु के पुत्र हैं। ये व्यक्तिगत नाम नहीं अपितु स्थानवाचक या जातिवाचक नाम थे। रम्भा कोई एक अपसरा अथवा चिरयौवना स्त्री नहीं थी जो रावण की स्त्री मंदोदरी की माता भी रही हो और कुबेर के पुत्र नलकुबेर की स्त्री भी। रम्भा का शील हरण रावण ने किया था।[29]

विप्रचित्ती दानव के पुत्र राहु की पुत्री प्रभा... आयु की स्त्री थी। [30] यह भी हो सकता है कि प्रभा कोई रम्भा (प्ररम्भा) अर्थात महिष स्त्री रही हो। इसी प्रकार राहू भी कोई रम्भ (राहुम्भ) महिष रहा हो।

शतपथ ब्रा0 11.5.1.1-17 के अनुसार पुरूरूवा ने गन्धर्वों से यज्ञ-पूजा का नया तरीका सीखा और ब्रहमाण्ड़0 के **''एकोऽग्निः पूर्वमासीद वै ऐलस्तं त्रीनकल्पयत''** के अनुसार उसने अग्नि को तीन भागों में बाँटा।[31] हमने पहले देखा कि गन्धर्व पितृ-पिशाचजन ही थे जो गायन-वादन करते हुऐ वैदिक जनों की बस्तियों में घूमते, उनका मनोरंजन कर, जीवनयापन करते, साथ ही वैदिक जनों के क्रियाकलापों, रहन-सहन, कर्म, कृषि, धर्म, देवतन्त्र, यज्ञ पूजा, अग्नि के प्रयोगों और अन्य कामों के विषय में जानकारी प्राप्त करते थे। यह ज्ञान उनसे पुरूरूवा तक आया। **सदाशिव ड़ाँगी**, पुरूरूवा को एक Neo Retualist मानते हैं।[32] **सिन्धु एस. ड़ाँगी** का मानना है कि पुरूरूवा एक गन्धर्व समाज का व्यक्ति था।[33] नैमिष क्षेत्र में पुरूरूवा ब्राहमणों द्वारा पीटा गया। हो सकता है वैदिक जनों के जीवन, कर्म, यज्ञ पूजा आदि से प्रभावित होकर[34] और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिये पुरूरूवा ब्राहमणों द्वारा निर्धारित की गई पिशाच गन्धर्वों की सीमाओं को भूल गया हो।

पुरूरवा ने अग्नि को तीन भागों में बाँटा; वह महीने में एक बार अमावस्या को पिशाचों से मिला करता था।[35] हो सकता है कि वह अपनी जाति-समाज को शिक्षित करता हो; आर्यों से सीखी हुई अग्नि के प्रयोग की विधियाँ सिखाता हो। उन्हें स्थाई बस्तियाँ बसाकर कृषि जैसे कार्यों के लिये प्रेरित करता रहा हो। किन्तु इस विषय पर उर्वशी ने उसे पिशाच या अनार्य

असुर समाज की शर्तों से बाँधें रखा कि जिस दिन भी कोई शर्त टूटी वह उसे छोड़कर चली जायेगी... और एक दिन वह चली भी गई।



ययाति के तीन पुत्रों यदु, अनु और तुर्वशु की वंशावलियों के नामों में इतना अधिक साम्य है कि मूल रूप से सभी यादव प्रतीत होते हैं। इन्हीं के अन्तर्गत महिष भी थे। महिष एक पूरी टोटेमिक जाति थी यादवों की शाखा हैहय में एक महिष्मत है जिन्होंने महिष्मती नगरी बसाई। इसे सांहजन का पुत्र कहा गया है। साहजन के मूल सृज्जय शब्द का अर्थ भी ''काला भैंसा'' ही होता है। शिव-महेश अथवा महेश्वर है, वह महिषों का अराध्य देव है। जिस प्रकार वसुओं की धरा वसुन्धरा; पृथुजनों की धरा पृथ्वी उसी प्रकार महिषों की धरा ''महि''। प्राचीन भूगोल वेत्ता शिवालिक को मैनाक के नाम से जानते थे मैनाक पर्वत के मय ही महिष थे; कालेसर कैलाश था। आज के सहारनपुर जिले की नदी मस्कारा के पार तक ये सृज्जय/महिष जन फैले।

जिस प्रकार हस्तिनापुर राज्य में भीष्म आठवें वसु के रूप में वर्णित और कान्यकुब्ज में अमावसु ने राज्य स्थापित किया-वसुओं के प्रसार का पता चलता है कि अमावसु के वंशज कुश के चार पुत्रों कुशाम्ब, कुशनाभ, अमूर्तरजस और वसु ने कौशाम्बी, महोदय, धर्मारण्य और गिरीब्रज नामक चार नगरों की स्थापना की थी।[36] अवश्य ही यह गिरीब्रज... मगध वाला रहा होगा, अर्थात मगध भी वसुजनों (चैद्योपरिचर वसु) ने ही बसाया। इस प्रकार हम यातु-ययाति-यदु जनों की एक श्रंखला प्राप्त करते हैं-नहुष, महिष... वसु, तुर्वसु, अर्थात नहिषु महिषु,... वहिषु[37] या फिर यातु...ययातु...यदु... सभी मूल रूप से एक ही है- सरस्वती नदी प्रदेश के। तभी तो नहुष, महिष... त्रुर्वसु... वसु सभी में साम्य हैं; कहीं कहीं सोमक... सहदेव का साम्य है (जैसा कि हमने पीछे देखा) तो कहीं तृणबिन्दु, करन्धम, मरूदत, उशीनर का साम्य है-

यहाँ एक बात स्पष्ट हो जाती है कि नहुष, महिष, वसु तुर्वसु... और त्रित्सु में से त्रित्सु जन अपेक्षाकृत शीघ्र कृषक बने, उन्होंने स्थाई बस्तियाँ बसाई... लिपि का प्रयोग किया...धनुष

यदुवंश (वायु के अनुसार)	यदुवंश (मतस्य के अनुसार)	तुर्वशु वंश (विष्णु0 के अनुसार)	अनुवंश		वैशली का राजवंश (विष्णु0 के अनुसार)	
चित्ररथ	चित्ररथ	तुर्वशु	1.	अनु	1.	मनु
शशिबिन्दु	शशिबिन्दु	वाहिनी	4.	सृज्जय	2.	नामानेदिस्ट
पृथुश्रवा	पृथुश्रवा	गोमानु			3.	नाभाग
अन्तर/उस्नस	उसनरस	त्रिसन्च/त्रिभानु	9.	उशीनर		
मरूदत	तितिक्षु	करन्धम	10.	तितिक्ष	14	करन्धम
कम्बलवर्हि	मरूदत	गरूदत/भरत	11.	उशद्रथ/बृहद्रथ/रूशद्रथ	15.	अवीक्षित
	कम्बलवर्हि	दुष्यंत	12.	हैम	16.	मरूदत
		गोद लिया	13	सुतप		
			14.	बलि=सुदक्षिणा	26.	तृणबिन्दु=अलम्बुश

15. अंग वंग कलिंग पुण्ड्र सुह्य आन्ध्र

19. चित्ररथ (अंग से)

27. इडविडा =पौलस्त्य — कुबेर =अलका — नलकुबर =रम्भा

विशाल — सृज्जय — सहदेव — कृशाश्व — सोमदत्त

बाण का विकास किया... लोहे का प्रयोग भी सम्भवत इन्होंने ही पहले किया... हर कार्य के लिये एक अलग देवता... अर्थात इन्द्र..., मित्र, वरूण, नासत्य..., दस्त्र..., सविता, ऊषा.., पर्जन्य आदि वाला एक विस्तृत देवतन्त्र। मतलब यह है कि त्रित्सु पहले आर्य थे और... यदु/सृज्जय उनसे थोड़ा सा पीछे। पहले पहल भले ही सृज्जयों ने त्रित्सुजनों के साथ मित्रता का व्यवहार किया, एक ही गुरूओं-भारद्वाजों में आस्था रखी...[38] उनके देवतन्त्र को माना, किन्तु फिर शीघ्र ही मित्रता और मिलकर शत्रुओं से लड़ने[39] के सभी आयाम पलट गये..[40] सुदास पैजवन के नेतृत्व में भले ही सृज्जयों ने सरस्वती प्रदेश से त्रित्सुतत्ता को उखाड़ फैंका किन्तु ब्राहमणवाद और वर्णव्यवस्था नहीं उखड़ पाई...। आर्यों का इन्द्र... सविता... ऊषा वाला देवतन्त्र कृष्ण तक आते-आते दम तोड़ गया किन्तु सृज्जयों, महिषों-हिरण्यों की सीधे-कौटाम्बिक विवाह व्यवस्था भी नहीं टिकी रह सकी।

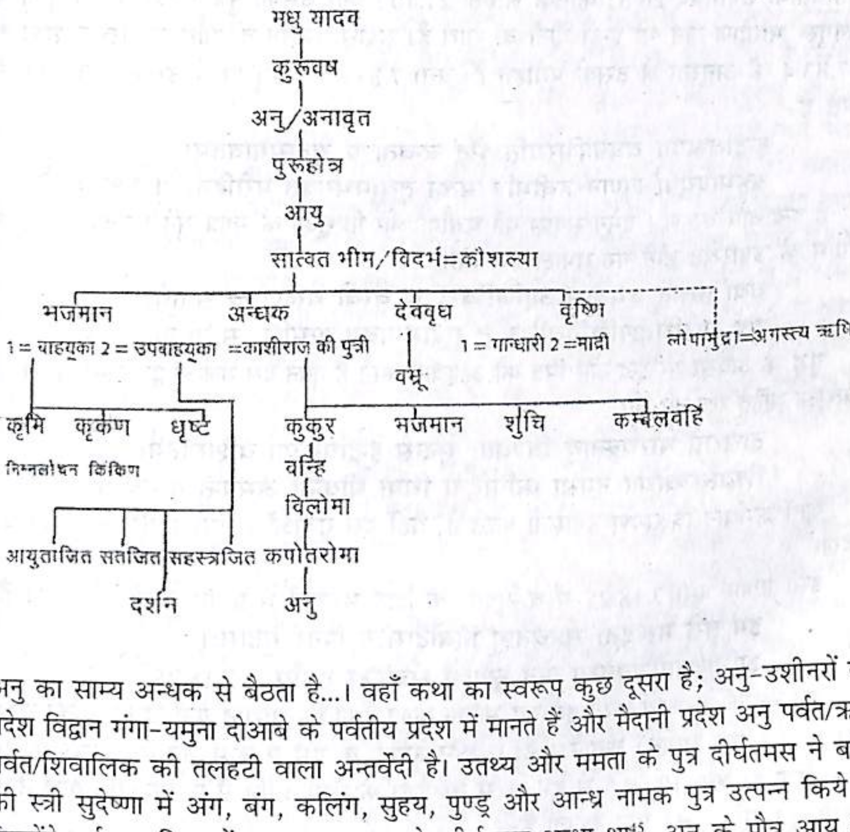
अन्धक-असन्द क्षेत्र के यदुजन

क्रौंच द्वीप के अधिपति द्युतिमान के पुत्र अंधकार के राज्य का नाम अन्धकारक था। इसी राज्य में अंधकारक एक पर्वत का नाम भी था।[41] क्रौंच द्वीप... उस क्रौंचरन्ध्र के आसपास था। क्रौंचरन्ध्र शिवालिक पहाड़ियों के बीच वह करौंदी घाटी है जहाँ से यमुना नदी पर्वतों से निकलकर मैदानों में प्रवेश करती है। इसके पूर्व के पर्वत अन्जन/हाथी/ऋक्ष पर्वत थे और पश्चिम में कैलाश और मैनाक; कैलाश यमुना तट पर कालेसर है।[42] शिवालिक/मैनाक पर्वत पर मोरनी से लेकर सोम्ब नदी के उदगम तक का पर्वत वैद्यूत था। वैद्यूत-वैभ्राज

(=ब्रज-बिजली-दिप्ती भरे) यदि हेती-प्रहेती-विद्युतकेशों आदि म्यूर टोटेमिक जनों का क्षेत्र था तो दक्षिण में असन्द के चारों ओर का विशाल प्रदेश (असन्द > असंधक >) अन्धक जनों का अन्धकारक। इस अन्धकारक के स्वामी या निवासी तो मूल रूप से वैद्यूत जन या द्युतिमान जन ही थे। अंध-विन्ध्य (प्राचीनकाल का शिवालिक) यादव विन्द-अनुविंद के मूल में भी हैं।

अन्धक हिरण्यदैत्य था... अर्थात कश्यप और दिति का हजार सिरों वाला दैत्य पुत्र, जो अन्ततः शिव का एक गण बन गया था।[43] हजार सिरों का अर्थ है कि अन्धक सृञ्जय जन ही थे[44] अर्थात महिष जाति...। सृञ्जय जन यादव हैहय थे, वे म्यूर टोटेमिक थे अर्थात मरूदत गण भी थे। पुराणों में मरूदत गण रूद्र और वृष्णि के पुत्र हैं और अन्धक वृष्णि यादवों की वह शाखा है जिसमें कृष्ण हुऐ थे।

हिरण्यदैत्य देव विरोधी हैं, उनके यहाँ वर्ण व्यवस्था जैसी चीज नहीं मिलती...। अन्धक भी शैव्य हैं...। कृष्ण भी आर्य देवतन्त्र का विरोधी है, वह म्यूर टोटेम धारण करता है, हिरण्याक्ष के पुत्र और कहीं कहीं यातुधान के पुत्र हेती-प्रहेती म्यूर-मुर्गा से सम्बन्धित हैं। ययाति के पुत्र



अनु का साम्य अन्धक से बैठता है...। वहाँ कथा का स्वरूप कुछ दूसरा है; अनु-उशीनरों का प्रदेश विद्वान गंगा-यमुना दोआबे के पर्वतीय प्रदेश में मानते हैं और मैदानी प्रदेश अनु पर्वत/ऋक्ष पर्वत/शिवालिक की तलहटी वाला अन्तर्वेदी है। उतथ्य और ममता के पुत्र दीर्घतमस ने बलि की स्त्री सुदेष्णा में अंग, बंग, कलिंग, सुहय, पुण्ड्र और आन्ध्र नामक पुत्र उत्पन्न किये थे जिन्होंने पूर्व व दक्षिण में जाकर राज्य बसाये। दीर्घतमस अन्धा था[45] अनु के पौत्र आयु का एक पुत्र सात्वत था, यह विदर्भ राज भीम सात्वत कहा गया है। इस भीम सात्वत के कई पुत्र थे- भजमान, देववृघ, वृष्णि और अन्धक।

सुदास द्वारा अश्वमेघ यज्ञ वर्णन के एक श्लोक ऋ0 3.53.7 में भोजों को सुदास पैजवन का वंशज बताया गया है।

इमे भोजा अंगिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्त्रसावे प्र तिरन्त आयुः॥

और ऋ0 7.18.22 में सुदास पैजवन सृञ्जय देववात का दौहित्र/नाती है

द्वै नप्तुर्देववतः शते गोर्धारथ वधुमन्ता सुदासः।

तात्पर्य यह कि सुदास पैजवन सृञ्जय नहीं था; अपितु उसकी माता सृञ्जयों की पुत्री थी ऋ0 7.18.25 के अनुसार त्रित्सुजन उसके शत्रु है जिन्हें वह परूष्णी के दासराज संग्राम में पराजित करता है-

इन्द्रेणेते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अधवन्त नीचीः।
दुर्भित्रास प्रकलविन्मिन्माना जहुर्विश्वानि भोजना सुदासे॥

अर्थात सुदास पैजवन, त्रित्सु दिवोदास का पुत्र, पौत्र या वंशज नहीं है; उसका दिवोदास से मात्र शत्रुता का सम्बन्ध हैं। दिवोदास का पुत्र और उत्तराधिकारी तो प्रर्तदन दैवोदासि (कोषितकि उपनिषद 26.5; काठक संहिता 21.10) और उसका पुत्र क्षत्रश्री है। त्रित्सुओं के कुलगुरू भारद्वाज जन भी इन्हीं दौनों के साथ है। सुदास पैजवन के साथ तो गुरू वशिष्ठ हैं। 0 7.83.4 के अनुसार वे उसके पुरोहित हैं। ऋ0 7.83.8 के अनुसार वे उसके लिये उपासना करते हैं-

इन्द्रावरूणा वधनाभिरप्रति भेदं वन्वता प्र सुदासमावतम्।
ब्रहमाण्येषां शृणतं हवीमनि सत्या तृत्सुमभगवत पुरोहितः ॥ 7.83.4

हे इन्द्र और वरूण ! तुमने सुदास को बचाया और व्रित्सुओं के स्तोत्र सुने ! उनका पौरोहित्य संग्राम के उपस्थित होने पर सफल हो गया।

युबां हवन्त उभयास आजिष्विन्द्रं च वस्वो वरूणं च सातये।
यत्र राजभिर्दशभिर्निवधितं द्र सुदासमावतं तृत्सुभिः सह॥ ऋ. 7.83.6

युद्ध के अवसर पर इन्द्र और मित्र का आह्वान करते हैं तुमने दस राजाओं द्वारा त्रस्त सुदास की त्रित्सुओं सहित रक्षा की थी।

दासराज्ञे परियक्ताय विश्वतः सुदास इन्द्रावरूणा वशिस्त्रतम।
शिवत्यज्वोयत्र नमसा कपिर्दिनो धिया धीवन्तो असपन्त तृत्सवः॥ 7.83.8

जहाँ कर्मवान त्रित्सुगण उपासना करते हैं, वहीं दस राजाओं से घिरे सुदास को तमने बल दिया।

इसी प्रकार ऋ0 7.18.25 में वे सुदास के लिये मरूद्‌तों से प्रार्थना करते हुऐ कहते हैं-

इमं नरो मरूद्‌तः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदासः।
अविष्टनापैजवनस्य केतं दूर्णाशं क्षत्रमजरं दुवोयु ॥ 7.18.25

इस श्लोक का अर्थ करते हुऐ यह मानना गलत होगा कि वशिष्ठ यहाँ दिवोदास को सुदास का पितरं (पिता समान) कह रहा है। वशिष्ठ उर्वशी के गर्भ से जन्म लेने वाला मित्र का पुत्र कहा गया है। ऋ0 10.69.5 से हमें त्रित्सु वर्ध्याश्व के लिये अग्नि से प्रार्थना रचने वाले उनके ऋषि पुत्र सुमित्र का पता चलता है-

भवा द्युम्नि वाध्यश्वोत गोपा मात्वा तारीदभिमातिर्जनानान्।
शूर इव धृष्णुश्च्यवनः सुमित्रः प्र ने वोचं वार्ध्यश्वस्य नाम॥ 10.69.5

अद्‌भुत रूप से जन्म लेने के कारण वशिष्ठ को नश्वर पिता सुमित्र का नाम ना मिल पाया हो इसीलिये उसे देवता मित्र का नाम दे दिया गया हो? तभी लगभग सभी स्थानों पर वह स्वयं

को त्रित्सु ही कहता है। इस प्रकार सुदास दिवोदास का पुत्र पौत्र या वंशज सिद्ध नहीं होता।

यदि ऋ0 3.53.7 में कहे अनुसार सुदास पैजवन के वंशज भोज हैं तो अवश्य ही यह यादव है... और यादव सात्वत के पुत्र भजमान यादव से सम्बन्धित है। पुराणों से हमें पता चलता है कि सृञ्जय की दो पुत्रियाँ भजमान यादव को ब्याही थीं... वह सृञ्जय राजा वही देववात रहा होगा)ऋ0 7.18.22 में) जिसका दौहित्र/नाती सुदास पैजवन कहा गया है। ऐसे में सदुास पैजवन ही यादव भजमान का पुत्र सम्भवत: वह धृष्ट है जिसने पुराणों के अनुसार शत्रुओं के नगर जीते थे। भजमान यादव के पुत्रों की आगे कोई वंश अथवा वंशावली नहीं मिलती। सम्भवत: ब्राहमणों को त्रस्त करने और वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को अग्नि में जीवित जलाने जैसी अनेक घटनाओं के कारण युद्ध -संघर्ष में भजमान यादव का परिवार समाप्त हो गया प्रतीत होता है। सारांश यह कि भजमान नाम वैदिक पैजवन का अपभ्रंश है।

यादव वंशावली के देववृध और उसका पुत्र वभ्रू दोनों ही ऐत्तेय ब्रा0 7.34 में है। यहाँ वभ्रू, पर्वत और नारद के शिष्य है[46] वहीं पर्वत और नारद सहदेव सृञ्जय के अभिषेखकर्ता और पुरोहित थे[47] अत: अवश्य ही सहदेव साृञ्जय, सोमक, वभ्रू और सृञ्जयों के नेतृत्वकर्ता सुदास पैजवन में सम्बन्ध है; यह सम्बन्ध जातीय ही हो सकता है। पणिओं में एक श्रेष्ठ बृबु[48] है, ऋग्वेद 6.45.31-33 में वह उदार दान-दाता है।[49] शांखायन श्रौत सूत्र 16.11.11 के अनुसार भारद्वाज ऋषि ने बृबु तक्षण (> तक्षक/नाग/कपि/पणि) और प्रस्तोक साृञ्जय से उपहार पाये थे।[50]

पणि बृबु तक्षण और यादव वभ्रू आत्रेय में कोई भी भेद नहीं। दोनों एक ही थे। क्योंकि वभ्रू आत्रेय के वंशज दत्तात्रेय[51] के द्वारा सहत्रबाहु अर्जन/सुदास पैजवन को हजार भुजायें प्रदान करने का अर्थ ''अपना पूर्ण समर्थन'' ही है। यह देववृध ऋ. 7.18.22 में वर्णित सुदास पैजवन का नाना देववात ही प्रतीत होता है। देववृध और बभ्रू का सम्बन्ध पर्णाशा नदी से है। आज भले ही यह पर्णाशा नदी पश्चिमी मालवा में बनास नदी मानी जाती हो[52] किन्तु वैदिक काल में पर्णाशा का सम्बन्ध पणियों से उसी प्रकार था जैसे सरस्वती यमुना प्रदेश के पानीपत (पणिप्रस्थ) का। इस मूल प्रदेश से पणि-यादवों की कोई शाखा बाद में पश्चिमी मालवा में जा बसी होगी। सारांश यह है कि भरतों ; भाग्रतों = नागों) में से कुछ यति-ययाति-यदु (यातुधान[53]) बाद में सृञ्जय, यादव, वीतीहव्य, भोज, तुण्ड़िकेरा/शुण्ड़िकेरा (तुण्ड़=शुण्ड़=हस्ती=हाथी=गज=गुर्जर) हुऐ, कुछ पणि (फ़ण=नाग) हुऐ। पणि स्त्रियों (अपसराओं) की संतानें पणिडू=पाँड़व हुऐ। इनकी स्त्रियों ने भी जीवनयापन के लिये वैदिक जनों की सेवा करते हुऐ कुण्ड़ संतानों को जन्म दिया। विश्व की प्राचीन सभ्यताओं के साहित्यों की भाँति यहाँ भी विश्वास रहा कि देवता लोग नश्वर स्त्रियों से संताने उत्पन्न करते हैं। इस मान्यता की आवश्यकता मातृसत्तात्मक समाज को पितृसत्तात्मक समाज में बदले जाने के लिये पड़ी होगी। ऐत्तेय ब्राहमण 7.34 में ही भीम वैदर्भ का उल्लेख पर्वत और नारद के सन्दर्भ में है। सात्वत अथवा भीम वैदर्भ यादव था...। पर्वत और नारद के साथ यादवों का इतना उल्लेख यादवों के सृञ्जय होने की धारणा की पुष्टि करता है। सृञ्जयों का विरोध त्रित्सुओं से था। ऋ. 7.18.20 में एक देवक मान्यमान है जो त्रित्सुओं का विरोधी है और छान्दोग्य उपनिषद 3.17.6 में देवक, देवकी पुत्र कृष्ण का मातृनामोदृत नाम है। महाभारत आदि ग्रन्थों में कृष्ण की माता देवकी का पिता देवक था[54] यहा देवक मान्यमान ही कृष्ण का नाना या नाना का कुलीय नाम हो सकता है और यह सृञ्जय जन ही रहा होगा...। वे ही वृष्णि... अर्थात म्यूर टोटेम वाले है और वे ही वृष्णि अर्थात धर्मभ्रस्ट और पाखंड़ी है; जिन्होंने सरस्वती नदी क्षेत्र के त्रित्सु आर्यो का उनके ब्राहमणवाद का और उनके विस्तृत देवतन्त्र का विरोध किया था।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. वामन शिवरामन आप्टे, पृ0 883; (भूतों को एक वर्ग विशेष ब्रहमराक्षसगण है जिसके अन्तर्गत वे अगस्त्य तथा विश्वामित्र के वंशज माने गये है। - राणा प्रसाद शर्मा पृ0 360
2. दामोदर सात्वलेकर, ''वैदिक आख्यान माला-26'' रक्षकों के राक्षस पृ0.7,8
3. पार्जीटर, पृ0 319
4. सात्वलेकर, पृ0 8
5. के.सी. यादव ''हरियाणा का इतिहास'', दिल्ली, 1982, पृ0 2,22; राणा प्रसाद शर्मा पृ0 358-59; चौ० वृन्दावन कानूनगो ''खोज गीता स्थल की'' अंगरि शोध संस्थान के प्रकाशन भारतीय संस्कृति दर्शन एवं सभ्यता में लेख, जींद, 1984, पृ0 91 पर वामण पुराण 33.9 सरस्वती दृष्द्वत्योर्देवनद्यौर्यदन्तरम्। त देव निर्मितं देशं ब्रहमावर्त प्रचक्षते''
6. राणाप्रसाद शर्मा पृ0 83
7. वही, पृ0 360
8. वही, पृ0 13
9. वही, पृ0 438
10. वही, पृ0 360; हापकिन्स, ''ऐपिक माईथोलोजी,'' दिल्ली, 1968, पृ0 44
11. वही पृ0 201
12. वही
13. यह नाम उस कलिका के साथ साम्य रखता है जो हिरण्यदैत्य की बहन सिंहिंका और विप्रचित्ती दानव की पुत्री थी। कलिका के पुत्र कालिकेय कहलाये; सूपनखा का पति विद्युज्जिन्ह, सुकेष और विज्वला का पुत्र था। इन नामों से इनके वैद्यूत पर्वत के निवासी होने का पता चलता है।
14. पुष्पोत्कटा > कटी > कंटकटी > कैकसी > केसी > कैसिनी। मालिनी > माल्यवालिनी > माल्यवानी (माल्यवान की पुत्री) ; राका < लाका < काल्यका (कालका की पुत्री) राणा प्रसाद शर्मा पृ0-470

    विश्रवा= 1 इड़विड़ा (तृणबिन्दु की पुत्री) -- कुबेर
    = 2 पुष्पोत्कटा/कैकसी /केसिनी -- रावण
    -- कुंभकर्ण
    = 3 मालिनी --------------- विभीषण
    = 4 राका ---------------- खर सुकेष = विज्जवला
    \
    -- सूपनखा = विद्युजिजिन्ह

    उपरोक्त तथ्यों से इस जाति के उत्तर पूर्वी हरियाणा के केसिनीवाली, राका-राक्षी या कारा/करोंदी (सहारनपुर जिला) नदियों के क्षेत्र में होने का आभाष मिलता है और लंका (पलक्षा नदी क्षेत्र के पलकंष = राक्षस) के उत्तर में जिस सागर की बात की गई है वह शिग्रु जनों का श्रूघन अर्थात सागर > सागरन > सहारनपुर था। शिग्रुओं की सुदास पैजवन द्वारा पराजय की घटना पौराणिक हैहयों द्वारा सगर के पिता बाहुक की पराजय के मूल में है।
15. ओ. पी. भारद्वाज, ''दा मूजवत एंड़ दा महावृष'' जर्नल आफ इण्डोलोजिकल स्टड़ीज, 1985 पृ0-55; यदु पिता के शाप के बाद क्रौंचवन चला गया था और वहाँ उसने अनेक राक्षस पैदा किये- रामकुमार राय, ''वाल्मिकीय रामायण कोष'' वाराणसी , 1965, पृ0 - 250 इस हिसाब से वह राक्षसी प्रवृति वाला था और उसकी सन्तत्ति राक्षस और यातुधान थे- पार्जीटर, पृ0- 82;मेरे अनुमान से यदु और उसकी सन्तत्ति को राक्षस या यातुधान प्रवृति के

कारण नहीं अपितु राक्षी नदी/मस्कारा नदी के क्षेत्र में निवास करने के कारण कहा गया है।

16. **वही**, पृ0 46
17. खशा और कश्यप के एक राक्षस पुत्र का नाम भी मधु है।
18. **ओ० पी० भारद्वाज**, पृ0 43; **रोमिला थापर**, **''प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास,''** **अनु० आदित्य नारायण सिंह**, दिल्ली, 2001, पृ0 -298 ; 309; टिप्पणी 10
19. भागवत0 के अनुसार नहुष के यति, ययाति, संयाति, अयाति, वियाति और कृत छह पुत्र थे। मतस्य0 में पुत्रों की संख्या सात है-यति, ययाति, संयाति, अंयाति, मेघतिथि, उद्रव व प्राची। महाभारत आदि0 में यति, ययाति, संयाति, आयाति, अयति और ध्रुव ये पाँच पुत्र थे।
20. हरिवंश में 49 मरूदत्तों में से एक मरूदत का नाम नहुष-**राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 216
21. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 216
22. नहुष एक काद्रवेय नाग--**राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 216
23. अ़ज-एक कुष्मांड़ पिशाच ; दक्ष को अज का शीश लगाया गया था; केसरी वानर की दूसरी स्त्री-आद्रि बिल्ली के मुख वाली, पिशाचिनी/अपसरा, जो आद्रि नामक पिशाच राजा की और अजगन्धा/मतस्यगन्धा/सत्यवती की माता बनी; अजमीढ़, अजनाभ अथवा हस्ति/गज जन जिन्हें सुदास पैजवन ने यमुना तट पर यक्षों, शिग्रुओं के साथ पराजित किया- ऋ0 7.18.18-19. ; 13.3; 83.4 इन अज-गज-हस्ति-नाग जनों ने ही बाद में गंगा तट पर हस्तिनापुर / गजसाहव्यं / नागसाहव्यं बसाया।
24. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0-440
25. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 440
26. **वही**, पृ0 411; ब्रहमा0 में महिष, आयु अग्नि का पुत्र और सहस का पिता है; और वायु0 में शाल्मली द्वीप के एक पर्वत का नाम महिष और वहाँ पर जल से उत्पन्न एक अग्नि का नाम भी महिष; कुश द्वीप का एक विभाग, एक पर्वत और वहाँ पर भी जल से उत्पन्न एक अग्नि का नाम भी महिष; केतुमाल का एक जनपद।
27. **वही** पृ0 315
28. ब्रहमाड़ वायु0 में मय और रम्भा का पुत्र महिष; रम्भ दैत्य का पुत्र महिष; भागवत0 में हिरण्यकशिपु के पुत्र अनुहलाद का सूर्म्या से उत्पन्न पुत्र महिष; ब्रहमा0 के अनुसार कलिंग, महिष और महेन्द्र निलय पर गुहय का शासन था; मतस्य के अनुसार रूद्रगण, गऊ, महिष-महिषी आदि सुरभि और कश्यप की संताने हैं- **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 411
29. इस पर नल कुबेर ने रावण को शाप दिया था कि यदि वह किसी स्त्री के साथ बलात्कार करेगा तो उसकी मृत्यु हो जायेगी।
30. प्रभा सर्वभानु की पुत्री है-**राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 334
31. **सिन्धु एस० ड़ॉगे ''सम नान वैदिक रिटयूल्स इन दा वैदिक ट्रैड़िशन''** जर्नल आफॅ इण्ड़ोलोजीकल स्टडीज, 1987, पृ0 -5,6,7
32. **वही**,
33. **वही**,
34. **वही**,
35. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 315
36. **आर० सिद्धान्ता शास्त्री**, पृ0 154
37. भागवत0 में आयु एक वसु का नाम भी है जो प्राण और उर्जस्वती का पुत्र तथा वितुण्ड़ का पिता था -**राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 47; पुरूरवा और उर्वशी के छह पुत्रों में आयु, अमावसु, विश्वासु, धीमान, शतायु और गतायु नाम हैं- वही पृ0 315; इससे लगता है कि आयु, वसु, तुण्ड़ (गज) एक ही थे।

38. ऋ0 6.47.22 के अनुसार वाजिनी भारद्वाज के पुत्र गर्ग (ऋग्वेद सायन क्रम. 6.47) ने अतिथिग्व दिवोदास और सृंज्जय के पुत्र प्रस्तोक से दस अश्व और स्वर्ण पिण्ड उपहार में प्राप्त किये थे- **सीतानाथ प्रधान, ''क्रोनोलोजी आफ ऐंशेंट इड़िया''**, दिल्ली, 1979, पृ0 7-9
39. ऋ0 6.27.7-8 के अनुसार प्रस्तोक सृाज्जय और अभ्यवर्ती चायमान ने हरियूपिया नदी क्षेत्र के वर्शिख के पुत्रों-वृचिवन्तों और तुर्वशु जनों को पराजित किया था तब पृथु के वंशज अभ्यवर्ती चायमान ने भारद्वाज को स्त्रियाँ और गाऐं दान में दीं थीं। वृहददेवता 5.124-138 के अनुसार वाजिनेय भारद्वाज के पुत्र पायु ने इससे पहले वर्शिख पुत्रों द्वारा पराजित प्रस्तोक सृज्जय और अभ्यवर्ती चायमान के लिये यज्ञ भी किया था- **सीतानाथ प्रधान** पृ0 9-10
40. वे सृज्जयजन जो हरियूपिया नदी के तट पर पृथुओं के साथ मिलकर वृचिवन्तों और तुर्वशुओं के विरूद्ध लड़े थे, दासराज संग्राम में पृथुओं के विरूद्ध हैं। ऋ0 7.18.8 में **''महनाविव्यक् पृथिवीं पत्यमान पशुष्कविरशयच्चायमान।''** अर्थात सुदास पैजवन ने कवि चायमान को पालतू पशु के समान मारकर भूमि पर सुला दिया।
41. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 5
42. गाद, मिट्टी और पत्थरों के कारण करोंदी घाटी बंद हो जाती थी जिससे विशाल गिरित्र समुद्र का निर्माण हो जाता था तब पानी शिव के प्रिय स्थान गोकर्ण (कालेसर-कैलास और इसके उत्तर का प्रदेश) को डुबोता हुआ दक्षिण की ओर चलता था। रूद्र का प्रिय स्थान गोकर्ण एक बार समुद्र में चला गया था। बलराम के कहने पर वरूण ने इसे पुनः लौटा दिया। भारी वर्षा, भूकम्प अथवा भूस्खलन के कारण बन्द हुऐ क्रौंचरन्ध्र को तोड़ना/खोलना/साफ करना या विद्रीण करना आवश्यक हो जाता होगा। परशुराम कार्तिकेय बलराम ने यही किया था, यहाँ इसे यमुना भिद कहा गया है जो बलराम ने हल द्वारा यमुना नदी को दो भागों में विभक्त कर के किया। यह भी हो सकता है कि काराकालिन्दी और यमुना सरस्वती की धारा संयुक्त होकर जो तबाही मचाती हो उससे बचने के लिये बलराम ने दोनों धाराओं को अलग -अलग किया हो... किन्तु असली सफलता तो बाद में कृष्ण और भीम को ही मिल पाई, जब कृष्ण के निर्देशन में भीम ने इस संयुक्त जलसन्धि को दो भागों में विभक्त करके विपरीत दिशाओं में फैंका, जिससे वे पुनः नहीं जुड़ सके। पौराणिक साहित्य में यह घटना जरासन्ध के नाम से व्यकितगत कथानक बनाकर पेश की गई है।
43. **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 4
44. हिरण्य जनों का हिरण्यवती नदी (घघ्घर) से साम्य है। मिथक है कि हिरण्याक्ष पृथ्वी को पाताल में ले गया था... अर्थात हिरण्यजनों ने पाताल लोक-पटियाली नदी का क्षेत्र पटियाला जीता होगा। विष्णु में हिरण्याक्ष के एक पुत्र झरझर- **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 190; का घघ्घर नदी की एक उपरी सहायक झरझर नदी से साम्य है। हो सकता है कि दक्षिणी हरियाणा का प्रमुख नगर झज्जर कालान्तर में इन्हीं हिरण्य झरझरों ने बसाया हो।
45. उतथ्य की गर्भवती स्त्री ममता के साथ बलात्कार किया था, जिसका गर्भस्थ शिशु ने विरोध किया कि यहाँ दूसरे शिशु के लिये स्थान नहीं है। इस पर वृहस्पति ने उसे अन्धा हो जाने का शाप दिया। अनुमान है कि देवगुरू बृहस्पति के जजमान अंगिराजनों ने सरस्वती नदी प्रदेश से पूर्व की ओर बढ़ते हुऐ यमुना पार के क्षेत्रों में जब बस्तियाँ बसाईं; तब वहाँ के मूल निवासी अनु-अन्धकों ने इसका विरोध किया कि यहाँ नई जाति के बसने के लिये स्थान नहीं है। बलात अतिक्रमण करने वाले अत्याधिक समर्थ, सभ्य थे; उनके उपकरण औजार, अस्त्र-शस्त्र, तकनीकी अत्याधिक विकसित थी। ऐसी स्थिती मे दोआबे के अनु अन्धकों-यदुजनों को वह क्षेत्र छोड़ना पड़ा। वे पलायन कर अंग, बंग, कलिंग, पुण्ड्र, सुहय और आंध्र जनों के नाम से सुदूर क्षेंत्रों में जा बसे। पुराणों में इन्हें बलि की स्त्री सुदक्षिणा के गर्भ से दीर्घतमस द्वारा उतपन्न पुत्र कहा गया है। बलि का नाम बालखिल्य अथवा 60000 बाल्हीकों का द्योतक हो सकता

है। और क्या पता कि बचे हुऐ कौरव्य नागवंशी हस्तिनापुर का धृतराष्ट्र वास्तव में अन्धा ना होकर अनु अन्धक रहा हो जिन्हें बाद में पणि-वैदिक जनों के वंशज पणिड्डू (पांडु) जनों ने कुरूक्षेत्र के युद्ध में पराजित किया हो और जिनके वंश का सफाया अन्ततः जनमेजय ने नाग यज्ञ में कर दिया हो।

कपि के पुत्र अज और शुंड़ पिछले जन्म में कुष्मांड़ थे- **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 83 अज पिशाच है, यतुधान की पुत्री यतुधना/जन्तुधरा अज की स्त्री थी दीर्घतमस मामतेय के पुत्र कक्षीवान के हेजार पुत्रों को कौष्मांड़ कहा गया है -**राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 315... अर्थात अवश्य ही कौष्माड़ एक जाति रही होगी और उन्हें ही पिशाच कहा गया है। पेहोवा... पिशचमोचन तीर्थ आदि में अपसरा...; अर्थात अज मुखी... बिल्ली के मुख वाली पिशाचिनी की पुत्री अजगन्धा/मतस्यगन्धा, इस तथ्य से अज, मतस्य, आद्रिज, वानर-कपि-पिशाच लगते हैं। तब ऐसा प्रतीत होता है कक्षीवान के पुत्र कौष्मांड़ जन पहले या बाद में या तो पिशाच थे या पिशाच बने। दुष्पर, कुंभपात्र, पिशिताद; नितुन्द; पुसकन्द; बालाद, निपुण; उलूखलगण, छगल, अर्क-मर्क, केष्णादी, बकमुख आदि के साथ-साथ कुषंड़ भी पिशाचों का एक वर्ग है **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 65; 199; 308; 124; 229.117 आदि। वायु0 में जन्तु और अज पिशाच कश्यप और खशा के पुत्र है तो पुलह की एक स्त्री श्वेता से दस वानर पंगुव हुऐं और दूसरी स्त्री कपिशा से सोलह जोड़े पिशाच हुऐ- **वही** पृ0 124; इससे वानरों-कपि-पिशाचों में भेद नहीं दिखता। मेरे विचार से पिशाच या कौष्मांड़ विशेष कर कूहू/केसनीवाली/सिनीवाली/कौशिकि नदी क्षेत्र के निवासी थे। उपर्युक्त विवेचना कपि और मतस्य जनों को एक करती है। आद्रि की पुत्री अजगन्धा-मतस्यगन्धा भी थी और केसरी अंजना के पुत्र हनुमान का किसी मतस्या से मकरध्वज नामक पुत्र था। दक्षिण भारतीय भाषाओं में कुप्या मछली को कहते है कुप्पा > कॉप्पि > कपि =मतस्य > मछली- **रांगेय राघव** भूमिका पृ0 ''प''46. **कीथ व मैकडोनेल, ''वैदिक इण्ड़ैक्स,''** भाग-2, पृ0 65, **सीतानाथ प्रधान**, पृ0-37

47. **वही**, पृ0 488
48. **वही**, भाग-1, पृ0 533
49. **वही**, पृ0 74
50. **वही**,
51. **आर० एम० स्मिथ, ''डेट एण्ड़ डायनेस्टीज ऑफ अर्लिएस्ट इण्ड़िया''** दिल्ली, 1973, पृ0 177-78
52. **पार्जीटर**, पृ0 171, 279; **प्रधान**, पृ0-37
53. वाल्मिकीज उत्तर कांड़ में यदु ने यातुधानों को उत्पन्न किया था। अथर्ववेद 19.46.2 में पणिजन यातुधानों के साथ वर्णित हैं।
54. **वही**, पृ0 419-20

अध्याय-13

चैत्ररथी-चितांग नदी और चेदी-चैत्ररथ जन

वैदिक जनों की प्रारम्भिक बस्तियाँ सरस्वती नदी के तटों पर बसीं[1] और वहीं उनकी प्रारम्भिक गतिविधियाँ शुरू हुई, जो बाद में शेष भारत में फैलीं। वेदों की रचना सरस्वती नदी

क्षेत्र में हुई, इसलिये यह नदी वैदिकजनों के लिये महत्वपूर्ण थी, नदीतमा (ऋ0 2.41.16) थी... **यति गिरिभ्य आ समुद्रात** (ऋ0 7.95.2) थी[2], महाभारत में भी इसे प्रथम और सागर गामिनी कहा गया है

एषा सरस्वती पुण्या नदीनामुत्ता नदी।
प्रथमा सर्वसरितां नदी सागर गामिनी।।

अन्य किसी नदी का उनके लिये अधिक महत्व नहीं था, वरना तो उनके पड़ोस में ही सरस्वती से कहीं बड़ी नदियाँ-हिरण्यवती-अंगिरसी (घघ्घर), दृषद्वती-चितांग (यमुना) और शतुद्रि (सतलज) विद्यमान थीं। जिस समय चितांग-दृष्द्वती के तटों पर पहली बस्तियाँ बसीं उस समय सरस्वती नदी के तटों पर मानवीय गतिविधियों की कोई विशेष सुगबुगाहट नहीं थी[3]... इसके विपरीत जब सरस्वती नदी के क्षेत्र में वैदिक जनों का प्रसार हुआ तब भी ऐतिहासिक घटनाक्रम सरस्वती नदी क्षेत्र की अपेक्षा चितांग नदी क्षेत्र में घटता अधिक प्रतीत होता है। इतना कि यदि गहराई से देखें तो भारत के प्राचीन इतिहास में सरस्वती या अन्य नदियों की भूमिका गौण हो जाती है।

आज चितांग मात्र एक नाला या एक बरसाती नदी है, जो आदि बद्री के सात आठ कि0 मी0 दक्षिण में बेहद तेज ढलान वाले क्षेत्र में[4] मंगलौर-मुगलवाली गाँवों के समीप से निकलती है। कुरूक्षेत्र करनाल होकर बहती इस बरसाती नदी का अस्तित्व पानीपत में असन्ध[5] के पश्चिम में बाहरी ग्राम के समीप समाप्त हो जाता है। किन्तु प्राचीन काल में चितांग पूरे वर्ष बहने वाली एक बड़ी नदी थी, उस समय यमुना नदी ही चितांग के रूप में बहती थी। तब यह नदी जींद, हाँसी, हिसार होकर राजस्थान में भद्रा, नोहर, कालीबंगान से गुजरती थी और सूरतगढ़ से कुछ पूर्व हनुमानगढ़/भटनेर की ओर से आने वाली सरस्वती/घघ्घर नदी में मिल जाती थी।

शिवालिक पर्वतमाला से निकलने वाली नदियों के बहाव मार्ग में सहत्राब्दियों से अनियमितता रही है। इन नदियों ने न जाने कितनी बार अपना बहाव मार्ग बदला है। नदियों द्वारा बहाव मार्ग में परिवर्तन, पर्वतों की तलहटी में अत्याधिक ढ़लान के कारण, तेज बहाव और मिटी का कटाव होता है। समतल या बहुत कम ढलान वाले मैदानी क्षेत्रों में आकर नदियों का बहाव मंद हो जाता है... फलत साथ लाई हुई कीचड़, गाद, तलछट नदी की तली में जमकर उसकी पेटी को उथला करने लगती है। अपनी ही गाद और कीचड़ से बनाये तटबन्धों को तोड़कर नदी शीघ्र ही दूसरा रास्ता लेती रहती है। सतलज नदी के तीन सूखे पाट या नैवाल मिले हैं जिनसे पता चलता है कि गंगानगर, सन्धानवाला और फिर भटनेर तक पहुँचने के लिये सतलज नदी ने कम से कम तीन बार अपना बहाव मार्ग बदला था। जिस समय यमुना नदी चितांग के रूप में असन्ध, जींद, हाँसी, हिसार होकर सीसवाल सभ्यता की बस्तियों के लिये जीवनदायिनी नदी बनकर बहती थी उस समय सहारनपुर की मस्कारा, राक्षी के रूप में कुनाल, सफीदों, मिथातल होकर बहती रही होंगी क्योंकि भिवानी जिले में मिथातल आदि बस्तियों के आसपास भी तो वर्ष भर बहने वाली नदी होनी चाहिऐ।

जब यमुना नदी ने चितांग वाला बहाव मार्ग छोड़ा और दक्षिण वाहिनी हो गई, तब बूढ़ी यमुना, बूढ़ी नदी, मस्कारा, सांदली, काथा आदि नदियाँ यमुना से मिलने लगीं तो हरियाणा की भूमि पर सीसवाल, मिथातल, कुणाल, आदि बस्तियाँ उजड़ गई। हो सकता है कुछ गिनी-चुनी बस्तियों के लिये वर्ष भर के जल का कोई दूसरा विकल्प रहा हो, किन्तु वह विकल्प अधिक समय तक चल पाया होगा इसमें सन्देह है। नदियों के न रहने पर कुओं का घटता जलस्तर,

बढ़ती आबादी और दस-पन्द्रह वर्षों के अन्तराल पर पड़ते सूखे, अकालों ने उन्हें पुरानी बस्तियों छोड़कर नये स्थानों पर चले जाने को बाध्य कर दिया होगा। भागीरथ की पौराणिक कथा से संकेत मिलता है कि गंगा नदी ने भी अपना बहाव मार्ग बदला था।

सगर और उनके वंशज, अयोध्या नरेश कहे गये हैं। असल में सगर की कथा का आधार सुदास पैजवन द्वारा यमुना तट पर पराजित शिग्रु, अज और यक्ष जनों का (ऋ0 7.18-19; 13.3; 83.4) घटनाक्रम है। अज हस्ती जन[6] - नाग[7], कर्दम[8] और ऋक्षजन थे ऋक्षों में नाग-गरूड़ संघर्ष प्रमुख है।[9] पणिजन भी नाग ही थे[10] पणिजनों की संतानें ही पाँड़व कहलाईं।[11] अज-आद्रिज जन पिशाच भी कहे गये हैं। अजमीढ़, अजनाभ खण्ड़ और अजोध्या इन्ही अज आद्रिजों से सम्बन्धित थे।[12] मान्धाता, और राम से सम्बन्धित घटनाचक्र भी इसी अजोध्या क्षेत्र का है जो यमुना तट पर इन्हीं अजों की प्रारम्भिक बस्ती रही होगी।

हस्ती का अर्थ हस्त/हाथ या बाहु; हस्त का अपभ्रंश असित; बाहु का अपभ्रंश बाहुक, जो सगर के पिता का नाम है। शिग्रु/सागरेय जनों का वह क्षेत्र बाद में श्रूघन (शिग्रुन) हुआ[13] आज यह सहारनपुर (सागरनपुर) है।

अथर्ववेद 5.19.1 के **''भृगु हिसिंत्वा सृज्जया वीतीहव्या पराभवन''** से पता चलता है कि पौराणिक वीतीहोत्र हैहय दरअसल वैदिक सृज्जयों की शाखा वीतीहव्य थे। सृज्जय का अपभ्रंश हैहय है। सृज्जय देववात का दौहित्र/नाती (ऋ. 7.18.22) सुदास पैजवन... ऋ. 3. 53.7 के अनुसार भोजों का पूर्वज... भजमान था या उसका पुत्र था और वही पौराणिक सहत्रबाहु अर्जुन कृतवीर्य है जिसने सगर के पिता बाहुक को पराजित किया था[14] यादवों का विदर्भ... काथा नदी का मूजवत था। विदर्भ की राजधानी कुण्डिनपुर... कुण्ड़ती स्त्रियों के स्थल का द्योतक शब्द है। कौटाम्बिक विवाह की प्रथा यादवों में थी... यह प्रथा उन्हें उन यति-ययाति. .. से जोड़ती है जो यातुधान थे[15]... यातुधन म्यूर-मुर्गा टोटेम वाले गन्धर्व जन भी हैं और वृष्णि भी। वृषिन का अर्थ मोर होता है[16] और वृष्णि का अर्थ धर्म-भ्रष्ट, पाखंड़ी[17] सम्भवत वे वैदिक जनों के देव्तन्त्र, रहन-सहन, प्रथा-परम्परा, विवाह संस्था, वर्ण व्यवस्था, ब्राहमणवाद, यज्ञ-पूजा आदि के विरोधी थे। कृष्ण वृष्णि वंशी है वह अपने सिर पर म्यूर टोटेम (पंख) धारण करता है। उसने उत्तर भारत से आर्य देवतन्त्र को उखाड़ फैंका। वह कौटाम्बिक विवाह की प्रथा का अनुसरण करता था।[18] उसके यहाँ विवाह संस्था और हरण प्रथा भी वैद्य थी।

कम से कम कृष्ण तक यादवों का मूल निवास स्थान सरस्वती-चितांग/यमुना का प्रदेश बना रहा...। इसके बाद भले ही वे भारत के विभिन्न भागों-सौराष्ट्र-गुजरात, आन्ध्र की ओर पलायन कर गये किन्तु कृष्ण की द्वारिका प्रभाष तट पर वहाँ थी जहाँ सरस्वती नदी पश्चिम वाहिनी थी; ऐसा स्थान जगाधरी था, एक ओर कृष्ण वृष्णि यादववंशी हैं वसु हैं। उनके पिता का नाम वसुदेव है। उनके पालक माता-पिता नन्द और यशोदा पिछले जन्म के द्रोण व धरा वसु कहे गये हैं- [19] उनकी द्वारका प्रभाष क्षेत्र में थी[20]। प्रभाष एक वसु का नाम है। प्रभाष वसु के ही पुत्र विश्वकर्मा वसु ने द्वारिका का निर्माण किया था। वसु यदि आठ हैं तो कृष्ण अपनी माता का आठवाँ पुत्र है। विष्णु का यह आठवाँ अवतार, अष्टमी को ही जन्मा था। इसकी आठ पटरानियाँ थीं[21] अभी तक वसुजनों का इतिहास या कोई भौगोलिक धरातल जैसा समीकरण नहीं लिखा गया। किन्तु वसुजनों की धरा ही वसुन्धरा थी भले ही यह आज समूची पृथ्वी के लिये पर्यायवाची शब्द हो तो भी हम वसुओं का मूल स्थान ज्ञात कर सकते हैं। वसु > वसुधान्यक > बहुधान्यक > भादानक... अर्थात युगन्धर का प्रदेश, और युगन्धर > जुगन्धर, जग (गज) प्रदेश... कृष्ण को जगन्नाथ भी कहा जाता है। अर्थात प्रभाष वसु

का क्षेत्र जगाधरी के आसपास था और वहीं कहीं नन्द/द्रोण (नन्दनवन/द्रोणपर्वत) प्रदेश रहा होगा।

सोम्ब, पथराला, मस्कारा, यमुना, राक्षी आदि की संयुक्त जलराशि/जलसन्धि लगातार अठारह वर्षों तक कृष्ण की मथुरा (मधु यादव का श्रूघन/सूरसेन क्षेत्र सहारनपुर जिले में) पर आक्रमण करती रही थी। कृष्ण ने जगाधरी क्षेत्र में नयी नगरी बसाई... यह भी अन्ततः बाढ़ अनियमितता का शिकार हुई सरस्वती यमुना की अनियमितता और अनिश्चितता में एक दिन द्वारिका बह गई... डूब गई, द्वारिका शब्द में दृषद्वती की ध्वनि प्रतीत होती है प्राचीन काल में श्रूघन क्षेत्र सभी ओर जाने का प्रवेशद्वार था विशेषकर कान्यकुब्ज का।[22]

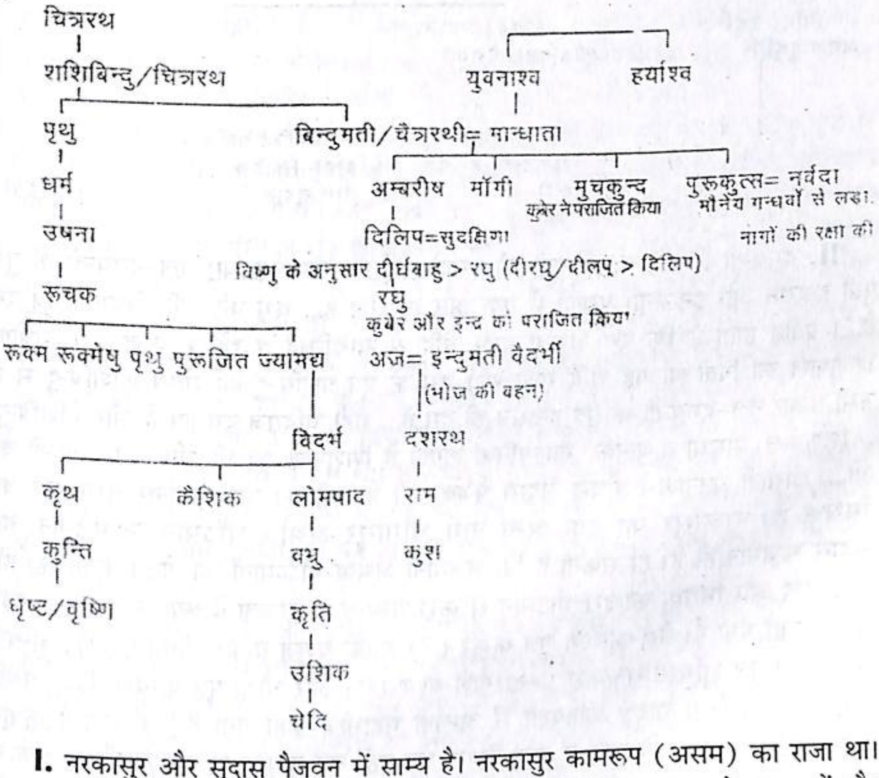
यदु जनों का मूल -कच्छ सौराष्ट्र (गुजरात) में मानना भ्रमवश है। यदुजनों का मूल सरस्वती नदी के दक्षिण में बहने वाली चितांग अथवा चित्रांग नदी है। ''चितांग'' शब्द के मूल में चित्रा अथवा चैत्र शब्द है। सरस्वती **>** सारस्वत ; गंगा **>** गांगेय; सिन्धु **>** सैन्धव की तर्ज पर चित्रा **>** चैत्रक अथवा चैत्ररथ/चित्ररथ। सरस्वती नदी से काफी पहले ही चैत्ररथों/चैत्रकों के लिये चित्रा नदी का महत्व था।

ओ० पी० भारद्वाज चैत्ररथ वन की पहचान देववन चकरौता-जौनसार बाबर से करते हैं[23] पर्वतीय क्षेत्रों के अतिरिक्त हरिद्वार-रूड़की से लाड़वा-कुरूक्षेत्र तक **चैत्ररथ वन** था और द्वैतवन (दृष्द्वती-मस्कारा/बेहाट); **काम्यक वन ; खाण्डव वन** (नाम सम्भवतः खाँड नदी के कारण) **वैभ्राज** (सरस्वती नदी के उदग्म प्रदेश), **क्रौंचवन** (गंगा-यमुना दोआबे में करौंदी-शिवालिक पर्वतों का पश्चिमी भाग); **अंजन वन** (दोआबे में हाथी बड़कला वन/पर्वत), **दण्ड़क वन**[24] (कालेसर/कैलाश के उत्तर में डन्ड़ा सुखचैनपुर, डन्ड़ा शहजादवाला और डन्ड़ा अम्बोआ/**अम्बिका वन**); **सुन्दर वन** (साँदली नदी क्षेत्र में शुण्ड़/तुण्ड़/गज/हस्ती जन बहुल) आदि चैत्ररथ वन के चारों ओर स्थित छोटे बड़े वन थे।

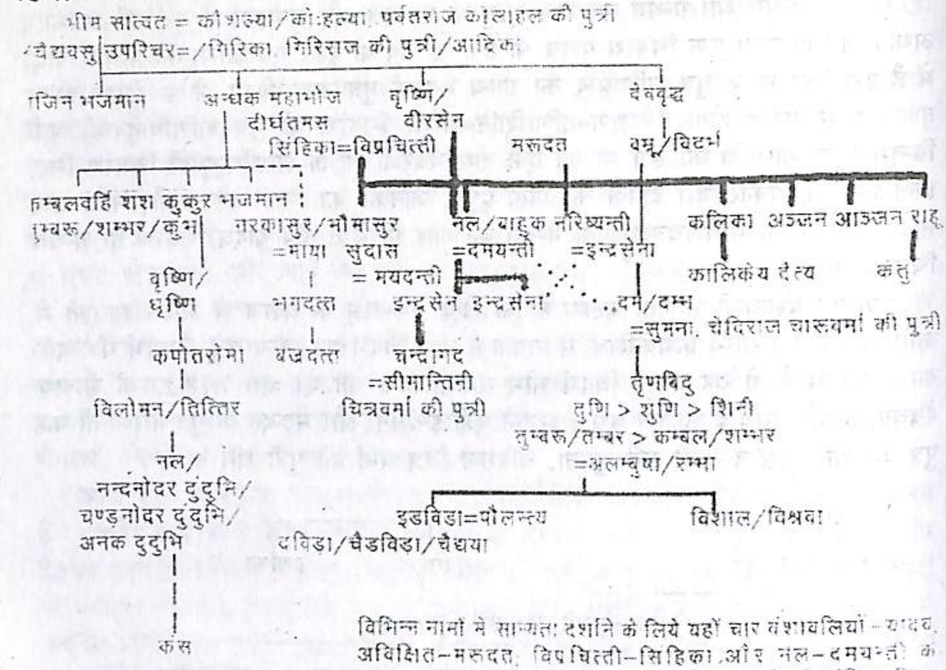
रामायण के अनुसार चैत्ररथवन का निर्माण चित्ररथ नामक गन्धर्व ने किया था। रघुवंश में चैत्ररथ प्रदेश का वर्णन विदर्भ के साथ है -''**एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्यरम्यान पऐ विदर्भान॥**'' इस वन को रावण ने उजाड़ा और चैत्ररथवन के प्रहरी सूर्यभानु को मारा[25] सूर्य का एक अर्थ चित्ररथ होता है[26] यक्ष, गन्धर्व, नर, किन्नर, गुहयकों आदि का अधिपति यक्ष कुबेर था[27] जिसका अर्थ यह हुआ कि चैत्रांग/यमुना नदी के क्षेत्र में यक्ष-गन्धर्व आदि जातियाँ थीं और इनके दक्षिण में राक्षी नदी क्षेत्र में रक्ष थे जो यक्षों के ही सजातीय बन्धु थे। सुदास पैजवन द्वारा यमुना तटों पर यक्षों, शिग्रुओं और अजों के साथ-साथ राक्षी नदी के रक्ष भी पराजित हुऐ होंगे। पुराणों और रामायण में कथन है कि सहत्रबाहु अर्जन ने रावण को नर्वदा नदी का जल रोककर (कृत्रिम बाढ़ लाकर) पराजित किया था। बाद में नदी को रोक देने का यही अस्त्र राक्षसों ने सुदास पैजवन के उत्तराधिकारी राम दशरथी[28] के विरूद्ध इस्तेमाल किया। उन्होंने उत्तर से आकर पश्चिम की ओर बहती सीता-सरस्वती नदी/सम्भवतः चित्रा को रोककर अपने राज्य में बहा लिया[29] राम ने ऋक्ष (गंगा यमुना दोआबे की शिवालिक पर्वत) पर्वत के आदिम-अर्धसभ्य ऋक्ष, वानर-भल्लूक आदि टोटेमिक जातियों की सहायता से पहले सागर क्षेत्र पार किया, फिर पॉच दिनों में पत्थरों की विशाल संरचना बनवाकर सीता -सरस्वती को वापिस अपने पश्चिम वाले बहाव मार्ग पर मोड़ लिया। राम को उनके इस महान असुर कार्य के लिये अवतार का पद मिला... किन्तु कुछ समय बाद सीता फिर चली गयी... इस बार कोई प्रयास नहीं किया गया... सम्भवतः राम समझ गये थे कि प्रकृति से लड़ा नहीं जा सकता।[30]

चित्ररथ गन्धर्व था। गन्धर्व का अर्थ-मृत्यु के पश्चात और पुर्नजन्म से पूर्व की आत्मा[31], अर्थात पितृ पिशाच। एक चित्ररथ यादव भी है- यह यदु के दूसरे पुत्र क्रोस्ट की पाँचवीं पीढ़ी में है इस चित्ररथ के पुत्र शशिबिन्दु का साम्य मनु के पुत्र नामानेदिस्ट के पच्चीसवें वंशज तृणबिन्दु से प्रतीत होता है- तृण=तुणि/शिनि=शशि। चित्ररथ के पुत्र शशिबिन्दु की पुत्री बिन्दुमती जो मान्धाता की स्त्री थी का एक नाम चैत्ररथी था तो शशिबिन्दु ही चित्ररथ सिद्ध होता है, उसी प्रकार जैसे द्रोपदी का पिता द्रुपुद, जानकी का पिता जनक और माया तथा मन्दोदरी का पिता मय। चित्ररथ एक गन्धर्व का नाम भी है तथापि यादव चित्ररथ ही गन्धर्व चित्ररथ था।

उपर्युक्त वंशावली से पता चलता है कि चेदि जन-वभ्रू के वंशज थे और वंशावली में कृति-उशिक का साम्य क्रथकैशिक से लगता है तथा विदर्भ का साम्य वभ्रू (विदर्भ में "द" का लोप) से है तो यह वभ्रू... विदर्भ भीम सात्वत होना चाहिऐ। ऋ0 7.18.22 के सृज्जय देववात अर्थात देववृद्ध का पुत्र वभ्रू ; इसकी पुत्री इन्दसेना और मरूदत के पुत्र नरिष्यन्ती का पुत्र दम था। इस दम की स्त्री सुमना, चेदिराज चित्र वर्मा की पुत्री थी।



I. नरकासुर और सुदास पैजवन में साम्य है। नरकासुर कामरूप (असम) का राजा था। किन्तु इसकी राजधानी कामदेव के अंग दहन के उपरान्त कामदेव का रूप छोड़कर तारों और ज्योति के रूप में रहने वाली प्रागज्योतिष कही गई[32] कामदेव काम्यकवन का देव रूप है। काम्यकवन जल कर नरक रूप में बदल गया, अर्थात नरक उपरी हरियाणा में सरस्वती नदी की भूमि ही था और उसका शासक पौराणिक नरकासुर...! नरकासुर की स्त्री विदर्भराज की पुत्री माया और सुदास की स्त्री का नाम मयदन्ती। इस प्रकार माया-मयदन्ती और दमयन्ती में साम्य है।



विभिन्न नामों में साम्यता दर्शाने के लिये यहाँ चार वंशावलियां – यादव, अविक्षित–मरूदत, विप्रचित्ती–सिंहिका और नल–दमयन्ती के साथ–साथ उपरिचर वसु तथा सुदास पैजवन को भी अंकित किया गया है।

II. दमयन्ती विदर्भराज की पुत्री थी इसके भाई का नाम दम था। नल–दमयन्ती के पुत्र पुत्री इन्द्रसेन और इन्द्रसेना। पुराणों में एक और इन्द्रसेना है... वभ्रू की पुत्री, जिसका पुत्र दम है...। प्रतीत होता है कि दम अथवा दम्भ चेदि से सम्बन्धित व द्योतक शब्द है (दमघोष, शिशुपाल का पिता था यह चेदि राजा था) दम के पुत्र त्रणविन्दु का साम्य शशिबिन्दु से है उसी प्रकार नल–दमयन्ती के पुत्र इन्द्रसेन ही दम है... यही चेदिराज दमघोष है और शशिबिन्दु... शिशुपाल। समूचा कथानक काल्पनिक लगता है शिशुपाल का भी और नल दमयन्ती का भी...। असली घटनाक्रम केवल सुदास पैजवन ही है इसी का एक रूपान्तर नरकासुर का मिथक है। नरकासुर का एक अन्य नाम भौमासुर अर्थात भौऽमान > भजमान, यह सुदास भोजमान ही है। हो सकता है कि भजमानों अथवा भौञ्मानों का टोटेम कुत्ता रहा हो। भैरों शब्द और मिथक का इस भौऽमान से कुछ सम्बन्ध हो सकता है क्योंकि भैरों का वाहन कुत्ता कहा गया है। वैसे अन्धक पुत्र कुकुर (?) इसके वंशज कपोत, तित्तिर (?); अन्धक का तीसरा पुत्र शुचि/ससिन/शश (=खरगोश या खरहा) और चौथा पुत्र कम्वलवर्हि... अर्थात नाग। अन्धक जिसे यादव वंशावली में अन्धक महाभोज कहा गया है[33] के वंशजों कुकुर, कम्बलवर्हि, शिनी आदि जनों में कोई विशेष भेद नहीं था। ब्रहमा0 में कम्बलवर्हि अन्धक के चार पुत्रों में से एक है और अग्नि0 में वे वभ्रू देववृद्ध के पुत्र हैं। मतस्य0 में कम्बलवर्हि शशिबिन्दु के वंशज मरूदत के पुत्र है। एक मरूदत सूर्यवंशी है इनके पौत्र तृणबिन्दु का साम्य तुणि > तुम्बरू > तम्बर > तम्बल > कम्बल से बैठता है। यूँ कम्बल यादवों/यातुधानों के अर्न्तगत आने वाले मरूदतों की एक नाग शाखा प्रतीत होते हैं क्योंकि पिता की ओर से वे मरूदत और माता की ओर से वभ्रू/विदर्भ रक्त के थे–दूसरा प्रमाण यह है कि तुम्बरू, वभ्रू

को रोहित गन्धर्वों में गिना गया है।

III. बभ्रू देववृद्ध के दौहित्र और मरूदत के पौत्र दम की स्त्री सुमना चारूवर्मा (चेदिराज) की पुत्री है और नल दमयन्ती के पुत्र चन्द्रांगद की स्त्री सीमान्तनी चित्रवर्मा की पुत्री है... यहाँ सुमना-सीमान्तनी; चारूवर्मा और चित्रवर्मा... दम और चन्द्रांगद में साम्य है।

VI. नल को निषदराज़ वीरसेन का पुत्र कहा गया है यह वीरसेन वृष्णि का अपभ्रंश है। निषाद जन, वैदिक जनों, उनकी प्रथा-परम्पराओं, देवतन्त्र, यज्ञपूजा आदि के विरोधी थे, वनों पर आश्रित... शिकारी यायावर थे। वृष्णि का अर्थ भी धर्मभस्ट और पांखड़ी है। निषादजन सिर पर पंख धारण करते थे। वृष्णि का अर्थ मोर है। वृष्णिवंशी कृष्ण भी पंख धारण करते हैं। वृष्णिजनों का वैदिक परम्पराओं, विवाह व्यवस्था से विरोध था अतः निषाद वृष्णि ही थे। वृष्णि का काल्पनिक अपभ्रंश कथानक वीरसेन नल का है।

V. दम, दमघोष शब्द चेदिराजों का द्योतक शब्द है।[34] दम का पुत्र तृणबिन्दु पुराणों के अनुसार काम्यक वन का निवासी था। तृणविन्दु की पुत्री चैड़विड़ा के नाम में चेड़ अथवा चेदि शब्द है तब फिर स्थानवाचक नाम के लिये चेदि शब्द की व्युत्पत्ति... काम्यक वन क्षेत्र के आसपास ही किसी भौगोलिक नाम या ऐतिहासिक घटनाक्रम के कारण होनी चाहिऐ। चित्रांग/चिंताग अथवा चैत्ररथी नदी क्षेत्र का नाम चैत्री... इसका अपभ्रंश चेदि। चित्रा/चित्रांग अथवा चैत्ररथी नदी प्रदेश के निवासी थे- दम...दम्भी...उनके द्योतक नाम चित्ररथ, चित्रवर्मा, चित्रसेन, चित्रांगद, चित्रशिरिस[35] थोड़ा और आगे चले तो विप्रचित्ती...?

विप्रचित्ती को (हिरण्यदैत्यों की बहन) सिंहिका (टोटेमिक व्याघ्री) से चौदह पुत्रों में से. .. भौम.., दम्भ, नल के नाम विप्रचित्ती सहित नल, नरकासुर, चेदी-सुदास के घटनाक्रम से सम्बन्ध रखते हैं। विप्रचित्ती की स्त्री ''सिंहिका'' शब्द का साम्य या एक बनाया गया अपभ्रंश (''स'' के ''ह'' में परिवर्तन से) हिंहिका > हिंहक > अहंक और फिर अन्धक। विप्रचित्ती के एक पुत्र का नाम अञ्जक/अञ्जन भी है। अर्थात अन्धक जन ही टोटेमिक व्याघ्र हैं। सिंहिका और अन्धक दौनों ही हिरण्यदैत्य है और हिरण्यदैत्य... सृज्जयजन। सृज्जयों का सृज्जयाना, हिरण्यों का हिरण्याणा है जिसका अपभ्रंश आज हरियाणा है। सृज्जयजन मूलरूप से यादव > यादु > यातु > यातुधान ही थे।

यक्ष जन, शिग्रु और अजों के साथ यमुना तट पर सुदास पैजवन के हाथों पराजित हुऐ थे। यक्षों के पर्वत का नाम चैत्ररथ था। मणिभद्र/मणिवर यक्ष के देवजनी से तीस गुहयक और 24 यक्ष पुत्र उत्पन्न हुऐ[36] (इनमें से एक का नाम दम भी था)[37] मणिभद्र या मणिवर-यक्षों का सेनापति था और चैत्ररथ वन का निवासी था। इस तथ्य के अनुसार यक्षों और चेदिओं के साम्य है।

VI महाभारत के अनुसार पर्वत, नारद, देवल, विश्वावसु चित्रसेन और तुम्बरू गन्धर्व, कुबेर से मिलने गये थे। इनमें से तुम्बरू वृष्णिवंशी अन्धक का मित्र था[38]। मिलान करें तो तुम्बरू > तम्बरू > दम्भ/दम या फिर तुम्ब > तृणबिन्दु अर्थात काम्यक वन का निवासी तृणबिन्दु ही तुम्ब/दम्भ/दम या तुम्बरू या अलम्बुष था क्योंकि दम के पुत्र तृणबिन्दु की स्त्री के नाम अलम्बुषा का अर्थ तुम्बी। एक और तुम्ब के पुत्र -तुम्ब और तुम्बवर्चा[39]। क्या कहें अलम्बुष और अलम्बुषा। तुम्बरू का साम्य यादव अन्धक (कहीं-कहीं बभ्रू देववृद्व) के पुत्र कम्बल (वर्हि) से भी उचित बैठता है। एक कम्बल काद्रवेय नाग है।

VII नल दमयन्ती वाले नल के अतिरिक्त यदुवंशी कुकुर के वंशज विलोमन (तित्तिर) के पुत्र नल का एक नाम नन्दनोदर दुदुभि है[40] यहाँ भी दुंभि- दुदुंभि/दुंदुभी से दम या दंभ का

साम्य है यह नल हालाँकि भजमान, कम्बल और शश के भाई कुकुर की पाँचवी पीढी में वर्णित है। भाग्वत में नारद का समकालीन तुम्बरू गन्धर्व ब्रहमाण्ड के अनुसार यदि अन्धक का मित्र है तो ऐत्तरेय ब्रा0 7.34.9 और 4.15.7-10 में नारद और पर्वत दौनों सोमक साहदेव्य के पुरोहित है[41] जिसका सम्बन्ध वभ्रू देववृद्ध से है। भाग्वत0 में तुम्बरू कपोतरोमा के पुत्र अनु का मित्र है, वायु0 में वह चण्ड़नोदक दुंदुभि[42] का और कूर्म0 में अनकदुंदुभि के पिता तम (=अन्धक) का मित्र है।[43] अब असली नाम अनकदुंदुभि हो या चण्डनोदक दुंदुभि या फिर नन्दनोदर दुंदुभि, वह दम से सम्बन्धित है अवश्य। तुम्बरू ही तम्बर > तम्बल या कम्बल है। इसी प्रकार शिनी > तुणी; तृणबिन्दु > तुम्बरू > तम्बर > शम्भर और शम्भर से कम्बल > कम्बर > तम्बर... । शम्भर को तिमिरध्वज कहा भी गया है.. सम्भवत: वह तुमुल या तुम्बी की ध्वनि करने वाली किसी जाति तुम्बों/तुम्बरों का नेता तुम्बरध्वज रहा हो और इसी तुम्बी या तुम्ब का बड़ा या इसका रूप जो कि मिट्टी से बनाया हो... कुम्भ। तुम्बी जंगली घिआ/कौंहड़ा/ Gourd / Cucurbit का सुखाया हुआ खोल होता है जो पानी भरने के काम में भी आता रहा होगा और वाद्यय यंत्र बनाने के भी ।

कुंभ/कौम्भर.... शम्भर का एक नाम कुंभीनसि भी है। दूसरी ओर एक कुम्भीनसी गन्धर्व राज अंगारपर्ण की स्त्री भी है। अंगारपर्ण चित्ररथ ने अर्जुन को माया युद्ध सिखाया था। अंगारपर्ण और चित्ररथ का नाम और अर्जुन को माया युद्ध सिखाने की घटना से एक और घटनाचक्र का आभाष दिखाई देता है... वह यह कि कुम्भीनसी-शम्भर और चित्ररथ गन्धर्व... जो कि सरस्वती-चैत्ररथी नदी क्षेत्र के काम्यकवन से जुड़े कम्बल भोज यादव ही हैं संयुक्त रूप से काम्बोज हैं। महाभारत कालीन अंग देश अंगजा या अंग क्षेत्र में जब एक कुंड़ती के पुत्र कर्ण ने हस्तिनापुर के कौरव्य नागों की सहायता से कर्णाल नामक बस्ती बसाई और अंग क्षेत्र पर अधिकार किया तो वहाँ सदियों से रह रहें मूल निवासी अंगारपर्णों/चित्ररथों ने कर्ण के विरोध में पाँड़वों का साथ दिया। उन्होंने या उनके नेताओं ने अपने अपने युद्ध करने की तकनीकी-कला, अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान भी अर्जुन को दिया। चित्ररथ द्वारा अर्जुन को सिखाया गया ''माया-युद्ध'' असल में चैत्ररथों- अंगारपर्णो की युद्ध कला ही थी। यादव चित्ररथ, दशरथ कालीन चित्ररथ, कर्ण से पूर्व अंगराज चित्ररथ तथा गन्धर्व चित्ररथ दरअसल एक ही था और जातिवाचक नाम हैं। कम्बल... शम्भरे...तम्बर > तुम्बुरू में कोई अन्तर नहीं। एक कम्बल नाग है...। शम्भर भी नाग कहा गया है। मायायुद्ध...मैनाक (शिवालिक पर्वत माला) के मय लोगों के युद्ध की कला थी। माया, मयदानव की पुत्री और शम्भर की स्त्री थी। शम्भर रावण का साढू था तथा कुंभकर्ण और कुबेर दौनों ही रावण के भाई हैं; हो सकता है कि विराधी कम्बल या तम्बर. .. कुबेर थे और सहयोगी कुंभ...कर्ण। कुंभकर्ण के छ: महीने सोने और छ: महीने जागने के रामायण के मिथक के पीछे खाद्य संग्राहक जाति का यह सत्य रहा है कि अत्याधिक वर्षा और फिर सर्दी के दिनों में कुंभ/कम्बल जन लगभग निष्क्रिय हो जाते थे और ग्रीष्म काल में वनों-अरण्यों से खाद्य संग्रह करते थे।

रावण के दूसरे भाई कुबेर के पुत्र नलकुबेर की स्त्री का नाम रम्भा है, अर्थात रम्भाने वाला रम्भ...महिष। नलकुबेर का अजीब सा साम्य मरूदत के पुत्र नरिष्यन्ति से है। नरिष्यन्ति की स्त्री का नाम इन्द्रसेना; पुत्र का नाम दम। भीम विदर्भ की पुत्री दमयन्ती, वीरसेन (वृष्णि से साम्य) के पुत्र नल की स्त्री है। दमयन्ती-नल की पुत्री का नाम इन्द्रसेना। तात्पर्य यह है कि वभ्रू ही विदर्भ है और नल नरिष्यन्ती है। वभ्रू/विदर्भ की पुत्री दमयन्ती नल/नरिष्यन्ती की स्त्री है जिनका पुत्र दम... दम्भ है। रम्भ और दम्भ में शाब्दिक अन्तर है बस। एक नल विप्रचित्ती का पुत्र भी

है। तीनों नल/नरिष्यन्ती एक ही घटनाचक्र के विभिन्न काल्पनिक कथानक लगते हैं।

तृणबिन्दु की स्त्री अलम्बुषा > अलम्बा > लम्भा > रम्भा... वामन0 में सुकेस का दूसरा नाम अलम्बुष है[44] वायु0 में तुम्बर की दो पुत्रियों मनोवती और सुकेशा का उल्लेख है[45]। ऐसे में सुकेशा अर्थात अलम्बुषा। किन्तु विचार है कि सुकेशा, सुकेष की स्त्री देववती ही है जो ग्रामणी गन्धर्वी की पुत्री थी और सुमाली, माल्यवान और माली की माता थी। अलम्बुषा मोनेय गन्धर्वी थी। ग्रामणी तथा मनोवती में मन या मौनी की ध्वनि है; ऐसे में सुकेशा/अलम्बुषा और मनोवती की माता ग्रामणी गन्धर्वी... मौनी गन्धर्वी हुई जो अन्ततः तुम्बरू की स्त्री ठहरती है।

अनु-अन्धक जन अनुपर्वत (गंगा यमुना की शिवालिक पर्वतमाला) अन्तरवेदी (अनुत्तरवेदी: दोआबे का मैदानी भाग) से चैत्ररथी-चिंताग नदी क्षेत्र तक फैले थे और सम्भवतः तभी अनु-अन्धक (दीर्घतमस की सन्तत्ति) अनुवंश में भी है और यदुवंश में भी। ये जाति के व्यक्तिवाचक नाम है जो गन्धर्व भी थे तो यक्ष भी.. यति-ययाति-यातुधान भी थे और यदुजन भी। यदि उपर्युक्त सभी कुबेर से मिलने गये थे तो वह भी इनसे अलग नहीं था, माता की ओर से चैड़विड़ा का वंशज था अर्थात चैत्ररथी का चैद्य था; वह यक्ष था, गन्धर्वों का अधिपति था... अर्थात वह गन्धर्व भी था।

चेदि की राजधानी शुक्तिमती को त्रिपुरी कहा गया है।[46] यह चेत्रिपुरी का अपभ्रंश होना चाहिये और चेदी शब्द चैती या चैत्ररथी का। विन्ध्यपर्वत मालाओं में शुक्तिमती के शासक उपरिचर वसु थे[47] इनके छह पुत्रों ने मगध, चेदी प्रात्याग्रह, कौशाम्बी, कारूष, मतस्य इन छह राज्यों की स्थापना की।[48] ये सभी वसुजन थे जिनका साम्य अनु अन्धकों से था। कान्यकुब्ज के पौराणिक नरेश अमावसु के वंशज कुश के पुत्रों कुशाम्व, कुशनाभ, अमूर्तरजस और वसु ने कौशाम्बी महोदय, धर्मारण्य और गिरीब्रज की स्थापना की थी।[49] उपरिचर वसु, हस्तिनापुर के शासक कुरू का पाँचवां-छटा वंशज है।[50] वहाँ वह चयवन या कृमि का पुत्र है। किन्तु चेदिओं का सम्बन्ध यदु के पुत्र क्रोष्ट के वंशज विदर्भ से भी है।

1	विदर्भ
2	क्रय
3	कुन्त
4	धृष्ट
5	वृष्णि
6.	निवृति
7	विदूरथ
8	दशार्ह
9	रोमपाद/दशरथ
10	वभ्रू
11	कृति
12	उशिक
13	चेदि
14	चैद्य/उपरिचर

पांचाल वंश के चैद्यवरा-चयवन-सहदेव-सोमापि नाम थोड़ी सी भिन्नता के साथ मगध के नामों में भी मिलते हैं। किन्तु मतस्य0 में उपरिचर और चयवन के बीच कृमि नाम है।

इस प्रकार चयवन यदुवंशी भजमान हुआ क्योंकि यादव वंशावली में भजमान के पुत्रों में एक नाम कृमि का भी है। इसका अर्थ यह हुआ कि चैद्यवसु का अपभ्रंश सात्वत है... (चैद्यवसु > सैद्यवसु > सात्वतु > सात्वत) विदर्भ रघुवंश में चैत्ररथ वन का वर्णन विदर्भ के साथ

है-**एको ययो चैत्ररथप्रदेशान सौराज्यरम्यान परौ विदर्भान।**[51] अर्थात चैत्ररथ चैद्यवसु या विदर्भ ही है। और वही भीम है अर्थात बली... शक्तिशाली। तभी उसकी राजधानी का नाम शक्तिमती > शुक्तिमती है।

बलि... की स्त्री से अन्धे दीर्घतमस के पुत्र पूर्व, दक्षिण पूर्व में लगभग उन्हीं क्षेत्रों (अंग, बंग, कलिंग, पुण्ड, सुहय और आन्ध्र) में आ गये, जहाँ चैद्य उपरिचर वसु या अमावसु के वंशज कुश के चारों वसु पुत्र गये थे। घटनाक्रम एक ही है, सुदास पैजवन के उपरान्त चैत्ररथी नदी मार्ग बदल कर यमुना के रूप में बहने लगी। इस दौरान कोई लम्बा अकाल, सूखा; जिस कारण दीर्घतमस अर्थात अन्ध/अन्धक/आन्ध्र जन जो वसु-वासुकी/नाग-गन्धर्व भी थे दक्षिण पूर्व-पूर्व में पलायन कर गये। पुराणों में विवरण है कि दीर्घतमस के शूद्रा स्त्री से उत्पन्न पुत्र कक्षीवान (इनके वंशज कुष्मांड थे) मगध की राजधानी गिरिव्रज गये थे।[52] गंगा-यमुना-सरस्वती नदी क्षेत्र में शेष बचे अन्धकों को पाण्डु पुत्र भरतों ने धतृराष्ट्र के रूप में पराजित किया। इस प्रकार अन्धकों के स्थान पर भरतों का बाहुल्य या अधिकार हो गया। एक मिथक के अनुसार अन्धे दीर्घतमस ने भरत का राज्यभिषेख किया था।

उपर हमने चैद्य उपरिचर वसु... को भीमसात्वत बताया है। हनुमान की दूसरी माता आद्रि अपसरा जो शापवश बिल्ली के मुख वाली पिशाचिनी हो गई थी, से उपरिचर वसु की दो सन्तानें हुई-आद्रि पिशाच जो पिशाचों का राजा बना, यह अजगन्ध या मतस्यगन्ध भी कहलाता था और दूसरी एक पुत्री- अजगन्धा या मतस्यगन्धा या मछोदरी जो सत्यवती कहलाई। यह पहले परासर मुनि के पुत्र व्यास की माता बनी और बाद में शांतुनु की स्त्री। किन्तु जिस प्रकार जनक की पुत्री जानकी; द्रुप्रद की पुत्री द्रोपदी; सुमित्र की पुत्री सुमित्रा; मय की पुत्री माया और मयन्दोदरी, उसी प्रकार भीम सात्वत की पुत्री सात्वती > सत्यवती।

यादव भीम सात्वत ही चैद्यवसु था। इस भीम का विप्रचित्ती के पुत्र भौम से साम्य है। भौम नरकासुर का एक नाम था नरकासुर की राजधानी प्रागज्योतिष का साम्य चैद्यवसु के एक पुत्र द्वारा बसाई गई नगरी प्रात्याग्रह (?) से बैठता है। चैद्यवसु की स्त्री गिरिका, गिरि राज (पर्वत राज) कोलाहल की पुत्री कही गई है[53]। अब यहाँ आद्रिका और गिरिका में साम्य है अर्थात पर्वतराज कोलाहल की पुत्री कोलाहला/कोलाहल्या ही कौशल्या है जो गिरिराज की पुत्री गिरिका भी है। कूर्म0 में भीम सात्वत की स्त्री का नाम कौशल्या है।[54]

वैदर्भियाँ

प्रभाष और विभावशु अष्टवसुओं में से एक थे। सदादेनी (नदी) का मूल शब्द सौद्युम्नि. .. विद्युत, बिजली, हेती, शाल्मली का अर्थ रखता है। इस प्रकार वैभ्राज का अर्थ भी चमकीला होता है।[55]

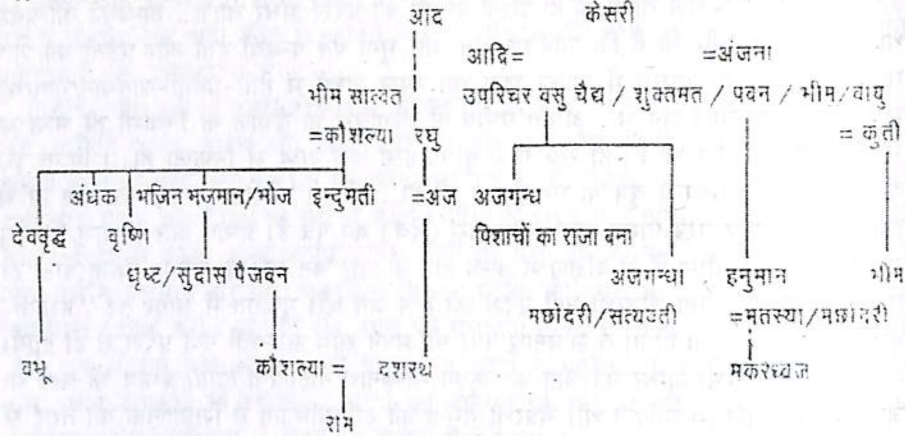
केसिनी जो कि सागर की स्त्री और अंसमजस की माता थी का एक नाम प्रभा भी है। केसिनी वैदर्भी थी। इस प्रकार हमें एक सूत्र मिलता है कि प्रभाष और विभावसु (जन या प्रदेश) ही विदर्भ अथवा वैदर्भ यादव थे। यातुधान और यदुजनों/ययाति/यति जनों में कोई मतभेद नहीं। क्योंकि कहा गया है कि शापित यदु क्रौंचवन चला गया था जहाँ उसने बहुत से यातुधान पुत्र उत्पन्न किये और हिरण्याक्ष कुल के हेती-प्रहेती यातुधान जो कि प्रथम राक्षस भी थे, वैभ्राज वन के निवासी थे एक अन्य मिथक कि प्रभाष का पुत्र विश्वकर्मा जिने प्रभाष तट पर द्वारिका बसाई थी...

मैनाक पर्वत का निवासी मयदानय ही थी। प्राचीन भूगोल वेत्ता मैनाक पर्वत को शिवालिक के नाम से जानते थे। इसकी निचली पहाड़ियाँ और तलहटी का प्रदेश यदि प्रभाष या वैभ्राज

अर्थात चमकीला/उजाले वाला था तो इसके दक्षिण का प्रदेश अंधेरे वाला... अन्धकों का प्रदेश था। एक मिथक और भी है कि शापवश म्यूर और मुर्गा बने गन्धर्वों हेती और प्रहेती का शाप मारकण्ड़ेय मुनि के आश्रम में आकर छूटा था। स्पष्ट शब्दों में हेती-प्रहेती-यातुधान/यातु/यदु म्यूर-मुर्गा टोटेम वाले जन थे... अर्थात प्रभाष के विभावसु या वैभ्राज के निवासी ही भोज या भजमान हुऐ। वे वसु भी हैं। हो सकता है वृष्णि इसी वसु शब्द से निकला हो...। किन्तु इस वसु... वृष्णि का सम्बन्ध वृष या महावृष से भी हो... जो भी हो वे म्यूर टोटेमिक जन तो थे ही। कृष्ण भी म्यूर पंख धारण करने वाला वसु (देव) का पुत्र है। प्रभाष और विभ्राज के वसु जन यदि भोजक वृष्णि हैं तो दक्षिण में अन्ध क्षेत्र के वसु जन अन्धक वृष्णि, किन्तु दौनों ही यादव शाखाऐं सरस्वती-चैत्ररथी नदी प्रदेश की मूल जन थीं। गुजरात में सागर तट "प्रभाष" बाद में नामांकित हुआ होगा। वे सोमनाथ नाम भी अपने साथ सरस्वती नदी प्रदेश से ही लाये। सोम्ब नदी के सोम्भर/शम्बर को जीत कर कृष्ण सोम्बनाथ कहलाया होगा। प्रभाष भी वहाँ था जहाँ सरस्वती पश्चिम वाहिनी थी। चैत्ररथी यमुना की अनियमितता से शिवालिक की तराई में विशाल सागर का निर्माण लगभग प्रतिवर्ष हो जाता था... और वही सागर विभिन्न बरसाती नदियाँ की संयुक्त जलसन्धि था जिससे व्यक्तिवाचक जरासन्ध का मिथक बनाया गया है। यह विशाल सागर क्षेत्र गर्मियाँ आते-आते सूख जाता था और पानी अपेक्षाकृत कुछ गहरे... छोटे-वड़े असंख्यों (बिन्दु सरावरों) झीलों में बच रहता। इसी प्रदेश पर मान्धाता जनों का निवास हुआ। जिसे एक मिथक के रूप में कहा गया कि यादव शशिबिन्दु चैत्ररथ (चित्ररथी-यमुना का द्योतक नाम) की पुत्री बिन्दुमती/चैत्ररथी मान्धाता की स्त्री बनी। यादव वंशावलियों में विदर्भ भले ही शशिबिन्दु का पौत्र दिया गया है किन्तु शिवालिक का तलहंटी प्रदेश विदर्भ... पहले से होना चाहिऐ...। हो सकता है यह नाम बाद में बहुत अधिक प्रयुक्त होने वाला बना।

केसिनी या प्रभा जो सगर (शिग्रु जनों का द्योतक नाम) की स्त्री थी और माया जो नरकासुर या भैमासुर की स्त्री थी वैदर्भियाँ थी। किन्तु इन दौनों के पिता कौन से विदर्भ राजा थे इसका कहीं उल्लेख नहीं है। दूसरी ओर नल की स्त्री दमयन्ती भीष्म विदर्भ की पुत्री अवश्य कही गई है किन्तु यादव वंशावलियों में भीष्म विदर्भ नाम का कोई विदर्भ राज नहीं है। एक भीष्मक अवश्य है किन्तु इसी पुत्री रूकमणी है जो कृष्ण की स्त्री बनी। इससे पूर्व यादव वंशावली में भीष्म तो नहीं किन्तु भीम सात्वत का नाम अवश्य है और दमयन्ती इस भीम की पुत्री है तो वह पहली सात्वती है। दूसरी सात्वती आद्रिजा/अजगन्धा/मछोदरी है जो व्यास की माता बनी और शान्तुनु की स्त्री थी क्योंकि उपर हमने चैद्यवसु उपरिचर को भीम सात्वत सिद्ध किया है। एक और पुराण प्रसिद्ध वैदर्भी है- अज की स्त्री इन्दुमती। इन्दुमती राम दाशरथी की दादी थी। ब्रहमा0 में इन्दुमती भोज की बहन कही गई है किन्तु यह भोज पौराणिक हैहयवंशी अर्जुन सहत्रबाहू के पौत्र तालजंघ का पुत्र भोज नहीं हो सकता। क्योंकि कहा गया है कि इन्दुमती की मृत्यु नारद के हाथों से गिरे फूल के लगने से हुई थी और नारद भीम सात्वत के पुत्र अन्धक के समकालीन था (देखें उपर्युक्त पैरा)

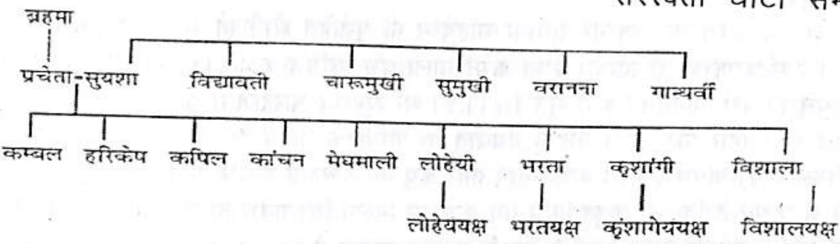
VI. अत: इन्दुमती का भाई भोज भजिन भजमान हो सकता है। इस प्रकार इन्दुमती भीम सात्वत की पुत्री हुई अर्थात वह भी सात्वती थी। वैसे दमयन्ती (नल की स्त्री) मयदन्ती (सुदास की स्त्री) माया नरकासुर की स्त्री और इन्दुमती (अज की स्त्री) में एक साम्य शाब्दिक-भाषा-उच्चारण-अपभ्रंशता का है। इन्दुमती > (इं) दुमयन्ती। सगर के पौत्र अंशुमान=यशोदा के पुत्र दिलिप की स्त्री सुदक्षिणा भी एक वैदर्भी थी यह अज की दादी और भागीरथ की माता थी।



शतपथ ब्रा0 13.5.49.21 के अनुसार भरत दौष्यन्ती ने भीम सात्वत के यज्ञ का घोड़ा छीना था।[56] इसे यूँ कहें तो उचित होगा कि सरस्वती-चैत्ररथी नदी प्रदेश में सात्वतों का प्रसार भरतों-दृष्द्वन्तों ने रोका। यदु-यादव जनों का पलायन और भरतों का प्रसार हुआ। असल घटनाचक्र सुदास पैजवन के अश्वमेघ यज्ञ का है जिसे वशिष्ठ, परसुराम, भारद्वाज आदि के नेतृत्व में कुरू-सम्वर्ण; त्रित्सु, प्रतर्दन; सगर (शिग्रु जनों) ने रोका। भजमान या तो सुदास हैं या उसका पिता पैजवन। भजमान का पिता भीम सात्वत ही चैद्य वसु था और चैद्यवसु ही चैद्यवरा भी है। चैद्यवरा या चैद्यवसु का सम्बन्ध सुदास से था... सुदास चैद्यवरा का पुत्र था।[57] (चैद्यवरा... चैत्रवाला...। चैद्यवसु > सात्वतु या बसु > बहु > बहुमान > भौऽमान > भजमान > पैजवन >) चयवन। सम्वर्ण द्वारा सुदास पैजवन की पराजय हई। सम्भवत: उसी समय चित्ररथी/चित्रा/सीता नदी अपनी बहावमार्ग बदलकर यमुना नदी के रूप में बहने लगी। सुदास पैजवन के उत्तराधिकारी/नाती राम दाशरथी एक बार तो पत्थरों की विशाल संरचना बना कर सीता नदी को उसके पुराने बहाव मार्ग पर मोड़ लाये किन्तु अगले वर्ष सीता फिर चली गई। इस बार उन्हें सीता को त्यागना ही पड़ा। बस्तियों, ग्राम-गोत्रों, जनों का एक विशाल पलायन देश के विभिन्न भागों में हुआ, जहाँ नवीन बस्तियों-राज्यों का नया-पुराना सारा इतिहास नयी पृष्ठभूमि के हिसाब से लिख दिया गया। सरस्वती-चित्रा की अनियमितता बहुत बाद तक भी चलती रही।

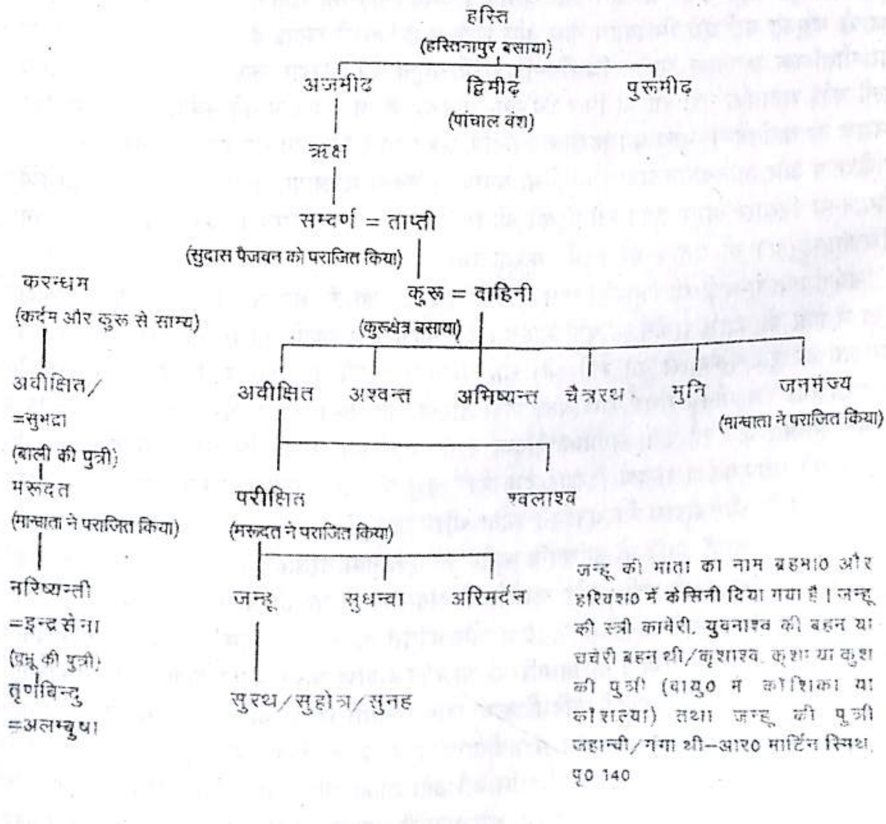
यति-ययाति-यातु जन जो कि मूल रूप से उस समय उतर भारत की मुख्य नदी चित्रा-चित्ररथी के क्षेत्र के निवासी थे, भारत की मुख्य जाति थे। नदी या जाति के नाम पर वर्ष के प्रथम महिने का नाम- चैत्र। वैदिक जनों से पूर्व पुराणों में प्रचेताओं का विवरण है। ब्रहमा के दस मानस पुत्र-मरिचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, कृतु, प्रचेता, वशिष्ठ, भृगु और नारद में से एक का नाम प्रचेता है। इन प्रचेता के सुयशा गन्धर्वी से यक्ष और यक्षिणियाँ/अपसराऐं हुईं। [58]

प्राचीन वर्हि और सामुद्री के दस पुत्रों को भी प्रचेता कहा गया है । इनकी स्त्री कण्डू ऋषि और प्रमलोचा की पुत्री मरिषा या वृाक्षी थी। इनके पुत्र दक्ष भी प्रचेता कहे गये है[59] जिसकी पुत्रियाँ, भारतीय प्राचीन साहित्य के अनुसार चराचर जीव जगत की माताऐं बनी। प्रचेता... चित्रा चैत्ररथी नदी क्षेत्र में निवास करने वाली आदिम-अर्धसभ्य, यायावर, शिकारी, खाद्य संग्राहक



जनों को कहा गया है... अर्थात... पूर्वचेत्रा ! ब्रहमा के मानस पुत्रों को चित्रशिखण्डित की संज्ञा दी गई है[60] अर्थात सम्पूर्ण चैत्रजनों के प्रमुख। सम्पूर्ण चैत्रजन मूल रूप से गन्धर्व (गज/गजन्धर > युगन्धर > जुगन्धर/जग), हस्ती, यक्ष, वानर, कपि, नाग, पणि, ऋक्ष, भल्लूक, महिष, जम्भ, दम्भ, रम्भ आदि टोटेमिक जन हैं। हस्तिनापुर के शान्तुनु के पुत्र चित्रांगद के किसी गन्धर्व चित्रांगद से इस बात पर युद्ध का वर्णन है कि असली चित्रांगद कौन है?

सुदास पैजवन को पराजित करने वाले सम्वर्ण के पुत्र कुरू के पाँच पुत्रों में से एक का नाम चैत्ररथ है।



भीम विदर्भ का उल्लेख ऐत्तरेय ब्रा0 7.34 में पर्वत और नारद के साथ है। ये पर्वत और

नारद 4.15.7-10 के अनुसार सोमक साहदेव्य के पुरोहित थे।[61] हो सकता है कि 0 5.30. 011-14 में ऋणंचय से उपहार प्राप्त करने वाला वभ्रू ऋषि (6.45.31, 33 का उदार दानी) पणि बृबु ही हो। शांखायन श्रौत सूत्र 16.11.11 के अनुसार भारद्वाज ने वृबु तक्षण और प्रस्तोक सृज्जय से उपहार पाये थे[62]। वैदिक देववात या पौराणिक यादव देववृद्ध और उसका पुत्र बभ्रू ... निस्संदेह सृज्जय/हैंहय हैं। पर्वत नारद और बभ्रू का उल्लेख गन्धर्वों में भी है। महाभारत 15. 29.9 में कथन है कि राज्यच्युत किये गये कुबेर से मिलने विश्वावसु तुम्बरू और चित्रसेन-पर्वत, नारद और देवल के साथ आये।'' हापकिन्स का मानना है कि अन्तिम तीन केवल मुनि थे[63] मेरे विचार में अतिंम तीन मुनि भी थे। चित्ररथ गन्धर्व द्वारा निर्मित किये गये वनों-मंदाकिनी, नन्दन, अलका और चैत्ररथ में ही पुरूरवा अधिकतर घूमता है वह वैदिक जनों की बस्तियों में गा-बजाकर जीवन यापन करने वाले गन्धर्वो से ही वैदिकजनों द्वारा अग्नि के प्रयोगों के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है (शतपथ ब्रा0 11.5.1.1-17) उसकी स्त्री उर्वशी एक गन्धर्वी है[64] **सिन्ध एस. ड़ांगी** का मानना है कि स्पष्टत वह एक गन्धर्व था।[65] उसके भीतर गन्धर्वो का यायावर जीवन छोड़कर, स्थाई रूप से बसकर, वैदिक जनों की भाँति कृषक या कामगर जीवन जीने की लालसा थी। किन्तु उर्वशी ने शर्तो में बाँधकर उसे ऐसा करने से रोके रखा।

जिस प्रकार काम्यकवन का कामदेव, कामरूप का नरकासुर बन गया था। उसकी राजधानी प्रागज्योतिषपुर वैद्यूत पर्वत के चारों ओर वैभ्राज (चमकीला) की द्योतक है। उसी प्रकार ''नर'' शब्द से संयुक्त कई ऐसे मिथकीय नाम और घटनाऐं है जिससे लगता है मूल नर्वदा नदी, वैदिक और पौराणिक काल में या तो चित्रांग-चित्ररथी/यमुना की हरिद्वार-रूड़की की ओर से आने वाली कोई सहायक नदी थी या फिर चित्रांग-चैत्ररथी के ही रोद्र रूप को नर्वदा कहा गया है।[66] यमराज के यहाँ जन्म-मृत्यु का हिसाब-किताब रखने वाले चित्रसेन का मिथक यमुना-चैत्ररथी के रौद्ररूप और अनियमित बहाव मार्गो के कारण अस्तित्व में आया, क्योंकि उस समय बस्तियों और उनमें निवास करने वाले लोगों का जीवन और मृत्यु का समय निश्चित करना चित्रसेन (चित्रांग/यमुना) के बहाव पर निर्भर करता था।

नर्वदा एक गन्धर्वी थी जिसकी तीन पुत्रियाँ सुन्दरी, केतुमती और वसुधा... ये तीनों हिरण्याक्ष कुल में हेती के वंशज सुकेत के पुत्रों माल्यवान सुमाली और माली की स्त्रियाँ थीं।[67] एक नर्वदा मान्धाता के पुत्र पुरूकुत्स की स्त्री थी। यह पुरूकुत्स नागों की रक्षा के लिये मौनेय गन्धर्वों से लड़ा था।[68] ये मौनेय गधर्व सम्भवतः पीछे उल्लिखित पर्वत, नारद, बभ्रू और देवल आदि, अर्थात सृज्जय जन रहें होंगे क्योंकि वैदिक साहित्य में एक स्थान पर पुरूकुत्स द्वारा सुदास पैजवन की पराजय का सन्दर्भ दिखाई देता है।[69] बभ्रू की बहन बाहयका (वभ्रुयका) भजमान यादव की स्त्री और सुदास पैजवन की माता थी।

यक्षों और गन्धर्वो आदि के अधिपति कुबेर का एक नाम नरवाहन भी है। पुराणों में उल्लेख है कि शिव ने कुबेर को नर्वदा और कावेरी के संगम स्थान पर ही यक्षों का अधिपति बनाया था[70] यदि वर्तमान सन्दर्भ को लें तो ''नर्वदा और कावेरी नदियों का संगम'' ... की बात सोचना हास्याप्रद है। किंतु कावेरी क्षेत्र के निवासियों का द्योतक शब्द कुबेर प्रतीत होता है वह नरवाहन भी है अर्थात नर्वदा और कावेरी नदियाँ कभी उत्तरी भारत में थी और इनका संगम भी होता था। चित्रांग/यमुना नदी करनाल क्षेत्र में नर्वदा/नर/नरक कहलाती थी और हरिद्वार की ओंर से गंगा तब कावेरी नाम से हरियाणा की भूमि की ओर आती थी संम्भवत यह आज की सोलनी नदी रही हो। कालान्तर में चित्रा/चैत्ररथी और कावेरी अपना पश्चिम का बहाव मार्ग छोड़कर यमुना और गंगा के रूप में दक्षिणवाहिनी बन गई। मूल गंगा तो कभी वापिस नहीं आई किन्तु

आज भी हर वर्ष हजारों भागीरथ काँवड़ के रूप में कावेरी को लाने का उपक्रम करते हैं। भारतीय प्राद्यौगिकी संस्थान, रूड़की के भूवैज्ञानिक **डा० ब्रहमप्रकाश** ने विस्तृत अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष दिया है कि 2500 वर्ष पूर्व तक गंगा नदी हरिद्वार से रूड़की होकर मेरठ की ओर बहती थी।[71]

कुबेर का एक नाम यदि नर वाहन है तो कुबेर के पुत्र का नाम नलकुबेर है। जिस प्रकार नल गन्धर्व और हस्ती जनों में समानता है उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि कौवेर अथवा कुबेर जन ही कालान्तर में कुरू-कौरव्य कहलाये हो क्योंकि दौनों का मूल निवास स्थान एक ही-सहारनपुर जिला था।

चित्ररथ के पुत्र शशिबिन्दु के दामाद मान्धाता की बहन का नाम कावेरी था यह सुहोत्र के पुत्र जन्हू ऋषि की स्त्री थी।[72]

ब्रहमा0 ; वायु0 के अनुसार कावेरी गंगा नदी का आधा भाग है[73] किन्तु भाग्वत0 ; ब्रहमा0 वायु में कावेरी भ्रदाश्व वर्ष की नदी है। ऐसे में विद्वानों का भद्राश्व वर्ष को चीन व अक्साई चिन से समीकृत करना[74] भ्रमवश है। असल भद्राश्व वर्ष गंगा यमुना दोआबे में बद्रीनाथ, बदराहू, अंगराहू का प्रदेश था और इस हिसाब से कावेरी नदी अवश्य सोलानी नदी है एक समय यह अज-आद्रिजों के अजनाभखण्ड़ या अजमीढ़ में बहती थी और चितांग-चैत्ररथी/यमुना की सहायक थी। अत वह युवनाश्व जिसकी पुत्री या पौत्री कावेरी कही गई है अजनाभ/अजमीढ़ प्रदेश में अजोध्या के नाम से प्रारम्भिक बस्ती बसाने वाले आद्र (आद्रिजों) के ही वंशज थे........। यह तथ्य कि अजोध्या बसाने वाले आद्र.......आद्रि (पिशाच) अहि या नाग ही थे- इसके लिये आगे समर्थन भी प्राप्त होता है।

मान्धाता का एक पुत्र पुरूकुत्स मोनेय गन्धर्वों से नर्वदा नागों की सहायता के लिये लड़ा था।[75] मान्धाता के सबसे बड़े पुत्र का नाम अम्बरीष है।[76] ब्रहमा0 में अम्बरीष एक काद्रवेय नाग का नाम है।[77] मान्धाता की पचास पुत्रियाँ सौभरि ऋषि को ब्याही थी और सौभरि ऋषि के शाप के कारण गरूड़ कालिन्दी नदी तट पर नहीं आ सकता था इसलिये कालिय नाग कालिन्दी में पड़ा रहता था।[78] इसका अर्थ यही है कि आद्रवंशी जन नाग थे जो अपने पड़ोसी गन्धर्वों, यक्षों, राक्षसों और मरूदत यादवों आदि से संघर्षरत रहे- गन्धर्वों के साथ पुरूकुत्स का और यक्षों के साथ मुचकुन्द का संघर्ष हुआ। मुचकुन्द को (कावेरी नदी के) कुबेर ने पराजित किया था।[79] मान्धाता को रावण के विरूद्ध पौलस्त्य और गालव ने रोका और मधु के पुत्र लवण ने मान्धाता को उसकी सेना सहित भस्म कर दिया।[80] अन्यत्र कथन है कि मान्धाता की हत्या रावण के मौसा मधु यादव ने की थी। जो भी हो मान्धाता का यमुना नदी क्षेत्र में राक्षी के रक्षों के साथ संघर्ष हुआ था। मान्धाता यमुना नदी प्रदेश का था, तभी तो कुंभ महाभारत में कथन है कि मान्धाता ने यमुना तट पर सौ-सौ अश्वमेघ और राजसूय यज्ञ किये थे।[81] द्रोणपर्व के अनुसार मान्धााता ने अंगार, मरूदत, असित, गय; अंग; वृहद्रथ, जनमेजय, सुधन्वा और नृग नामक राजाओं को जीता।[82] दूसरी ओर मरूदत के विषय में भी कहा गया है कि मरूदत ने नागों से युद्ध किया, हस्तिनापुर पर आक्रमण किया[83] वैशाली तो तब तक मरूदत के पौत्र विशाल ने बसाई ही नहीं थी और मरूदत का पुत्र तृणबिन्दु काम्यक वन का निवासी कहा गया है तब ये मरूदत सरस्वती-यमुना प्रदेश के यदुजन ही हुऐ। मान्धाता के पौत्र और अम्बरीष के पुत्र का नाम दिलिप था। महाभारत में नहुष, अश्वतर और कपिल के साथ-साथ दिलिप भी एक नाग है।[84] ऐसा लगता है कि आद्र-युवनाश्व-मान्धाता जन जो कि नाग ही थे अब तक घर-बस्तियों वाले स्थाई कृषक/पृथु बनकर सभ्य/आर्य बन चुके थे और अपने भाईवृन्द अन्य

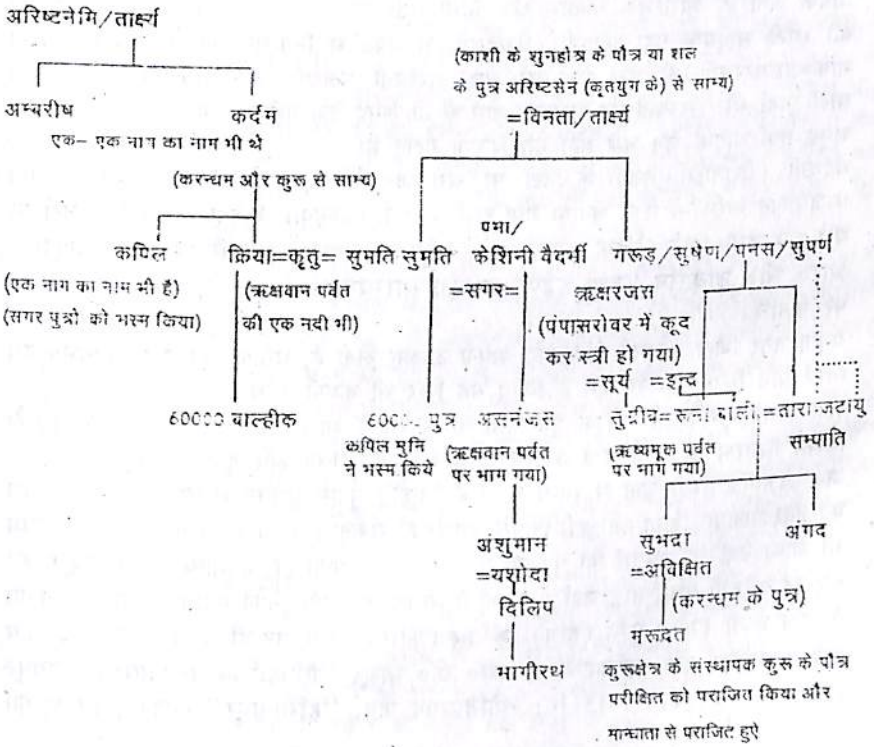
नागों-गन्धर्वों आदि से बहुत अधिक अलग पहचान बना चुके थे।

मानसरोवर जिसे तिब्बत में सतलुंज नदी के उदगम क्षेत्र में राक्षस और बिन्दुसर नामक दो झीलों से समीकृत किया जाता है के समीप गुर्ला मान्धाता नामक शिखर है। असल में चैत्ररथी-यमुना की अनियमितता के कारण बना समुद्र ग्रीष्मकाल में सूखते-सूखते राक्षस और बिन्दुसर नामक दो झीलों के रूप में बच रहता था, ये झीलें सहारनपुर जगाधरी के बीच कहीं रही होंगी जहाँ कभी तृणबिन्दु यादवों/ चैत्ररथों का अधिकार था। जब मान्धाता जनों ने वहाँ बस्तियाँ बसाई तो कहा गया कि शशिबिन्दु की पुत्री बिन्दुमती या चैत्ररथी मान्धाता की स्त्री बनी। इसी प्रकार कालान्तर में मान्धाता जनों जो नाग-अज-आद्रिज ही थे का पराभव हुआ और गरूड़जनों का विस्तार हुआ। कालान्तर में चैत्ररथी-यमुना क्षेत्र की बिन्दुसर और राक्षस झीलों का अस्तित्व समाप्त हो गया किन्तु जन मानस के मस्तिष्क में उत्तर में दो झीलें जीवित रही और उन झीलों तथा उसके आस पास के समूचे भूगोल का समीकरण तिब्बत क्षेत्र की मानसरोवर झीलों तक पहुँच गया। कैलाश यमुना तट पर कालेसर के पास था और कहा भी गया है कि कैलाश के आसपास का क्षेत्र नाना प्रकार के वृक्षों, जीव जन्तुओं से युक्त था। यदि हम उसे तिब्बत का कैलाश मानें तो वृक्षों-उद्यानों-जीव जन्तुओं के सन्दर्भ में हमें निराशा हाथ लगेगी और समूचा विवरण काल्पनिक और मिथक लगेगा।

जिस समय चित्रा-सीता अथवा चित्ररथी-यमुना नदी कैलाश कालेसर के बाद पश्चिम वाहिनी होकर बहती थी उस समय ऋक्ष पर्वत/ऋक्षवान/ऋष्यमूक पर्वत (गंगा-यमुना दोआबे की शिवालिक पर्वत माला) से निकलने वाली राक्षी-दृष्द्वती (मस्कारा > मकराक्षी) नदी के तटों पर मकर, मतस्य रक्ष जनों का; कावेरी (सोलानी) नदी के तटों पर कुबेर यक्षों का और नर्वदा (नागदेव की खोल) नदी पर नागों का तथा जहान्वी नदी के तटों पर जन्हू जनु जनों का निवास था। हरिद्वार कनखल के आसपास कपि-कपिलजन थे। कालान्तर में मानसरोवर क्षेत्र में मान्धाता जन विकसित हुऐ और उनके बाद ऋक्षवान पर्वत से गरुड़ जनों का आगमन हुआ। चित्ररथी यमुना और तलहटी क्षेत्र की छोटी मोटी नदियों की अनियमितता कभी समूचे क्षेत्र को विशाल सागर क्षेत्र में बदल देती थी तो कभी विशाल गर क्षेत्र में। गर/गार/गाद =कुशिक=कीचड़/रेत, दलदल.... कछार! नरों का नरक; यम का यमलोक यही प्रदेश था। इसी क्षेत्र में कभी मतस्यजनों की सहायता से मनुद्याता जन बसे थे (मनु-मतस्य का मिथक)[85] गरूड़ जन, ताक्ष्र्य अथवा सुपर्ण जन जो अरिष्टनेमी की स्त्री विनता[86] की संतानें थे। अरिष्टनेमि का शाब्दिक अर्थ रिष्ट/विपत्ति/प्रलय/विघ्न/(रेत) से बचाने वाला/रिष्ट विनायक अर्थात विनता। गरूड़ जनों जो कि विनतेय (विनीता पुत्र) कहे गये हैं, ने उस क्षेत्र में जल की समुचित निकासी का कार्य किया।[87] सगर के पिता का नाम असित या बाहु। यह संयुक्त रूप से हस्ती > हाथी > हाथ > बाहु का द्योतक है, दूसरी ओर कहा गया है कि हैहय अर्जुन द्वारा पराजित और राज्यच्युत किये गये बाहुक की दूसरी रानियों ने गर्भवती रानी कालिन्दी को जहर दे दिया था। जहर=गर के साथ उत्पन्न हुआ पुत्र सगर कहलाया अर्थात गर सहित। किन्तु सगर-गर क्षेत्र का सगर अर्थात शिशु था। इनके मूल में ऋक्षवान पर्वत के टोटेमिक गरूड़ जन थे।

ऋक्षवान पर्वत के गरूड़जनों के सम्बन्ध में कई तथ्य हैं-- सगर की एक स्त्री का नाम सुमती था, जो सुपर्ण की बहन कही गई है। सुपर्ण गरूड़ स्वयं है या वह उसका पुत्र कहा गया म्यूर है।[88] सुमती से सगर को साठ हजार पुत्र हुऐ। सगर की भाँति क्रतु की एक स्त्री का नाम भी सुमति है। क्रतु की दूसरी स्त्री क्रिया, कर्दम की पुत्री है। यदि सगर को सुमती से साठ हजार पुत्र हुऐ थे तो क्रतु को भी क्रिया से साठ हजार बालखिल्य पुत्र हुऐ। एक और अजीब

साम्य यह है कि क्रतु ब्रहमा0 में ऋक्षवान पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम है।[89] इसका अर्थ यह भी हुआ कि क्रतु–क्रिया के ये साठ हजार बालखिल्य पुत्र ऋक्षवान पर्वत के निवासी थे। दूसरे साठ हजार सगर पुत्रों के भस्म होने के उपरान्त सगर की दूसरी स्त्री केसनी वैदर्भी का पुत्र असमंजस ऋक्षवान पर्वत पर ऋक्षों के यहाँ गया। ऐसा लगता है कि कपिल मुनि कनखल निवासी नाग जन रहे हों और उन्होंने हरिद्वार के दक्षिण में बसने वाले सागरेय/शिग्रु अर्थात गरूड़ जनों की बस्तियाँ जला कर उन्हें उजाड़ दिया हो। ब्रहमा0 में कपिल केशिनी का पति एक यक्ष हैं; वृत्रासुर की ओर से इन्द्र से लड़ने वाला एक दानव है तो कपिल एक काद्रवेय नाग है।[90] सागरेयों को भस्म करने वाले कपिल का पिता कर्दम एक प्रजापति है किन्तु महाभारत में कर्दम एक नाग भी है[91] इस प्रकार संदेह नहीं रह जाता कि कपिल... केवल और केवल नाग ही थे...। ये बिन्दुसर के निवासी थे। भाग्वत0 ; ब्रहमा0 ; मतस्य0 के अनुसार इन्होंने अपना निवास समुद्र से पाया।[92] इसका अर्थ यही है कि इनका निवास उस क्षेत्र में था जहाँ कभी नदियों की अनियमितता के कारण बनने वाले बिन्दुसर का जल भर जाता था। कपिलों ने इस क्षेत्र से जल की निकासी समुचित की होगी और जब लगभग उसी क्षेत्र में शिग्रु–सागरेय या गरूड़



जन आकर बस्तियाँ बसाने लगे... तो संघर्ष अनिवार्य हो गया था। हालांकि सागरेय जनों ने भी उस क्षेत्र में अतिरिक्त जल की समुचित निकासी के कार्य किये थे किन्तु गरूड़ और नागजनों का संघर्ष, उनके समान क्षेत्रीय होने के कारण प्राचीन और कबीलाई था।.. अपने पश्चिमी सीमा क्षेत्रों पर शिग्रु–सागरेयों ने भले ही सृज्जयों/हैहयों से विजय प्राप्त करने वाली टक्कर ली हो;

हैहयों/सृज्जयों के सहायक कम्बोजों (काम्यकवन के भोज) और यवनों (अज-आद्रिजों के वंशज युवनाश्व/यमुना क्षेत्र के मान्धाता जनों/नागों) को पराजित किया हो, किन्तु पशिचम में कपिल-जनों के विरूद्ध वे संघर्ष हार गये... अन्ततः असमंजसता की स्थिती में वे अपने मूल ऋक्षवान पर्वत पर लौट भी गये। ऋक्षवान पर्वत पर आकर एक अन्य अदभुत मिथक मिलता है--

ऋक्षरजस नाम का वानर जो पंपा सरोवर में कूद कर स्त्री हो गया था, से इन्द्र ने बाली को और सूर्य ने सुग्रीव को उत्पन्न किया। बाली की स्त्री तारा सुषेण की पुत्री थी। सुषेण सुपर्ण ही है अर्थात वह गरूड़ है सुग्रीव की स्त्री रूमा पनस की पुत्री थी। यह पनस भी में सुपर्ण है-सुपर्ण > सुपर्णस > पनस! अब सगर और सुग्रीव की कथा में अन्तर केवल यह है कि सगर की स्त्री सुपर्ण की बहन है और सुग्रीव की स्त्री सुपर्ण की पुत्री। वरना तो सगर के शत्रु हैहयों को और सुग्रीव के शत्रु बाली को मारने वाले राम ही हैं; यहाँ भी थोड़ा सा कथान्तर रखा गया है कि हैहयों का विजेता राम जमदग्नि है तो बाली का वधकर्ता राम दशरथी !!!

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. वैदिक जनों के आरम्भिक आवास क्षेत्र किसी बड़ी नदी सम्भवतः अंगिरसी-हिरण्यवती नदी की छोटी सहायक नदी वेदवती (वैद्यूत/सौद्युम्न पर्वत से निकलने वाली) अथवा सदादेनी मार्कण्ड़ा/सरस्वती के तटों पर बसे। यह सरस्वती पलक्षा (अत्याधिक कीचड़ व गाद वाली)नदी थी। सरस्वती का सरस्वती नाम से ही समुद्र तक पहुँचने, और उसके तटों पर धुर समुद्र तक वैदिक जन बसे होने की धारणा गलत है।
2. वेदवती (वैद्युती/सौधुम्नि) के तटों पर बसे जन-वैदिक; उनका साहित्य-वेद; यज्ञाग्नि प्रज्जवलित करने के लिये बनाया गया स्थान- वेदी कहलाया। वेदवती-सरस्वती के तटों पर बसे जन उसी प्रकार वैदिक कहलाये जैसे सारस्वत, दृष्द्वन्त, यम, सैन्धव, गांगेय आदि।
3. **आर० सी० ठाकरान "क्या हड़प्पा सभ्यता सारस्वत थी"**, दिल्ली, 2002; पृ0 54-55 पर मानचित्र
4. यमुना नगर जिले में जहाँ से चितांग अपना आकार लेती है, धरातल का ढलान लगभग दस मीटर प्रति कि0 मी0 से कम है किन्तु यह फिर भी काफी अधिक है।
5. असन्ध को दुष्यंत और उसके पुत्र भरत की राजधानी आसन्दीवत से समीकृत किया जाता है। विशेष विवरण के लिये देखें अगला अध्याय-"आसन्दीवत और दृष्द्वन्त जन"
6. अज अजमीढ़ हस्ती जनों से साम्य रखते हैं जिन्होंने सुदास पैजवन से पराजित होकर दक्षिण की ओर पलायन किया और हस्तिनापुरी बसाई। हो सकता है लम्बे संघर्ष के उपरान्त दिवोदास भी सोम्ब नदी के सोम्बरों को पूर्णतया पराजित न कर पाया हो या सोम्बरों ने दोआबे में हट कर नई बस्तियाँ बसाई हों... जहाँ वे पुराणों में सम्वर्ण कहलाये। इन्होंने सुदास को पराजित किया।
7. ये अज हस्ती (गज) हस्त (हाथ) > कर (कौरव्य) नाग जन ही थे। हस्तिनापुर के अन्य नाम गजसाहव्यं और नागसाहव्यं थे- **वी० के० माथुर "ऐतिहासिक स्थानावली" जयपुर** 1969, पृ0 487-88; 1015-16; **ज्योतिप्रसाद जैन, "हस्तिनापुर"** लखनउ, 1955, पृ0 14;

   दामोदर धर्मानन्द कौशाम्बी लिखते हैं कि हस्तिनापुर के प्रथम स्तर में अधपके, घटिया दर्जे के गेरू पुते मृदभांड़ों के परवर्ती नागों का होने की सम्भावना है। इससे दूसरे स्तर के चित्रित धूसर भांड़ भी व्यापक रूप से आर्यों के मृदभांड़ नहीं अपितु पुरू- कुरूओं का मृतिका शिल्प माना जाना चाहिऐ। आर्यों के कोई विशिष्ट मृत्भांड़ नहीं है यद्यपि उत्तरी (चित्रित) धूसर भृांड़ शीघ्र ही यह स्थान ग्रहण कर लेते हैं- **दामोदर धर्मानन्द कौशाम्बी, "प्राचीन भारत**

की संस्कृति और सभ्यता,'' अनु० गुणाकर मुले, दिल्ली, 1993 पृ0 121,124,111 उत्तरी गंगा व सतलुज के क्षेत्रों से प्राप्त लगभग 70 चि. धू. मृ. स्थलों की संख्या गंगा-यमुना के उपरी दोआबे में मिले लगभग 50 गेरूऐ रंग के मृदभांड़ स्थलों की तुलना में कॉफी अधिक है तथापि केवल चि. धू. मृदभांड़ की संस्कृति जैसी कोई चीज नहीं है। क्योंकि काले लाल मृदभांड़, लाल मृदभांड़ अलंकृत धूसर मृदभांड़ भी इनके साथ ही प्राप्त होते हैं। यूँ तो चि. धू. मृदभांड़ों के ठीकरे अलग से पहचाने जाने वाले हैं परन्तु इनकी संख्या किसी स्थान पर सर्वाधिक नहीं है- अंतरजी खेड़ा में भी जहाँ चि. धू. मृ. संस्कृति लगभग 650 वर्ग मीटर में फैली है चि. धू. मृदभांड़ों की संख्या समस्त मृदभांड़ों में केवल 3 से 10 प्रतिशत तक ही है। वहाँ भी जहाँ इनकी संख्या अपेक्षाकृत अधिक है, इन संस्कृति के स्तरों से चि. धू. मृदभांड़ों के ठीकरे समस्त मृदभांड़ों में पन्द्रह प्रतिशत से अधिक नहीं हैं- **आर. सी. गौड. ''ए पेंटिड़ ग्रे वेयर एट अतरंजीखेड़ा''** इस प्रकार चि. धू. संस्तर एक मिश्रित संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। जिस प्रकार उत्तर वैदिक साहित्य द्वारा वर्णित संस्कृति और संस्कृतेत्तर और आर्य तथा अनार्य तत्वों के सम्मिश्रण का द्योतक हैं- **रामशरण शर्मा, ''प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति और सामाजिक संरचनाऐं''** दिल्ली ; 1993 पृ0 96; **कौशाम्बी जी** (उपर्युक्त) पृ0 124 का कथन है कि महाभारत से जानकारी मिलती है कि कम से कम एक नाग वंश के कुरूओं के साथ मैत्रीपूर्ण और कुछ विशेष प्रकार के सम्बन्ध थे। महाभारत आदि पर्व में नाग वंशावलियों और आरव्यानों को विशेष स्थान दिया गया है, यद्यपि युद्ध की मुख्य कथा से इनका तनिक भी सम्बन्ध नहीं।

8. महाभारत आदि0 में परीक्षित के पूर्वजों में से पुरूरूवा ऐल (ऋग्वेद 10.95 ; शतपथ ब्रा0 11.5.1.1) को एक ऐसे शासक का पुत्र कहा गया है जो वाल्ही से आकर मध्यभारत में बस गया था; यह बाल्ही मध्य भारत से बाहर कर्दम राजाओं के आधीन था, इसमें इलावर्त वर्ष का भी उल्लेख है-**रायचौधरी, ''प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास''** दिल्ली पृ0 22-23 और पृ0 23 पर टिप्पणी-3
9. परीक्षित के पूर्वजों में अजमीढ़ का पुत्र ऋक्ष भी है जिसका अर्थ ऋक्षवान पर्वत के ऋक्ष जनों से सम्बन्ध हो सकता है अब मिलान किजिये... कर्दम और उसका पुत्र कपिल। कपिल ने 60000 सगरपुत्रों को नष्ट किया था... ये 60000 सुमति पुत्र थे, सुमति सुपर्णा थी, अर्थात सुर्पण (गरूड़ या म्यूर) की बहन या पुत्री ; सगर की यह स्त्री सुमति... अरिष्टनेमि की पुत्री हुई। एक अरिष्टसेन कृतयुग **प्रधान, क्रोनोलोजी आफ ऐंशेंट इड़िया,** दिल्ली 1979, पृ0 73 से सम्बन्धित हैं। ऋक्षवान पर्वत से सम्बन्धित क्रतु भी एक हैं जिनकी स्त्री का नाम भी सुमति था किन्तु इन क्रतु को कपिल की बहन क्रिया से 60000 बालखिल्य हुऐ। अवश्य ही इन 60000 बालखिल्यों का 60000 सागरेय से कोई शत्रुता जैसा सम्बन्ध है। और वह यह है कि ये 60000 सागरेय (सगर > स क्रतु) गरूड़ जन थे। कपिल तथा कर्दम नागों के नाम है... हो सकता है ये एलपत्र नागों के वंशज हों और बाल्हीकों का प्रदेश बाल्ही हो। कपिल नागों ने गरूड़ जनों को उजाड़ कर प्रदेश में क्रतु (सगर) युग का अन्त कर दिया; और सगर पुत्र असमंजस अंतत: ऋक्षवान पर्वत पर भाग गये। सुग्रीव भी तो किसकिन्धा छोड़कर ऋष्यमूक पर्वत पर भाग गया था...। सगर की एक स्त्री का नाम केसिनी थी.. वह वैदर्भी थी किन्तु सुग्रीव और सगर तथा केसिनी और किसकिन्धा में ही साम्य नहीं है अपितु बाली और सुग्रीव की स्त्रियाँ... तारा और रूमा... जिन सुषेण और पनस वानर की पुत्रियाँ थीं वह भी सुपर्ण (सुपर्णस > पर्णस > पनस) अर्थात गरूड़ अरिष्टनेमि का पुत्र तार्क्ष्य था।

दोआबे में अधिकार को लेकर संघर्ष अन्त तक चलता रहा। महाभारत में देवापि, बाल्हीक और शांतुनु के बीच यही संघर्ष किसी दूसरे तरीके से दिया गया है। देवापि कुष्ठ रोगी था जो अंतत: ऋषि अरिष्टसेन बन गया... निस्संदेह गरूड़ है जिसने सत्ता का अधिकार छोड़ दिया। बाल्हीक

अपने मामाओं में (शैव्या के भातृजनों) चला गया..., जैसे असमंजस (सगर पुत्र) भाग गया था। सत्ता अन्ततः शांतुनु को प्राप्त हुई। सगर-सुग्रीव-कृतु-प्रतीप एक ही घटना क्रम के विभिन्न कथानक है। शांतुनु के उपरान्त भी दोआवे में अधिकार का संघर्ष रूकता नहीं है। भीष्म... एक वसु है जो अंत तक सत्ता से जुड़ा है। चित्रांगद किसी गन्धर्व जाति का है और विचित्रवीर्य... किसी अन्य तीसरी जाति का प्रतिनिधित्व करता है... अन्त में दोआबे पर कौरव्य नाग की एक शाखा धृतराष्ट्र नाग का अधिकार होता है। आगे की कथा पणि पुत्रों (पणिड्डु > पांडु) पाँड़वों के धृतराष्ट्र से संघर्ष की कथा है।

10. यमुना के पश्चिम में पानीपत, पूंढ़री, पिंड़ारा, पिंड़ारसी क्षेत्रों में नागों के भाईवृन्द वे पणि (फणि > फण > नाग) जन थे

11. पति के जीवित रहते दूसरे पुरूषों से उत्पन्न संतानें कुण्ड कहलाई-**आप्टे, ''संस्कृत हिन्दी कोष''** दिल्ली, 1989, पृ0 283, ऐसे सम्बन्ध अवश्य ही वनों पर आश्रित, पशुपालक, यायावर समाज की स्त्रियाँ बस्तियों में रहने वाले कृषक, कामगर वैदिक जनों के पुरूषों के साथ स्थापित करतीं थीं। ऐसा सम्बन्ध वस्त्र, अन्न, औजार या आवश्यकता की किसी अन्य वस्तु की प्राप्ति या फिर आसान जीवनयापन के लिये होता होगा, जिसका अर्थ विवाह कतई नहीं था। बस्ती वाले वैदिक समाज के लिये इस प्रकार के सम्बन्ध अनैतिक थे। जबकि यायावर, वनों पर आश्रित, अर्धसभ्य समाज के लिये यह आवश्यकता की वस्तुऐं प्राप्त करने का एक साधन मात्र था। अब भले ही वे उसे अनैतिक मानते हों, तो भी कई मायनों में ऐसे सम्बधा बनाना उनकी मजबूरी ही थी।

पणि स्त्रियों/गन्धार्वियों की वे संतानें जो उन्हें वैदिक जनों से हुई कुण्ड कहलाई और वे स्त्रियॉ-कुण्ड़ती। पणिओं की स्त्रियों की ऐसी कुण्ड़ संतानें पण्ड्डू > पॉड्डु > पॉडव हुई, जो मातृ पक्ष की ओर से नाग ही थे। किन्तु उनका पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, रहन-सहन प्रथा-परम्पराऐं वैदिक जनों की थी। कहा जा सकता है कि पणिजन जहॉ वैदिक सभ्यता और संस्कृति और यहॉ तक कि उनके नैतिक पतन के जिम्मेदार थे, वहीं पणि स्त्रियों
और वैदिक पुरूषों की संताने वैदिक संस्कृति के उत्तराधिकारी बने, किन्तु यहॉ तक आते-आते उनमें दोनों ही संस्कृतियों की बहुत सी बातों का समावेश हो चुका होगा।

सरस्वती-यमुना-सतलुज नदियों के बहाव मार्ग में अनियमितता या फिर अकाल-सूखे आदि के कारण इन पणि स्त्रियों/कुण्डतियों की संतानों ने हरियाणा पंजाब का प्रदेश छोड़ दिया और वे पूर्व में दोआबे की ओर बढ़े। हस्तिनापुर ने नागों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे औरस नाग न होकर वैदिक पुरूषों की संतानें थे। तब पणिड्डू/पॉड्डु जनों ने खॉडवप्रस्थ में नई बस्ती बसाई। प्रतीत होता है कि ये पॉडव जन सरस्वती-दृष्द्वती नदी क्षेत्र में उस स्थान से आये थे, जहॉ आज उपरी खॉड या निचली खॉड़ नदियॉ/बरसाती नाले हैं, सम्भवतः तभी उन्होंने अपनी नवीन बस्ती का नाम खांडवप्रस्थ रखा, या फिर खॉडव शब्द षण्ड़ शब्द का अपभ्रंश हो सकता है जो उन पणि/पणिड्डु पुरूषों का विशेषण हो जिनकी स्त्रियों ने वैदिक पुरूषों से संसर्ग करके पॉड़वों को जन्म दिया, इस प्रकार वैदिक जनों के दक्षिण का समूचा वन खांड़व वन था जैसे कुण्डिनी स्त्रियों का क्षेत्र कुण्डिनपुर था।

12. अज राम के दादा का और आद्रि उनके एक पूर्वज का नाम है। बौद्ध ग्रन्थों में इक्षवाकु ने अपने बहन सुभद्रा से विवाह किया था और आदि दशरथ जातक में सीता राम की बहन भी है- **रोमिला थापर ''प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास,'' अनु० आदित्य नारायण सिंह, दिल्ली,** 2001 '' पृष्ठ 243, 267, 269, 270 टिप्पणी-58 शाक्यों, कोलियों, लिच्छवियों की उत्पत्ति कथाओं में भाई बहनों के विवाहों का उल्लेख प्राय मिलते हैं-**रोमिला थापर, ''वंश में राज्य तक'' अनु० मंगलनाय सिंह,** दिल्ली, 1977, पृ0 69 और पृ0 96 पर टिप्पणी 47 हो सकता है बाद में इस परम्परा को वंश की शुद्धता के साथ जोड़ दिया

गया हो, एक ही माता पिता की संतानों के बीच विवाह की परिपाटी बाद में मामा-फूफी की संतानों के बीच विवाह में पलट गई हो, हो सकता है इसका मूल प्राचीन काल में भी विद्‌मान रहा हो। वहन दो प्रकार की होती थी, एक अपनी ही माता की जाई अर्थात भगिनी और दूसरी स्वसा, जो मामा, फूफा, मौंसा आदि स्वजन की पुत्री होती थी... स्वसा से विवाह होने पर स्वसा का पिता स्वसुर बन जाता था-या यूँ कहें कि दरअसल पहले पहल स्वसुर मामा, फूफा या मौसा ही हो सकते थे। यह कौटाम्बिक था और कबीलाई था इसलिये यही आसान और आवश्यक था। अर्थात वे मातृसत्तात्मक समाज वाले जन थे जिनमें भाई बहनों के बीच सीधे कौटम्बिक विवाह की प्रथा थी। वहाँ ऐसे विवाह के लिये कोई विशेष समारोह नहीं होता होगा, बस साथ खेलते, साथ रहते, बड़े होते भाई-बहनों के बीच यह सम्बधा बन जाता था, जिसे उनका समाज स्वीकार कर लेता था, वन-अरण्यों में निवास करने वाले विरल आबादी छोटे कुटुम्व-कबीलों वालों के सामने यही एक मात्र मार्ग था। जैसे-जैसे आबादी बढ़ी, समाज बढ़ा, बस्तियाँ बसी, कृषि या अन्य कार्य शुरू हुऐ, परस्पर सहयोग-सहायता व सामजस्य की अवाश्यकता ने कोटाम्बिक विवाह से हटकर विवाह संस्था की नींव रख दी। ऐसे में समाज को भी मातृसत्तात्मकता से पितृसत्तात्मकता में पलटना पड़ा... यही उनका आर्य या सभ्य हो जाना था। आर्य अलग से कोई जाति या समाज नहीं था। वह भी अज-पिशाच, गन्धार्व, नाग, निषाद वन अरण्यों पर आश्रित शिकारी जनों के टोटेमिक कबीलों से निकले थे। जब मनुष्य बस्तियों में बसा तो स्त्री-पुरूष के बीच घर और बाहर की जिम्मेदारी, और एक दूसरे के प्रति विश्वास की आवश्यकता ने विवाह सम्बन्धों में मध्यस्तता को जन्म दिया। जब पुरूष ने पूर्ण रूप से भर्ता की जिम्मेदारी सम्भाली, समाज को पितृसत्तात्मक होना पड़ा। हो सकता है कि राम अज-आद्रि पिशाच जाति के वे जन हों जिनके पूर्वज वनों पर आश्रित शिकारी, यायावर, खाद्य संग्राहक जीवन छोड़कर बस्तियाँ बसाकर आर्य बन गये थे, विजय पिशाच भी तो धार्मात्मा राजा बन गया था - **रोमिला थापर** पृ0 272 आर्य का अर्थ आलय =घर/बस्तियों वाले सभ्य, सुसंस्कृत, श्रेष्ठ। इन अजों को बाद में सुदास पैजवन ने पराजित किया। अज जन अपना हिंड़न/सिन्धु/कालीसिन्धु **>** इन्दु वाला क्षेत्र छोड़ गये। यह कथा कि इन्दु की मृत्यु के उपरान्त अज राज-काज छोडकर उसकी विरह में भटकने लगे इसी घटना का व्यक्तिवाचक संस्करण है। वाल्मिकी0 में अज नाभाग का किन्तु अधिकतर पुराणों और रघुवंश में राजा रघु का पुत्र है जबकि बर्नोफ के अनुसार अज पृथुश्रवस का पुत्र है-**राणाप्रसाद शर्मा, ''पौराणिक कोष''** काशी, 1986, पृ0 13 ; मेरे विचार से अज का पौत्र बताया गया राम पृथुवंशी है क्योंकि . 10.93.14 में वह दु:शीम, पृथुवान और वेन के बाद वर्णित है। सुदास पैजवन ने पुरूष्णी (यह आज की रावी नदी नहीं अपितु पलक्षा/पलक्षणी/सरस्वती ही थी) तट पर दासराज संग्राम में पृथुवंशी चायमान के पुत्र कवि को मारा था और चायमान का एक पुत्र अभ्यवर्ती सृज्जय प्रस्तोक का मित्र व सहयोगी भी था (ऋ.6.27.5-8) राम के पूर्वज और मान्धाता के वंशजों में अम्बरीष-अम्बा क्षेत्र/अम्बावाली (कैलाश-कालेसर के उत्तर मे) ; रघु-भदराश्व > राहुक्षेत्र (बद्रीनाथ/आदिबद्री क्षेत्र) के और दशरथ-दृष्द्वती नदी क्षेत्र में दर्शाह का द्योतक है। स्मृतियों के आधाार पर लिखी गई रामकथा में दशरथ की कथा का आधाार दासराज अर्थात सुदास पैजवन हैं। दर्शाण, जो काथा-सांदली नदिओं का प्रदेश था का अधिपति दर्शाणन था, जो बाद के साहित्य में रावण का पर्याय नाम दशानन बन गया।

13. शिग्रु का अर्थ सहजनी का वृक्ष (आप्टे, पृ0 1016) या शोभाजन (मोरंगा टेरीगोस्पर्मा) या शेवगा का पेड़ ; **कौशाम्बी,** पृ0 109 **भारतीय सभ्यता और संस्कृति'' अनु० गुणाकर मुले** पृ0 109 सगर के पिता बाहुक को पराजित कर राज्यच्युत करने वाले हैहयों के एक राजा का नाम साहजन था। साहजन ने राजधाानी साहजनी बसाई। साहजन के पुत्र महिषमत ने अपनी राजधानी महिषमती बसाई। टोटेमिक महिष, रम्भ/रम्भा जनों का द्योतक है और सृज्जय का

भी अर्थ काला भैंसा/महिष अर्थात रम्भाने वाला!

14. सुदास पैजवन के विषय में देखिये अगला अध्याय- सुदास पैजवन....
15. पिता ययाति के शाप के बाद यदु क्रौंच वन पर्वत पर चला गया, जहाँ उसके अनेक राक्षस/यातुधन पुत्र हुऐ **-हापकिन्स, ऐपिक माईथोलोजी, दिल्ली**, 1968, पृ0 187; पार्जीटर पृ0 82
16. **आप्टे**, पृ0- 974
17. **आप्टे**, पृ0- 973
18. वृष्णि यादवों में भाई बहन के बीच विवाह का चलन था- **रोमिला थापर** पृ0 297, 309 टिप्पणी 61,63,69
19. **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 256
20. प्रभाष पश्चिमवाहिनी सरस्वती के कारण प्रसिद्ध था-**राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 335
21. महाभारत के अनुसार धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभाष। श्रीमदभाग्वत के अनुसार द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वसु और विभावसु-**राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 458 इन आठ वसुओं के अतिरिक्त दिग्गजों (गजों) के आठ कुल हैं- अंजन, सुप्रतीक, वामन, पद्यम, मृग, भद्र मंद और संकीर्ण ये सभी बलि की सवारी भद्र हाथी के पौत्र या कुबेर की सवारी पदम के पुत्र थे- **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 289 प्रमुख नाग भी आठ हैं- शेष, वासुकी,कम्बल, कर्कोटक, पदम, महापदम, शंख और कुलिक। अन्य मतानुसार तक्षक, महापदम, शंख, कम्बल, अश्वतर, धृतराष्ट्र, बलाहक और कुलिक- **राणाप्रसाद शर्मा** पृ0 39
22. **देवेन्द्र हांड़ा, ''सम इम्पार्टेन्ट टाउंस आफ हरियाणा''** जर्नल आफ हरियाणा स्टड़ीज, जनवरी 1971; पृ0 1 **सूरजभान ''एक्सकेविऐशन एट सुघ''** जरनल ऑफ हरियाणा स्टड़ीज-9 ; न0 1-2; 1977; पृ0 5
23. **ओ० पी० भारद्वाज, ''वाल्मिकीज हिस्टोरिकल ज्योग्राफी आफ कुरूक्षेत्र,''** पंजाब हिस्ट्री कान्फ्रेन्स ; 1979; पृ0 32
24. दण्डक वन में इक्षवाकु के पुत्र दण्डक का राज्य था। गुरू शुक्राचार्य की पुत्री से बलात्कार करने के अपराध में शुक्राचार्य के शाप से दण्डक के राज्य में धूल और पत्थरों की बरसात हुई दंडक का राज्य उजड गया। यह मिथक दण्डक वन क्षेत्र में हुई भूस्खलन, भूकम्प जैसी प्राकृतिक विपदा को जोड़कर बनाया गया है... शुक्राचार्य की पुत्री... देवयानी नहुष के पुत्र ययाति की स्त्री देवयानी का कच (वृहस्पति के पुत्र) के साथ एक तरफा प्रेम का मिथक है, शुक्र की एक पुत्री देवी वरूण की स्त्री थी, किंतु कहीं भी इन दोनों के साथ किसी बलात्कार का कोई विवरण नहीं है।

    शुक्राचार्य के पुत्र शण्ड और मर्क को मारकण्ड़ा नदी प्रदेश से जोड़ा जाता है दण्ड़क वन समीप ही ड़न्ड़ासुखचैनपुर, डन्ड़ा अम्बिका और डन्ड़ा अम्बोआ (कालेसर के उत्तर तथा यमुना नदी के प्रश्चिम में) होगा... मध्य भारत में नहीं। डंड़ासुखचैन वन क्षेत्र में बरसाती नदी पथराला है। यह बोली नदी की सहायक नदी है इसके साथ आने वाले पत्थरों ने बस्तियों को उजाड़ दिया होगा; -जिससे दण्डक का मिथक बना।
25. **आप्टे**, पृ0 387 ; सुर्यभानु की पुत्री प्रभा, पुरूरूवा और उर्वशी के पुत्र आयु की स्त्री थी। सूर्यभानु राहू है और राहू विप्रचित्ती का पुत्र था। विप्रचित्ती का साम्य चित्ररथ से प्रतीत होता है अर्थात चित्ररथ के बनाये वन/उद्यान का अधिपति उसका पुत्र राहु/सूर्य भानू था।
26. **वही**, पृ0 382
27. **हापकिन्स**, पृ0 152
28. **पार्जीटर, सुरेन्द्रनाथ सेन और सीतानाथ प्रधान** (पृ0 88) ने शक्ति के वध की समान घटना और वशिष्ठ-विश्वामित्र के वैमनस्य की समान कथा के आधार पर निष्कर्ष दिया कि दक्षिण

कौशल का सुदास और वैदिक पैजवन एक ही व्यक्ति था। इस समीकरण से दक्षिण कौशल के सुदास का दौहित्र/नाती राम, वैदिक सुदास पैजवन का नाती भी तो हुआ। राज्य बंटवारे में राम के पुत्र कुश को दक्षिण कौशल का राज्य भी मिला था। राम सुदास पैजवन का उत्तराधिकारी था सुदास पैजवन के परस्पर विरोधी विचारधाराओं वाले दोनों गुरू वशिष्ठ और विश्वामित्र राम के भी गुरू थे...।

29. सीता नदी मदराचल और गन्धमादन पर्वतों के बीच से निकल कर केतुमाल वर्ष होकर पूर्व में भद्राश्ववर्ष की ओर बहती थी। शैलोदा मेरू और मदराचल के बीच बहती थी - **सूर्यवंशी, ''ज्योग्राफी आफ महाभारत,''** पृ0-133 5.23.40; **वी० के० माथुर,** पृ0-911 (सरित्त सीता > सरस्वती/सीता शैलोदा/शैलोत्तसीता शैलोदा अर्थात गिरि नदी जो आज भी यमुना (तत्कालीन चित्रा/चितांग **>** चित्रा =सीता) की सहायक नदी है। युगन्धर, देहरादून का प्रदेश युगशैल- **वी० के० माथुर,** पृ0-659; **वासुदेव शरण अग्रवाल, ''पाणिनी कालीन भारतवर्ष,''** पृ0-72
30. सरस्वती के लुप्त हो जाने का दोष महाभारत में निषादों के - **वी० के० माथुर,** पृ0 503 ; शूद्रों और आभीरों के - **रामशरण शर्मा ''शूद्रों का प्राचीन इतिहास,''** दिल्ली, 1995, पृ0 33 और 47 रामायण में वाड़वा (?) के, - **मंजुला श्रीवास्तव ''वाल्मीकी युगीन भारत''**, वाराणसी पृ0 60; और विश्वामित्र के मत्थे मढ़ा गया है कि उसने सरस्वती का जल रक्त रंजित कर दिया -**डा० सन्तोष सिंह ''सरसधारा सरस्वती'' कादम्बिनी,** मार्च 1994 पृ0 66
31. **आप्टे,** पृ0 334 अर्थात प्रेत और गन्धपूतना का अर्थ ''भूतनी''
32. **सावित्री सक्सेना ''ए ज्योग्राफी सर्वे आफ पुराणाज''** ; दिल्ली, 1955, पृ0 297.
32. **पार्जीटर ''ऐंशेंट इण्ड़ियन हिस्टोरिकल ट्रेडिऐशन,''** दिल्ली 1997, पृ0-105. **रांगेय राघव ''प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास''** दिल्ली, 1990, पृ0-231; प्रधान, पृ0 39
34. दम का अर्थ लोकपाल कुबेर अर्थात धनपति। लोकपति... विष्णु..अर्थात दामोदर। लोकदेवी.. . (लोकस्मी की ध्वनि) ; लक्ष्मी... अर्थात ''धन''... और दम से निर्मित शब्द ''दाम'' अर्थात ''धन''। दम क्षेत्र अर्थात चित्रा-चितांग-चैत्ररथी नदी क्षेत्र की प्रमुख फसल धान... (वसुधान्यक)। दमघोष के पुत्र शिशुपाल का वध करने वाला भी दामोदर कहलाया।
35. ये सभी नाम गन्धर्वो के हैं- **हापकिन्स,** पृ0 155 ; गन्धर्वो का पर्वत गन्धमादन में दम शब्द की ध्वनि है।
36. **राणा प्रसाद शर्मा,** पृ0 391
37. **वही** पृ0 216
38. **वही** पृ0 202 ; **हापकिन्स,** पृ0 153-54; राम ने वनवास के समय जिस विराध को मारा था उसे तुम्बरू कहा गया है। स्मिथ तुम्बरू को विन्ध्य पर्वत क्षेत्र की एक जाति मानते हैं- **आर० एम० स्मिथ ''डेट एण्ड़ डायनैस्टीज आफ अर्लीऐस्ट इण्ड़िया,''** दिल्ली, 1973, पृ0 191 ; वायु0 में ये निषादों के साथ तुमुर/तुम्बुर वर्णित है। मतस्य0 में तुमुर और तुम्बर का नाम है। किरफैल तुम्बरू जनों को पौलस्त्य जनों के साथ बताते हैं- **वही,** पृ0 191,192
39. **राणाप्रसाद शर्मा,** पृ0 201
40. **पार्जीटर** पृ0 105 **रांगेय राघव,** पृ0-123
41. **कीथ व मैकडोनेल, वैदिक इण्डैक्स, अनु० रामकुमार राय,** वाराणसी, 1962, भाग-2 पृ. 65, 488
42. तुम्बरू और चण्ड़नोदक दुंदुंभि ने नारद के साथ अन्नत का यश गान किया था -**राणाप्रसाद शर्मा,** पृ0 201 यह अन्नत त्रित्सु दिवोदास का पौत्र और पुरूच्छेप का पुत्र अन्नत रहा होगा। पुरूच्छेप ने ऋ0 1.127 से 129 और अन्नत ने ऋ0 9.11 की रचना की -**सीतानाथ प्रध ान.** पृ0 98

43. **सीतानाथ प्रधान**, पृ0 41
44. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 492
45. **वही** पृ0 201
46. **सावित्री सक्सेना**, पृ0-334 **लाहा; "प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल,"** लखनउ, 1972, पृ0 52
47. कई स्थानों पर उपरिचर वसु की राजधानी का नाम गिरिव्रज है। गिरिव्रज शम्भर की राजधानी भी है। शम्भर वैदिक दिवोदास का शत्रु और सरस्वती नदी के समीपवर्ती सम्भवतः सोम्ब नदी क्षेत्र का अधिपति था। शिवालिक को मैनाक् के नाम से जाना गया है- **लाहा**, पृ0 178 और गिरित्र समुद्र जिसमें इन्द्र के भय से मैनाक जा छिपा था अवश्य ही उस समुद्र का नाम है जो यमुना-सरस्वती-चैत्ररथी की अनियमितता और अनिश्चितता के कारण सहारनपुर जगाधरी क्षेत्र में बनता था। यहाँ का पानी ग्रीष्म काल तक सूख जाता था या अनगनित छोटी बड़ी, अपेक्षाकृत अधिक निचले स्थानों पर असख्यों सरों-तालाबों-झीलों के रूप में बच रहता था। गिरित्र नाम गिरि नदी या गिरि/पर्वत की तलहटी के कारण पड़ा। उपरिचर वसु की स्त्री का नामं गिरिका और उपरी अंचल में निवास करने वाले वसु जनों का क्षेत्र गिरिव्रज नाम भी इसी कारण था।
48. **पार्जीटर**, पृ0 282
49. **वही और आर० सिद्धान्ता शास्त्री, "हिस्ट्री आफ प्रि कलियुग इंड़िया,"** दिल्ली, 1978, पृ0 154
50. **आर० सिद्धान्ता शास्त्री**, पृ0
51. **वी० के० माथुर,** "ऐतिहासिक स्थानावली," जयपुर, 1991, पृ0 344
52. **पार्जीटर**, पृ0 220
53. **आर० सिद्धान्ताशास्त्री**, पृ0 162
54. **आर० एम० स्मिथ**, पृ0 175; **सीतानाथ प्रधान**, पृ0 34
55. वैभ्राज वन या पर्वत के नामकरण के पीछे पेड़ों पर आक्रमण करने वाली हनी फंगस या आर्मीलेरिया मेलिया फफूंद रहा होगा; जो परजीवी और मृतजीवी भी है। यह अपने द्वारा मारे गये पेड़ की लकड़ियों पर भी जीती है। रात में लकड़ियों को रोशन करने वाली यह हनी फंगज, जूते के फीतों जैसी लम्बी रचनाएं बनाती है, जो छाल पर या जमीन के अन्दर फैल कर कभी -कभी पूरे जंगल को ही अपने चपेट में ले लेती है ऐसी लकड़ी के ठूंठ या शाखाओं के मृत सिरे जिन पर आर्मीलेरिया लगी हो रात में अंगारे की तरह चमकते हैं। एक भारतीय लोक कथा में कर्बिस्तान में उग रहे शिरीष के वृक्ष की प्रत्येक शाखा के सिरों से रोशनी निकलने का जिक्र आता है। पुराने जमाने में इस तरह चमकती लकड़ियों के टुकड़े जादुई शक्ति से भरपूर माने जाते थे। जादुगर, ओझा, तांत्रिक या पहुँचे हुऐ महात्माओं के हाथ में जादुई झड़ी के प्रति श्रद्धा का भाव इसलिये रहा होगा कि इसे घुमाने से जादू (संक्रमण) पूरे पेड़ पर छा जाता था। संक्रमित लकड़ियों से निकलने वाला प्रकाश विभिन्न रंगों का होता है, जैसे प्यूरोटस लैम्पस से सफेद और आर्मीलेरिया से नीला हरा प्रकाश रेड़ियम की भाँति चमकता है-**डा० किशोर पंवार "जंगल के भूत और जादुई छड़ी", विज्ञान एंव टैक्नोलोजी फीचर्स- "स्त्रोत"** भोपाल, अगस्त 2005, पृ0 24-25
56. ये सात्वत भरत के राज्य के समीप अर्थात गंगा-यमुना के समीप रहें होंगे- **रायचौधरी, "प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास,"** दिल्ली, पृ0 **लाहा "प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल"** लखनउ 1972 पृ0 244
57. **सीतानाथ प्रधान**, पृ0 84; **आर० सिद्धांता शास्त्री**, पृ0 118 ; मतस्य0 में सुदास के पिता का नाम चैद्यवरा है अर्थात वहाँ वह चैदय है। हो सकता है उसका नाम सुदाः उसी चैद्य या चौद्यय का अपभ्रंश हो। दसरी ओर चैड़विड़ा के पुत्र कुबेर के अन्य नाम ऐलविल और ऐड़विड़

भी हैं। **राणाप्रसाद शर्मा,** पृ0-75 पुराणों में एक एलपत्र नाग भी है और दिलिप खटबांग के दादा का नाम भी ऐड़विड़ है, यदि समान क्षेत्र में दो पड़ोसी जातियों की कल्पना करें तो-

1. एड़विड़ / ऐलविल अर्थात इलावंशज या फिर एलपत्र (नाग) ; भाग्वत0 में इरा सरस्वती का एक नाम है।

2. चैडविड अर्थात चैहय/चैद्यम्न या सुघुम्न वंशज, उसी प्रकार जैसे चैहय/चौद्यय/सुद्याः } सुदाः = सुदास

मनु का पुत्र सुद्युम्न इला नामक स्त्री बन गया था) दुसरी और उपरिचर वसु = उपर चलने वाले अर्थात पवन या वायु और चैद्योपरिचर वसु.......... चैद्यवरा / चैद्यावसु > चैद्यवः > चैड़विः = चैड़विड़। अब

चैड़विड़ — चैहय/चौहय/सुद्युम्न चौद्ययः या सुदास

चैड़विड़ा / इडविडा — एडविड/कुबेर/ऐलविल (ऐविर=कोविर=कुवेर — दिलिप

विप्रचित्ती (चित्ती/चैत्र/चैद्य/चैड) — इलविल/इल्वल आतापी — वल्वल (वातापि)

सीतानाथ प्रधान ने चैड़विड़ या चैद्यवरा का चयवन से मिलान का संकेत दिया है। **सीतानाथ प्रधान** पृ0 84 यदि चैड़विड़/चैद्यवरा का चयवन हुआ तो ऐड़विड़ नाम ऐयवन या अंशुमान होना चाहिये जो दिलिप के पिता का नाम है। सुदास के नाम के साथ जुडा पैजवन, पौराणिक भजमान के कारण है। ऋ. 3.5 3.7 में सुदास भोजों का पूर्वज है......... भजमान है, अर्थात भीम सात्वत का पुत्र है और भीम बली अर्थात शक्तिशाली है। चेदी की राजधानी शुक्तिमती के चैद्यवरा का पुत्र चेदि नरेश यादव है सुदास भोजमान।

58. **राणा प्रसाद शर्मा,** पृ0 329, 530
59. **वही,** पृ0 328
60. **वही,** पृ0 174, सप्तऋषि-मरिचि, अंगिरा, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, वशिष्ठ
61. **सीतानाथ प्रधान,** पृ0 37 (87
62. **कीथ व मैकडोनेल,** भाग-1 पृ0 75, 533 भाग-2, पृ0 65, 488
63. **हापकिन्स,** पृ0 153-54
64. **पार्जीटर,** पृ0 297
65. **सिन्धु एस० डॉगी, ''सम नॉन वैदिक रिटयूल्स इन वैदिक ट्रेडीशंस''** जर्नल आफ इण्डोलोजीकल स्टड़ीज-11, चण्ड़ीगढ़, 1987, पृ0-6
66. कावेरी और नर्वदा के संगम पर शिव ने कुबेर को यक्षों का राजा बनाया था। कुबेर की राजधानी अलकापुरी से इसके अलखनन्दा के तटों पर होने का अनुमान है, यह गंगा ही थी जो हरियाणा भूमि की ओर आती रही होगी, गंगा और यमुना नदी को शिवालिक पहाड़ियों से मैदनों में उतरने के कारण ही सम्भवत: अलखनन्दा और पलखनन्दा या अलका/अलक्षा और पलका/पलक्षा कहा गया होगा क्योंकि शिवालिक में शिव की अलक अर्थात भौंह- **डा० सुरेश चन्द्र बंसल ''भारत का वृहत भूगोल''** मेरठ, 1993, पृ0 38; और पलक्षा=पलक; इन्द्र ने वृत्र को नर्वदा तट पर मारा ; नरकासुर कामदेव का एक रूप है तो नर्वदा को चितांग-यमुना का रौद्र रूप कहना चाहिऐ, अर्थात नरक कुरूक्षेत्र, लाड़वा, जगाधरी, उत्तरी करनाल आदि का विस्तृत क्षेत्र था जो भारी वर्षा के दिनों में सम्पूर्ण डूब का इलाका था, यह बिन्दुसर कहलाता था क्योंकि

वर्षा तु के काफी बाद तक पानी असंख्यों छोटे-बड़े सरों-तालाबों में बचा रहता था। शशिबिन्दु यादव की पुत्री बिन्दुमती का एक नाम चैत्ररथी भी है। बिन्दुमती मान्धाता की स्त्री थी अर्थात मान्धता जनों ने इसी क्षेत्र में अपना प्रथम निवास बनाया।

67. **रामकुमार राय "वाल्मीकीय रामायण कोष,"** दिल्ली ; 1965, पृ0-166
68. **पार्जीटर**, पृ0 262, वैदिक साहित्य में पुरूकुत्स्य सरस्वती नदी के पश्चिमी तट का नेता है। और गन्धर्वजन चैत्ररथी नदी /यमुना क्षेत्र थे पुरूकुत्स्य की स्त्री नर्वदा एक नाग कन्या है। ऐसे में नर्वदा... नागरवदा शब्द का अपभ्रंश हो सकता है सहारनपुर जिले में नाग देव की खोल सम्भवत: तब चैत्ररथी-यमुना की सहायक और नागों की नर्वदा रही हो जिन पर गन्धर्वों ने अभियान किया और पुरूकुत्स ने नागों को बचाया हो
69. ऋ0.1.63.7 में सुदास पैजवन और पुरूकुत्स के बीच संघर्ष का संकेत है। ऋ0 4.42.8-9 में कहा गया है कि पुरुकुत्सानी ने बन्दी अवस्था में पुरूओं का भाग्य लैटा लाने वाले त्रसदस्यु को जन्म दिया, पुरूकुत्स उस समय भारी विपत्ती में था या मर चुका था- **कीथ व मैकड़ोनल**, भाग-1, पृ0 617-18; **विश्वेश्वर नाथ रेउ "ऋग्वेद पर एक ऐतिहासिक दृष्टि"**, पृ0 105; **प्रधान**, पृ0 63 किन्तु आगे किसी प्रमुख या सामान्य राजा से त्रसदस्यु के संघर्ष का कोई विवरण नहीं मिलता।
70. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0 120
71. **दैनिक ट्रिब्यून**,
72. जन्हू जन, जनु यक्ष रहे होंगे। कश्यप और खशा के दो पुत्र थे अज पिशाच और दूसरा जनु यक्ष/रक्ष ; **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 83 ; 360 अन्यत्र (पृ0 83) पर कहा गया है कि कपि के पुत्र अज और शुण्ड़ पूर्व जन्म में कुष्माड़ पिशाच थे। कपिलों का आश्रम हरिद्वार कनखल था। हरिद्वार (कनखल) के दक्ष का शीश काटकर शिव कपाली कहाये, उन्होंने कपि के शीश पर अज का शीश आरोपित किया। अज (बकरा) पिशाच होते थे। इन्हें ऋ.7.18.19 के अनुसार सुदास पैजवन ने यमुना तट पर पराजित किया था। कपि का पुत्र शुण्ड़ > शूण्ड़ अर्थात गज =हाथी =हस्ती जनों का द्योतक है। निष्कर्ष यह है कि जन्हू > जनु > शुण्ड > हस्ती जन हस्तिनापुर बसाने वाले जन थे। किन्तु वे अजों से भिन्न नहीं थे और दक्षों, कपिओं/कपिलों के भी सजातीय थे। कश्यप और कपि एक दूसरे के द्योतक हो सकते हैं क्योंकि विष्णु को कपि और हरि भी कहा गया है। नागराज कपिल का स्थान कनखल था **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0 267... अर्थात दक्षों, कपिओं, कपिलों, नागों में भी भेद नहीं है।
    दक्ष कपि/कपिल एक बार तो अजों से पराजित हुऐ किन्तु जब शिग्रु/सागरेयों ने उनके क्षेत्र में नई बस्तियॉं बसाई तो उन्होंने बस्तियॉं उजाड़ दी (साठ हजार सागरेय भस्म कर दिये) अज/हस्ति जनों ने हस्तिनापुर बसाया तो कपि-कपिलों ने काम्पिल्य और कपिलवस्तु...। शिग्रुजन....मध्यप्रदेश के सागर जिले में जा बसे और अज जनों ने अजोध्या बसाई।
73. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 108
74. **रोशन गुप्ता "दा फर्स्ट चैप्टर आफ हिस्ट्री आफ ऐंशेंट इण्ड़िया"** पंजाब हिस्ट्री कान्फ्रेन्स, 20 मार्च 1986 पृ0 29-30 सम्बन्धित ऐतिहासिक घटनाओं की कसौटी पर कसे बिना बहुत से विद्वानों ने भी मिलते-जुलते ऐसे समीकरण पेश किये हैं।
75. **आर० सिद्धान्ताशास्त्री**, पृ0 50
76. अम्बरीष का नाम यमुना तट पर कैलाश-कालेसर क्षेत्र में अम्बावाली खोल; डन्ड़ा अम्बोआ क्षेत्र से साम्य रखता है तो यमुना नदी के पूर्व में शिवालिक पर्वत माला का नाम ऋक्ष/ऋष्यमूक अथवा ऋक्षवान था।
77. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 6; वायु 28.26 में पुलह और क्षमा के एक पुत्र का नाम भी अम्बरीष है।
78. **वही** पृ0 149

79. **हापकिन्स**, पृ0 147
80. **रामकुमार राय "वाल्मिकीय रामायण कोष,"** वाराणसी 1965 पृ0 233-34 ; लवण और रावण में साम्य है, यह उस लवण सागर क्षेत्र के निवासी का द्योतक नाम है जो असंख्यों रेत, गाद वाली चोईयों में अतिरिक्त जल, बाढ़ और फिर बहाव मार्ग की अनियमितताओं से बनता था, ग्रीष्मकाल तक यह सूख जाता था, फिर भी इस लवण सागर का बनना और सूख जाना भी कोई नियमित नहीं था किन्तु एक प्रकार से यह लवण या गर क्षेत्र तो था ही। सुन्दर स्त्री के लिये प्रयुक्त होने वाले लावण्यमयी शब्द का सीधा सा अर्थ नमकीन होना चाहिये, मधु का पुत्र लवण या विश्रवा का पुत्र रावण। असंख्यों चोईयों वाले क्षेत्र के निवासियों का द्योतक नाम चयवन भी रहा होगा।
81. **सीतानाथ प्रधान**, पृ0 201 आर सिद्धान्ता शास्त्री, पृ0 50
82. **बलदेव उपाध्याय, "पुराण विमर्श,"** वाराणसी, 1987 पृ0 374
83. **रांगेय राघव**, पृ0 227
84. **हापकिन्स**, पृ0 24
85. हो सकता है पहले पहल मनुद्याता जन अन्जाने में यहाँ-वहाँ बस गये हों। किन्तु अत्याधिक वर्षा और बाढ़ के कारण हुई प्रलय जैसी स्थिती से बचा कर क्षेत्रीय मतस्य जनों ने उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया हो।
86. विनता-विन्ध्य पर्वत (क्रौंच/ऋक्ष और मैनाक पर्वत माला/शिवालिक का नाम) क्षेत्र के विन्ध्यजनों का द्योतक शब्द है जैसे बलि की स्त्री का नाम-विन्ध्यावली था। कद्रू शब्द खादर क्षेत्र कि निवासियों के द्योतक शब्द का अपभ्रंश है। कश्यप शब्द कच्छप टोटेमिक जनों का द्योतक है जो चैत्ररथी यमुना क्षेत्र के कछार क्षेत्र के मूल निवासी थे। इनके विन्धय पर्वत (बोली नदी का उदगम क्षेत्र) के जन विनता से गरूड़ और अरूण जन हुऐ। जिनमें से गरूड़जन गर, गार या कीचड़ वाले क्षेत्र में और अरूण जन अरण्य या वन क्षेत्रों के निवासी बने। क्रिया के 60,000 बालखिल्य यदि नाग हैं तो उनका प्रतिशोध लेने वाला कपिल भी नाग है, जो 60,000 सयागरेयों को भस्म करता है। ऐसे मेंम कर्दम और कद्रू में साम्य प्रतीत होता है। ज्ञातव्य है कि कद्रू नाग माता थी।
87. सगर के पुत्रों ने अश्वमेघ यज्ञ के अश्व की खोज मे पृथ्वी को चारों ओर से खोदा-**रामकुमार राय** पृ0 363 जिससे आठ उपद्वीप-चन्द्रशुक्ल, आवर्तन, रमणक, मन्दिर हरण, पान्चजन्य, लंका, सिंहल और स्वर्ण प्रस्थ बन गये। सागरेय जनों (गर या गरूड़ जनों) ने अवश्य ही नदियों के बहाव मागों को समुचित कर कृषि और बस्तियाँ बसाने के लिये उचित भूमि प्राप्त की होगी।
88. सुपर्ण सुन्दर पंखों वाला पक्षी जिसका भोजन सर्प है। यह म्यूर हो सकता है स्कंद को गरूड़ ने म्यूर और अरूण ने लड़ने वाला मुर्गा प्रदान किये- **हापकिन्स**, पृ0 23-24
89. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 136
90. **वही**, पृ0 84
91. **हापकिन्स**, पृ0 26
92. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0 84 कपिल, भद्राश्व के पाँच पुत्रों में से एक था। भद्राश्व वर्ष गंगा-यमुना-यमुना दोआबे में बद्रीनाथ, बदराहु, अगराहू का प्रदेश था प्रतीत होता है कि पांचाल राज्य की स्थापना करने वाले में कपिल नाग-जन भी थे। पहले काम्पिल्य और, बाद में कपिलवस्तु की स्थापना इन्हीं कपिलों ने की होगी।

अध्याय-14.

सुदास पैजवन, वशिष्ठ और वर्णव्यवस्था

पुराणकारों ने वैदिक सुदास पैजवन और उसकी समर्थक जाति सृज्जयों से सम्बंधित घटनाओं के आधार पर ही दक्षिण कौशल के सुदास, पांचाल सुदास, अंगिरा वेन, सहत्रबाहु आदि के मिथकों की रचना की है। हर स्थान पर नयी भौगोलिक पृष्ठभूमि, नयी कथा, नया काल्पनिक वंश और काल्पनिक नामों का समावेश है किंतु हर स्थान पर उसे अत्याचारी, क्रूर, नास्तिक, ब्राह्मण विरोधी, पराजित, अपमानित और मूर्ख की संज्ञा दी गई है। सुदास पैजवन के प्रति महाभारतकार की घृणा कुछ इस प्रकार उभरकर सामने आती है कि वह शान्ति पर्व में एक स्थान पर यज्ञकर्ता पैजवन को शूद्र कहा जाता है।[1] पुराणकार कहीं भी सरस्वती नदी प्रदेश के वैदिक सुदास पैजवन और उसकी दासराज संग्राम जैसी उपलब्धियों की चर्चा न करके अपने साहित्य में उसकी पूर्णतया उपेक्षा करता है। जिसका कारण सम्भवतः यह हो सकता है कि वर्ण व्यवस्था के प्रश्न पर सुदास पैजवन अपने अभिषेककर्ता गुरू वशिष्ठ (ऐत्तरेय ब्रा0 7.34.9;8.24.11; शांखायन श्रौतसूत्र 16.11.14)[2] से उलझ बैठा। उसने वशिष्ठ को हटाकर एक क्षत्रिय विश्वामित्र को अपना गुरू बना लिया (ऋ 3.33.5) । वैमनस्य के चलते विश्वामित्र ने सुदासों का सहारा लेकर वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को अग्नि में जीवित जलवा दिया (ऋ 3. 53.15-16; 21-24); वशिष्ठ समर्थक हरिश्चन्द्र को चांडाल का भी दास बनाकर रख छोड़ा।

शक्ति को जीवित जलवाना ही सुदासों के पतन का कारण बना (जैमिनीय ब्रा0 2.390)[3] पुत्र की हत्या के उपरान्त वशिष्ठ ने सुदासों से प्रतिशोध की इच्छा भी व्यक्त की और उन्हें इसमें सफलता भी मिली (तैत्तरीय ब्रा0 7.4.7.1; कौशितकी ब्रा0 4.8)। वीतीहव्यों ने भागर्वो को त्रस्त किया था (अथर्ववेद 5.18.10-11) और इसी कारण उनका पतन भी हुआ (अथर्ववेद 5.19.19) मनु0 7.41;9.66-67 के अनुसार वर्ण व्यवस्था में अड़ंगा राजा वेन ने लगाया था, वह जैन नास्तिकता में फंस गया था।[4]

वशिष्ठ की माता उर्वशी वैदिकजनों की बस्तियों में गायन-वादन करते, घूम-घूमकर मनोरंजन करने वाले, यायावर, भेड़ पालक गन्धर्व समाज की स्त्री थी। वशिष्ठ का पिता उर्वशी का पति गन्धर्व पुरुरुवा नहीं, अपितु देवता मित्र को बताया गया है। चूंकि मातृसत्तात्मक समाज वाली उसकी माता उर्वशी उसे पितृ सत्तात्मक समाज वाली वैदिक बस्ती के बाहर या किसी आश्रम में छोड़ गई होगी। पितृसत्तात्मक समाज में निवास के लिए पिता के नाम की आवश्यकता अधिक होती है।[5] इस प्रकार मिथक गढ़ने की आवश्यकता पड़ी कि देवता पृथ्वी पर आकर नश्वर स्त्रियों से सम्बंध बनाते हैं और देवी देवताओं पर अत्याधिक विश्वास रखने वाले तत्कालीन समाज में ऐसे सम्बंधों से उत्पन्न संतान को आदर व मान्यता दोनों ही मिलते थे। वरना तो ऋ. 7.83.4, 6,8 या और भी जहाँ कहीं वशिष्ठ सुदास पैजवन के लिए देवताओं से प्रार्थना करते हैं अपने आपको त्रित्सु कहते हैं। सम्भवतः उसका पिता दिवोदास का ऋषि हो गया भाई त्रित्सु सुमित्र हो, जो ऋ 10.69.5 सूक्त का रचयिता था।[6] "ऐसे में **इमं नरों मरुदतः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदासः**" ऋ 7.18.25 के आधार पर दिवोदास को सुदास का पितरम (पिता समान)[7] मानना गलत है। इस सूक्त में वशिष्ठ पितरं शब्द का प्रयोग दिवोदस से सुदास के सम्बंधों के लिए नहीं अपितु दिवोदास से अपने सम्बंध के लिए करता है। इस सूक्त का अर्थ होना चाहिए कि **"हे मरुदतों, यह नर, मेरा पिता समान दिवोदास**

नहीं है, अपितु सुदास है।'' क्योंकि त्रित्सु सुमित्र के पुत्र वशिष्ठ के लिए त्रित्सु दिवोदास उसका पितरं ही तो होगा और यही वह कहता भी है।

औरस संतान न होने के कारण त्रित्सु राज्य में वशिष्ठ को वह मान-सम्मान और अधिकार नहीं मिले जिनकी अपेक्षा यह त्रित्सु राजवंश का एक अंश होने के कारण करता था। फलत: वह त्रित्सु राज्य छोड़कर उनके शत्रु यादवों में चला गया। जहाँ वह सुदास का गुरू बना। पति पुरुरुवा के रहते उर्वशी द्वारा अन्य पुरुष से उत्पन्न संतान वशिष्ठ को कुण्ड, कुण्डिन्य और कौण्डिन्य कहा भी गया है।[8]

सास्थस मैत्रावरुणाह कुण्डिनाह सप्ताम्स तथा इत्यंइते सप्त विजेनिय वशिष्ठा ब्रह्मवादिनाह।

मित्रवरूणायोश चैव कुण्डिनों ये परिश्रताहु इकारसेयस तथा कान्ये वशिष्ठा नामा विश्रुताह॥

त्रित्सुओं के राज्य में मान-सम्मान और अधिकार आदि न मिलने को हो सकता है वशिष्ठ ने अपना अपमान समझा हो, यह भी हो सकता है कि वह महत्वाकांक्षी रहा हो और सोचता रहा हो कि यदि सरस्वती नदी प्रदेश की राजनीति में उसे अपना कोई स्थान बनाना है तो उसे अपने लिए एक सम्राट का निर्माण करना होगा; किंतु ये सभी विचार उचित नहीं लगते क्योंकि अपसरा पुत्र होने के कारण वैदिकजनों के पितृ प्रधान समाज में केवल उसी के अपमान, क्षोब और ग्लानि भरे जीवन की बात प्रधान नहीं थी, समाज में कुण्ड सन्तानों का प्रतिशत बढ़ रहा था। वनों, अरण्यों पर आश्रित जीवन जीने वाले आदिम, अर्धसभ्य टोटेमिकजनों, गन्धर्वों, पणिजनों की स्त्रियाँ आवश्यकता की वस्तुऐं प्राप्त करने के लिए या आसान जीवन यापन के लिऐ वैदिक पुरुषों से अनैतिक सम्बंध बना लेती थी। इस प्रकार जन्मी संतानों को अधिकतर दोनों ही प्रकार के संमाज नहीं अपनाते थे। त्याग दिए गए नवजात शिशु जो किसी प्रकार बच जाते थे का प्रतिशत नगण्य ही था... अधिकतर तो जंगली जानवरों का शिकार ही बनते थे इस प्रकार न केवल दोनों ही प्रकार के समाजों का नैतिक पतन हो रहा था अपितु नवजात शिशुओं की इस प्रकार हुई मौतों का आंकड़ा भी ह्रदय विदारक था। तब अवश्य वशिष्ठ आदि ऋषियों के मस्तिष्क में एक ऐसे समाज के निर्माण की बात आई होगी जो ऐसी परिस्थितियों से मुक्त हो।

वशिष्ठ एकदम सामान्य परिस्थितियों में सुदास पैजवन से मिला हो ऐसा नहीं लगता, उसने सुदास का अभिषेख किया; वशिष्ठ की सहायता और सहयोग से सुदास ने न केवल सरस्वती दृषद्वती नदी प्रदेश से त्रृत्सु सत्ता का अन्त कर दिया अपितु वर्तमान घघ्घर से यमुना पार तक असंख्यों ग्राम गौत्रों को पराजित कर भारतीय इतिहास के सबसे पहले सम्राट होने का गौरव भी प्राप्त किया। अब एकदम सही अवसर था- ऐसे नियमों के लागू करने का, जो विशाल भू-भाग पर फैली असंख्यों छोटी-बड़ी सभ्य अर्धसभ्य, टोटेमिक, कबीलाई, यायावर, बस्ती वाले सभी ग्राम-गोत्रों, जनों को एक सूत्र, एक समाज, एक नियम व्यवस्था के अन्तर्गत ला सकें, जो अभी तक भाषा, रहन-सहन, वेशभूषा, प्रथा-परम्परा, देवी-देवता, पूजा-पद्यति, खान-पान, जीवन-यापन आदि के मामलों में एक-दूसरे से नितान्त भिन्न रहे थे।

त्रृत्सुजनों के समाज में जहाँ कि वशिष्ठ पला-बढ़ा, शिक्षा पाई; वर्ण व्यवस्था स्वत: ही थी....[9], सम्भवत: कोई जबरदस्ती रूप में नहीं वरण वर्ण व्यवस्था के सभी कारक पहले से ही मौजूद थे किन्तु सुदास पैजवन के राज्य में इसे लागू करने के लिए आवश्यक था कि यह विस्तृत और व्यवस्थित हो। इसके अतिरिक्त यह वर्ण व्यवस्था अब अपसरा और

कुण्ड सन्तानों की समस्याओं से भी जूझने वाली थी....। अपसराऐं एक अनजाने से दैहिक शोषण का शिकार थीं जो एक प्रथा का रूप ले चुका था। वशिष्ठ की नई मानव संहिता स्त्री पुरुष के यौन दुष्कृत्यों को विवाह व्यवस्था के अन्तर्गत लाती थी भले ही वे किसी भी प्रकार से हुए हो- क्रय करके, विक्रय करके, लूट-छीनकर, बलात्कार करके, हरण करके, सहमति से, असहमति से, बहला-फुसलाकर, मद्यपान कराकर। इस प्रकार की विवाह व्यवस्था उत्पन्न संतानों को न केवल एक व्यवस्था के अंतर्गत ला रही थी अपितु प्रत्येक व्यक्ति, गोत्र, जाति, कबीले को जिम्मेदारी का एहसास करवाते हुए एक प्रकार से उत्पादकता से जोड़ रही थी, जो अत्यंत आवश्यक था क्योंकि इससे वन अरण्यों पर आश्रित आदिम अर्धसभ्य, अन्न इकट्ठा करने वाले, शिकारी आदि सभी किसी न किसी प्रकार उत्पादकता से जुड़ते थे और किसी भी प्रकार से उत्पन्न हुई प्रत्येक संतान को उसके अधिकार, माता-पिता, जाति-गोत्र के नाम; और वंशानुगत कर्म मिलते थे। मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाह- ब्राहम, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, असुर, गन्धर्व, राक्षस और पैशाच गिनाए गए हैं इसी प्रकार बारह प्रकार के पुत्रों/सन्तानों को मान्यता प्रदान की गई है:- औरस, क्षेत्रज, दत्तक, कृत्रिम, गूढ़ोत्पन्न, अपविद्ध, कानीन, सहोढ़, क्रीत, पोनर्भव, स्वयंदत्त और शौद्र[10]

इसमें कोई शक नहीं कि तत्कालीन सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए यह एक अच्छा हल था। मानव के अनैतिक यौन सम्बंधों को सीमाओं में बाँधने का इससे अच्छा प्रयास नहीं हो सकता था। किन्तु वे विवाह जो अनैतिक यौन-कृत्य से बने फिर भी दूसरी-तीसरी श्रेणी के ही थे। धार्मिक और सामाजिक रूप से श्रेष्ठ और उचित तो यही था कि व्यक्ति, समाज को व्यवस्थित करने वाली वर्ण व्यवस्था के अनुसार अपने ही वर्ण में विवाह करें। ऐसे विवाह से उत्पन्न सन्तान को ही औरस माना जाएगा और सभी प्रकार के अधिकार और कर्तव्य भी उसी के होंगे।

उत्पादकता से जुड़े उस प्रत्येक व्यक्ति का वर्ण शूद्र था जो कृषक, पशुपालक, धातुकर्मी, बुनकर आदि थे, यह सबसे आवश्यक वर्ण था; यदि सभी क्षत्रिय होंगे तो समाज नहीं चल पायेगा। यदि वैश्य अपने धन और क्षत्रिय अपने अस्त्र-शस्त्र-बल से किसी अन्य वर्ण की स्त्री से सम्बंध बनाता है तो यह विवाह तो समझा जाएगा किन्तु दूसरे वर्णों के मान को ठेस पहुँचाने वाला होगा। यदि ऐसा विवाह सम्बंध लूटकर या छीनकर हुआ होगा तो बदले की भावना से समाज की शांति, नियम व्यवस्था भंग होगी। इसलिए नियम बने कि क्षत्रिय पुरुष और शूद्र स्त्री से उत्पन्न संतान को समाज में नीचा स्थान मिलेगा। अपने जाति, वर्ण से बाहर विवाह करना; अनुलोम या प्रतिलोम विवाह करने की इजाजत तो थी[11] किन्तु फिर भी परिणाम भयंकर बताए गए।

यज्ञ, धर्म, पूजा, कर्मकांड, विवाह संस्कार जैसे कार्यों को करवाने का कार्य ब्राह्मणों का था ताकि सबकुछ नियमानुसार और विधि से हो। इस व्यवस्था का अर्थ था कि समाज को कोई व्यक्ति वर्ण या वर्ग चाहे वह राजा ही क्यों न हो, नियम कानून से ऊपर नहीं था। ब्राह्मण इसके लिए लगभग पुलिस की भूमिका में था।

व्यवस्था काफी अच्छी थी, फिर भी इसके प्रति विद्रोह की भूमिका बनी; जाहिर है इसमें कहीं न कहीं कोई कमी थी। मेरा यह मानना कतई नहीं है कि ब्राह्मणों ने अपने पद व अधिकार का दुरुपयोग किया था, इतनी अच्छी व्यवस्था में इस प्रकार की कमी नहीं हो सकती, कमी दरअसल कहीं और थी। पद, अधिकार और सामर्थ्य का दुरुपयोग समर्थ व्यक्तियों द्वारा किया गया होगा; ब्राह्मण को अधिक दान-दक्षिणा, या विलासिता की वस्तुओं

को देकर उन्हें अपने पक्ष में करने और सजा से बचने के लिए, वरना ब्राह्मण तो आवश्यकता पड़ने पर क्षत्रिय की भूमिका में भी उतरा है; हमेशा एक गरीब शिक्षक की भूमिका में बना रहा; वह राजा कभी नहीं बना; राजमहल में सलाहकार, कुलगुरू चाहे जो भी रहा हो नगर से बाहर कुटिया का निवासी बना रहा।

एक बड़ी कमी दण्ड व्यवस्था में भी थी, जो काफी कठोर थी। हाथ के बदले हाथ, आँख के बदले आँख वाली हम्मूरावी की अत्यंत कठोर दण्ड व्यवस्था से भी कठोर व्यवस्था कि किसी भी अपराध के दण्डस्वरूप व्यक्ति को एक अलग ही वर्ण में धकेल दिया जाता था और अवधि सीमा कोई नहीं थी। दण्ड कभी पूरा नहीं होता था; प्राश्चित और उसके बाद वापसी का कोई प्रावधान था ही नहीं। कभी-कभी तो एक व्यक्ति का दण्ड उसकी आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए होता था। किन्तु इस प्रकार की दण्ड व्यवस्था हो सकता है कि उन कार्यों को करवाने के लिए की गई जिन्हें कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से नहीं करना चाहता होगा- जैसे चांडाल, मैला ढोना, ड़तला, मृत पशुओं को ढोना, चमार, अयोगव, पुल्कस आदि के कार्य। ये सभी प्रतिलोम विवाह से प्रतिफलित जातियाँ थीं; इसके अतिरिक्त धोबियों, मछुआरों, कुम्हारों, लोहारों, टोकरी निर्माताओं, बहेलियों, भंगियों के पेशे अशुद्ध कर्म समझे जाते थे। अम्बष्ठ, उग्र, निषाद अनुलोम विवाहों से बनी जातियाँ थीं।[12] ये सभी सूचियां लम्बी हैं इनके अतिरिक्त युद्धों में पराजित कर दास बनाए गए लोग भी होते थे। ऐसे कार्य जो मजबूरी से दण्ड स्वरूप करने पड़ें, से यदि सीमा अवधि या प्रायिश्चत के उपरान्त वापसी भी जुड़ी होती तो यह विश्व की उत्कृष्ट व्यवस्था बनती थी, किन्तु ऐसा नहीं था फलतः यह एक भय और आतंक की जबरन थोपी गई व्यवस्था बनती गई।

समाज का प्रत्येक व्यक्ति, वर्ण, राजा और राज्य का प्रत्येक कार्य नियमानुसार व धर्म सम्मत हो, इस बात की देखरेख करने वाले ब्राह्मणों में से हो सकता है कि कुछ अपवाद स्वरूप अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर अनावश्यक लाभ लेने लगे और उनकी भ्रष्टता के इनाम में प्रत्येक व्यक्ति के लिए इन्हें खुश करना, अधिक दान-दक्षिणा देना, अधिक यज्ञ-पूजा और धार्मिक अनुष्ठान करके अपने आपको अधिक धार्मिक दिखाना इनकी मजबूरी बन गया हो, फिर भी लगभग हर समय भय और आतंक की एक तलवार तो इनके सिर पर लटकी ही रहती थी कि पता नहीं कब और किस अपराध में ब्राह्मण उसे पांचवे वर्ण में धकेल दें, जो एक प्रकार से जाति बहिष्कृत करना ही था, ब्राह्मण या अपने गुरु को खुश रखने के लिए राजा अपनी पुत्री तक उन्हें विवाह में देता था; हालाँकि दासियाँ तक दी जाती थी.... इसके अतिरिक्त राज्यकाज में हस्तक्षेप के अवसर भी आए। शीघ्र ही राजाओं, नेताओं को स्पष्ट लगने लगा कि वर्ण व्यवस्था को वंशानुगत बनाकर.... भयंकर भूल की गई है। हो सकता है कि सुदास पैजवन ने शुरू में इस व्यवस्था के दूरगामी परिणामों को भाँप लिया हो या फिर कुछ वर्षों तक चलती मजबूरी और छटपटाहट के बीच ब्राह्मणों और उनकी वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह की भूमिका बनी हो...। प्रजा का बहुत बड़ा भाग चूंकि धर्म भीरू था, ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग असमंजसता के कारण दो भागों में बंटा था। सामान्यजन में विद्रोह का सामर्थ्य नहीं था.... कुछ इस झगड़े-लफड़े में पड़ना नहीं चाहते थे, किंतु यह सब शुरुआत में था। सामान्य प्रजा में एक और असंतोष भी था जो ब्राह्मणों के प्रति नहीं अपितु सुदास पैजवन के प्रति था।

सुदास पैजवन का राज्य भारतीय इतिहास में पहला यदि सबसे बड़ा था तो बड़े राज्य की अनगिनत बड़ी समस्याऐं भी पहली बार ही थीं। राज्य संचालन, आंतरिक विद्रोहों से

निपटने के लिए; विदेशी शत्रुओं के आक्रमण और अतिक्रमण को रोकने के लिए एक नियमित और अनुशासित सेना की आवश्यकता थी। सेना के लिए अस्त्र, शस्त्र, धन और राजकीय कार्यों इत्यादि के लिए धन की आवश्यकता; जिसके लिए एक व्यवस्था बनी और करों को प्रजा से वसूलने के लिए सख्ती भी आवश्यक थी। इस कर प्रणाली ने भी राज्य और राजा के प्रति प्रजा में असंतोष भरा होगा। सामान्य प्रजा कर के बोझ से अधिक परेशान हुई होगी; धर्म भीरू जनता को ब्राह्मण और पुरोहितवाद से अधिकतर कोई शिकायत नहीं थी। ब्राह्मण और पुरोहित वर्ग ने राजा को नास्तिक, क्रूर, अत्याचारी, धर्म विरोधी, क्षत्रिय धर्म को प्राथमिकता देने वाला प्रचारित कर प्रजा की सहानुभूति अपनी ओर कर ली... और इस प्रकार एक धर्मयुद्ध लड़ा गया.... जो धर्मयुद्ध था ही नहीं; वरना तो सुदास पैजवन नास्तिक नहीं था। वह वैदिक देव तन्त्र का मानने वाला था। अश्वमेघ यज्ञ कर्ता था।

सुदास पैजवन एक बड़ा विजेता था उसने अपने समूचे जीवन में शत्रु ही शत्रु बनाए थे। ब्राह्मणों और सुदास पैजवन के बीच संघर्ष में, सुदास द्वारा पराजित असंख्यों राजाओं ने ब्राह्मण और पुरोहित वर्ग का साथ दिया। समूचा राज्य विप्लव, असमंजसता, अनिश्चितता, युद्ध, संघर्ष के वातावरण में धंसता चला गया। अनेकों ब्राह्मणों, ब्राह्मण पुत्रों का रक्त बहा... वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को अग्नि में जीवित जलवा दिया गया; भार्गव जमदग्नि मारे गए.... सुदास पैजवन और उसका दूसरा क्षत्रिय गुरु विश्वामित्र इस वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष की बलि चढ़ गए; हरिश्चन्द्र को चांडालों का भी दास बना दिया गया।

सहायक ग्रंथ और पाद टिप्पणियां

1. **रामशरण शर्मा "शूद्रों का प्राचीन इतिहास"** दिल्ली 1995 पृ0 34, 36, 47 पर लासेन का ध्यान आकृष्ट करने वाला तथ्य।
2. **कीथ व मैकडोनेल, "वैदिक इन्डैक्स"**, भाग-2 पृ0 309
3. वही, भाग-2 पृ0 389 ; 532-33
4. **आप्टे "संस्कृत हिन्दी कोष"** दिल्ली 1989, पृ0 975
5. **कौशाम्बी, "मिथक और यथार्थ, अनु० नन्दकिशोर नवल"**, दिल्ली, 2001, पृ0 109
6. **सीतानाथ प्रधान, "क्रोनोलोजी ऑफ ऐशेंट इण्डिया"**, पृ0 4
7. वही, पृ0 85-86
8. **पार्जीटर, "ऐ० ई० हि० ट्रे०"** दिल्ली 1989, पृ0 205, 214
9. विष्णु0 4.8.1; हरि0 29 ; 32 और वायु0 के अनुसार चार वर्णों वाली व्यवस्था को जन्म गृत्समद के पुत्र शौनक ने दिया था-

   गृत्समदस्य शौनकश चातुर्वर्ण्य-प्रवर्त्तयिताऽभूत्। विष्णु०

   पुत्रो गृत्समदस्य च शुनकोयस्य शौनकः ब्राह्मणा क्षत्रियाश चैव वैश्याः शूद्रास् तथैव च। वायु० -जे. मुईर "मूल संस्कृत उद्धरण" अनु० रामकुमार राय; वाराणसी, 1965; भाग-1; पृ0 256-257

   गृत्समद काशी के काश का भाई था और आयु का प्रपौत्र, क्षत्रवृद्ध का पौत्र और शुनहोत्र का पुत्र था, जाहिर है वर्ण व्यवस्था की शुरुआत काशी में, दिवोदास से काफी पहले हुई थी। क्षत्रवृद्ध का वंश काशी के राजाओं का है। → काश → काशीराज → दीर्घतमस → धनवंतरि → दिवोदास। किन्तु काशी के दिवोदास का साम्य, समान शत्रु शम्भर, समान कुल गुरू भारद्वाजजनों, रानी का नाम दृषद्वती या माध्वी तथा पुत्र

प्रतर्दन के आधार पर वैदिक त्रुत्सु दिवोदास से बैठता है।
हरिवंश में गृत्समद के पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य थे किन्तु वहाँ गृत्समद सुहोत्र के पुत्र और वितथ के पौत्र हैं। महाभारत अनु0 में गृत्समद उस हैहय वीतीहव्य का पुत्र है जो दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन से प्राणरक्षा के लिए भार्गवों में शरणागत होकर ऋषि हो गया था शुनक और शौनक इस गृत्समद की बारहवीं और तेरहवीं पीढ़ी में है- **आर. मार्टिन स्मिथ ''डेट एण्ड डायनेस्टीज ऑफ अर्लीऐस्ट इंडिया''** पृ0-171 ; हरि0 29.32 में चारों वर्णों को अंगिरस वंशी बताया गया है- जे. मुईर, भाग-1, पृ0 261-262. हरिवंश 31 के अनुसार चार वर्णों की स्थापना अनुवंशी बलि ने की थी इनके गुरू अंगिरा वंशी दीर्घतमस थे- जे. मुईर भाग-1, पृ0 263-264.

10. **शिवदत्त ज्ञानी ''वेदकालीन समाज''** पृ0 173-174
11. अनुलोम विवाह-उच्च वर्ण का पुरुष और निम्न वर्ण की स्त्री ; प्रतिलोम विवाह निम्न वर्ण का पुरुष और उच्चवर्ण की स्त्री। - **रोमिला थापर ''प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास'' अनु० आदित्य नारायण सिंह''** ; दिल्ली, 2001 पृ0-136
12. कुल्लूक भट्ट के अनुसार कोई पाँचवा वर्ण नहीं था क्योंकि संकर जातियों का कोई वर्ण नहीं बनाया जा सकता, कारण, अश्वतर के समान, उनकी एक और ही जाति होती है जो उनके माता-पिता से भिन्न होती है। शास्त्रों में चार जातियों के अतिरिक्त अन्य जातियों का उल्लेख केवल सुविधा एवं सामान्य प्रचलन की दृष्टि से किया गया है- **जे. मुईर,** भाग-1, पृ0-534

अध्याय-15.

लोहित्या-क्रतु-भद्रा नदी प्रदेश और नाग-गरुड़ संघर्ष

पुराणवर्णित लोहित्या नदी को लगभग सभी विद्वान असम की ब्रह्मपुत्र नदी से समीकृत करते हैं जबकि कुछ संकेत ऐसे भी हैं जिनसे लोहित्या नदी के हरियाणा प्रदेश की नदी होने का पता चलता है। लोहित्या नदी के तटों पर हुई ऐतिहासिक गतिविधियों के सामने अन्य प्रदेशों की ऐतिहासिक गतिविधियाँ काफी गौण रह जाती हैं ऐसा प्रतीत होता है जैसे भारत के प्राचीनकाल का इतिहास लोहित्या नदी प्रदेश का ही इतिहास है।

लोहित्या और ब्रह्मपुत्र नामों में काफी सम्बंध है। लोहित्या शब्द का अपभ्रंश रोहतक प्रतीत होता है तो सरस्वती-दृषद्वती नदिओं का प्रदेश कभी ब्रह्मवैवर्त कहलाता था।

कैलाश के दक्षिण पूर्व में लोहित्य पर्वत था जिसके अन्यनाम हैमश्रृंग और सूर्यप्रभ थे। यह पिशंग पर्वत के निकट था और उस सुवर्ण पर्वत तक विस्तृत था जिसके अन्य नाम सुबेल, त्रिक्कुद और त्रिकूट पर्वत थे। लोहित्य पर्वत की तलहटी में लोहित नामक झील से निकलकर लोहित्या नदी कैलाश और गन्धमादन पर्वतों के बीच से होकर बहती थी।[1]

पुराणों में कैलाश पर्वत क्षेत्र में मिलने वाली वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं के आधार पर कैलाश पर्वत को तिब्बत में मानना गलत है। कैलाश पर्वत उत्तरी हरियाणा के यमुनानगर

जिले के उत्तरी सीमा पर यमुना नदी के तट पर आज का कालेसर था। भूतेशगिरि, हमकूट और शंकरगिरि कैलाश पर्वत के अन्य नाम थे। शांतुनु केलाश और गन्धमादन पर रहते थे।[2] ऐसे में कैलाश पर्वत को कुरू राज्य की सीमाओं में होना चाहिए। शिवालिक भी भूत अधिपति शिव से सम्बन्धित नाम है

कालेसर के पूर्व में यमुना नदी के पार सहारनपुर जिले में हाथीबडकला पर्वत और वनक्षेत्र की बरसाती नदी गेजराराव और दोआब में शिवालिक पर्वत का तलहटी क्षेत्र गज टोटेमिक जनों (गजन्धर्वों > गन्धवों) का गन्धमादन था। केसरी की दूसरी स्त्री आद्रि अपसरा, शापवश बिल्ली के मुख वाली पिशाचिनी होकर, यमुनानदी के जिस अच्छोद सर में निवास करती थी, वह कालेसर के दक्षिण का आज का हथनीकुण्ड था। केसरी ने विरज वानर कुंजर की पुत्री अंजना को एक उत्पाती हाथी से बचाया था; कुंजर, अंजन आदि वास्तविक गज हाथी या हस्ती नहीं अपितु हाथी टोटेम वाले जन थे ..... यह और बात है कि दोआबे में उस समय हाथिओं की बहुलता भी रही हो।

दोआबे की शिवालिक पर्वतमाला उस समय ऋक्ष, ऋक्षवान, ऋष्यमूक और अनुपर्वत के क्षेत्रीय नामों से जानी जाती थी। अनुपर्वत और इसके उत्तर का गढ़वाल (> गजवाल / गरूडवाल) प्रदेश पौराणिक आनवों –उशीनरों (ययाति पुत्र अनु के वंशज) का प्रदेश माना जाता है..... अनुपर्वत की नदियों (गंगा-यमुना का दोआबा) का प्रदेश अन्तरवेदी अनुत्तरवेदी का अपभ्रंश है जिसका अर्थ है अनुप्रदेश या पर्वत के बाद का। अंजना और उसके पुत्र हनुमान के नामों में अनुशब्द की ध्वनि है यदि ऐसा है तो अनुजन .... गज या गरूड़ जन होने चाहिये। इस विषय पर कुछ बाद में चर्चा करेंगे।

ऋक्ष पर्वत क्षेत्र, वानरों, भल्लूकों आदि अर्धसभ्य टोटोमिक जनों का निवास स्थान था। ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली नदी ऋक्षा या राक्षी होनी चाहिऐ, जिसके पर्वतीय भागों में ऋक्ष जन और मैदानी भागों के तटों पर राक्षसों का निवास था। हरियाणा की राक्षी नदी जो कभी दोआबे के ऋक्ष पर्वत से निकलती थी कालेसर से अधिक दूर नहीं है मार्कण्डेय0 के अनुसार राक्षस कैलाश पर्वत पर रहते थे।[3] ये राक्षस उन यक्षों के सजातीय बन्धु थे जिन्हें सुदास पैजवन ने यमुनातट पर अज और शिग्रु जनों के साथ ही पराजित किया था (ऋग्वेद 7.18.18-19); ऋक्ष पर्वत या अनुपर्वत का पश्चिमी भाग क्रौंच पर्वत या क्रौंच द्वीप था जो आज का करौंदी नदी और करौंदी घाटी प्रदेश है, क्रौंच द्वीप का अधिपति वरूण कहा गया हैं। महाभारत भीष्म0, पद0 स्वर्ग खण्ड के अनुसार मैनाक पर्वत क्रौंच द्वीप में था।[4] और प्राचीन भूगोलवेत्ता शिवालिक को मैनाक के नाम से जानते थे।[5] कैलाश के उत्तर-पूर्व का चन्द्रप्रभ पर्वत सुबेल या सुवर्ण शिखर तक विस्तृत था। चन्द्रप्रभ पर्वत के निकट अच्छोद सरोवर से अच्छोदा नदी निकलती थी जिसके तटों पर चैत्ररथ वन था[6]

हस्तिनापुर राजवंश का अजमीढ़, अजनाभ खण्ड के अज जनों का द्योतक व्यक्तिगत नाम हैं। अज, गज, कुरू हस्ती जनों में कोई भेद नहीं-हाथी > हस्ती > हस्त = हाथ = कर > कुरू ! अज शब्द से बनाये गये शब्द अच्छोद > अच्छोदा.. आद्रि अपसरा का नाम है जो पिशाचिनी थी। अर्थात अज-आद्रिज जन.. वे पिशाच यतुधान थे.. अज पिशाचों का नाम है, आद्रि अपसरा से उत्पन्न उपरिचर वसु का पुत्र आद्रि पिशाचों का राजा बना था, उस आद्रि पिशाच का नाम ही अजगन्ध या मतस्यगन्धा था, जिस की बहन अजगन्धा या मतस्यगन्ध या मछोदरी सत्यवती शांतनु की रानी बनी थी।

सहारनपुर और देहरादून जिलों के सीमा क्षेत्र में हाथी बड़कला वन और पर्वत.. यमुना

नगर जिले में यमुना नदी के तट पर हथनीकुंड; हस्तिनापुर बसाने वाला हस्ती..., हस्तिनापुर का अन्य नाम गजसाहव्यं और हस्ती के एक पौत्र का नाम ऋक्ष; इन सभी तथ्यों से लगता है कि ऋक्षों का सम्बंध ऋक्ष या ऋष्यमूक पर्वत से निकलने वाली ऋक्षा नदी से था... जो राक्षी अथवा राक्सी ही थी... यह मकराक्षी...मतस्यकारा....मच्छकारा या मस्कारा ही थी जो उस काल में सहारनपुर से हरियाणा की भूमि पर बहती थी... क्योंकि यमुना नदी इसके उत्तर में थी और हरियाणा की धरती पर पश्चिम वाहिनी थी...। मकर, मतस्य, ऋक्ष, राक्षस, हस्तीजनों के साथ-साथ पिशाच भी सहारनपुर, यमुनानगर क्षेत्र के निवासी थे। ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली नदी पिशाचिका.... इसी मस्कारा/राक्षी का एक क्षेत्रीय नाम था यह कोई दूसरी छोटी नदी थी कहना मुश्किल है; वैसे समूचा नदी तन्त्र अनिश्चित था, कौन सी नदी कब रास्ता बदल लेती थी और किसी समय विशेष में कैसा नदी तन्त्र था कहा नहीं जा सकता क्योंकि मकर, मतस्य, ऋक्ष, पिशाच, हस्ती आदि टोटेमिक जातियों को अलग-अलग नहीं पहचाना जा सकता.... जाम्बवान और केसरी दोनों के पिता का नाम गद्गद मिलता है किन्तु दोनों के पिता एक ही थे या अगल-अलग पता नहीं... हाँ केसरी का शाब्दिक अर्थ यदि व्याघ्र है तो जाम्बवान के सोलह पुत्रों में से एक का नाम व्याघ्र था। केसरी की स्त्री आद्रि के विषय में मिथक है कि शापवश वह बिल्ली के मुख वाली पिशाचिनी होकर यमुना तट पर अच्छोद सरोवर में रहती थी... इसकी पुत्री अजगन्धा, मतस्यन्धा या मछोदरी थी और बाली-सुग्रीव के पिता का नाम ऋक्षरजस था। हनुमान का किसी मकरी या मतस्या से पुत्र का नाम मकरध्वज था; जाम्बवान के मामा शुक्र के पुत्र ऋक्ष और उसकी स्त्री विरजा के पौत्र मकरगण थे। कश्यप और क्रोधवशा के 16 जोड़े पिशाच और एक पुत्री मृगमन्दा थी. ... मृगमन्दा और पुलह की संतानें ऋक्ष नाम के वानर थे और पुलह की दूसरी स्त्री हरिभद्रा के मार्जार नामक वानर हुए।[7] जाम्बवान के एक पुत्र का नाम मार्जार है और मार्जार का अर्थ बिलाव....[8], बिल्ली को पूषी भी कहते हैं... इसका पुल्लिंग शब्द पूषा.... अर्थात पोषण करने वाला।[9] पूषा का स्त्रीलिंग शब्द शायद अप्सरा हो...। ऊपर मैंने तथ्य दिया कि आद्रि अपसरा शापवश बिल्ली के मुख वाली पिशाचिनी बन गई थी... अर्थात मार्जारी या विड़ाली। ...उसका पति केसरी था... केसरी या व्याध्र भी विड़ाल कहलाता है और यदि मार्जार टोटेम वाले जनों की बातें करें तो हरियाणा की भूमि पर असंख्यों माजरे हैं। इन माजरों का सम्बंध मार्जार जनों से ही है। प्रत्येक तथ्य, नाम एक इतिहास बताता है जो मूलतः सहारनपुर-यमुनानगर जिलों में बहने वाली असंख्यों रावों, चोईयों, छोटी-बड़ी नदियों से शुरू होता है। इन नदियों का उद्गम गंगा, यमुना, दोआबे की शिवालिक पर्वतमाला थी जो समय-समय में अनु, क्रौंच, मैनाक, ऋक्ष आदि क्षेत्रीय नामों से जानी गई।

हिमवान और मैना के दो पुत्र क्रौंच और मैनाक थे, मैनाक या क्षेमक पर्वत के निकट आम्बिकेय पर्वत था।[10] कालेसर के निकट एक छोटी बरसाती नदी अम्बावाली खोल है और अम्बिकावन-कालेसर से गिरि नदी के पार आज का डन्ड़ा अम्बोआ था। श्रंगवान पर्वत आज का श्रंगकाठा है। श्रंगवान पर्वत के (दक्षिणी सिरे के) समीप अरुण पर्वत था.... अरूण और वरुण एक ही हैं।[11] सम्भवतः अरुण पर्वत के कारण उस यमुना नैदी का एक नाम अरुणोदा भी था जिसके शैलोदा, वरुणा, चित्रा, लोहित्या आदि और भी क्षेत्रीय नाम थे यही नदी चैत्ररथी थी जो आज हरियाणा कि चितांग या चितंग है जो कभी सरस्वती नदी के नाम से बही थी....।

सरस्वती नदी का एक नाम पलक्षा भी था इसका संकेत हमें कुरुक्षेत्र क्षेत्र में सरस्वती

नदी से सम्बंधित अन्यत पलक्षा, पलक्ष प्रस्रवण और पलक्ष प्रस्त्रवण जैसे शब्दों से मिलता है। पलक्षा नदी का प्रदेश ही पुराणवर्णित पलक्ष द्वीप था। नदी का नाम पलक्षा पुलह-पौलस्त्यजनों और उनकी सन्तत्ति पलंकषों के कारण था या पलंकषों का नाम पलक्षा नदी के कारण हुआ, कहना मुश्किल है किंतु एक समय यह नदी अपने साथ काफी अधिक गाद, तलछट बहाकर लाती रही थी। इसकी लाल रंग की गाद-तलछट के कारण सरस्वती नदी को रक्तिम बताया गया है। एक स्थान पर सरस्वती नदी के लुप्त हो जाने का दोष विश्वामित्र के सिर मढ़ते हुए कहा गया है कि विश्वामित्र ने सरस्वती नदी का जल रक्तरंजित कर दिया इस लज्जा से सरस्वती नदी धरती में विलीन हो गई।[12] ऐसा प्रतीत होता है कि सरस्वती नदी के जल में लाल गाद का प्रतिशत घटता और बढ़ता भी था, विश्वामित्र के समय जब वह वशिष्ठों के साथ रक्तपात की सीमा तक का व्यवहार कर चुका था कम से कम एक बार सरस्वती नदी लुप्त हुई थी, या फिर हो सकता है कि वह मार्ग बदलकर वहाँ से कहीं मीलों दूर से बहने लगी हो। नदी के मार्ग बदल लेने का बड़ा कारण गाद ही था। विश्वामित्र के पिता गाधि और पितामह तथा पूर्वजों का नाम कुशिक, कुशाम्ब, कुशनाभ आदि का सम्बंध सरस्वती नदी से प्रतीत होता है। पलंकष और कुशिक का अर्थ गाद या कीचड़ होता है।[13] वामनपुराण में कौशिकी दृषद्वती नदी की सहायक नदी थी। दृषद्वती का वर्णन ऋ 3.23.4 में सरस्वती और आपया के साथ मिलता है कनिंघम दृषद्वतीं को राक्षी मानते हैं।[14] आज दृषद्वती चितांग, चित्रांग या चौतांग के नाम से जानी जाती है। प्राचीन नदियों के नामों की पहचान बदल जाने का कारण नदियों का असंख्यों बार मार्ग बदल लेना है। यह सब इतनी अधिक बार हुआ है कि किसी समय विशेष पर कौन सी नदी किस क्षेत्र में बहती थी और किस नदी की सहायक रही थी पता लग पाना मुश्किल है।

मैदानों में कम ढ़लान के कारण नदी की गति मंद हो जाती है, ऐसे में साथ बहाकर लाई तलछट, गाद नीचे बैठकर नदी की पेटी को उथला करने लगती है और नदी अपने बनाए तटबन्धों को तोड़कर दूसरा रास्ता ले लेती है.... अत्यधिक गाद तलछट वाली नदियों के साथ यह अधिक शीघ्रता से होता है। हिमालय से निकलने वाली गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु विश्व की सर्वाधिक तलछट वाली नदियाँ हैं। वैदिक-पौराणिक काल में भी सतलुज से लेकर गंगा तक असंख्यों छोटी-बड़ी रावें, खोलें, चोईयाँ थीं जो प्रमुख नदियों के बहाव मार्ग परिवर्तन कर लेने पर प्रभावित होती रहती थी। किसी भी नदी का दूसरा बहाव मार्ग भी इतनी शीघ्रता से नहीं बनता। दूसरे मार्ग पर नियमित होने से पूर्व नदी बार-बार अपने पहले बहाव मार्ग पर लौटती है। ऐसा भी हुआ होता है कि दूसरे बहाव मार्ग पर पूर्णतया नियमित होने से पूर्व नदी को तीसरे, चौथे या पाँचवें बहाव मार्ग से भी गुजरना पड़ा हो और दस, बीस, पचास, सौ या इससे अधिक वर्षों के संघर्ष के उपरान्त अन्ततः वह दूसरे मार्ग पर नियमित हो पाती हो। महाभारत के अनुसार सरस्वती नदी अपनी ही स्वरूपभूता अरुणा को ले आई; सरस्वती ने निकट आकर अरुणा को अपने जल से आप्लावित कर दिया।[15] यह तथ्य सरस्वती नदी क्षेत्र में न केवल सरस्वती नदी के मार्ग परिवर्तन के विषय में बताता है अपितु एक नई नदी अरुणा का संकेत भी देता है जिसमें अन्ततः सरस्वती नदी आ मिली।

सी.एफ.ओल्ड्हेम के अनुसार प्राचीन नदी घाटियों के पर्यवेक्षणों से ऐसा प्रमाण मिलता है कि सरस्वती मूलतः शतुद्रि (सतलज) की सहायक नदी थी और अब शतुद्रि मार्ग बदलकर विपाशा नदी से मिल गई तब सरस्वती नदी ही शुताद्रि की प्राचीन घाटी से होकर बहने लगी।[16] ए.घोष के अनुसार सरस्वती घाटी में कम से कम तीन सभ्यताओं का विकास और

पतन हुआ... सरस्वती नदी का ऊपरी भाग 5000 ई.पू. सूखना शुरू हुआ; जेम्स टाड के अनुसार हक्रा का सूखना 1044 ई. में सर्वप्रथम बीकानेर में शुरू हुआ। बारहवीं सदी के अंत तक मूलरूप से स्वतंत्र नदी सतलज का संगम बीकानेर में घघ्घर से होता था, तेरहवीं सदी में सतलज ने अपना दक्षिण पथ छोड़कर कपूरथला के निकट व्यास नदी से नाता जोड़ लिया किन्तु सम्भवत: वह पुन: अपने प्राचीन बहाव मार्ग पर लौटी, सतलज ने पुन: दो बार 1593 और 1796 में सरस्वती नदी का जल अपहरण कर सिन्धु नदी को दे दिया और क्षतिपूर्ति में असमर्थ सरस्वती नदी पूर्णतया समाप्त हो गई।[17]

यमुना नदी के बहाव मार्ग में परिवर्तन के कारण एक बार तो ई.पू.1750 में घघ्घर नदी सूख गई थी। 1150 ई.पू. में यमुना नदी के मार्ग में परिवर्तन से यह प्रदेश पुन: हरा-भरा हो गया, फलत: 1000 ई.पू. में यहाँ चित्रित धूसर मृदभांड सभ्यता के लोग आ बसे, किन्तु 500 ई. में यमुना नदी के एक बार फिर मार्ग बदल लेने के कारण प्रदेश पुन: उजड़ गया।[18]

अब सहायक नदियों के साथ तथा नई पुरानी नदियों का कब कैसा तन्त्र था कुछ सही अन्दाजा नहीं लग पाता, जिस क्षेत्र में नदी के बहाव मार्ग में सर्वाधिक अनिश्चितता और अनियमितता रही होगी, उस क्षेत्र की कल्पना किसी नरक से कम नहीं हो सकती, ऐसा क्षेत्र यमुना नदी के मैदानों में उतरने से तुरन्त बाद था.... अर्थात यमुना का शुरुआती मैदानी क्षेत्र यम का यमलोक था जहाँ दलदल, कीचड़, गाद.... लवणयुक्त भूमि... कभी जल ही जल तो कभी थल....। और कारण यह कि नदी कब किस रास्ते होकर बहने लगे कहा नहीं जा सकता था। पश्चिम की ओर बहने वाली यमुना अपने आज के दक्षिण के मार्ग पर बहने लगने या निश्चित होने से पूर्व अनिश्चितता के युग में, बीच में तीसरे, चौथे या पाँचवे किस-किस बहाव मार्ग से गुजरी पता नहीं, हर नये मार्ग पर उसका नया नामकरण हुआ, ऐसे में भी मस्करा, सांदली, काथा, कृष्णी, नागदेव की खोल, हिंडन, सोलानी आदि सहायक छोटी नदियों का कैसा स्वरूप रहा होगा, इस विषय में खोज चलती रहनी चाहिए, क्योंकि किसी नदी का केवल स्वरूप ही नहीं बदलता उसके साथ लगभग सारा का सारा इतिहास बदल जाता है.... इतिहास भी इतना बदल जाता है कि विश्वास नहीं किया जा सकता।

नदी द्वारा पर्वतों से लाई गई अपेक्षाकृत भारी कणों वाली गाद तो अधिकतर पर्वत की तलहटी में ही जमा होती है। शिवालिक की तलहटी में इस गाद ने जमकर नदी को दो भागों में विभक्त करने वाले टापू का रूप ले लिया, धीरे-धीरे टापू बड़ा और अधिक ऊंचाई वाला बन गया।[19] यमुना के बार-बार मार्ग परिवर्तन में सबसे बड़ा कारण नदी टापुओं का ही रहा होगा। भूवैज्ञानिक दृष्टि से भी सतलज गंगा का क्षेत्र बेहद संवेदनशील है। भारतीय प्लेट जैसे-जैसे मुख्य ऐशिया प्लेट के नीचे घुस रही है वैसे-वैसे न केवल हिमालय पर्वत ऊपर उठ रहा है अपितु सतलज गंगा के मैदानी प्रदेश के नीचे पृष्ठ तनाव के कारण वक्रता बढ़ रही है। इसी वक्रता के कारण हरियाणा का भूभाग ऊपर उठ रहा है; पृष्ठ के इस लगातार ऊपर उठने ने जहाँ सतलज नदी को पश्चिम की ओर धकेला, वहीं यमुना नदी के पश्चिम की ओर बहाव का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। इसके अतिरिक्त हरियाणा की भूमि में महेन्द्रगढ़ और रोहतक के दोनों ओर से गुजरते उत्तर की ओर तक जाते दो भ्रंश (फाल्ट) भी जमीन के भीतर मौजूद है पश्चिम फाल्ट करनाल होकर यमुना के बहाव मार्ग के नीचे-नीचे सहारनपुर तक जाता है और पूर्वी फाल्ट मुजफफरनगर जिले में काथा नदी के नीचे तक है। भूपटल में उठान और दबाव में इन भ्रंशों की आकस्मिक हलचलें भी पूरा योगदान देती हैं उपर्युक्त दोनों फाल्टों के साथ-2 दक्षिणी हरियाणा क्षेत्र में सोहना और मथुरा फाल्ट भी

जो दिल्ली और हरिद्वार रिज से सोनीपत और मेरठ में आकर मिलती है[20] नदियों के मार्ग परिवर्तन में भूमिका निभाते होंगें।

मिथक है कि गंगा को भागीरथ लाये थे, उससे पहले गंगा ब्राहलोक में थी। वह ब्रहमलोक कहीं आसमान में नहीं अपितु ब्राहमी लिपि और पैचाशी बोली वाले ब्रहमधानों का वह ब्रहमवैवर्त था[21] जो कुरूक्षेत्र और उसके आसमान का प्रदेश था[22] मार्कण्डेय में पैशाची को ग्यारह भाषाओं के मूल में माना गया है। राजशेखर इसका सम्बध मूल वैदिक से मानते हुए कहते है कि संस्कृत उक्त भाषाओं का मुख थी और पैशाची पांव।[23] ब्रहमधान हिरण्य अथवा सृज्जयजन ही थे, वे प्रथम राक्सस राजा या गन्धर्व, यातुधान और पुण्यजन ब्रहमराक्षस भी थे। माता की ओर से रक्ष रावण हेती का वंशज था, रामायण में उसे **''यातुधानस्य दौहित्र''** कहा भी गया है।[24] कश्यप और सुरसा के बारह यातुधान पुत्रों में से हेती-प्रहेती भी थे और हेती का अर्थ बिजली, विद्युत, शाल्मलि या सौधुम्नि....... अर्थात सौधुम्नि या सदादेनी नदी और विद्युती या वेदवती नदी। हेती-प्रहेती जन इसी सदादेनी मार्कण्डा के समीप मोरनी पहाड़ी के निवासी थे। मिथक है कि वे एक अपसरा को रिझाने के लिए म्यूर और मुर्गे के स्वर में बोले थे.... तो इन्द्र ने उन्हें म्यूर और मुर्गा बना दिया। उनका यह शाप मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम में आकर छूटा था। अर्थात वे मारकण्डा नदी क्षेत्र में उतर आए, यहाँ उनसे अधिक सभ्य कृषक वैदिकजनों की बस्तियाँ थी। सभ्यता के प्रथम दर्शनों ने उन अर्धसभ्यों को भी सभ्यता की ओर धकेला, इसको कहा गया है कि उनका शाप छूट गया। हेती के वंशज तीन माली भाईयों ने प्राथमिक बस्तियाँ बसाई..... सुमाली का द्रौहित्र रावण पूर्ण आर्य बना, किन्तु प्रहेती का पुत्र ब्रहमपात वेदवती या वैद्युती नदी के उदगम् में-वैद्युत पर्वत के क्षेत्रों में वैभ्राज वन का निवासी ही रहा। वे ब्रहमधान या ब्रहमराक्षस जिनका आराध्य मेरे विचार से ब्रहमा था..... उनकी लिपि ब्राहमी और भाषा पैशाची थी.... जो खांड या खांड़व प्रदेश की रोहतकी के निकट है। मारकण्डा नदी के उदगम् क्षेत्र के निकट मोरनी म्यूर टोटेमिक जनों का क्षेत्र थे। घघ्घर की ऊपरी सहायक नदी झरझरा है तो रोहतक के दक्षिण में झाडली, झज्जर, जहाजगढ़, झोलरी उन झरझरों द्वारा बसाए गए प्रतीत होते हैं जो म्यूर टोटेमिक हिरण्याक्ष के वंशज थे, वे उत्तरी राजस्थान में झुन्झनु तक आ बसे होंगे।

यह एक विचारीय तथ्य है कि जिस समय चैत्ररथी-यमुना नदी मार्ग बदलकर दक्षिणी वाहिनी हुई तो गंगा-यमुना दोआब से निकलने वाली वे नदियाँ जो कभी हरियाणा की भूमि पर बहती थीं..... अब वे यमुना नदी में ही मिलने लगीं और नदियों का वर्तमान स्वरूप सामने आया; किन्तु यह सोचना भ्रामक है कि किसी नदी ने मार्ग बदला और सबकुछ बड़ी आसानी से निपट गया होगा.... नदी के साथ न केवल नदी तन्त्र बदलता है अपितु सामाजिक, आर्थिक इतिहास भी बदलता है। नदी किनारे रहने वाले जनों, ग्राम-गोत्रों का पलायन दूसरे क्षेत्रों में होता है ऐसे में कुछ तो लम्बे समय तक याद रहकर अन्तत: भूल जाता है.... कुछ दबा रह जाता है तो कुछ मिथकों, लोककथाओं, जनश्रूतियों से जीवित रहता है। किन्तु समय के साथ सभी कुछ इतना काल्पनिक लगने लगता है कि वह इतिहास रहा होगा.... इसमें शंका होती है..... ऐसा ही मिथक गंगा नदी का है कि वह कभी ब्रहमलोक में थी.... उसे भागीरथ धरती पर लाए... मिथक का स्वरूप चाहे जो हो.... उसमें रत्तीभर इतिहास तो अवश्य होता है। भागीरथ द्वारा गंगा लाने के पीछे कारण उनके उन 60000 पूर्वजों को तारना था जिन्हें कपिल मुनि ने भस्म कर दिया था। यह वृतान्त काल्पनिक और मिथक लगते हैं किन्तु इसके पीछे एक अद्‌भुत, अनछुआ, अन्जाना, अनसुलझा इतिहास है.... आश्चर्य की

सभी सिवानों से परे का......।

सहारनपुर-मुजफ्फरनगर जिलों में एक छोटी नदी काथा है, यह ऋक्ष पर्वत के ऋक्षजनों की एक शाखा क्रतुजनों[25] की क्रतु नदी थी। दूसरी नदी क्षमा थी। दक्ष की पुत्री क्षमा एक स्थान पर पुलह की स्त्री है तो विष्णु0 के अनुसार क्रतु की।[26] दक्ष हरिद्वार-कनखल के निवासी थे और ऋक्ष पर्वत (दोआबे की शिवालिक पर्वत माला) पर पुलह और उनकी सन्तानों-ऋक्षों और मार्जार जनों का निवास था। कर्दम भी पुलह के पुत्र थे। कर्दम की पुत्री और कपिल की बहन क्रिया.... क्रतु की स्त्री बनी। क्रतु को क्रिया से 60000 बालखिल्य पुत्र हुए....। अर्थात बालखिल्य जन.... क्रतु नदी क्षेत्र के ऋक्ष या कर्दम जन ही थे। स्पष्ट है कि बालखिल्य जन ही वे बाल्हीक थे जिनके वंशजों ने बाद में हस्तिनापुर बसाया था, क्योंकि प्राचीन साहित्य में बाल्हीकों को कर्दम राजाओं के अधीन कहा गया है।[27] दूसरे, हस्तिनापुर के संस्थापक हस्ती के पौत्र या अजमीढ़ के पुत्र का नाम ऋक्ष है..... कहा जा सकता है कि अजनाभखण्ड के अज जनों..... ऋक्ष, क्रतु, पुलह, कर्दम...वाल्हीक आदि में कोई भेद या स्पष्ट सीमा रेखा नहीं है.... वे ही नाग भी हैं क्योंकि एक ओर जहाँ दोनों भाई अम्बरीष और कर्दम तथा कर्दम का पुत्र कपिल ये तीनों नाम नागों के हैं[28] वहीं हस्तिनापुर का कुरू राजवंश.... कौरव्य नागों का वंश प्रतीत होता है.... एल, नहुष, नील, अजमीढ़, धूमिनी, धृतराष्ट्र, कर्ण, धनंजय जहाँ सभी नाम नागों के हैं। दामोदर कौशाम्बी भी मानते हैं कि धृतराष्ट्र महज एक नाग था, महाकाव्यों की मुख्य कथाओं के मूल आख्यान आर्य पूर्व लोगों से प्राप्त हुए और बाकी बचे लोगों के साथ इनका भी आर्यीकरण हो गया, अश्वत्थामा ललाट पर मणि धारण करने वाला नाग था।[29] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से बहुत से नाम नागों के हैं। क्रतु>कर>कुरू और कर>हाथ>हस्त>हस्ति (हाथ>हाथी) के सिद्धांत पर क्रतु जनों का हस्तिनापुर के कुरुओं से सम्बंध स्पष्ट नजर आता है। बीस हाथ होने के कारण रावण का एक नाम क्रतिकर[30] और सहत्रबाहू होने के कारण अर्जुन का नाम कृतवीर्य था। कृतु का सम्बंध क्राथ और क्राथ का सम्बंध काथा नदी से प्रतीत होता है.... क्राथ एक नाग का नाम था और धृतराष्ट्र के पुत्र का भी।[31]

अज जन तो अहि, नाग क्रतु या पितृ पिशाचजन थे, ऋ. 7.18.19 के अनुसार सुदास पैजवन ने यमुना तट पर अजों को यक्षुव और शिग्रुव जनों के साथ पराजित किया था, तीनों जातियों के बीच अन्तर अधिक नहीं है। सम्भवत: वे एक ही जाति की शाखाऐं और प्रशाखाऐं थीं और समान क्षेत्र की थीं.......इनके बीच आपसी संघर्ष की नौबत भी बाद में आ गई थी। कपिल 60000 बालखिल्य जनों का मामा था, और कपिल ने सगर के 60000 पुत्रों को भस्म किया था; इन्हें दो कपिल मानना भ्रमवश है, एक कपिल को हरिद्वार कनखल का और दूसरे को गंगा-सागर (समुद्र तट) का मानना भी गलत है.... कथानक बेशक अलग-अलग हों किन्तु एक ही स्थान पर आ जुड़ते हैं सगर पुत्रों के भस्म होने का कारण जैसा बताया गया है जस का तस वैसा लगता नहीं। सर्वप्रथम तो राजा सागर को मध्य प्रदेश के सागर क्षेत्र का मानने का समीकरण ही गलत है.... सगर आज के सहारनपुर का राजा था और सगर को जिस अजोध्या के नरेशों की सूची में गिनाया गया है वह अजोध्या.... यमुना नदी क्षेत्र में अजजनों की कोई प्राथमिक बस्ती थी...... अजजनों का अजमीढ़ और आग्नीध्र का अजनाभ खण्ड़ सहारनपुर का ही क्षेत्र था। सहारनपुर सागर के सागरनपुर का अपभ्रंश नाम है और सगर जन ऋ 7.18.19 में सुदास पैजवन द्वारा यमुना तट पर पराजिग शिग्रुजनों का पौराणिक प्रतिरूप है। सुदास पैजवन ही पौराणिक हैहय सहत्रबाहू अर्जुन था.... अथर्ववेद

5.19.1 में स्पष्ट कहा गया है- **''भृगु हिंसित्वा सृज्जया वीतिहव्या पराभवन''**. अर्थात हैहय वीतीहोत्र..... सृज्जय वीतीहव्य थे उनका विग्रह भार्गवों से हुआ था। दूसरा प्रमाण यह है कि यदि पौराणिक हैहय जन यादवों से सम्बन्धित थे तो ऋ 3.53.7 में सुदास पैजवन भोजों का पूर्वज वर्णित है।

अब सुदास पैजवन ने शिग्रुजनों को पराजित किया और हैहय सहत्रबाहू अर्जुन ने सगर के पिता बाहुक या असित को हराया..... दोनों तथ्यों का अर्थ एक ही है इसका संकेत है क्रतु>कर>हाथ>हस्त>असित; हाथ>बाहु>बाहुक! शब्दों को तोड़-मोड़कर अलग-अलग कथानक बना दिए बस। सुदास पैजवन ही क्राथा या काथा नदी का प्रदेश जीत कर क्रथवीर कहलाया..... पुराणों में उसे क्रतवीर्य अर्जुन सहत्रबाहु कह दिया गया।

अब यदि सगर जन.....श्रूघन क्षेत्र के शिग्रु जन थे..... तो समान क्षेत्र में रहने के कारण उनका संघर्ष अपने ही भाई वृन्द कृतु पुत्र 60000 बालखिल्यों से भी हुआ होगा। 60000 सागरेयों के सामने 60000 बालखिल्य अंगूठे के आकार के साबित हुए.... वे बालखिल्य जन पराजित होकर पूर्व और दक्षिण पूर्व भारत में पलायन कर गए (इस विषय पर बाद में चर्चा करेंगे) किन्तु संघर्ष समाप्त नहीं हुआ। बालखिल्यों का बदला हरिद्वार कनखल क्षेत्र के कपिल नागों ने फेर लिया। कपिल ने 60000 सागरेयों को जलाकर भस्म कर दिया। बचे-खुचे सागरेय जन मध्य भारत के सागर क्षेत्र में पलायन कर गए। सागरेयों द्वारा खाली किए क्षेत्रों में अब कपिलों-अजों का अधिकार हो गया- अहिच्छत्रा, अतरंजीखेड़ा, काम्पिल्य, कपिलवस्तु जैसी बस्तियाँ कपि-कपिल और अहिजनों द्वारा ही बसाई गई प्रतीत होती हैं। मेरा विचार है कि मध्यभारत के कायथा और अहाड़ से आकर उत्तर भारत का चक्कर लगाते हुए पूर्व और दक्षिण पूर्व तक पहुँच जाने वाले क्रतु; अहिजन या बालखिल्य, शिग्रु-सागरेय जन ताम्र संचयी लोग थे। शिग्रु-सागरेय जनों की एक दूसरी शाखा ने एक समय क्रतु/काथा नदी क्षेत्र में सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, पानीपत, सोनीपत, रोहतक तक का भूभाग जीता, वे आयुद्धजीवी, शिकारी, पशुपालक, वन-अरण्यों पर आश्रित जन थे.... वरुण उपासक थे.. ... नर बलि देते थे, इनका टोटेम गरुड़ पक्षी था....।

गरुड़जनों का संघर्ष अपने ही भाई वृन्द नागों से था; गरुड़ शब्द के साथ गर (विष) या गार (गाद कीचड़) का भी सम्बंध है। श्रूधन की भूमि क्षार-लवण युक्त थी.... इसी को लेकर सगर के साथ ''गर सहित जन्म लेने'' का मिथक बना। इसी गर या विषपान के कारण शिव का कण्ठ नीला है.... वे नील लोहित्य है। अरिष्टनेमि ताक्ष्य की पुत्री और सुपर्ण की बहन सुमति, सगर की स्त्री थी और उसके 60000 पुत्रों की माता थी। सगर ही वह गरुड़ था जो नाग-बालखिल्यों से टकराया था..... मिथक है कि गरुड़ का भाई अरुण था जो सूर्य का सारथी बना था। क्या कहें.... सूर्यवाहक या सूर्यवंशी....?

प्रजापति की दो पुत्रियॉ विनता और कद्रू कश्यप की स्त्रियॉ थी। कद्रू जिसे महाभारत में अनार्या कहा गया है ने एक हजार और विनता ने दो अण्डे दिये। पाँच सौ वर्षों बाद कद्रू के हजार अंडों से एक हजार नाग उत्पन्न हुए। जलन से जल्दबाजी में विनता ने अपना एक अण्डा फोड़ कर देखा उसमें से अर्ध विकसित अरूण ने जन्म लिया उसने माता को जल्दबाजी दिखाने के लिऐ शाप दिया कि वह कद्रू से ईर्ष्या के कारण पाँच सौ वर्षो तक उसकी दासी बन कर रहेगी। अरूण सूर्य के सारथी बने।

एक बार कद्रू और विनता में समुद्र मंथन से निकले उच्चैश्रवा अश्व की पूँछ का रंग के विषय में शर्त लग गई, विनता का कहना था कि पूँछ के रंग सफेद है और कद्रू ने उसे

काले रंग की बताया। कद्रू ने अपने नाग पुत्रों से उच्चेश्रवा की पूँछ से लिपट जाने को कहा ताकि पूँछ काली दिखाई दे और यह भी कहा कि जो इस आज्ञा को नहीं मानेगा वह जनमेजय के यज्ञ कुण्ड में भस्म किया जायेगा। ... दूसरी रात जब उच्चैश्रवा आसमान से होकर उड़ा तो उसकी पूँछ काली दिख रही थी। कद्रू छल से जीत गई.. शर्त के अनुसार विनता को उसकी दासी बन कर रहना पड़ा। पाँच सौ वर्षो बाद विनता के दूसरे अण्डे से गरुड़ का जन्म हुआ (सगर के भाँति वह भी तो बदले के गर के साथ जन्मा था।) शुरू-शुरू में तो गरुड़ भी माता विनता के साथ-2 कद्रू का दास रहा । वह कद्रू और उसके नाग पुत्रों का प्रत्येक आदेश मानता था, वह नागों को अपनी पीठ पर लाद कर घुमाया करता था। एक बार गरुड़ ने नागों को अपनी माता विनता की दास्ता से मुक्ति का उपाय पूछा तो नागों ने उससे अमृत लाने को कहा। गरुड़ देवताओं से लड़कर अमृत तो ले आया किंतु इन्द्र के कहने पर उसने चालाकी की, नाग अमृत नहीं पी सके और विनता को दास्ता से मुक्ति भी मिल गई।[32]

आनन्द रामायण में वर्णन है कि गरुड़ ने एक बार गज, ग्राह (मकर) और गृद्ध के शवों को क्षीर सागर में एक स्वर्ण डाल पर बैठ कर खाया था। उनकी हड्डियों के ढेर से बने त्रिकूट पर्वत पर बाद में राक्षसों ने लंका बसाई। गरुड़ ने कच्छप और गज का भक्षण किया था।[33]

राक्षस राक्षी नदी क्षेत्र के निवासियों का द्योतक है और मकर, मकराक्षी या मस्करा नदी प्रदेश के निवासिओं का; गज हस्ती जन हैं। मस्कारा नदी तत्कालीन मकराक्षी हो सकती है जो तब हरियाणा की भूमि पर बहती थी। क्षीर या क्षार सागर या फिर लवण सागर.... शिवालिक की तराई का क्षेत्र था जो यमुना नदी के समुचित बहाव मार्ग में अनियमितता के कारण अथवा बाढ़ के अतिरिक्त पानी के कारण एक विशाल सागर नुमा झील मे परिवर्तित हो जाता था.. जल की यह विशााल मात्रा गर्मियाँ आते-2 भले ही सूख जाती थी कि फिर भी काफी मात्रा में जल छोटे बड़े असंख्यों सरों, तालाबों और अपेक्षा कृत नीची दलदली भूमि के रुप में बचा रहता था। इस जल में क्षार या लवण की मात्रा का प्रतिशत हर वर्ष बढ़ जाता था।[34] इसी को क्षीर या लवण सागर कहा गया है। शिवालिक या मैनाक के दक्षिण में कालेसर से कुछ दूर राक्षी या मस्करा के तट पर अपेक्षा कृत कुछ उच्च भूमि पर राक्षसों की प्राथमिक बस्ती लंका बसाई गई थी.. मेरे विचार से लंका का स्थान-सुघ के दक्षिण या दक्षिणपूर्व में होना चाहिऐ। लवण सागर क्षेत्र के निवासी का द्योतक नाम लवण या लवणासुर था। इसी लवण का अपभंश शब्द रावण है।

सगर यदि विष्णु या सूर्य के वाहन गरुड़ से साम्य रखता है तो गरुड़ का बड़ा भाई अरुण जो कि सूर्य का रथ वाहक बना.. सूर्य वंशी कहे गये अनरण्य से साम्य रखता है । गरुड़ जनों का मूलस्थान गंगा-यमुना का पर्वतीय दोआबा गढ़वाल प्रतीत होता है। गढ़वाल शब्द के मूल में सम्भवत गरुड़वाल शब्द हो। ऋक्षवान या ऋक्ष पर्वत (शिवालिक) के ऋक्षों के साथ भी सगर जनों/ शिग्रुओं का सम्बन्ध था, तभी तो अपने 60000 भाईयों के भस्म हो जाने के बाद असमंजस ऋक्षवान पर्वत पर ऋक्षों में भाग गया था।[35] मतस्य0 में असमंजस के पुत्र का नाम तमौजा है। वहीं यमुना नदी की एक ऊपरी सहायक नदी का नाम टौंस और ऋक्ष पर्वत से निकल कर गंगा नदी में मिलने वाली एक नदी का नाम तमसा है।[36] वह स्थान जहाँ 60000 शिग्रु-सागरेयों (की बस्तियाँ) को कपिल जनों ने जला डाला था। रूड़की के पूर्व और हरिद्वार के दक्षिण में रहा होगा। रुड़की शब्द गरुड़की के सम प्रतीत होता है। कश्यप की स्त्री ताम्रा....क्रोंची, भाषी, नी, श्येशुकी और घृतराष्ट्री की माता बनी[37] हाथी बड़कला पहाड़ों में ताम्रा नाम का एक दर्रा है....

तेज वर्षा और भूस्खलन के कारण करौंधी नदी के साथ बह आते पत्थरों और मलवे से यमुना का बहाव मार्ग अवरूद्ध हो जाता था और यमुना का रुका हुआ जल कालेसर/ कैलास के लिए खतरा बन जाता था..... शिवपुत्र कार्तिकेय (सम्भवत: कृतु नदी क्षेत्र के कृतु जन) ने क्रौंच विदीर्ण किया था। तम/तामिश्र लौह पृष्ठ नरक से सम्बन्धित नाम है।[38] अर्थात तम, तामिश्र, ताम्रा का घटना क्रम लोहित्या नदी से भी जुड़ता है। ताम्रा कहीं पुलह तो कहीं दक्ष की पुत्री का नाम है। दक्ष हरिद्वार-कनखल के निवासी थे तो पुलह-पुलस्त्य जन पलंकषा/ पलक्षा/ सरस्वती और राक्षी नदी क्षेत्र के। ताम्रवर्ण सिंहल द्वीप का नाम था। अलबेरुनी ने सिंहल को सिंथल और सारान कहा है... यह सहारनपुर या श्रूघन का मूल प्रतीत होता है। ताम्रवर्णा मलयपर्वत से निकलने वाली नदी का नाम भी है प्रतीत होता है कि ताम्रवर्णा नदी असान थी और तमसा सोलानी या फिर देहरादून घाटी की नदी थी। ताम्रद्वीप यमुना-हिंड़न का दोआबा क्षेत्र था।

सूर्यप्रभ, सूर्यपर्वत और सूर्य का एक और नाम अरुण भी है। अरुण और नाम्नी के दो पुत्र जटायु और सम्पाति[39] को आरूण्य कहा जा सकता है। जटायु और अनरण्य में एक समानता है कि दोनों का वध राक्षस रावणने किया था। पौराणिक अनरण्य पुरुकत्स का वंशज है और वेदों में पुरुकुत्स सरस्वती नदी प्रदेश का पुरुजन है[40] अनरण्य ने सरस्वती नदी के दक्षिण में नवीन राज्य की स्थापना की होगी, इस प्रकार वह रक्षों का निकट क्षेत्री बन गया, ऐसे में रावण द्वारा सीता सरस्वती नदी को रक्षों के राज्य में मोड़ ले जाने का विरोध अनरण्य ने किया होगा और फिर आवश्यक संघर्ष में अनरण्य पराजित होकर मारा गया होगा।

अरुण पर्वत कैलाश के दूसरी ओर था और मेरु पर्वत के चारों और इलावर्त वर्ष के भी पूर्व में अरुणोद सागर था। अरूणोदा नदी मदराचल पर्वत की तलहटी से गुजरती हुई इलावर्त वर्ष के पूर्वी भाग को सींचती थी। अरुण पर्वत की तलहटी में शैलोदा झील शैलोदा नदी का उद्गम थी। अरुणा का वर्णन पलक्ष द्वीप की एक नदी के रूप में भी है। [41] दूसरी ओर कहा गया है कि अरुणाचल की भूमि पर गौतम ऋषि का निवास था, वहीं पार्वती ने तप किया था और दुर्गा ने शुभ निशुम्भ और महिषासुर को मारा था[42] यदि इन सभी तथ्यों का मिलान करें, तो पार्वती हिमवान और मैना की पुत्री थी। मैनाक शिवालिक पर्वत और कैलाश कालसर है। महिषासुर वैदिक सृज्जय जनों का पौराणिक प्रतिरूप है, सृज्जय का अर्थ काला भेंसा अर्थात महिष, सुदास पैजवन का पौराणिक कथान्तर सहत्रबाहु अर्जन भी है तो एक हैहय महिषमत भी था।

अनरण्य के पुत्र त्रय्यारुण के पौत्र हरिश्चन्द्र द्वारा देवता वरुण के लिए किये जा रहे नरमेघ यज्ञ से शुनशैप को सुदास पैजवन के दूसरे गुरु विश्वामित्र ने बलि होने से बचाया था[43] अपने समर्थक की बलि के स्थान पर विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्र शक्ति की बली दे दी, वशिष्ठ ने विश्वामित्र के समर्थक सत्य व्रत को चाँडाल बनाया था, बदले में विश्वामित्र ने वशिष्ठ के समर्थक हरिश्चन्द्र को चाँडाल का भी दास बना दिया। ऐसा लगता है कि सत्यव्रत का साथ देने के अपराध में सत्यव्रत के साथ-साथ अजीग्रत ऋषि के तीनों पुत्रों को भी चाँडाल बनाया गया था। यह भी हो सकता है कि शुनशैप को बलि देने का कारण उन अंगिरा वंशिओं को नीचा दिखाना रहा हो जिन्होंने सुदास पैजवन के अश्वमेघ यज्ञ के याजक या होता की भूमिका निभा कर उसका साथ दिया था[45] अजीमृत अंगिरा वशी ब्राहमण था[46] हरिश्चन्द्र के विधवंस से जान बचा कर वशिष्ठ दोआबे में काली सिंध में सम्वर्ण के पास गए जो सुदास पैजवन से पराजित होकर निर्वासित जीवन बिता रहा था, पुराना वैर

उघाड़कर वशिष्ठ सम्वर्ण को सुदास पर चढ़ा लाये। सुदास पैजवन पराजित हुआ और मारा गया।[47] किन्तु हरिश्चन्द्र अपना राज्य वापिस पा गया हो, कहा नहीं जा सकता क्यों कि हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व ने कुछ दक्षिण में हट कर रोहतक की स्थापना की। यदि वे किसी भी प्रकार अपना राज्य पा लेते तो नवीन राज्य की स्थापना क्यों करते।

सगर-शिग्रु जनः गरुड टोटेमिक जन थे तो अनरण्य वंशी हरिश्चन्द्र रोहित आदि अरुण जनः किन्तु ये दोनों ही शाखायें अरिष्टनेमि/तार्क्ष्य भी थी। सगर शिग्रु जन श्रूघन से पूर्व में फैले और अरूणजन क्रौंच द्वीप[48] से रोहतक, लौहारू तक; क्यों कि रोहित के पौत्र और हरीत के पुत्र चम्प ने चम्पा बसाई थी...... हरीत और रोहित में साम्य है और हरीत शब्द. ..... हरिश्चन्द्र से मिलता जुलता है न केवल ब्रहमा0 में हरितगण के दस देवों को तार कहा गया है[49] बल्कि हरिश्चन्द्र की स्त्री का नाम भी तारा है; तारा और तार नाम उन्हें तार्क्ष्यों से मिलते हैं।

उपर्युक्त अरूणाचल आज के सन्दर्भ में पूर्वी भारत का अरूणाचल प्रदेश नहीं था और न ही लोहित्या....... आज के असम की नदी था। अरूण अनरण्य जनों का प्रदेश अरूणाचल था.. अरूणोदा और लोहित्या उसी नदी के क्षेत्रीय नाम थे जो कभी गोहाना, रोहतक होती हुई भद्रा, नोहर की ओर चली जाती थी। विश्वकर्मा मय ने विनता[50] के पुत्र गरूड़ों के लिए लोहित्या सागर में भवन का निर्माण किया था[51] लोहित्य सागर और उससे निकलने वाली नदी लोहित्य आज के यमुना नदी प्रदेश में थे। ऋ 7.18.18.-19 में अज, शिग्रु और यक्ष यमुनानदी के तटों पर थे। यक्षों के अधिपति कुबेर की सवारी पद्यम हाथी का निवास लोहित्य और सिन्धु के बीच यमवन था।[52] यहाँ सिन्धु काली सिंध या हिंडन नदी है और यमवन यमुना नदी क्षेत्र का वन था, तब संम्भवतः कृष्णी या फिर काथा नदी क्रतु नदी थी। क्रतु और चैत्ररथी में हलका सा साम्य दिखाई देता है.... क्रतुरथी > चैत्ररथी! सप्तऋषि या सप्त ऋक्ष-वशिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, कृतु, पुलह, पौलस्त्य और मरीचि..चित्रशिखंडित कहे गये हैं[53].

नन्दन; चैत्ररथ आदि वन चैत्ररथी के क्षेत्र में थे और नन्दन वन में कृतस्थली अपसरा (अन्य नाम पंचचूड़ा) गन्धर्व वेशधारी वसुरूचि यक्ष को मिली थी।[54] वसुरूचि और कृतस्थली का पुत्र संसिद्धकरण या रजतनाभ हुआ। रजतनाभ यक्ष और भद्रामणिवरा के दो पुत्र- मणिधर और मणिभद्र थे। इन में से मणिभद्र जो चैत्ररथ पर्वत का निवासी था के 24 यक्ष और 30 गृहयक पुत्र हुये। दूसरा पुत्र मणिधर लोहित्य पर्वत पर स्वर्णशिखर का निवासी था[55] भद्रा मणिवरा हिरण्यकशिपु की पौत्री और अनुहलाद की पुत्री थी। इसके भाई का नाम महिष था और बहन सिनीवानी की सन्तानें हलाहल गण कहलाये। उपर्युक्त सभी विवरण अपना भौगोलिक आधार स्वयं वर्णित कर रहे हैं- भद्रा तो हलाद जनों (हिरण्यकशिपु के पुत्र प्रहलाद, सन्हलाद आदि) की हलादिनी नदी भी थी और हलाद/हलाहल= गर या विष! (भद्रा गरुड़ की एक स्त्री का भी नाम था और भद्रसोमा गंगा नदी का एक नाम, किन्तु इस विषय पर आगे वर्णन किया जायेगा) और सिनीवाली मारकण्डेय पुराण में एक नदी का नाम भी है। अंगिरा की चार पुत्रियाँ थी- सिनीवाली, कूहू, राका और अनुमति। सिनीवाली द्याता की स्त्री और दर्श की माता थी। सिनीवाली का एक और नाम दृश्यादृश्या है..... अर्थात चतुर्दशी युक्त अमावस्या। जिसमें अत्यंत क्षीण होने के कारण चन्द्रकला कभी दिखाई देती है और कभी नहीं।[56] सम्भवतः सिनीवाली दृषद्वती नदी रही हो और इसमें जल के बहाव का स्वरूप घटता, बढ़ता..... समाप्त होकर पुनः प्रकट होता रहा हो।

चैत्ररथ पर्वत निवासी मणिभद्र के पुत्र यक्ष और गुहयक थे। रोहतक लोहित्या का अपभ्रंश

है और यक्ष यमुना नदी प्रदेश के निवासी थे (ऋ0 7.18.18-19) तो गुहयकों का क्षेत्र गोहाना होना चाहिए। लोहित्यक या रोहतक ही गुहयकों का निवास स्थान कहा गया हाटक या लोहाटक था। अर्जुन ने इन हाटकों को समझा-बुझाकर अपने अधीन किया था। हिरण्याक्ष को हाटक लोचन कहा गया है।[57] अर्थ हालांकि स्वर्णिम, सुनहरा, हिरण्यमय होता है। मय के पुत्र बल के जम्हाई लेने से पैदा हुई उसकी तीन पुत्रियाँ- स्वरिणी, कामिनी और पुंश्चली आने-जाने वालों को हाटक रस पिलाती थीं।[58] मय जन जम्भ थे और मैनाक (शिवालिक पर्वत) मयों- मेनाकाओं का क्षेत्र था। इसके दक्षिण में अत्याधिक लवणता के कारण दर्भ या दूभ घास से विहीन विदर्भ था..... विदर्भ की राजधानी कुण्डिनपुर सम्भवतः कुण्ड़नियों/कुण्डों/कुण्ड़तियों का कुण्डल अथवा कुन्त या कुन्तल था- अर्थात कुणाल-करनाल का क्षेत्र।

पति के जीवित रहते किसी दूसरे पुरुष से उत्पन्न संतानें कुण्ड कहलाती थीं और अपसराएं- वनों पर आश्रित नागों की; वनों से संग्रहित की गई वस्तुओं का वैदिकजनों की बस्तियों में विक्रय करने वाले पणिओं, बस्ती-बस्ती घूमकर गायन वादन से वैदिक जनों का मनोरंजन करने वाले गन्धर्वों की स्त्रियाँ, पुत्रियाँ या बहनें आदि ही होती थीं।[59] वे वस्त्र, अन्न, औजार, बर्तन आदि आवश्यकता की किसी भी वस्तु के लिए वैदिक बस्ती के पुरुषों से सम्बंध बना लेती थीं; क्योंकि बस्तियों वाले जन उत्पादकता से जुड़े होते थे और नाग, गन्धर्व, पणि आदि सभी जन मातृसत्तात्मक समाज वाले, यायावर या फिर अधिक से अधिक पशुपालक थे। आर्यों का पितृसत्तात्मक समाज अप्सराओं से सम्बंध को भले ही अनैतिक मानकर विशेष गोपनीयता बरतता रहा हो, किन्तु आसान ज़ीवनयापन और बस्ती वालों से आवश्यकता की वस्तुऐं प्राप्त करने का अप्सराओं के पास यह एक आसान तरीका था; जीवनयापन के लिए अपनाए गए इस प्रकार के कर्म को गन्धर्व, पणि, नाग पुरुषों ने अनैतिक व बुरा न मानकर एक प्रथा के तौर पर अपना लिया था। बस्ती वाले पुरुष के साथ अप्सरा चाहे कितने समय भी रहे; वह अपने अनार्य पति; भाई या पिता के पास अपने परिवार में अवश्य लौटती थीं। वे अपने से उत्पन्न दूसरे पुरुष की संतानों को उस पुरुष के पास अथवा बस्ती के समीप छोड़ जाती थीं.... अर्थात उन्हें त्याग देती थीं। कुछ अप्सराओं या कुण्डतियों ने दूसरे पुरुषों से उत्पन्न संतानों को मोहवश अपने पास रखकर पाला, उन्हें अपने पणि पति का नाम दिया। ऐसी संतानें पणिडु>पाँडव कहलाई; वह समय वैदिकजनों की बस्तियों की सघनता वाला था। वे पणिडु>पाँडु पुत्र पाँडव वैदिकजनों की बस्तियों के समीप उनसे निकटता का सम्बंध रखते हुए पले-बढ़े। बस्ती वालों की देखा-देखी उन्होंने वस्त्र, बर्तन, अस्त्र-शस्त्र, युद्धकला, रीति-रिवाज, रहन-सहन, यज्ञ-पूजा पद्यति, देवी-देवता, पठन-पाठन; भाषा, सभी कुछ वैदिकजनों जैसा ही अपनाया। इस प्रकार जन्म लेने वाली सन्तानें कुंड और गोल इत्यादि दोनों ही समाजों के लिए बड़ी समस्या तो थे, साथ ही उनके जीवनयापन का भी प्रश्न था। कूर्म पुराण के अनुसार यादव सात्वत ने इनके लिए आश्रयस्थल बनवाये।[60]

अपने पणि समाज की मातृसत्तात्मक परिपाटी त्यागकर उन्होंने पितृसत्तात्मक परिपाटी अपनाने के प्रयास में एक तीसरे अजीब प्रकार के समाज का निर्माण कर लिया जिसमें दोनों ही समाज के सभी तत्व विद्यमान रहे। वैदिक समाज जैसा बनने, उनमें घुलने के लिए पिता के नाम की आवश्यकता थी ऐसे में अपनी अवैधता को वैध बनाने के लिए एक मिथक गढ़ा गया कि वे वैदिक देवताओं इन्द्र, मित्र, वरूण, अश्विनी कुमार, सूर्य, वायु, धर्म आदि

की संतानें हैं, देवता धरती पर आते हैं और नश्वर स्त्रियों से संतानें उत्पन्न करते हैं और चले जाते हैं। धर्म भीरू समाज में इस मिथक को धर्म और विश्वास का सहारा मिला; इस पर विश्वास न करना अधर्मी और नास्तिक होने का परिचायक बनता। नागों की दौहित्री. ....प्रथा ऐसी देवसंतानों को जन्म देने वाली कुण्ड़ती बनी। वे देवसन्तानें दोआबे के धृतराष्ट्र नागों द्वारा नकार दी गई क्योंकि दोआबे का नाग समाज ऐसी मिली-जुली तत्वों वाली संस्कृति-सभ्यता के लिए कतई तैयार नहीं था....वे अभी तक औरसता को प्राथमिकता दे रहे थे और देवसन्तानें अपसरा पुत्र थीं।

कुण्डिन की रोहिणी नाम में लवण और लोहित्य दोनों शब्दों की ध्वनि है। लोहिणी का एक अर्थ गुड है। अर्थात रोहतक के आसपास की फसल ईख या गन्ने का एक उत्पाद है। अब हाटक रस.....गन्ने का रस था या उससे बनी शराब......या यही वैदिक जनों का सोम हो। आम का रस सोम नहीं हो सकता, क्योंकि कहा गया कि सोम का रस कूटकर निकाला जाता था; कूटकर रस निकालना, गन्ने को पेरने के आविस्कार से पहले का तरीका रहा होगा।

भद्रा, भद्रसोमा और भद्राश्व वर्ष

हिरण्यकशिपु के चार पुत्रों में से एक अनुहलाद की पुत्री भद्रा, रजतनाभ यक्ष की स्त्री थी।[61] प्रतीत होता है कि भद्रा उस गंगा नदी की सहायक थी[62] जिसका एक नाम भद्रसोमा था और कुरुक्षेत्र में पश्चिम की ओर बहने वाली नदी थी। एक समय हरियाणा भूमि पर बहने वाली भद्रा, भद्रसोमा या हलादिनी नदियों के क्षेत्र के निवासियों के द्योतक नाम भद्र, भद्राश्व, प्रहलाद, हलाद, सन्हलाद आदि थे।

भद्रा या भद्राश्व का सम भेद शब्द है। विष्णु पुराण में ऋक्ष का पुत्र भद्राश्व भागवत पुराण में भमर्याश्व है, वायुपुराण में उसका नाम भेद है। हर्याश्व, भमर्याश्व, भेद या भद्राश्व के पाँच पुत्र-मुदगल, वृहदिशुव, काम्पिल्य, जयीनर और.....कपिल (कहीं-क़हीं किन्तु मुख्यतः सृज्जय) पांचालवंश के संस्थापक थे।[63] अर्थात पांचाल वंश के संस्थापक ऋक्ष पर्वत मूल के जन थे। ऋक्ष पर्वत के पार, उत्तर में माल्यवान पर्वत आज की मसूरी पर्वतमाला थी। पुराणों में कहा गया है कि माल्यवान के अधिपति भद्राश्व के घृताची अप्सरा से भद्रा आदि दस पुत्रियाँ हुईं...... वे सभी अत्रि ऋषि की स्त्रियाँ हुईं।[64] भाग नागों को कहते हैं, नागों की नगरी भोगवती; भोगवती सरस्वती नदी का एक नाम है। पुराणों के भोजक वृष्णिजन जैन श्रोतों में भोगवन्हि हैं।[65] भारत जिस भागरत या भोगरत शब्द का अपभ्रंश है, हो सकता है उसका सम्बंध भद्र, भद्रा, भद्राश्व शब्द से भी हो। (भद्रा के सूखने के विषय में आगे वर्णित है..)

मलय पर्वत का एक नाम रजतकूट था।[66] यहीं के निवासियों को रजतनाभ कहा गया जो मैदानों में उतरे और लोहित्या/हलादिनी के सहारे-सहारे चलकर इस प्रदेश के हिरण्य-हलादजनों के साथ बसकर उन पर प्रभावी हो गए, इसी को कहा गया है कि अनुहलाद की पुत्री भद्रा मणिवरा (माथे पर मणि जैसा चमकीला पत्थर धारण करने वाले नागजन..... जैसे अश्वत्थामा) रजतनाभ यक्ष की स्त्री बनी। मलय-माल्यवान पर्वत के रजत यक्षों की शाखाएें- चैत्ररथी नदी क्षेत्र और लोहित्या नदी क्षेत्र के स्वर्ण शिखर (स्वर्णप्रस्थ>सोनीपत) तक फैलीं, क्योंकि रजतनाभ और भद्रामणिवरा (अनुहलाद पुत्री) के पुत्र मणिभद्र चैत्ररथ पर्वत के और मणिधर लोहित्य पर्वत पर स्वर्ण शिखर के निवासी कहे गए हैं। चैत्ररथ यक्षों की एक शाखा 30 गुहयकों की थी जो गोहाना तक थी। मार्जारों-वानरों-मतस्यों का कितना सम्बंध यक्षों से था इसका हलका सा संकेत विष्णु0 से लग सकता है जिसमें कहा गया है महेन्द्र पर्वत के शासक गुहय थे। मूल महेन्द्र पर्वत कालेसर के उत्तर में लालधाँग पर्वतमाला

है। परशुराम दो बार बारह-बारह वर्षों के लिए तप करने महेन्द्र पर्वत पर गए थे। लालधाँग के पूर्व में यमुना पार करौंधी घाटी क्रौंचरन्ध्र था जो तेज वर्षा, भूस्खलन से यमुना नदी का प्रवाह अवरुद्ध करती थी ऐसे में रुका हुआ जल महेन्द्र पर्वत और कैलास कालेसर के लिए खतरा बन जाता था.... इस खतरे से निपटने के लिए क्रौंचरन्ध/करांदी घाटी को साफ करना, खोलना या तोड़ना आवश्यक हो जाता था.... एक बार परशुराम और दूसरी बार शिव पुत्र कार्तिकेय ने क्रौचरन्ध्र विद्रीर्ण किया था। यह क्रौंचरन्ध्र जब भी बन्द होता तो कालेसर शाखा के किनारे बसी बस्तियां उजड़ती और जब तोड़ा जाता तो कारा-कालिन्दी शाखा का अत्यंत तीव्र और विशाल जलप्रवाह सहारनपुर और इसके दक्षिण में, हथनी कुण्ड, सुघ-श्रुघन के प्रदेश को तबाह करता। कुल मिलाकर कालेसर के दक्षिण में बसे अज, मतस्य, यक्ष, शिग्रु-मार्जार आदि जनों का जीवन और भविष्य कैलाश-कालेसर के शैव्यों की इच्छा पर टिका था.... इसलिऐ शैव्यों/शिव को संहार का देवता माना गया है। परसुराम ने क्रौंचरन्ध विद्रीर्ण किया था.... इसलिए वे भी शिव या रुद्र के अंश हैं।

वर्षाकाल के उपरान्त जब सागर (शिग्रु-सागरेयजनों का सोगरन>सहारनपुर) क्षेत्र का अतिरिक्त जल उतरा तो सीता (नदी) की खोज में चले हनुमान सागर क्षेत्र को पार करने के लिए महेन्द्र पर्वत (लालधाग) से दक्षिण में चले होंगे। वे पहली बार राम से मलयपर्वत या रजतकूट पर्वत पर मिले थे। मलय पर्वत और महेन्द्र पर्वत के यक्ष-गुहयक-मार्जार जनों ने ही चैत्ररथी-चितांग नदी क्षेत्र में अपने माजरे पहले-पहले बसाये होंगे।[67] चैत्ररथी नदी के मार्ग बदलकर लोहित्या नदी के रूप में बहने लगने के कारण ये गुहयक लोहित्या नदी प्रदेश में गोहाना के आसपास आ गए; और जब लोहित्या नदी भी मार्ग बदलकर यमुना नदी के रूप में बहने लगी तो गुहयक (यक्ष/मतस्य/मार्जार जन) नारनौल-महेन्द्रगढ़ और जयपुर-अलवर के बीच वैराट क्षेत्र में आ बसे। नरवाना, नाहड़, नारनौल उस नल से सम्बंधित प्रतीत होता है जो निषादों, गुहयकों का अधिपति था।

सहारनपुर जिले की मस्कारा नदी, मतस्य जनों की मतस्यकारा या मच्छकारा और मकर टोटेमिक जनों की मकराक्षी हो सकती है; मकर, मतस्य, हस्ती, व्याघ्र आदि यक्ष भी थे और वनों के निवासी वनरा भी जिसे बाद के साहित्य में वानर, हरि, कपि भी कहा गया। ऐसा प्रतीत होता है अर्ध सभ्य वह मानव नाम से नहीं अपितु अपनाए गए टोटेम से जाना जाता था क्योंकि केसरी वानर था किन्तु उसका टोटेम व्याघ्र था उसकी स्त्री आद्रि अजा या पिशाचिनी थी इसे अजगन्धा/सत्यवती अर्थात मतस्या कहा गया है और अज अर्थात मतस्य हुआ जो पिशाचों का राजा बना। दूसरी स्त्री अंजना भले ही वानर कुंजर की पुत्री कही गई, वह हस्ती नारी भी थी और मतस्या भी क्योंकि उसका पुत्र हनुमान किसी मतस्या स्त्री से मकरध्वज नामक पुत्र का पिता बनाता है। अंजना का पूर्व जन्म (पिछले जीवन) का नाम पुंज्जकस्थला था और यजुर्वेद संहिता ग्रंथों में पुंज्जिठ का अर्थ प्रत्यक्षत : मछुआ या मछुआरा है[68] तो पुंज्जक स्थला, मछुआरिन अथवा मतस्य कन्या हुई पितृसत्तात्मक समाज में विवाह के उपरान्त स्त्री की जाति बदल जाती है। शाप वरदान आदि की जिदें छोड़ दें तो पहले अंजना पुंज्जकस्थला अर्थात मतस्य गोत्र की थी, केसरी से विवाह करके वानरी बन गई। किन्तु आद्रि और अंजना दोनों ही अप्सरा कर्म करतीं थीं, अंजना के पवन देव से हनुमान हुए और आद्रि के उपरिचरवसु से आद्रि पिशाच और अजगन्धा सत्यवती अर्थात धृतराष्ट्र की दादी सत्यवती हनुमान की बहन थी !

आद्रि और अज जनों में कोई भेद नहीं, वे पिशाच थे तभी कहा गया है कि आद्रि अप्सरा

बिल्ली के मुख वाली पिशाचिनी हो गई थी। आद्रि का पुत्र अजगन्ध और पुत्री अजगन्धा, इस हिसाब से आद्रि ही अज; की माता अजा या अजना या अंजना होती है अर्थात आद्रि या अंजना एक ही बात है वही उपरिचर/भीम/पवन की स्त्री गिरिका (आद्रिका) कोलाहल्या है। हनुमान के विषय में कहा जाता है कि अग्नि देव का दिया गया प्रसाद जिसे दशरथ की तीनों रानियाँ आपस में बाँट रही थी का थोड़ा सा भाग नीचे गिर गया; जिसे एक चील उठाकर ले गई। चील से यह यज्ञ प्रशाद पुत्र के लिए तपस्या करती अंजना की गोद में जा गिरा; जिसे अंजना ने खाया तो हनुमान हुए। इस प्रकार हनुमान राम के भाई हुए। हनुमान का जन्म चैत्र पूर्णिमा राम के जन्म (चैत्र नवमी) से सात दिन बाद माना जाता है। मिथक चाहे जैसा भी हो किन्तु गिरिका कोलाहल्या का साम्य कौशल्या से प्रतीत होता है यदि हनुमान अजगन्ध थे और आद्रि पुत्र थे तो राम के दादा का नाम अज और एक दूर के पूर्वज का नाम आद्रि था।

ऋग्वेद के अनुसार सुदास पैजवन ने यक्षों को यमुना तट पर पराजित किया था। रही-सही कसर यक्षों के सजातीय बन्धु रक्षों ने पूरी कर दी। उन्होंने यक्ष पुरुषों का लगभग सफाया कर दिया। बच गई तो क़ेवल यक्ष स्त्रियाँ-अपमानित, निष्कासित; उन्होंने दूसरी जातियों के पुरुषों के संसर्ग से सन्तानें उत्पन्न कीं, जो राक्षस विरोधी थीं रामायण में कहा गया है कि ब्रह्म ने देवताओं को यक्ष स्त्रियों से संतान उत्पन्न करने का आदेश दिया[69] तब वानर हुए। अर्थात या तो वानर यक्ष ही थे या फिर यक्ष स्त्रियाँ जो कि आसान जीवनयापन के लिए वैदिक बस्तियों में अप्सरा कर्म करती थीं की कुण्ड सन्तानें वानर कहलाये।

महेन्द्रगढ़ शब्द मछेन्द्र या मतस्य का अपभ्रंश हो सकता है या फिर मणि से इसका सम्बंध हो। अनेक यक्षों के नाम मणि से सम्बंधित है- मणिवर, मणिमन्त, मणिवरा, मणिदत्ता, मणिकरा, मणिधर, मणिभद्र। अपने माथे पर किसी पट्टी की सहायता से कोई चमकीला पत्थर रत्न या मणि धारण करने वाले नाग या यक्ष के लिए यह एक पहचान होता होगा। मणि के खो जाने, छिन जाने से नष्ट हुई पहचान उसे मृतप्राय करती थी, मणि उसके लिए सम्मान की बात थी। अश्वत्थामा निस्संदेह एक नाग था वह नागसाहव्यं/हस्तिनापुर के कौरव्यवंशी धृतराष्ट्र नाग की ओर लड़ा भी था। पराजित होने पर शत्रु के अस्त्र-शस्त्र छीन लेने की भाँति उसकी मणि भी छीन ली गई थी...। मणि नाग की अन्तिम पूंजी, सम्मान व पहचान थी.. द्रोण का पुत्र अश्त्थामा किसी द्रोणी (यमुनानदी) के निवासी अश्वतर नाग के सम प्रतीत होता है। अश्वतर नाग कम्बल का भाई था। वृहषपति का पौत्र और भारद्वाज का पुत्र द्रोण एक अप्सरा से जन्मा था।

मणिधर शब्द का अपभ्रंश सम्भ्वत: महिधर है, महिधर अर्थात पृथ्वी को धारण करने वाला..... शेषनाग। इसी प्रकार मणिधर का अपभ्रंश महेन्द्र भी प्रतीत होता है। इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि पहले पृथ्वी नागों की थी.... यह बिल्कुल वैसे ही है जैसे पृथ्वी के टिके रहने के मिथक में कच्छप, हाथी आदि का उल्लेख है। समय-2 पर मिथक बनते रहे, जुड़ते रहे, बदलते रहे.... कृष्ण के काल में मिथक बना होगा कि पृथ्वी गाय के सींगों पर टिकी है.... तब प्रत्येक जन, समुदाय, समाज जाति उसकी समूची अर्थव्यवस्था गौपालन पर निर्भर थी। अगर आज के मशीनी युग में इस प्रकार का कोई मिथक बनाना हो तो कहना ठीक रहेगा कि पृथ्वी मशीन पर टिकी है और मशीन कम्प्यूटर पर।

निषाद नल वीरसेन का पुत्र था। वृष्णि का अर्थ धर्मभ्रष्ट और पाखंडी होता है।[70] निषाद सिर पर पंख धारण करते थे। आभाष होता है कि यदुवंशी वृष्णि ही वृषिन (म्यूर) टोटेमिक

निषाद जन थे। वाल्मिकीय रामायण के अनुसार पिता ययाति से शापित होकर यदु क्रौंच द्वीप चला गया था, जहाँ उसने अनेकों यातुधान पुत्र उत्पन्न किए थे।[71] इसका अर्थ यह है कि यातुधान यादव (यदुवंशी) है या यति, ययाति, यदुजनों का सम्बंध यातुधानों से है। हेती प्रहेती गन्धर्व यातुधान हैं और वे ही है जो म्यूर और मुर्गा रूप (टोटेम धारण किए) में वैद्युत पर्वत क्षेत्र के वैभ्राज वन से मारकण्डा नदी क्षेत्र के (वैदिक जनों) मारकण्डेयों के आश्रमों और बस्तियों की ओर आए। हेती-प्रहेती हिरण्याक्ष के वंशज है। अन्धक जहाँ एक तरफ हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु का भाई वर्णित है वहीं एक अन्धक, यदुवंशी भी हैं। वह वृष्णि, देववृद्ध और भजमान का भाई है। अगर हिरण्याक्ष वंशज हेती-प्रहेती मारकण्डा नदी क्षेत्र में आए तो सम्भावना बनती है कि अन्धक जन भी इसी क्षेत्र में या इससे आगे सरस्वती दृष्द्वती नदी क्षेत्र के निवासियों का द्योतक नाम है जैसे सारस्वत, गांगेय, सैन्धव आदि। तथ्य है कि वृद्धावस्था में दुष्यंत अन्धे हो गए थे, और भरत का राज्यभिषेक अन्धे ऋषि दीर्घतमस ने किया था। यहाँ किसी को नितान्त अन्धा मानना भ्रमवश है। यह वह जाति थी जो यायावर थी कृषक नहीं; वनों पर आश्रित थी.... अन्धों की भाँति कहीं भी चल देती थी। वे दृषद्वती नदी प्रदेश के दृष्द्वन्तों (दुष्यंतों) पर छा गए किन्तु बाद में वसुओं और मैनाक पर्वत की मेनकाओं की सन्तति शकुन्तों/शकुन्तलों/कुन्तलों या शकुन्त/युगन्ध (र) जनों के वंशजों का मेल दृषद्वन्तों से हुआ तो जो नई जाति भरत अस्तित्व में आई...अन्धक जनों को उनकी प्रभुसत्ता स्वीकार करनी पड़ी। दुष्यंत-शकुन्ता-भरत की व्यक्तिवाचक कथा सांकेतिक है। मेरा अनुमान यह भी है कि मैनाक पर्वत (शिवालिक) के मैनाक या मय जन जनों की संतति शकुन्त या युगन्धर (> युकन्त) जन ही वे यातुधान थे जो मारकण्डा नदी क्षेत्र में आए. .... इसके भी संकेत हैं यादवों के शिनि सात्यकि से सर्म्बधित वंश में यातुधान और युगन्धर दोनों ही नाम हैं।

अर्थात समूचा घटनाक्रम हरियाणा के उत्तरी या मध्य भाग में घटा था।

यादव देववृद्ध का पुत्र वभ्रू जिस पर्णाशा नदी से सम्बन्धित बताया गया है[72] वह पर्णाशा. ..... पानीपत होकर बहने वाली पणिओं की पर्णाशा नदी थी। वैदिक पणि वृभु और पौराणिक यादव वभ्रू में कोई भेद नहीं है। नदी की अनियमितता जैसी प्राकृतिक विपदा या अन्य किसी राजनैतिक कारण से ये पर्णाशा नदी के पणि वृभ्रू या यादव वभ्रू जन दक्षिण पूर्व राजस्थान की बनास नदी क्षेत्र में जा बसे होंगे। पानीपत (पणिप्रस्थ) में क्षेत्रीय नाम वाली पर्णाशा नदी ही गोहना से रोहतक आती थी.. जहाँ व रोहित जनों की लोहित्य नदी थी। शायद इसीलिये रामायण में शैलूष, ग्रामणी, शुभ और शिग्रु के साथ-साथ वभ्रू भी रोहित गन्धर्वो में गिनाये गये हैं।[73]

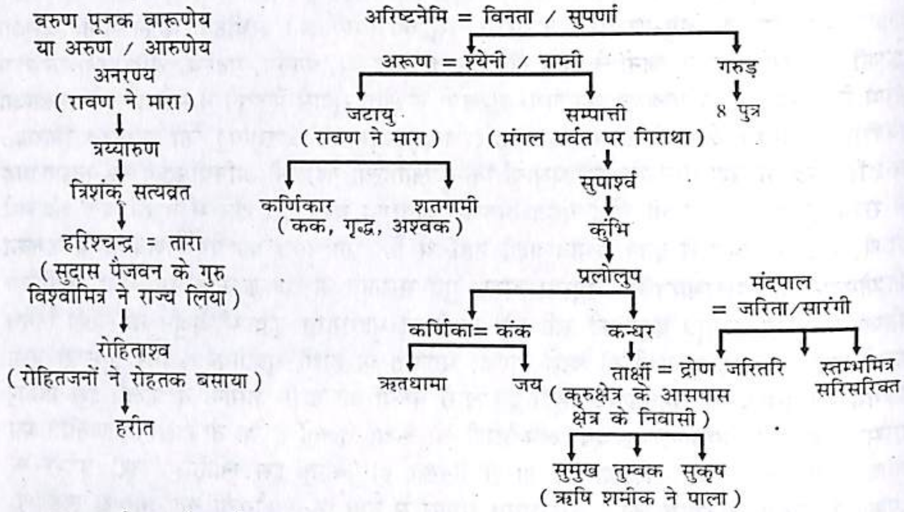
वैदिक ''सृज्जय'' शब्द पैराणिक ''हिरण्य'' शब्द का आधार है। हिरण्य या सृज्जय जन ही स्वर्ण प्रस्थ/स्वर्णदीप या हिरण्याणा (हरियाणा) के निवासी थे। सृज्जय जन ब्राहमण विरोधी थे उनके वैदिक रीती-रिवाज प्रथा-परम्पराओं देवतन्त्र के विरोधी थे...... वे ही यादव है। म्यूर टोटेमिक कृष्ण इन्द्र विरोधी है। तारक का पिता पौराणिक बज्रांग; यदुवंशी भीम सात्सव का द्योतक या सम है। भीम अर्थात शक्तिशाली या बली; इस की स्त्री कौशल्या का साम्य वसु की स्त्री गिरिका कौलाहल्या से बैठता है वह गिरिराज कोलाहल की पुत्री थी। ऋ 10.29 में क्रोस्ट्र का अर्थ गीदड़ और अथर्ववेद 11.3.2 में शव भक्षक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। यादवों की प्रथम दो शाखाऐं सहस्त्रजित और क्रोष्ट वर्णित हैं। यदु शब्द यति, ययाति, यातुधान से साम्य रखता है। उपरिचर वसु की राजधानी शुक्तिमती (< शक्तिमती < शक्तिशाली =

भीम) और चैद्य का अर्थ ''चेदी का'' यह चैत्री, चैत्ररथी चितांग क्षेत्र का द्योतक अपभ्रंश शब्द है ऐसे में भीम सात्वत अर्थात उपरिचरवसु की पुत्री सात्वती हुईः जिसे महाभारत में सत्यवती कहा गया है किन्तु दूसरी ओर भीम सात्वत का पुत्र वृष्णि .... वीरसेन है जो नल/नर या गुहक/ हाटकों का मूलपुरूष था का क्षेत्र गोहना था.. अर्थात भीम सात्वत या उपरिचर वसु जन वैदिक आर्य नहीं अपितु, उनके विरोधी थे।

महाभारत के अनुसार गरुड़ उपरिचर वसु को विष्णु की अधीनता में ले गया[74] वसुओं की मूल भमि गरुड़ जनों ने जीत ली; वसुजन ब्रहद्रथ, कारुष, मतस्य, चेदि जनों के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में पलायन कर गये। सृज्जयों के नेता सुदास पैजवन ने गरूड़ों की शाखाओं शिग्रु (सागरन क्षेत्र के सगर) और हरिश्चन्द्र (अरूण- अनरण्य) को पराजित किया... हरिश्चन्द्र के वंशजों ने रोहतक बसाया किन्तु लोहित्या नदी की अनियमितता के कारण यह राज्य उजड़ गया तो भी थोड़े बहुत अरुण- अनरण्य वंशी इस क्षेत्र में बाकी बचे रह गये थे, भले ही अब वे इतने प्रभावशाली नहीं थे कि महाभारत कालीन राजनीति में उनका योगदान हो -महाभारत के अनुसार अरुण पुत्र सम्पाति के वंशज कंधर की पुत्री तार्क्षी थी जो मन्दपाल के पुत्र द्रोण की स्त्री थी। ताक्ष्री तो महाभारत युद्ध में अर्जुन का बाण लगने से मारी गई, किन्तु तार्क्षी के चारों अण्डे, भगदत्त के हाथी सुप्रतीक से गिरे घन्टे से ढक गये थे। इस प्रकार उनकी रक्षा हुई। इन चारों बच्चों को ऋषि शमीक ने पाला। इस प्रकार मुख्य कथां के समान्तर-2 एक और छोटी सी कथा चलती है जो तत्कालीन राजनीति का बड़ा घटनाक्रम है.... लिखा हो या न लिखा हो किन्तु इस लोहित्या नदी प्रदेश के तार्क्ष्य-अरूण अनरण्य जन.... महाभारत संग्राम में नाग कुरु-कौरव्यों की ओर से लड़े थे. ..... इनके अवयस्क बच्चों को ऋषि शमीक ने पाला। नाग-कुरु-कौरव्यों की सत्ता जाती रही किन्तु वे विद्रोही बन कर छिटपुट संघर्ष करते रहे और सम्भवतः नागों में फूट डालने के उद्देश्य से ही परीक्षित एक नाग की हत्या का दोष ऋषि समीक के गले डाल कर चले आये। ऋषि शमीक नागों के गुरु या प्रमुख तथा बहुत सम्मानित व्यक्ति थे जिनहोंने महाभारत युद्ध मैदान से बच गये तार्क्षी और द्रोण के चार पुत्रों को पाला था, उस पर किसी नाग की हत्या के दोषारोपण से नाग तिलमिला उठेः उन्होंने एक जीवट भरा षड़यन्त्र कर के परीक्षित के महल में घुस कर उसकी हत्या की। इस प्रकार नागों ने एक नाग की हत्या का और शमीक ऋषि पर मिथ्या दोषारोपण का प्रतिशोध लिया।

गरुड़, कुरर पर्वत के निवासी हैं।[75] कुरर शब्द गरुड़ के समय प्रतीत होता है। कुरर का अर्थ क्रौंच या उकाब पक्षी। क्रौंच मैनाक का एक भाग या इसके पूर्व में गंगा यमुना दोआब की शिवालिक पहाड़ियों में करोंदी नदी का घाटी क्षेत्र था.... सम्भवतः आज का गढ़वाल शब्द मूल गरूड़वाल हो । दोआबे की शिवालिक पर्वत माला ही मूल ऋक्ष पर्वत था। इसके उत्तर में मूसरी पर्वत माला माल्यवान या मलय पर्वत था जो गरुड़ों का निवास था। गरुडों का मैदानों में आगमन देहरादून घाटी या सोलानी नदी के साथ हुआ और इनकी दूसरी शाखा अरुण-अनरण्य (वरुण पूजक) करोंदी घाटी क्षेत्र की ओर आए। गरुड़ ने कनखल (हरिद्वार) में तप किया था और नागराज कपिल कनखल का निवासी था।[76] समान क्षेत्र में निवास के कारण संघर्ष हुआ। सगर के 60,000 पुत्र सुपर्ण की बहन सुमति (सुमुखी) के गर्भ से हुए। संस्कृत साहित्य में सुपर्ण का अर्थ गरुड़ होता है।[77] अर्थात नाग-गरुड़ संघर्ष में कपिन ने 60,000 सागरेयों-गरुडजनों को भस्म किया था। कपिलों ने गंगा और उसके पूर्वी भागों पर काम्पिल्य और कपिलवस्तु तक ही नहीं अपितु यमुना नदी

क्षेत्र तक भी अपना प्रभाव फैलाया..... अरुण-अनरण्य जनों को पराजित करने वाला राक्षी नदी क्षेत्र का रावण भी कपिल नाग को पराजित नहीं कर सका था।[78] 60,000 सामरेय/शिग्रु/गरुड़जन सम्भवत रुड़की (गरुडकी) क्षेत्र के पूर्व में नेस्तनाबूद किए गए होंगे. ....बंगाल की खाड़ी के समुद्रतट पर नहीं.....। 60,000 सागरेयों को तारने के लिए भागीरथ गंगा नदी को बाद में लाए अर्थात सगर के प्राथमिक अभियानों के समय गंगा वहाँ नहीं थी।



आज की मसूरी पर्वतमाला तब मलय पर्वत था। सूर्य को छूने की कोशिश में सम्पात्ती मलय पर्वत पर गिरा था और हंनुमान जिसे रामायण में गरुड के समान कहा गया है[79] राम से पहली बार (ब्राह्मण के वेष में) मलय पर्वत पर ही मिले थे, वे ऋक्ष/ऋक्षरजस पर्वत के ऋक्षरजस के पुत्र सुग्रीव द्वारा भेजे गए थे, क्या कहें राम सूर्यवंशी थे और सुग्रीव सूर्य को पुत्र था, राम का राज्य भरतों के पास था और सुग्रीव का राज्य बाली (बाल्हीकों) के पास। राम ने सुग्रीव का राज्य दिलाया और सुग्रीव हनुमान आदि राम के साथ अयोध्या तक आए; उनके प्रत्येक अभियान में वे उनके साथ भी रहे। कथानक चाहे जिस प्रकार भी गढ़ा गया हो..... दृषद्वती नदी क्षेत्र के दृषद्वतों की सन्तति भरतजनों ने इन्दु नदी (हिंडन) क्षेत्र के अजों-अजमीढ़ों को पराजित करके अजोध्या (अजों की प्रमुख प्राथमिक बस्ती-सुघ?) जीत ली थी और समय था हस्ती (गज) वंशी सम्वर्ण द्वारा सुदास पैजवन की पराजय का; त्रुत्सु दिवोदास ने सोम्ब नदी के सोम्भरों (सम्वर्णों) को पराजित कर पूर्व में हस्तिनापुर तक धकेल दिया था किन्तु अन्ततः उसने अपना राज्य हस्तिनापुर नागसाहव्यं के नाग शम्भर/सम्वर्ण के हाथों खो दिया। रही-सही कसर दृषद्वती नदी क्षेत्र की ओर से बढ़ते भरतों ने पूरी कर दी, दशरथ (दासराज सुदास पैजवन) मारा गया। दासराज के नाती राम को वनों में जाना पड़ा, जहाँ उन्होंने पहले तो बाली-बाल्हीकों के विरुद्ध संघर्ष में सागर-सागरेय-शिग्रु-सुग्रीव का साथ दिया; फिर सागर (सागरनपुर) पार करके राक्षी नदी क्षेत्र के रक्षों को पराजित किया। सुग्रीव यदि सगर/गरुड़ है तो बाली बाल्हीक अर्थात नाग है। बलाहक, बलिक, बलाकी सभी नागों के नाम हैं...... बलराम शेषनाग का अवतार था और बर्हिषद जिनके पुत्र प्रचेता कहे गए हैं नाग ही थे। इस प्रकार नाग-गरुड़ की संघर्ष कथा एक-दूसरे ही रूप में रामायण में भी वर्णित है। महाभारत काल में वैदिक प्रथा-परम्परा के विरोधी कृष्ण का बड़ा भाई

बलराम नाग है। नाग गरुड़ संघर्ष की रामायण कथा में राम की भूमिका निर्णायक है वहाँ केवल इतना है कि सुग्रीव की सहायता से राम ने रक्षों को जीता.....,''भरतों को जीता'' यह भी होना चाहिए। पुराणों के सगर और बाल्हीक रामायण में सुग्रीव और बाली हैं। साम्य देखिए कि सागर की स्त्री सुमति की भाँति बाली और सुग्रीव की स्त्रियाँ तारा और रुमा जिस सुषेण और पनस वानर की पुत्रियाँ हैं वे सुषेण और पनस.... सुपर्ण अर्थात गरुड़ ही हैं। बाली और सुग्रीव के पिता का नाम ऋक्षरजस था और ऋक्षराज जाम्बवान विद्याद्यर है अर्थात जम्बू नदी प्रदेश का है। जाम्बवान के पिशाच, मार्जार, जय, जयन्त आदि सोलह पुत्र हैं अर्थात ऋक्ष पर्वत का क्षेत्र कम से कम सोलह टोटेमिक जातियों का प्रदेश तो था ही।

कर्दम राजाओं के वंशज बाल्हीकों ने हस्तिनापुरी बसाई थी। आनन्द रामायण पूर्व काण्ड सर्ग 1-4 के अनुसार राम ने हस्तिनापुर के सोमवंशी राजा पर आक्रमण किया था, किन्तु सीता के अनुरोध पर सन्धि कर ली गई।[80] अर्थात राम ने बाल्हीकों पर अभियान किया था अब चाहे यह सुग्रीव की सहायता के लिए बाली के विरुद्ध हो या फिर सगर के शत्रु बालखिल्यों के विरुद्ध..... बात एक ही है।

नाग-गरुड़ संघर्ष का एक और कथारूप पुराणों में है-

विरोचन के पुत्र बलि ने समूची पृथ्वी जीत ली थी, तब विष्णुने वामन अवतार लेकर तीन पगों में पृथ्वी, आकाश और पाताल नाप लिए, बलि ने अपना सिर झुका दिया और अन्ततः वे स्वर्ग को चले गए। किन्तु वे जहाँ भी गए इसका संकेत गढ़वाल क्षेत्र के अनुवंशी उशीनर की कथा से मिलता है कि एक कपोत की रक्षा के लिए उशीनर ने अपना शरीर बाज को दे दिया था। यहाँ बाज.... गरुड़जनों का द्योतक है और कपोत..... कपि या कपिलनागों का। कहा जा सकता है कि गरुड़ और उशीनरों के संघर्ष में कपि/कपिल या कपोतजनों की रक्षा तो हो गई किन्तु उशीनर जन पश्चिम की ओर पलायन कर गए और इस संघर्ष के बाद की पराजय के उपरान्त बलि-बालेय जन अंग, बंग, कलिंग, पुण्ड, सुहय और आन्ध्रजनों के रूप में भारत के विभिन्न भागों में जा बसे।[81] नाग गरुड़ संघर्ष में पहले नाग अर्थात बाल्हीक जीते, फिर सगर अर्थात गरुड़जन जीते और सबसे अन्त में कपिल नागजन, जिन्होंने सागरेयों को पराजित कर मध्य भारत की ओर खदेड़ दिया, जहाँ वे सागर क्षेत्र में विख्यात हुए।

विरोचन पुत्र बलि, तितिक्षु आनव के वंशज बलि और किसकिन्धा नरेश बाली में और भी अद्भुत साम्य हैं:-

विरोचन पुत्र बलि को ऐत्तरेयब्रा0 8.21 में अंग वैरोचन कहा गया है।[82] यहाँ विरोचन या तो वृष्नि, वृषिन (म्यूर टोटेमिक) जन है या फिर विरोचन अन्ध/अन्धक जनों का द्योतक शब्द है- विरोचन। ।विलोचन। ।अन्धा; आनव बलि के छह पुत्रों में से एक का नाम अंग है और किसकिन्धा नरेश बाली के पुत्र का नाम अंगद ! और भी देखिए - बलि का पुत्र बाण या बाणासुर है और किसकिन्धा का बाली वानर...... अर्थात वानर, जिसका बाण से उच्चारण का साम्य है जैसे गजवाल और गरुड़वाल का जिससे अन्ततः गढ़वाल शब्द बना।

कामदेव के अंग कैलाश-कालेसर के शिव ने दहन किए थे इसे सरस्वती नदी जिस का एक नाम अंगजा भी है के क्षेत्र में काम्यकवन को जलाकर, साफ करके बस्तियाँ बसाने और कृषि योग्य भूमि प्राप्त करने के रूप को देखा जा सकता है। लोहित्या नदी प्रदेश में प्रामज्योतिषपुर का सम्बंध कामदेव के अंग दहन से है हैहय अर्जुन कृतवीर्य की भाँति, बलि के हजार भुजाओं वाले पुत्र बाण[83] की स्त्री लोहित्यी थी जिससे इन्द्रधुमन नामक पुत्र हुआ[84]

बलि के पुत्र बाण के अन्य पुत्रों के नाम गर्दभाक्ष, कुंभनाभ और कुक्षी है तो आनव बलि की स्त्री सुदेष्णा से अंग, बंग आदि छह पुत्र पैदा करने वाले अन्धे दीर्घतमस के किसी शूद्रा स्त्री से उत्पन्न पुत्रों के नाम कक्षीवान और चक्षु हैं। इन कक्षीवान के एक हजार कुष्माँड हुए।[85] कुष्माँड पिशाचों की एक शाखा थी.... अज भी पिशाच थे; पिशाचों को नैतिकता विरोधी अर्थों में ना लें, वे पूर्णतया असभ्य या अर्धसभ्य नहीं थे। कुछ अजों ने तो गढ़वाल से नीचे मैदानों में उतरकर बस्तियां भी बसाई। यमुना तट पर अजों-अजमीढ़ों का प्रदेश अजनाभखण्ड..... और उनका प्रारम्भिक नगर अजोध्या, इन अजों को सुदास पैजवन ने शिग्रु और यक्षों के साथ ही पराजित किया था..... और इन्दु (।।हिन्डननदी) के पति अज (वियोगी बनकर) भटकने लगे। अजों में भाई-बहन के बीच सीधे कौटाम्बिक विवाह की प्रथा थी। जहाँ तक दीर्घतमस की बात है तो उन्होंने आसंदीवत के भरत का भी राज्याभिषेक किया था. ... समूचा घटनाचक्र हरियाणा के उत्तरी भाग के आसपास का है मार्टिन स्मिथ ने बाण की स्त्री लौहित्यी को कुशिक विश्वामित्र के पुत्र लौहि की पुत्री से मिलाया है[86] मेरे विचार से वसुजन कौशिकी नदी क्षेत्र के कुशिक कहलाए, लोहित्या नदी क्षेत्र में फैले तो लौहि कहलाए. .... बाद में जब हिरण्यदैत्य बाणासुर जनों ने लोहित्या नदी क्षेत्र में अपना बाहुल्य बढ़ाया तो लौहित्यी के बाण की स्त्री हो जाने का मिथक बना।

विरोचन पुत्र बलि और अनुवंशी बलि दोनों की ही स्त्रियों को नाम -सुदेष्णा है।[87] और दिलिप जिसकी स्त्री का नाम सुदक्षिणा है बलि का नामान्तर प्रतीत होता है... बलि।।बलिप।।दिलिप ! ऐसा लगता है कि बलि-बालहीक-बालाखिल्य जनों की भी दो शाखाएं थीं एक शाखा पूर्व और दक्षिण पूर्व में अंग, बंग, सुहय, पुण्ड्र, कलिंग और आन्ध्र के रूपों में गई और दूसरी पश्चिम में पलायन कर गई। पश्चिम में जाने वाली शाखा उशीनरों की थी जो पहले यौधय, नवराष्ट्र, कमिला, अम्बष्ठ और दृषद्वती नदी क्षेत्र में फैली[88] लगभग उसी समय गरुड़ टोटेम वाले सगर और अरुण-अनरण्य जन भी मैदानों में उतरे..। सगर सागरेय जनों ने बालखिल्य-बाल्हीकजनों को पूर्व और दक्षिण पूर्व में खदेड़ा; किन्तु अरुण-अनरण्य राक्षी नदी के दक्षिण में शांतिपूर्वक आ बसे.... अनरण्य को अवश्य राक्षस रावण ने मारा। किंतु आनव शिविजनों से उनका संघर्ष नहीं हुआ क्योंकि शिविजन दृषद्वती नदी क्षेत्र में थे जहाँ वे अनरण्यों के सामने नहीं अपितु सुदास पैजवन के सामने पड़ रहे थे। सुदास पैजवन/दासराज ने शिविजनों को पराजित किया। शिविजन पश्चिम की ओर पलायन कर सिन्धु नदी क्षेत्र में वृषदर्भ, सौवीर, कैकय और मद्रकों के रूप में जा बसे। दासराज संग्राम जिस परुष्णी के तट पर लड़ा गया था वह पुरीषणी/घघ्घर या पलक्षणी/ पलक्षा; पलक्ष अर्थात सरस्वती नदी ही थी, कुरुक्षेत्र के आसपास उस काल में पलक्षा से सम्बन्धित अन्यत पलक्ष प्रस्रवण; पलक्ष प्रस्त्रवण जैसे नाम मिलते हैं। दृषद्वती नदी क्षेत्र के शिविजनों के साथ-साथ यमुना तट पर अज यक्षुव और शिग्रुजन भी पराजित हुए। अर्थववेद 5.19.1 के **भृगु हिंसित्वा सृज्जया वीतीहव्या पराभवन** के आधार पर हैहय वीतीहोत्र रचा गया है। सुदास पैजवन पौराणिक सहत्रबाहु अर्जुन कृतवीर्य की कथा का आधार है।

काथा / क्रतुनदी क्षेत्र के बालखिल्यों।।बाल्हीक जन ही वे भलनास थे जिन्हें पराजित करके सुदास पैजवन ने कृतवीर की उपाधि पाई। बाद में बाल्हीकों।।बली / बाली जनों का सगर / सुग्रीव (गरुड़) जनों से संघर्ष हुआ जिसमें राम और सुग्रीव एक-दूसरे के सहायक रहे थे। गढ़वाल।।गरुड़वाल / गजवाल क्षेत्र से ऋक्ष पर्वत होकर मैदानों में उतरे अनुजन ऋक्ष पर्वत के कारण ऋक्ष और क्रतु के कारण क्रतु कहलाए, अनुवंश की जो शाखा शैव्यों के

क्षेत्र में बसी शिवी कहलाई और बालहीक / बलि / बाली / बालखिल्यों में बसी तो बलि कहलाई किन्तु वे थे नाग ही। बाद में इन नागों का संघर्ष गरुड़वाल की ओर से आए गरुड़ / अरुणजनों से हुआ, जिसमें पहले नाग जीते फिर गरुड़ या सगरजन, बलिजन, अंग, बंग, आंध्र आदि के रूप में पूर्व और दक्षिण पूर्व में पलायन कर गए।

राम का युग गरुड़जनों का चरम युग था; गरुड़ सूर्य का वाहन और अरुण सारथी था। इनके वंशज सूर्यवंशी कहलाए। गरुड़ और अज-गज जनों में विशेष भेद नहीं है। तभी तो ग्राह (मकर) से गज की रक्षा के लिए विष्णु स्वयं गरुड़ पर बैठकर आए थे। इस मिथक में मस्कारा-राक्षी नदी क्षेत्र में मकर और अज-गज जनों का संघर्ष छिपा है। राम विष्णु का अवतार और अज (का पौत्र) है अर्थात अज-गज है। नाग लोक में अहिरावण का प्रहरी मकरध्वज है....। हनुमान गरुड़ हैं वे राम अर्थात अज-गज को मकरध्वज से छुड़ा ले जाते हैं। मिथक की रचना किसी ऐसे ही मिले-जुले घटनाक्रम से हुई होगी राम और हनुमान दोनों ही गरुड़जन हैं तभी मलय पर्वत पर एक-दूसरे के गले मिलते हैं.... जबकि वे पहली बार मिल रहे थे।

विदर्भ और दक्षिण

तब का विन्ध्य पर्वत शिवालिक पहाड़ियों का क्षेत्र था, विशेषकर वह स्थान जहाँ से शिवालिक पर्वतों को विन्ध्य कर के पर्वतों से नदियां, मैदानों में उतरती थी, प्राकृतिक और भौगोलिक कारणों से नदियों की अनियमितता; बहावमार्ग के अवरुद्ध होने के कारण या समुचित जल निकासी न होने के कारण शिवालिक की तलहटी अतिरिक्त जल और बाढ़ से एक विशाल सागर जैसी झील बनती थी... जो वर्ष दर वर्ष लवणीय होती गई... इसका यह प्रदेश गाद, कीचड़ वाला बन गया, जहाँ दर्भ घास भी नहीं उग पाती थी। यही प्रदेश दक्षिण सागर या लवण सागर था यहाँ के पुरुषों को ही लवण... लावण या रावण, लवणासुर कहा गया; यह राक्षी नदी के रक्षों का देश था.... दृषद्वती नदी के दक्षिण का क्षेत्र दशार्ण और उत्तर का प्रदेश दशार्ह था.... दर्भ घास भी न होने के कारण यह विदर्भ भी था। लावण क्षेत्र की स्त्री.. लावणी... लावण्यमयी कहाती थी। आज भी सुन्दर और आकर्षक स्त्री को सभ्य भाषा में लावण्यमयी और असभ्य भाषा में नमकीन कहा जाता है। विदर्भ प्रदेश.... विन्ध्य के दक्षिण में था.... निवासी दक्ष और दक्षिणा (त्य) थे, विरोचन पुत्र बलि, आनब बलि और सगर के पौत्र दिलीप की स्त्रियों के नाम सुदेष्णा या सुदक्षिणा.... इस दक्ष-दक्षिण प्रदेश की स्त्रियों के द्योतक हैं.... वे वैदर्भियाँ थीं। अज की स्त्री इन्दु भी वैदर्भी थी... इन्दु हिंडन नदी प्रदेश की स्त्री का द्योतक नाम है।

क्रतु-कार्तिकेय जन

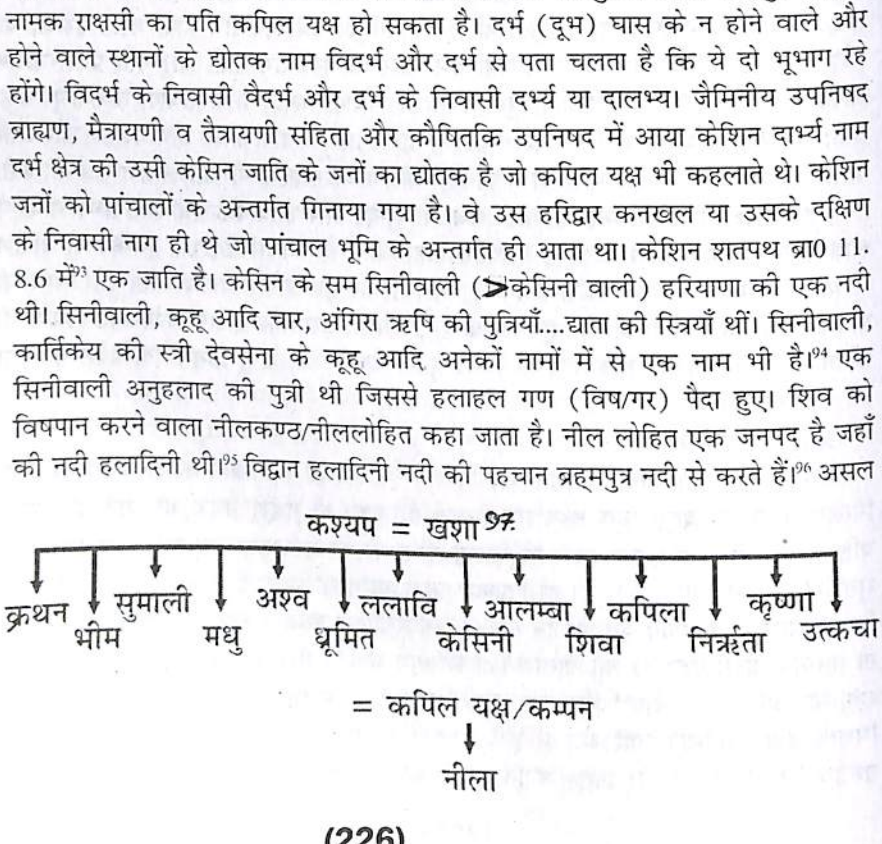
गरुड़ नाग संघर्ष काफी विस्तृत वर्णनों वाला है। एक ही घटनाक्रम के अनेकों मिथक हैं। मिलान करने पर बहुत कुछ तथ्य नए मिलते हैं, बहुत से गड्डु नड्ड़ हो जाते हैं। आनब बलि के छह पुत्रों अंग, बंग आदि के विरुद्ध गरुड़ के भी छह पुत्र - सुमुख, सुनामन, सुनेत्र, सुवर्चस, सुरूच और सुवल हैं। इसी प्रकार ऋक्ष पर्वत के क्रतु के 60000 बालखिल्यों के विरुद्ध सगर के 60000 पुत्र हैं। इन 60000 सागरेयों को समाप्त करने वाला कपिल नाग है तो तारक (तार्क्ष्य/गरुड़?) को मारने वाला शिवपुत्र कार्तिकेय (क्रतु पुत्रों का द्योतक नाम !) छह माताओं द्वारा पालित[89] और छह मुखों वाला है। इस प्रकार तारक और कार्तिकेय का मिथक क्रतु (काथा) नदी क्षेत्र में हुऐ गरुड़-नाग संघर्ष का एक रूप है जिसमें अंततः गरुडजन पराजित हुए थे। क्रतु- कार्तिकेय शिखिगत अर्थात म्यूरवाहन वाला है।[90]

जैसा कि हमने पीछे कहा कि क्रतु नदी ही आगे पानीपत (पणिप्रस्थ) क्षेत्र की पर्णाशा और रोहतक क्षेत्र की लोहित्या नदी थी। कार्तिकेय का प्रिय स्थान पशुधन और अन्नं से भरपूर स्थल रोहतक था।[91] कर्णाल के कर्ण ने म्यूरकों को पराजित किया था। क्रतु-कार्तिकेय; रोहतक-लोहित्य शब्दों में साम्य है। हैहय साहजन में सहजन शब्द का अर्थ शिग्रु। सहजन का वंशज अर्जुन कार्तवीर्य.....अर्थात क्रतु नदी प्रदेश का विजेता; जोकि सृज्जय सुदास पैजवन ही था; वैदिक सृज्जय ही पौराणिक हैहय है अथर्ववेद 5.191 में **भृगु हिंसित्वा सृज्जया वीतीहव्या परा भवन** से पता चलता है कि ''हैहय वीतीहोत्र'' की कथा का आधार ''सृज्जय वीतीहव्य'' है। हैहय महिष्मत ने कर्कोटक नाग को हराया था तो कार्तिकेय ने तारकों-तार्क्ष्यों के साथ-साथ महिषों को भी मारा।[92]

तारकामय संग्राम की भूमिका

पुराणों में सीधा सपाट वर्णित तारक और कार्तिकेय का संघर्ष काफी उलझा हुआ और वास्तव में तारकामय संग्राम प्रतीत होता है- मिथक है कि चन्द्रमा एक बार वृहस्पति की स्त्री तारा को भगा ले गया, फलतः तारकामय संग्राम हुआ, जिसमें वृहषपति का पक्ष देवताओं ने और चन्द्रमा का पक्ष दैत्यों और असुरों ने लिया। किन्तु स्त्री को चुराने, भगा ले जाने वाले या स्त्री का किसी अन्य के साथ भाग जाने के कई और भी मिथक हैं जिनका सम्बंध एक ही प्राकृतिक या भौगोलिक घटनाक्रम से जुड़ता प्रतीत होता है-

कार्तिकेय के स्त्री देवसेना को केसिन नामक असुर भगा ले गया था। चन्द्रमा का एक नाम शिनी भी है और सगर की स्त्री केसिनी वैदर्भी थी। किन्तु यह केसिन असुर केसिनी नामक राक्षसी का पति कपिल यक्ष हो सकता है। दर्भ (दूभ) घास के न होने वाले और होने वाले स्थानों के द्योतक नाम विदर्भ और दर्भ से पता चलता है कि ये दो भूभाग रहे होंगे। विदर्भ के निवासी वैदर्भ और दर्भ के निवासी दर्भ्य या दालभ्य। जैमिनीय उपनिषद ब्राह्मण, मैत्रायणी व तैत्रायणी संहिता और कौपितकि उपनिषद में आया केशिन दार्भ्य नाम दर्भ क्षेत्र की उसी केसिन जाति के जनों का द्योतक है जो कपिल यक्ष भी कहलाते थे। केशिन जनों को पांचालों के अन्तर्गत गिनाया गया है। वे उस हरिद्वार कनखल या उसके दक्षिण के निवासी नाग ही थे जो पांचाल भूमि के अन्तर्गत ही आता था। केशिन शतपथ ब्रा0 11. 8.6 में[93] एक जाति है। केसिन के सम सिनीवाली (>केसिनी वाली) हरियाणा की एक नदी थी। सिनीवाली, कूहू आदि चार, अंगिरा ऋषि की पुत्रियाँ....द्याता की स्त्रियाँ थीं। सिनीवाली, कार्तिकेय की स्त्री देवसेना के कूहू आदि अनेकों नामों में से एक नाम भी है।[94] एक सिनीवाली अनुहलाद की पुत्री थी जिससे हलाहल गण (विष/गर) पैदा हुए। शिव को विषपान करने वाला नीलकण्ठ/नीललोहित कहा जाता है। नील लोहित एक जनपद है जहाँ की नदी हलादिनी थी।[95] विद्वान हलादिनी नदी की पहचान ब्रह्मपुत्र नदी से करते हैं।[96] असल



में हलादिनी, रोहतक से होकर बहने वाली लोहित्या थी जो पश्चिम में भद्रा नोहर होकर जाने वाली भद्रा भी थी। कपिल यक्ष और केशिनी के वंशज नैलगण;, शिनीवाली या हलादिनी के पुत्र हलादगण ही हैं।

कूहू मयदानव की तीन पुत्रियों में से एक का नाम है जो अपने पति हविष्मान (अग्नि) को छोड़कर सोम के पास चली गई थी।[98] हविष्मान यदि अग्नि है तो कार्तिकेय अग्नि का पुत्र है और सोम शिनी या केसिन है। एक अन्य स्थान पर कूहू, राका, अनुमति और शिनीवाली अंगिरा की चार पुत्रियाँ थी वे लक्ष्मी और विधाता के भाई द्याता की स्त्रियाँ थीं, इस शिनीवाली का पुत्र दर्श है; उपर्युक्त चारों ही उपरी हरियाणा प्रदेश की नदियाँ थी, प्रतीत होता है कि सिनीवाली ही दर्श अथवा दृषहती नदी कहलाई। दर्शाणा ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली नदी है।[99] कार्तिकेय की स्त्री देवसेना या कूहू जिस दैत्यसेन की पुत्री कही गई है वह मयदानव ही होना चाहिए।

एक कर्दम की स्त्री सिनीवाली के कर्दम को छोड़कर सोम के पास चले जाने का विवरण मिलता है। इन कर्दम और सिनीवाली की पुत्री काम्या स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत की स्त्री बनी। यह प्रियव्रत के आग्नीध्र आदि दस पुत्र और सम्राट तथा कुक्षि नामक पुत्रियों की मात बनी।[100]

उपर्युक्त सभी मिथकों में स्त्री को भगाने वाला चोर सोम या चन्द्रमा है।

उतथ्य की स्त्री भद्रा, सोम की पुत्री थी इसे वरुण भगा ले गया, इस पर उतथ्य ने पृथ्वी का सारा जल पी लिया। सरस्वती आदि नदियाँ सूखने लगीं। वरुण ने भद्रा उतथ्य को लौटा दी।[101] मिथकीय विवरणों में हालाँकि विरोधाभाष और भिन्नता है जैसे भद्राश्व और घृताची अपसरा की पुत्री भद्रा.... अत्रि ऋषि की स्त्री थी और सोम की माता थी। वरुण का एक नाम केश है; इसका उपर्युक्त केसिन से साम्य है। भद्राश्ववर्ष चीन-कोरिया नहीं अपितु गंगा का उद्गम वाला पहाड़ी प्रदेश था.... बद्रीनाथ, बदराहू; अंगराहू स्थानों वाला। आज की मसूरी पर्वतमाला उस समय माल्यवान पर्वत था। माल्यवान पर्वत के पूर्वी भाग मलय के निवासी गरुड़ की स्त्री का नाम भद्रा था[102] भद्राश्व वर्ष की नदी भद्रा गंगा की सहायक थी और उत्तरकुरू होकर बहती थी।[103] उत्तरकुरू भारत से बाहर कहीं मध्य एशिया आदि में नहीं था जैसा कि विद्वान मानते हैं बल्कि सहारनपुर जिले में यमुना तट के आसपास शिवालिक पहाड़ियों का तराई भूभाग था। अज हस्तीजनों का अजमीढ़ या अजनाभखण्ड यही था। असल में तब नदियों का भौगोलिक स्वरूप आज से नितान्त भिन्न था और वह स्वरूप भी नियमित नहीं था। भद्राश्व वर्ष से आकर उत्तरकुरू से बहने वाला भद्रा नदी सम्भवत: कभी कुरुक्षेत्र के आसपास की चैत्ररथी- चिताँग से मिलती रही हो। हमारे ऐसा सोचने का कारण भी है क्योंकि शाब्दिक अर्थ से चित्रा और भद्रा से साम्य है चित्रा का अर्थ जल की चोई या च्यूता/सीता है तो भद्रा.....भगद्रा जैसे शब्द का अपभ्रंश है। दोनों का अर्थ ''पानी के बहाव मार्ग'' के सम है। कुरुक्षेत्र के आसपास भी भद्रा ही थी.... क्षेत्रीय नाम बेशक अलग-अलग रहे हों। सुभद्रा का एक नाम माध्वी, दृषद्वती का ही एक नाम प्रतीत होता है क्योंकि वहाँ प्रतर्दन को दिवोदास और माध्वी का पुत्र कहा है जबकि ब्रहमा0; वायु0 आदि पुराणों में उसकी माता दृषद्वती है।[105] काशी का दिवोदास, दृष्द्वती सरस्वती नदी क्षेत्र के वैदिक दिवोदास के आधार पर गढ़ा गया है। इसी प्रकार एक और गढ़ा गया मिथक ययाति की पुत्री माध्वी का है जिस का आधार उत्तरी हरियाणा का राजनैतिक घटनाक्रम है। माध्वी गालव ऋषि द्वारा कुछ राजाओं को कुछ-कुछ समय के लिए दी जाती है, इसके बदले वे राजा गालव

को घोड़े देते हैं। दिवोदास के लिए एक पुत्र प्रतर्दन पैदा करने के बाद माधवी राजा उशीनर के पुत्र शिवि की माता बनी। कहा जा सकता है कि माध्वी नदी क्षेत्र में बसे उशीनर जन शिवि कहलाए। आनब उशीनर जन किसी सूखे अकाल जैसी स्थिति के कारण अपना मूल गढ़वाल प्रदेश छोड़कर उत्तरी हरियाणा प्रदेश में आ गए थे।

उशीनर-कपोत के मिथक में अग्नि का वर्णन इसी सूखे अकाल के कारण है : यह कारण वही हो सकता है जिसमें रुड़की-हरिद्वार क्षेत्र के 60000 सागरेय जन नष्ट हो गए थे। इस एक कारण से सगरजन मध्य भारत की ओर और उशीनर जन हरियाणा की भूमि की ओर पलायन कर गए। उशीनरों की शिवि शाखा को दासराज सुदास पैजवन ने पराजित कर सिन्धु नदी प्रदेश में खदेड़ दिया।

माध्वी अयोध्यापति हर्याश्व को भी एक पुत्र उत्पन्न करने के लिए दी गई थी।[106] यह हर्याश्व अयोध्या नरेश नहीं अपितु अजजनों के प्रतीक ऋक्ष, भेद या भद्राश्व जन ही रहे होंगे।

विश्वामित्र ने माध्वी से अष्टक नामक पुत्र उत्पन्न किया था। माध्वी का एक नाम वसुन्धरा है। यह वसुन्धरा मूलतः वसुजनों की धरा को कहा गया है जो बहुधान्यक या भादानक ही थी। माध्वी उन मधुजनों के क्षेत्र की नदी रही होगी, जिसके बारे में मिथक है कि विष्णु ने मधु के मैदे से पृथ्वी का निर्माण किया था।

माध्वी और भद्रा में भी कोई भेद नहीं है। वसुदेव की स्त्री भद्रा की पुत्री सुभद्रा; ऋक्षराज बाली की पुत्री सुभद्रा में इनके भद्रा क्षेत्र में निवास का पता चलता है। बाली की पुत्री सुभद्रा करन्धम के पुत्र अवीक्षित की स्त्री थी, सुभद्रा के पुत्र का नाम मरुदत्त था, मरुदत्त का वंशज तृणबिन्दु काम्यक वन का निवासी था अर्थात समूचा घटनाक्रम सरस्वती-यमुना नदी क्षेत्र का ही है।

सूख या अन्य किसी प्राकृतिक कारण से छोटी नदियाँ बिल्कुल सूख गईं; बड़ी नदियों में पानी कम हो गया और ऐसे में भी जब नदी मार्ग बदलकर किसी दूसरी जाति के निवास क्षेत्र से होकर बहने लगे या फिर उसका बहाव मार्ग रोक कर दूसरी ओर मोड़ लिया गया तो मिथक बन गए कि वरुण भद्रा को भगा ले गया; सोम वृहषपति की स्त्री तारा को चुरा ले गया, सिनीवाली कर्दम को छोड़कर सोम के पास चली गई; केसिन देवसेना को चुरा ले गया....!! नदियों के बहाव मार्ग में परिवर्तन चाहे किसी भी कारण से हुआ हो वह रामायण में भी वर्णित है कि रावण सीता को चुरा ले गया.....!!!

वैदिक साहित्य में सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी है।[107] इन्द्र सवित्र की स्त्री है...... सीता एक नदी है-

सुचक्षुश्वैच सीता च सिन्धुश्चैव महानदी- वाल्मिकी रामायण बाल0
जम्बू नदी च सीता च गंगा सिन्धुश्च सप्तमी- महाभारत भीष्म0
सीता चालकनन्दा चक्षुर्भद्रा च वै क्रमात- विष्णुपुराण

सीता भद्राश्ववर्ष की नदी थी[108] गंगा की यह पश्चिम की ओर जाने वाली शाखा भद्रा ही थी। सीता नदी मदराचल और गन्धमादन पर्वतों के बीच से निकलकर केतुमाल वर्ष होती हुई पूर्व में भद्राश्व की ओर आती थी। यह विवरण इसे गिरी नदी से मिलाता है.... गिरी का अर्थ पर्वत या शैल अर्थात यही उत्तर कुरू की सीता-शैलादा थी।[109] सीता शैलोदा और भद्रा को अलग-अलग मानना और उनका अभिज्ञान भारत से बाहर मध्य ऐशिया की तारिम, खोतान और यारकन्द नदियों से करना भ्रमवश है।[110] प्राचीन भारतीय भूगोल के नामों को समीकृत करते समय हमें उनसे सम्बंधित उस समय की घटनाओं को भी उन समीकरणों

की कसौटी पर कसना होगा, वरना भद्राश्ववर्ष को चीन-कोरिया, पलक्षद्वीप को भूमध्य सागरीय प्रदेश और शाल्मली द्वीप को अमेरिका आदि से समीकृत करने का कोई अर्थ नहीं; इस प्रकार के समीकरण पुराणकार द्वारा प्रयुक्त ''सम्पूर्ण पृथ्वी'' शब्द के भ्रम में पड़कर नहीं किए जाने चाहिए। भद्रा, सीता, सरस्वती, चित्ररथी आदि नदियों का सूखना या उनमें पानी कम हो जाने का कारण लम्बे समय तक वर्षा का कम होना या न होना रहा होगा....। फलतः बारह-तेरह वर्षों का लम्बा दुभिक्ष पड़ा। छोटी-छोटी नदियाँ, बरसाती चोईयाँ, तो बिल्कुल सूख गई होंगी। ऐसे में मुख्य नदी, जिसमें भी काफी कम पानी बहता था, को अपने-अपने क्षेत्रों में मोड़ ले जाने के प्रयत्न हुए। वरूण भद्रा को भगा ले गया; केसिन सिनीवाली को ले गया; रावण सीता को चुरा ले गया; अनेकों संघर्ष भी हुए। सगर-सुग्रीव... बाली-बाल्हीक यदि सम हैं तो सगर और राम कृतयुग अर्थात युगसन्धि के समय हुए थे। महाभारत शान्तिपर्व के अनुसार बाहर वर्षीय अकाल त्रेता द्वापर सन्धि के समय पड़ा था; इस आपदा में बाजार, हाट, नगर, गाँव सभी के उजड़ने-नष्ट होने की बात की गई है।[11] विश्वामित्र के समय की उन्नत नगर सभ्यता का अन्त वर्षों तक चलने वाले इस भयानक अकाल से हुआ; व्याख्या ग्रन्थ शतपथ ब्रा0 में इसे विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है; जहाँ प्राण रक्षा में पलायन करने वालों की लम्बी यात्रा का करुण चित्रण है, नगर सभ्यता, शिक्षा प्रणाली, सांस्कृतिक गतिविधियाँ सबकुछ समाप्त हो गई; लोग जीवन रक्षा के लिए विकल, हाहाकार करते हुए, इधर-उधर भागते, मनुष्यता खोकर नर पिशाच बन गए थे, जीवन निर्वाह के लिए लोग कुछ भी खाने को तैयार थे। यह सूखा क्रमशः तीव्र होता चला गया।[12]

सरस्वती नदी क्षेत्र छोड़कर पूर्व की ओर बढ़ते विदेह माथव पाते हैं कि अग्नि वैश्वानर ने सभी नदियों को जला डाला है- **''स इमाः सर्वाः नदीः अतिददाह।''** निघंटू और निरुक 14/7.21-23 में अग्नि वैश्वानर शब्द सूर्य के लिए प्रयुक्त है। यह दाह सर्वप्रथम सरस्वती क्षेत्र में ही अनुभव किया गया- **''सरस्वत्या स ततऽएव प्राक दहन अभि इयाय।''** और ये शरणार्थी जहाँ-जहाँ जाते, उन्हें सूखे से झुलसा और उजड़ा इलाका मिलता सदानीरा के तट पर उन्हें कुछ राहत मिलती है। इसका कारण यह बताया गया है कि यह सीधे हिमालय से निकलती थी। इसका कारण यह कि अग्नि विश्वानर ने इसे अधिक नहीं जलाया था। अर्थात यहाँ प्राकृतिक प्रकोप का संदर्भ है। यह दुर्भिक्ष इतना विकट था कि सरस्वती क्षेत्र के साधन सम्पन्न लोग भी अन्य क्षेत्रों में भागने पर मजबूर हुऐ। इस भयावहता से समूचा उत्तर भारत प्रभावित हुआ, लम्बी अनावृष्टि के कारण पहली बार इस क्षेत्र के दलदल तक सूख जाते हैं। अर्थव्यवस्था लम्बे समय के लिए नष्ट हो जाती है। ऋग्वेद 4.18.13 में दुर्भिक्ष के शिकार वामदेव गौतम ने धर्म विचार त्याग कर कुत्ते की अन्तड़ियाँ पका कर खाई; अपनी आखों के सामने अपनी पत्नी को अपमानित होते हुए देखा **"अवर्त्या शुनि आंत्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम। अवश्यं जायां अमहीयमानां अधा में श्येनः मधु जभार।"**

सम्भवतः महाभारत में इसी अकाल कथा को दोहराया गया है किन्तु वहाँ वामदेव गौतम नहीं, विश्वामित्र का नाम है। नदियों के संक्षिप्त तोया होने, पूरी तरह सूख जाने; तालाब, कुँऐ, धाराओं के सूखने; सभाओं-संस्थाओं,-आश्रमों के समाप्त होने; कृषि गौपालन, वाणिज्य, बाजारों के परित्याग; नगर उजड़ने; जीवन रक्षा के लिए पलायन करने; प्राण रक्षा की चिंता में विकल होकर एक दूसरे को खा जाने का विवरण है। यहाँ यदि विश्वामित्र का वर्णन है तो दुर्भिक्ष की घटना अवश्य वैदिक काल में घटी थी।[13] विश्वामित्र सुदास पैजवन के गुरू तथा समकालीन थे। सुदास पैजवन ने परूष्णी नदी क्षेत्र में हुए महान दासराज संग्राम में दो

विकर्णों (चारों दिशाओं) के इक्कीस जनों को पराजित किया था। अवश्य ही भोजन पानी और बसने के लिए उचित नदी स्थानों की खोज में इधर उधर भटकती जातियाँ हरियाणा प्रदेश के पलक्षा-सरस्व्रती नदी क्षेत्र में आ भरी थीं; और अवश्य ही इंच-इंच भूमि के लिए आपसी संघर्ष ने दासराज संग्राम की भूमिका तैयार की। पहला बड़ा समूह सूर्य वाहन (सूर्य वंशी)-गरूड़(सागर) और अरूण अनरण्य जनों का था; दूसरा आनब उशीनरों और तितिक्षू बालेय जनों का। सृज्जय(हिरन्ज्य-हिरण्य या हैहय) जनों ने सभी को मार भगाया: बालेय-गरुड़ों का संघर्ष; कृतु-लोहित्यों का संघर्ष आनब उशीनर शिविजनों का संघर्ष फिर सुदास के उत्तराधिकारी राम का रावण (लवण क्षेत्र के जन) से संघर्ष सभी का कारण एक ही था। रक्षों से संघर्ष कर, पत्थरों की एक विशाल संरचना बनावा कर राम-सीता नदी को उसके पुराने बहाव मार्ग पर मोड़ लाए; जीवनदायिनी नदी आई, सीता आई, पलक्षा-पलक्षिणी-लक्ष्मी आई। अकाल सूखे से जूझते; त्राहि-त्राहि करते जनों के शरीरों में नवीन प्राणों का संचार हुआ। घर-घर खुशियों के दीप जले; ऋग्वेद 10.93.14 में राम को उसके महान असुर कार्य के कारण ही महान असुर की उपाधि मिली। किन्तु अगले ही वर्ष सीता में कम पानी के कारण घाट के धोबियों में संघर्ष हुआ। किसी का कहना रहा होगा कि आखिर राम इस सीता को छोड़ क्यों नहीं देते, जो नदी वर्षभर के लिए राक्षसों के प्रदेश में रही; उसका क्या भरोसा और राम ने सीता को छोड़ दिया। वे शायद कहीं और जा बसे। बाद में सीता मिली, किन्तु जमीन में समा रही थी शायद उसमें जल बहुत ही कम रह गया था..... अर्थात दुर्भिक्ष, सूखे के समाप्त होने के कोई आसार नहीं थे। लक्षमण (पलक्षा नदी क्षेत्र के पलक्षवान जन) भी चले गए.... राम ने सरयू में कूदकर जान दे दी। किन्तु शायद दुर्भिक्ष चलता रहा। पणि-पाँडु और कुण्ड़तियों की सन्तति भी जीवनयापन के साधनों की खोज में यमुना के पश्चिम का क्षेत्र छोड़कर दोआबे में हस्तिनापुर तक घुस आई। भाई वृन्द होने की दुहाई काम न आ सकी, वे वापिस धकेल दिए गए.... फिर अरावली पर्वत के उत्तरी छोर पर उन्होंने खांडवप्रस्थ बसाया। अन्ततः महाभारत युद्ध भी हुआ। महाभारत युद्ध राम के बाद मात्र तीसरी पीढ़ी में लड़ा गया तभी तो हनुमान, बाणासुर, शम्भर, परशुराम, मैन्द-द्विविद आदि अभी तक जीवित थे। व्यास रामकालीन वशिष्ठ का प्रपौत्र ही तो है; द्रोणाचार्य सुदास दिवोदास कालीन भारद्वाज का पुत्र है। मातृपक्ष की ओर से हनुमान, भीम अर्जुन आदि के प्रपिता लगते थे क्योंकि अजगन्धा सत्यवती और हनुमान भाई-बहन ही थे; दोनों की माताऐं अलग थीं.....पिता तो केसरी ही थे। अर्थात दुर्भिक्ष काफी लम्बा था........ तीन-चार पीढ़ीओं तक चलने वाला, जिसने सब कुछ यहॉ तक कि तत्कालीन भूगोल और इतिहास तक को समाप्त कर दिया.......इतने लम्बे दुर्भिक्ष की कल्पना तक करना कठिन है. ....तभी सुविधा के लिए बारह या चौदह वर्षीय अकाल, वनवास के मिथक गढ़े गये।

नदियों के बहावमार्ग को नियमित करने या अपने क्षेत्रों की ओर मोड़ लेने का काम 60000 सागरेयों ने भी किया था। हो सकता इसी कारण उनका संघर्ष कपिल नागों से हुआ हो। मिथक बना कि अश्वमेघयज्ञ के अश्व की खोज में सगर पुत्रों ने पृथ्वी को चारों ओर से खोदा जिससे चन्द्रशुक्ल, नेमिधर, विनतक, अस्सकन, सिंहल, लंका और स्वर्णप्रस्थ ये सात उपद्वीप बन गये; सगर के नाम पर समुद्र का नामकरण सागर हुआ।[114]

वरूण जल का स्वामी है, वरूण और अरूण में साम्य है। अरूण अनरण्य के वंशज वरूण पूजक थे। वरूण क्रौंच द्वीप का अधिपति या रक्षक था, उसका वाहन मकर था। द्रोणपर्व में उसकी स्त्री का नाम पर्णाशा.....यह नदी का नाम है जो पानीपत पणिप्रस्थ क्षेत्र

की नदी थी। वरूण का ऋतुमन्त नामक उद्यान त्रिकूट पर्वत पर था।[115] त्रिकूट का निर्माण गरूड़ द्वारा खाये गये गज, ग्राह, कच्छप आदि की अस्थियों से हुआ था अर्थात गज हस्ति, मकर, कच्छप आदि टोटेमिक जनों के क्षेत्र पर अधिकार करने वाले गरूड़, वरूण-अरूण एक ही जाति की शाखा-प्रशाखा थे। गरूड़ के पिता का नाम अरिष्टनेमि था और वायु० के अनुसार अरिष्टसेन भार्गवों के सात पक्षों में से एक है।[116]

भार्गव और वाल्मिकी दोनों ही चषर्णी से उत्पन्न वरूण के पुत्र है। वारूणेयों की एक शाखा अरिष्टनेमि थी। यही कारण है कि सगर का पिता असित (अरिष्ट का अपभ्रंश) हैहयों-सृज्जयों से पराजित होकर भागा और भार्गवों के आश्रम में शरणागत हुआ। "र" और "ल" के आपसी रूपान्तर से वरूण के पुत्र बाल, बाल्हीक, बाली, बलि, वाल्मीकी होने की सम्भावना बनती है। वरूण का एक नाम केश भी है और सगर की एक स्त्री का नाम केसिनी था। वरूण क्रौंच द्वीप (करोंदी घाटी) का अधिपति था समीप के ऋक्षरजस के पुत्र बाली और सुग्रीव थे, इनका साम्य वरूण के दो पुत्रों बल और सुर से हो सकता है।

सहायक ग्रंथ और पाद टिप्पणियाँ

1. सावित्री सक्सेना ''द ज्योग्राफिकल सर्वे ऑफ पुराणाज'' दिल्ली, 1995 पृ0-379-80; 454
2. विमल चरण लाहा ''प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल'' अनु० राम कृष्ण द्विवेदी, लखनऊ, 1972; पृ0-149
3. वही, पृ0 140-141
4. सावित्री सक्सेना, पृ0 378-9
5. लाहा, पृ0 28; 178
6. सावित्री सक्सेना ; पृ0-379
7. राणा प्रसाद शर्मा, पृ0-420;
8. वामन शिवरामन आप्टे ''संस्कृत हिन्दी कोष'' दिल्ली; 1989; पृ0-797.
9. वही, पृ0-626
10. राणा प्रसाद शर्मा, पृ0-137
11. सावित्री सक्सैना, पृ0-381, 383
12. डा. सन्तोख सिंह, ''सरसधारा सरस्वती'' कादम्बिनी, मार्च 1994 पृ0-86
13. आप्टे, पृ0-289 ; 596
14. के.डी. वाजपेई ''द ज्योग्राफिकल डिक्शनरी आफ ऐशेंट एण्ड़ मेड़िविल इण्डिया'' वाराणसी, 1967, पृ0-116
15. रामकुमार राय, ''महाभारत कोष'' वाराणसी, 1982, पृ0-48
16. ए.ए.मैकड़ोनेल, ''वैदिक माईथोलोजी'' अनु० रामकुमार राय, वाराणसी 1984; पृ0-166
17. प्रेम नारायण अग्रवाल ''यमुना जो कभी सिंधु से मिलती थी'' कादम्बिनी सितम्बर, 1976; पृ0 26-30

    परमानन्द पांचाल, ''सरस्वती जो लुप्त हो गई'', कादम्बिनी, दिसम्बर 1997 पृ0 - 140-143
18. एच.डी. सांकलिया, ''राजस्थान में सभ्यता का प्रसार'' इतिहास समीक्षा दिसंबर, 1972; पृ0-244.
19. डी.एन.वाड़िया, ''ज्योलोजी ऑफ इंडिया'' दिल्ली, 1990, पृ0-52; 368.
20. विशाल थापर, ''वाट टू डू इन डिजेस्टर'' हिन्दुस्तान टाइम्स 4 अप्रैल 1999.

21. के.सी. यादव, ''हरियाणा का इतिहास'' दिल्ली, 1982 ; पृ0-2 ; 22.
22. डा. वंशीराम शर्मा, ''पश्चिमी हिमालय की पुराण कालीन संस्कृति के संदर्भ, देश एक कलाऐं अनेक'' में निबन्ध ; दिल्ली, 1988 पृ0-41.
23. दामोदर सात्वलेकर ''वैदिक आख्यान माला-26'' ; पृ0 7,8.
24. ई. डब्ल्यू. हापकिन्स, ''ऐपिक मायथोलोजी'', दिल्ली, 1968, पृ0-44.
25. उत्तरी खगोल में सप्तऋषि तारामंडल (Ursa Major) को वृहत ऋक्ष अर्थात बड़ा रीछ भी कहा जाता है। क्रतु को पुलह, पुलस्त्य आदि के साथ बताया गया है अर्थात क्रतुजन ऋक्षजनों की एक शाखा थे।
26. राणा प्रसाद शर्मा, पृ0-139 ; यह क्षमा...क्षेमक क्षेत्र की स्त्री का द्योतक शब्द है और क्षेमक मैनाक पर्वत का दूसरा नाम है...जो शिवालिक पर्वत ही था।
27. हैमचन्द्र राय चौधरी, ''प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास'' दिल्ली ; पृ0-23.
28. नागराज कपिल हरिद्वार-कनखल का निवासी वर्णित है- राणा प्रसाद शर्मा, पृ0-267 ; हापकिन्स, पृ0-13.
29. दामोदर कौशाम्बी, ''मिथक और यथार्थ'' अनु० नन्द किशोर नवल दिल्ली, 2001, पृ0-105 ; टिप्पणी-9.
30. राणा प्रसाद शर्मा ;. पृ0-126.
31. रागेय राघव, ''प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास'' दिल्ली, 1990 पृ0-126. चेदी के उपरिचर वसु (जिसे अन्यत्र हमने भीम सात्वत और सुदास पैजवन माना है) के पिता का नाम वायु0 में कृत, विष्णु0 में कृतक ; हरि0 और ब्रह्म0 में कृतयाज्न भाग्वत0 में कृतिन ; मतस्य0 में कृमि दिय गया है। इस प्रकार उसका साम्य अर्जुन सहस्त्रबाहू से बैठता है जिसके पिता चार भाई थे- कृतवीर्य, कृताग्नि, कृतवर्मा और कृतौजा ; हमने अन्यत्र सहत्रबाहू अर्जुन हैहय को सृज्जय सुदास पैजवन से भी मिलाया है।
32. डा. नवल वियोगी, ''प्राचीन भारत के शासक नाग, उनकी उत्पत्ति और इतिहास'' दिल्ली 2004 ; पृ0 1 से 3; रामकुमार राय ''महाभारत कोष'' पृ048 ; 161 ; 625.
33. कामिल बुल्के, ''रामकथा'' इलाहबाद, 1993, पृ0-503.
34. एक समय यहां की दलदलीय भूमि इतनी क्षारीय थी कि यहां दर्भ घास भी नहीं हो पाती थी इसलिए यह प्रदेश विदर्भ भी कहा गया। विदर्भ के पुत्र - क्रथ-कौशिक काथा नदी, कौशिकी/कौशिकी अथवा केशिनीवाल > सिनीवाली से सम्बंधित लगते हैं। यहां बहने वाली दृषद्वती नदी के कारण दृषद्वती के दक्षिण का क्षेत्र दशार्ण था.... और दशार्ण का अधिपति दशार्णन...। तभी रावण को दशानन कहा गया है जो दशार्णन का अपभ्रंश है। दशानन नाम उसकी आँखों के कारण नहीं था... यदि ऐसा होता तो वह बीसानन होना चाहिए था। दृषद्वती के उत्तर का क्षेत्र जिसमें सुघ भी आता था दृषद्वती के नाम पर दशार्ह था..... दशार्ह का अधिपति दशार्हथ जिसका अपभ्रंश दशरथ शब्द था.... दृषद्वती या दृष क्षेत्र के निवासी संभवत: दास कहे गए। अजजनों की प्राथमिक बस्ती अजोध्या का अधिपति दशरथ....असल में दासराज सुदास पैजवन ही था। ऋ 3.53.7 के अनुसार सुदास पैजवन भोजों का पूर्वज था, भोज यादव हैं और यादवों का सम्बंध यातुधानों से था...यदु पिता ययाति से शापित होकर क्रौंचद्वीप चला गया जहाँ उसके अनेक यातुधान पुत्र हुए''- हापकिन्स पृ0-187; रांगेयराघव; पृ0-87. हेती-प्रहेती मुर्गा टोटेम वाले यातुधान थे और कृष्ण अपने सिर पर म्यूर टोटेम-पंख धारण करता था। यादवों में कोटाम्बिक विवाह और हरण प्रथा थी। स्त्रियाँ अतिथि सत्कार का अपसरा कर्म निभातीं थी... पहले-पहले समाज मातृ सत्तात्मक था। आर्य साहित्य ने मातृ सत्तात्मक कथानकों को पितृसत्तामक कथानकों में पलटा तो दासराज... दशरथ बन गया। दशरथ के पिता का नाम अज था। उनके एक पूर्वज का नाम आद्रि; दोनों

नाम पिशाचों के भी हैं ; पिशाचों के सोलह जुड़वाँ जोड़े शब्द का अर्थ...पिशाच और उसकी वहन से है जो साथ खेलते बड़े होते...उसकी स्त्री सम्वंध में परिवर्तित हो जाती थी। बौद्ध ग्रन्थों में तामनत्सो का पुत्र- इक्षवाकु अपनी बहन सुभद्रा से विवाह करता है; वहाँ इक्षवाकु मतस्य जाति का था। दशरथ जातक में सीता राम की बहन है। शाक्यों, लिच्छिवियों, कोलियों की उत्पत्ति कथाओं में भाई-बहनों के विवाहों का उल्लेख मिलता है- **रोमिला थापर ''प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास'' अनु० आदित्य नारायण सिंह**, दिल्ली, 2001; पृ0-243, 267, 269; 270; टिप्पणी-58; **''वंश से राज्य तक'' अनु0 मंगलनाथ सिंह**, दिल्ली, 1977; पृ0-69; 96 टिप्पणी-47; **रांगेय राघव**, पृ0-190.

सम्भवत: स्वसुर शब्द कोटाम्बिक विवाह में स्वसा=बहन...के पिता के रूप से बना है। मेरा विचार है कि स्वसा सगी नहीं अपितु ममेरी, फुफेरी, चचेरी बहन होती थी और भी देखें पिछला अध्याय **''चैत्ररथी चितांग और चेदी चैत्ररथ जन''** टिप्पणी-12.

35. **रांगेय राघव**, पृ0-187.
36. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-194.
37. कश्यप = ताम्रा → शुकी →नटा → विनता →सुरसा- **हापकिन्स**, पृ0-21-23.
38. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0-196 ; ताम्रकर्णी, अंजन हाथी की स्त्री अंजना का एक नाम था और ताम्रवर्ण पुष्पदंत दिग्गज का एक पुत्र था।
39. वही, पृ0-31.
40. **कीथ व मैकडोनेल, ''वैदिक इण्डैक्स'' अनु० रामकुमार राय**, वाराणसी, 1962; भाग-1; मानचित्र **कैलाशनाथ द्विवेदी, ''ऋग्वैदिक भूगोल''** कानपुर, 1985, पृ0-288-289.
41. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-31.
42. वही
43. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2, पृ0-427.
44. ऋ. 3.53.15-16 ; 21-24 और यह घटना सौदासों के पतन का कारण बनी, -**कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2; पृ0-389; पृ0 532-33.
45. ऋ 3.53.7
46. ऐत्तरेय ब्रा0 7-17; शांखायन श्रौत सूत्र 16.11.2 में आजीगृत शुन:शैप का पैतृक नाम है। काठक संहिता 19.11 में इसे अंगिरस कहा गया है- **कीथ व मैकडोनेल** भाग-1; पृ0-63.
47. **आचार्य बलदेव उपाध्याय ''पुराणविमर्श''** वाराणसी, 1987; पृ0-382-83.
48. यमुना नदी की करोंदी घाटी जहाँ दोआबे में शिवालिक पर्वतों (हाथी बड़कला) से निकलने वाली बरसाती नदी करोंदी यमुना से मिलती है। करोंदी शब्द पौराणिक कालिन्दी का अपभ्रंश प्रतीत होता है जो यमुनानदी का एक नाम भी है। सहारनपुर में यमुना का एक ओर नाम कारा नदी.....भी इसी कालिन्दी के सम है। सगर की माता का नाम भी कालिन्दी था। यह सगर-शिग्रु/गरुडजनों के कारा-कालिन्दी/करौंदी/क्रौंच क्षेत्र में निवास का संकेत है।
49. **राणाप्रसाद शर्मा**, पृ0-197.
50. यमुनानदी के पश्चिम की शिवालिक पहाड़ियाँ विन्ध्य थीं और पूर्व की पहाड़ियां क्रौंच। तभी संयुक्त शब्द क्रौंच विन्ध्य है। क्रौंच पर्वत अधिक ऊंचे और दुर्गम हैं जब विन्ध्य को पार किया जा सकता है अर्थात उसका वेधन हो सकता है। विन्ध्य पर्वत क्षेत्र विशेषकर तलहटी की झील का नाम विन्ध्यसर था और जिसका अपभ्रंश बिन्दुसर। विन्ध्यपर्वत क्षेत्र की स्त्रियाँ विन्ध्या या विनता और खादर क्षेत्र की स्त्रियाँ कद्रू.....। गढ़वाल/गजवाल या गरुडवाल शब्द भी सम है और बद्री, वैधूर्य, विद्युत शब्दों में कुछ साम्य है। कुरुक्षेत्र का एक नाम विदूरथ या वेदीतीर्थ; मार्कण्डेय के पुत्र का नाम वेदशिरा; सोम्ब नदी क्षेत्र के निवासियों का द्योतक शम्भर (सोम्बर) की राजधानी बैजयन्तीपुर ; विन्ध्याचल निवासी विंदुगपिशाच जिसकी

मुक्ति तुम्बरू यक्ष ने की थी; सीता की सखी का नाम विद्या; अपसरा विद्युत जिव्हा; भीम यादवों का प्रदेश विदर्भ; वैद्यूत पर्वतों से निकली नदी > वैद्युती (सदादेनी या सौद्युम्नि); बलि की स्त्री विंध्यावली आदि सभी नाम विन्ध्य पर्वत (शिवालिक) के प्रांगण में होने वाली भौगोलिक, राजनैतिक, सामाजिक घटनाओं से निकले हैं।

51. **हापकिन्स,** पृ0 21-22.
52. **राणा प्रसाद शर्मा,** पृ0-436.
53. वही, पृ0-174; वे ब्रहमा के मानस पुत्र प्रचेता भी हैं जो दक्ष, नारद, भृगु आदि दस कहे गए हैं।
54. वही, पृ0-136.
55. वही, पृ. - 391
56. वही पृ-521 ; अथर्ववेद में सिनीवाली विष्णु की पत्नी है।
57. वही पृ.-550
58. वही पृ.-347; यह सोम हो सकता है,
59. **भगवान सिंह** अपसराओं का अर्थ जाड़े के दिनों में मैदानी भाग में उतरने वाले मातृसत्ताक जनों की युवतियों से लगाते है- **भगवान सिंह,''भारतीय सभ्यता की निर्मिती,''** पृ0-49
60. **सीता नाथ प्रधान, '' क्रोनोलाजी आफ ऐंशेट इण्डिया,''** दिल्ली, 1979.
61. **राणा प्रसाद शर्मा,** पृ0 82, 369; महाभारत में भद्रा यक्षपति कुबेर की स्त्री है- **रांगेय राघव,** पृ0-82; प्रतीत होता है कि रजतनाभ यक्ष ही कुबेर था।
62. **राणा प्रसाद शर्मा,** पृ0-368
63. वही, पृ0 - 298; 384; 426; 549.
64. वही, पृ0 - 385.
65 **रांगेय राघव,** पृ. - 232.
66. **राणा प्रसाद शर्मा,** पृ. 441.
67. हरियाणा की भूमि पर अंसख्यों ''माजरा'' सम्बन्धित स्थान है... ये कपि, वानर, विड़ाल, टोटेमिक जनों के प्राथमिक आवास के रुप में बसे होंगे। कपि, वानर, मतस्य, मकर, यक्ष, गुहयक आदि जन एक ही थे या इन में आपस में सम्बन्ध हो सकते थे इन में विवाह प्रथा नहीं थीं। पुत्रियाँ पिता के घर रह कर; या पुत्री अथवा बहन के ना रहने पर घर को स्त्री अतिथि सत्कार करती थीं। यह प्रथा दूर-दराज की बस्तियों, ग्राम-गौत्रों में बसे जनों के रहन- सहन, रीति-रिवाज, वस्त्र, यन्त्र बनाने की कला; मिथक, कथाऐं, विश्वास; और जीवनयापन की कला, नई-2 तकनीकी जानने का एक साधन थीं। अतिथि प्रथा से संतानों में जैनेटिक बदलाव होता था; वरना तो बस्तियाँ दूर-दराज होती थीं। भाषा आदि में अत्यधिक बदलाव के कारण; एक ही वस्ती में कई पीढ़ियों तक कौटाम्बिक सम्बन्ध होने के कारण जेनेटिक विसंगतियाँ आ जाती थी समाज अधिकतर मातृसत्तात्मक होता था; साथ खेलते-बड़े होते भाई-बहन के बीच स्त्री-पुरूष का सम्बन्ध बन जाना स्वभविक भी था और आवश्यक भी; क्योंकि दूसरा कोई तरीका था भी नहीं। इस सम्बन्ध को उनका समाज स्वीकार कर लेता था यह सम्बन्ध जीवन भर चलता भी था; तो भी बंधन जैसी कोई बात नहीं होती थी। स्त्री परपुरूष से सम्बन्ध बनाकर सन्तान उत्पन्न करने को स्वतन्त्र थी; जेनेटिक कारणों से यह सही भी था, किन्तु संतान मामा की ही उत्तराधिकारी बनती थी। दूसरे पुरूषों से उत्पन्न संतानों को लेकर एक दिन वह लौटती थी और पुत्र अपने मामा को पराजित कर उसकी हत्या कर उत्तराधिकार प्राप्त करते थे, किन्तु समाज मातृसत्तामक थां, नेता भले की पुरुष होता था किन्तु कुटुम्ब या दल का नेतृत्व बदलने में स्त्रियों की भूमि का निर्णायक होती थी- एक प्रकार से यह पति की बलि ही थी।

इस घटना के बाद स्त्री अपने पुत्रों के माध्यम से सत्ता प्राप्त कर लेती थी।

68. **कीथ व मैकडोनेल,** पृ0. 660.

सम्भवत: इसी पुंजिष्ठ का समानार्थी शब्द सुदास पैजवन का पैजवन शब्द रहा हो। वाजसनेई संहिता 30.16 और तैत्तरीय ब्रा0 3.4.121में बैन्द शब्द इसी का समानार्थी और अपभ्रंश शब्द प्रतीत होता है जिसे महीधर निषाद मानते हैं और सायण मछली पकड़ने वाला- **वैदिक इण्डैक्स** भाग-2, पृ0-80; पौराणिक अत्याचारी राजा वेन का कथानक वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को अग्नि में जीवित जलवा देने वाले सुदास पैजवन से मिलता है।.... वेन का पुत्र निषाद था... दूसरी ओर यादव वंशावली में भी ऋ.10.93.14 में दु:शीम, पृथवान, और वेन के बाद राम का उल्लेख है। पौराणिक दक्षिण कौशल के सुदास, पांचाल सुदास और काशी के सुदास का वैदिक सुदास पैजवन के साथ एक्य के समीकरण से (**सीतानाथ प्रधान;** पृ0 83 से 89) राम दशरथी दासराज्ञ सुदास पैजवन का नाती व उत्तराधिकारी भी सिद्ध होता है क्योंकि सुदास पैजवन के दौनों गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र राम के भी गुरु थे। ऋ. 3. 53.7 में भोजों का प्रथम पुरुष सुदास पैजवन ऋ.7.18.22 के अनुसार सृज्जय देववात का नाती है। पुराण के अनुसार सृज्जय की दो पुत्रियाँ भजमान यादव की स्त्रियाँ थीं इसीलिए सुदास भोजमान है वह यादव है। यादवों में मातृकुल की परिपाटी के हिसाब से सुदास पैजवन का नाती राम ही उसका उत्तराधिकारी होना चाहिऐ। संक्षिप्त में यह कि सुदास पैजवन ही दासराज्ञ निषादराज यादव, पैज्जवन अर्थात मतस्यराज था। सुदास शब्द चैत्ररथी नदी के चैत्रक अर्थात चैद्य का द्योतक है मतस्य0 50.15 में वह चैद्यवरा का पुत्र है भी। चैद्य उपरिचर की स्त्री गिरिका/< आद्रिका से उत्पन्न दो संतानें अजगन्धा सत्यवती और मतस्य या आद्रि पिशाच या अजगन्ध थे। चैद्य उपरिचर वसु ही भीम सात्वत और भीम ही उपर-उपर चलने वाला वायु या पवन था जिस का अन्जना (पुज्जक स्थला) से उत्पन्न पुत्र हनुमान था। भीम सात्वत की स्त्री कौशल्या/कोलाहल्या अर्थात क्रोष्ट्रा। सात्वत की पुत्री सत्यवती कहलायेगी इसलिए अजगंधा सत्यवती थी। हनुमान जिस की माता पुंज्जका अथवा अंजना थी, का पालक पिता केसरी (व्याघ्र टोटम वाला जन) था इसी व्याघ्र का शिकारी रूप वनरा/वानर अर्थात व्याघ/शिकारी जीवन जीने वाले कपि के रुप में चित्रित किया गया। मार्गार (< मार्जार), कैवर्त (केवट), पैंज्जिष्ठ (पुज्जक या पैज्जवन) मैनाल और बैन्द तथा आन्द जो सभी एक प्रकार के मछुऐ प्रतीत होते हैं। **वैदिक इण्डैक्स** भाग-2 पृ0.192 सायण का कथन है कि तालाब में दो किनारों से जाल पकड़ कर मछली पकड़ने वाले को धैवर; कटिये से मछली पकड़ने वाले को दाश और शौकल्य; जाल की सहायता से मछली पकड़ने वाले मार्गार; जल पर विषैली पत्तियों को रखकर मछली पकड़ने वाले पर्णक; छोटा बाँध बनाकर मछली पकड़ने वाले आन्द होते थे- वही, पृ0 193; ययाति पुत्र अनु और उसके वंशज तथा हनुमान मेरे विचार से आन्द रुप हैं क्योंकि उसकी माता अन्जना थी।

69. रावण को यक्षों से अवध्य रहने का वरदान (रामायण 1.15.13 में); रावण के विनाश के उद्देश्य से यक्ष विष्णु के पास गये (रामायण 1.15.24); ब्रहमा ने देवों को यक्षिणियों के गर्भ से वानरों को उत्पन्न करने का आदेश दिया(रामायण 1.17.5)- रामकुमार राय,'' वाल्मिकीय रामायण कोष,'' वाराणसी, 1965.

70. आप्टे, पृ0 973

71. **रामकुमार राय,''वाल्मिकीय रामायण कोष''** पृ0 250; **एफ०ई० पार्जीटर,'' ऐशेंट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रैडीशन्स'',** दिल्ली; 1997, पृ-82

72. **पार्जीटर,** पृ0-177;279

73. **हापकिन्स,** पृ0-156

74. वही पृ0-22

75. **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0-134
76. वही, पृ0-267
77. **उषा चौधरी,"इन्द्र एण्ड वरुण इन इण्डियन माईथोलोजी,"** दिल्ली, 1981; पृ0-146-147
78. **राणा प्रसाद शर्मा** पृ0-520
79 **हापकिन्स**, पृ0-15
80. **कामिल बुल्के**, पृ0-498
81. ऐत्तरेय ब्रा0 7.18 मे मलेच्छ और नीच कुल के पुलिन्द, विश्वामित्र के पुत्रों आन्ध, पुण्ड्र, शबर और मूतिब के साथ हैं। हरिश्चन्द्र द्वारा वरुण देव को दी जा रही नर बलि से शुनशैप को बचाकर विश्वामित्र ने उसे अपना पुत्र बनाया था। विश्वामित्र के जिन पुत्रों ने इसका विरोध किया, उन्हें विश्वामित्र ने आन्ध्र, पुण्ड्र, शबर, मूतिब और पुलिन्द हो जाने का शाप देकर निष्कासित दिया था।
82. **आर. मार्टिन स्मिथ,"डेट एण्ड डायनेस्टीज आफ अर्लीऐस्ट इण्डिया,"** दिल्ली, 1973; पृ- 248
83. वही,
84. वही, और पृ. 39
85. वही,
86. वही, और पृ. 268
87. **राणा प्रसाद शर्मा** पृ. 349-525
88. **आर. मार्टिन स्मिथ**, पृ. 38.39;152; महाभारत के अनुसार उशीनर ने यमुना नदी के समीप दो जलाशयों पर यज्ञ किया था- **राय चौधरी**, पृ.- 54.
89. स्कंद या कार्तिकेय की छह माताओं के नाम काकी, हलिमा, ब्रन्हिता, अर्था, पलाला और वेमित्रा। कहीं कहीं इनके नामों में भिन्नता है।
90. इस मिथक कि गरुड ने कार्तिकेय को म्यूर (सुर्पण) दिया था का अर्थ है कि गरुड़ जनों ने अपनी पश्चिमी शाखा अरुण-अनरण्यों पर कृतु कार्तिकेयों की सत्ता स्वीकार कर ली थी।
91: **हापकिन्स**, पृ. 227
92 वही, पृ. - 224
93 **राणा प्रसाद शर्मा** पृ. - 283; 378
94. कीथ वे मैकडोनेल, भाग-1 पृ. 207-208. देवसेना के अन्य नाम -षष्टी, लक्ष्मी, आशा, सुखप्रदा, अपराजिता, सादृत्रहस्टी, श्री पंचमी - **हापकिन्स**, पृ. 229.
95. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ. 280
96. नन्दोलाल डे, **"ज्योग्रफिकल डिक्शनरी....."** दिल्ली, 1990; पृ0 76. डी०सी० सिरकार," स्टडी इन दे ज्योग्राफिकल डिक्शनरी आफ ऐंशेट एण्ड मैडिविल इण्डिया", पृ. 59-60; **सावित्री सक्सैना**, पृ. 450-451
97. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ. 217
98. वही, पृ. 22, 249
99. वही, पृ. 218
100. वही पृ. 90
101. **हापाकिन्स**, पृ. 121
102. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ. -369
103. वही, पृ.- 368
104. वही, पृ.- 416
105. वही, पृ.- 329

106. वही, पृ.- 153
107. कामिल बुल्के, पृ. 9 से 18 पठनीय
108. वी. के. माथुर,'' ऐतिहासिक स्थानावली,'' जयपुर, 1969; पृ. 968
109. वहीं पृ. 911; राणा प्रसाद शर्मा, पृ-368; सुर्यवंशी, ''ज्योग्राफी आफ महाभारत'' पृ. 133.
110. वी.के. माथुर पृ. 968; 911 और 657
111. भगवाल सिंह, ''भारतीय समाज की निर्मिती'', दिल्ली, 2004, पृ. 236; टिप्पणी-6
112. वही, पृ. 30
113. भगवान सिंह, ''हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य,'' दिल्ली, 2003; पृ. 513 ये 516 पठनीय
114. हापकिन्स, पृ. 125
115. उषा चौधरी, पृ. 160; 195
116. पार्जीटर, पु. 202

अध्याय-16

त्रित्सु जनों का मूल प्रदेश और राजनैतिक इतिहास

पुरातत्व और साहित्यिक स्त्रोतों का पारस्परिक संम्बध दिखलाने के पूर्ववर्ती प्रयत्न मुख्यरूप से आर्यो और द्रविड़ों की पहचान के प्रश्न पर केन्द्रित रहे हैं। अनेक पुरातात्विक संस्कृतियों को आजमाने पर जिस संस्कृति के साथ आर्यो का सम्बन्ध सबसे अधिक युक्तिर्पूण लगा वह चित्रित धूसर मृदभांड़ संस्कृति है लेकिन आर्य शब्द में बहुत से समूहों का समावेश है इसका भौगोलिक संस्कृति वितरण बहुत विस्तृत है इसके अलावा साहित्यिक स्त्रोतों में एक भौगोलिक संस्कृति के रूप में इसकी विलक्षणता का नृजातीय अर्थ तो अस्पष्ट है ही। फिर इस काल में आर्यीकरण के स्वरूप का हमें स्पष्ट बोध नहीं है और न ही उन माध्यमों का जिनसे यह क्रिया स्पष्ट हुई।[1]

इस सभ्यता संस्कृति को पहले तो केवल एक शब्द "आर्य" या फिर "वैदिकजन" के नाम से नहीं बल्कि एक संयुक्त नाम "आर्य-अनार्य" संस्कृति जैसे नाम से जानना होगा। इनके समाज में दोनों ही संस्कृतियों के तत्व विद्यमान थे। चि॰ धू॰ मृ॰ संस्कृति भी अलग से कोई संस्कृति नहीं; अपने विशेष चमक और अलंकरणों से ये भांड़ भले ही अलग से पहचाने जाते हों तो भी ये एक ही स्तर पर अन्य प्रकार के भांड़ों के साथ ही प्राप्त होते हैं और वहाँ जहाँ ये सर्वाधिक प्राप्त होते हैं इन का प्रतिशत अन्य प्रकार के भांड़ों की तुलना में कम ही है।[2]

इसका अर्थ यह नहीं है कि एक ही बस्ती में कई जातियों के समूह, इकटठे रहते थे, कुछ-कुछ अन्तराल पर आकर बसे और फिर चले गये। असल में एक ही स्थान के एक ही स्तर से प्राप्त कई प्रकार के मृदभांड़ उस वर्ण व्यवस्था की ओर ईशारा करते हैं जो वैदिक जनों में थी। यदि यह विचार सही है और हम यह पता लगा लें कि कौन सा भॉड़ किस

वर्ण विशेष का था तो हम न केवल उन बस्तियों का पता लगा सकते हैं जो पूर्ण रूप से वैदिक जनों की थी अपितु यह भी कि अमुक बस्ती में विभिन्न वर्णो के जनों का प्रतिशत कितना-कितना था। उदाहरण के लिए सरस्वती नदी के किसी विशेष क्षेत्र में त्रुत्सु जनों की बस्तियाँ थीं वहाँ मिले विभिन्न प्रकार के बरतनों का अर्थ यह नहीं लगाना चाहिए कि वहॉ यदु, सृज्जय, अरूण-अनरण्य, पुरू आदि जन भी रहते थे बल्कि इस का अभिप्राय यह है कि त्रुत्सु जनों में विभिन्न वर्णों का प्रतिशत कितना-कितना था।

इसी प्रकार हम किसी क्षेत्र विशेष में यदु जनों की बस्तियों में विभिन्न वर्णो का प्रतिशत ज्ञात कर सकते हैं।

ऐसी जाति या समुदाय जो अपने परिचित, पड़ौसी सम्बन्धी, अपने बराबर के, अपने से बड़े, को आदर स्वरूप "आर्य" कहते थे और......स्त्रियॉ अपने पतियों को "आर्य पुत्र" कहतीं थीं, हम उन्हें आर्य मान सकते हैं साधन, कर्म, व्यवस्था आदि के मामले में वह दूसरों से श्रेष्ठ तो थे ही। बस्ती बसाकर स्थाई रूप से तो हो सकता है अन्य जन भी बसे हों किन्तु बेहतर सामाजिक ढ़ांचा तो केवल आर्यो में ही था। वे उत्पादकता से जुड़े थे। प्रत्येक वर्ण अपना-अपना कर्म करे......यज्ञ-पूजा-विवाह आदि सब कुछ नियम और वर्ण के हिसाब से विधि सम्मत हों......ये विशेषताऐं उन्हें दूसरों से श्रेष्ठ अर्थात आर्य बनातीं थीं।[3]

जो उन की भाँति नियम व्यवस्था से नहीं चलते थे उनकी भाँति यज्ञ-पूजा धार्मिक कार्यों को विधि सम्मत नहीं करते थे, वर्ण व्यवस्था को नहीं मानते थे, अनार्य और ब्रात्य कहा गया। पहले चारों वर्ण आर्यो के अन्तर्गत थे, बाद में वर्ण जाति के अर्थ में बदला तो चतुर्थ वर्ण को आर्यो से नितान्त भिन्न प्रस्तुत किया गया। साहित्यिक रूप से आर्यो को दो शाखाऐं प्रतीत होती हैं पहले इन्द्र पूजक आनब जन और दूसरे विष्णु पूजक गरूड़ या अरूण-अनरण्य जन। कुछेक अपवादों को छोड़ कर दोनों जातियाँ एक दूसरे की विरोधी रही।

मानवों की भांति देवता आपस में नहीं लड़ते। प्रत्यक्ष में वे एक दूसरे के सहयोगी रहते हैं किन्तु अप्रत्यक्ष वे विरोधी ही हैं। अपने भक्त की परीक्षा ले सकते हैं कि वह उसी देवता में विस्वास रखते हुऐ अपने कर्म से नहीं ड़िगेगा।- आनब जन इन्द्र पूजक थे वे आग्नेय जन (अंगिरा) थे और गरूड़ अरूण-अनरण्य विष्णु पूजक थे। इन्द्र गरूड़ का वेष रखकर उशीनर आनब की परीक्षा लेते हैं कि वह कपोत (जनों) की रक्षा करेगा या नहीं, उशीनर इस परीक्षा में सफल होता है वह कपोत की रक्षा में अपने शरीर का समूचा माँस दे देता है और इन्द्र उसे आर्शीवाद देते हैं। कपोत जन कपोतरोमा यादव जन हैं जो अनु-आनब जन ही हैं यह हम आगे देखेंगे। अर्थात कपोत जन भी इन्द्र पूजक है। दूसरी तरफ आनब बलि है (बलि वैरोचन, वानर बालि और बालखिल्य बाल्हीक एक ही बात है) जाहिर है वे इन्द्र पूजक थे, विष्णु वामन रूप रख कर बलि से दान में तीन पग भूमि माँगते हैं और उसका सबकुछ ले लेते है।[4] मिथकों में चाहे इसे दानवीर होने की परीक्षा लेना बताया गया हो किन्तु तथ्य दूसरा है असल में आनब जनों की दोनों शाखाओं उशीनर और तितिक्षु बलि-बाल्हीक जनों पर विष्णु पूजक गरूड़ जनों का आक्रमण हुआ था; उशीनर हरिद्वार कनखल का प्रदेश छोड़ कर सरस्वती-दृषद्वती घाटी में आ बसे; और बलि-बाल्हीक जन शिवालिक पर्वत माला का प्रदेश छोड़ कर दक्षिण-पूर्वी भारत में अंग,बंग,कलिंग,पुण्ड्र, सुहय और आंन्ध में जा बसे। गरूड़ जन सहारनपुर, यमुना नगर, पानीपत, रोहतक के प्रदेश में पसर गये । गरूड़ और अरूण सूर्य के वाहन > सूर्यवाही / सूर्यवंशी हुऐ। कर्ण जो कि सूर्य या विष्णु पुत्र था, की रक्षा के कवच कुण्ड़ल इन्द्र ने मॉग लिऐ थे। इन्द्र पूजा.......विष्णु

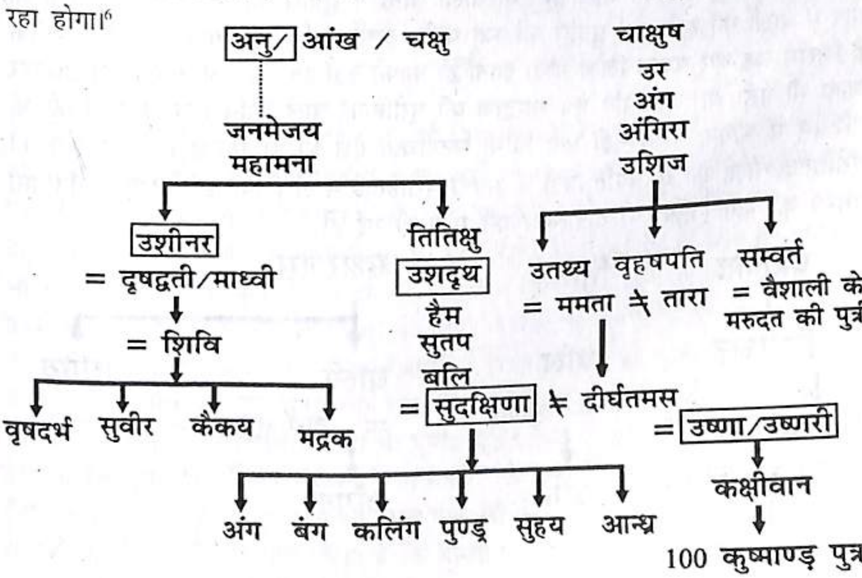
के अवतार कृष्ण ने समाप्त करवाई। इन्द्र पुत्र अर्जुन.......प्रत्येक पग कृष्ण की सलाह और मर्जी पर चलता है यह मिथक इन्द्र के गौण होते महत्व का परिचायक है।

त्रुत्सु जनों का मूल

ऋग्वेद में वर्णित त्रुत्सु जनों में से अनेक नाम पुराणों के पांचाल वंश विवरण में मिलते हैं किन्तु वहाँ त्रुत्सु शब्द का उल्लेख नहीं है। विद्वानों के सामने एक बड़ा प्रश्न सदा रहा कि ये त्रुत्सु जन कौन है? इनका मूल क्या है और पांचालों से इनका सम्बन्ध किस प्रकार है? कैसे ये त्रुत्सु जन एकाएक सरस्वती-दृषदृती नदी प्रदेश में प्रकट हो जाते हैं। प्राचीन साहित्य में एक दम सीधे तरीके से या फिर यूँ कहें कि इस बात का पसोसा गया जवाब नहीं है किन्तु कुछ संकेत और तथ्य है जो इस निष्कर्ष पर पहुँचा देते हैं कि पौराणिक आनब उशीनरों की शिबि शाखा ही ऋग्वैदिक त्रुत्सु जन थे । सबसे पहले सबसे बड़े तथ्य के साथ तर्क करें- आनब तितिक्षु के वंशज बलि के कुलगुरू अंगिरावशी उतथ्य के पुत्र दीर्धतमस थे और इस उतथ्य के भाई वृहष्पति के पुत्र भारद्वाज त्रुत्सुओं के कुलगुरू थे। वैदिक त्रुत्सुओं के कुलगुरू भारद्वाजों वाली परम्परा पुराणों के पांचालों तक आती है। आनबों की दोनों शाखाऐं और इनके कुलगुरू.......सभी इन्द्र पूजक थे यहॉ तक कि आनब बलि के सम किसकिन्धा का वानर बाली.......इन्द्र का पुत्र है।

आनबजन अपने कुलगुरू अंगिरा वंशिओं के साथ अनुप्रदेश / उशीनर / उशीरध्वज से आकर सरस्वती-दृषद्वती नदी प्रदेश में बसे थे। ये कुछ-कुछ गरुड़ों के बड़े भाई अरूण-अनरण्यों/तार्क्ष्यों सम ही थे किन्तु अरुणजन जहाँ वरुण पूजक थे.... आनबों में इन्द्र पूजा का विशेष महत्व था।

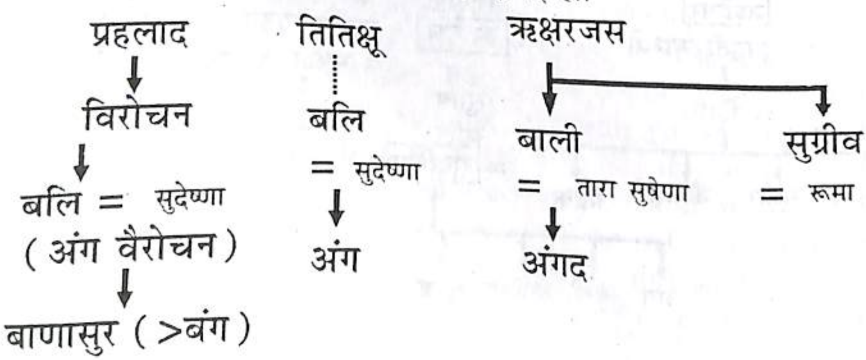
महाभारत में कहा गया है कि उशीनर समूची पृथ्वी का स्वामी था, उशीनर शिबि ने पृथ्वी को शरीर पर त्वचा के समान ढक लिया।[5] उशीनर द्वारा यमुना नदी के समीप जला और उपजला नदियों के तटों प यज्ञ किए जाने का वर्णन है। कथा सरित्तसागर उशीनर पर्वत को कनखल के समीप माना गया है जहाँ गंगा मैदानों में उतरती है। कनखल हरिद्वार के समीप है। उशीनर पर्वत निश्चित रूप से दिव्यावधान का उशीगिरि तथा विनय ग्रन्थों का उशीरध्वज रहा होगा।[6]



कौशितकि उपनिषद 4.1; शांखायन आरण्यक 26; ऐत्तरेय ब्रा. 8.14 में उशीनर, कुरू-पांचालों और वशसों से सम्बंधित हैं। गौपथ ब्रा. 2.9 में उशीनर और वशस उत्तरी क्षेत्र के निवासी बताए गए हैं। ऋ 10.59.10 में उशीनरों की रानी उशीनरानी का उल्लेख है। त्सिमिर का विचार से ये पहले अपेक्षाकृत अधिक उत्तर-पश्चिम में रहते थे। उनका सिद्धांत ऋग्वेद अनुक्रमाणी 11.179 के ''शिवि उशीनर'' पर आधारित है; शिवि जन डियोडोरस द्वारा वर्णित सिकन्दर कालीन शिबोई हैं जो सिंध और चेनाब के बीच रहते थे किन्तु ये प्रमाणिक निष्कर्ष नहीं हैं क्योंकि महाकाव्य युग में ये कुरुक्षेत्र के उत्तरी भागों में रहते थे।[7]

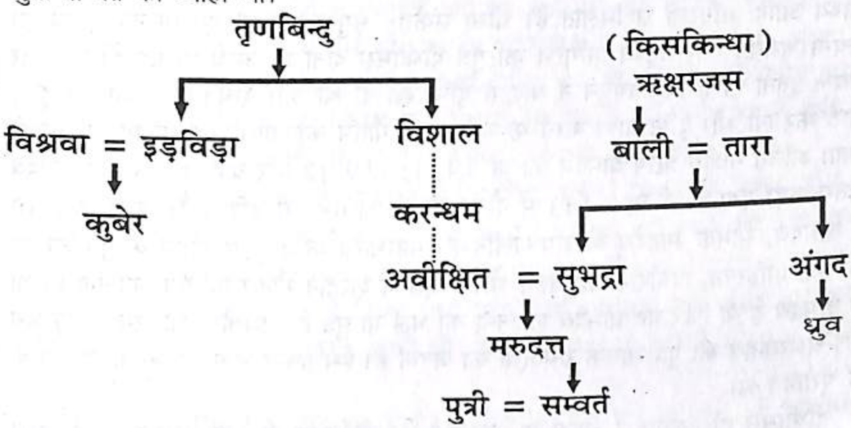
अंगिरा और अनु-आनबजन एक ही हैं। अन्तर केवल इतना है कि अनुजनों में से कुछ ने याजक या पुरोहिताई का काम संभाल लिया और वे अंगिरा भारद्वाज कहलाए। वंशावली देखें तो अनु का साम्य अंग और अंगिरा से है। अनु>अनुग>अंग। बाद में भी अंग के पुत्र अंगिरा के वंशज दीर्घतमस आनब बलि की स्त्री सुदेष्णा से जिन छह पुत्रों को उत्पन्न करते हैं उनमें से एक का नाम अंग है।

दीर्घतमस द्वारा सुदेष्णा से बलि के ही छह पुत्र उत्पन्न करवाना बिल्कुल उसी प्रकार है जैसे बाद में सत्यवती ने अपने पुत्र विचित्रवीर्य की रानियों अम्बिका और अम्बालिका से पुत्र उत्पन्न करने के लिए पहले उसी वंश के भीष्म से कहा, फिर अपने ही पुत्र व्यास को बुलाया, इसी प्रकार दीर्घतमस भी बलि का समवंशी ही था। उशीनर का साम्य उशिज से है और उशद्रथ उतथ्य से मिलता-जुलता है। इसके अतिरिक्त एक और साम्य, भले ही वह दूर की कौड़ी लगता हो कि अनुवंशी बलि वृहषपति के सम है। वृहषपति>बल:ष्पति>बल:ष>बलि (इस साम्य में किसकिन्धापति वानर बलि भी जुड़ता है। वृहषपति की स्त्री का नाम तारा तो वानर बाली का स्त्री का नाम भी तारा।) इस साम्य को बैठाने की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि वृहषपति ने उतथ्य की स्त्री (दीर्घतमस की माता) ममता के साथ बलात्कार किया था बदले में ममता के पुत्र दीर्घतमस ने बलि की स्त्री सुदेष्णा से छह पुत्र उत्पन्न किए। (एकदम समान सा लगने वाला मिथक बाली वानर ने सुग्रीव की स्त्री रूमा को छीना था बाद में बाली की स्त्री तारा सुग्रीव की स्त्री बनी) अर्थात बलि उस वृहषपति का ही प्रतीक है जिससे छह बार बदला लिया गया। इतना ही काफी नहीं इन छहों को अपना क्षेत्र छोड़कर जाना भी पड़ा था। वृहषपति पुत्र भारद्वाज की पुरोहिताई वाले शिबि (त्रुत्सु) जनों को भी पश्चिम में भागना पड़ा। नहीं पता किन्तु घटनाचक्र ऐसे भी हो सकता है कि उतथ्य की पुरोहिताई वालों को वृहषपति जनों ने अपनी पुरोहिताई में ले लिया, इसे ही वृहषपति द्वारा उतथ्य की स्त्री (क्षेत्र) में बलात्कार की संज्ञा दी गई हो।



वृहषपति हालांकि आदित्य देवतागणों में नहीं है तो भी उसे देवत्व प्राप्त लगता है।[8] वृहषपति ऋ 1.14.3 में इन्द्र, वायु, मित्र; अग्नि, पूषन, भग, मरुदतगणों के साथ हैं।[9] ऋ. 3.20.5 में अग्नि, उषा, सवित्र, मित्र, वरूण, वसुनि, रुद्र, आदित्य के साथ और ऋ 4.40. 1 में अग्नि, ऊषा, सूर्य के साथ हैं।[10] ऋ 4.50.4 में तो वृहषपति सूर्य की भाँति एक देवता है। अथर्ववेद 14.1.54 में वधु को आशीर्वाद देने के संदर्भ में वृहषपति-इन्द्र, अग्नि, स्वर्ग-पृथ्वी, भग, अश्विनी कुमार, मरुदत्त, ब्राह्मण, सोम के साथ वर्णित है।[11] अथर्ववेद 11. 9.25 में शत्रुओं पर शासन करने के संदर्भ में वृहषपति-मित्र, प्रजापति, अग्नि, धाष्ट्र इन्द्र, मरुदत्त, आदित्य के साथ हैं।[12]

यह हो सकता है कि देवत्व ग्रहण करने का अधिकार उतथ्य का रहा हो और वृहषपति ने कर लिया हो, जिसे उतथ्य के अधिकार क्षेत्र (स्त्री) में वृहषपति का बलात्कार समझाने के लिए ऐसे मिथक की रचना की गई हो। अंगिरा उशिज के तीसरे पुत्र सम्वर्त के विषय में महाभारत में कथा है कि वृहषपति ने अपने आपको इन्द्र का पुरोहित घोषित कर लिया तो वैशाली के मरुदत्त ने अंगिरा सम्वर्त को अपना पुरोहित बना लिया। इन मरुदत्त ने अपनी पुत्री सम्वर्त को ब्याही थी।[13]



काम्यकवन (सरस्वती नदी प्रदेश में) के निवासी त्रणबिन्दु के पुत्र विशाल ने वैशाली की स्थापना की थी। मूल वैशाली, कम से कम मरुदत्त और उसके गोद लिए हुए पुत्र दुश्यंत तक तो सरस्वती-दृषद्वती नदी प्रदेश में ही थी और यही वे मरुदत्त हैं जो यदुवंश में भी हैं और ऋग्वेद के देवजनों की श्रेणी में भी हैं। उन्हें देवताओं की श्रेणी में संभवतः इसलिए भी स्थान मिला हो कि युद्ध में वे इन्द्रपूजक त्रुत्सुजनों के समर्थक रहे। दुश्यंत (दृषद्वती नदी प्रदेश के दृषद्वन्तों का द्योतक शब्द) के पुत्र भरत ने गंगा, यमुना, सरस्वती नदियों के तटों पर यज्ञ किए थे। इन भरतजनों ने यादवों सात्वतों से उनके यज्ञ का घोड़ा छीना था अर्थात उनके विजय अभियान को रोका था। भरत के अभिषेककर्ता ऐत्तरेय ब्रा. 8.21-22 और भागवत. के अनुसार दीर्घतमस मामतेय थे। दुष्यंत वृद्धावस्था में अन्धे हो गए थे इससे प्रतीत होता है कि दृषद्वन्तों के क्षेत्र में अन्धों/ अन्धकों / आन्ध्रों (दीर्घतमसों) ने अधिकार कर लिया था। बाद में उन्होंने भरतों की सत्ता मान ली और भरतजन भी इस क्षेत्र पर लम्बे समय तक राज्य नहीं कर पाए। कथा है कि दीर्घतमस के कहने पर भरत ने वृहषपति के

पुत्र भारद्वाज वितथ (जोकि मरुदत्त के यहाँ रह रहे थे) को अपना उत्तराधिकारी बनाया।[14] इससे अनुमान लगता है कि भरतजन ही त्रुत्सु या दृषदश्व जन थे। ऋ 7.33.6; 83.6; 8; 7.18.13 से भी सिद्ध होता है कि त्रुत्सु भरतों की शाखा थे।[15] ऋ 6.27.5 में त्रुत्सुजन सृञ्जयों के विरुद्ध हैं।[16]

वृहषपति और वरुण में साम्य

उच्चारण में साम्य से भार्गव और भारद्वाज एक ही जाति की दो शाखाऐं प्रतीत होती हैं। भार्गव वरुण पुत्र अर्थात वरेण्य हैं और भारद्वाज वृहषपति पुत्र हैं। वृहषपति के अंश से उत्पन्न तार की पुत्री तारा किसकिन्धा नरेश बाली की स्त्री है। तार सुपर्ण या पनस ही है और सुपर्ण वरूण का पुत्र कहा गया है अर्थात वृहषपति ही वरूण है। इसका एक संकेत और भी है कि जिस प्रकार वृहषपति ने अपने भाई उतथ्य की स्त्री से बलात्कार किया था, वैसे ही उतथ्य की स्त्री भद्रा को वरूण भगा ले गया था।[17] ममता और भद्रा में कोई भेद नहीं दिखता। तीसरा संकेत - पुराणों में वृहषपति के पूर्व पुरुष उर और उशिज हैं, वहीं वरुण पुत्र भृगु के दूसरे पुत्र अपनवन का पुत्र ओर्व है कहीं-कहीं यह ओर्व चयवन और मनु पुत्री आरुषी का पुत्र है।[18] भृगु के पुत्र शुक्र को कवि उशनस कहा गया है। इस प्रकार भार्गव-वारुणेयों में मिलने वाले ओर्व, उशनस नाम उन्हें वृहषपति सम्बंधी उर, उशिज, उतथ्य आदि अंगिरसों से मिलाते हैं। चौथा संकेत- भृगु वरेण्य के पुलोमा नामक स्त्री से उत्पन्न चयवन और उतथ्य अंगिरस का पुत्र दीर्घतमस दोनों ही अन्धे प्रसिद्ध हैं। कथान्तर केवल इतना ही है कि चयवन ने बाद में दृष्टि खो दी थी और दीर्घतमस ने बाद में दृष्टि प्राप्त कर ली थी। दृष्टि प्राप्त करने के उपरान्त वे गौतम कहलाए।[19] यह उचित प्रतीत नहीं होता। अंगिरा गोत्रीय ऋषि वामदेव को ऋ 4.4.11; 32.9-12 और ब्रह्म. 4.126.7 में वामदेव गौतम कहा गया है। वे ऋ 4.4.13 में दीर्घतमस तो 21.6-7 में उशिज हैं। ऋ 4.15.7-10 में वामदेव, सोमक साहदेव के समकालीन हैं। महाभारत के अनुसार गौतम के पुत्र शरद्वान की स्त्री अहिल्या, दिवोदास की बहन थी।[20] ऐसे में शरद्वान गौतम का पुत्र शतानन्द ही या तो वामदेव है या फिर यह वामदेव शतानन्द का भाई या पुत्र है।[21] प्रस्तोक और सहदेव सृञ्जय भाई थे। सहदेव का पुत्र सोमक रामकथा का जनक है। इस प्रकार शतानन्द जनक या सोमक के पुरोहित थे।

दीर्घतमस ही अन्धक / आन्ध्र या अन्धजन थे। दीर्घतमस के आगे और पीछे के अक्षर हटा देने पर गौतम शब्द बना। वे ही दृषद्वती नदी क्षेत्र के निवासी बने- दीर्घतमस>दृषद्वतमः।

अंगों के वंशज उतथ्यों का आनव शिबिजनों से सम्बंध याजक और जजमान का है। ऋ 4.16.13-18 में अतिथिग्व कहा गया दिवोदास 'अतिथि सत्कार' के कारण दिवोदास अतिथिग्व नहीं है अपितु उतथ्यों का जजमान होने के कारण है। अतिथिग्व दिवोदास, शम्भर की पराजय के संदर्भ में ऋ 1.51.6 ; 112.14 ; 4.26.3 ; 6.47.22 में; करन्ज और पर्णय के वध में इन्द्र की सहायता के संदर्भ में ऋ 1.53.8 ; 10.48.8 में और तूर्वयाण पक्थ द्वारा आयु, कुत्स के साथ अतिथिग्व की पराजय के संदर्भ में ऋ 1.53.10 ; 2.14.7 ; 6.18.13 ; 8.53.2 में वर्णित है। रौथ उपरोक्त तीनों संदर्भों में वर्णित अतिथिग्वों को तीन अलग-अलग अतिथिग्व मानते हैं।[22]

सीतानाथ प्रधान ऋ 4.30.14 ; 6.26.3 ; 6.43 ; 6.47.22 के आधार पर तीनों अतिथिग्वों को एक ही व्यक्ति त्रुत्सु दिवोदास मानते हैं।[23]

अनु शब्द से दो शब्द बनाए गए। एक तो अंग, दूसरा आँख। अनुवंशियों के कुल गुरू

अंगिराजन ये हम वर्णित कर चुके हैं अब अनु से बने शब्द आँख, चक्षु या दृष्टि। दो शाखाएें हुई आँख वाले, बिना आँख वाले। दूसरे शब्दों में अंग वाले और बिना अंग वाले। कामदेव के अंग दहन की कथा कमोबेश रूप से इन बिना अंग वालों से जुड़ी होंगी। ऐत्तरेय ब्रा. 8. 21 में एक अंग वैरोचन है जबकि हिरण्यकशिपु के वंश में किसी अंग का कोई संकेत नहीं। मार्टिन स्मिथ ने आनब हैम को हिरण्यकशिपु से मिलाया है।[24]

पुराणों में अनु के तीन पुत्र थे – सम्भानर, चाक्षुष और परोक्ष ! एक ही नदी जब पूर्णरूप से लबालब बहती तो अनुमति थी, थोड़ी अनियमितता और अनिश्चितता से बहती तो सिनीवाली थी अर्थात दृषद्वती अनियमित, अनिश्चित और कभी लुप्त हो जाने वाली चन्द्रकलाओं जैसी नदी थी शायद तभी अंगिरा की पुत्रियों के नाम कुहू, राका, अनुमति और सिनीवाली थे। ये चारों लक्ष्मी और विधाता के भाई द्याता की स्त्रियाँ बनीं। अनुमति के पुत्र का नाम पूर्णमास और सिनीवाली के पुत्र का नाम दर्श था।[25] सम्भवतः ये दर्श ही दृषद्वती नदी क्षेत्र के दृषद्वन्त अथवा दुश्यंत थे। मैनाक पर्वतमाला / शिवालिक[26] की मैनाकाओं की पुत्री शकुन्तला (शकुन्त>यगुन्ध>युगन्धर[27]) के दृषद्वन्तों के मिलन से भरत अस्तित्व में आए। दृषद्वती के अन्य नाम सुभद्रा, माध्वी और वसुन्धरा। माध्वी को कुरुक्षेत्र की नदी कहा गया है।[28]

दृषद्वन्तों / दृष्टिवालों / आँख वालों अर्थात अनु-उशीनरों के इस क्षेत्र में आ बसने से पूर्व इस नदी का नाम माध्वी था। माध्वी नदी का क्षेत्र मधु क्षेत्र था और निवासी मधु या माधव। इसी नदी के क्षेत्रों में वसु और भद्रजन भी बसे हुए थे अर्थात माध्वी, सुभद्रा और वसुन्धरा पूरी दृषद्वती नदी का नाम ही नहीं था अपितु एक ही नदी के कई क्षेत्रीय नाम थे। यह संकेत हैं उस मिथक का जिसमें कहा गया है कि ययाति की कन्या माध्वी बारी-बारी से पाँच राजाओं को दी गई और सभी ने उससे एक-एक पुत्र उत्पन्न किया।

पुराणों में माध्वी के मधुजनों से सम्बंधित अनेकों मिथक हैं जिनके पीछे एक विस्तृत इतिहास छिपा है। पहला है कि विष्णु ने मधु का वध कर उसके मैदे से पृथ्वी का निर्माण किया। यह मिथक विष्णु पूजक या विष्णु वाहन गरुडों द्वारा मधुजनों के माध्वी नदी क्षेत्र पर अधिकार को दर्शाता है किन्तु इससे पहले यहाँ मान्धाता जन बसे थे। मिथक है कि मान्धाता की हत्या मधु यादव ने की थी। दोनों मधु एक ही बात है और मधु यादव ही हैहय मधु है।

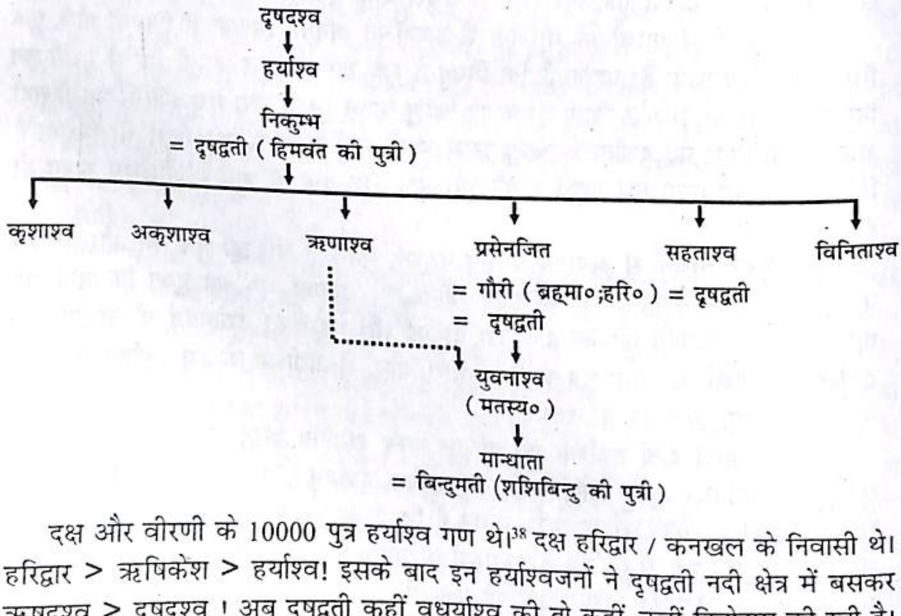
दूसरे मिथक में अनरण्य के पुत्र हर्याश्व की स्त्री मधु की पुत्री थी और हर्याश्व के पुत्र यदु ने अपने नाना मधु का प्रदेश जीता था।[29] इसका अर्थ यह हुआ कि यही वह हर्याश्व है जिये ययाति की कन्या माध्वी दी गई थी। महाभारत उद्योगपर्व के अनुसार इन हर्याश्व का माध्वी से जन्मा पुत्र वसुमना था।[30] वायु. में अयोध्या के इस हर्याश्व का पिता त्रसदस्यु (विष्णु. में प्रसदस्व) था।[31]

उपर्युक्त दोनों हर्याश्वों का पांचाल राज्य स्थापित करने वाले मुदगल, सृज्जय, वृहदिशुव, यवीनर (प्रवीर) और काम्पिल्य के पिता हर्याश्व (विष्णु पुराण में अजमीढ़वंशी चाक्षुष / ऋक्ष के पौत्र[32])से साम्य है; कथन है कि हर्याश्व अपने स्वशुर मधु के पास चला गया। उनकी सहायता से हर्याश्व ने अयोध्या के पश्चिम का भूभाग जीता[33] हर्याश्व के पुत्र यदु को आनर्त (अनुपर्वत / शिवालिक की तलहटी) से शूरसेन (श्रूघन) तक का राज्य मिला था। यदु की पाँच स्त्रियाँ धूम्रवर्ण नाग की पुत्रियाँ थी। अनुमान होता है कि युदजनों का क्षेत्र पहले धूम्रवर्ण नाग का क्षेत्र था।[34]

अयोध्या पति अनरण्य में सूर्यवंशी माना जाता है असल में सूर्य के वाहक/वाहन >

सूर्यवाही > सूर्यवंशी अरुण के वंशज अनरण्य थे। इन अनरण्य की अयोध्या.... अजजनों > अजमीढ़ों के क्षेत्र अजनाभ खण्ड में थी। अजों को शिग्रुओं, यक्षों के साथ-साथ ही यमुना तट पर सुदास पैजवन ने पराजित किया। अतः अनरण्य की अजोध्या यमुना तट पर यमुनानगर जिले में कहीं थी। इस हिसाब से हर्याश्व ने भाई से लड़कर (स्वशुर मधु की सहायता से) दृषद्वती / माध्वी नदी का प्रदेश जीता। इस हर्याश्व का सम्बंध हरित से प्रतीत होता है जो पुराणों में युवनाश्व का पुत्र कहा गया है। यह युवनाश्व अम्बरीष का पुत्र और मान्धाता का पौत्र था। मेरे विचार में अरुण (सूर्य के रथी) अनरण्यों की दो शाखाएं हर्याश्व और युवनाश्व थे दोनों ही शिवालिक पर्वतों से उतरकर मैदानों में आने वाले हर, हरित, हर्याश्व, शिवजन थे और समूची जाति अनु-अंग-अंगिरा या अंगिरस थी तभी विभिन्न पुराणों में हरित पुत्रों को अंगिरस पक्ष के और क्षत्रिय वंश के द्विज कहा गया है- **हरितो युवनाश्वस्य हारिता यत आत्मजाः एते हय् अंग्डिरसः पक्षे क्षत्रोपेताः द्विजातयः।** (लिंग पुराण)[35]

हर्याश्व / हर / हरित / शिव / शिवि या वध्र्याश्व जन एक ही जाति समाज के जन थे।[36] वे कहीं ऋक्ष के पुत्र हैं तो कहीं दक्ष के एक हजार पुत्र- हर्याशिवगण ! कहीं वे अनरण्य के पुत्र हैं तो कहीं दृषदश्व के, किन्तु लगभग हर स्थान पर इनकी स्त्री का नाम माध्वी है। एक स्थान पर एक अन्य ही विवरण है। एक हर्याश्व के पुत्र या पौत्र निकुम्भ और पौत्र सहतजित और प्रसेनजित तीनों की स्त्री का नाम दृषद्वती है। इन सबका एक ही अर्थ है कि हर्याश्व जन द्वषद्वती नदी प्रदेश में आकर बसे थे, इन्होंने कई शाखाओं में बंटकर राज्य स्थापित किए। विभिन्न पुराणों में कई नाम हैं- सहताश्व, प्रसेनजित, विनताश्व, कृशाश्व, अकृशाश्व, ऋणाश्व और ऋणाश्व का पुत्र युवनाश्व।[37]



दक्ष और वीरणी के 10000 पुत्र हर्याश्व गण थे।[38] दक्ष हरिद्वार / कनखल के निवासी थे। हरिद्वार > ऋषिकेश > हर्याश्व! इसके बाद इन हर्याश्वजनों ने दृषद्वती नदी क्षेत्र में बसकर ऋषदश्व > दृषदश्व ! अब दृषद्वती कहीं वधर्याश्व की तो कहीं-कहीं दिवोदास की स्त्री है। ये हर्याश्व जन ही वैदिक और पौराणिक वध्र्याश्व (< वदःर्याश्व) हैं वे हर (हरिद्वार के भी) अर्थात शिवजन हैं.... शिवालिक का प्राचीन नाम मैनाक था और पुराणों में मेनका वध्र्याश्व की स्त्री है। हर रुद्र है, रुद्र शिव है, रुद्र ने अंगिरस से शिक्षा प्राप्त की थी- **अंगिरसश्रव**

सकाशोपलब्धविद्यो भगवान् रुद्रो..........विष्णु. अर्थात वे अंगिरा जन थे।[39] महा. अनु. में एक काशी का हर्याश्व भी है। इसे हैहय वीतीहोत्र ने मारा था।[40] अथर्ववेद 519.1 के आधार पर हैहय वीतीहोत्र..... सृज्जय वीतीहव्य जन थे.... दोनों ही स्थानों पर ये भार्गवों के शत्रु और उनके प्रति अत्याचार करने वाले हैं। यह समीकरण हमें इस तथ्य पर पहुँचाता है कि हर्याश्व जन ही आनब उशीनर या शिबि या त्रुत्युजन थे। जो दृषद्वती / माध्वी नदी क्षेत्र के मूल पांचाल जन थे। वैदिक त्रुत्सु शब्द दृषद्वती से बना शब्द है। पंचविश ब्रा. 13.3.17 में मुदगल भर्म्याश्व के पुत्र वर्ध्याश्व को वर्ध्याश्व अनूप कहा गया है। अनूप मुदगल का पूर्वज हो सकता है।[41] यह अनूप.... अनु से सम्बंधित अधिक प्रतीत होता है।

महाभारत अनु. में तो उशीनर को काशी जनपद का राजा बताते हुए वर्णन है कि कबूतर की रक्षा के लिए अपना मांस देने वाले शिवि, उशीनर के ही पुत्र थे। शिवि का नाम ही वृषदर्भ भी था।[42] महा. शान्ति. में वृषदर्भ या शिवि के पुत्र का नाम युवनाश्व मिलता है। पुराणों में काशी वंश विवरण में उशीनर का नाम नहीं है।[43] संभवत: महाभारत का उशीनर पुराणों का हर्याश्व ही है। क्योंकि हरिद्वार, जहाँ से निकलकर 10000 हर्याश्वगण आए थे असल में अनु उशीनरों का मूल क्षेत्र था। वही क्षेत्र उशीरध्वज भी था, हर्याश्व या उशीनरजन अग्निपूजक अनु/अंगिरा थे। अग्नि के गुण उष्णता से उशीनर शब्द का साम्य प्रतीत होता है या हर्याश्व > हर्यश्वीनर > उशीनर। इसी उशीनर से पांचाल हर्याश्व के एक पुत्र यवीनर का नाम भी बना लगता है और हर्याश्व (हर=शिव) जन ही शिवि भी हुए। हैहयों द्वारा हर्याश्व की पराजय और ऋ 7.18.15 में सुदास द्वारा त्रुत्सुओं की पराजय, शिविओं की ही पराजय थी।

सृज्जयों, पृथुओं और त्रुत्सुजनों की मित्रता और मिलकर शत्रुओं का सामना करने और एक ही गुरू भारद्वाजों में आस्था के सभी आयाम[44] कुछ वर्षों बाद तब पलट गए जब एक असंतुष्ट त्रुत्सु वशिष्ठ[45] सृज्जय देववात के दौहित्र/नाती सुदास पैजवन (ऋ 7.18.22 में **द्वे नप्तुर्देववतः शते गोर्द्वारथ वधुमन्ता सुदासः**) के पास जाकर उसका अभिषेखकर्ता (ऐत्तेय ब्रा. 7.34.9; 8.24.11; शांखायन 16.11.14) बना; उसी के सहयोग और सहायता से सुदास पैजवन ने परुष्णी नदी तट के दासराज संग्राम में न केवल अनु, द्रुहयु, यदु, पुरू, तुर्वशु, पक्थ, अलीना, भलनास, विशानिन, शिवि, भृगु, वसु, शिम्यु, पक्थ, कवष, ऐलूष, मतस्य आदि जनों को हराया।[46] अपितु (ऋ 7.18.15 के अनुसार) त्रुत्सुजनों को पराजित कर सरस्वती-दृषद्वती नदी प्रदेश से उनकी सत्ता का अन्त कर दिया।

इन्द्रणेते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अध्वंत नीचीः
दुर्भित्रासः प्रकलविन्मिमाना जहुर्विश्वानि भोजनाः सुदासे॥

आयु और कुत्स के साथ दिवोदास भी जिस संग्राम में इन्द्र की सहायता से पराजित होते हैं।[47] संभवत: (ऋ 7.18.15) उसी युद्ध का एक परिणाम हो। जैमिनीय ब्रा. 3.245 में क्षत्रश्री और प्रतर्दन दासराज संग्राम में लड़े थे। **क्षत्रं व प्रातर्दने दासरांज्ञे दश राजानः पर्ययतन्त मानुषे तस्यह भारद्वाजः पुरोहित आस।**

ऋ 3.53.7 के अनुसार भोज क्षत्रिय सुदास वंशी थे- **"इमे भोजा अंगिरसो"**

सृज्जय की दो पुत्रियाँ बाहयका और उपबाहयका भजमान यादव की स्त्रियाँ थीं।[49] भजमान का पिता सात्वत (शक्तिशाली) था, वही शुक्तिमती का चेदि राज....चैद्य उपरिचर वसु था। सुदास मतस्य में चैद्यवरा का पुत्र है[50] अर्थात भजमान या उसका पुत्र है। पुराणों का यह भजमान शब्द चैद्य शब्द से बने चैद्यवन/चयवन[51]/चैद्यवरा का अपभ्रंश है। चैद्यवत का एक और अपभ्रंश सात्वत है....सत्वंत है। ऋ 1.33.6 ; 1.73.5 आदि में सत्वन का अर्थ योद्धा;

किंतु सतवन्त एक जाति थी। कौशितकि. 4.1 में "सत्वन-मत्स्येषु" का अर्थ सात्वत जन मतस्य थे। चैद्यवसु के आद्रिका पिशाचिनी / मतस्या से उत्पन्न पुत्र अजगन्ध / आद्रि या मतस्य था और पुत्री अजगन्धा/मछोदरी थी जो (सात्वत की पुत्री) सत्यवती थी। उपररिचर वसु की स्त्री गिरिका कोलाहल्या का साम्य आद्रिका से या भीम सात्वत की स्त्री कौशल्या से है।

दृषद्वती, माध्वी, सुभद्रा और वसुन्धरा एक ही नदी के नाम हैं। इन सभी नामों का सम्बंध किसी न किसी तरह कृष्ण से बैठता है। वह द्वारावती या द्वार क्षेत्र जहाँ प्रभाष तट पर द्वारिका बसी थी, गुजरात का समुद्र तट नहीं अपितु अज / गज / हस्तीजनों का अजभीढ़ या अजनाभ खण्ड था जो शिग्रु (>सागरेय/सगर)जनों का श्रूघन/ सूरसेन या सागर (सागरनपुर / सहारनपुर) था। कृष्ण जगन्नाथ है अर्थात जग / जुग / जुगन्धर या युगन्धर प्रदेश का स्वामी।

ऋग्वेद में यदुजन सरस्वती-दृषद्वती नदी प्रदेश में ही वर्णित है। वृष्णिओं की एक शाखा में सात्यकि (सात्वत वंश का द्योतक नाम) के वंशज का नाम युगन्धर भी है। सर>सुर के नाम पर सूरसेन, माध्वी के मधु-माधव भी कृष्ण थे।

वसुन्धरा नदी क्षेत्र के वसुजन....। कृष्ण वसुदेव का पुत्र है।[52] वसुओं की संख्या आठ है। कृष्ण अपनी माता का आठवाँ पुत्र है, जो अष्टमी को जन्मा, विष्णु का आठवाँ अवतार है। इसके पालक माता-पिता पिछले जन्म के द्रोण और उनकी स्त्री धरा नामक वसु हैं। प्रभाष वसु का क्षेत्र ही प्रभाष था जिसके पुत्र विश्वकर्मा ने कृष्ण के लिए द्वारिका वहाँ बनाई जहाँ सरस्वती नदी पश्चिम वाहिनी थी।[53] वह स्थान जगाधरी ही हो सकता है क्योंकि भागवत. ; ब्रह्मा.; वायु. में कहा गया है कि द्वारिका से हस्तिनापुर जाते समय कृष्ण ने दृषद्वती नदी को पार किया था।[54]

शिवालिक की तलहटी में एकदम पास-पास, एक-दूसरे के लगभग समान्तर बहने वाली असंख्यों छोटी-बड़ी नदियाँ वर्षा काल में अतिवृष्टि के कारण उफन कर ऐकाकार हो जाती थीं। माध्वी नदी के मधु माधव जनों का प्रदेश प्रतिवर्ष इस संयुक्त जलसन्धि के आक्रमण क्षेत्र में आता था। बलराम ने एक बार यमुनाभिद (दो भागों में चीरा) भी किया था अंततः अठारह वर्षों तक लगातार जलसन्धि का आक्रमण भोगने के बाद कृष्ण ने अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित क्षेत्र में द्वारिका बसाई। किन्तु प्राकृतिक कारणों से, नदियों के बहाव में अनिश्चितता और अनियमितता के कारण बनने वाले झीलनुमा विशाल समुद्र में एक दिन यह द्वारिका डूब गई, बह गई।

जगाधरी के स्थान पर किसी प्राथमिक प्राचीन बस्ती द्वारिका के समीप सोम्ब नदी प्रदेश के सोम्बर अथवा शम्भर थे, जिनकी कृष्ण से शत्रुता थी। मेरा केवल अनुमान है कि नदी को माता, बहन, पुत्री या स्त्री पुकारने की प्राचीन प्रथा के कारण कंसाली नदी के क्षेत्र के कंसों की चचेरी बहन देवकी का नाम दृषद्वती के आधार पर ही रहा होगा और दृषद्वती नदी का एक नाम सुभद्रा कृष्ण की बहन का नाम भी है।

कृष्ण की एक और बहन का नाम कृष्णा है अर्थात द्रोपदी। अब माध्वी नदी क्षेत्र का माधव यदि कृष्ण है तो माध्वी कृष्णा होती है। दृषद्वती नदी क्षेत्र का दिवोदास, पांचाल वंश में गिनाया गया है। द्रोपदी का सम्बंध अग्निपूजक अंगों/अंगिराओं से है इसलिए मिथक बना कि वह अग्निकुण्ड से निकली थी। पांचाली द्रोपदी की कथा का आधार ययाति की पुत्री माध्वी से है जिसे बारी-बारी से पाँच राजाओं को कुछ अश्वों के बदले में गालव ऋषि द्वारा दिया गया था। पहली पांचाली माध्वी या दृषद्वती थी और पूर्व पांचाल सरस्वती-दृषद्वती नदी

का प्रदेश।[55] इस प्रकार पहले पांचालजन आनब उशीनर के पुत्र मृग, किृमि, नव, सुवृत और शिवि थे जिन्होंने यौधय, कृमिला, नवराष्ट्र, अम्बष्ठ और शिवपुर बसाए।[56] **ये उशीनर वही थे जिन्होंने उत्तरी भारत में चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति की शुरूआत की। एक ही संस्कृति के कम से कम चार प्रकार के मृदभांड़-चित्रित धूसरभांड, लाल काले भांड, लाल मृदभांड और अलंकृत मृदभांड; ऐसा प्रतीत होता है कि बर्ण व्यवस्था पर आधारित हैं क्योंकि सभी प्रकार के मृदभांड लगभग एक ही स्तर पर प्राप्त होते हैं। पांचाल ब्राह्मण जोकि लोहे से सम्बंधित हैं इन्हीं उशीनरों के वंशज हैं।**

महाभारत; मतस्य.; वायु. में पांचालों को भरतों की शाखा बताया गया है। कोई भी स्पष्ट तसवीर बना लेना अभी भ्रामक है। अनु-अरुण-अनरण्यों की उशीनर या हर्याश्व शाखा के दृषद्वती नदी क्षेत्र में आ बसे दृषद्वंत जनों पर दूसरी शाखा अनु-अन्धकों का अधिकार हो गया, ये ही सात्वत भजमान (सुदास पैजवन) थे.... सुदास पैजवन के यज्ञ का वर्णन ऋ 3.53.7 आदि में है....इस यज्ञ के घोड़े को भरतों ने पकड़ा। ये दृषद्वन्तों-शकुन्तों (युगन्ध) की संतान थे। इन भरतों ने यमुना नदी पर 100; सरस्वती नदी तट पर 300 और गंगा नदी पर 400 यज्ञ किए।[57] ये आंकड़े अतिश्योक्ति पूर्ण हैं। शतपथ ब्रा. 13.5.4.11 के अनुसार भरत ने यमुना नदी तट पर 78 और गंगा नदी तट पर 55 यज्ञ किए[58] ऐत्तरेय ब्रा. 8.23.21 में गंगा तट के 55 यज्ञों को वृत्रघन कहा है।[59] संभवत: भरतजनों ने वृत्रघन में रुके या रोके हुए जल को बहाकर या बस्तियों अथवा कृषि योग्य भूमि को प्राप्त किया होगा और यमुनातट पर 78 तथा गंगातट पर 55 बस्तियाँ बसाई होंगी।

मुदगल, श्रृज्जय, वृहदिशुव, यवीनर और कृमिलाश्व द्वारा स्थापित किए गए पांचाल राज्य में केशिन, कृवि, सृज्जय, सोमक और तुर्वशु जन शामिल थे।[60] इनमें से तुर्वशु, सृज्जय, सोमक तो वैदिक साहित्य में हैं। केसिनजन, सिनीवाली / केसिनीवाली / कौशिकी नदी क्षेत्र के कौशिकजनों के द्योतक हैं। कश्यप और खशा की सात पुत्रियों में से एक केसिनी से कपिल यक्ष (कम्पन > काम्पिल्य) की संतानें नीलगण थे। ऋ. 7.18.18-19 के अनुसार यक्ष; अज और शिग्रु यमना तट पर सुदास पैजवन द्वारा पराजित किए गए थे। नील और काम्पित्य पांचालों में वर्णित हैं, अत: ये ही केसिन अथवा केशीजन थे, जो सुदास से पराजित होकर पुन: हरिद्वार के दक्षिण और दक्षिण पूर्व में पलायन कर गए थे। कृवि, कृमि या क्रिमिलाश्व जन-उशीनर थे।

महाभारत युद्ध की भूमिका

राम के तुरन्त बाद महाभारत युद्ध की भूमिका बनने लगी थी। सीता-सरस्वती अथवा दृषद्वती एक अनिश्चित और अनियमित बहाव मार्गों वाली नदी थी। प्रत्येक वर्ष मार्ग बदलकर बहने और उस पर भी नदियों को अपने क्षेत्र में मोड़ लेने की प्रतिस्पर्धा ने अनगिनत संघर्षों की भूमिका तैयार की....सरस्वती नदी की प्रकृति और उस प्रकृति के कारण दुख आर्तनाद करते लोगों की सरस्वती नदी से प्रार्थना ऋ. 6.61.14 में स्पष्ट वर्णित है-

सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो मापः स्फरीः पयसा मा न आ धक्।
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत् क्षेत्राण्यरणानि गन्म।।

अर्थात- हे सरस्वती हमें महान धन दो, कर्महीन या पीड़ित मत करो, हमारा बन्धुत्व स्वीकार करो, हम (प्रताड़ित होकर) निकृष्ट स्थानों पर ना जायें।

सीता-सरस्वती ने स्वयं मार्ग बदला या यह रक्षों का जान-बूझकर किया गया कृत्य था; किन्तु राम एक बार तो पांच दिवसों के अथक प्रयासों के बाद सीता को उसके प्राचीन बहाव मार्ग पर मोड़ लाए। अगले वर्ष सीता फिर चली गई। राम के अश्वमेघ यज्ञ के समय सीता

को एक बार फिर वापिस लाने के प्रयास किए गए किन्तु पलक्षवान (पलक्षा-सरस्वती या लाक्षकी नदी के तटों पर निवास करने वाले लक्षमणजन) जनों के हाथों में, केवल उनकी मेहनत की लकीरें ही आ सकी। सीता उनके भाग्य में नहीं थी ; वह तो एक प्रकार से जमीन में ही समा गई। इस बार सीता को मोड़कर प्राचीन बहाव मार्ग पर बहा लाने का प्रयास विफल हो गया। ऐसा केवल एक ही नदी के साथ तो नहीं था, और नदियों के बहाव मार्गों में अनियमितता से वैदिकजनों की बस्तियों में जीवन पूरी तरह प्रभावित हुआ, नदी के बिना उनके जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। कृषि आदि उत्पादकता जैसे कार्य... जो कि स्थाई रूप से बसकर ही किए जा सकते हैं, के उजड़ने का अर्थ यही था अब किसी दूसरे स्थान पर जाकर कृषि योग्य भूमि तैयार करनी होगी... और फिर से बस्ती बसानी होगी ; और वह स्थान भी नदी की अनियमितता वाला हुआ... तो कोशिश एक बार फिर से करनी होगी। लगभग प्रत्येक वर्ष उपर्युक्त स्थानों की खोज में भटकते इन जनों ग्राम-गोत्रों पर प्रकृति की एक मार और भी पड़ रही थी। अनावृष्टि और कम वृष्टि के कारण पड़ने वाले लगभग एक-एक दशक लम्बे दो अकालों ने इन जनों और ग्राम गोत्रों की कमर बिल्कुल ही तोड़ दी थी। दो अकाल थे- एक विश्वामित्र के काल में और दूसरा राम के काल के तुरंत बाद। दूसरे अकाल ने महाभारत युद्ध की भूमिका बाँध दी थी।

समूचे पंजाब-हरियाणा क्षेत्र में नदियों की अनियमितता और लम्बे अकाल के कारण, असंख्यों ग्राम-गोत्र और बस्तियाँ उजड़ीं; भूख-प्यास से लड़ते.....जीवन यापन के साधनों की खोज में, मरते तबाह होते लोगों के दल के दल....पूर्व की ओर बढ़कर यमुना पार पहुँच रहे थे। सृज्जय, त्रुत्सु, कृमि, तुर्वशु, सोमक, वसु लगभग सभी ; वे चाहे आपस में मित्र थे या शत्रु। इस समय शत्रुता के सभी आयाम पलट चुके थे और मित्रता के हालात नहीं थे...। प्रश्न था तो जीवन यापन के लिए उपर्युक्त स्थान, साधन और कृषि योग्य भूमि प्राप्त करने का। सम्पूर्ण यमुना गंगा क्षेत्र में नवीन बस्तियों का सृजन हुआ।

वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज वाले वैदिकजन जिनके पास इन्द्र मित्र, वरुण, वायु, अश्विनी कुमार, धर्म, सविता, ऊषा, पूषन वाला विस्तृत देवतन्त्र था, प्रकृति की विनाशक चोटों से छिन्न-भिन्न या पूर्णतया समाप्त हो चुका था। उनका यह विस्तृत देवतन्त्र, विपत्तीकाल में लोगों की कसौटी पर खरा नहीं उतर पाया।

उपर्युक्त मृतप्राय देवतंत्र के अंतिम वंशज, जो कि पणिजनों की स्त्रियों से जन्मे (वैदिक पुरुषों की सन्तान) पणिड्‌ (पाँडु) लोग थे। गंगा-यमुना दोआबे में घुस आए और समूचे उत्तरी क्षेत्र पर छा गये ; बाद में वे वहाँ से निकाल दिए गए। धृतराष्ट्र नागों ने पाँडु जनों को निकालकर पूर्वज कुरू-कौरव्यों की भूमि पर अधिकार कर लिया किन्तु पाँडु जनों की कुण्डती स्त्रियों की संतानें एक बार फिर लौटीं ; वापिस गई और पुनः लौटीं। इन्होंने जग (जगाधारी) प्रदेश के जगन्नाथ कृष्ण के मधु-माधव / सूरसेन श्रूधन क्षेत्र के पश्चिम में वैदिक त्रुत्सुओं / उशीनरों के क्षेत्र (दृषद्वती > दृहद्वती > द्रोपदी या कृष्णा) को अपना बनाया और यमुना के सहारे-सहारे चलकर दक्षिण में खांडवप्रस्थ बसाया किन्तु दोआबे के धृतराष्ट्र नागों ने खांडवप्रस्थ को जीत लिया (महाभारत कथा में इस जीत को जुए में बेईमानी से बताया गया है.... किन्तु यह केवल एक कथा रूप है) धृतराष्ट्र नागों ने दृषद्वती नदी क्षेत्र (द्रोपदी) को भी जीता...किन्तु अकाल और नदी अनियमितता के कारण इसे छोड़ दिया गया। यूँ भी उन्हें अपना ध्यान पाँडव जनों पर ही केन्द्रित रखना था कि वे कहीं दोबारा आक्रमण न करें। पाँडव जन मतस्यों / वैराटों के क्षेत्र में भाग गए।

वैदिकजनों के देवतन्त्र का विरोधी होने के कारण भी कृष्ण कदम-कदम पर पाँडवों का सहयोगी बना रहता है। कारण साफ है कि पाँडव जन वैदिक जन नहीं थे अपितु वैदिक जनों की पणिडू नाग स्त्रियों से उत्पन्न संतान थे। ये वैदिक जन तो थे किन्तु कठोर वर्ण व्यवस्था नियमों वाले समाज का अभिन्न अंग नहीं। यदि वे वैदिक जनों की औरस संतान और पितृ सत्तात्मक परिपाटी वाले जन होते तो उनके पिताओं के नाम इन्द्र, वायु, धर्म, सूर्य, अश्विनी कुमार आदि न होते। पणि....विष्णु पूजक वसुजन ही हैं बिल्कुल कृष्ण की भांति। कृष्ण से पहले उसके गोत्र-परिवार की स्त्रियाँ भी अप्सरा कर्म कर जीवन यापन करती रही थी। कृष्ण पशुपालक समाज का व्यक्ति है उसके समाज में कृषि की शुरूआत हाल ही में हो चुकी थी क्योंकि उसका बड़ा भाई बलराम हलधर है तो भी परपुरुषों से संतानें उत्पन्न करने वाली कुण्ड़ती उसकी बुआ है, किन्तु कृष्ण इस अपसरा-प्रथा परम्परा को समाप्त कर एक नए प्रकार की सामाजिक क्रांति का उद्घोषक है। वह 16000 अपसराओं को अपनी स्त्री बना लेता है.... यह उनके जीवनयापन की व्यवस्था है। कृष्ण जीवनयापन के साधनों की खोज में भटकते पाँडवों की दुख-विपत्ती में सहायक है.... कि कुण्ड़तियों की संतानों को भी अधिकार मिलने चाहिए। अधिकार नहीं तो पाँच जातियों को पाँच गाँव बसाने लायक नदी तट की भूमि जो कृषि कार्य के लिए भी उपयुक्त हो। मानवीय दृष्टि से धर्म कहता है कि जीवनयापन का अधिकार सर्वोपरि है....किन्तु दोआबे के नाग मानने को तैयार नहीं थे.... वे किन्हीं भी मानवीय भावनाओं के चलते पाँडवों को भाई मानने को तैयार नहीं थे। जबकि एक कुण्ड़ती पुत्र कर्ण को वे मित्र मानकर (अंग/पर्णाशा नदी > पानीपत क्षेत्र में) कर्णाल नामक नगरी बसाने देते हैं। कारण कि कुण्ड़ती या अपसरा प्रथा परम्पराओं के तहत कर्ण त्याग दिया गया था; वह वैदिकजनों के समाज, वर्णव्यवस्था, प्रथा-परम्परा, यज्ञ-पूजा, धार्मिक अनुष्ठान, वेश-भूषा, भाषा, सभ्यता-संस्कृति से अलग-थलग नागों के क्षेत्र समाज में पला-बढ़ा। पाँडवों के साथ ऐसा नहीं था...वे वैदिक सभ्यता-समाज और संस्कृति से पूरी तरह ओत-प्रोत थे। उनके कृषि धातु कर्म आदि के जानकार उन्हीं की तरह जीवन जीने वाले जन थे। कृष्ण भी पुरुरवा की भाँति स्थाई रूप से बसकर कर्मकार जीवन के प्रति जागरुक था। नागों के विरुद्ध संघर्ष में सहयोग, और सहायता की आवश्यकताओं ने कृष्ण को पाँडवों की सहायता करने का अवसर प्रदान किया क्योंकि कृष्ण का अपना वसु-वसुन्धर क्षेत्र भी तो नदियों की अनियमितताओं से प्रभावित था। अपने जीवन के शुरुआती वर्षों में ही वह नागों द्वारा पीड़ित होता रहा था। कालिय (कालिन्दीय) नाग से शुरू हुआ उसका नागों से संघर्ष महाभारत युद्ध तक चलता रहा। अंतिम निर्णायक युद्ध में पाँडवजनों ने हस्तिनापुर से नाग सत्ता का अंत भले ही कर दिया हो। किन्तु नाग समाप्त नहीं हुए। परीक्षित काल में वे पुनः शक्तिशाली हुए। जनमेजय ने उत्तर भारत से नागों का सफाया किया।

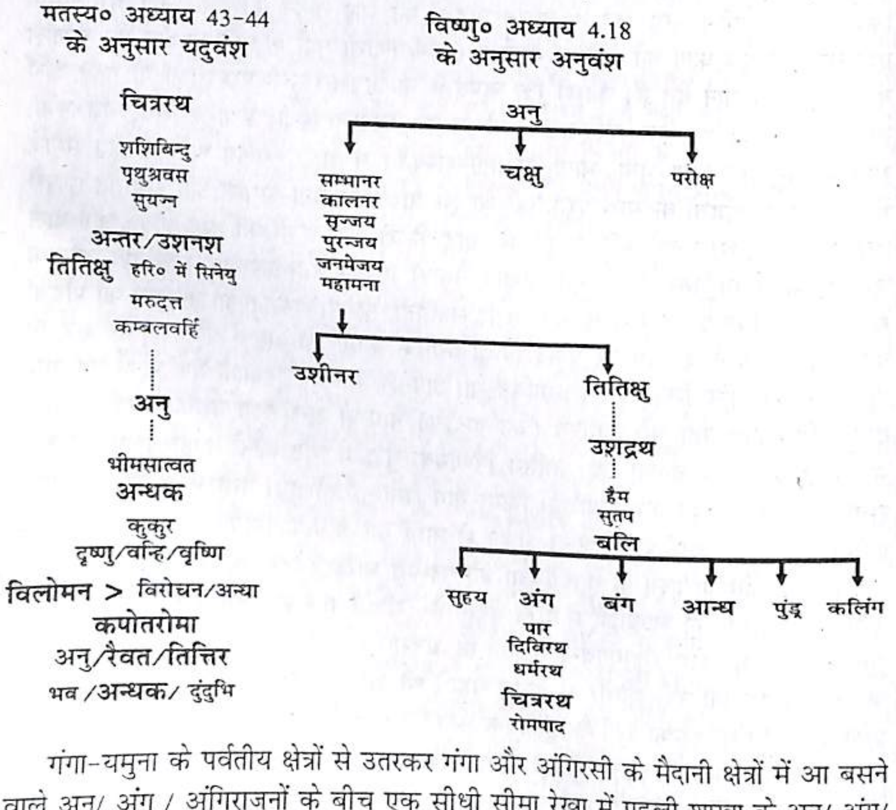
त्रुत्सुओं और पांचालों के कुलगुरुओं की परम्परा भारद्वाज जनों की है। यही परम्परा हमें उशीनर शिविजनों की शाखाओं में दीख पड़ती है- सौवीर राज शत्रुन्जय ने भारद्वाज से आदेश सलाह प्राप्त किए थे।[61] महागोविन्द सूत्तान्त के अनुसार सौवीर के राजा भरतवंशी थे। भाग्वत. के अनुसार इक्षुमती नदी सौवीर से होकर बहती थी और शत्रुन्जय महात्मय में इक्षुमती सिंध प्रदेश की नदी थी।[62] इसका अर्थ यह हुआ कि भरतवंशी (त्रुत्सुओं) आनब-उशीनरों-शिवि-त्रुत्सुजनों की शाखाऐं इक्षुमती-देविका नदी के किनारे-किनारे होती हुई पंजाब-हरियाणा सीमा प्रदेश से मुल्तान के दक्षिण में सिंधु नदी तट तक चली गई। दूसरे शब्दों में चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति का प्रसार ऊपरी हरियाणा से उत्तर पश्चिम राजस्थान और सौवीर की ओर हुआ था।

इस हिसाब से चित्रित धूसर मृदभांडों वाले ठीकरे कैकय प्रदेश में भी मिलने चाहिऐ, क्योंकि कैकय भी आनब उशीनरों की शाखा थे। महाभारत युद्ध में दुर्योधन की ओर से भाग लेने आए कैकय जनों के आगे-आगे भारद्वाज जन भी चल रहे थे।[63] सम्भवत: महाभारत युद्ध के समय तक गन्धार और मद्रजन उत्तरी हरियाणा या उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिलों के ही निवासी थे। सिन्धु नदी प्रदेश में इनका प्रसार महाभारत युद्ध में पराजय के बाद हुआ।

अनु-आनबों का यदुजनों से साम्य

अनुवंश में आए अनु, उशीनर, उशद्रथ, बलि, अंग, आन्ध्र, चित्ररथ नाम और कपोत उशीनर कथा के कपोत का यदुवंश में आए नामों से विशेष साम्य है-

यादव शशिबिन्दु के वंशज अन्तर/उशनस का साम्य अनु उशीनर से है। यादव उशनस/अन्तर के पुत्र तितिक्षु का साम्य आनब तितिक्षु से है। उशीनर ने कपोत की रक्षा में अपने शरीर का माँस बाज को दिया था तो कपोत की रक्षा करने वाला कपोतरोमा है और कबूतर-तीतर वाला साम्य कपोतरोमा और उसके पुत्र तित्तिर में प्रतीत होता है। यादव तित्तिर का नाम कहीं-कहीं रैवत है। यह रैवत शिवालिक पर्वतों की तराई के आसपास यमुना नदी का कछार प्रदेश का घोतक है जहाँ कृष्ण-बलराम सम्बंधित कुशस्थली रही थी। कुशस्थली को अंगद वानर के स्वशुर मैन्द के भाई द्विविद ने उजाड़ा था।[64] कपि, वानर, ऋक्ष आदि दोआबे की शिवालिक पर्वतमाला-ऋक्ष पर्वत के निवासी थे। तित्तिर एक नाग का नाम भी है।[65]



गंगा-यमुना के पर्वतीय क्षेत्रों से उतरकर गंगा और अंगिरसी के मैदानी क्षेत्रों में आ बसने वाले अनु/ अंग / अंगिराजनों के बीच एक सीधी सीमा रेखा में पहली शाखा के अनु/ अंग/ गौतम/ दृष्ट/ चक्षु और दूसरी शाखा के अन्धक/ आन्ध्र/ तम-तमस/ विलोमन > विरोचन।

पहली शाखा के जन उशीनर/ त्रुत्सु/ शिवि/ वैदिकजन कहलाऐ ये बस्ती वाले सभ्य, कृषक, कर्मकार, यज्ञ-पूजा वाले अत्यधिक धार्मिक कर्मकांडी, वर्णव्यवस्था वाले जन हुऐ।

दूसरे इनसे जरा सा पीछे वनों पर आश्रित, यायावर, शिकारी, पशुपालक पणि, निषाद और नाग थे जो बल, बलि, बाली, बालखिल्य, बाल्हीक, बलवर्हि, वृषिन, वृष्णि या कम्बलवर्हि जन थे। इनमें भी अत्यधिक निम्नस्तर का जीवन जीने वाले यति, ययाति, यदु, यतुधान, पिशाचजन थे। रामायण में उपद्रवी यातुधान और राक्षसों को यदु की संतत्ति बताया गया है।[66] पहले-पहल यातुधान क्रव्याद थे। मारकण्डा नदी क्षेत्र में ये वैदिकजनों के सम्पर्क में आए। बस्ती वाले जनों के मृतकों को घसीट ले जाना उनके लिए आसान जीवनयापन का एक साधन था.... ऐसी ही अनगिनत घटनाओं के चलते वैदिकजनों ने अपने प्रियजनों के शवों को दुर्गति से बचाने के लिए उन्हें जलाना शुरू किया होगा। वहाँ से आगे बढ़कर यातुधान जन राक्षी नदी क्षेत्र में बसे तो राक्षस कहलाए। रावण को **''यातुधानस्य दौहित्र''** कहा भी गया है

अनु-अंग-अंगिराजनों के मूल प्रदेश की मुख्य नदी का नाम अंगा था; बाद में इसका अपभ्रंश नाम गंगा हुआ। अर्थात अंगिरा या अंगेयजन ही गंगेय हैं। महाभारत में गंगा का मूल नाम उर्वशी है।[67] तो अंग के पिता का नाम भी उर है और आनव उशीनरजनों का मूल या शुद्ध नाम उर्वशीनर होना चाहिए। अर्थात इन्हीं उर और उर्वशीनरों की संतानें थी जो अपने गोत्र, परिजनों, बड़ों को आदरपूर्वक आर्य (उरों की संतानें) कहतीं थीं। महाभारत में उर्वशी को लोहित्या नदी और मलय पर्वत से सम्बंधित बताया गया है।[68] प्रतीत होता है कि गंगा या उर्वशी नदी कभी मलय पर्वत (मंसूरी पर्वतमाला) से रोहतक, भद्रा, नोहर होकर लोहित्या नदी के नाम से बही थी। अथर्ववेद 4.7.1 की वरणावती को लुड़विग द्वारा गंगा मानना[69] उचित लगता है क्योंकि उर्वशी और वरूण का सम्बंध है।

सन्दर्भ और टिप्पणियाँ

1. **रोमिला थापर ''प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास'' अनु० आदित्य नारायण सिंह**, दिल्ली, 2001; पृ0-204-5 ; **''पुरातत्व''**, जिल्द-8; 1975; पृ0-86
2. **रामशरण शर्मा ''प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति एवं सामाजिक संरचनाऐं''** दिल्ली, 1993; पृ0-95-96
3. यास्क, निरूक्त 6.25 में आर्य शब्द की व्याख्या "ईश्वर पुत्र" के रूप में करते हैं। सायण ऋ.1.51.8 में "विद्वान अनुष्ठाता"; ऋ. 1.103.1 में "विद्वान स्तोता"; ऋ 1.117.21 में "विद्वान"; ऋ 1.130.8 में "वह जिसके पास सब कुछ आ जाना चाहिऐ"; ऋ. 3.34.9 में "तीन उत्तम वर्णो से युक्त जाति"; ऋ. 6.22.10 में "कर्मयुक्त"; ऋ. 6.33.3 में "कर्मानुष्ठान के कारण सर्वश्रेष्ठ" के रूप में आर्य शब्द की व्याख्या हैं ऋ.1.117.21; 4.26.2 में आप इसे मनु की उपाधि मानते हैं- **जे मुईर, "मूल संस्कृत उद्धरण" अनु0 रामकुमार राय**; वाराणसी 1967. भाग-2; पृ०- 461-62.
4. इन्द्र के पुत्र किसकिन्धा नरेश बाली को विष्णु के अवतार राम ने मारा था, सुग्रीव सूर्य का पुत्र था। सूर्य द्वारा पुत्र कर्ण को आजन्म रक्षा हेतु प्रदान किए गए कवच और कुण्डल इन्द्र ने अपने पुत्र अर्जुन का हित समझते हुए दान में माँग लिए थे।
5. **विमल चरण लाहा ''ऐंशेंट मिड इण्डियन क्षत्रिय ट्राईब्स''** वाराणसी, 1975; पृ0-158
6. **राय चौधरी, ''प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास''** दिल्ली, पृ0-54
7. **कीथ व मैकडोनेल ''वैदिक इण्डैक्स'' अनु० रामकुमार राय**, भाग-1; पृ0-116

8. वृहषपति एक आदिम आकाशीय देवता प्रतीत होता है। ऋ.4.50.4 में वह सात मुखों वाला; ऋ 4.50.1;1.190.1 में सुन्दर जिव्हा वाला; ऋ. 10.155.2 में तीक्षण सींगों वाला; ऋ 7.97.7 में सौ पंखों वाला वर्णित है। ऋ 2.23.17 में यह वृहषपति तवष्ट्र द्वारा उत्पन्न किया गया, ऋ 7.97.6 में स्वर्णिम अश्व के रथ वाला है- **मैकडोनेल ''वैदिक माईथोलॉजी'' अनु० रामकुमार राय;** पृ0-192;

सींगधारी, सुन्दर जिव्हा वाले वृहषपति की पहचान के लिए देखें वृष taurus तारामंडल; hydes के सात तारे इसके सात मुख हैं; जीभ गामा और कसाई तारे हैं तथा बीटा तारा taurus और जेट्टा तारे taurus इसके तीक्षण सींग हैं। वृष से सातवॉं तारामड़ंल scorpio वृहषपति का पौत्र द्रोणाचार्य है

9. **डा० सरस्वती बाली ''वृहषपति इन पुराणाज एण्ड़ वेदाज''** दिल्ली; 1978 ; पृ0-15-16
10. वही, पृ0-52
11. वही, पृ0-107
12. वही, पृ0-114
13. **एफ. ई. पार्जीटर, ''ऐशेंट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडीशन्स''**, दिल्ली, 1997, पृ0-157
14. **पार्जीटर**, पृ0-162-163
15. **कैलाश नाथ द्विवेदी, ''ऋग्वैदिक भूगोल''** कानपुर, 1985; पृ0-289
16. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-1; पृ0-360
17. **राणा प्रसाद शर्मा, ''पौराणिक कोष''** वाराणसी; 1986; पृ0-457
18. या कहीं-कहीं और्व, चयवन और सुकन्या (मनु पुत्र शर्याति की पुत्री) के पुत्र हैं- **पार्जीटर-**पृ0-192-197 एक ओर वरुण के पुत्र भृगु के वंशज शुक्र काव्य उशना हैं तो दूसरी ओर वरुण की सबसे बड़ी स्त्री देवी को शुक्र की पुत्री बताया गया है- **हापकिन्स ''एपिक माईथोलॉजी''** दिल्ली; 1968; पृ0-120; किन्तु यह एक बड़ी गड़बड़ है।
19. **राहुल सांकृत्यायन ''ऋग्वैदिक आर्य''** इलाहबाद, 2004; पृ0-40
20. **पार्जीटर**, पृ0-222
21. एक ओर वामदेव और नोधा के पिता गौतम रहूगण के पुत्र हैं, वामदेव ने ऋ 4.4. 11 में ''गौतमात्पितु'' और ऋ. 4.4.13 में मामतेय''का उल्लेख किया है जिससे वामदेव के पिता का नाम गौतम मामतेय जान पड़ता है- **राहुल सांकृत्यायन** पृ0-35; 172 गौतम और अहिल्या का मिथक त्रेता युग का है....शरद्वान ऋषि का मिथक द्वापर का। जनपदी अपसरा को देखकर धर्नुधारी (शर धारण करने वाले) शरद्वान का वीर्य क्षरित होकर शरकण्डों पर गिरा और दो भागों में बंट गया; इन से उत्पन्न यमज कृप और कृपी को शान्तुनु ने पाला। किन्तु वीर्यक्षरण की घटना के बाद शरद्वान ऋषि जनपदी अपसरा, कृष्ण मृगछाल, धनुष, शर, आश्रम आदि सबकुछ छोड़कर चले गए।
22. **कीथ व मैडोनेल**, भाग-1; पृ0-18
23. **सीतानाथ प्रधान ''क्रोनोलोजी ऑफ ऐशेंट इंडिया''** दिल्ली, 1979 पृ0-7, 8, 1
24. **आर. मार्टिन स्मिथ ''डेट एण्ड डायनैस्टीज ऑफ अर्लीऐस्ट इंडिया''** दिल्ली, 1973; पृ0-248
25. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-248; 22

26. प्राचीन भूगोलवेता मैनाक को शिवालिक के रूप में जानते थे; मैनाक कैलाश के उत्तर में था।- **विमल चरण लाहा ''प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल'' अनु० रामकृष्ण द्विवेदी** पृ0 23
27. शकुन्त का एक अर्थ अपमार्जक गृद्ध पक्षी हो सकता है युगन्धर जन गृद्ध टोटेम वाले और गरुड जनों की शाखा रहे होंगे।
28. वही, पृ0-416; कुरुक्षेत्र की बारह झीलों में से एक जया नामक झील से निकली, दो नदियों में से एक नदी का नाम माध्वी था।
29. **रोमिला थापर** पृ0-213
30. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-549
31. **आर० सिद्धान्ता शास्त्री ''हिस्ट्री ऑफ प्रि कलियुग इंडिया''** दिल्ली, 1978; पृ0-257
32. वही; वायु0 99.195-6 के अनुसार पांचाल राज्य के संस्थापकों का पिता भेद ऋक्ष का पुत्र है- **राणाप्रशाद शर्मा**, पृ0-384; भागवत0 में अर्क का पुत्र और पुरुज का पौत्र भमर्याश्व है- वही, पृ0-371; मतस्य0 के अनुसार भद्राश्व और विष्णु0 के अनुसार हर्याश्व है- वही, पृ0-356; इसका सीधा सा अर्थ यह है कि हर्याश्व, भेद, भद्राश्व, भमर्याश्व, वर्ध्याश्व, विन्ध्याश्व, विनताश्व, बृहदिशुव में कोई अन्तर नहीं है। अनु के एक पुत्र चाक्षुष थे; और अंगिराजन चाक्षुष (मनवन्तर भी) के पुत्र थे।
33. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-287;549
34. नागों के उपरान्त आए विष्णु वाहन (गरुड) > सूर्यवाही/वंशीजनों ने भी आनर्त पर राज्य किया था। इन शर्यातियों को हैहयों ने पराजित किया। पौराणिक हैहय जन वैदिक सृञ्जय जन ही थे।
35. **जे.मुईर**, भाग-1, पृ0-254-255
36. युवनाश्व के पौत्र अम्बरीष थे, दूसरी ओर इक्षवाकु के पुत्र नाभाग के पुत्र भी अम्बरीष थे। इस अम्बरीष के वंशज रथीतर की संतति भी क्षत्रीय जाति के द्विज अंगिरस कहलाए। कथाक्रम बेशक भिन्न हो रथीतर और हारित (र) जाति हर्याश्व जन या शिवि ही थे। युवानाश्व और हर्याश्व जनों में अन्तर केवल यही है कि हर्याश्वजन दृषद्वती-सरस्वती नदी प्रदेश में जा बसे और वैदिक त्रुत्सु जन कहलाऐ जबकि युवनाश्व-मान्धाता जन सहारनपुर, यमुनानगर से रोहतक तक फैले और अनरण्य जन कहलाऐ।
37. **आर. मार्टिन स्मिथ**, पृ0-191 से 193
38. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-549
39. **जे.मुईर** ; भाग-1 ; पृ0-256
40. वायु0 ; हरि0 के अनुसार प्रतर्दन के दादा भीमरथ (गौड महाभारत में भीमसेन) और परदादा..... केतुमन्त थे, जबकि गौड महाभारत में हर्याश्व का पुत्र सुदेव, प्रतर्दन का दादा था। प्रतीत होता है कि हर्याश्व-केतुमन्त का और सुदेव-भीमरथ का नाम ही था- **प्रधान** पृ0-24
41. **सीतानाथ प्रधान**, पृ0-6; 89-90
42. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-476
43. काशी राजवंश की स्थापना नहुष के भाई आयु के पुत्र क्षत्रवृद्ध ने की थी किन्तु विष्णु0 भाग्वत0 वायु0 में उशीनर, शिवि और हर्याश्व के नाम काशी की वंशावली में नहीं हैं- **सुहोत्र → काश्य → दीर्घतमस →धर्म → धनवंतरि → केतुमन्त → भीमरथ → दिवोदास → प्रतर्दन → वत्स → अलर्क....!** महाभारत अनु0

में भीमरथ और दिवोदास के बीच हर्याश्व और सुदेव के नाम हैं, इन्हें महिष्मती के हैहयों ने पराजित करके काशी जीती थी- **आर० सिद्धान्ता शास्त्री**, पृ0-107 से 111
44. ऋ 6.17.5-8 में कथन है कि प्रस्तोक सृज्जय और पृथुवंशी अभ्यवर्ती चायमान के लिए भारद्वाज के पुत्र पायु ने यज्ञ किया। जिसके बाद दोनों राजाओं ने हरियूपिया के तटों पर वृचीवन्तों, वर्शिखों को पराजित किया।
45. ऋ 7.18.4 और 8 में जहाँ कहीं वशिष्ठ सुदास के लिए प्रर्थना करता है अपने आपको तृत्सु पुरोहित कहता है- **तृत्सुनाम भवत पुरोहितिः।** और **धिया धीवन्त असपन्त तृत्सवः।** और ऋ. 7.18.25 में **इमं नरो मरुदतः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदासः।** में भी वशिष्ठ दिवोदास को अपना पितरं (पिता समान) कहता है, सुदास का नहीं।
46. ऋ 7.18 के लगभग सभी सूक्तों में दासराज संग्राम का वर्णन है। द्रुहयुओं के पुरोहित भृगु और यदु तुर्वशुओं के पुरोहित कण्व थे- **कैलाशनाथ द्विवेदी**, पृ0-322
47. **कीथ व मैकडोनेल**, भाग-2; पृ0-407
48. **ओ.पी. भारद्वाज ''कुरु एण्ड कुरुक्षेत्र इन उपनिषद''** जर्नल ऑफ इण्डोलोजिकल स्टडीज'' जिल्द-III, 1988, पृ0 313-14; 321 के अनुसार मानुषा नामक स्थान, जहाँ क्षत्रश्री पर दासराज का आक्रमण हुआ, कुरुक्षेत्र भूमि पर था।
49. **आर. मार्टिन स्मिथ**; पृ0-12
50. **सीतानाथ प्रधान**, पृ0-84
51. मतस्य, हरि0, विष्णु0 के अनुसार कुरुवंशी चयवन के पुत्र चैद्यउपरिचर वसु के गिरिका कोलाहल्या से उत्पन्न पुत्रों ब्रहद्रथ, प्रात्यग्रह, मणिवाहन (कुशाम्ब), मावेल्ला (मतशील) और यदु ने मगध, चेदि, वसु, मतस्य और कारुष राज्यों की स्थापना की- **आर. सिद्धान्ताशास्त्री** पृ0-162; कहीं-कहीं इन पाँच राज्यों के नाम हत्थीपुर, अस्सपुर, सिंहपुर, उत्तर पांचाल और दद्दरपुर हैं- **सीतानाथ प्रधान**, पृ0-63
52. कृष्ण की माता देवकी संभवतः देविका नदी क्षेत्र की स्त्री का द्योतक है। देविका (कंसाली नदी क्षेत्र के) कंसों की चचेरी बहन कही गई है। कृष्ण का सम्बंध कालिंदी नदी से है। सहारनपुर के उत्तर पश्चिमी भाग की करोंदी नदी ही कारा-कालिंदी है। मूलरूप से यह प्रदेश कपि-वानरों का था। इसी कपि का महाभारत कालीन अपभ्रंश शब्द गोप या गोपी है जोकि पशुपालक थे। हनुमान रामकथा में कपिरूप हैं... उड़िया हरिवंश के अनुसार कृष्णकाल में वह राधा का पति सायण गोप है और महाभारत कथा में वह भीष्म- सत्यवती का पुत्र सात्वत है। कथाकार ने बस थोड़ा सा अन्तर कर उसे देवव्रत कहा है और पूरे जीवनभर उसे सत्यव्रती बनाकर रखा।
53. **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-335
54. वही, पृ0-230
55. माध्वी की कथा के आधार पर पार्जीटर, उशीनर और हर्याश्व को समकालीन बताते हुए, उनके बाद विश्वामित्र और दिवोदास को रखते हैं- **पार्जीटर**, पृ0-149
56. **लाहा ''ऐशेंट मिड इंडियन क्षत्रिय ट्राईब्स''** वाराणसी; 1975; जिल्द-1; पृ0-158-59
57. **आर. सिद्धांताशास्त्री**, पृ0-97
58. **सीतानाथ प्रधान**, पृ0-199
59. वही, पृ0-200
60. **रायचौधरी**, पृ0 59-60

61. लाहा ''ऐशेंट इंडियन ट्राईब्स'' दिल्ली; 1980; जिल्द-2, पृ0-21
62. वही, पृ0-48
63. वही,
64. आनर्त की राजधानी कुशस्थली को द्विविद ने उजाड़ा था- **राणा प्रसाद शर्मा**, पृ0-45, द्विविद, नरकासुर का मित्र, सुग्रीव का मंत्री और अंगद के स्वसुर मैन्द का भाई था जो नरकासुर की मृत्यु के बाद उपद्रव करता रैवतक पर्वत जा पहुंचा, जहाँ उसे बलराम ने मारा था।
अन्यत्र भी रैवत की कुशस्थली को यक्षों ने उजाड़ा था- वही, पृ0-121
65. **आर. सिद्धान्ता शास्त्री**, पृ0-203
66. **पार्जीटर**, पृ0-82
67. वही, पृ0-135
68. वही, पृ0-71
69. **कीथ व मैकड़ोनेल**, भाग-2, पृ0-271

18.

सन्दर्भ और सहायक ग्रन्थ

हिन्दी ग्रन्थ

1. अजीत कुमार सिंह ''उत्तर भरत का राजनैतिक इतिहास'' बरेली 1977
2. अवन्तिका प्रसाद मरकट ''वेदकालीन नाग जातियों, राजाओं और संस्कृति की खोज'' उज्जैन 1988.
3. ईश्वर चंद राही 'लेखन कला का इतिहास' लखनऊ, 1983
4. के.सी. यादव 'हरियाणा का इतिहास' दिल्ली, 1982
5. फादर कामिल बुल्के 'रामकथा' इलाहबाद, 1993
6. कैलाश नाथ द्विवेदी' ऋग्वैदिक भूगोल' कानपुर, 1985
7. के.डी; वाजपेई 'अहिच्छत्रा' लखनऊ 1956
8. ज्योति प्रसाद जैन ' हस्तिनापुर ' लखनऊ, 1955
9. पदम चन्द्र कश्यप 'हिमाचल प्रदेश का सांस्कृतिक अध्ययन'
10. आचार्य बलदेव उपाध्याय 'पुराण विमर्श', वाराणसी 1987
11. डा. बंशीराम शर्मा, ' पश्चिमी हिमालय की पुराणकालीन संस्कृति के सन्दर्भ :- 'देश एक कलाएें अनेक' दिल्ली 1988. डा. बंशीराम शर्मा, 'हिमाचल लोक संस्कृति के श्रोत' दिल्ली 1986
13. भगवान सिंह, ''भारतीय समाज की निर्मिती,'' दिल्ली, 2004. ''हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य'', दिल्ली 2003.
15. मंजुला श्री वास्तव ; ''वाल्मिकी युगीन भारत वर्ष'' वाराणसी, 1989
16. दामोदर सात्वलेकर,'' वैदिक आख्यान माला'',

17. धर्मपाल व पन्ना लाल अग्रवाल, ''भारतीय पुरौतिहासिक पुरातत्व,'' लखनऊ, 1971
18. आर.सी. ठाकरान, '' क्या हड़प्पा सभ्यता सारस्वत थी,'' दिल्ली, 2002.
19. रामविलास शर्मा,''प्राचीन भारत का इतिहास,'' दिल्ली, 1994.
20. रांगेय राधव, ''प्राचीन भारतीस परम्परा और इतिहास,'' दिल्ली, 1990.
21. राधा कुमुद मुकर्जी, '' हिन्दु सभ्यता,'' दिल्ली, 1995.
22. राणा प्रसाद शर्मा,''पौराणिक कोष,'' वाराणसी, 1986.
23. रामकुमार राय, '' वाल्मिकीय रामायण कोश,'' वाराणसी, 1965 ''महाभारत कोश,'' वाराणसी, 1982
25. राम शरण शर्मा,'' प्राचीन भारत में भौमिक प्रगति और सामाजिक संरचनाऐं दिल्ली, 1993 ''शूद्रों का प्राचीन इतिहास,'' दिल्ली, 1995
27. राहुल सांकृत्यापन,'' ऋग्वैदिक आर्य,'' इलाहबाद, 2004.
28. प्रो. लक्ष्मी नारायण तिवारी,'' वैदिक वांगमय में रामकथा,'' वाराणसी, 1989.
29. लीलाधर दुखी,'' सरस्वती नदी,'' दिल्ली, 1989.
30. वामन शिवरामन आप्टे,'' संस्कृत हिन्दी कोष,'' दिल्ली, 1989.
31. वासुदेव शरण अग्रवाल ''पाणिनी कालीन भारतवर्ष,'' वाराणसी, 1969. ''भारत सावित्री,'' दिल्ली, 1985.
33. विश्वेश्वर नाथ रेऊ, ''ऋग्वेद पर एक ऐतिहासिक दृष्टि'', दिल्ली, 1967.
34. स्वामी विद्यानन्द सरस्वती,'' आर्यो का आदि देश और उनकी सभ्यता'' बम्बई, 1989.
35. वी.के. माथुर,''ऐतिहासिक स्थानावली,'' जयपुर, 1969.
36. सर्वानन्द पाठक,'' विष्णु पुराण का भारत,'' वाराणसी, 1967.
37. डा. शिव स्वरूप सहाय,'' भारतीय पुरातत्व और प्रागेतिहासिक संस्कृतियाँ, दिल्ली, 2004.
38. डा. सुरेश चन्द बंसल, '' भारत का वृहद भूगोल,'' मेरठ, 1993.
39. शिवदत्त ज्ञानी,'' वेदकालीन समाज,'' वाराणसी, 1997.
40. हैमचन्द राय चौधारी,'' प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास,'' दिल्ली
41. ह.रा. दिवेकर,'' ऋग्वैदिक सूक्त विकास,'' दिल्ली, 1970.

अनुवाद ग्रन्थ

1. ए.ए. मैकड़ोनेल,'' वैदिक माईथोलोजी,'' अनु. रामकुमार राय, वाराणसी, 1984
2. अलैकजेंडर कनिंध्सम, ''भारत का प्राचीन भूगोल,'' अनु. सूर्यनाथ त्रिपाठी और डा महेश विक्रम सिंह, दिल्ली, 1989.
3. कीथ व मैकड़ोनेल, ''वैदिक इण्डैक्स'', अनुवाद रामकुमार राय, वाराणसी, 1962.
4. जे. मुईर,'' ओरिजनल संस्कृत टैक्स, अनु. रामकुमार राय, वाराणसी, 1967.
5. दामोदर धर्मानन्द कौशाम्बी,'' मिथक और यथार्थ,'' अनु; नन्दकिशोर नवल दिल्ली, 2001
6. दामोदर धर्सानन्द कौशाम्बी,'' प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति, अनु. गुणाकर मुले,'' दिल्ली, 1993.
7. अनु. नूरनबी अब्बासी,'' भारत अलबेरुनी,'' नेशनल बुक ट्रस्ट
8. राजशेखर,'' काव्य मीमांसा,'' अनु; केदार नाथि सारस्वत

9. रोमिला थापर,'' प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास,'' अनु. आदित्य नारायण सिंह, दिल्ली, 2001. ''वंश से राज्य तक,''अनु. मंगलनाथ सिंह,'' दिल्ली, 1977.

11. विमल चरण लाहा,'' प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल,'' अनु. राम कृष्ण द्विवेदी, लखनऊ, 1972.

अंग्रेजी ग्रन्थ

1. B.C. Law," Ancient India Tribes," " Ancient and Mid Indian Kshatriya Tribes" Varansi, 1975-

3. Ancient Mid India Tribes," Delhi, 1980.

4. D.N Wadia," Geology of India," Delhi 1990.

5. D.S. Triveda," Indian Chronology," Bombay, 1963.

6. D.C. Sirkar," Study in the Geography," Bombay, 1963.

7. E.W. Hapkins," Epic Mythology," Delhi, 1968.

8. H.D. Sankalia," Ramayana Myths and Reality," Delhi, 1991.

9. Jay Narayan Asopa," Origin of Rajput," Delhi, 1976.

10. J.P. Gupta," The Indus Saraswati Civilization," Delhi, 1976.

11. K.D. Vajpei (Editor)," The Geographical Encyclopeadia of Ancient and medival India," Varansi, 1967.

12. Nando Lal Day," Geographical Dictonary," Delhi, 1990.

13. R. Mortin smith," Date and Dynesties of Earliest India" Delhi 1993.

14. R.C Majudar," The vedic Age"

15. R. Siddhanta Shastri," History of Prekaliyuga India" Delhi, 1978.

16. Dr. Sarasvati Bali," Brahaspati is Puranas and the Vedas," Delhi,1978.

17. Savitri Saxena "Geographical Survey of Puranas" Delhi, 1995.

18. S. Mujaffar Ali "Geography of Purana" Delhi, 1983

19. Suryavamsi "Geography of Mahabharata".

20. Sita Nath Pradhan "Chronology of Ancient India" Delhi, 1979

21. Usha Chodhary "Indra and Varuna in Indian Mythology" Delhi, 1979.

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के हिन्दी लेख

1. अरविंद कुमार ''भाषा क्षेत्रे'' अहा जिन्दगी, अप्रैल, 2005

2. डा. किशोर पवार सिंह ''जंगल के भूत और जादूई लकड़ी'' स्त्रोत, अगस्त 2005

3. के.एम. वैद्य ''क्या पुराणों का मेरू पर्वत अफ्रीका में है'' धर्मयुग, 7 दिसम्बर 1980

4. गुणाकार मुले ''कहाँ थी कृष्ण की द्वारिका'' ट्रिब्यून, 28 अगस्त 1997

5. द्वारिका प्रसाद मिश्र ''भूत प्रेत और पिशाच मनुष्य ही थे'' कादम्बिनी, अप्रैल 1979

6. बाबूराम चौहान ''आस्था और श्रद्धा का प्रतीक शिरगुल मंदिर'' ट्रिब्यून, 5 जुलाई 1992

7. श्याम नारायण पांडेय ''प्रथम भारतीय पर्यटक सुग्रीव'' जहान्वी

8. सरोज बाला "द्वारिका सचमुच डूबी थी?" ट्रिब्यून, 4 अप्रैल 2004
9. डा. सन्तोख सिंह "सरसधारा सरस्वती" कादम्बिनी, मार्च 1994
10. सुदर्शन वशिष्ठ "भूंडा उत्सव" साप्ताहिक हिन्दुस्तान" 3 नवम्बर, 1991
11. चन्द्रदत्त इन्दु "रामचरित मानस और रामकथा के श्रोत" हिन्दुस्तान, 22 अगस्त
12. एच.डी. सांकलिया "क्या सोने की लंका उड़ीसा में थी" धर्मयुग, 4 अक्टूबर 1981
13. जमनादास अख्तर "गुजरात फिर उभरेगा" हिन्दुस्तान, 6 फरवरी 2001
14. जमनादास अख्तर "कच्छ की रन में गिरती थी सरस्वती" हिन्दुस्तान, 27 फरवरी 2001
15. जवाहर लाल कौल "हिमाचल से समुद्र तक "हिन्दुस्तान, 25 जनवरी 2001.
16. एच.डी. सांकलिया, "राजस्थान में सभ्यता का प्रसार" इतिहास समीक्षा, दिसम्बर 1972
17. प्रेमनारायण अग्रवाल, "यमुना जो कभी सिंध से मिलती थी", कादम्बिनी, सितम्बर 1976
18. परमानन्द पाँचाल, "सरस्वती जो लुप्त हो गई" कादम्बिनी, दिसम्बर, 1997

अंग्रेजी ग्रन्थ

1. B.B. Lal "Excavation at Hastinapur" Ancient India No.10-11.
2. Devendra Handa "Some Important Towns of Haryana" Journal of Haryana Studies, January 1971.
3. G.B. Sharma and Manmohan Singh "Excavation at Ghuram" Punjab History Conference, 1979.
4. Dr. Iravatan Mahadevan "The Indus script concordence ant tables". Summary in News Paper. Date not available.
5. Jahur Ali Khan "Kali Nadi, the history of A River "India History Congress, 1987.
6. Luxman S. Thakur "Human Sacrifies-Bhunda" P.H.C.-1982.
7. Makhan Lal "Development of Disparal of Agricultural settlement in Ganga-Yamuna Doab I.H.C. 1987.
8. Roshan Gupta "The First chapter of History of Ancient India P.H.C. 1986.
9. Sindhu S. Dange "Some Non Vedic Retuals in the Vedic. Tradition" Journal of Indological studies Chandigarh, 1987.
10. Shyam Narayan Pandeya "Historical Geograhy of Mahapralaya giving rise to Jambudwip culture" I.H.C.-48
11. Suraj Bhan "Excavation at Sugh" JHS-9, No.1-2, 1977
12. Tej Ram Sharma "Ancient Tribes of Punjab Hill States" PHC-14, 1986.
13. O.P. Bhardvaja "Valmikis Historical Geography of Kurukshetra" PHC, 1979. "Mujavata and Mahavrasis" J.I.S., Chandigarh, 1985. "Some important Vedic Sites of Haryana" JHS-15 "Janamejaya Parikshit and

two Ancient Tradition of Punjab" PHC-16; March, 1982. "Kuru and Kurukshetra in Upanishad" J.I.S. Vol.-II.

18. Vishal Thapar "What to do in desaster" Hindustan Times, 4 April 1999

MAP SHEETS

All sheets published by survey of India, Dehradun.

44-O	Hisar Plate
53-C	Karnal Plate
53-D	Rohtak Plate
53-G	Saharan Pur Plate
53-H	Delhi Plate
53-B	Chandigarh Plate
53-F	(Bata River of Sirmour District)
53 F-7	and 8 (Pathrala, Somb, Boli Rivers)
53 F-10	(Giri River of Sirmour District)
53 F-11	(Sirmour, Yamuna Nagar, Saharanpur, Shivalik Hills)
53 F-3	(Makanda River in Yamuna Nagar)
53 F-4	(Rakshi, Chitang, Sarasvati River)

Transport and Tourism Map-Delhi Plate-135

World Aeronaughtical Chart : 2440 Delhi Plate

Map of Dehradun in 1838-39 by Capt. W. Brown

District map of Yamuna Nagar

District map of Jind

District map of Kurukshetra

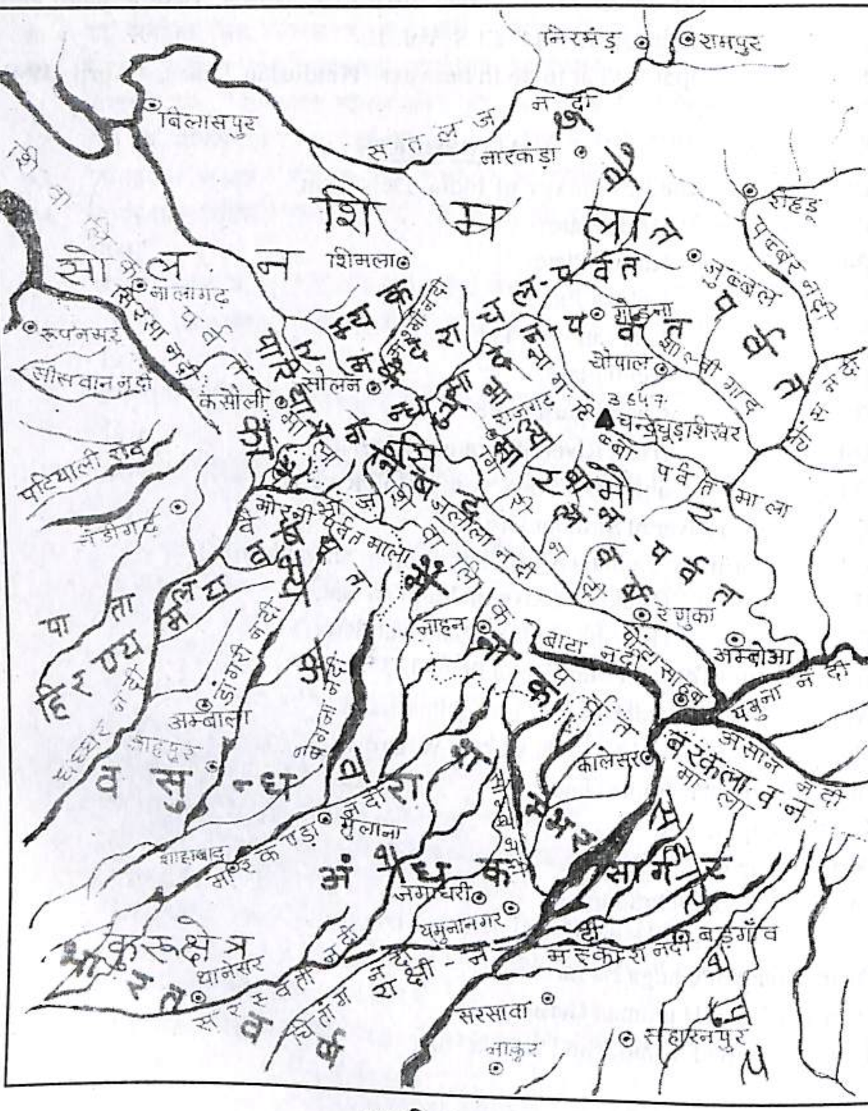
District map of Dehradun

District map of Saharanpur

District map of Ganga Nagar

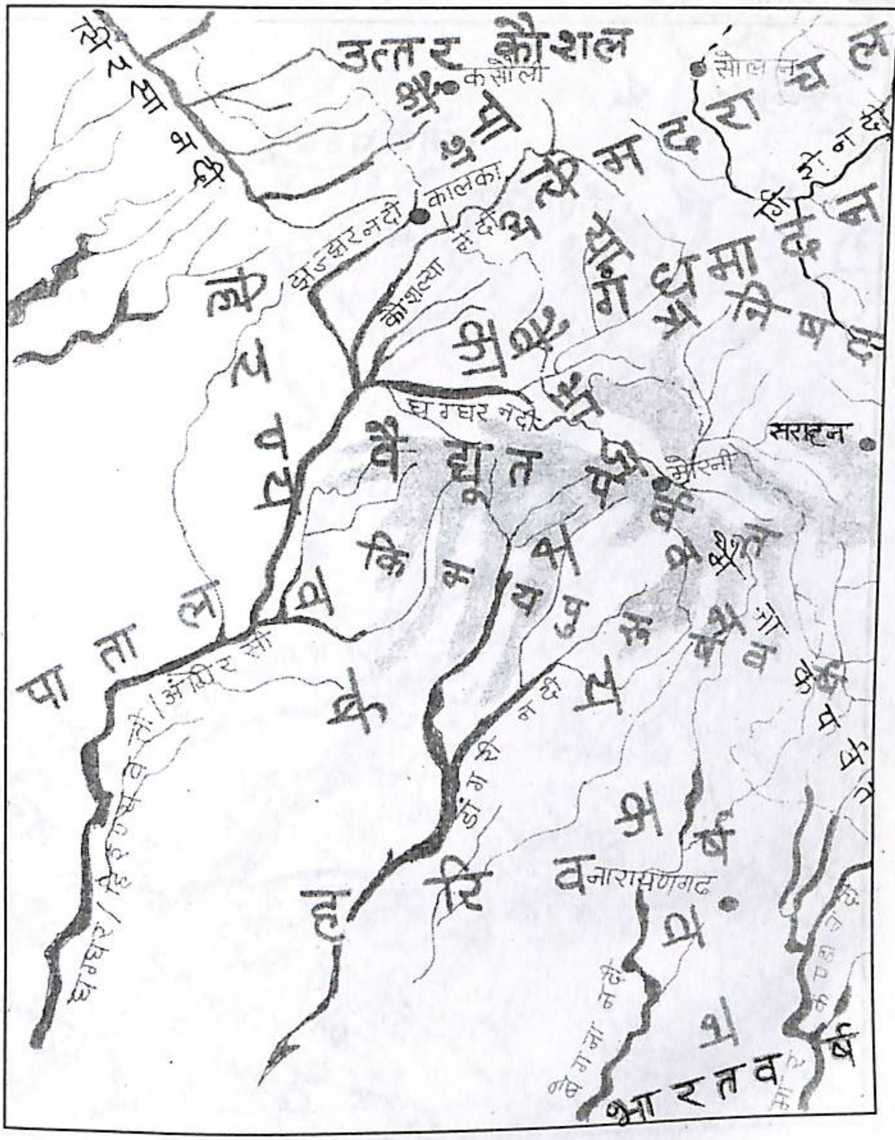
District map of Hanuman Garh

Tracking map of Sirmour and Shimla Hills.



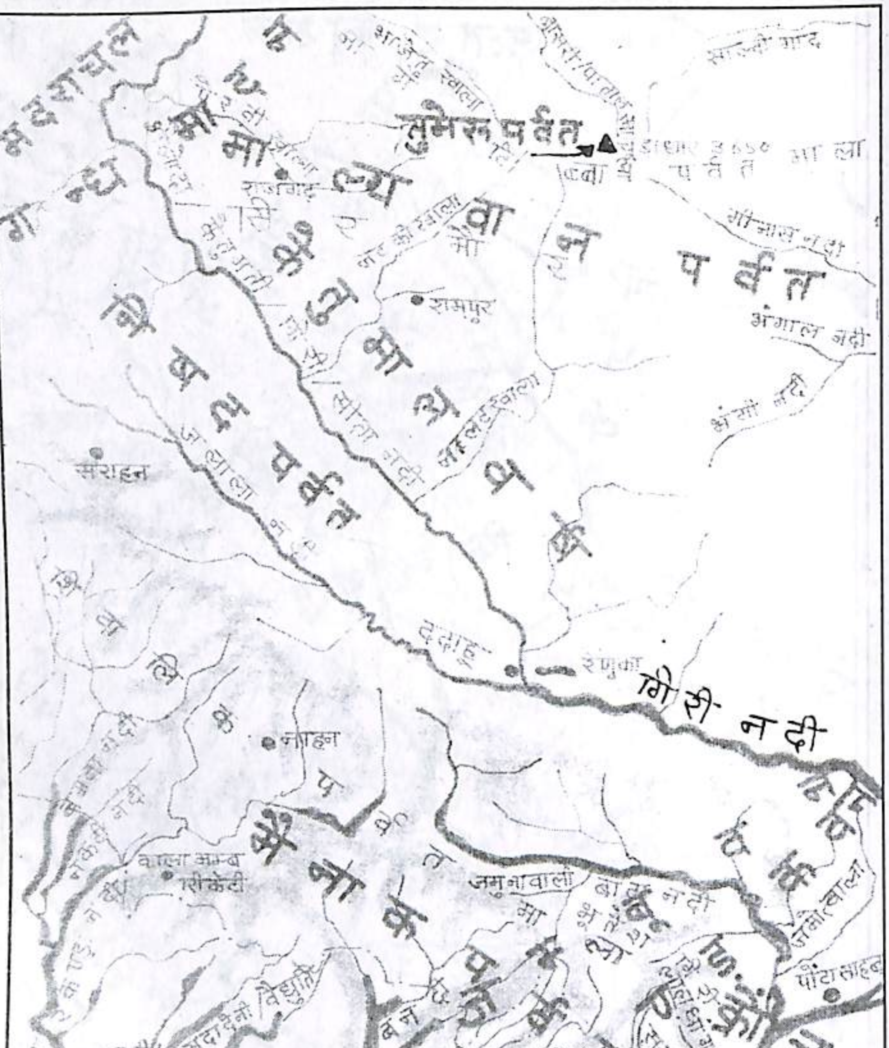
मानचित्र - 1

सतलुज-गंगा के उपरी दोआबा प्रदेश में ही पुराण वर्णित सप्तद्वीपीय भूगोल के द्वीप, महाद्वीप, उपद्वीप थे। शिवालिक पर्वत तब मैनाक पर्वत था जिसके दक्षिण में वसुजनों का वसुधान / वसुन्धर था। आज का सहारनपुर तब के सगर / शिग्रुजनों का सागर क्षेत्र था जिस अपभ्रंश कालान्तर में श्रूघन हुआ। हिरण्यवती नदी क्षेत्र हिरण्य या सृञ्जयजनों का हिरण्यमय वर्ष था।



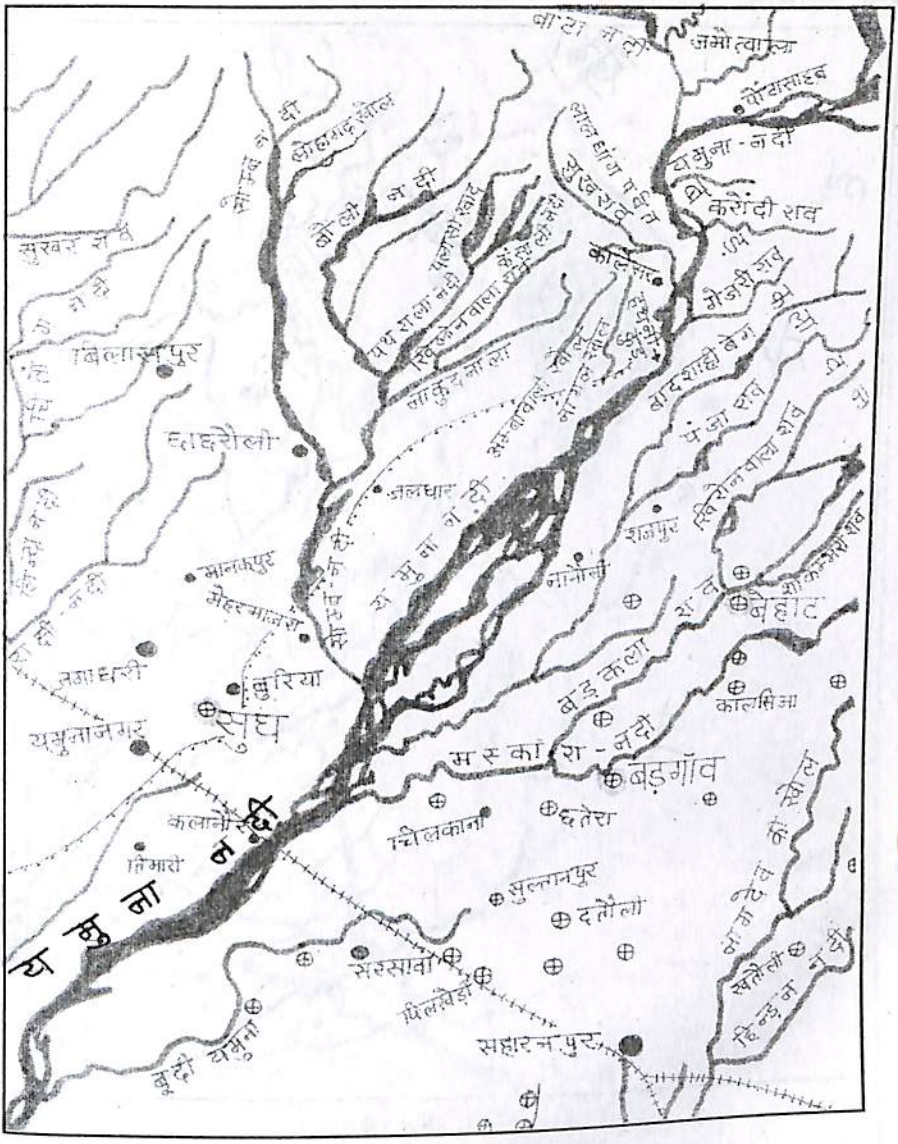
मानचित्र - 2

हिरण्यवती नदी / घग्घर का उद्‌गम क्षेत्र रम्यक या रमणक था.... कौशल्या नदी का क्षेत्र तब का उत्तर कौशल था यह आज कसौली है... पटियाला रु पटियाली नदी क्षेत्र तब पाताल था... घग्घर नदी के उद्‌गम.... पारियात्र पर्वत से सरस्वती नदी तक काम्यक वन किम्य पुरूषजनों का निवास क्षेत्र था.... मोरनी क्षेत्र वैद्यूत / हेती-प्रहेती जनों का वैभ्राजवन था।



मानचित्र - 3

गिरि नदी तब शैलोदा-सीता थी, केतुमालवों की केतुमती नदी थी... यह जम्बूवन, जमोत्वाला वन, दण्डकवन होती.... क्रौंच घाटी / करौंदी से गुजरती थी... मैनाक के दक्षिण में सुबेल पर्वत शिवालिक पर्वत का भाग था।



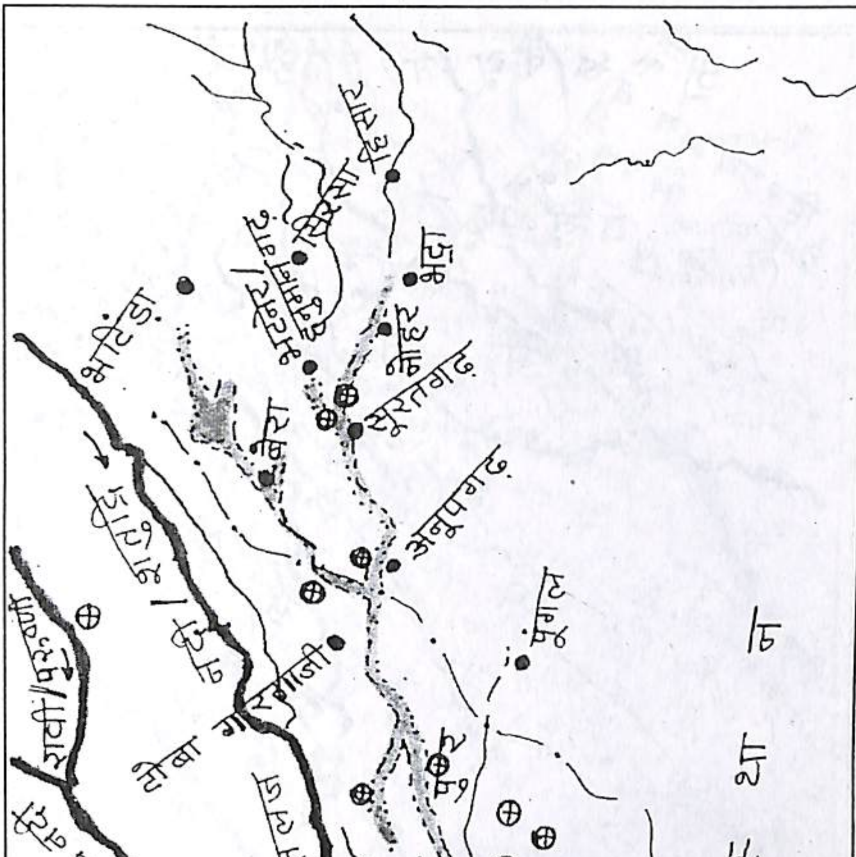
मानचित्र - 4

यमुना नदी पर्वतों से उतरते ही करोंधी घाटी से गुजरती थी और कालेसर के समीप मैदानों में आती थी.... पूर्व में हस्ती, मतस्य, मकर, पलंकष / राक्षस, नागजन थे तो पशिचम में अम्बा, शिव, सोम्ब के शम्भर, कंसाली के कंस थे... सुध में अज/अजनाभजनों की प्राथमिक बस्ती अजोध्या रही होगी। बड़गाँव रावण की लंका थी और बेहाट मतस्यों/मच्छों का वैराट जगाधरी .....जगन्नाथ कृष्ण की द्वारिका थी। सरस्वती नदी यहाँ दक्षिण वाहिनी थी।



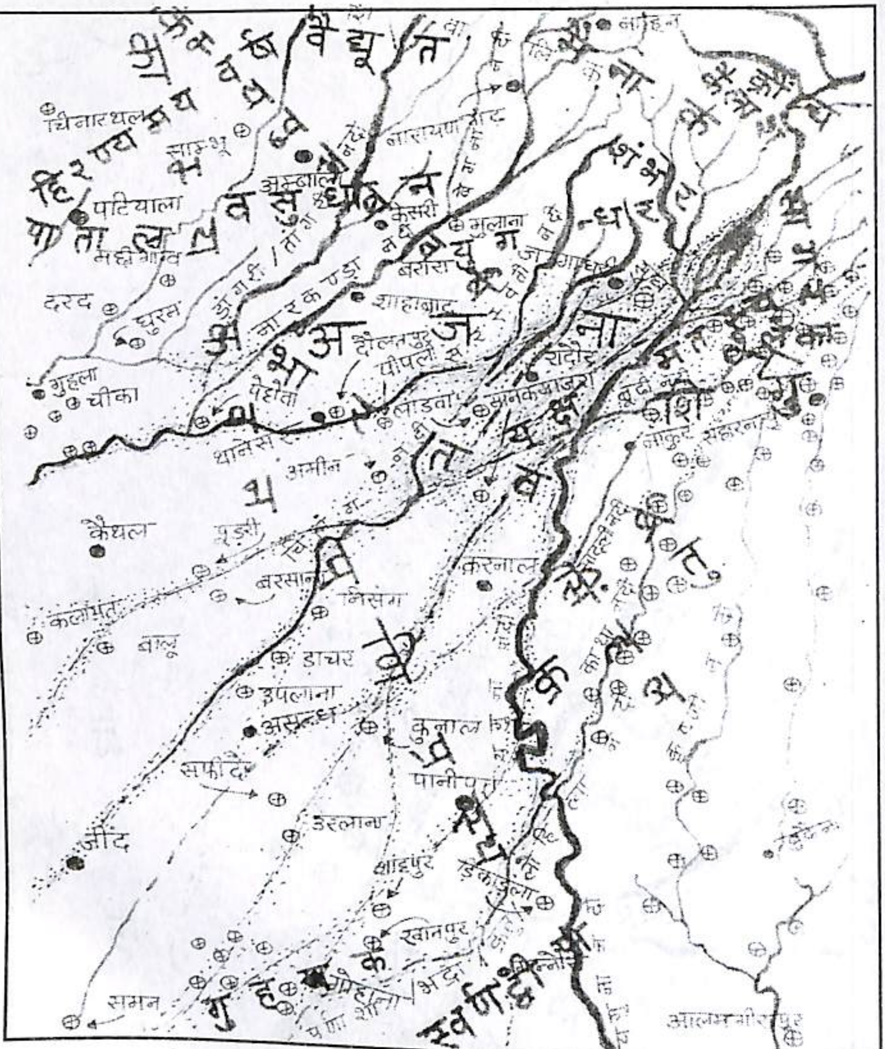
मानचित्र - 5

गंगा-यमुना दोआबे में गैरिक मृदभांड संस्कृति के जन ही मतस्य, नाग, हस्ती, क्रतु-बाल्हीक जन थे और ताम्र निधि स्थल गरूड़जनों से सम्बंधित प्रतीत होते हैं।



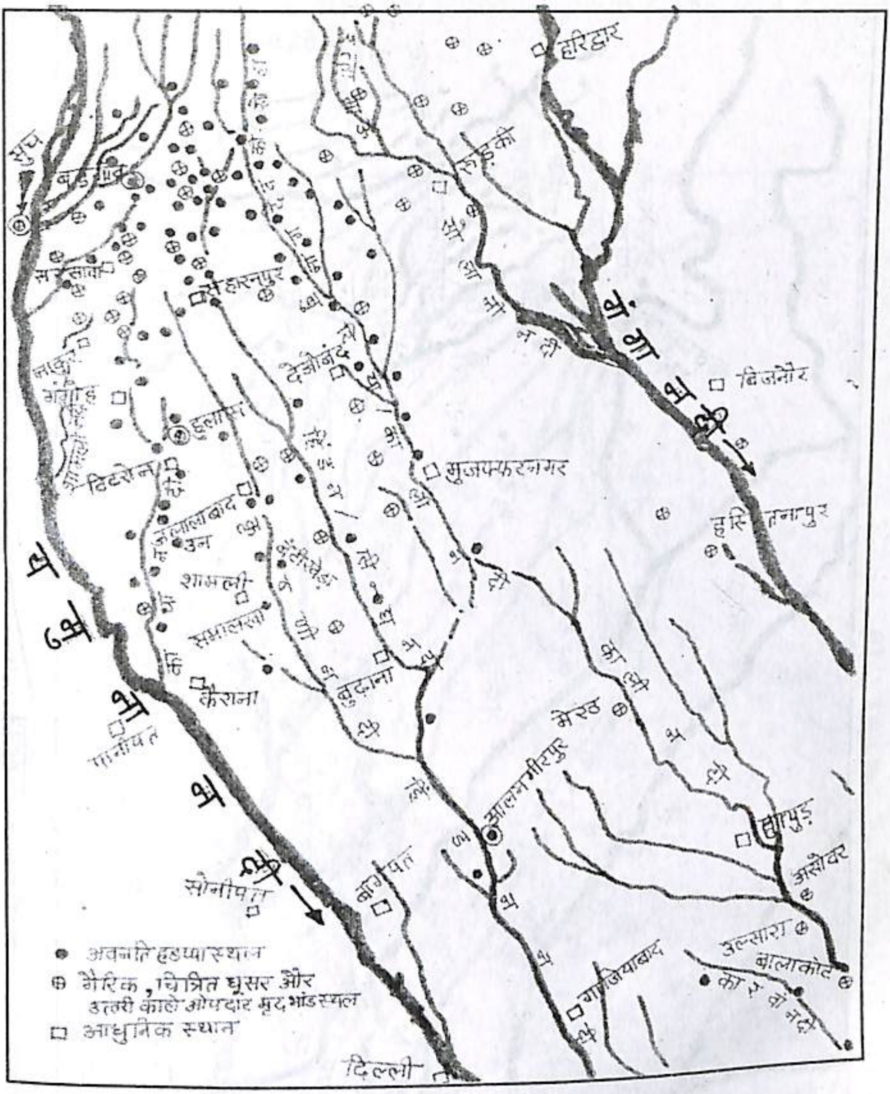
मानचित्र - 6

घग्घर / हक्रा नदी का सूखा पाट, इस पाट में तो नदी कभी अवश्य बही थी।



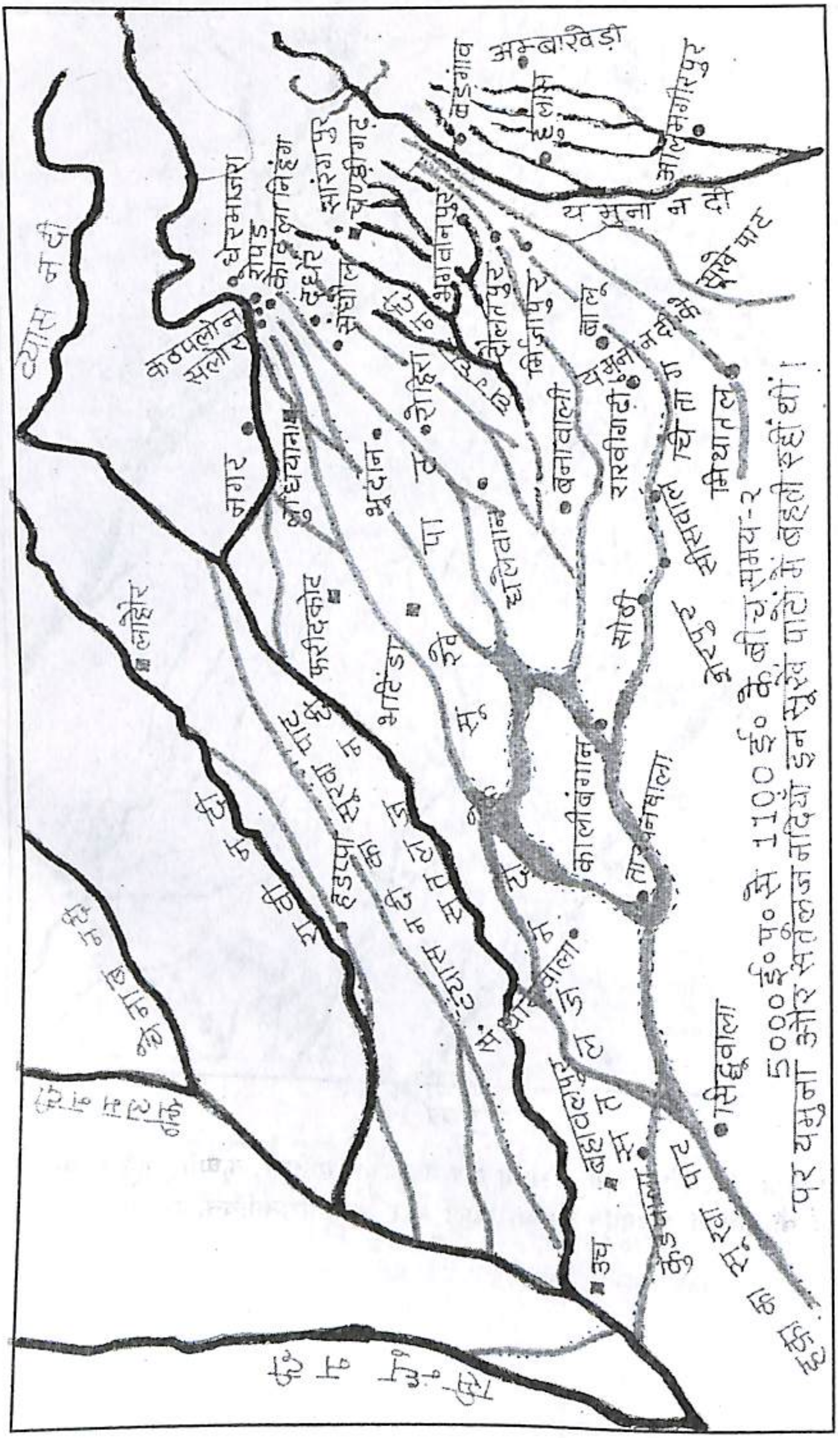
मानचित्र - 7

किन्तु कैलाश कालेसर में पर्वतों से उतरकर मैदानों में प्रवेश करने के बाद नदी बार-बार अपना बहाव मार्ग बदलती रही है। किस युग, किस समय वह किस मार्ग से बही कहा नहीं जा सकता, किन्तु हर बार जब-जब भी उसने अपना बहाव मार्ग बदला हर बार एक इतिहास अपने पीछे छोड़ गई। नदी जब-जब बहाव मार्ग बदलती गई लोग भी वहां-वहां जाकर बस गए।

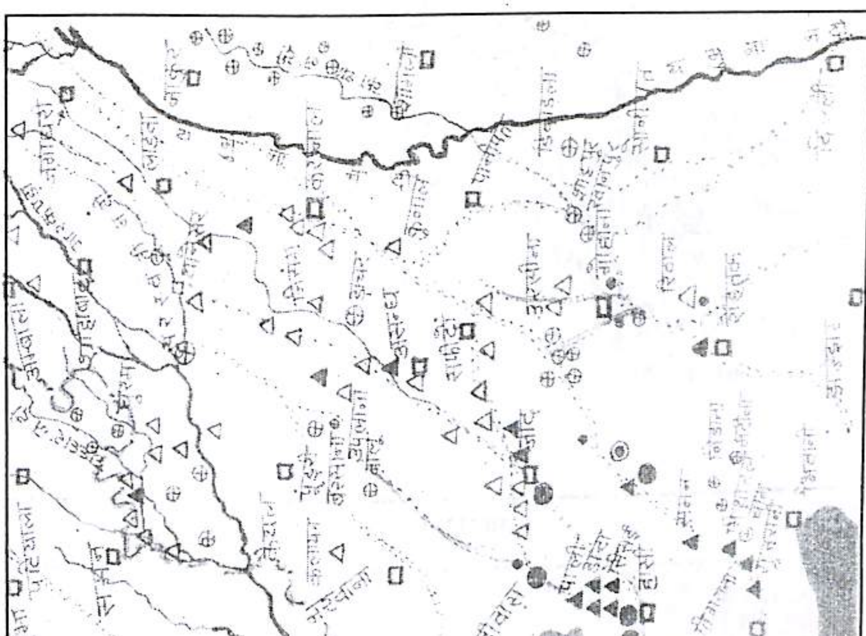


मानचित्र - 8

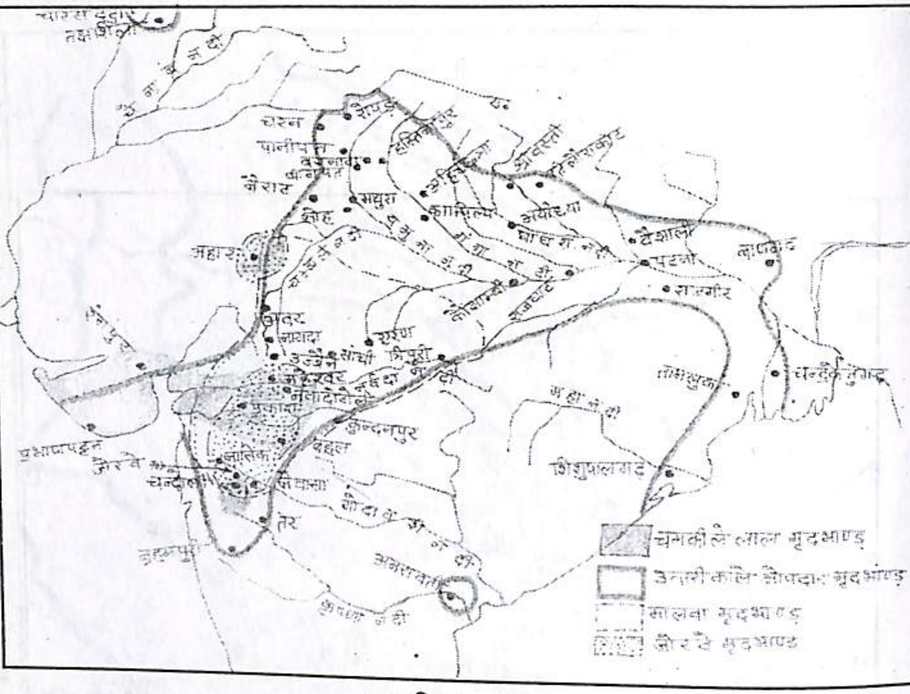
यमुना-गंगा के उपरी मैदानी दोआबा क्षेत्र में काथा, सांदली, कृष्णी, हिडन, काली नदियों के क्षेत्र में अवनाति हड़प्पा स्थल और अन्य पुरातात्विक स्थल।


ब्यास नदी
लाहौर
नगर
कठपलोन
सलोरा
रोपड़
कोटला निहंग
बाड़ा
संघोल
चण्डीगढ़
फरीदकोट
भटिंडा
हड़प्पा
बड़गांव
अम्बखेड़ी
आलमगीरपुर
यमुना नदी
सूखे पाट
मिताथल
बनावाली
कालीबंगान
सोठी
सीसवाल
बहावलपुर
सिद्धूवाला
उच्च
5000 ई० पू० से 1100 ई० के बीच समय-2
पर यमुना और सतलज नदियां इन सूखे पाटों में बहती रहीं थीं।

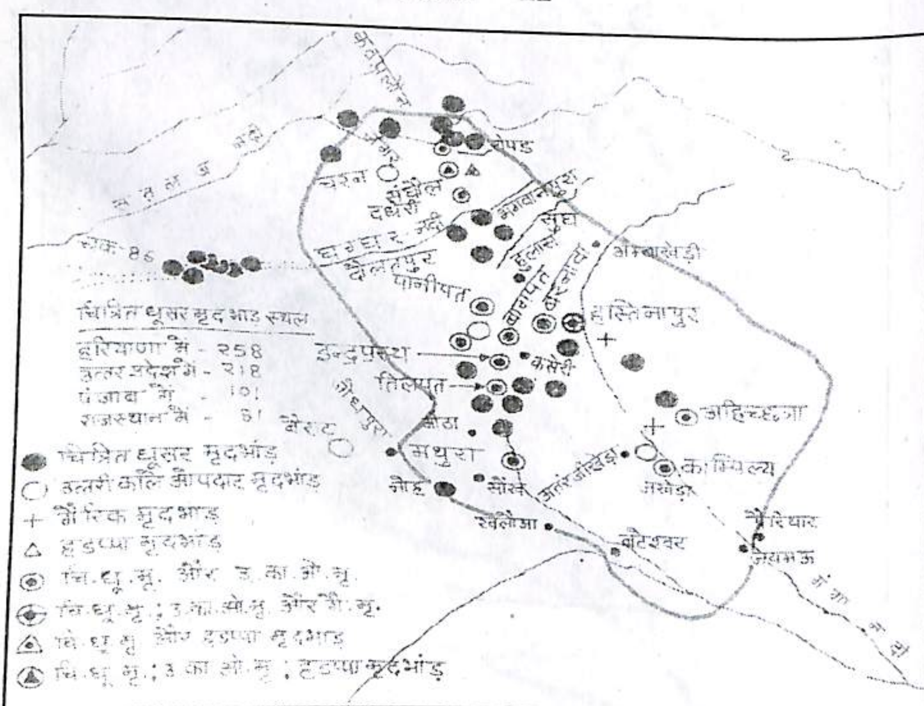
मानचित्र - 9



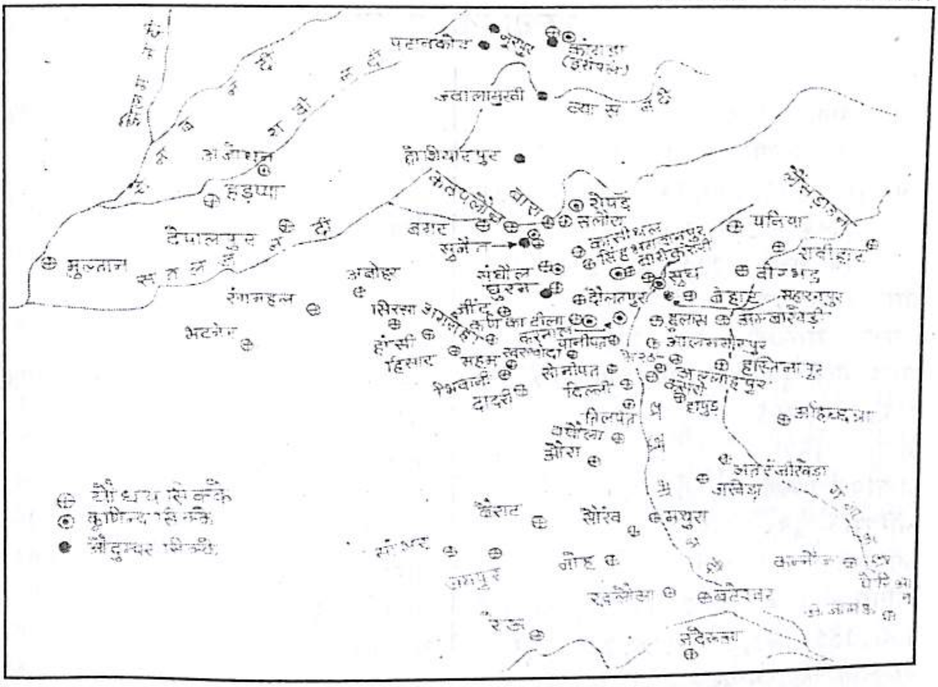
मानचित्र - 10



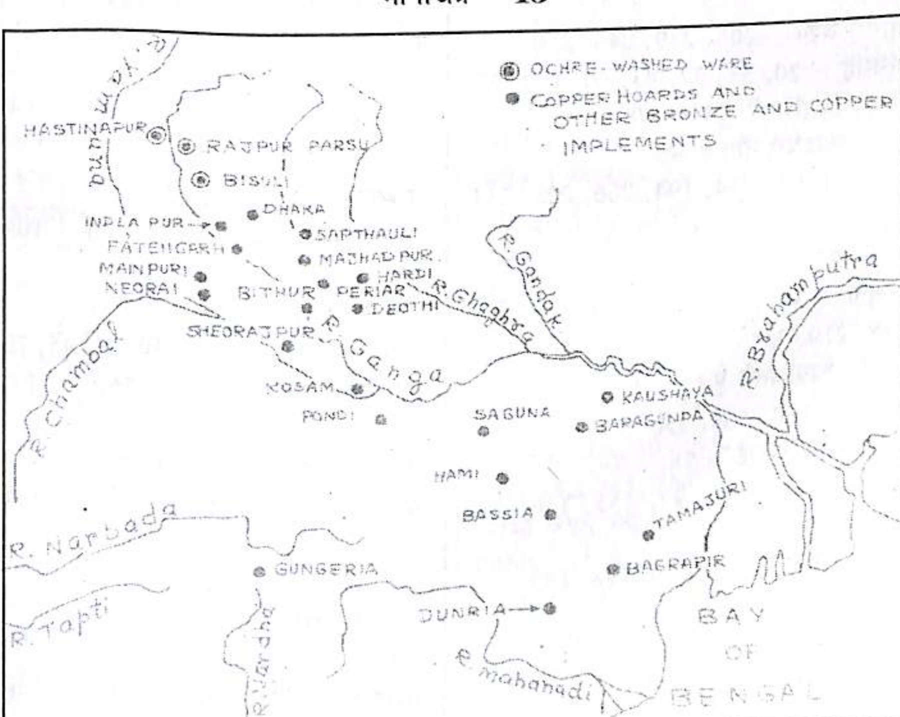
मानचित्र - 11



मानचित्र - 12



मानचित्र - 13



मानचित्र - 14

शब्दानुक्रमाणिका

ह